सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

मक्सिम गोर्की

जीवन की राहों पर

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक नरोत्तम नागर
संपादक योगेन्द्र कुमार नागपाल

М Горький
В ЛЮДЯХ
На языке хинди

पहला संस्करण १९५७

दूसरा संस्करण १९७७

सोवियत संघ में मुद्रित

यह लीजिये, मै अब नगर के बडे बाजार की "फन्सी जूता" दुकान पर नौकरी करने आ गया हू।

मेरा मालिक है नाटा और गोल-मटोल, जिसके बादामी रग के चेहरे के आदि अन्त का कुछ पता नहीं चलता, जिसके दात हरे और आखें गन्दी-पनीली हैं। मुझे वह अधा सा लगता है और इस बात की जाच करने के लिए मैंने मुह बनाया।

धीमे, परन्तु दृढ़ लहजे मे उसने कहा

"तोबडा न बना!"

मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि ये धूमिल आखें मुझे देखती हैं और यह विश्वास नहीं हुआ कि वे सचमुच देख सकती हैं। शायद मालिक ने केवल यह अटकल लगायी है कि मै मुह बनाता हू?

"मैंने कहा न कि अपनी थूथनी को काबू मे रख!" अपने मोटे होठो को लगभग हिलाये बिना उसने पहले से भी अधिक धीमी आवाज मे कहा।

"हाथों को नहीं खुजला," उसकी रूखी फुसफुसाहट मेरी ओर रेगती हुई आई। "याद रख कि तू नगर के बडे बाजार की बडी दुकान मे है। दरवाजे पर बुत बने सीधे-सतर खडे रहना तेरा काम है!"

मुझे मालूम नहीं था कि बुत क्या होता है और अपनी बाहों और हाथो को न खुजलाना भी मेरे वश की बात नहीं थी कोहनियो तक मेरे दोनो हाथ लाल चकत्तो और रिसते घावो से भरे हुए थे।

मेरे हाथो को देखते हुए मालिक ने पूछा

"घर पर तू क्या काम करता था?"

मैंने बताया। उसकी मटके जसी खोपडी हिल उठी जिस पर उसके मटमले बाल मानो लेई से चिपके हुए थे। उसने डक सा मारा

"चियडे बटोरना तो भीख मागने से भी बुरा है, चोरी करने से भी बदतर है!"

"मैंने चोरी भी की थी," कुछ गव के साथ मैंने ऐलान किया।

यह सुनकर उसने बिलाव के पजो की तरह काउण्टर पर अपने हाथ रखे और सहमकर अपनी सूनी सूनी आखो से मेरी ओर ताकते हुए फुफकार उठा

"क्या आ आ? क्या कहा तूने—चोरी भी करता रहा है?"

मैंने स्पष्ट किया कि किस चीज की और कसे मैंने चोरी की थी।

"खर, इस घटना को तो हम बहुत महत्त्व नहीं देंगे। लेकिन अगर तूने मेरे जूतो या मेरे पसो पर हाथ साफ किया तो बालिग होने से पहले ही मैं तुझे जेल भिजवा दूगा "

उसने यह शात भाव से कहा, मैं डर गया तथा उससे और भी अधिक घृणा करने लगा।

मालिक के अलावा दुकान पर दो आदमी और काम करते थे—याकोव मामा का बेटा, मेरा ममेरा भाई साशा और लाल चेहरे वाला एक कारिंदा, बहुत ही चलता पुर्जा और चिकना चुपडा व्यक्ति। साशा खूब ठाठदार मालूम होता—लाल से रग का कोट, कलफ लगी कमीज और टाई डाटे हुए। घमण्ड के मारे वह मेरी ओर देखता तक नहीं था।

नाना मुझे अपने साथ लेकर जब पहली बार मालिक के पास आये और साशा से उन्होंने मुझे काम सीखने मे मदद देने के लिए कहा तो साशा शान मे आते हुए भौंहें चढाकर बोला

"इससे कह दीजिये कि मेरी बात माने।"

मेरे सिर पर अपना हाथ रखकर उसे नीचे झुकाते हुए नाना बोले

"इसकी बात मानना। यह तुम से बडा है—उम्र और काम के लिहाज से भी "

साशा ने आखो को टेरा और बोला

"नाना की सीख याद रखना, समझा!"

और उसने पहले दिन से ही अपने बडप्पन का खूब रोब जताना शुरू कर दिया।

लेकिन मालिक उसे भी डाटता था। एक दिन बोला

"काशीरिन, यह आखें टेरना बद करो।"

"जी नहीं मैं मैं कहां?" साशा ने सिर झुकाते हुए जवाब दिया।

पर मालिक आसानी से पीछा छोडनेवाला नहीं था। बोला

"और यह सिर क्यो लटका लिया है? कहीं ग्राहक तुझे बकरा न समझ बठें।"

ऐसे मौके पर कारिदा खुशामद भरी हसी हसता, मालिक के मोटे होठ बेढगेपन से फल जाते और साशा गम से बुरी तरह लाल होकर काउण्टर की ओट मे छिप जाता।

मुझे इस तरह की जुमलेबाजी अच्छी नहीं लगती थी। बहुत से शब्द मेरी समझ मे भी नहीं आते और कभी-कभी ऐसा लगता था मानो ये लोग किसी अजनबी भाषा मे बातें कर रहे हो।

जब कोई महिला दुकान मे आती तो मालिक जेब से हाथ बाहर निकालकर मूछो पर फेरता और अपने चेहरे पर मानो एक मीठी मुस्कान चस्पां कर लेता। उसके कपोलो पर झुरियो की बदनवार सज जाती, लेकिन उसकी खोहनुमा आखें ज्यो की त्यो ही रहतीं। कारिदा तनकर सीधा हो जाता, उसकी कोहनिया दोनो बाजू शरीर से सट जातीं और उसके हाथ सम्मान का प्रदशन करते हुए फडफडा उठते। नजर का टेरना छिपाने के लिए साशा डरे डरे अपनी आखो को मिचमिचाने लगता और मैं दरवाजे से चिपका हुआ लुक छिप कर अपने हाथो को खुजलाता और ग्राहक का हृदय जीतने के उनके कौशल को देखता रहता।

पाव मे जूता पहनाते समय किसी महिला के सामने घुटनो के बल खडा हुआ कारिदा हाथो की उगलियो को आश्चयजनक ढग से फला लेता। उसके हाथ सिहरते होते और वह कुछ इस अदाज से महिला के पाव का स्पश करता मानो डरता हो कि वह कहीं टूट न जाये, हालाकि पाव बहुधा मोटा और बेडौल होता था—झुके कधो वाली उस बोतल के समान जो उलटाकर गरदन के बल खडी कर दी गई हो।

एक बार ऐसी ही एक महिला ने सिमटते और अपना पाव छुडाते हुए कहा

"हाय राम, तुम तो बहुत गुदगुदी करते हो।"

"जी, शिष्टतावश," कारिंदे ने झटपट जवाब दिया।

महिला के चारों ओर वे कुछ इस तरह मडराते कि हसी रोकने के लिए मैं अपना मुह दरवाजे की ओर कर लेता। लेकिन कारिंदे के तौर तरीके कुछ इतने मजेदार होते थे कि मुझसे रहा न जाता और मैं मुह मुड कर देखता। और मुझे लगता कि लाख कोशिश करने पर भी मैं अपनी उगलियों को इतनी नफासत के साथ कभी नहीं फला सकूगा, न ही दूसरे लोगो के पावो मे जूते पहनाने की कला मे कभी इतनी दक्षता प्राप्त कर सकूगा।

अक्सर मालिक काउण्टर के पीछे एक छोटे से कमरे मे चला जाता और साशा को भी वहीं बुला लेता। अब जूता खरीदने के लिए दुकान मे आई महिला के सामने कारिंदा ही रह जाता। एक बार लाल बालो वाली किसी स्त्री के पाव छूकर उसने अपनी उगलियो की चिकोटी बनायी और उसे चूम लिया।

"ओह, बडे शैतान हो तुम!" स्त्री ने निश्वास छोडकर कहा।

कारिंदे ने गाल फुलाये और आह ऊह के सिवा उसके मुह से और कुछ न निकला।

कारिंदे की मुद्रा देखते ही बनती थी। मुझे इतने जोरो से हसी छूटी कि मेरे पाव डगमगा गये। सभलने के लिए मैंने दरवाजे का हत्था पकडा, वह मेरा बोझ न सभाल पाया, झटके से दरवाजा खुला और मेरा सिर काच से जा टकराया। काच टूटकर जमीन पर आ गिरा। कारिंदे ने यह देखा तो गुस्से मे खूब हाथ पाव पटके, मालिक ने सोने की भारी अगूठी मेरे सिर पर कई बार मारी, साशा ने भी मेरे कान ऐंठने की कोशिश की और शाम को घर लौटते समय मुझे डांटते हुए वह कड़े स्वर में बोला

"अगर इसी तरह की हरकते करेगा तो निकाल देंगे! आखिर इतना हसने की क्या बात थी?"

और उसने समझाया कि जब दुकान का कारिंदा महिलाओ को अच्छा लगता है, तो माल खूब बिकता है।

"जरूरत न होने पर भी महिला एकाध फालतू जोडा खरीदने चली आयेगी ताकि मन को अच्छा लगनेवाले कारिंदे को देख सके। क्या तू इतनी सी बात भी नहीं समझता? तेरे साथ माथापच्ची करना भी "

साशा के ये शब्द मुझे बुरे लगें। कोई भी तो मेरे साथ मायापच्ची नहीं करता था, साशा तो खास तौर पर।

हर रोज सवेरा होते ही वार्वचिन मुझे साशा से एक घंटा पहले ही जगा देती। वह एक बीमार और चिड़चिड़े स्वभाव की स्त्री थी। उठते ही मैं समोवार गर्म करता, जितने भी अलावघर* थे सब के लिए लकड़ी लाता, जूठे बरतन माजता, कपडा को ब्रुश से झाडता और अपने मालिक, कारिंदे तथा साशा के जूतों पर पालिश करता। दुकान मे झाड़ देता, गर्द साफ करता, चाय बनाता, जूतो के बण्डल लोगो के घरों पर पहुचाता और उसके बाद भोजन लाने घर जाता। जब तक मैं ये सभी काम निपटाता द्वार पर साशा मेरी जगह सभालता और इस काम को अपनी शान के खिलाफ समझ मुझपर बरस पडता

"कद्दू की दुम, तेरे बदले मुझे यहा चाकरी बजानी पडती है! "

मैं आजाद जीवन बिताने का आदी था,–खेतो और जगलो मे, मटमली ओका नदी के तट या कुनाविनो की रेतीली सडको पर। अपना वर्तमान जीवन मुझे उबा देनेवाला और कष्टप्रद मालूम होता। मुझे अपनी नानी की याद आती, अपने मित्रो का अभाव अखरता। यहा कोई ऐसा न था जिससे दो घडी बातें कर मैं अपना जी बहलाता। जीवन का जो कुत्सित तथा बनावटी रूप यहा मुझे घेरे था, उससे मेरा दम घुटने लगता।

बहुधा ऐसा होता कि कोई महिला आती और बिना कुछ खरीदे ही दुकान से विदा हो जाती। तब वे तीनो अपने को आहत अनुभव करते। मालिक चाशनी मे पगी अपनी मीठी मुसकान को तहाकर जेब मे रख लेता और आदेश देता

"काशीरिन, जतो को उठाकर एक ओर रख दो!"

"उसे भी यहीं आकर अपनी थूथनी दिखानी थी, सूअरनी कहीं की! घर बैठे-बठे जब मन नहीं लगा तो कमीनी बाजार की धूल छानने चली आई। अगर वह मेरी जोरू होती तो मैं "

उसकी पत्नी एक दुबली पतली, काली आखो और लम्बी नाक वाली

---

*बेकरी की भट्ठी जैसे अलावघर पुराने रूस मे सभी घरा मे होते थे और अब भी गावो म होते हैं। अलावघर मे खाना पकाया जाता था और वह घर को गरम भी रखता था। इसके अलावा अलावघर के ऊपर और उसकी बगल मे लोग सोते थे।–स०

स्त्री थी। वह उसपर चीखती चिल्लाती थी, और ऐसे कसकर खबर लेती थी मानो पति न होकर वह उसका चाकर हो।

बहुधा, सभ्य ढग से गरदन झुका-झुकाकर और चिकने चुपडे वचनों की बौछार करते हुए वे परिचित महिला को विदा करते और जब वह चली जाती तो उसके बारे मे गदी और लज्जाहीन बातें करते। तब मेरे मन मे होता कि मैं भागकर बाजार मे उस महिला के पास जाऊ और उसे वह सब बताऊ जो उन्होंने उसके बारे मे अपने मुह से उगला था।

जाहिर है, यह तो मैं जानता था कि पीठ पीछे लोग एक-दूसरे के बारे मे बुरी बातें कहने के आदी होते हैं, लेकिन ये तीनो तो सभी लोगों के बारे मे विशेष रूप से ऐसे भली-बुरी बातें करते मानो इस धरती पर वे ही सबसे अच्छे हो और अन्य सब पर फब्तियां कसने के लिए ही उन्हें इस दुनिया मे भेजा गया हो। वे अधिकाश लोगो से ईर्ष्या करते थे, उनके मुह से किसी की प्रशसा न निकलती और हरेक के बारे में अपने जखीरे मे कुछ न कुछ कुत्सित बातें जमा रखते थे।

एक दिन दुकान मे एक युवती आई चमकदार आखें, गुलाबी कपोल, बदन पर मखमल का चोगा जिसपर काले फर का कालर लगा था। काले फर से घिरा उसका चेहरा किसी अद्भुत फूल की भाति खिला हुआ था। जब उसने अपना चोगा उतारकर साशा की बाह पर डाला, तो उसका सौन्दर्य और भी लौ देने लगा। उसके कानो मे हीरो के बुदे चमक रहे थे, और नीले भूरे रग की खूब चुस्त पोशाक मे उसके शरीर का कमनीय रेखाए और भी उभर आई थीं। उसे देखकर मुझे अतीव सुदर वसिलीसा की याद हो आई। मुझे लगा कि अगर और भी कुछ नहीं तो यह गवर्नर की पत्नी अवश्य होगी। उसके स्वागत अभिवादन मे वे फर्श चूमने लगे, अग्नि पूजको की भाति उसके सामने दोहरे हो गये, मधु मे डूबे शब्दो की उन्होंने झडी लगा दी। तीनो के तीनो उतावले होकर पागलो का भाति दुकान मे इधर से उधर मडराने लगे। शोकेसो के काच मे उनके अक्स झलकते और ऐसा मालूम होता मानो प्रत्येक चीज लपटो से घिरी है, पिघलकर एकाकार हो रही है और जसे अभी, देखते देखते, वह एक नया रूप और नया आकार प्रकार ग्रहण कर लेगी।

जल्दी से जूता का एक कीमती जोडा खरीदने के बाद जब वह चली गयी तो मालिक ने चटकारा भरा और फुकारते हुए बोला

"कुतिया है, कुतिया!"

"सीधी बात है – एक्ट्रस!" फारिदे ने भी तिरस्कारपूर्वक कहा।

और वे एक-दूसरे को उस महिला के यारो तथा रंगीन जीवन के किस्से सुनाने लगे।

दोपहर का भोजन करने के बाद मालिक झपकी लेने के लिए दुकान के पीछे वाले छोटे कमरे मे चला गया। मौका देख मैंने उसकी सोने की घडी उठाई, उसका ढक्कन खोला और उसके पुर्जों मे कुछ सिरका चुआ दिया। मालिक की जब आखें खुलीं और घडी हाथ मे लिये जब वह बडबडाता हुआ दुकान मे आया, तो मेरे आनन्द की सीमा न रही।

"यह एक नयी मुसीबत देखो – मेरी घडी एकाएक पसीने से तर हो गई! इस तरह की बात पहले कभी नहीं हुई थी। घडी और पसीने मे एकदम तर! कहीं कोई मुसीबत तो नहीं?"

दुकान की इस दौड धूप और घर के सारे काम-काज के बावजूद ऊब मुझे हर वक्त घेरे रहती और मैं बार-बार यही सोचता ऐसा क्या करू कि ये लोग परेशान होकर मुझे दुकान से निकाल दें?

हिमकणो से आच्छादित लोग दुकान के दरवाजे के सामने से तेजी से गुजरते। ऐसा मालूम होता मानो उन्हें किसी को दफनाने के लिए कब्रगाह मे जाना था, लेकिन देर हो गई और अब जनाजे तक पहुचने के लिए वे तेजी से कब्रगाह की ओर लपके जा रहे हैं। माल ढोनेवाली गाडियो मे जुते घोडे बर्फ मे धसे पहियो को खींचने के लिए जोर लगाते। ईसाई चालीसे के दिन थे। दुकान के पीछे वाले गिरजे के घटे की उदास ध्वनि प्रति दिन कानो से आकर टकराती। घटा बजता ही रहता और ऐसा मालूम होता मानो कोई तकिये से सिर पर प्रहार कर रहा हो जिस से चोट तो नहीं लगती, मगर इसान बुद्धू और बहरा सा होता जाता है।

एक दिन जब मैं आगन मे दुकान के दरवाजे के नजदीक माल की एक नयी पेटी खोल रहा था, गिरजे का चौकीदार मेरे पास आया। टेढी कमर वाला यह बूढा कपडे की गुडिया की भांति लिजबिज और ऐसा खस्ताहाल था मानो कुत्तो ने घेरकर खूब नोचा-खरोचा हो।

"खुदा के बन्दे, तुम मेरे लिए गालोशो का एक जोडा ही दुकान से चुरा लो, एं?" उसने कहा।

मैंने कुछ जवाब नहीं दिया। वह एक खाली पेटी पर बठ गया, उसने जम्हाई ली, मुह के सामने सलीब का चिह्न बनाया और फिर बोला

"चुरा ला, ऍं?"

"चोरी करना अच्छा नहीं है," मैंने उसे बताया।

"फिर भी करते हैं। मेरे बुढापे का खयाल करो।"

वह उन लोगो से भिन्न और रुचिकर था जिनके बीच मैं रह रहा था। मैंने महसूस किया कि उसे इस बात का पक्का विश्वास था कि मैं चोरी करने के लिए तयार हू और मैं एक जोड़ा गालोश उठाकर खिड़की से चुपचाप उसे पकड़ा देने को राजी हो गया।

"अच्छी बात है," खुशी का कोई खास भाव प्रकट किये बिना वह शात भाव से बोला। "कहीं मुझे चकमा तो नहीं दे रहे? ठीक है, ठीक है, तुम उनमे से नहीं हो जो चकमा देते हैं।"

क्षण भर चुपचाप बठा हुआ वह अपने बूट के तले से नम और गदी बर्फ को कुरेदता रहा, फिर मिट्टी का पाइप सुलगाया और एकाएक मुझे डराते हुए बोला

"और अगर मैं तुम्हे चकमा दे दू, तो? उन्हीं गालोशों को लेकर तुम्हारे मालिक के पास जाऊ और कह कि तुमने आधे रूबल मे उन्हें मेरे हाथ बेच दिया है, ऍं? उनका दाम है दो रूबल से भी ज्यादा, और तुमने बेच दिया उन्हें आधे रूबल मे! मिठाई के लिए, ऍं?"

गूगे की भाति मैंने उसकी ओर देखा, मानो उसने जो धमकी दी थी, उसे पूरा कर भी चुका हो। और वह आंखें अपने जूते पर टिकाये और पाइप से नीला धुआ छोड़ते हुए नकियाते स्वर मे धीरे धीरे कहता गया

"और अगर ऐसा हो कि खुद तुम्हारे मालिक ने ही मुझे सिखाया हो कि 'जाओ, जाकर मेरे इस छोकरे की जाच करो कि वह चोरी तो नहीं करता', तब क्या कहोगे तुम?"

"मैं तुम्हे जूते नहीं दूगा," झुझलाकर मैंने कहा।

"नहीं, एक बार वचन देने के बाद तुम अब पीछे कसे हट सकते हो?"

उसने मेरा हाथ थाम लिया और मुझे अपनी ओर खींचा। फिर अपनी ठडी उगली मेरे माथे पर मारते हुए बोला

"तुमने न सोचा न समझा और झट से तयार हो गये जूते भेंट करने को–लो, ले लो?!"

"खुद तुम्हीं ने तो इसके लिए कहा था।"

"कहने को तो मैं दुनिया भर की चीजो के लिए कह सकता हू। मैं कहू कि गिरजे को लूटो, तो क्या तुम लूटोगे? भला आदमी पर भी क्या भरोसा किया जा सकता है? अरे, मेरे भाडू भट्ट! "

उसने मुझे धकेलकर अलग कर दिया और खडा हो गया।

"मुझे चोरी के गालोश नहीं चाहिये। फिर मै कोई रईस भी नहीं हू जो गालोशा के बिना रह नहीं सकता। मैं तो मजाक कर रहा था तुम्हारी सादगी के लिए मैं तुम्हे गिरजे के घटेघर पर चढ़ने दूगा, ईस्टर के दिन आना। तुम घटा बजाओगे, और वहा से तुम्हे नगर का समूचा दृश्य दिखाई देगा।"

"नगर तो मेरा देखा भाला है।"

"घटेघर से वह और भी सुदर दिखाई देता है।"

धीमे डगा से, जूतो की नोक को बफ मे गडाते हुए वह गिरजे के कोने के पास से मुडकर आखो से ओझल हो गया। मै उसे जाते हुए देख रहा था और एक दु खद बेचैनी से डरते डरते सोच रहा था–बूढ़ा क्या सचमुच मुझसे मजाक कर रहा था या मालिक ने मेरी जाच करने के लिए ही उसे भेजा था? दुकान पर लौटने का मुझे साहस नहीं हुआ।

साशा आंगन मे निकल आया और चिल्लाकर बोला

"इतनी देर से कमबख्त यहा क्या कर रहा है!"

एकाएक गुस्से की लहर मेरे शरीर मे दौड गई और मैंने सडासी दिखाकर उसे धमकाया।

मैं जानता था कि वह और कारिदा मालिक के यहा चोरी करते हैं। बूट या जूतो का एक जोडा उठा कर वे अलावघर की चिमनी मे छिपा देते और दुकान बद करते समय चोरी के जूतो को कोट की आस्तीनो मे छिपाकर घर ले जाते। मुझे यह अच्छा नहीं लगता था और इससे मुझे डर भी महसूस होता था। मालिक की चेतावनी को मैं भूला नहीं था।

"तुम चोरी करते हो न?" मैंने साशा से पूछा।

"नहीं, मै नहीं," उसने कठोरता से स्पष्ट किया। "कारिदा करता है। मैं तो केवल उसकी मदद करता हू। वह कहता है–मैं जसा कहू,

वसा करो। अगर मै वसा न करू तो यह किसी समय भी मुझे अपनी गदी चाल में फसा सकता है। और मालिक तो खुद भी दुकान मे कारिंदे का काम कर चुका है, सभी कुछ जानता है। हां, तू अपना मुह बन्द रखियो।"

बोलते समय वह बराबर आईने मे अपना चेहरा देखता और अपनी टाई को ठीक करता रहा। उसकी उगलिया कारिंदे के अन्दाज मे फ्ली हुई थीं। वह लगातार मुझपर अपना रोब जमाता, भारी आवाज मे मुझपर चिल्लाता और आदेश देते समय ऐसे हाथ आगे बढ़ाता मानो मुझे धकेल रहा हो। कद मे मैं उससे लम्बा और मजबूत था, लेकिन हड्डीला और बेडौल। इसके उलट वह मासल था, नम नम और चिकना चुपडा। फ्राक काट और पतलून पहने हुए वह मुझे बडा रोबीला लगता था, किन्तु उसमे कुछ हास्यास्पद तथा अप्रिय चीज भी थी। वह बावर्चिन से घृणा करता था, जो अजीब सी स्त्री थी—यह समझना असभव था कि वह अच्छी है या बुरी।

"मुझे तो लडाई भिडाई सबसे ज्यादा पसन्द है," अपनी दमकती हुई काली आखो को बरबट्टा सी खोलकर वह कहती। "मुर्गे लडें या कुत्ते या दहकान—मेरे लिए सब बराबर हैं!"

अगर आगन मे कभी मुर्गों या कबूतरो की लडाई शुरू हो जाती तो वह हाथ का काम छोडकर खिडकी पर जम जाती और दीन-दुनिया से बेखबर, लडाई खत्म होने तक वहीं खडी रहती। जब साझ होती तो वह साशा और मुझसे कहती

"यहा बठे-बठे क्या मक्खिया मार रहे हो, लडको! बाहर निकलो, खूब लडो भिडो, जोर आजमाई करो!"

साशा झुझला उठता

"मैं लडका नहीं हू, मूर्खा की नानी! मैं छोटा कारिंदा हू!"

"मैं यह नहीं मानती। जब तक तुम्हारी शादी नहीं हो जाती, मेरे लिए तो तुम लडके ही रहोगे!"

"मूर्खा की नानी, बोले मूर्खों की बानी!"

"शैतान अक्लमन्द है पर खुदा उसे प्यार नहीं करता।"

उसकी उक्तिया साशा को खास तौर से बहुत खिजाती थीं। साशा उसे चिढाता तो वह अपनी दृष्टि से उसे ध्वस्त करते हुए कहता

"अरे तिलचट्टे, तू भगवान की गलती है!"

साशा ने कई बार मुझे इस बात के लिए उकसाने की कोशिश की कि मैं उसके तकिये मे पिनें खोस दू, या जब वह सोती हो उसके मुह पर काली पालिश या काजल पोत दू, या इसी तरह की कोई अन्य हरकत करू। लेकिन मैं बावचिन से डरता था और वह बहुत ही उचटी हुई सी नींद सोती थी। बहुधा ऐसा होता कि वह सोते-सोते जग जाती, लम्प जलाती और कहीं कोने मे नजर गडाए ताकती रहती। कभी कभी वह उठकर अलावघर के पीछे मेरे बिस्तरे के पास चली आती, मुझे झझोडती और बठी हुई आवाज मे फुसफुसाती

"न जाने क्यो मुझे नींद नहीं आती, आल्योशा। डर सा लगता है। कुछ बात ही कर।"

और मैं जागता ऊघता सा उसे कोई कहानी सुनाता और वह अपने बदन को आगे पीछे झुलाती हुई चुपचाप बठी सुनती रहती। मुझे ऐसा प्रतीत होता मानो उसके गम बदन से मोम और लोबान की गध आ रही हो, और यह कि वह जल्दी ही मर जायेगी, शायद इसी क्षण मुह के बल फश पर गिरेगी और दम तोड देगी। डर के मारे मै जोर से बोलने लगता, लेकिन वह हमेशा टोक देती

"शी, तू उन हरामजादो को भी जगा देगा और वे समझेंगे कि तू मेरा प्रेमी है।"

वह हमेशा एक ही मुद्रा मे और एक ही जगह पर बठती—बदन को एक दम झुकाकर दोहरा किए, हाथो को घुटनो के बीच खोसे और हड्डिया भर रह गई अपनी टागा से उन्हें कसकर दबाये हुए। वह गाढे का लबादा पहनती थी। लेकिन चपटी छातियो वाले उसके शरीर की पसलिया, पिचके हुए पीपे की सलवटो की भाति, उस मोटे लबादे मे से भी साफ उभरी हुई दिखाई देतीं। बडी देर तक वह इसी तरह चुपचाप बैठी रहती और फिर सहसा फुसफुसा उठती

"मर जाऊ तो इन सब दु खो से जान छूट जाये "

या किसी अदृश्य से पूछ लेती

"मैंने अपने जीवन के दिन पूरे कर लिये—तो क्या हुआ?"

"अब सो जा!" मुझे बीच मे ही टोक्कर वह कहती, सीधी हो जाती और उसका धूमिल शरीर रसोई के अधेरे मे चुपचाप विलीन हो जाता।

साशा उसकी पीठ पीछे उसे डायन कहता।

एक दिन मैंने उसे उकसाया

"उसके मुह पर कहो ता जानें!"

"मैं क्या उससे डरता हू?" उसने जवाब दिया।

फिर तुरन्त ही उसने अपने माथे को सिकोड़ा और बोला

"नहीं, मैं उसके मुह पर नहीं कहूगा। कौन जाने, वह सचमुच ही डायन हो "

सभी के प्रति वह चिड़चिड़ेपन और तिरस्कार का भाव अपनाये रहती और मेरे साथ भी कोई रू-रियायत न बरतती। सुबह के छ बजे ही वह मेरी टाग पकडकर खींचती और चिल्लाती

"बहुत खर्राटे ले चुका! अब उठकर लकड़ी ला, समोवार गर्म कर आलू छील! "

उसका चिल्लाना सुनकर साशा की भी आंख खुल जाती।

"क्या आसमान सिर पर उठा रखा है?" वह बडबडाता। "मैं मालिक से जाकर शिकायत करूगा कि मुझे सोने नहीं देती।"

नींद न आने के कारण सूजकर लाल हुई उसकी आंखें साशा की दिशा मे कौंध जातीं और अपने हड्डियो के ढांचे से वह रसोई मे द्रुत गति से उठा धरी करने लगती।

"मुआ कहीं का! भगवान की गलती! मेरे पाले पडता तो चमडी उधेड़कर रख देती!"

"नासपीटी!" साशा उसे कोसता और फिर बाद मे, दुकान जाते समय, मुझसे कहता। "मैं इसका पत्ता कटाकर छोड़ूगा। इसकी आख बचाकर मैं खाने मे नमक झोक दूगा। जब हर चीज खाहर मालूम होगी तो मालिक इसे निकाल बाहर करेंगे। या फिर मिट्टी का तेल। तू यह क्यों नहीं करता?"

"और तू?"

"डरपोक!" वह भुनभुनाकर कहता।

और बावर्चिन हमारे देखते देखते मर गई। एक दिन समोवार उठाने के लिए झुकते ही वह सहसा ढेर हो गई, मानो किसी ने उसकी छाती पर आघात किया हो। वह बाजू के बल लुढ़क गई, उसकी बाहो मे ऐंठन हुई और मुह से खून टपकने लगा।

हम दोना तुरत ही भांप गए कि वह मर चुकी है, लेकिन भय से

ग्रस्त हम वहीं खड़े-खड़े केवल उसे देखते रहे, मुह से एक भी शब्द नहीं निकला। आखिर साशा भाग कर रसोई से बाहर गया और मैं, खिड़की के पास, रोशनी मे किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रहा। मालिक आया, चिन्ताग्रस्त भाव से झुका, उसके चेहरे का स्पर्श किया और बोला

"अरे, यह तो सचमुच मर गई। यह कैसे हुआ?"

कोने मे रखी हुई चमत्कारी सन्त निकोला की छोटी सी प्रतिमा के सामने झुकते हुए मालिक ने तुरत सलीब का चिह्न बनाया और प्रार्थना पूरी करने के बाद दरवाजे की ओर मुह करके चिल्लाया

"काशीरिन, भागकर जाओ और पुलिस को खबर करो!"

पुलिस वाला आया, इधर उधर कुछ खटर-पटर करने के बाद उसने बख्शीश अपनी जेब मे डाली और चला गया। इसके शीघ्र बाद ही मुर्दा ढोने वाले एक ठेले को अपने साथ लिए वह लौटा। सिर और पाव पकडकर उन्होने बावचिन को उठाया और उसे बाहर ले गए। मालिक की पत्नी ने दरवाजे से झाककर मुझ से कहा

"फर्श साफ कर डाल!"

और मालिक ने कहा

"यह भी अच्छा हुआ कि वह साझ के समय ही मरी "

मेरी समझ मे नहीं आया कि इसमे क्या अच्छाई थी। जब हम सोने के लिए बिस्तर पर गए, तो साशा बहुत ही नम्रता से बोला

"लम्प न बुझाना!"

"क्यो, डर लगता है?"

उसने अपना सिर कम्बल से ढक लिया और बहुत देर तक चुपचाप पडा रहा। रात भी एकदम चुप और निस्तब्ध थी मानो वह भी कान लगाकर कुछ सुनना चाहती हो, किसी चीज की प्रतीक्षा मे हो। और मुझे ऐसा लग रहा था मानो अगले ही क्षण घटा बजने लगेगा और नगर के लोग भय से आक्रान्त होकर इधर उधर भागना और चिल्लाना शुरू कर देंगे।

साशा ने कम्बल से अपना सिर बाहर निकालकर अपनी थूथनी की एक झलक दिखाते हुए धीमे स्वर मे कहा

"चल, अलावघर पर चलकर दोनो एक साथ सोए?"

"वहा तो बहुत गर्म होगा।"

कुछ देर तक चुप रहकर उसने कहा

"कैसे यह मर गई—एकदम, न? और मैं उसे डायन समझ रहा था। नींद नहीं आती "

"मेरा भी यही हाल है।"

उसने बताना शुरू किया कि किस प्रकार मुर्दे अपनी क़ब्रो मे से उठकर आधी रात तक नगर का चक्कर लगाते और अपने सगे-सम्बन्धियों तथा घरो की खोज करते हैं।

"मुर्दों को केवल अपने नगर की याद रहती है," वह धीरे धीरे बता रहा था, "गली मोहल्लो और घरो की नहीं "

निस्तब्धता अब और भी गहरी हो गई और मानो अधेरा भी अधिकाधिक घना होता जा रहा था। साशा ने अपना सिर उठाया और पूछा

"मेरे सदूक की चीजें देखेगा?"

मैं बहुत दिनो से यह जानना चाहता था कि उसने अपने सदूक में क्या-क्या छिपा रखा है। वह हमेशा उसको ताला लगाये रखता था। और उसे खोलते समय अजीब सावधानी बरतता था। अगर मैं कभी झाककर देखने की कोशिश करता तो वह डाटकर पूछता

"क्या चाहिये तुझे? हैं?"

जब मैंने देखने की इच्छा प्रकट की तो वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया और सदा की भांति मालिकाना अदाज मे उसने आदेश दिया कि मैं सदूक को उठाकर उसके पाव के पास रखू। कुजी को एक जजीर मे डालकर उसने सलीब के साथ गले मे पहन रखा था। अधेरे कोनो की ओर नजर डालकर रोब के साथ उसने अपनी भौंहो को सिकोडा, ताला खोला और अत में ढक्कन पर इस तरह फूक मारकर माना वह गम हो, सदूक खोला। सदूक मे अडरवेयर के कई जोडे रखे थे। उसने उन्हे बाहर निकाल लिया।

सदूक का आधे से भी ज्यादा हिस्सा गोलियो के बक्सा, चाय के पकटो के रग बिरगे कागजो, सार्डीन मछली और काली पालिश की खाली डिब्बिया से भरा था।

"यह सब क्या है?"

"अभी दिखाता हू "

सदूक को अपनी टांगो के बीच रखकर उसने उसपर झुक्ते हुए धीमी आवाज से गाया

"हे परम पिता, स्वग मे वास करनेवाले "

मुझे उम्मीद थी कि सदूक मे खिलौने देखने को मिलेगे। मैं खिलौनो से सदा वचित रहा था और खिलौनो के प्रति बनावटी उपेक्षा का भाव दिखाता था, किन्तु मन ही मन उनसे ईर्ष्या करता था जिनके पास खिलौने होते थे। यह सोच कर मैं मन ही मन प्रसन्न होता कि साशा के पास, उसकी गम्भीरता और रूखेपन के बावजूद खिलौने हैं जिन्हें शम के मारे उसने छिपा रखा है। उसकी यह लज्जा मेरी समझ मे आती थी।

उसने पहले डिब्बे को खोला और उसमे से चश्मे का फ्रेम निकाला। उसने उसे अपनी नाक पर लगाया, मेरी ओर कडी नजर से देखा और फिर बोला

"इस मे शीशे नहीं हैं तो क्या हुआ। बिना शीशो के भी इसका वसा ही रोब पडता है।"

"जरा मुझे दो। मैं भी लगाकर देखू!"

"यह तेरी आखो से मेल नहीं खाता। ये काली आखो के लिए है और तेरी आखें कुछ भूरी हैं।" उसने मुझे मालिक के अन्दाज से समझाया। किन्तु फौरन ही उसने भयभीत सा होकर सारी रसोई मे नजर दौडाई।

पालिश के एक डिब्बे मे तरह-तरह के बटनो का जखीरा मौजूद था।

"ये सब मुझे सडक पर पडे हुए मिले है!" उसने शेखी बघारते हुए कहा। "खुद मैंने ही जमा किए हैं। पूरे सतीस हैं "

तीसरे डिब्बे मे पीतल की बडी बडी पिनें थीं। ये भी सडक पर पड़ी मिली थीं। फिर आये जूतो के बक्सुवे – घिसे पिटे, तुडे मुडे और सालिम, बूटो तथा जूतो के बकल, छडी की हाथीदात की मूठ, दरवाजे का पीतल का हत्था, एक जनानी कघी और सपनो तथा भाग्य का भेद बतानेवाली एक पुस्तक। इनके अलावा इसी तरह की अन्य बहुत सी चीजें थीं।

चियडो और हड्डियो की खोज करते समय अगर मैं चाहता तो एक महीने के भीतर इससे दस गुना कबाड जमा कर सकता था। साशा के इस जखीरे को देखकर मुझे बडी निराशा और झुझलाहट हुई और उसके प्रति दया से मेरा मन भर गया। वह प्रत्येक चीज को बडे ध्यान से

देखता, बड़े चाव से अपनी उगलियो से उसे सहलाता। उसके मोटे होंठ बड़े रोब के साथ आगे को फले हुए थे, उभरी हुई आँखें बड़े प्यार और ध्यान से चीजो को देखती थीं, लेकिन चश्मे के फ्रेम ने, उसके बचकाने चेहरे को हास्यास्पद बना दिया था।

"इस सब का क्या करोगे?"

चश्मे के भीतर से उसने मुझपर एक उड़ती हुई नजर डाली और अपनी आयु के अनुरूप फटी हुई सी भारी आवाज मे बोला

"बोल, तुझे कुछ भेंट कर दू?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये "

एक क्षण तक वह कुछ नहीं बोला। मेरे इन्कार करने और उसके खजाने मे दिलचस्पी न दिखाने से स्पष्टत उसके हृदय को ठेस लगी थी।

"एक तौलिया ले आ," आखिर उसने धीरे से कहा, "इन स चीजो को चमकाएगे। देख न, इनपर कितनी धूल जमा हो गई है "

सब चीजो को चमकाने और उन्हें सदूक मे रखने के बाद वह करव लेकर दीवार की ओर मुह करके लेट गया। बाहर बारिश शुरू हो ग थी, छत से पानी टपक रहा था और हवा खिडकिया पर थपेडे मा रही थी।

"जरा जमीन सूख जाने दे, बगीचे म तुझे एक ऐसी चीज दिखाऊ कि दग रह जायेगा," मेरी ओर मुह किए बिना ही उसने कहा।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया और चुपचाप बिस्तर मे घुस गया।

कुछ क्षण बाद वह सहसा उछलकर खडा हो गया, दीवार को अपनी उगलियो से नोचने लगा और आश्चर्यचकित करनेवाली दृढ आवाज मे बोला

"मुझे डर लग रहा है भगवान, मुझे डर लग रहा है! मुझपर दया करो, भगवान! यह क्या है?"

तब भय से मुझे भी पसीना छूटने लगा, शरीर ठडा पड गया। मुझे लगा मानो बावचिन मेरी ओर पीठ किए खिडकी के पास खडी है, शीशे से माथा सटाए, ठीक उसी मुद्रा मे जिसमे वह मुर्गों का लडना देखा करती थी।

दीवार को नोचता और लात पटकता हुआ साशा रो रहा था। मैं उठा और लपककर मैंने रसोई के फर्श को ऐसे पार किया मानो उसपर दहकते

अगारे बिछे हो। उसके बिस्तर मे घुसकर मैं उसकी बगल मे लेट गया।

बहुत देर तक हम दोनो की आखो से आसू बहते रहे और अत मे हम थककर सो गये।

कुछ दिन बाद कोई त्यौहार था। केवल दोपहर तक हमने काम किया। दोपहर का भोजन घर जाकर करना था। जब मालिक और उसकी पत्नी विश्राम करने के लिए चले गए तो साशा ने भेद भरे ढग से मुझसे कहा

"आ मेरे साथ!"

मैंने अदाज लगाया कि वह कोई ऐसी चीज दिखाना चाहता है जिसे देखकर मैं दग रह जाऊगा।

हम बगीचे मे गए। दो घरो के बीच भूमि की एक सकरी पट्टी पर लाइम के लगभग दस-पन्द्रह पेड खडे थे जिनके सबल तनो पर काई जमी थी और जिनकी नगी-बूची, जीवन शून्य टहनिया आकाश का मुह ताक रही थीं। उनमे कौवो का एक घोसला तक नहीं था। वृक्ष कब्रिस्तान के स्मारको की भाति खडे थे। लाइम के इन पेडो के सिवा यहां और कुछ नहीं उगा था, न कहीं कोई झाडी थी, न घास ही। पगडडियों की जमीन तपे लोहे की भाति कडी और काली पड गई थी और आसपास की वे जगहे भी, जो पिछले वर्ष के गले-सडे पत्ता से आच्छादित नहीं थीं, खडे पानी की तरह काई की पतली पतली परत से ढकी हुई थीं।

साशा घर के कोने के पास से मुडा और सडक की ओर वाले बाडे की दिशा मे बढ़कर लाइम के एक पेड के नीचे रुक गया। वहा एक मिनट तक खडे रहकर उसने पडोस के एक घर की धुधली खिडकियो को ताका, घुटनों के बल धरती पर बैठ गया, पत्तो को अपने हाथो से खोदकर उसने अलग कर दिया और तब पेड की गाठ गठीली जड दिखाई दी। जड के पास ही दो ईंटें जमीन मे धसी हुई थीं। उसने ईंटो को खींचकर बाहर निकाल लिया। उनके नीचे छत के टीन का एक टुकडा रखा था। टीन के नीचे लकडी का चौकोर तख्ता था। अन्त मे मुझे एक बडी सी खोह दिखाई दी जो जड के नीचे तक चली गयी थी।

साशा ने एक दियासलाई जलाई और मोमबत्ती के टुकडे को रोशन किया। फिर मोमबत्ती के टुकडे को छेद के भीतर ले जाते हुए बोला

"इधर देख। बस, डरना नहीं..."

लेकिन डरा हुआ वह खुद था, यह बात प्रत्यक्ष थी। मोमबत्ती उसके हाथ मे काप रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ बेहूदा ढग से लटक गये थे, आखें नम थीं और उसका दूसरा खाली हाथ, बार-बार फिसलकर, पीठ पीछे पहुच जाता था। मुझे भी उसके डर ने ग्रस लिया। अत्यन्त सावधानी के साथ मैंने जड के नीचे देखा जो खोह की मेहराब का काम देती थी। साशा ने अब तीन मोमबत्तियां जला ली थीं जिनकी नीली रोशनी से खोह आलोकित थी। वह एक साधारण बालटी जितनी गहरी और उससे अधिक चौडी थी। उसकी दीवारो पर रगीन कांच और चीनी के टुकडे जडे थे। बीच मे एक चबूतरा सा था जिसपर एक छोटा सा ताबूत रखा था। ताबूत पर टीन की कतरन लिपटी थी और उसका आधा भाग गोटे जैसी किसी चीज से ढका हुआ था। इस आच्छादन के भीतर से गौरे के भूरे पजे और चाच दिखाई पड रही थी। सिर की ओर एक नन्ही सी टिकटिकी थी जिसपर पीतल की एक छोटी सी सलीब रखी थी और तीन ओर मिठाई की रुपहली और सुनहरी पन्नियों से बने चमचमाते हाल्डरो मे मोमबत्तिया जल रही थीं।

मोमबत्तियो की नुकीली लौ खोह के मुह की ओर लपलपा रही थी। खोह के भीतरी भाग मे बहुरगी रोशनी के चकत्तो और चमक की हल्की चमचमाहट फैली थी। मिट्टी तथा पिघलते हुए मोम की गध और सडावन के भभके मेरे चेहरे से आकर टकरा रहे थे और खोह के भीतर की खण्डित इन्द्रधनुषी आभा मेरी आखो मे नाच तथा थिरक रही थी। इन सब की वजह से मेरा डर तो विलीन हो गया, लेकिन अचरज की एक बोझिल भावना ने उसका स्थान ले लिया।

"सुन्दर है न?" साशा ने पूछा।

"यह सब किस लिये है?"

साशा ने बताया

"यह एक समाधि है। वैसी लगती है न?"

"मैं नहीं जानता।"

"और ताबूत मे गौरे का शव है। कौन जाने कभी कोई ऐसा चमत्कार हो कि यह शव एक पवित्र स्मारक का रूप धारण कर ले, क्योंकि उसे किसी कसूर के बिना अपनी जान से हाथ धोना पडा था "

"क्या तुझे यह मरा हुआ ही मिला था?"

"नहीं। यह उडकर सायबान मे आ गया था। अपनी टोपी फेंककर मैंने इसे पकड लिया और दबोचकर मार डाला।"

"क्यो?"

"यो ही "

उसने मेरी आखो मे देखा और फिर पूछा

"बढिया है न?"

"नहीं!"

वह खोह के ऊपर झुका, जल्दी से उसने उसपर लकडी का तख्ता ढक दिया, फिर टीन रखा और ईंटो को पहले की तरह ही जमा दिया। इसके बाद वह खडा हो गया और घुटनो पर से धूल झाडते हुए कडे स्वर मे बोला

"तुझे यह क्यो पसन्द नहीं आया?"

"मुझे गौरे पर दया आ रही है।"

उसने अधे की तरह मुझे एकटक देखा और फिर मेरी छाती पर हाथ मारते हुए चिल्ला उठा

"काठ का उल्लू! तू मुझसे जलता है, बस और कुछ नहीं! इसीलिए कहता है कि तुझे यह पसन्द नहीं आया! शायद तुझे इस बात का भी घमड है कि कनात्नाया सडक के अपने बगीचे मे तेरा करतब इससे कहीं अधिक सुदर था?"

"और नहीं तो क्या," मैंने बेहिचक जवाब दिया और मुझे उस कोने की याद हो आई जो कि मैंने अपने लिए सजाया था।

साशा ने अपना कोट उतारकर जमीन पर फेंक दिया। उसने अपनी आस्तीनें चढा लीं, थूककर अपनी हथेलियों को मला और बोला

"अगर ऐसी बात है तो आ जा मैदान मे!"

लडने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मुझपर तो पहले से ही शक्ति क्षीण करनेवाली उदासी हावी थी और अपने ममेरे भाई के क्रुद्ध चेहरे की ओर देखना भी मुझे भारी मालूम हो रहा था।

वह लपककर मेरी ओर झपटा, छाती पर सिर मारकर उसने मुझे गिरा दिया और मेरे ऊपर चढ बैठा।

"जीना चाहता है या मरना?" वह चिल्लाया।

परन्तु मैं उससे ज्यादा मजबूत था और मेरा खून पूरी

उठा था। अगले ही क्षण वह हाथों को सिर से आगे फलाये हुए मुह के बल धरती पर जा गिरा और खरखरी आवाज मे सांस लेने लगा। भयभीत होकर मैंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन दुलत्तियां झाड़कर उसने मुझे अलग कर दिया। इससे मैं और भी आशकित हो उठा। मेरी समझ मे नहीं आया कि क्या करू। इसी असमजस मे मैं एक तरफ को हट गया और तब उसने अपना सिर उठाकर कहा

"अब तू बचकर नहीं जा सकता। जब तक मालिक यहां नहीं आता, मै ऐसे ही पडा रहूगा, मालिक खोजता हुआ जब यहा आयेगा मैं तेरी शिकायत करूगा और वह तुझे निकाल बाहर करेगा!"

उसने कोसा और धमकियां दीं। उसकी बातो से मुझे बहुत क्रोध आया और मैं मुडकर फिर खोह की ओर लपका। ईंटो को मैंने उखाड़ डाला, ताबूत और गौरे को उठाकर दूर, बाड़े के उस पार, फेंक दिया और भीतर का सारा ताम-झाम खोद-खोदकर उसे पाव से रौंद डाला।

"ले, यह ले! और देख, यह गई तेरी समाधि!"

मेरे इस क्रोध का उसपर अजीब प्रभाव पडा वह उठकर बैठ गया, अपना मुह कुछ खोले और भौंहें सिकोडे, मेरी ओर निर्वाक् ताकता रहा। जब मैं तोड फोडकर चुका तो वह इतमीनान से उठा, उसने अपने को झाडा और कोट पहनकर शान्त स्वर मे द्वेषपूर्वक बोला

"अब देखियो क्या होता है। जरा ठहर तो! मैंने यह खास तौर से तेरे लिए ही बनाया था। यह एक टोना था—समझा!"

मेरी तो जसे जान निकल गई। उसके शब्दो के आघात ने मेरे घुटने ढीले कर दिये। मुझे ऐसा मालूम हुआ जसे मेरे शरीर की हर चीज ठडी पड गई हो। मुडकर एक बार भी देखे बिना वह वहां से चल दिया। उसकी शान्ति ने मुझे पूणतया पस्त कर दिया था।

मैंने निश्चय किया कि अगले ही दिन इस नगर, मालिक, साशा और उसके जादू टोने, इस समूचे बेमानी और भयावह जीवन को छोडकर यहां से चल दूगा।

अगली सुबह को नयी बावर्चिन मुझे जगाते समय चिल्ला उठी

"हे भगवान, तेरे खोबडे को यह क्या हुआ है?"

मुझे ऐसा लगा कि मेरा हृदय जवाब दे रहा है। हो न हो, टोने ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। अब कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

लेकिन बावचिन पर हसी का कुछ ऐसा दौरा सवार हुआ और वह इस तरह खिलखिलाकर हसी कि मैं खुद भी हसे बिना न रह सका। मैंने उसके आईने मे झाककर देखा। मेरे चेहरे पर काजल की एक मोटी परत चढ़ी थी।

"यह साशा की करतूत है न?" मैंने पूछा।

"और नहीं, तो क्या मैंने किया है?" बावचिन ने हसते हुए कहा।

मैंने जूतो पर पालिश करना शुरु किया। जसे ही मैंने एक जूते मे अपना हाथ डाला कि मेरे हाथ मे एक पिन गड गई।

"यही है साशा के जादू-टोने का असर!" मैंने मन ही मन कहा।

पिनें और सुइया सभी जूतो मे छिपी थीं और इस चतुराई से कि मेरे हाथो मे गडे बिना न रहे। तब मैंने ठडे पानी से भरा डोल उठाया और उसे ओझे के सिर पर उडेल दिया जो अभी तक सो रहा था, या नींद का बहाना किए पडा था।

लेकिन मेरा मन अभी भी भारी था। ताबूत, गौरा, उसके भूरे और सिकुडे हुए पजे, उसकी छोटी सी मोमियाई चोच और उसके चारो ओर की चमचमाहट जो इन्द्रधनुषी आभा की समानता का निष्फल प्रयास कर रही थी यह सब मेरे दिमाग मे इतना छा गया था कि उससे पीछा छुडाना मुश्किल था। ताबूत ने मेरी कल्पना मे भीमाकार रूप धारण कर लिया, पक्षी के पजे बढ़ने और आकाश की ओर अधिकाधिक ऊचे उठने लगे, एक दम सजीव और स्पन्दनशील!

मैंने उसी साझ सब कुछ छोड छाडकर भागने की योजना बनाई। लेकिन दोपहर के भोजन से ठीक पहले जब मैं तेल के स्टोव पर शोरबा गर्म कर रहा था, मैं सपने देखने मे रम गया और शोरबा उबलने लगा। स्टोव बुझाने की उतावली मे मैंने उसपर रखा बरतन अपने हाथो पर गिरा लिया। नतीजा यह हुआ कि मुझे अस्पताल भेज दिया गया।

अस्पताल का वह दु स्वप्न मुझे याद है थरथराते, पीले शून्य मे सिर पर कफन से लपेटे भूरी और सफेद आकृतियो के दल प्रकट होते, कराहते और भनभनाते, एक लम्बा आदमी, जिसकी भौंहे मूछो के समान थीं, बसाखी लिए, अपनी काली लम्बी दाढ़ी को बराबर नचाता और चिल्लाता रहता

"महापूजनीय धर्मपिता को खबर [illegible]

अस्पताल के पलग मुझे ताबूता की याद दिलाते थे। छत की ओर नाक ताने उनपर लेटे हुए मरीज मुझे मृत गोरो की भाति मालूम हाते। पीली दीवारें डोलने लगतीं, छत मे बादबान की भाति लहरें उठतीं, फ़र्श उभारा लेता और पलग आगे-पीछे झूमने लगते। प्रत्येक चीज भयानक और बिना भरोसे की थी। खिड़कियो से बाहर पेड़ों की नगी-बूची टहनिया तिरछी नजर आती थीं और कोई उन्हे झकझोरता रहता था।

दरवाजे के पास एक दुबली-पतली, लाल सिर वाली, लाश सी नाचती। छोटे छोटे हाथो से कफन को खीचकर वह अपने चारो ओर समेटती और चीखती

"मुझे पागलो की जरूरत नहीं!"

और बसाखी वाला आदमी चिल्लाता

"महापूजनीय धर्मपिता को "

नानी नाना और दूसरे सभी लोगो से मैंने हमेशा यही सुना था कि अस्पताल मे लोगो को भूखा मारा जाता है। मेरे मन मे यह बात बठ गई कि मैं भी अब दो चार दिन का ही मेहमान हू। चश्मा लगाए एक स्त्री जो कफन सा लपेटे थी, मेरे निकट आई और बिस्तर के सिरहाने लटकी सलेट पर उसने खड़िया से कुछ लिखा। खड़िया के कुछ कण चुरमुराकर मेरे बालो मे आ गिरे।

"तुम्हारा क्या नाम है?" उसने पूछा।

"कोई नाम नहीं।"

"तुम्हारा नाम तो है न?"

"नहीं।"

"बकवास न करो, नहीं तो मार पड़ेगी।"

मार पड़ेगी, इस बात का तो मुझे पहले से ही विश्वास था। और इसीलिए तो मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया था। बिल्ली की भाति फ़ूफ़ूकर बिल्ली की भाति ही वह चोर पावा से विलीन हो गई।

दो लम्प जला दिये गये जिनकी पीली बत्तिया किसी की खोई हुई दो आखो की भाति छत से लटकी थीं—झूलती और चकित भाव से टिमटिमाती मानो दोना फिर एक दूसरे के निकट आने का प्रयत्न कर रही हो।

"आओ, ताश की एक बाजी खेले," किसी ने कोने मे से कहा।

"केवल एक ही बाह से मैं कैसे खेल सकता हू ?"

"ओह, तो उन्होने तुम्हारी एक बाह साफ कर दी, क्यो ?"

मेरे मन मे यह बात बैठते देर नहीं लगी कि ताश खेलने के कारण ही उसकी बाह काटी गई है और मैं सोचने लगा कि मारने से पहले न जाने मेरी क्या दुर्गति की जायेगी।

मेरे हाथो मे जलन होती थी और वे बुरी तरह दुखते मानो कोई मेरी हड्डियो को नोच रहा हो। भय और दर्द से मै मन ही मन कराहता और अपनी आखो को बन्द कर लेता जिससे मेरे आसू किसी को न दिखाई दें, लेकिन वे उमड आते और मेरी कनपटियो पर से बहकर कानो तक पहुच जाते।

रात घिर आई। मरीज अपने अपने बिस्तरो पर पहुच गए, भूरे कम्बलो के नीचे उन्होने अपने आप को छिपा लिया और निस्तब्धता प्रति क्षण गहरी होती गई। केवल एक आवाज थी जो कोने मे से आकर इस निस्तब्धता को भग करती थी

"कोई नतीजा नहीं निकलेगा। दोनो ही पशु है—पुरुष भी और स्त्री भी "

मैं नानी को पत्र लिखना चाहता था कि अभी, जब तक मै जिदा हू, मुझे चोरी छिपे यहा से ले जाये। लेकिन मै लिखता कसे न तो मेरे हाथ काम करते थे और न ही लिखने के लिये कोई चीज थी। मैंने तय किया कि यहा से भाग चलना चाहिए।

ऐसा मालूम होता मानो रात अधिकाधिक बेजान होती जाती थी मानो उसने कभी विदा न होने का निश्चय कर लिया हो। दबे पाव फर्श पर उतर कर मै दोहरे दरवाजे की ओर चला। दरवाजे का एक भाग खुला था और वहा, गलियारे मे, लम्प के नीचे रखी टेकवाली बेंच पर, तम्बाकू के धुए से घिरे साही जसे एक सिर पर मेरी नजर पडी। बाल उसके सफेद थे और उसकी धसी हुई आखें एकटक मुझपर जमी थीं। मै छिप नहीं पाया।

"यह कौन मटरगश्ती कर रहा है ? यहा आ!"

आवाज मे गर्मी थी। धमकी का उसमे जरा भी पुट नहीं था। मैं उसके पास गया और दाढ़ी से भरे एक गोल चेहरे पर मेरी नजर पडी। सिर के सफेद बाल खूब बढ़े हुए थे और रुपहले आलोक की भाति चारो ओर फले थे। उसकी पेटी मे तालियों का एक गुच्छा लटक रहा था।

उसके बाल और दाढी कुछ और बडे होते, तो वह सन्त पीटर के समान दिखाई देता।

"अच्छा तू वह जले हाथो वाला है? रात के समय यहा क्यो घूम रहे हो? यह बात यहा के उसूल कायदो के खिलाफ है।"

उसने धुए का एक बादल मेरे मुह की ओर छोडा, अपनी बाह मेरे गले मे डाली और अपनी ओर खींचते हुए बोला

"डर लगता है?"

"हा।"

"शुरू-शुरू में यहा सभी को डर लगता है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं है, मैं जो पास मे हू। मैं किसी का बुरा नहीं होने दूगा। तम्बाकू पियेगा? नहीं, ऐसा नहीं कर। अभी तू छोटा है, कोई दो बरस और ठहर जा तेरे मा-बाप कहा हैं? नहीं हैं मा-बाप! बिल्कुल ठीक—उनकी तुझे जरूरत भी क्या है? उनके बिना भी जिया जा सकता है। बस डरना नहीं चाहिये!"

उसके शब्द मुझे अच्छे लगे। इतने अच्छे कि कह नहीं सकता। बहुत दिनो से किसी ऐसे आदमी से मेरी भेंट नहीं हुई थी जो सीधे-सादे, मित्रतापूर्ण और समझ मे आनेवाले शब्दो मे बात करता हो।

वह मुझे वापिस मेरे पलग पर ले गया।

"कुछ देर मेरे पास बठो," मैंने अनुरोध किया।

"जरूर बठूगा," उसने उत्तर दिया।

"तुम कौन हो?"

"मैं सिपाही हू, असली सिपाही, काकेशिया वाला। मोर्चे पर भी जा चुका हू—इसके बिना तो काम ही कसे चल सकता था? सिपाही तो लडाइयो के लिए ही जीता है। मैं हगेरियाइयो से लडा हू। चेर्कसो और पोलो से लडा हू। युद्ध, मेरे भाई, एक बहुत ही बडी शतानी चीज है!"

एक क्षण के लिए मैंने अपनी आखें बन्द कर लीं और जब मैंने उन्हें खोला तो उसी जगह पर, जहा सिपाही बठा था, मुझे काली पोशाक में अपनी नानी दिखाई दी। सिपाही अब मेरी नानी की बगल मे खडा था। वह कह रहा था

"हा कोई जीवित नहीं बचा, सब मर गए। क्यों, यही न?"

बाड मे सूरज खिलवाड कर रहा था—हर चीज को सुनहरे रग मे रगकर छिप जाता और फिर सभी को चकाचौंध कर देता मानो कोई बालक शरारत कर रहा हो।

नानी ने झुककर पूछा

"यह क्या हुआ, मेरे लोटन कबूतर? तुम्हे लुज बना दिया? मैंने उस लाल सिर वाले शैतान से कहा था कि "

"एक मिनट ठहरो। क़ानून-क़ायदे के अनुसार मैं अभी सब ठीक किए देता हू," सिपाही ने जाते हुए कहा।

"सिपाही तो हमारे बलाखना का रहनेवाला निकला है " अपने कपोलो से आसू पोछते हुए नानी ने कहा।

मुझे अभी भी ऐसा मालूम हो रहा था मानो मैं सपना देख रहा हू और इसलिये चुप रहा। डाक्टर आया, उसने मेरे हाथो की मरहमपट्टी की और इसके बाद नानी और मैं एक बग्घी मे शहर की सडको पर जा रहे थे।

"और तुम्हारे वो नाना का दिमाग़ तो एकदम सफाचट हो गया है," नानी ने बताया, "इतने कजूस हो गये हैं कि तुम्हारी आतो मे से भी अपनी चीज निकाल ले। और हाल मे उनके नये दोस्त समूर कमाने वाले ह्लीस्त ने तेरे नाना की भजन सहिता मे से सौ रूबल का एक नोट तिडी कर लिया। इसके बाद वह कुहराम मचा कि कुछ न पूछो,—अरे बाप रे!"

सूरज खूब चमक रहा था और बादल आकाश मे सफेद पक्षियो की भाति तर रहे थे। हम जमी हुई वोल्गा पर बिछे तख्तो का रास्ता पार कर रहे थे, तख्तो के नीचे बर्फ भनभनाकर उभरती थी, पानी छपछपाता था, लाल गिरजे के गुम्बदो की सुनहरी सलीबें चमचमा रही थीं। रास्ते मे हमे बडे मुह की स्त्री मिली जो हाथो मे मुलायम विलो की टहनियो का गट्ठा लिए आ रही थी। वसत आ रहा था, शीघ्र ही ईस्टर का उत्सवकाल शुरू हो जाएगा!

मेरा हृदय लवा पक्षी की भाति फडक उठा।

"नानी, बहुत प्यार करता हू मैं तुम्हे!"

नानी को इससे जरा भी अचरज नहीं हुआ।

"यह स्वाभाविक ही है, तुम मेरे नाती जो हो," नानी ने शात भाव

से कहा। "बडबोली बने बिना कह सकती हू कि माता मरियम की मेहरबानी से पराये भी मुझे प्यार करते हैं।"

फिर, मुस्कराते हुए बोली

"शीघ्र ही वह उत्सव मनाएगी—बेटे का पुनर्जन्म होगा! लेकिन मेरी बेटी वार्या "

और वह चुप हो गई

२

नाना से आगन मे ही मेरी मुलाकात हो गई। घुटनो के बल बठे वह कुल्हाडी से एक लकडी को नोकीला बना रहे थे। उन्होने ऐसे कुल्हाडी ऊपर उठाई, मानो मेरे सिर पर फेंककर मारना चाहते हों। फिर अपनी टोपी उतारते हुए व्यग्यपूवक बोले

"आ गए नवाब साहब, हमारे अत्यत माननीय महामहिम! आइए, स्वागत है आपका! नौकरी को भी धता बता आए? अच्छा है, अब करना जो मन मे आए। बस, मेरे सिर न पडना! अरे तुम लोग "

"हमे मालूम है, मालूम है," नानी ने हाथ झटककर नाना का मुह बद कर दिया। कमरे मे जाकर समोवार गर्म करते हुए नानी बोली

"तुम्हारे नाना इस बार सब कुछ गवा बठे। उन्होंने अपनी सारी जमा पूजी अपने धमपुत्र निकोलाई को सूद पर दी और शायद रसीद तक न ली। पता नहीं कसे क्या हुआ, लेकिन नाना एकदम सफाचट रह गए। सारी पूजी गायब हो गई। और यह सब इसलिए हुआ कि हमने कभी गरीबो की मदद नहीं की, दीन-दुखियो के प्रति कभी दया भाव नहीं दिखाया। सो भगवान ने सोचा काशीरिन परिवार के साथ मैं ही क्यों भलमनसाहत बरतू? और सभी कुछ ले लिया "

उसने मुडकर देखा और कहा

"भगवान का हृदय कुछ पसीजे, बूढे को वह इतना कष्ट न दे, इसका मैं थोडा-बहुत उपाय कर रही हू। रात को मैं जाती हू और अपनी मेहनत की कमाई मे से चुपचाप कुछ पसे बाट देती हू। चाहो तो आज तुम भी मेरे साथ चलो। मेरे पास कुछ पसे हैं "

नाना ने भुनभुनाते हुए भीतर पांव रखा।

"क्या भकोसने की फिक्र मे हो?"

"तुम्हारी कोई चीज नहीं हडप रहे हैं," नानी ने कहा, "चाहो तो तुम भी हमारे साथ शामिल हो सकते हो। सब को पूरा पड जाएगा।"

यह मेज पर बठ गए और धीमी आवाज मे बोले

"एक प्याला भर दो "

कमरे मे प्रत्येक चीज जैसी की तैसी थी, सिवा इसके कि मा वाले कोने मे उदास सूनापन छाया था और नाना के बिस्तर के पास वाली दीवार पर कागज का एक टुकडा लटका था जिसपर छापे के बडे-बडे अक्षरो मे यह लिखा हुआ था

"यीशू, मेरी आत्मा का उद्धार करना और जीवन की हर घडी, हर पल मे तुम्हारा पावन नाम मुझे याद रहे।"

"यह किसने लिखा है?"

नाना ने कोई जवाब नहीं दिया। कुछ रुककर नानी ने मुस्कराते हुए कहा

"इस कागज का मूल्य सौ रूबल है!"

"तुम्हे मतलब!" नाना ने चिल्लाकर कहा। "मेरा धन है, मैं चाहे गरो मे लुटाऊ!"

"लुटाने को अब रहा ही क्या है, और जब था तब एक-एक पाई दात से पकडते थे," नानी ने शात भाव से कहा।

"चुप रहो!" नाना चीख उठे।

यहा हर चीज वसी ही थी, ठीक पहले जसी।

कोने मे एक ट्रक पर कपडे रखने की टोकरी रखी थी। उसमे कोल्या सा रहा था। वह जाग उठा। पलको मे छिपी उसकी आखो की नीली चमक मुश्किल से ही दिखाई देती थी। वह अब और भी उदास, खोया खोया सा, एक छाया मात्र रह गया था। उसने मुझे पहचाना नहीं और चुपचाप मुह मोडकर अपनी आखें बद कर लीं।

बाहर गली मे दु खद समाचार सुनने को मिले। व्याखिर मर चुका था—भावन सप्ताह के दौरान उसे चेचक माता उठा ले गई। हाबी अपना बधना-बोरिया उठाकर नगर चला गया था, जब कि याज की टागो को लकवा मार गया था और वह घर से बाहर तक नहीं निकल पाता था। यह सब बताते हुए काली भाखा वाले कोस्त्रोमा ने झुझलाकर कहा

"देखते देखते सब उठ गए!"

"सब कहा, एक व्याखिर ही तो मरा है?"

"एक ही बात है। हमारी गली मे जो नहीं रहा, उसे एक तरह से मरा हुआ ही समझो। मिलना-जुलना और दोस्ती सब बेकार है। किसी से दोस्ती करो, जान-पहचान बढ़ाओ और तभी उसे कहीं काम पर भेज देते हैं या वह मर जाता है। तुम्हारे अहाते मे, चेस्नोकोव घर मे, कुछ नये लोग आए हैं–येल्सेयेको परिवार के लोग। उनमे एक लडका है। यूश्का नाम है उसका। लडका बिलकुल ठीक और खूब चुस्त है। उसके अलावा दो लडकिया हैं। एक छोटी है और दूसरी लगडी, बसाखी लेकर चलती है। देखने मे बडी सुदर है।"

एक मिनट तक कुछ सोचने के बाद उसने इतना और जोड दिया

"मैं और चूर्का उससे प्रेम करते हैं और हम हर घडी लडते झगडते हैं।"

"लडकी से?"

"लडकी से नहीं, एक दूसरे से। लडकी से तो बहुत कम ही झगडते हैं।"

यह तो मैं जानता था कि बडे लडके और यहा तक कि बडे लोग भी प्रेम मे फस जाते हैं और इसका भद्दा मतलब भी जानता था। मुझे परेशानी और कोस्त्रोमा के लिए दुख हुआ, उसके गोल-मटोल शरीर और गुस्से से भरी काली आखो की ओर देखते हुए झेंप महसूस हुई।

उसी शाम को मैंने उस लगडी लडकी को देखा। सीढियों से आगन मे उतरते समय उसकी बैसाखी नीचे गिर पडी और वह, मोम जैसी उगलियो से जगले को थामे वहीं खडी रह गई–असहाय और क्षीणकाय। मैंने बसाखी को उठाना चाहा, लेकिन मेरे हाथो मे बधी पट्टी ने बाधा दी। हताश और झुझलाहट से भरा मैं काफी देर तक बैसाखी को उठाने की कोशिश करता रहा और मुझसे कुछ ऊचाई पर खडी हुई वह धीरे धीरे हसती रही।

"तेरे हाथो को क्या हुआ?" उसने पूछा।

"जल गए।"

"और मैं लगडी हू। तू हमारे इसी अहाते मे रहता है? तुझे अस्पताल मे बहुत दिनो तक रहना पडा? मुझे तो बहुत दिन लगे थे!"

उसने उसास भरकर इतना और जोड दिया

"बहुत ही दिन लगें!"

वह पुराना, मगर सफेद साफ धुला फ्राक पहने थी जिसपर घोड़े के नीले नाल छपे थे। ढंग से सवारे गये बालों की एक मोटी और छोटी सी चोटी उसके वक्ष पर पड़ी थी। उसकी आखें बड़ी और गम्भीर थीं जिनकी शान्त गहराइयों मे नीली अग्नि दमकती थी और उसके क्षीण, तीखी नाक वाले चेहरे को आलोकित करती थी। उसकी मुस्कराहट भी प्यारी थी। लेकिन मुझे वह अच्छी नहीं लगी। रोगी जैसा उसका समूचा शरीर जैसे यह कहता प्रतीत होता था

"कृपया मुझे न छूना!"

यह कैसे हुआ कि मेरे साथी इसके प्रेम मे पड गए?

"मै बहुत दिनों से बीमार हू," खुशी से, यहा तक कि आवाज मे कुछ गर्व का पुट लाते हुए उसने मुझे बताया। "हमारी पड़ोसिन ने मुझपर टोना कर दिया था। लड़ाई तो उसकी हुई मेरी मा से और इसका बदला लेने के लिए उसने टोना कर दिया मुझपर अस्पताल मे डर लगा?"

"हा "

उसकी उपस्थिति मे मुझे बड़ा अटपटा लग रहा था और इसलिये मैं कमरे मे चला आया।

आधी रात के करीब नानी ने धीरे से मुझे जगाया।

"चलोगे नहीं? दूसरों का भला करोगे तो तुम्हारे हाथ जल्दी ठीक हो जाएगे "

उसने मेरी बाह पकड़ी और मुझे पकड़े हुए अधेरे मे इस तरह ले चली मानो मैं अधा हू। रात काली और नम थी, हवा तेज गति से बहने वाली नदी की भांति थमने का नाम नहीं लेती थी और रेत इतनी ठडी थी कि पाव सुन्न हुए जाते थे। नगरवासियों के घरों की अधेरी खिड़कियों के पास नानी सावधानी से जाती, तीन बार सलीब का चिह्न बनाती, खिड़की की ओटक पर पाच कोपेक और तीन बिस्कुट रखकर एक बार फिर सलीब का चिह्न बनाती और तारकहीन आकाश की ओर आखें उठाए फुसफुसाकर कहती

"स्वर्ग की पवित्र रानी, सबपर दया करना – हम सभी तो पापी हैं तुम्हारी नजरों मे, देवी मा!"

अपने घर से हम जितना ही दूर होते जा रहे थे, अधेरा उतना ही घना होता जा रहा था, सन्नाटा बढ़ता जा रहा था। ऐसा मालूम होता था मानो रात के आकाश की अतल गहराइयों ने चाद और तारों को सदा के लिए निगल लिया हो। एक कुत्ता भागकर कहीं से आया और मुह बाए हमारे सामने खडा हो गया। अधेरे मे उसकी आखें चमक रही थीं। भय के मारे मैं नानी से चिपक गया।

"डरो नहीं," नानी ने कहा, "कुत्ता ही तो है। भूत प्रत इस समय बाहर नहीं निकलते, मुर्गे बोल चुके हैं।"

नानी ने कुत्ते को पुचकारा और उसका सिर थपथपाते हुए कहा

"देख कुत्ते, मेरे नाती को डरा नहीं, समझा?"

कुत्ते ने मेरी टागों से अपना बदन रगडा और हम तीनों आगे बढ़े। नानी बारह खिडकियो के पास गई और उनकी ओटक पर अपना 'गप्त दान' रख लौट आई। आकाश उजला हो चला। सलेटी घर अधकार में से उभर आए, नापोल्नाया गिरजे की बुर्जी शक्कर की भाति सफेद चमकने लगी, क़ब्रिस्तान की ईंटो वाली चारदीवारी मे अधिक दरारें दिखाई देने लगीं।

"तुम्हारी यह बूढी नानी तो थक गई," वह बोली, "अब घर चलना चाहिए। औरतें जब सवेरे उठेंगी तो देखेंगी कि माता मरियम ने उनके बच्चों के लिए कुछ भेज दिया है। जब घर मे पूरा नहीं पडता तो थोडा सहारा भी बहुत मालूम होता है। तुमसे क्या कहू आल्योशा कि लोग कितनी ग़रीबी मे जीवन बिताते हैं और कोई ऐसा नहीं है जिसे उनका कुछ ध्यान हो

> अमीर आदमी नहीं करता चिंता भगवान की,
> क़यामत के दिन की और भगवान के न्याय की।
> सोने की माया मे वह है कुछ ऐसा रमा,
> ग़रीबो के प्रति दिल मे न उपजे दया।
> मरने पर जाएगा सीधा नरक,
> सोने की माया मे होगा गरक!

"दुःख की बात तो यही है। हम एक दूसरे का ध्यान रखते हुए जीवन बिताए तो भगवान भी हम सबका ध्यान रखें। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम अब फिर मेरे पास आ गए.."

मैं अस्पष्ट सा यह अनुभव करते हुए मानो मैंने किसी ऐसी चीज का सम्पर्क प्राप्त किया हो जिसे कभी नहीं भूला जा सकता, शान्त भाव से खुश था। मेरे बराबर मे लाल रग की लोमडी जसी थूयनी और सदय तथा क्षमा-याचना सी करती आखो वाला कुत्ता चल रहा था।

"क्या यह अब हमारे साथ ही रहेगा?"

"क्यो नहीं, अगर इसका मन करता है तो हमारे साथ ही रहे। यह देखो, मैं इसे बिस्कुट दूगी, मेरे पास दो बच रहे हैं। आओ, कुछ देर बेंच पर बठ कर सुस्ता ले। मुझे थकान मालूम हो रही है "

हम एक फाटक के पास रखी हुई बेंच पर बैठ गए। कुत्ता हमारे पाव के पास पसरकर सूखे बिस्कुट को चिचोडने लगा। नानी बताने लगी

"पास ही मे एक यहूदिन रहती है। उसके नौ बच्चे हैं, ऊपर-तले के। 'कहो कसे चल रहा है,' एक दिन मैंने उससे पूछा। उसने कहा, 'चलना क्या है, बस भगवान का ही भरोसा है।'"

नानी के गरम बदन से चिपककर मेरी आख लग गई थी।

जीवन एक बार फिर तेज गति से बह चला — छलछलाता और हिलारें लेता हुआ। प्रत्येक नये दिन की प्रशस्त धारा अनगिनत घटनाओ की छाप मेरे हृदय पर छोडती जो कभी मुझे विस्मय विमुग्ध या चिन्तित करती, ठेस पहुचाती या सोचने को विवश करती

लगडी लडकी से यथासम्भव बार-बार मिलने, उससे बाते करने, या दरवाजे के पास पडी बेंच पर उसके साथ केवल चुपचाप बठे रहने की इच्छा मेरे हृदय मे भी शीघ्र ही प्रबल हो उठी। उसके सग चुपचाप बठने मे भी सुख मिलता। वह नन्हे से पक्षी की भाति साफ-सुथरी रहती और दोन प्रदेश के कज्जाकों के जीवन का सुन्दर वणन करती। अपने चाचा के साथ, जो घी-मक्खन बनाने के किसी कारखाने मे मिस्तरी थे, एक लम्बे अर्से तक वह दोन प्रदेश मे रह चुकी थी। इसके बाद उसके पिता, जो फिटर का काम करता था, नीज्नी नोवगोरोद चले आए।

"मेरे एक चाचा और हैं जो खुद जार के यहा नौकरी करते हैं।"

छुट्टी की शाम को गली के सब लोग अपने घरो से बाहर आ जाते। लडके-लडकिया कब्रिस्तान की ओर निकल जाते जहा वे घेरे बनाकर गाते-नाचते, मर्द लोग शराबखानो मे पहुचते और गली मे केवल स्त्रिया तथा

बच्चे ही रह जाते। स्त्रियां बेंचो या घरो के पास रेत पर ही बैठ जातीं और लडाई झगडों तथा इधर उधर की अपनी बातो से आकाश सिर पर उठा लेतीं। बच्चे गेंद और गोरोदकी* के खेल खेलते और उनकी माताए खेल मे दक्षता दिखानेवालो की प्रशसा करतीं या ओछेपन का परिचय देनेवालो का मजाक उडातीं। इतना शोर होता और वह मजा आता कि भुलाए न भूलता। बडो की उपस्थिति और उनकी दिलचस्पी से हम बच्चे और भी जोश मे आ जाते और अपनी पूरी चुस्ती फुर्ती दिखाते हुए डटकर होड करते। लेकिन, खेल मे हम चाहे कितना भी क्यों न डूबे हों, कोस्त्रोमा, चूर्का और मैं लगडी लडकी के पास जाने और अपनी हिम्मत का बखान करने का समय निकाल ही लेते।

"तुमने देखा ल्युदमीला, कैसे एक ही चोट मे मैंने सभी निशानों को गिरा दिया?"

वह कई बार अपना सिर हिलाकर मधुर ढग से मुस्करा देती।

पहले हमारा समूचा दल हमेशा खेल मे एक ही ओर रहने की कोशिश करता था, लेकिन अब मैंने देखा कि चूर्का और कोस्त्रोमा विरोधी पक्षो मे रहना पसद करते है, और एक दूसरे के खिलाफ अपनी समूची शक्ति तथा चतुराई लगा देते है, यहां तक कि मारपीट और रोने धोने की नौबत आ जाती है। एक दिन दोनो को अलग करने के लिए बडो को हस्तक्षेप करना पडा और उनपर पानी उडेला गया मानो, आदमी न होकर वे कुत्ते हो!

ल्युदमीला उस समय बेंच पर बैठी थी। अपना सही सालिम पाव वह धरती पर पटकती और जब लडनेवाले गुत्थम गुत्था होकर लुढ़कते हुए उसके निकट आते तो वह उन्हे अपनी बैसाखी से दूर धकेल देती और भय से चीखकर कहती

"बन्द करो यह लडाई!"

उसका चेहरा पीला पड जाता, मानो बेजान हो। आखें धुधली और फटी फटी सी हो जातीं। ऐसा मालूम होता मानो उसे दौरा आनेवाला हो।

---

*रूस म खेला जानेवाला एक खेल जिसमे एक चौकोर घेरे मे खडे रखे लकडी के बेलनदार टुकडो को दूर से डडा मारकर घेरे मे स बाहर निकाला जाता है।—स०

एक अन्य बार गोरोदकी के खेल मे चूर्का से बुरी तरह हार खाने के बाद कोस्त्रोमा परचूनी की एक दुकान मे, जई की पेटी के पीछे मुह छिपाकर दुबककर बठ गया और सुबक-सुबककर मूक ढग से रोने लगा। भयानक दृश्य था। उसने अपनी बत्तीसी इतने जोरो से भींच ली थी कि उसके जबडे मे पुट्ठे खूब उभर आए और उसका क्षीण चेहरा मानो पथरा गया हो। उसकी काली उदासी भरी आखो से बडे बडे आसू गिर रहे थे। मेरे दम दिलासा देने पर उसने आसुओ के कारण रुधे कण्ठ से फुसफुसाकर कहा

"देख लेना मैं उसके सिर पर इंट दे मारूगा तब उसे पता चलेगा!"

चूर्का बहुत उद्धत हो गया। गली के बीचोबीच इस तरह चलता मानो स्वयवर मे जा रहा हो—सिर पर तिरछी टोपी रखे, जेबो मे हाथ डाले।

वह दातो के बीच से थूक की पिचकारी छोडना सीख गया और यकीन दिलाता

"मैं जल्दी ही सिगरेट पीना सीख लूगा। दो बार तो मै पी भी चुका हू, लेकिन मतली आती है।"

मुझे यह सब अच्छा न लगता। मैं देख रहा था कि मेरा साथी मुझसे दूर होता जा रहा है और मुझे प्रतीत होता कि इसके लिये ल्युदमीला ही जिम्मेदार है।

एक शाम को जब मैं अपने बटोरे हुए चियडो और हड्डियो की छानबीन कर रहा था ल्युदमीला अपनी बसाखी पर झूलते तथा अपना दाहिना हाथ हिलाते हुए मेरे पास आई।

"नमस्ते!" तीन बार अपने सिर को हल्का सा झटका देते हुए उसने कहा। "कोस्त्रोमा तेरे साथ गया था?"

"हा।"

"और चूर्का?"

"चूर्का अब हमारे साथ नहीं खेलता। और यह सब तेरा ही दोष है। वे दोनो तुझसे प्रेम करते हैं और इसीलिए आपस मे लडते हैं"

उसका चेहरा लाल हो उठा, किन्तु व्यग्यपूर्ण स्वर मे बोली

"यह और लो। मैं किसलिये दोषी हू?"

"तूने उन्हें अपने से प्रेम क्यों करने दिया?"

"मैं क्या उनसे कहने गई थी कि तुम मुझसे प्रेम करो?" गुस्से में जवाब दिया और यह कहते हुए चली गई। "यह सब बकवास है! मैं उनसे बड़ी हूं। मैं चौदह साल की हूं। अपने से बड़ी लड़कियों से भी क्या कोई प्रेम करता है?"

"तुझे बड़ा पता है!" उसके हृदय को आहत करने के लक्ष्य से मैंने चिल्लाकर कहा। "दुकानदार ख्लीस्त की बहन इतनी बूढ़ी हो गयी फिर भी ढेर सारे लड़के उससे छेड़खानी करते रहते हैं!"

बसाखी को रेत में गहरी गड़ाते हुए ल्युदमीला मेरे पास लौटी।

"तू ख़ुद कुछ नहीं जानता," उसने आंसुओं से भीगी आवाज में जल्दी जल्दी कहा। उसकी सुंदर आंखों में बिजली कौंध रही थी। "दुकानदार की बहन तो एक आवारा औरत है, लेकिन मैं—तू क्या मुझे भी वैसी ही समझता है? मैं अभी छोटी हूं। किसी को भी अभी मुझे छूना या चिकोटी नहीं काटना चाहिये। अगर तूने "कामचदाल्का" उपन्यास का दूसरा भाग पढ़ा होता तो तू इस तरह की बातें नहीं करता!"

यह सुबकियां लेती हुई चली गई। मुझे उसपर तरस आया। उसके शब्दों में सचमुच कुछ सचाई थी जिससे मैं परिचित नहीं था। मेरे साथी क्यों उसे चिकोटी काटते हैं? तिसपर यह भी कहते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं

अगले दिन ल्युदमीला से अपनी गलती माफ कराने के लिए मैंने दो कोपक की उसकी मनपसन्द मीठी गोलियां खरीदीं।

"लोगी?"

"जा यहां से! मैं तुझसे दोस्ती नहीं रखना चाहती," उसने जबरदस्ती गुस्से में भरकर कहा।

लेकिन उसी क्षण उसने यह कहते हुए गोलियां ले लीं

"इन्हें कागज में तो लपेट लिया होता। जरा अपने हाथ तो देख, कितने गंदे हैं।"

"मैंने इन्हें बहुत धोया, लेकिन ये साफ ही नहीं हुए।"

उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसका हाथ सूखा और गर्म था। उसने मेरा हाथ उलट-पलटकर देखा।

"कितना खराब कर लिया तूने हाथ "

"तेरी उगलियां भी तो छिदी हुई हैं "

"यह सुई की मेहरबानी है। मैं बहुत सीती हू "

कुछ मिनट रुककर, इधर-उधर ताकने के बाद उसने सुझाव दिया "चल, कहीं छिपकर बैठें और "कामचदाल्का" पढ़ें। क्या ख्याल है?"

छिपकर बठने की जगह खोजने मे काफी समय लग गया। अत मे हमने निश्चय किया कि हमाम घर की डयोढ़ी ठीक रहेगी। वहा अधेरा जरूर था, लेकिन हम खिडकी के पास बठ सकते थे जो सायबान और कसाईखाने के बीचवाले गदे मदान की ओर खुलती थी। लोग विरले ही उधर आते थे।

सो वह वहा, खिड़की के पास बैठ गई। उसकी लगडी टाग बेंच पर फली थी और अच्छी सलामत टाग फर्श पर। एक खस्ताहाल पुस्तक उसकी आखो के सामने थी और उसके मुह से नीरस तथा समझ मे न आनेवाले शब्दो की धारा प्रवाहित हो रही थी। लेकिन मुझे उसने अभिभूत कर लिया। फश पर बठा हुआ मैं उसकी गम्भीर आखो से निकलती दो नीली लपटो को पुस्तक के पन्नो पर तिरते हुए देख सकता था—कभी वे आसुओ के कारण धुधली हो जातीं और वह थरथराती आवाज मे, समझ मे न आनेवाले अनजाने शब्द-समूहो का उच्चारण करती। मैं इन शब्दो को पकडता और विभिन्न प्रकार से जोड-तोड बठाकर उन्हे एक छद मे बाधने की कोशिश करता। इसका नतीजा यह होता कि किताब मे क्या कहा गया है वह बिलकुल मेरे पल्ले न पडता।

मेरे घुटनो पर कुत्ता सोया हुआ था। मैंने उसका नाम पवन रख छोड़ा था। कारण कि वह लम्बा और झबरीला था, बहुत ही तेज दौडता था और चिमनी मे पतझड की हवा की तरह आवाज निकालता था।

"सुन रहा है?" लडकी ने पूछा।

मैंने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भर दी। शब्दो का आल-जाल मुझे अधिकाधिक विचलित कर रहा था और मैं अधिकाधिक बेचनी और व्यग्रता के साथ, शब्दो को एक नये क्रम मे गूथकर उन्ह किसी गीत के शब्दों का रूप देना चाहता था, जिसमे प्रत्येक शब्द मानो सजीव होता है तथा आसमान के तारे की तरह उज्ज्वल जगमगाता है।

जब अधेरा हो गया तो ल्युदमीला ने अपना थका हाथ जिसमे वह पुस्तक थामे थी, नीचे कर लिया।

"बढ़िया है न? देखा न "

इस शाम के बाद से हमाम घर की ड्योढ़ी में बहुधा हमारी बठक जमती। और सबसे बडे सन्तोष की बात तो यह थी कि ल्युदमीला ने शीघ्र ही "कामचवाल्का" का पीछा छोड दिया। मैं उसे यह नहीं बता सका कि यह अन्तहीन पुस्तक किस बारे में है। अन्तहीन इसलिए कि दूसरे भाग के बाद (जिससे हमने इसे पढ़ना शुरु किया था) तीसरा भाग सामने आया और ल्युदमीला ने बताया कि चौथा भाग भी है।

बादल बरखा के दिनो मे तो यहां बठने मे विशेष आनन्द आता, केवल शनिवारो को छोडकर क्योकि शनिवार के दिन हमाम घर गम किया जाता था।

वर्षा झमाझम बरसती और किसी को घर से बाहर न निकलने देती। फलत हमारे अधेरे कोने के पास किसी के भी फटकने का कोई खटका न रहता। ल्युदमीला की जान इस बात से बेहद सूखती थी कि कहीं हम पकडे न जाए।

"तुझे पता है कि हमे इस तरह बठा देखकर वे क्या सोचेगे?" वह धीरे से पूछती था।

यह मैं जानता था और इसलिए पकडे जाने से मैं भी डरता था। यहा हम घण्टो बठे बातें करते। कभी मैं उसे नानी की कहानियां सुनाता और कभी ल्युदमीला मेदवेदित्सा नदी के तटवर्ती कज्जाको के जीवन का वणन करती।

"वहा के क्या कहने!" उसास भरकर वह कहती। "यहां की भांति नहीं। यहां तो केवल भिखारी ही रह सकते हैं "

मैंने निश्चय किया कि बडा होने पर मैं जरूर मेद्वेदित्सा नदी की सर करुगा।

शीघ्र ही हमाम घर की ड्योढी मे हमारी बठको का सिलसिला खत्म हो गया। ल्युदमीला की मां को एक समूर कमानेवाले के यहा काम मिल गया और वह सवेरे ही घर से चला जाती, उसकी बहन स्कूल मे पढ़ती थी और भाई एक टाइल फक्टरी मे काम करता था। जब मौसम खराब होता तो खाना बनाने, कमरे और रसोई को ठीक-ठाक करने मे मैं उसका हाथ बटाता।

"हम-तुम पति-पत्नी की तरह ही रहते हैं," वह हसकर कहती।

"केवल हम एकसाथ नहीं सोते। सच पूछो तो हमारा जीवन उनसे अच्छा है—पति तो कभी अपनी पत्नियो की मदद नहीं करते।"

जब भी मेरे पास कुछ पसे होते मैं कोई मिठाई खरीद लाता और हम दोनो चाय बनाते, पीते और बाद मे ठडा पानी डालकर समोवार को ठडा कर देते जिससे ल्युदमीला की चिडचिडी मा यह न ताड सके कि हमने समोवार को गम किया था। कभी-कभी नानी भी आकर हमारे साथ बैठ जाती, लैस बुनती या कसीदा काढती और हमे बहुत ही बढ़िया कहानिया सुनाती और जब नाना बाहर चले जाते तो ल्युदमीला हमारे यहा आती और दीन दुनिया की चिता से मुक्त हम खूब मौज मनाते।

नानी कहती

"कितना ठाठदार जीवन है हमारा। अपने पैसे से जो जी मे आये, वही करो।"

वह हमारे मिलने-जुलने को बढ़ावा देती।

"लडके लडकी की दोस्ती अच्छी चीज है केवल उन्हे कोई अटपटी हरकत नहीं करनी चाहिए "

और अत्यत सीधे-सादे ढग से नानी हमे बताती कि 'अटपटी हरकत' से उसका क्या मतलब है। वह बहुत सुदर प्रेरणापूण ढग से अपनी बात कहती और मैं सहज ही समझ जाता कि फूलो को उस समय तक नहीं छेडना चाहिए जब तक कि वे पूरी तरह से खिल न जाए, अन्यथा न तो वे सुगध देंगे और न ही उनमे फल आएगे।

'अटपटी हरकत' करने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन इसका यह अथ नहीं कि ल्युदमीला और मैं उन चीजो के बारे मे बाते नहीं करते थे जिनका जिक्र आने पर साधारणतया चुप्पी साध ली जाती है। हा, कभी-कभी ऐसे विषयो पर बातें चल ही पडती थीं, क्योकि स्त्री पुरुष सम्बधो के भोडे चित्र बहुत अक्सर और बेहद परेशान करनेवाले रूप मे हमारी आंखो के सामने आते थे और हमे हद से ज्यादा विक्षुब्ध करते थे।

ल्युदमीला के पिता येव्सेयेन्को की उम्र चालीस से कम न होगी। था वह छैलछबीला घुघराले बाल, घनी मूछ और भारी भौंहें जो एक अजीब गर्वीले अदाज मे नाचती रहती थीं। स्वभाव का इतना चुप्पा कि देखकर अचरज होता। मुझे याद नहीं पडता कि मैंने उसे कभी बोलते सुना

हो। जब वह अपने बच्चों को प्यार करता तो गूंगे-बहरों की भांति प्रयास करके रह जाता और अपनी पत्नी को पीटते समय भी उसके मुंह से एक शब्द न निकलता।

पर्व-समारोहों की शामों को नीले रंग की कमीज, चौड़ी मोरियों का मखमली पतलून और पालिश किये गये चमकदार जूते पहने, कंधे पर बड़ा सा एकार्डियन लटकाये वह घर से निकलकर फाटक पर आ खड़ा होता – चुस्त और दुरुस्त, परेड के लिए तैयार सैनिक की भांति। शीघ्र ही फाटक के सामने चहल-पहल शुरू हो जाती। लड़कियों और स्त्रियों के दल बत्तखों के झुंड की भांति सामने से गुज़रते। कभी वे कनखियों से देखतीं – कुछ छिपकर पलकों की ओट में से। कभी वे खुलकर नज़रें लड़ातीं – मानो भूखी आंखों से उसे चटकर जाना चाहती हों। उधर वह अपना अधर फैलाये काली आंखों से उनका अंग-अंग टटोलता। आंखों की इस मूक बातचीत का और पुरुष के सामने स्त्रियों की इस मनहूस तथा धीमी गतिविधि में कुत्ते कुतियों की हरकत जैसी कोई अप्रिय चीज होती थी। ऐसा लगता था कि जिसको भी वह चाहेगा, जिस किसी की ओर भी वह अपनी पुरुष दृष्टि से इशारा करेगा, वही उसके सामने आकर बिछ जाएगी, सड़क की धूल चाटने लगेगी।

ल्युदमीला की मां बड़बड़ाती

"क्या बकरे की भांति आंखें नचा रहा है – निलज्ज लौंडा!" लम्बी, दुबली-पतली, लम्बोतरा और धब्बोंवाला चेहरा, मियादी बुखार के बाद छोटे छोटे छंटे हुए बाल – वह घिसी हुई झाड़ू जैसी लगती थी।

ल्युदमीला वराण्डे में ही बैठी होती और इधर उधर की बातें करके सड़क से अपनी मां का ध्यान हटाने का निष्फल प्रयत्न करती।

"मेरी जान न खा, लगड़ी चुड़ल!" बेचैनी से अपनी आंखें मिचमिचाते हुए उसकी मां बुदबुदाकर कहती। उसकी छोटी छोटी मंगोला आंखों में एक अजीब सूनापन और स्थिरता दिखाई देती – मानो उन्होंने किसी चीज को छुआ हो और फिर उसीसे चिपककर, वहीं की वहीं स्थिर रह गई हों।

"गुस्सा न करो मां, इससे कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा," ल्युदमीला कहती। "जरा उस चटाई बनानेवाले की विधवा को तो देखो, उसने क्या सिंगार किया है!"

मा उस लम्बी-तडगी विधवा की ओर देखती। फिर आसुओ मे भीगे स्वर मे निममतापूवक कहती, "मैं इससे बढ़कर सिगार करती अगर तुम तीनो न होते। भीतर और बाहर, तुम लोगो ने कुछ भी बाकी नहीं छोडा, मुझे पूरी तरह से नोंच खाया!"

चटाई बनानेवाले की विधवा छोटे से मकान जसी लगती थी। उसका वक्ष छज्जे की भाति आगे को निकला हुआ था। कसकर बाधे हुए हरे रूमाल से घिरा उसका लाल चेहरा ऐसा मालूम होता था मानो वह एक झरोखा है जिसे साझ के सूरज की लाली ने रग दिया है।

येव्सेये को अपना एकाडियन सभालता और वक्ष से सटाकर बजाने लगता। बडे रग थे वाद्य-यत्र मे, उससे निकलती ध्वनिया कहीं खींच ले जातीं, गली के तमाम बच्चे खिचे चले आते, वादक के पैरो मे गिरते और मुग्ध होकर रेत पर बुत बने बठे रहते।

येव्सेयेव की पत्नी फुकार छोडती, "जरा ठहर तो, वो दिन दूर नहीं जब तेरी खोपडी तोड दी जायेगी।"

वह चुप्पी साधे तिरछी नजर से उसकी ओर देखता।

चटाई बनानेवाले की विधवा ख्लीस्त की दुकान के सामने वाली बेंच पर तन्मय सी बठी रहती। उसका सिर एक ओर को झुका होता और भाव विभोर होकर वह सगीत सुनती रहती।

कब्रिस्तान के उस पार का मदान छिपते हुए सूरज की लाली से सिदूरी हो उठता और गली एक तेज नदी का रूप धारण कर लेती जिसमे रग बिरगे शोख कपडो मे लिपटे मास के लोथडे तरते और बच्चे बगूलो की भाति चक्कर लगाते। गम हवा मादक हो उठती। धूप मे तपी रेत से पचमेली गध उठती जिसमे बूचडखाने से आनेवाली रक्त की बोझिल गध सब से तेज होती। समूर कमानेवालो के अहातो से खालो की नमकीन तेजाबी गध आती। स्त्रियो की चखचख और चुचुआहट, नशे मे धुत्त पुरुषो का शोर, बच्चो की तेज चिल्लाहट और एकाडियन के मन्द सप्तक के स्वर मिलकर एक ऐसे सगीत का रूप धारण कर लेते जिसकी धडकन दूर दूर तक सुनाई देती—मानो प्रसवमान धरती अथक रूप से गहरी उसासे ले रही हो। सभी कुछ फूहड, नग्न और भोडा होता, और इस कुत्सित जीवन के प्रति जो इस हद तक निलज्ज पाशविकता मे डूबा था, व्यापक तथा सबल विश्वास का सचार करता। अपनी शक्ति की डींग मारते हुए,—

वह उदासी और व्यग्रता के साथ उनकी निकासी के लिए मार्ग खोज रहा था।

और इस शोर शराबे मे से कभी-कभी कुछ ऐसे जानदार शब्द उड़कर आते जो हृदय में खुब जाते और स्मृति मे जमकर बठ जाते

"सभी एक साथ मत टूट पडो, यह ठीक नहीं है बारी-बारी से बोलना चाहिये "

"जब हम खुद अपने पर रहम नहीं करते तो दूसरे ही हम पर क्यो रहम करें ? "

"क्या खुदा ने मजाक के लिए ही लुगाई को बनाया था ? "

रात घिरने लगती। वायु मे और भी ताजगी आ जाती। शोर शराबा शात हो चलता। लकडी के घर मानो बढ और फलकर छायाओ का बाना धारण कर लेते। सोने का समय हो जाता। बच्चो को घरो में खदेड दिया जाता, कुछ वहीं बाडो के नीचे, अपनी माताओ के पावो पर या गोद मे सो जाते। रात आने पर बडे बच्चे भी अधिक शान्त, अधिक नम्र हो जाते। येव्सेयेको, न जाने कब, विलीन हो जाता--मानो वह छाया बनकर उड गया हो। चटाई बनानेवाले की विधवा भी गायब हो जाती और एकाडियन की गहरी ध्वनि अब कब्रिस्तान के उस पार कहीं बहुत दूर से आती मालूम हाती। ल्युद्‌मीला की मा, शरीर को दोहरा किए, वहीं बेंच पर बठी रहती। उसकी पीठ बिल्ली की भाति कमान सी झुकी होती। मेरी नानी पडोसिन के पास जा जनाई और शादी ब्याह का जाड बठाने का काम करती थी, चाय पीने चली जाती। यह पडोसिन एक भारी भरकम और मजबूत पुट्ठो वाली स्त्री थी। उसके चेहरे पर बत्तख की चोच जसी नाक चिपकी थी। उसके मर्दाने वक्ष पर 'मौत के मुह मे जाते हुओ की रक्षा' नामक सोने का एक तमगा लटका रहता था। हमारी गली मे सभी उससे डरते थे। वे उसे डायन, जादू-टोने करनेवाली समझते थे। लोगो का कहना था कि एक बार वह लपटो की परवाह न कर, जलते हुए घर मे घुस गई थी और किसी कनल के तीन बच्चो तथा बीमार पत्नी को अकेली ही बाहर निकाल लाई थी।

नानी और उसमे मित्रता थी। गली मे आते जाते जब भी वे एक दूसरे को देखतीं तो उनके चेहरा पर, दूर से ही, एक खास हार्दिकतापूर्ण मुसकराहट खेल जाती।

एक दिन कोस्त्रोमा, ल्युद्मीला और मैं फाटक के पास बेंच पर बठे थे। चूर्का ने ल्युदमीला के भाई को लडने के लिए ललकारा था, वे एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था हुए, धूल मे हाथ-पाव पटक रहे थे।

ल्युदमीला सहमते हुए अनुरोध कर रही थी, "बद करो यह लडाई!"

कोस्त्रोमा की काली आखें ल्युदमीला पर जमी थीं। कनखियो से उसे देखते हुए वह शिकारी कालीनिन का किस्सा सुना रहा था। कालीनिन एक बूढा खुर्राट था। उसकी आखो से मक्कारी टपकती थी और समूची बस्ती मे वह बदनाम था। हाल ही मे वह मरा था लेकिन उसका ताबूत कब्रिस्तान मे दफनाया नहीं गया, बल्कि अन्य कब्रो से अलग ऊपर ही छोड दिया गया। उसके ताबूत का रग काला था और पाये ऊचे थे। ढक्कन पर, सफेद रग मे सलीब, बर्छी, एक डडा और दो हड्डियो के चित्र बने थे।

बूढ़ा हर रात अपने ताबूत से उठता है और किसी चीज की खोज में, पहले मुर्गे के बाग देने तक, क़ब्रिस्तान मे इधर-उधर भटकता रहता है।

"ऐसी डरावनी बातें क्यो करते हो!" ल्युदमीला ने अनुरोधपूर्ण स्वर में कहा।

"मुझे जाने दो!" ल्युदमीला के भाई के चगुल से अपने को छुडाते हुए चूर्का चिल्लाया और खिल्ली उडाने के अदाज मे कोस्त्रोमा से बोला। "क्यो झूठ बोल रहा है? मैंने खुद अपनी आखो से उन्हे ताबूत को दफनाते और कब्र के पत्थर के लिए एक खाली ताबूत रखते हुए देखा है और जहा तक उसके भूत बनकर रात को कब्रिस्तान मे भटकने की बात है, तो इसे नशे में धुत्त लोहारो ने खुद अपने मन से ही गढ लिया है!"

"हम तो तब जानें जब तुम एक रात कब्रिस्तान मे जाकर बिताओ!" उडती हुई नजर से भी उसकी ओर देखने का कष्ट न कर कोस्त्रोमा ने बिगडकर जवाब दिया।

दोनों मे बहस छिड गयी। उदासी से अपना सिर झटकाते हुए ल्युदमीला ने अपनी मा से पूछा

"क्यो मा, क्या रात को मृतात्माए चक्कर लगाती हैं?"

दूर से आयी हुई प्रतिध्वनि की तरह मा ने जवाब दिया, "हा, लगाती हैं।"

दुकानदारिन का बीस वर्षीय मोटा थलथल और लाल गालो वाला बेटा वालेक हमारे पास आया और हमारा विवाद सुनकर बोला

"तीनों मे से अगर कोई भी सुबह तक तावूत पर लेटा रहे, तो मैं उसे बीस कोपेक और दस सिगरेट देने के लिए तयार हूं, अगर डरकर भागे तो मुझे जी भरकर उसके कान खींचने का अधिकार होगा। बोलो, क्या कहते हो?"

सभी झेंपकर चुप हो गये। ल्युद्मीला की मां ने इस खामोशी को तोडते हुए कहा

"मूर्खता की बातें न कर! बच्चों को इस तरह के काम करने के लिए उकसाना क्या अच्छा है?"

"मुझे एक रूबल दे तो मैं जाने को तयार हूं," चूर्का बुदबुदाया।

"बीस कोपेक मे जाते नानी मरती है, क्यो?" कोस्त्रोमा ने डंक सा मारते हुए कहा। फिर वालेक से बोला, "तुम इसे एक रूबल भी दोगे तब भी नहीं जाएगा। बेकार की डींग मार रहा है।"

"अच्छी बात है। ले रूबल!"

चूर्का जमीन से उठा और बाड के साथ-साथ चलता हुआ चुपचाप तथा धीरे धीरे वहां से खिसक गया। कोस्त्रोमा ने मुह मे अपनी उगलियां डालकर उसके पीछे जोर से सीटी बजाई और ल्युद्मीला व्यग्र स्वर में कह उठी

"हाय राम आखिर इतना बढ़ चढ़कर बोलने की जरूरत ही क्या थी?"

"कायर हो तुम सब!" वालेक ने कोचते हुए कहा। "और गली के सब से बढ़िया लडत समझे जाते हो। पिल्ले कहीं के"

उसका इस तरह कोचना मुझे अखरा। यह मोटा वालेक हमें कभी अच्छा नहीं लगता था। वह हमेशा बच्चो को कोई न कोई शैतानी करने के लिए उकसाता, लडकियो और स्त्रियो के बारे मे गदे क़िस्से सुनाता और बच्चो को उनकी खिल्ली उडाना सिखाता। बच्चे उसके कहने मे आ जाते और बाद मे इसका बुरी तरह फल भुगतते। न जाने क्यो, मेरे कुत्ते से उसे खास चिढ़ थी। वह हमेशा उसपर पत्थर फेंकता और एक दिन तो उसने रोटी के टुकडे मे सूई रखकर उसे खिला दी।

लेकिन चूर्का का इस तरह से मुह की खाकर खिसक जाना मुझे और भी ज्यादा अखरा।

मैंने वालेक से कहा

"ला, दे रूबल, मैं जाता हू।"

मेरी खिल्ली उडाते और मुझे डराते हुए वह ल्युद्मीला की मा के हाथ मे रूबल देने लगा।

"नहीं, मुझे नहीं चाहिए, मैं नहीं रखूगी तुम्हारा रूबल!" ल्युद्मीला की मा ने कडाई से कहा और गुस्से मे भरकर चली गई।

ल्युदमीला ने भी रूबल लेने से इन्कार कर दिया। वालेक हमारा अब और भी अधिक मजाक उडाने लगा। मैं बिना रूबल लिए ही जाने को तयार था कि तभी नानी आ गई। उसने सारा हाल सुना, रूबल अमने हाथ मे ले लिया और शान्त स्वर मे मुझसे कहा

"अपना कोट पहन लेना और एक कम्बल भी साथ ले लेना, सुबह होते ठड हो जाती है "

नानी के शब्दो ने मुझे यह उम्मीद बधाई कि मेरे साथ कोई बुरी बात नहीं होगी।

वालेक ने शर्त रखी कि सुबह होने तक सारी रात मैं ताबूत पर बठा या लेटा रहू, किसी भी हालत मे वहां से न हटू चाहे ताबूत हिले-डुले या उस समय डगमगाए जब बूढ़ा कालीनिन उससे बाहर निकलना शुरू करे। अगर मैं उसपर से कूदकर जमीन पर खडा हो गया तो बाजी हाथ से जाती रहेगी।

"ध्यान रहे," वालेक ने चेतावनी दी, "मैं सारी रात तेरी निगरानी करूगा।"

जब मैं क़ब्रिस्तान के लिए रवाना हुआ तो नानी ने मुझपर सलीब का चिह्न बनाया और मुझे सलाह दी

"अगर तुम्हें कुछ दिखाई भी दे तो अपनी जगह से हिलना नहीं। बस, माता मरियम का नाम लेना, सब ठीक हो जाएगा "

मैं तेज डगों से चल दिया। एक ही चिन्ता मुझे थी। वह यह कि जिस क़िस्से को मैंने उठाया है, वह जल्दी से जल्दी पूरा हो जाए। वालेक, चोस्त्रोमा तथा अन्य कुछ लडके भी मेरे साथ हो लिए। ईंटों की दीवार को पार करते समय मेरी टांग कम्बल में फस गई और मैं गिर पडा। लेकिन मैं फुर्ती से उछलकर खडा हो गया मानो खुद धरती ने पीछे से लात मारकर मुझे फिर से खडा कर दिया हो। दीवार के दूसरी ओर से

हसने की आवाज सुनाई दी। मेरे हृदय मे जसे एक झटका सा लगा और सारे बदन मे फुरफुरी सी दौड गई।

ठोकरें खाता हुआ मैं काले ताबूत के पास पहुचा। एक ओर से वह रेत मे धसा था, दूसरी ओर उसके छोटे-छोटे, मोटे पाये दिखाई दे रहे थे। लगता था मानो किसी ने उसे उठाने की कोशिश की हो और उसे जगह से हिलाया हो। मैं ताबूत के सिरे पर, उसके पायो के ऊपर बठ गया और इधर उधर नजर डाली छोटे-छोटे टीलो की भाति उभरी क़ब्रों का कब्रिस्तान भूरे सलेटी रग की सलीबो का घना जगल सा मालूम होता था। सलीबो की लपलपाती हुई छायाए मानो हाथ फलाकर क़ब्रो के दूहो की सख्त घास का आलिगन करती प्रतीत होती थीं। क़ब्रो के बीच कहीं-कहीं, दुबले पतले, क्षीण भोज वृक्ष उगे थे जिनकी डाले एक-दूसरे से पृथक क़ब्रो के बीच सम्पक स्थापित कर रही थीं। उनकी परछाइयो की लस को बेधती हुई घास की सूखी पत्तिया नजर आती थीं। भूरे रग की ये सूखी पत्तियां सबसे भयानक थीं। क़ब्रिस्तान का गिरजा बफ के एक टीले की भाति खडा था और गतिहीन बादलो मे क्षीणकाय चाद चमक रहा था।

याज के पिता—'निकम्मे आदमी'—ने बडी अलसाहट के साथ गदत का घटा बजाया। हर बार, जब वह घटे की रस्सी खींचता तो वह छत की चादर से रगड खाकर पहले तो दर्दीली आवाज पदा करती और उसके बाद छोटे घटे की शोक मे डूबी लघु आवाज सुनाई देती।

मुझे चौकीदार की बात याद हो आई। वह अक्सर कहा करता था, "भगवान उनींदी रातो से बचाये"।

सभी कुछ भयानक और दमघोट था। रात ठडी थी, फिर भी मैं पसीने से तर हो गया। अगर बूढ़े कालीनिन ने अपने ताबूत मे से निकलना शुरु किया तो क्या मैं भागकर चौकीदार की कोठरी तक भी पहुच सकूगा या नहीं?

मैं क़ब्रिस्तान के कोने-कोने से परिचित था। याज और अपने अन्य साथियो के साथ यहा आकर बीसियो बार हम धमाचौकडी मचा चुके थे। और वहा, गिरजे के पास, मेरी मा की क़ब्र थी

अभी सब कुछ नींद की गोद मे नहीं गया था। बस्ती की ओर से क़हकहे और गीतो के टुकडे अभी भी सुनाई दे रहे थे। पहाडियो पर से

रेलवे के उन खड्डो से जहा मजदूर रेत खोदकर निकालते थे, या पडोस के कातीग्रोव्का गाव से, एकाडियन के चीखने और सुबकियां सी लेने की आवाज आ रही थी। सदा नशे मे धुत्त रहनेवाला लोहार मियाचोव कब्रिस्तान की दीवार के उस पार लडखडाता तथा गीत गाता हुआ जा रहा था। सुनकर मैं उसे पहचान गया

ओ हमारी अम्मा
के पापवा हैं कम्मा
और न किसी को चाहवे
बपुआ ही उसे भावे

जीवन और चहल पहल की इन आखिरी सासो को सुनकर कुछ हिम्मत बधी, लेकिन घटे की प्रत्येक टनटन के साथ सन्नाटा गहरा होता गया और चरागाहो को डुबोने और उन्हे छिपा लेनेवाली नदी की भाति निस्तब्धता ने हर चीज का अस्तित्व मिटा दिया, अपने मे उसे समा लिया। आत्मा सीमाहीन, अथाह शून्य मे तर रही थी और अधेरे मे दियासलाई की तरह बुझ जाती थी—शून्य के एक ऐसे महासागर मे वह पूर्णतया विलीन हो गई जिसमे केवल हमारी पहुच से दूर रहनेवाले तारे जीवित रहते और जगमगाते हैं और जमीन पर हर मुर्दा और अवाछनीय चीज गायब हो गयी।

कम्बल को अपने चारा ओर लपेटकर और पाव सिकोडकर मैं बठा था। मेरा मुह गिरजे की ओर था और हर बार जब भी मैं हिलता डुलता, ताबूत चरमर करता और रेत किरकिरा उठती।

मेरे पीछे जमीन से किसी चीज के टकराने की ठक से आवाज हुई—पहले एक बार, फिर दूसरी बार, और इसके बाद ईंट का एक ढेला ताबूत के पास आ गिरा। यह भयावह था, लेकिन मैंने तुरत भाप लिया कि यातेक और उसके साथी मुझे डराने के लिए दीवार के उस पार से ये सब फेंक रहे हैं। यह सोचकर कि दीवार के उस पार लोग मौजूद हैं, मेरी दिलजमई हुई।

अपने आप ही मा के बारे मे विचार आने लगे एक बार उसने मुझे तभी आ पकडा था जब मैं सिगरेट पीने की कोशिश कर रहा था और वह मुझे मारने लगी। तब मैंने उससे कहा था

"नहीं मारो। बिना मारे ही मेरा बुरा हाल है। मतली आती है..."

मार के बाद मैं अलावघर के पीछे जा छिपा। मां की आवाज कानो मे आई, वह नानी से कह रही थी

"कितना हृदयहीन लडका है। इसके मन मे किसी के लिए ममता नहीं है"

मा की यह बात सुनकर मुझे बडा दु:ख हुआ था। वह जब भी मुझे मारती पीटती थी तो मुझे उसपर तरस आता था, उसके लिए झेंप अनुभव होती थी बिरले ही वह मुझे उचित और ऐसी सजा देती थी, जो मेरी करनी के अनुरूप होती।

दु ख पहुचानेवाली चीजो की जीवन मे कोई कमी नहीं थी। अब इन लोगो को ही लो जो दीवार के उस पार मौजूद थे। उन्हें अच्छी तरह से मालूम था कि यहा, इस क़ब्रिस्तान मे, अकेले बठे रहना ही कुछ कम भयानक नहीं था। लेकिन वे थे कि मेरी रूह को और भी अधिक कब्ज करने पर तुले थे। आखिर क्यो?

मेरा मन हुआ कि चिल्लाकर उनसे कहू

"शतान तुम्हे जहन्नुम रसीद करे!"

लेकिन क़ब्रिस्तान मे शतान का नाम लेना ख़तरनाक था। कौन जाने उसे वह कसा लगे? वह जरूर कहीं पास मे ही होगा।

रेत मे अबरक के कणो की बहुतायत थी और वे चाद की रोशनी मे हल्की चमक दिखा रहे थे। उन्हे देखकर मुझे याद आया कि एक दिन जब बेडे पर लेटा हुआ मैं ओका नदी के पानी को देख रहा था, ठीक मेरी आखो के सामने सहसा एक नन्ही सी मछली प्रकट हुई थी, लोट-पोटकर उसने मानवीय गाल का रूप धारण कर लिया था, पक्षियो जसी छोटी सी गोल आख से उसने मेरी ओर ताका था और फिर पेड से गिरे पत्ते की भाति फरफराती, डुबकी लगाकर पानी की गहराइयो मे गायब हो गई थी।

मेरी स्मृति अत्यन्त क्रियाशील हो उठी और जीवन की विभिन्न घटनाओ को उभारकर मानो इनके जरिये उन तमाम डरावनी चीजों से अपनी रक्षा करने लगी जिनकी इस समय मेरी कल्पना जोर-शोर से रचना कर रही थी।

यह लो मजबूत पायो से रेत मे खडबड करती एक साही मेरी ओर

आई। उसे देखकर मुझे घर के कोने कोने मे छिपे भूत का ध्यान हो आया, जो ऐसा ही छोटा और इतना ही भोंडा होता होगा।

इसके साथ ही मुझे यह भी ध्यान आया कि कसे नानी अलावघर के सामने उकड़ू बठकर यह मन्त्र पढ़ा करती थी

"मेरे नन्हे भूत, मुवे तिलचट्टो को ले जा! "

दूर, नगर के ऊपर जो मेरे दृष्टि क्षेत्र से परे था, आकाश मे उजाला फलने लगा। प्रात काल की ठडी हवा से मेरे गाले सिहरने सिकुडने लगे। नींद के मारे मेरी पलके भारी हो गईं। मैं कम्बल ओढकर गुडी-मुडी हो गया—जो भी होना हो, सो हो!

नानी ने आकर मुझे जगाया। वह मेरी बगल मे खडी कम्बल को खींच रही थी और कह रही थी

"उठो अब! ठिठुर तो नहीं गये? कहो, डर लगा?"

"डर तो लगा, लेकिन किसीसे कहना नहीं। लडको को नहीं बताना!"

"इसमे छिपाने की क्या बात है?" नानी ने कुछ अचरज से पूछा। "अगर डर नहीं लगता, तो बडाई की बात ही क्या "

हम दोनो घर की ओर चले। रास्ते मे नानी ने प्यार से कहा

"मेरे लोटन कबूतर, दुनिया मे हर चीज का खुद तजुर्बा करके देखना होता है जो खुद सीखने से कन्नी काटता है, उसे दूसरे भी नहीं सिखाते "

साझ तक मैं अपनी गली का "हीरो" बन गया। जो भी मिलता, मुझसे पूछता

"डर नहीं लगा?"

और म जवाब देता "डर तो लगा!"

सिर हिलाकर वे जवाब देते

"अरे, देखा न!"

दुकानदारिन ने बडे विश्वास के साथ जोरो से घोषणा की

"इसका मतलब यह है कि कालीनिन का कब्र से निकलकर चक्कर लगाना एकदम झूठी बात है। अगर यह बात सच होती तो क्या वह इस लडके से डरकर क़ब्र मे ही दुबका रहता? नहीं, टाग पकड कर यह इतने जोरो से इसे क़ब्रिस्तान से बाहर फेंकता कि जाने कहां जाकर गिरता!"

ल्युदमीला ने मुझे चाव भरे अचरज से देखा और मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो नाना भी मुझसे खुश हैं—उनकी बत्तीसी खिली हुई थी। केवल चूर्का ऐसा था जो जलकर बोला

"इसे कौन खटका? इसकी नानी तो जादूगरनी ठहरी!"

३

मेरा भाई कोल्या सुबह के छोटे सितारे की भांति योंही चुपचाप ग्रोझल हो गया। वह, नानी और मैं बाहर सायबान मे जमा लकड़ियों के ढेर पर सोते थे जिनपर पुराने चिथड़े और गूदड़ फले थे। पास ही छेदों भरी लकड़ियों की बनी दीवार के पीछे मकान-मालिक का मुर्गीघर था। अलसाई और पेट मे दाना पड़ी मुर्गियों की कुटकुट और उनके परो की फड़फड़ाहट हम हर सांझ सुनते और हर सुबह स्वर्णिम मुर्गे की जोरदार बाग से हमारी आंख खुल जाती।

"ओ, तेरा बेड़ा हो गरक हो" नानी बुदबुदाती।

मैं पहले ही जग गया था और दीवार की दराजो मे से आनेवाली सूरज की किरणो और उनमे तरते धूल के रुपहले कणो को देख रहा था जो परियों की कहानी के शब्दों की भांति चमचमा रहे थे। लकड़ियों के ढेर से चूहे खड़बड़ कर रहे थे और छोटे छोटे लाल कीड़े जिनके परो पर काली चित्तियां थीं, घूम फिर रहे थे।

मुर्गियों की बीट और कूड़े-कचरे की गंध से घबराकर कभी-कभी मैं सायबान से बाहर निकल आता और छत पर चढ़कर वहां से पड़ोसियों को जागते हुए देखता—डीलडौल मे लम्बे चौड़े, नींद से बोझिल और मुंदी हुई सी आखें!

एक खिड़की मे से खेवये फेरमानोव का, जो एक गुमसुम शराबी था, झबरा सिर प्रकट होता। अपनी गुम्मा सी आंखों को मिचमिचाकर वह सूरज की ओर देखता और मुंह से सूअर की भांति आवाज निकालता। फिर नाना की शक्ल दिखाई देती—वे तेजी से अहाते मे आते अपने सिर के गिने चुने लाल बालों को दानों हाथों से ठीक करते हुए। ठंडे पानी से नहाने की जल्दी मे वह गुसलखाने की ओर लपके जाते। मकान-मालिक

की बातूनी बावचिन नजर आती, जिसका चेहरा झाइयोंवाला और नाक नुकीली थी। वह कोको पक्षी से मिलती जुलती थी। खुद मालिक भी किसी बूढ़े और मोटे कबूतर जैसा था और अहाते के अन्य सब लोग भी मुझे किसी न किसी पशु या जंगली जंतु की याद दिलाते थे।

सुहावनी और उजली सुबह थी, लेकिन मेरा मन भारी था और कहीं दूर खेतों की ओर जाने को जी चाहता था, जहां मेरे सिवा और कोई न हो। मैं जानता था कि लोग हमेशा की भांति उजले दिन पर अवश्य कालिख पोत देंगे।

एक दिन जब मैं छत पर लेटा हुआ था, नानी ने मुझे बुलाया और सिर हिलाकर बिस्तरे की ओर इशारा करते हुए धीमे से बोली

"कोल्या तो मर गया "

लड़के का नन्हा शरीर मलमल के लाल तकिये से लुढ़ककर फल्ट की चटाई पर आ गया था। उसका नीला सा बदन उघड़ा हुआ था। कमीज सिकुड़ सिमटकर गरदन से लिपट गई थी और उसका फूला हुआ पेट तथा फोड़ों से भरी बदनुमा टांगें दिखाई दे रही थीं। उसके हाथ अजीब ढंग से कमर के नीचे धंसे हुए थे मानो उसने उठने का प्रयत्न किया हो, लेकिन उठ न सका हो। उसका सिर एक ओर को कुछ झुक गया था।

कंघे से अपने बालों को सुलझाते हुए नानी बोली, "भगवान ने अच्छा किया जो इसे अपने पास बुला लिया। भला, इस मरियल शरीर को लेकर यह जीता भी किस तरह?"

परों को धपधपाते, मानो नाचते हुए नाना भी आ गए और बहुत ही सावधानी से उन्होंने बच्चे की मुंदी हुई आंखों को छुआ। नानी ने झल्लाकर कहा

"बिना धुले हाथों से इसे क्यों छू रहे हो?"

नाना बुदबुदाए

"दुनिया मे पदा हुआ दो चार दिन सास ली, दाना पानी चुगा— और बस फुर "

नानी ने बीच मे टोका, "यह कसी बेकार की बाते कर रहे हो?"

नाना ने बहकी-बहकी नजर से नानी की ओर देखा और अहाते की तरफ जाते हुए बोले

"इसे दफनाने के लिए मेरे पास एक दमडी भी नहीं है। तुम से जो बने, करना "

"धिक्कार है तुझ बदकिस्मत को।"

मैं बाहर खिसक गया और साझ होने पर ही घर लौटा।

कोल्या को अगले दिन सवेरे दफना दिया गया। मैं गिरजे मे नहीं गया और जब तक सारा काय समाप्त नहीं हो गया, अपनी मा की कब्र के पास बठा रहा। मा की क़ब्र खोदकर खोल दी गई थी ताकि मेरा छोटा भाई उसी मे दफनाया जा सके। मेरा कुत्ता और याज का बाप भी मेरे साथ बठे थे। याज के बाप ने क़रीब-क़रीब मुफ्त मे ही क़ब्र खोद दी थी और मेरे पास बठा अपनी इस उदारता की शेखी बघार रहा था।

"जान-पहचान की बात है, नहीं तो एक रूबल से कभी कम न लेता "

मिट्टी के पीले गढे से बदबू आ रही थी। मैंने उसमे झाककर देखा और काले नम तख्तो पर मेरी नजर पडी। मेरे जरा सा भी हिलने पर रेत की पतली पतली धाराए सरसराकर गढे के तल मे गिरने लगतीं जिससे अगल बगल झुरिया सी बन जाता। इसीलिए मैं जान-बूझकर हिलता ताकि रेत उन तख्तो को ढक दे।

याज के बाप ने धुए का कश खींचते हुए कहा, "शतानी नहीं कर।"

नानी अपने हाथो मे एक छोटा सा सफेद ताबूत लिये आयी। 'निकम्मे आदमी' यानी याज का बाप—गढ़े मे कूद गया, नानी के हाथो से उसने ताबूत लिया और उसे वहीं काले तख्तो के पास, जमा दिया। फिर वह उछलकर गढे से बाहर आ गया और अपनी टागो तथा फावडे से रेत को गढ़े मे भरने लगा। उसका पाइप धूपदान की भाति धुआ छोड रहा था। नानी और नाना ने भी चुपचाप उसका हाथ बटाया। न कोई पादरी था, न भिखारियो का जमघट। सलीबो के इस जगल मे बस, हम चारों ही थे।

चौकीदार को मजदूरी देते समय नानी ने उसकी भत्सना करते हुए कहा

"लेकिन तुमने मेरी बेटी का ताबूत भी झझोड डाला, क्यो?"

"मैं क्या करता? मैंने तो पास की क़ब्र तक की जमीन भी खोद डाली। इसमे परेशानी की कोई बात नहीं।"

नानी ने जमीन तक माथा झुकाकर कब्र को प्रणाम किया, नाक बिसूरी, हूकी और कब्र से चल दी। अपने घिसे हुए फ्राक कोट को ठीक करते तथा टोपी के छज्जे के नीचे अपनी आखो को छिपाते हुए नाना भी पीछे-पीछे हो लिए।

सहसा नाना ने कहा, "ऊसर भूमि मे हमने अपना बीज डाला था।" और मेड पर से उडनेवाले कौवे की भाति लपककर नाना हम सब से आगे निकल गए।

मैंने नानी से पूछा

"नाना ने यह क्या कहा?"

नानी ने जवाब दिया, "वही जाने उनके अपने विचार हैं।"

बडी उमस थी। नानी धीमे डगो से चल रही थी। गम रेत मे उसके पाव धस जाते थे। रह रहकर वह रुक जाती और रुमाल से अपने मत्थे का पसीना पोछती।

आखिर साहस बटोरकर मैंने नानी से पूछा, "क़ब्र के भीतर जो वह काला-काला दिखाई देता था, क्या वह मा का ताबूत था?"

"हा," नानी ने झुझलाकर जवाब दिया। "वह बूढा खूसट न जाने कैसी कब्र खोदता है! एक साल भी नहीं हुआ और बार्या सड गयी। यह सब रेत की वजह से हुआ है। पानी रिस रिसकर भीतर पहुच जाता है। अगर चिकनी मिट्टी होती, तो अच्छा रहता "

"कब्र मे क्या सभी सडने लगते है?"

"हा, सभी। केवल सतो को छोडकर "

"लेकिन तुम कभी नहीं सडोगी!"

नानी रुक गई, मेरी टोपी ठीक की और फिर गम्भीर स्वर मे बोली

"ऐसी बातो के बारे मे नहीं सोचना, ऐसा करना ठीक नही। सुना तुमने?"

लेकिन मैंने मन ही मन सोचा

"कितनी दुखद और कितनी कुत्सित होती है मृत्यु! कितनी घिनौनी!"

मेरी बहुत बुरी हालत थी।

जब हम घर पहुचे तो देखा कि नाना ने समोवार गम कर रखा है और मेज सजी है। नाना ने कहा

"चाय तयार है। आज मैं सबके लिए अपनी ही पत्तियाँ डालूंगा। ओह, कितनी उमस है!"

फिर वह नानी के पास गए और उसके कंधे को थपथपाते हुए बोले

"चुप क्यों है, वार्या की मां?"

नानी ने हाथ हिलाया और बोली

"तुम्हीं बताओ, मैं क्या कहूं?"

"यही तो! भगवान की मार इसी को कहते हैं। धीरे धीरे सभी कुछ तीन-तेरह होता जा रहा है अगर परिवार के लोग मिलकर रहते, हाथ की उंगलियों की भांति "

नाना ने एक मुद्दत से इतने कोमल और इतने शान्तिपूर्ण अन्दाज में बातें नहीं की थीं। मैं नाना की बातें सुनता हुआ यह आशा कर रहा था कि उनकी बातें मुझे अपने हृदय के दुःख और उस पीले गढ़े को भूल जाने में मदद देंगी जिस की बगल में वे काले काले नम धब्बे दिखाई दिए थे।

परन्तु नानी तेज आवाज में बोल उठी

"चुप भी रहो। इन शब्दों को रटते तुम्हारा जीवन बीत गया, लेकिन क्या कभी उनसे किसी का भला हुआ? होता भी कैसे, सारी उम्र तुम लोगों को नोचते खाते ही रहे, जैसे जंग लोहे को खाता है "

नाना ने भिनभिनाकर नानी की ओर देखा और फिर चुप हो गए।

सांझ के समय फाटक पर ल्युदमीला को मैंने सुबह का सारा हाल बताया। लेकिन मेरी बातों का उसपर कोई खास असर नहीं पड़ा।

"अनाथ होना अच्छा है। अगर मेरे मां-बाप मर जाएं तो अपनी बहिन को अपने भाई के पास छोड़ मैं जीवन भर के लिए मठ में चली जाऊं। इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकती हूं? लंगड़ी होने की वजह से मेरा विवाह कभी होगा नहीं—मैं काम कर नहीं सकती। और अगर विवाह हो भी गया तो मैं लंगड़े बच्चों को ही जन्म दूंगी "

मोहल्ले की अन्य सभी सयानी स्त्रियों की भांति बड़ी समझदारी से उसने बातें कीं, लेकिन उस सांझ के बाद न जाने क्यों उसमें मेरी दिलचस्पी खत्म हो गयी। सच तो यह है कि मेरा जीवन भी कुछ ऐसे ढर्रे पर चल पड़ा कि उससे मिलने का मौका तक न मिलता।

भाई की मृत्यु के कुछ दिन बाद नाना ने मुझसे कहा

"आज जल्दी सो जाना। कल सूरज निकलते ही मै तुझे जगा दूगा और दोनो लकडिया बटोरने जगल चलेगे "

नानी ने कहा, "और मै जडी-बूटिया बटोरकर लाऊगी।"

हमारी बस्ती से डेढ़-दो कोस दूर, दलदली भूमि मे, भोज और चीड वृक्षो का जगल था। सूखे वृक्षो और टूटी हुई टहनियो की वहा भरमार थी। एक बाजू वह ओका नदी तक और दूसरे बाजू मास्को जानेवाली सडक से भी परे तक फला था। उसकी फुनगिया के ऊपर देवदार वृक्षो का एक घना झुण्ड एक ऊचे, काले तम्बू के रूप मे दिखाई देता था जो 'सावेलोव का ख्याल' कहलाता था।

काउण्ट शुवालोव इस सारी दौलत के मालिक थे और इसकी कोई खास देखभाल नहीं की जाती थी। कुनाविनो के निवासी इसे अपनी सम्पत्ति समझते थे और इसमे से सूखी झाडिया बटोर ले जाते थे और कभी कभी तो जानदार वृक्षा तक को काट डालते थे। पतझड शुरू होते ही हाथो मे कुल्हाडिया और कमर मे रस्सी बाधे दसियो लोग यहा से जाडे भर के लिए ईंधन ले जाते थे।

पौ फटते ही हम तीनो ओस मे भीगे रुपहले हरे खेत मे चले जा रहे थे। हमारे बाईं ओर ओका नदी के पार द्यात्लोवी पहाडियो की पीली बगलो के ऊपर, श्वेत नीज्नी नोवगोरोद के हरे भरे बाग़-बग़ीचो और गिरजो के सुनहरे गुम्बजो के ऊपर आलसी रूसी सूरज धीरे धीरे उदय हो रहा था। शात और गदली ओका नदी की ओर से हवा के हल्के हल्के और नींद मे मदमाते झोके आ रहे थे। सुनहरी रग के बटरकप झूल रहे थे, ओस के बोझ से झुके बगनी ब्लूबेल फूल मूक दृष्टि से धरती को निहार रहे थे, रग बिरगे सदाबहार फूल कम उपजाऊ धरती पर मुरझाये से हिलडुल रहे थे और गुलाबी रग की वे कलिया—रात की सुदरी शोभा—लाल सितारो की भाति चटक रही थीं।

काली फौज जसा जगल हमारी ओर बढता आ रहा था। पखो वाले चीड वृक्ष भीमाकार पक्षियों की भाति मालूम होते थे और भोज वृक्ष सुघड युवतिया जसे लगते थे। दलदली भूमि की तेजाबी गध मदान मे फल रही थी। मेरा कुत्ता अपनी लाल जीभ निकाले मेरे साथ-साथ चल रहा था, वह एकाएक रुक जाता, नाक सिकोडकर कुछ सूघता और असमजस मे पडकर लोमडी जसा अपना सिर हिलाता।

नाना नानी की ऊनी जाकेट और बिना छज्जे की पुरानी तथा पिचकी हुई सी टोपी पहने थे। वह आंख सिकोड़ते, मन ही मन मुस्कराते, अपनी पतली टांगों को बड़ी सावधानी से उठाते हुए दबे पांव चल रहे थे। नानी नीला ब्लाउज और काला घाघरा पहने थी तथा सिर पर सफेद रूमाल बांधे थी। वह इतनी तेजी से लुढ़कती-पुढ़कती चल रही थी कि साथ देना मुश्किल था।

जंगल के हम जितना ही नजदीक पहुंचते जा रहे थे, नाना की चेतनता भी उतनी ही अधिक बढ़ती जा रही थी। वह गुनगुनाए, गहरी सांस खींचकर उन्होंने फेफड़ा मे खूब वायु भरी और बोलना शुरू किया—पहले कुछ अटक अटककर और अटपटे अन्दाज में, फिर मानो उनपर नशा सा छा गया, और वह चुहचुहाते हुए तथा सुन्दर रूप मे बहते गये।

"जंगल भगवान के लगाए हुए बाग-बगीचे हैं। अन्य किसी ने नहीं बल्कि हवा ने—भगवान के मुंह से निकली दयी सांस ने—इन्हें लगाया है जिगुली की बात है, बहुत पहले की जब मैं जवान था और बजरा खींचने का काम करता था आह, अलेक्सेई, तुझे वह सब देखना भला कहा नसीब होगा जो मैं देख चुका हू! ओका के किनारे किनारे, कासीमोव से लेकर मूरोम तक, बस जंगल ही जंगल। या फिर वोल्गा के उस पार—ठेठ उराल तक—जंगलो के सिवा और कुछ नहीं! मानो एक अन्तहीन और अद्‌भुत सौन्दर्य हिलोरें ले रहा हो!"

नानी ने कनखियो से उन्हें देखा और मुझे आंख मारकर नाना की ओर इशारा किया, और नाना थे कि अपनी धुन मे चले जा रहे थे—टीलों और ठूंठो से ठोकर खाते, लड़खड़ाते और संभलते और मानो अंजुलि भर भरकर हल्के-फुलके शब्दो को बिखेरते, जो मेरी स्मृति मे जमकर बैठते जाते थे।

"बजरा तेल के पीपो से लदा था और हम उसे खींच रहे थे। सत मकारी के दिन मेला होता है न, उसी मे हमे पहुंचना था। हमारे साथ मालिक का कारिंदा था। नाम किरील्लो, पुरेख का निवासी। और एक पुराना, अनुभवी मजदूर था, तातार, कासीमोव का रहनेवाला—और अगर मैं भूलता नहीं तो आसफ उसका नाम था हां तो, जब हम जिगुली पहुंचे, बहाव के प्रतिकूल ऐसी आंधी आई कि उसके थपेड़ो ने हमारी जान ही निकाल ली, पांव वहीं के वहीं रुक गये, दम फूल गया और हम बस

हांफ्ते ही रह गये। सो हम तट पर आ गये और सोचा कि कुछ दलिया ही पका ले। मई का महीना था और धरती पर वसत छाया था। वोल्गा अच्छा-खासा सागर बनी हुई थी और हसो के झुड की भाति, हजारो की सख्या मे झागदार लहरें कास्पियन सागर की ओर तरती चली जा रही थीं। और वसत का हरियाला बाना धारण किए जिगुली की पहाडिया आसमान छूती थीं, आसमान मे सफेद बादल विचर रहे थे और सूरज धरती पर सोना बरसा रहा था। सो हम सुस्ताने बठ गए, जी भरकर प्रकृति के इस समूचे सौदय का हमने पान किया और हमारे हृदय मे तरलता छा गई, हम एक-दूसरे के प्रति अधिक दयालु हो गये। उत्तरी हवा चल रही थी, लेकिन यहा तट पर बडा सुहावना मालूम होता था और भीनी भीनी सुगध आ रही थी। साझ ढलते ही हमारा किरील्लो जो बडी उम्र और गम्भीर स्वभाव का मर्द था, उठकर खडा हा गया और अपने सिर से टोपी उतारकर बोला, 'हा तो जवानो, अब न मैं तुम्हारा मुखिया हू और न नौकर। तुम अब अकेले ही अपना काम सभालना। मुझे जगल बुला रहे हैं, सो मैं चला!' हम सब घबरा गये। जहा के तहा मुह बाये बठे रहे। भला ऐसा भी कभी हुआ है? मालिक के सामने जवाबदेह व्यक्ति के बिना कैसे काम चल सकता है—मुखिया के बिना लोग कसे आगे बढ सकते हैं! माना कि यह हमारी जानी पहचानी वोल्गा ही थी, लेकिन इससे क्या, सीधे रास्ते पर भी भटका जा सकता है। लोग तो मूख जानवर ठहरे, एकदम दयाहीन। सो हम डर गये। लेकिन वह था कि अपनी ज़िद्द पर अडा रहा, 'मैं बाज आया इस जीवन से। गडरिये की भाति तुम्हे हाक्ते रहना मुझे पसन्द नहीं। मैं तो जगल मे जाऊगा!' हम मे से कुछ ये जो उसकी मरम्मत करने और उसे रस्सियो से बाधकर जकडने के लिए उतावले हो उठे। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो उसके पक्ष मे थे। वे चिल्लाए, 'ठहरो!' और पुराना तातार मजदूर बोला, 'मैं भी चल दिया!' अब तो मामला बिल्कुल ही चौपट था। मालिक पर तातार की दो फेरो की मजदूरी चढ़ी थी, और यह तीसरा फेरा भी आधा पूरा हो चुका था। उन दिनो को देखते हुए खासी बडी रकम उसे मिलती। रात होने, तक हम चीखते चिल्लाते रहे। अघेरा घना होने पर एकदम सात जने चले गए—अब हम चौदह या सोलह ही रह गए। ऐसा होता है जगल का जादू।"

"क्या वे डाकू बन गये?"

"कौन जाने, डाकू बन गये या सन्यासी। उन दिनों यह सब एक जैसा ही मामला समझा जाता था।"

सलीब का चिह्न बनाते हुए नानी ने कहा

"आह माता मरियम, क्या हाल हो गया है तेरी सन्तानों का! देखकर हृदय कराह उठता है।"

"शैतान के चंगुल में न फंसें, इसीलिए तो भगवान ने हम सब को बुद्धि प्रदान की थी"

हम ने दलदल के टीलों और चीड वृक्षों के मरियल झुरमुटों के बीच से जानेवाली एक नम पगडंडी पर बढ़ते हुए जंगल में प्रवेश किया। मुझे लगा कि पुरेख निवासी किरील्लो की भांति अगर हमेशा जंगल में ही रहा जाए तो कितना बढ़िया हो। जंगल में न लड़ाई झगड़ा था, न शराब में धुत्त लोगों की चीख पुकार थी, न कोई छीना झपटी थी। यहां न तो नाना की घृणित कंजूसी की याद बनी रहेगी, न मां की रेतीली क़ब्र की। हृदय को दुखाने और जी को भारी बनानेवाली प्रत्येक चीज़ भूल जायेगी।

जब हम एक सूखे स्थल पर पहुंचे तो नानी ने कहा

"यह जगह ठीक है। बैठकर अब कुछ पेट में भी डाल लें।"

अपनी टोकरी में से नानी ने रई की रोटी, हरा प्याज, खीरे, नमक और कपड़े में लिपटा घर का पनीर निकाला। नाना ने उलझन में पड़ते हुए आंखें मिचमिचाकर इन सब चीजों की ओर देखा।

"हे भगवान, मैं तो अपने साथ खाने को कुछ लाया ही नहीं!"

"हम सब इसी में निबट जाएंगे"

देवदार के एक ऊंचे वृक्ष के तांबे जैसे तने से पीठ लगाकर हम बैठ गए। वायु में बिरोजे की गंध फैली थी, खेतों की ओर से हल्की बयार बह रही थी, घास की पत्तियां झूम रही थीं, अपने सांवले हाथों से नानी तरह तरह की जड़ी-बूटियां तोड़ती और मुझे बताती जाती कि सन्तजौन घास कौन कौन रोग को दूर करती है, कंटीली झाड़ों में क्या जादू असर भरा पड़ा है, कि चिपचिपा दलदली गुलाब भी गुणों में किसी से कम नहीं है।

नाना हवा से गिरे वृक्ष काट रहे थे और मेरा काम था कि कटी लकड़ियों को बटोरकर एक जगह जमा करते जाना। लेकिन मैं खिसककर

नानी के पीछे-पीछे जगल की गहराइयो मे चला गया। वृक्षो के सबल और सशक्त तनो के बीच नानी मानो तर रही थी और रह रहकर जब वह नम, सींको से ढकी धरती की ओर झुकती तो ऐसा मालूम होता जैसे पानी मे डुबकी लगा रही हो। नानी चलती हुई बराबर अपने आप से बातें करती जाती थी

"अब इन खुमियो को देखो, कितनी जल्दी निकल आईं—यानी इस बरस ज्यादा नहीं होगी। हे भगवान, गरीबो का ध्यान रखने मे तुम भी चूक जाते हो। जिनके घर मे चूहे डण्ड पेलते हैं, उनके लिए तो ये खुमिया भी बहुत बडी न्यामत हैं!"

मैं चुपचाप और बहुत सावधानी से नानी के पीछे पीछे जा रहा था और इस बात की बडी कोशिश कर रहा था कि मुझपर उसकी नजर न पडे। कभी भगवान, कभी मेढ़को और कभी घास पात से उसकी बातो मे मैं बाधा डालना नहीं चाहता था

लेकिन नानी ने मुझे देख ही लिया।

"नाना के पास जी नहीं लगा, क्यो?"

काली धरती हरे बेल-बूटो से सजी थी। उसकी ओर बार बार झुकती हुई नानी मुझे बताती रही कि कसे एक बार भगवान को बहुत गुस्सा आया। मानवजाति से वह इतने नाराज हो गए कि उन्होंने समूची धरती को बाढ़ से प्लावित कर दिया, जितने भी जीवधारी थे, सभी डूब गए!

"लेकिन माता मरियम ने, समय रहते, अपनी टोकरी उठाई, सभी बीजो को बटोरकर उसमे रखा और फिर सूरज से बोलीं, 'इस छोर से उस छोर तक, सारी धरती अपनी किरनो से सुखा दो, लोग तुम्हारा गुणगान करेंगे!' सो सूरज ने धरती को सुखा दिया और माता मरियम ने छिपाकर रखे हुए बीजो को बो दिया। भगवान ने अब धरती की ओर देखा वह फिर पहले की भाति हरी भरी और आबाद थी—ढोर डगर, पेड पौधे और आदमी, सभी वहा मौजूद थे भगवान के तेवर चढ़ गए। बोले, 'किसने यह दुस्साहस किया है?' तब माता मरियम ने सारी बात बता दी। लेकिन खुद भगवान को भी कुछ कम दुख न था—धरती को उजडा उजडा और सुनसान देखकर उनका हृदय भी मसोस उठता था। सो वह बोले, 'तुमने यह अच्छा किया जो धरती को आबाद कर दिया, माता मरियम!'"

नानी की यह कहानी मुझे पसंद आई। लेकिन इसे सुनकर मुझे अचरज भी हुआ। पूरी गम्भीरता के साथ मैंने पूछा

"क्या सचमुच ऐसा ही हुआ था? माता मरियम तो प्रलय के बहुत बाद पैदा हुई थी न?"

अब नानी के चकित होने की बारी थी।

"तुम्हें यह बात कहां से मालूम हुई?"

"स्कूल मे—किताबो मे लिखी है"

यह सुन नानी का जी कुछ हल्का हुआ। बोली

"स्कूलो मे तो ऐसी ही बाते सिखाते हैं? और किताबें—भूल जाओ तुम उन्हे। दुनिया भर की झूठी बातो के सिवा उनमे और लिखा ही क्या है?"

और वह धीरे से, खुशमिजाजी से हस दी।

"बेवकूफो की बात तो देखो। कहते हैं, भगवान पहले से मौजूद थे, माता बाद मे आई। भला, जब माता ही नहीं थी तो भगवान को जन्म किसने दिया?"

"मुझे क्या मालूम?"

"मुझे क्या मालूम—स्कूल मे यही तो पढ़ाया जाता है—मुझे क्या मालम!"

"पादरी ने बताया था कि माता मरियम ने याकिम और अन्ना के यहा जन्म लिया था।"

"इसका मतलब यह है कि वह मरीया याकिमोवना थीं।"

नानी का पारा एकदम गरम हो गया। कडी नजर से मेरी आखो मे देखकर बोली

"अगर फिर कभी ऐसी बात मुह से निकाली तो देख लेना, मुझसे बुरा कोई न होगा।"

कुछ देर बाद नानी ने समझाया

"माता मरियम सदा से है—अन्य सबसे भी बहुत पहले से। भगवान ने उनके गर्भ से जन्म लिया और फिर"

"और ईसा मसीह?"

नानी ने उलझन मे पडकर आंखें मूद लीं।

"ईसा मसीह ईसा अरे हां?"

मैंने देखा कि नानी से जवाब देते नहीं बन रहा है। यह मेरी जीत थी। नानी को मैंने सृष्टि में रहस्यो मे उलझा दिया था, और यह मुझे बड़ा अटपटा मालूम हुआ।

हम जगल मे बढ़ते ही गए और ऐसी जगह पहुचे जहां सूरज की सुनहरी किरनें नीले धुधलके को बींध रही थीं। सुहावना और सुखद जगल अपनी निजी और निराली आवाज से गूज रहा था—सपने मे डूबी उनींदी आवाज, जो खुद हमे भी स्वप्निल बना रही थी, अपने साथ-साथ हमे भी सपनो की दुनिया मे खींच रही थी। कहीं कासबिल पक्षी टिटिया रहे थे, कहीं टिटमाइस चहचहा रहे थे, कहीं कुकू के खिलखिलाकर हसने की आवाज आ रही थी, कहीं ओरियोल सीटी बजा रहे थे, ईर्ष्या से भरे गोल्डफिंच निरन्तर गीत गाने मे मगन थे और वे विचित्र फिंच पक्षी—विचारो मे डूबे हुए अपना एक अलग शब्दजाल बुन रहे थे। मरकती मेढक हमारी टागो के पास उछल रहे थे, और जड़ो की ओट मे साप अपना सुनहरा फन ऊपर उठाये उनकी ताक मे था। नन्हे दातो से चटर-पटर करती एक गिलहरी, अपनी दुम फुलाए, देवदार वृक्ष की टहनिया मे से कौंद गई। इतनी चीजें थीं कि बस देखते ही रहो। और मन फिर भी यही कहता रहे कि अभी और देखो, बस देखते ही जाओ।

देवदार वृक्षो के तनो के बीच भीमाकार आकृतियो की एक छाया सी दिखाई देती और अगले ही क्षण हरी गहराइयों मे, जहा नीला और रुपहला आकाश झलक रहा था, विलीन हो जातीं। धरती पर गहरी काई का शानदार क़ालीन बिछा था जिसपर नीले और लाल जगली फलो के गुच्छो की कसीदाकारी बनी हुई थी। हरी घास के बीच लाल जगली बेरिया रक्त की बूदो की भाति चमकती थीं और खुमियो की भीनी तेज गध जी को ललचा रही थी।

नानी ने उसास लेते हुए माता मरियम का नाम लिया, "दुनिया की जोत, माता मरियम।"

ऐसा मालूम होता था मानो जगल उसका हो, और वह जगल की। भारी भरकम भालू की भाति झूमती वह चल रही थी, हर चीज को देखती, हर चीज पर मुग्ध होती और कृतज्ञता के शब्द गुनगुनाती। ऐसा लगता मानो सहृदयता उसके शरीर से प्रवाहित होकर जगल मे बह रही हो। नानी का पाव पड़ने पर जब काई दबकर सिमटती सिकुड़ती और

पाव उठ जाने पर जब यह फिर से उभरती फलनी तो मुझे एक खास आनन्द की अनुभूति होती।

जगल मे घूमते घूमते मै सोचने लगा कि कितना अच्छा हो अगर मै डाकू बन जाऊ और अमीरो को लूटकर गरीबो का घर भरू। कितना अच्छा हो अगर इस दुनिया मे सभी खुशहाल और खाते-पीते हो, न वे एक दूसरे से जले, न कुत्सित कुत्तो की भाति एक दूसरे पर गुर्राए। और कितना अच्छा हो कि नानी के भगवान और माता मरियम के पास जाकर मै उनसे भेंट करू और उन्हे बताऊ–सम्पूर्ण सत्य उनके सामने खोलकर रख दू कि लोग कितना दुखद और कितना भयानक जीवन बिताते हैं और मरने के बाद भी कितनी बुरी तरह एक दूसरे को निकम्मी रेत मे दफनाते हैं। और यह कि कितने अधिक और अनावश्यक दुखो ने धरती को दबोच रखा है। और जब मैं यह देखता कि माता मरियम पर मेरी बात का असर हुआ है, मेरी बात का वह यकीन करती हैं, तो मैं उनसे कुछ ऐसी बुद्धि मांगता जिससे दुनिया की चीजो को बदला जा सके, उन्हें पहले से बेहतर बनाया जा सके। मैं उनसे, माता मरियम से, कहता कि मुझे कुछ ऐसा बताओ जिससे लोग मेरा विश्वास करें और मैं निश्चय ही उनके लिए अच्छे जीवन का रास्ता खोज निकालता। माना कि मैं अभी छोटा ही था, लेकिन इससे क्या? ईसा मसीह मुझसे एक ही साल तो बडे थे और एक से एक उनकी बातो को सुनने के लिए आते थे।

एक दिन मै अपने विचारो मे इतना डूबा था कि मुझे कुछ ध्यान न रहा और एक गहरे, खोहनुमा गढ़े मे मैं जा गिरा। एक ठूठ की डाल से रगड खाकर मेरी पसलियां चरमरा गइ और सिर की चमडी उधड गई। गढ़े की तलहटी मे ठडे और चिपचिपे कीचड मे मै धसा पडा था। मन ही मन खीज और शर्म से मैं गडा जा रहा था। चिल्लाकर नानी को डराना मैं नहीं चाहता था, लेकिन इसके सिवा और चारा भी क्या था। इसलिये मैंने उसे पुकारा।

नानी ने पलक मारते मुझे बाहर निकाल लिया और सलीब का चिह्न बनाते हुए बोली

"शुक्र है परमात्मा का! गढ़ा नहीं, यह तो भालू की मांद है। गनीमत समझो कि वह इस समय मांद मे नहीं है। लेकिन अगर वह मौजूद होता तो?"

और नानी आसुओ के बीच हसने लगी। इसके बाद एक झरने पर ले जाकर नानी ने मेरे घाव धोए, दद दूर करने के लिए घावो पर कुछ पत्ते रखे, अपनी कमीज फाडकर उनपर पट्टी बाधी और मुझे रेलवे गाड की झोपडी मे ले गई। मै इतनी कमजोरी महसूस कर रहा था कि अपने पावो घर नहीं पहुच सकता था।

फिर भी लगभग हर दिन मैं नानी से कहता

"चलो, जगल चले!"

और नानी बडी खुशी से इसके लिए तयार हो जाती। हम रोज जगल जाते, जडी-बूटिया और जगली फल बटोरते, खुमिया और जगली बादाम जमा करते। इन सब चीजो को नानी बाजार मे ले जाकर बेचती और इससे जो पसा मिलता, उससे हम गुजर करते।

पतझड बीतने तक यही सिलसिला चलता रहा।

नाना का वही हाल था। "मुफ्तखोर!" नाना चीखते, यद्यपि उनकी खाने की चीजो को हम छूते तक नहीं थे।

जगल मुझमे मानसिक शाति और खुशहाली की भावना जागत करता, और यह भावना मुझे अपने हृदय के दुःख और मन खट्टा करनेवाली अन्य सभी बातो को भूलने मे मदद देती। साथ ही मेरी अनुभूति तीव्र होती जाती, जगल मे देखने परखने की मेरी शक्ति का भी अदभुत विकास हुआ, मेरी दृष्टि पनी हो गई, मेरे कान आवाजो को और भी तेजी से पकडने लगे। मेरी स्मरण शक्ति बढ़ी और दिमाग का वह खाना जिसमे देखी सुनी चीजें जमा रहती हैं, और भी बडा हो गया।

और नानी—उसकी कुछ न पूछो। जितना ही मै उसे देखता, उतना ही चकित होता। नानी की सूझ बूझ मुझे अधिकाधिक चकित और अधिकाधिक कायल करती जाती। यो तो मै नानी को हमेशा ही अन्य सबसे अलग, और अन्य सबसे ऊचा समझता था—धरती के जीवो मे सबसे अधिक सहृदय, सबसे अधिक समझदार। और मेरे इस विश्वास को नानी ने हर घडी पुष्ट ही किया। एक दिन की बात है। साझ का समय था, खुमिया बटोरने के बाद हम घर लौट रहे थे। जगल के छोर पर पहुचकर नानी सुस्ताने के लिए बठ गई और मैं कुछ और खुमिया बटोरने की आशा से, पेडो के पीछे चल दिया।

सहसा नानी की आवाज सुन मैंने मुडकर देखा। नानी पगडडी के

बीचोंबीच शांत भाव से बैठी थी और हमारी बटोरी हुई खुमियों का जड़ें काट-काटकर अलग कर रही थी। नानी के पास में ही भूरे रंग और पतले बदन का एक कुत्ता जीभ निकाले खड़ा था।

नानी कह रही थी, "जा, भाग यहां से! जा, भगवान तेरा भला करे!"

कुछ ही दिन पहले यालेक ने मेरे कुत्ते को जहर देकर मार डाला था। मेरे मन मे हुआ कि इस नये कुत्ते को ही क्यों न पाल लिया जाए। मैं पगडंडी की ओर लपका। कुत्ते ने अपने सिर को मोड़े बिना ही कमान की भांति विचित्र ढंग से अपना बदन तान लिया और हरे रंग की अपनी भूखी आंखों से मेरी ओर देखा, फिर अपनी दुम को टांगों के बीच दबाए जंगल की ओर छलांगें भरने लगा। उसकी चाल-ढाल और तेवर कुत्तों जैसे नहीं थे, और सीटी बजाकर जब मैंने उसे बुलाना चाहा तो वह बेतहाशा झाड़ियों में घुस गया।

नानी ने मुसकराकर कहा, "देखा तुमने? धोखे मे पहले मैंने भी उसे कुत्ता समझ लिया था। फिर देखा—दांत तो भेड़िये के हैं, और गरदन भी! मैं तो डर ही गई ठीक है, बालो, अगर तू भेड़िया है तो जा भाग यहां से! शुक्र है, गर्मियों मे भेड़िये ज्यादा खूंख्वार नहीं होते"

जंगल मे भटकना तो नानी जैसे जानती ही नहीं थी। चाहे जो हो, घर का रास्ता ढूंढ़ पाने मे वह कभी नहीं चूकती थी। घासपात की गंध से ही वह पता लगा लेती कि अमुक स्थान पर किस किस्म की खुमियां होती हैं और अमुक स्थान पर किस किस्म की। बहुधा नानी मेरी जानकारी की भी परीक्षा लेती

"लाल खुमी किस पेड़ के नीचे उगती है? अच्छे और विषैले सिरोयज्का की क्या पहचान है? पर्णांग झाड़ी की ओट मे किस प्रकार की खुमियां उगती हैं?"

किसी पेड़ की छाल पर खरोंच का नन्हा सा निशान देखकर नानी गिलहरी के कोटर का पता लगा लेती। मै पेड़ पर चढ़ता और गिलहरी के कोटर मे जाड़े के लिए जमा सारे अखरोट निकाल लेता। कभी-कभी, पूरी एक पसेरी तक अखरोट हाथ लग जाते।

एक बार, उस समय जब कि मैं पेड़ पर चढ़ा गिलहरी की जमा पूंजी निकालने में व्यस्त था, किसी शिकारी ने बन्दूक चलायी और एक,

साथ सत्ताइस छर्रे मेरे बदन मे घुस गए। नानी ने ग्यारह छर्रे तो सुई से खोद-खोदकर निकाले, बाकी कई साल तक मेरे बदन मे ही घुसे रहे और धीरे धीरे, एक-एक करके, अपने आप बाहर निकलते रहे।

नानी को दर्द के प्रति मेरी सहनशीलता बहुत पसन्द आयी।

उसने मेरी प्रशसा की, "शाबाश, सहन है तो रहन है।"

खुमियो और अखरोटो की बिक्री से जब कभी कुछ फालतू पैसा मिल जाता तो वह रात को पास-पड़ोस के घरो का चक्कर लगाती और खिड़कियों की ओटक पर अपना 'गुप्त दान' रख आती। लेकिन खुद चिथड़ों और पैबन्द लगे कपड़ों मे ही लिपटी रहती। चाहे कोई त्यौहार हो या उत्सव, नानी की इस वेशभूषा मे कभी कोई अन्तर न पड़ता।

नाना कुढ़कर बड़बड़ाते, "इसने तो भिखमगों को भी मात कर दिया। देखकर शर्म मालूम होती है!"

"शर्म की इसमे क्या बात है? मैं तुम्हारी बेटी तो हू नहीं, जिसे ब्याहने की फिक्र हो"

घर मे अब नित्य ही खटपट होती।

"मैंने क्या औरों से ज्यादा पाप किए हैं?" चोट खाए स्वर मे नाना चिल्लाते। "लेकिन भगवान है कि सारी सजा मुझे ही देने पर तुला है!"

नानी उन्हें और भी चिढ़ाती

"शैतान को कोई भी धोखा नहीं दे सकता।"

फिर, अकेले मे, मुझे समझाती

"देखो न, बूढ़े के सिर पर शैतान का भय किस बुरी तरह सवार है। डर के मारे जर्जर हुआ जा रहा है ओह, बेचारा"

गर्मी के उन दिनों मे मैं बहुत तगड़ा हो गया, लेकिन जगल ने मेरी मिलनसारी खत्म कर दी। अपने सगी साथियो के जीवन और ल्युदमीला मे मेरी कोई दिलचस्पी नहीं रही। उसके सयानपन से मैं ऊब चला

एक दिन जब नाना नगर से लौटे तो वह बुरी तरह भीग गए थे। शरद के दिन थे और बारिश हो रही थी। नाना दरवाजे पर खड़े होकर गौरया की भाति फड़फड़ाए और गर्व से तनते हुए बोले

"तो, लफगे, हो जा तैयार, कल से काम पर जायेगा!"

नानी ने झुझलाकर पूछा

"क्या कहा, कहा जायेगा?"

"तुम्हारी बहन मार्योना के यहां—उसके लडके के पास.."

"श्रो, बापू, यह तुमने श्रच्छा नहीं सोचा।"

"चुप रह, बेवकूफ श्रौरत! कौन जाने, वहां यह नवाबजादा बन जाये।"

बिना कुछ कहे नानी ने अपना सिर झुका लिया।

उसी सांझ मैंने ल्युदमीला को बताया कि मैं नगर जा रहा हूं।

वह खोयी-खोयी सी बोली, "मुझे भी कुछेक दिनों मे शहर ले जायेंगे। पिता जी मेरी टांग कटवा देना चाहते हैं, टांग काट देने से मैं अच्छी हो जाऊंगी।"

गर्मियों मे वह सूखकर श्रौर भी दुबली हो गई थी। उसके चेहरे पर नीलापन छा गया था श्रौर श्रांखें श्रब बहुत बडी दिखाई देती थीं।

मैंने पूछा, "डर लगता है?"

"हां," उसने जवाब दिया श्रौर बिना श्रावाज किए चुपचाप रोने लगी।

उसे उदास देखकर ढाढ़स बधाने के लिए मेरे पास कुछ भी तो नहीं था। नगर के जीवन से उसकी ही नहीं, खुद मेरी भी रूह कांपती थी। बहुत देर तक हम दोनो भारी उदासी मे डूबे, चुपचाप, एक दूसरे से चिपके बैठे रहे।

अगर गर्मियों के दिन होते तो मैं नानी के सिर पडता श्रौर कहता कि चलो, भीख मागने चलें! नानी बचपन मे यह काम कर भी चुकी थी श्रौर इसके लिए श्रब फिर तयार हो जाती। ल्युदमीला को भी हम अपने साथ ले लेते। वह एक छोटे से ठेले मे बैठ जाती श्रौर मैं उसे खींचता..

लेकिन यह तो शरद के दिन थे। सडकों पर नमी भरी हवाएं सनसनाती चलती थीं श्रौर श्राकाश अनगिनत बादलो से घिरा रहता था। धरती सिकुड गयी थी श्रौर गदी, अभागिन सी लगती थी

४

मैं श्रब फिर नगर मे रहने लगा। सफेद रग का ताबूत जसा एक दुमंजिला मकान था जिसमे बहुत से परिवार रहते थे। घर यो तो नया था, लेकिन खोखला श्रौर फूला हुश्रा सा लगता था, सात जन्म के भूखे

भिखारी की तरह जिसने एकाएक धनवान बन जाने पर तुरत ही खा खाकर अपना पेट अफरा लिया हो। उसकी बगल सडक की ओर थी। दोनो मजिलो मे आठ आठ खिडकियां थीं और सडक के रुख, जिधर मकान का सामना होना चाहिए था, हर मजिल मे चार-चार। नीचे की खिडकिया अहाते मे एक तग गलियारे की ओर खुलती थीं, और ऊपर की खिडकियो से बाडे के उस पार गदा खड्ड और धोबिन का छोटा सा घर दिखाई देता था।

असल मे गली जसी वहा कोई चीज नहीं थी। मकान के सामने यही गदा खड्ड फला था जिसपर दो जगह सकरे बाध बने हुए थे। उसका बाया छोर जेलखाने को छूता था। खड्ड मे बस्ती का कूडा-करकट फेंका जाता था और उसकी तलहटी मे गदगी की एक मोटी हरी तह जम गई थी। दाहिने सिरे पर गदा ज्वेजिदन कुड रिसता रहता था। खड्ड का मध्य भाग ठीक हमारे घर के सामने था जिसके आधे हिस्से मे कूडा कचरा भरा था और कटीली झाडिया, घासपात तथा सरकडे उगे थे। बाकी आधे हिस्से मे पादरी दोरीमेदोन्त पोक्रोव्स्की ने अपना बग़ीचा लगा रखा था। बग़ीचे के बीच मे हरे रग मे रगी खपचियों से बना मडप था। मडप मे ढेले फेंकने पर खपचिया झन्नाकर टूटती थीं।

जगह बेहद गदी और बेहद ऊबाऊ थी। शरद ने यहा की कूडा कचरा मिली चिकनी मिट्टी को बेरहमी के साथ कुरूप करके उसे लाल कोलतार सा बना दिया था जो पावो मे इतनी बुरी तरह चिमट जाता कि छुडाए न छूटता। छोटी सी जगह मे गन्दगी की इतनी भरमार मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। खेतो और जगलो की स्वच्छता मे रमने के बाद नगर का यह कोना मुझमे निराशा भरता था।

खड्ड के उस पार टूटे फूटे मटमले बाडों की पात दिखाई देती थी। दूरी पर उनमे भूरे रग का वह मकान भी था जिसमे मै जाडो मे रहता था जब जूतो की दुकान मे छोकरे का काम करता था। इस मकान को अपने इतना निकट देख मुझे और भी बुरा मालूम होता। क्या मुझे फिर इसी सडक पर रहना पड रहा है?

अपने नये मालिक से मै पहले से परिचित था। वह और उसका भाई कभी मेरी मा से मिलने आया करते थे, और उसका भाई बडे ही मजेदार ढग से पिनपिनाकर कहता था

"आन्द्रेई पपा! आन्द्रेई पपा!"

दोनो के दोना अब भी बिल्कुल वैसे ही थे। बड़े भाई की तोते जसी नाक और लम्बे बाल थे। वह अच्छे दिल का आदमी मालूम होता था। छोटा भाई बोक्तर पहले की भांति अब भी वसा ही घुटमुटा था, और उसके चेहरे पर भूरी बिंदिया थीं। उनकी मां—मेरी नानी की बहिन—बडी चिड़चिडी और झगडालू थी। बडे लड़के का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी काली आखो वाली, मदे के आटे की डबल रोटी की भांति सफेद और मोटी-ताजी थी।

शुरू के कुछ दिनो मे ही उसने मुझे दो एक बार जताया

"तेरी मा को मैंने चमकदार कांच के मोती जड़ा रेशमी लबादा दिया था"

लेकिन न जाने क्यो, मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने मां को रेशमी लबादा भेंट किया था, और यह कि मां ने उसे स्वीकार कर लिया था। अगली बार जब फिर उसने लबादे का जिक्र छेडा तो मैंने कहा

"दिया था तो डींग क्यो मारती है।"

यह सुनकर वह सुन्न रह गई।

"क्या आ-आ आ? तूने मुझे समझ क्या रखा है?"

उसका चेहरा लाल चकत्तो से भर गया, आखें बाहर निकल आयीं, उसने पति को आवाज दी।

कान मे पेंसिल खोसे और हाथ मे परकार लिए पति ने रसोईघर मे पाव रखा। अपनी पत्नी की शिकायत सुनने के बाद उसने मुझसे कहा

"इन्हें और दूसरे सबको यहा आप कह कर बुलाना चाहिए। और जबान को सभालकर रखना चाहिए!"

फिर वह बेसब्री से अपनी पत्नी की तरफ घूम गया

"इस तरह की बकवास से मेरा दिमाग न चाटा करो!"

"बकवास तुम इसे बकवास कहते हो! जब तुम्हारे अपने रिश्तेदार हों"

"भाड मे जाए रिश्तेदार!" उसने कहा, और फिर लपककर चला गया।

मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता था कि ये लोग नानी के रिश्तेदार

हैं। मैंने देखा है कि सगे-सम्बन्धी एक दूसरे से जितना बुरा व्यवहार करते हैं, उतना अजनबी भी नहीं कर पाते। एक-दूसरे की कमजोरियों और बेहूदगियों को जितना अधिक ये जानते हैं, उतना कोई बाहरी आदमी कैसे जान सकता है। सो ये जमकर एक दूसरे के बारे में निंदा चुगली करते हैं, बात बे बात आपस में लड़ते और झगड़ते हैं।

मुझे अपना मालिक पसंद आया। वह कुछ इतने मन भावने ढंग से अपने बालों को पीछे की ओर झटका देता और उन्हें कानों की ओट में कर लेता कि बहुत ही भला मालूम होता। उसे देखकर न जाने क्यों मुझे 'बहुत खूब' की याद हो आती। वह अक्सर खूब खुलकर हंसता। हंसते समय उसकी सलेटी आंखें प्रसन्नता से चमकने लगतीं और उसकी तोते जैसी नाक के दोनों ओर बहुत ही लुभावनी झुरियां पड़ जातीं।

"यह चोंचे लड़ाना बंद करो, कुड़क-मुर्गियो!" नम्रता के साथ मुस्कराते हुए वह अपनी मां और पत्नी से कहता, उसके छोटे छोटे और खूब सटकर जमे हुए दांत मोती से झलकने लगते।

दोनों की दोनों आए दिन लड़तीं और झगड़तीं थीं। यह देखकर मुझे बड़ा अचरज होता कि कितनी जल्दी और कितनी आसानी से ये एक-दूसरे का मुंह नोचने पर उतर आती हैं। सुबह तड़के से ही दोनों बिना बाल बनाये, अस्त व्यस्त कपड़ों में आंधी की भांति उखाड़ पछाड़ करतीं, कमरों में इस प्रकार घूमतीं मानो घर में आग लगी हो। दिन भर वे इसी प्रकार तोबा तिल्ला मचाए रहतीं और केवल दोपहर के भोजन, चाय और सांझ के खाने के समय जब वे मेज पर बैठतीं तो घर में कुछ शांति दिखाई देती। खाने पर वे बुरी तरह टूटतीं और जब तक खाते-खाते थक न जातीं, उनपर मस्ती न छा जाती, खाती रहतीं, भोजन के समय बातें पकवानों की होतीं और बड़े झगड़े की तयारी में रह रहकर आलस भरी चूं चूं होती। सास चाहे जो भी पकाती, बहू ताना कसे बिना नहीं चूकती

"हमारी मां तो यह ऐसे नहीं बनातीं!"
"ऐसे नहीं तो इससे खराब बनाती हैं।"
"नहीं, इससे अच्छा बनाती हैं।"
"तो, जाओ, चली जाओ अपनी मां के पास।"
"मैं इस घर की मालकिन हूं!"

"और मैं कौन हू ?"

"तुमने फिर चोचे लडाना शुरू कर दिया, कुडक-मुर्गियो!" पति बीच में ही टोकता। "भेजा फिर गया है क्या तुम्हारा।"

घर मे हर चीज इतनी बेढगी, बेडौल और अटपटी थी कि कहते नहीं बनता। रसोईघर से अगर भोजन के कमरे मे जाना हो तो एक छोटे से, तग और सकरे पाखाने मे से गुजरना पडता था। ले देकर समूचे फ्लट मे एक ही पाखाना था। खाने की चीजें और समोवार सब इधर से ही ले जाकर मेज पर सजाया जाता था। इसपर नित्य ही मजाक होता और कोई न कोई मजेदार घटना घटती रहती। मेरे कामो मे एक काम यह भी था कि पाखाने की टकी कभी खाली न होने पाए। मैं रसोईघर मे पाखाने के दरवाजे के ठीक सामने और बाहर की ओर जानेवाले दरवाजे की बगल मे सोता था। मेरा सिर रसोईघर के अलावघर की गर्मी से भनाने लगता और पाव बाहर वाले दरवाजे से आनेवाली ठडी हवा से सुन हो जाते। रात को सोने जाते समय मैं फर्श पर बिछी तमाम चटाइया को बटोरकर अपने पावों पर डाल लेता।

बडा कमरा बहुत ही उदास और सूना सूना सा लगता जिसमे खिडकियो के बीच दीवार पर दो लम्बे आईने लटके थे, ताश खेलने की दो छोटी मेजें और बारह वीयेनी कुर्सिया पडी थीं, और "नीवा" पत्रिका से पुरस्कार मे मिली और रुपहले चौखटा मे जडी तसवीरें दीवारो के सूनेपन को तोडने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थीं। छोटी बठक पचरगी गद्देदार मेज-कुर्सिया और अल्मारियो से अटी थी जिनके खानो मे चादी के बरतनो और चाय पीने के सेटो की नुमाइश सी सजी थी। ये सब चीजें शादी मे मिली थीं। रही सही कसर पूरी करने के लिए छत से तीन लम्प लटके थे जो आकार प्रकार मे एक दूसरे से होड लेते मालूम होते थे। सोने के कमरे मे खिडकी एक भी नहीं थी। उसमे एक भीमाकार पलग, टक और कपडे रखने की अल्मारियां की भरमार थी जिनसे पत्ती के तम्बाकू और फारसी बबूने की बू आती थी। ये तीनो कमरे हमेशा खाली पडे रहते थे और समूचा परिवार भोजन करने के छोटे से कमरे मे ही कस मसाता और हर घडी एक दूसरे से टकराता रहता था। सुबह आठ बजे नाश्ता करने के तुरत बाद मालिक और उसका भाई अपनी मेज को फला लेने, सफेद कागज की परत, ड्राइग के औजार, पेन्सिलें और रोशनाई

से भरी प्यालिया लाकर काम मे जुट जाते। एक मेज के एक छोर पर रहता, और दूसरा ठीक उसके सामने। मेज हिलती थी और समूचे कमरे को घेरे थी। जब कभी छोटी मालकिन और बच्चे को खिलानेवाली दाई बच्चो के कमरे से बाहर आतीं तो मेज से टकराए बिना न रहतीं।

तभी वीक्तर चिल्लाकर कहता

"देखकर नहीं चला जाता!"

मालकिन आहत चेहरे से अपने पति की ओर देखती और कहती

"वास्या, इसे मना कर दो कि मुझपर इस तरह न चिल्लाया करे।"

पति शात स्वर मे समझाता

"जरा सभलकर चला करो जिससे मेज न हिले।"

"मेरे पेट हो रहा है और यहा इतनी घिचपिच है।"

"अच्छी बात है। हम अपना तामझाम उठाकर बडे कमरे मे चले जाएगे।"

"हाय राम, तुम भी कसी बाते करते हो? बडा कमरा मेहमानो को बठाने की जगह है या काम करने की?"

पाखाने के दरवाजे मे बूढ़ी मालकिन मार्योना इवानोव्ना का चेहरा दिखाई देता—चूल्हे मे से निकले चुकदर की भाति लाल!

"उसकी बात तो सुनो, वास्या!" उसने चिल्लाकर कहा। "एक तुम हो कि काम करते करते मरे जाते हो और एक यह है कि बच्चे कच्चे जनने के लिए इसे चार कमरे भी छोटे पडते है! अच्छी राजकुमारी से शादी की है तुमने, जिसके भेजे मे सिवा गोबर के और कुछ नहीं है!"

वीक्तर उपेक्षा से खिलखिला उठा। मालिक चिल्लाया

"बस करो!"

लेकिन उसकी पत्नी, अपनी सास पर तीखे बाणो की बौछार करते और जी भरकर कोसते हुए मेज पर औंधी गिर पडी और लगी सिसकने

"मैं यहा नहीं रह सकती! मैं गले मे रस्सी बाधकर लटक जाऊगी!"

"मुझे काम भी करने देगी या नहीं, कम्बखत!" गुस्से से सफेद होता हुआ पति चिल्लाया। "घर न हुआ पागलखाना हो गया! आखिर तुम लोगो का दोजख भरने के लिए ही तो मैं यहा खडे होकर अपनी कमर तोडता हू, कुडक-मुर्गियो!"

पहले पहल ये झगड़े मुझे खूब भयभीत करते थे। एक बार तो मेरी जान ही सूख गई। मालकिन ने गुस्से में डबल रोटी काटने का चाकू उठाया, पाखाने में घुसकर भीतर से चटखनी चढ़ा ली, और लगी चुड़ैलों की भांति चीखने चिल्लाने। एक क्षण के लिए सारे घर में सन्नाटा सा छा गया। फिर मालिक भागकर दरवाजे के पास पहुंचा और झुककर एकदम दोहरा हो गया।

"मेरी कमर पर चढ़ जा, और शीशा तोड़कर दरवाजे की चटखनी खोल डाल!" उसने चिल्लाकर मुझसे कहा।

लपककर मैं उसकी पीठ पर चढ़ गया और मैंने दरवाजे के ऊपर का शीशा तोड़ डाला। लेकिन चटखनी खोलने के लिए जैसे ही मैं नीचे की ओर झुका कि मालकिन चाकू की मूठ से मेरे सिर पर प्रहार करने लगी। जो हो, दरवाजा मैंने खोल दिया। इसके बाद मालिक मालकिन पर बुरी तरह झपटा, उसे खींचता हुआ भोजन के कमरे में ले गया, और उसने उसके हाथ से चाकू छीन लिया। मैं रसोईघर में बैठा अपना चोट खाया सिर सहला रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि व्यर्थ ही मैंने इतनी मुसीबत मोल ली। चाकू इतना खुट्टल था कि गरदन तो दूर, उससे डबल रोटी तक नहीं काटी जा सकती थी। न ही मालिक की पीठ पर चढ़ने की कोई खास जरूरत थी। शीशा तोड़ने के लिए मैं कुर्सी पर भी खड़ा हो सकता था। फिर अच्छा होता अगर कोई बड़ा आदमी चटखनी खोलता—लम्बी बाहें होने पर यह काम सहज ही हो जाता। इस दिन के बाद मैंने इस घर की घटनाओं से भयभीत होना छोड़ दिया।

दोनों भाई गिरजे में गाते थे। कभी-कभी काम करते समय भी वे धीमे स्वरों में गुनगुनाया करते। बड़ा भाई मध्यम सुर में गुनगुनाता

उछलती लहरों में खोई,
प्रिय की प्रेम निशानी!

और छोटा भाई कोमल स्वर में साथ देता

सुख शांति हुई बिरानी
हुई सूनी जिन्दगानी!

बच्चों के कमरे से छोटी मालकिन दबी हुई आवाज में कहती "तुम्हें हो क्या गया है? बेबी को सोने भी दोगे या नहीं?"

या फिर

"वास्या, तुम घर-बीबी वाले आदमी हो। प्रेम की निशानियो के गीत गाते तुम शर्म से गड नहीं जाते! इसके अलावा गिरजे मे प्रार्थना का घटा भी बजता ही होगा "

"अच्छा तो यह लो, हम अभी गिरजे के गीत गाना शुरु करते हैं "

मालकिन जोर देकर कहती कि गिरजे के गीत हर कहीं नहीं गाए जा सकते—खास तौर से यहा। और पाखाने की ओर इशारा करके मालकिन 'यहा' का अर्थ जरूरत से ज्यादा स्पष्ट कर देती।

"हद है!" गुर्राते हुए मालिक कहते। "मकान बदलना ही पडेगा, नहीं तो इस घीचड-पीचड मे "

मकान बदलने की भाति मालिक नयी मेज लाने का भी बहुधा राग अलापते थे। *लेकिन तीन साल हो गए थे और मेज का अभी कहीं पता* तक न था।

अपने पडोसियो के बारे मे जब भी ये लोग बातें करते तो मुझे जूतो की दुकान वाले कुत्सित वातावरण की याद ताजा हो आती। यहा भी ऐसी ही बातें होती थीं। साफ मालूम होता कि मेरे ये मालिक भी अपने आपको नगर मे सबसे अच्छा, एकदम दूध का धुला, समझते हैं। बेदाग नैतिकता और सदाचार के मानो सबसे अचूक नियम उन्हे मालूम हैं और उन नियमो की कसौटी पर वे सभी को बडी बेरहमी से कसते, हालाकि मेरे लिये ये नियम अस्पष्ट थे। उनकी इस आदत को देखकर उनके और उनके सदाचार के नियमो के प्रति मेरे मन मे तीखा रोष घर करता और उनके इस सदाचार को पाव तले रौंदने मे मुझे अब बेहद आनन्द आता।

मुझे भारी मेहनत करनी पडती घर की महरी का सारा काम मैं ही करता, बुध के दिन रसोईघर मे फर्श धोता, समोवार और पीतल के दूसरे बरतनों को रगड रगडकर चमकाता, शनिवार के दिन समूचे घर तथा दोनों जीनों को साफ करता। अलावघरो के लिये लकडी काटता और जूठे बरतन माजता, सब्जिया छीलता-काटता, टोकरी हाथ में लेकर अपनी मालकिन के साथ बाजार जाता, सौदा-सुलफ और दवाइयो के लिये किराने तथा दवा फरोश की दुकानो के चक्कर लगाता।

मेरी बडी मालकिन, मेरी नानी की चिडचिडी और झगडालू बहन, रोज सुबह ही छ बजे उठ जाती। जल्दी से हाथ-मुह धोती, निरी लबी

शमीज पहने देव प्रतिमा के सामने घुटने के बल खडी होती, और बडी देर तक अपने जीवन, अपने बेटो और बहू के बारे मे भगवान से शिकायतें करती।

"हे भगवान!" अपनी उगलियो के छोर बटोरकर वह उनसे अपने माथे को छूते हुए रुआंसी आवाज मे झींकना शुरू करती। "हे भगवान, मै तुमसे और कुछ नहीं चाहती—बस, थोडी सी शान्ति चाहती हू, इतनी कि मेरी आत्मा को कुछ चैन, थोडी सी राहत, मिल सके!"

उसके इस रोने झींकने से मेरी आखें खुल जातीं और कम्बल के नीचे लेटा मै उसकी ओर देखता रहता, सहमे हृदय से भगवान के सामने उसका बिलखना बिसूरना सुनता। बारिश से धुली रसोईघर की खिडकी मे से शरद की सुबह उदासी से भीतर झाकती। और सूरज की ठडी किरणों मे उसकी धूसर आकृति जल्दी जल्दी फर्श पर झुकती और बेचन सलीब के चिह्न बनाती रहती। उसके छोटे से सिर पर बधा रूमाल खिसककर उतर जाता और उसके रग उडे महीन बाल उसकी गर्दन और कधों पर गिरने लगते। उसका बाया हाथ तेजी से हरकत करता और अपने रूमाल को फिर से सिर पर खिसकाते हुए वह बडबडा उठती

"यह चिथडा भी चन नहीं लेने देता!"

सलीब का चिह्न बनाते समय वह अपने माथे, कधो और पेट पर जोरो से हाथ मारती और भगवान के दरबार मे अपनी फरियाद की पुकार छोडती

"हे भगवान, अगर तुम्हे मेरा जरा सा भी ख्याल हो तो मेरी इस बहू को कसकर सजा देना। जिस तरह वह मेरा अपमान करती है और मुझे सताती है, वसे ही तुम भी उसे आडे हाथो लेना। और मेरे बटे की आखें खोलना, उसे इतनी समझ देना जिससे वह बहू की असलियत पहचाने, और वीक्तर को सही नजर से देख सके, और वीक्तर पर दया रखना, उसे अपने हाथ का सहारा देना, भगवान! "

वीक्तर भी यहीं, रसोईघर मे ही, एक ऊचे तख्ते पर सोता था। मां का रोना झींकना सुन उसकी भी नींद उचट जाती और उनींदे स्वर में चिल्लाता

"सवेरे ही सवेरे तुमने फिर रोना-कोसना शुरू कर दिया! तुमपर भी क्या खुदा की मार है, मां!"

"बस-बस, तू सोता रह। बहुत बातें न बना," मा फुसफुसाकर दबे हुए स्वर मे कहती। इसके बाद, एक या दो मिनट तक, वह चुपचाप आगे-पीछे की ओर झूमती और फिर बदले की भावना से फनफनाकर चीख उठती

"भगवान करे उनकी हड्डिया तक जमकर बर्फ हो जाए, और उनका सारा खून सूख जाए!"

मेरे नाना भी कभी इतनी कुत्सित प्रार्थनाए नहीं करते थे।

प्रार्थना करने के बाद वह मुझे जगाती।

"उठ खडा हो! क्या नवाब की भाति ऐंड रहा है, जैसे इसीलिए हमने तुझे यहा रखा हो? उठ, समोवार तयार कर और लकडिया भीतर लाकर रख। अहा, रात फिर चलिया चीरना भूल गया, क्यो?"

उसकी फनफनाहट भरी बडबड से बचने के लिए मैं खूब फुर्ती से काम करता, लेकिन उसे खुश करना असम्भव था। जाडो की बर्फीली आधी की भाति सनसनाती वह रसोईघर मे घूमती फिरती और फुकार उठती

"शि शि शि, शतान की औलाद! अगर वीक्तर को जगा दिया तो फिर देखना, कैसे कान उमेठती हू! अच्छा जा, भागकर दुकान से सामान ले आ"

नाश्ते के लिए मैं हर रोज दो पौंड डबल रोटी और छोटी मालकिन के वास्ते कुछ बद खरीदकर लाता था। जब मैं रोटी लेकर घर लौटता तो दोनो सन्देह भरी नजर से उसे उलट-पलटकर देखतीं, हथेलियो पर रखकर उसका वजन जाचतीं और पूछतीं

"यह कम तो नहीं है? इसके साथ क्या एक टुकडा और नहीं था? अच्छा, जरा इधर आकर अपना मुह तो खोल!"

इसके बाद वे इस तरह चिल्लातीं मानो मैदान मार लिया हो

"देखो, दूसरा टुकडा यह खुद चट कर गया—साफ निगल गया! इसके दातों मे रोटी चिपकी है!"

मैं बडी खुशी से काम करता था—घर की गदगी मिटाना मुझे बहुत पसद था। बडे मजे से मैं घर की धूल झाडता-बुहारता, फर्श को रगडता, पीतल के बरतनो को चमकाता, दरवाजो की मूठो और दस्तो को साफ करता। जब घर मे शान्ति होती तो स्त्रिया अक्सर कहतीं

"काम तो यह मेहनत से करता है।"

"और साफ-सुथरा भी रहता है।"

"लेकिन बहुत सरकश है।"

"आखिर लालन-पालन करनेवाला कौन था?"

दोनो ही चाहतीं कि मैं उनका मान करूं, उनके साथ अदब से पेश आऊं। लेकिन मैं उन्हे नीम पागल समझता। उन्हें पसंद नहीं करता, उनका कहना नहीं मानता और हमेशा मुह दर मुह जवाब देता। छोटी मालकिन से जब यह छिपा न रहा कि कुछ बातों का मुझपर उलटा ही असर होता है तो उसने बारबार कहना शुरू किया

"याद रख तुझे कगालो के परिवार से लिया गया है। तेरी मां तक को मैंने एक बार कांच के मोती जडा रेशमी लबादा पहनाया था!"

जब मुझसे नहीं रहा गया तो एक दिन मैंने उससे कहा

"तो उस लबादे के बदले मे क्या अब म अपनी खाल उतार दू?"

घबराकर यह चिल्लाई

"हाय भगवान, यह तो घर मे आग ही लगा सकता है!"

यह सुनकर मैं सकपका गया—आखिर मै घर मे आग क्यो लगाऊगा? मेरे बारे मे दोनो हर घडी मालिक के कान खातीं और वह मुझे सख्ती से डाटता

"बस बहुत हो चुका। अगर अपनी हरकत से बाज न आए तो!"

लेकिन एक दिन तग आकर उसने अपनी पत्नी और मां को भी आडे हाथो लिया

"तुम दोनो की अक्ल भी न जाने कहां चरने गई है! जब देखो तब उस लडके की गरदन पर सवार, मानो वह कोई घोडा हो! और कोई होता तो सब छोड छाड कभी का भाग गया होता, या काम करते करते उसका अब तक कचूमर निकल गया होता!"

यह सुन स्त्रियां बुरी तरह झुझला उठीं और उनकी आंखो मे आसू चमकने लगे। गुस्से मे पांव पटकते हुए उसकी पत्नी चिल्लाई

"और तुम्हारी बुद्धि क्या तुम्हारे इन छोवा भर लम्बे बालों मे खो गई है जो खुद इसके सामने इस तरह की बातें करते हो? तुम्हारी बातें सुनने के बाद यह और भी सरकश हो जाएगा। तुम्हें इतना भी खयाल नहीं कि मेरा पर भारी है।"

उसकी मा ने भी शिकायत के स्वर मे रोना बिसूरना शुरू किया
"भगवान बुरा न करे, लेकिन मेरी बात गाठ बाध लो कि तुम लडके को इस तरह सिर पर चढ़ाकर खराब कर डालोगे, वासीली!"

और दोनो त्योरी चढ़ाए वहा से खिसक गईं। मालिक अब मेरी ओर मुडा और सख्ती से बोला

"यह सब तेरी करतूत का ही नतीजा है। मैं तुझे फिर नाना के पास वापस भेज दूगा। मजे से चिथडे बटोरते फिरना!"

अपमान का यह कडवा घूट मेरे गले मे अटक गया। पलटकर मैंने जवाब दिया

"तुम्हारे पास रहने से तो चिथडे बटोरना कहीं अच्छा है! तुम मुझे यहा काम सिखाने के लिए लाए थे। लेकिन तुमने मुझे सिखाया क्या है–गधे की भाति केवल घर का बोझा ढोना!"

मालिक ने हल्के हाथ से मेरे बाल पकड लिए और मेरी आखो मे देखते हुए अचरज के साथ कहा

"बडा तेज-तर्रार है तू! पर भाई ये चाले यहा नहीं चलेगी नहीं, बि-ल-कु-ल न-हीं!"

मुझे पूरा यक़ीन था कि वह मेरा बधना-बोरिया गोल कर देगा। लेकिन दो दिन बाद पेंसिल, रूलर, टीस्क्वेयर और काग़ज़ का एक पुलिन्दा लिए उसने रसोईघर मे पाव रखा।

"चाकू साफ करने के बाद इसकी नकल उतार देना," उसने कहा।

यह किसी दुमजिला मकान के अग्रभाग का नक्शा था जिसमे अनगिनत खिडकिया और प्लास्तर की सजावट का काम बना था।

"लो, परकार सभालो। इससे सभी रेखाओ को पहले नापना और उसके बाद नुक्ते डालकर उनके छोरो के निशान बनाते जाना। फिर, रूलर की मदद से, नुक्तो को मिलाते हुए रेखाए खींचना। पहले लम्बान के रुख मे रेखाए खींचना–ये पडी रेखाए होगी, फिर ऊपर-नीचे वाली रेखाए खींचना–ये खडी रेखाए होगी। बस, इस तरह पूरी नकल उतार लेना!"

साफ-सुथरा और सलीके का काम तथा कुछ सीखने का यह अवसर पाकर मुझे खुशी हुई, लेकिन काग़ज़ और परकार आदि की ओर मै सहमी नजर से देख रहा था और मेरी समझ मे कुछ नहीं आ रहा था।

फिर भी अगले ही क्षण हाथ योक्चर में काम मे जुट गया। मैंने तमाम पडी रेखाओं पे नुक्ते लगाए और इसर से लकीरें खींचकर उन्हें आ दिया। यह सब तो बडे मजे मे हो गया। बस, एक ही बात जरा गडबड थी। न जाने कैसे, तीन लकीरें फालतू खिंच गई थीं। इस बार मैंने तमाम खडी लकीरों के निशान बनाए और उन्हें भी मिला दिया। और मेरे अचरज का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि यह तो कुछ और ही बन गया है। इस घर की शक्ल-सूरत एकदम बदली हुई थी। खिडकियाँ ऊपर खिसककर दीवारों के बीच की खाली जगह मे पहुच गई थीं, और उनमे से एक तो घर की दीवार को पार कर हवा मे ही लटक रही थी। घर का मुख्य दरवाजा खिसककर दूसरी मंजिल पर पहुच गया था, कार्निस छत के मध्य मे आ पहुची थी, और रोशनदान चिमनी पर आ लगा था।

सकपकाया सा बडी देर तक मैं इस अजूबे की ओर देखता रहा। कोशिश करने पर भी मेरी समझ मे न आया कि यह सब कैसे हो गया। आखिर समझने की कोशिश छोडकर अपनी कल्पना के सहारे मैंने स्थिति को सभालने का निश्चय किया सभी कार्निसो और छत की मुडेर पर मैंने चिडे चिडियो, कौवा और कबूतरा की तस्वीरें बना दीं, और खिडकियो के सामने की खुली जगहों को मैंने टेढी-मेढी टांगा वाले आदमियो से भर दिया। उनके हाथो मे मैंने एक एक छतरी भी थमा दी, लेकिन उनके टेढे मेढेपन मे इससे भी कोई खास कमी नहीं आई। इसके बाद समूचे कागज पर तिरछी लकीरें डाल मैं अपने मालिक के पास पहुचा।

मालिक की भौंहे तन गईं, बालो मे हाथ फेरते हुए और मुह फुला कर उसने पूछा

"यह सब क्या है?"

"यह बारिश हो रही है," मैंने कहा, "बारिश मे सभी घर टेढे मेढे हो जाते हैं, क्योंकि खुद बारिश भी उल्टी-सीधी गिरती है। और पक्षी—ये सब पक्षी हैं—कार्निसो पर सिकुडे सिमटे बैठे हैं। जब बारिश होती है तो सदा ऐसा ही होता है। और ये लोग अपने अपने घर पहुचने की जल्दी मे हैं। यह बीबी जी रपटकर गिर पडी हैं, और वह नींबू बेचनेवाला है "

"बहुत-बहुत धन्यवाद," मालिक ने मेज पर झुकते हुए कहा, यहा तक कि उसके लम्बे बाल कागज पर खर खराने लगे। उसका समूचा बदन हसी से हिल रहा था।

"तेरा बेडा गर्क हो, चिडे जानवर!"

तभी छोटी मालकिन भी मटका सा अपना पेट लिये आ मौजूद हुई, और मेरी करतूत पर नजर डालकर देखा।

"मार खाकर ही यह ठीक होगा!" उसने अपने पति को उकसाया।

मालिक पर इसका असर नहीं हुआ। बिना किसी झुझलाहट के बोला

"ओह नहीं, शुरू शुरू मे खुद मेरा भी यही हाल था"

लाल पेंसिल से उसने मेरी गलतियो पर निशान बना दिये और मुझे एक दूसरा कागज देते हुए बोला

"फिर कोशिश करो। एक बार, दूसरी बार, तीसरी बार—जब तक ठीक न बने, इसे बनाते ही रहना!"

मेरा दूसरा प्रयत्न पहले से अच्छा था। केवल एक खिडकी अपने स्थान से खिसककर बरसाती के दरवाजे पर आ गई थी। लेकिन घर सूना सूना सा रहा। यह मुझे कुछ अच्छा नहीं मालूम हुआ। सो सभी काट छाट के लोगो से मैंने उसे आबाद कर दिया। खिडकियों पर युवतिया बठी पखा झल रही थीं। युवक सिगरेट का धुआ उडा रहे थे और एक युवक जो सिगरेट नहीं पीता था, अपनी नाक पर अगूठा रखकर और उगलिया फलाकर दूसरो को अनादरपूवक दिखा रहा था। बाहर पोच के आगे एक गाडी खडी थी और कुत्ता लेटा हुआ था।

मालिक ने गुस्से से पूछा

"यह फिर क्या काटा पीटी कर लाया है?"

मैंने बताया कि आदमियो के बिना घर बडा सूना सूना सा लग रहा था। लेकिन उसने मुझे डाटना शुरू किया

"यह क्या खुराफात है! अगर कुछ सीखना चाहता है तो कायदे से काम कर! बेकार की ऊल जलूल बातो से बाज आ!"

और अन्त मे मूल से मिलता जुलता दूसरा चित्र बनाकर जब मैं उसके पास ले गया तो वह बहुत खुश हुआ।

"देखा। अब ठीक बन गया न? अगर इसी तरह कोशिश करता रहेगा तो बडी जल्दी तरक्की करेगा!"

श्रौर उसने मुझे एक नया काम सौंपा

"हमारे श्रपने फ्लैट का एक नक्शा तयार कर, जिसमे सब चीज कायदे से दिखाना – कितने कमरे हैं श्रौर किस किस जगह बने हैं। दरवाज श्रौर खिडकिया कहां-कहा हैं। हर चीज श्रपनी ठीक जगह पर होनी चाहिए। मैं तुझे कुछ नहीं बताऊगा, सारा काम खुद ही करना होगा।"

मै रसोईघर मे श्राकर मन ही मन जोड-तोड बठाने लगा कि श्रव क्या किया जाए।

लेकिन नक्शानवीसी का मेरा यह काम श्रागे नहीं बढ़ सका, तभी उसका श्रत हो गया।

बूढी मालकिन मेरे पास श्राई श्रौर जले भुने स्वर मे बोली

"सो श्रब नक्शानवीस बनना चाहता है, क्यो?"

उसने मेरे बाल पकडे श्रौर मेरा सिर इतने जोरो से मेज से टकराया कि मेरी नाक श्रौर होंठ लहूलुहान हो गए। उसने हाथ-पाव पटके, खूब उछली श्रौर कूदी, मेरे नक्शे को उठाकर फाड डाला, श्रौजारों को फश पर फेंक दिया श्रौर फिर, कूल्हो पर हाथ रख, विजेता के श्रदाज मे चिल्लाई

"ले, बना नक्शे! नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। पराये श्रादमी को काम मिले श्रौर भाई – एकमात्र सगा श्रौर मा-जाया भाई भागे?"

मेरा मालिक श्रौर उसके पीछे-पीछे उसकी पत्नी भी श्रा धमकी। तीनो के तीनो, चीखने श्रौर चिल्लाने, एक दूसरे पर थूकने लगे। श्रत में स्त्रियां रोती-कलपती विदा हो गइ श्रौर मालिक ने मुझसे कहा

"फिलहाल तू यह सब छोड दे, श्रभी मत पढ़ – देख ही रहा है क्या तूफान खडा कर दिया इन लोगो ने।"

उसकी यह हालत देख मुझे दु ख हुश्रा – कितना दबा पिसा श्रौर कितना निरीह। एक घडी के लिए भी स्त्रियो की चिल्ल-पो उसका पीछा नहीं छोडती थी।

मैंने पहले ही भांप लिया था कि बूढ़ी मालकिन को मेरा काम सीखना पसन्द नहीं है श्रौर रोडे श्रटकाने मे भी वह श्रपनी शक्ति भर कोई कसर नहीं छोडती थी। इसलिए, नक्शा बनाने बठने से पहले, मैं उससे यह पूछना कभी नहीं भूलता था

"श्रब श्रौर कोई काम तो नहीं है, मालकिन?"

खीजकर वह जवाब देती

"जब होगा तब अपने आप बता दूगी। जा अब मेज पर अपने कीडे-मकौडे बना"

और कुछ मिनट बाद ही, किसी न किसी काम के लिए वह मुझे ग्रदबदाकर भेजती या कहती

"जीना साफ क्या किया है, निरी बेगार काटी है। कोने-कोने धूल से अटे पडे हैं। जा, झाडू लेकर दोबारा साफ कर"

लेकिन वहा पहुचने पर मुझे कहीं कोई धूल नहीं दिखाई देती।

"तो मैं क्या झूठ बोल रही थी, क्यो?" वह चिल्लाकर मेरा मुह बन्द करना चाहती।

एक बार कागजो पर क्वास* उलटकर उसने मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। दूसरी बार उसने पूजा के दीये का सारा तेल उडेल दिया। छोटी लडकी की भाति बचकानी चालाकी के साथ वह इस तरह की हरकतें करती, बच्चो की भाति अपनी इन हरकतो को वह छिपा नहीं पाती। इतनी जल्दी और इतनी आसानी से नाराज होते या हर चीज और हर व्यक्ति के बारे मे इतने जोश के साथ शिकायते करते मैंने अन्य किसी को न पहले, न बाद मे देखा। शिकायतें करना सभी को अच्छा लगता है, लेकिन बडी मालकिन यह विशेष आनन्द के साथ करती थी मानो गीत गाती हो।

अपने बेटे से उसका प्रेम किसी पागलपन से कम नहीं था। इस प्रेम की शक्ति को मैं केवल मदान्ध ही कह सकता हू, इसे देखकर मुझे हसी भी आती और डर भी लगता। सुबह की पूजा प्रार्थना के बाद वह अलावघर की सीढी पर खडी हो जाती, और उसके ऊपर सोने के तख्ते पर अपनी कोहनिया टिकाकर पूरी तन्मयता से फुसफुसाती

"मेरे भाग्य का सहारा, मेरे रक्त और मास का टुकडा, हीरा सा खरा और फरिश्ते के परो सा हल्का फुल्का! तू सो रहा है। सो, मेरे जिगर के टुकडे, सो! मीठे सपनो की चादर अपने हृदय पर डालकर सो। और वह देख, सपनो मे तेरी दुलहिन तेरे लिए पलक पावडे बिछाए है। कितनी सुन्दर—एकदम गोरी चिट्टी, मानो राजकुमारी या किसी धनी

---

*क्वास—काली रोटी और तरह-तरह के फलो से बनाया गया पेय।—स०

सौदागर की बेटी हो! तेरे दुश्मनो को काल चटकर जाए, मा के गर्भ मे ही उन्हे लकवा मार जाए! और तेरे मित्र सकडो वष जिए, और झुड की झुड कुवारी लडकिया सदा तुझपर न्योछावर हो, वत्तखो के दल की भाति तेरे पीछे फिरती रहे!"

यह सुन मेरे पेट मे बल पड जाते। औघड और काहिल वीक्तर दखने मे बिल्कुल कठफोडवे जसा था—वसी ही लम्बी नाक, वसा ही पचरगा जिद्दी और मूख!

मां की फुसफुसाहट से कभी-कभी उसकी नींद उचट जाती और उनींदे स्वर मे वह बडबडाता

"तुम्हे शतान भी तो नहीं उठा ले जाता, मा! क्या यहा खडी खडी सीधे मुह मे थूक रही हो! जीना हराम है!"

इसके बाद, बहुत कर, वह चुपचाप नीचे उतर जाता और हसते हुए कहती

"अच्छा, सो, सो नालायक!"

कभी-कभी ऐसा भी होता था उसकी टागें ढीली पड जातीं, और अलावघर के किनारे वह धम्म से ढह जाती, मुह खोले और इस तरह हाफते हुए, मानो उसकी जीभ जल गई हो। तीखे शब्दो की फिर बौछार होती

"क्या कहा कलमुहे, तेरी अपनी मा को शतान उठा ले जाये! कपूत, मेरी कोख में आते ही तू मर क्यो नहीं गया? तूने जन्म ही क्या लिया, शतान की दुम! मेरे माथे के कलक!"

नशे मे धुत्त गली के गदे और बाजारू शब्द उसके मुह से निकलते—भयानक और घिनौने!

वह बहुत कम सोती थी। नींद मे भी जसे उसे चन नहीं मिलता था। कभी-कभी रात के दौरान वह कई बार अलावघर से नीचे उतरती, काउच के पास उस जगह पहुचती जहा मैं सो रहा था, और मुझे जगा देती।

"क्यो, क्या बात है?"

"शोर न करो," सलीब का चिह्न बनाकर और अधेरे मे किसी चीज की ओर देखते हुए वह फुसफुसाती, "ओह भगवान मेरे मसीहा आलीजाह— सत वर्वारा अकाल मृत्यु से हम सब की रक्षा करना!"

फिर कांपते हाथों से वह मोमबत्ती जलाती। कुप्पे सी नाक वाला उसका चेहरा फूल जाता और व्याकुलता से भरी धूसर आंखें मिचमिचाती वह धुंधलके से विकृत चीजों को जोर लगाकर देखती। रसोई काफी बड़ी थी, लेकिन टबों और अलमारियों की फालतू भरमार ने उसे घिचपिच बना दिया था। चांद की रोशनी यहां आकर स्थिर और शांत हो गई थी, और देवप्रतिमाओं पर सदा चेतन आग की परछाइयां थिरक रही थीं। दीवारों से सटे रसोई के छुरे कांटे हिमकणों की भांति चमक रहे थे और शेल्फ के सहारे लटकी काली कड़ाहियां बेडौल और बदनुमा अंधे चेहरों की भांति दिखाई देती थीं।

बूढ़ी मालकिन हमेशा टटोल-टटोलकर, मानो नदी के पानी की थाह लेते हुए अलावघर से सावधानी से नीचे उतरती। फिर, अपने नंगे पांवों से छपछप करती हुई वह उस कोने में पहुंचती जहां कटे हुए सिर की भांति पानी भरने का एक डिब्बा लटका था। डिब्बे के इधर उधर कान की भांति दो कुन्दे लगे थे। इसके नीचे गंदा पानी जमा करने की एक बाल्टी और पास में ही साफ पानी से भरा एक टब रखा था।

गट गट आवाज करते हुए वह पानी डकारती और फिर खिड़की के शीशे पर जमी बर्फ की नीली परत के बीच से झांककर देखती।

होंठों ही होंठों में फिर फुसफुसाती

"ओ भगवान, मुझपर दया करना, मेरी आत्मा पर तरस खाना!"

कभी-कभी वह मोमबत्ती बुझा देती और घुटनों के बल गिरकर तीखे स्वर में बुदबुदाती

"किसी के हृदय में मेरे लिए प्यार ममता नहीं है, मुझे कोई नहीं चाहता!"

अलावघर पर चढ़ते हुए वह चिमनी के दरवाजे के सामने सलीब का चिह्न बनाती और फिर उसके भीतर हाथ डालकर देखती कि खटका *ठीक जगह पर लगा है या नहीं। उसका हाथ कालिख से काला हो जाता,* वह एक बार फिर गालियों का गोला दागती और तुरत सो जाती मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे तुरत ही नींद में डुबो दिया हो। जब कभी वह मुझपर बरसती तो मैं सोचता अफसोस कि उसकी शादी नाना से नहीं हुई, यह उनके होश ठीक रखती, और खुद इसे भी ठीक अपने जैसा ही एक जोड़ीदार मिल जाता। वह अक्सर अपना गुस्सा मुझपर

उतारती, लेकिन कभी-कभी ऐसे दिन भी आते जब रुई सा फूला उसका चेहरा कुम्हला जाता। उसकी आखो मे आसू तरने लगते और वह अपनी बातो के सत्य मे विश्वास पदा करनेवाले ढग से कहती

"तुझे क्या पता, मेरे कलेजे मे कितना दुख भरा है। मैंने बच्चे जने, पाल पोसकर उन्हे बडा किया और अपने पाय पर खडा होने लायक बनाया, लेकिन मुझे क्या मिला? रसोई मे बावचिन की भांति दिन रात खटना और उनका दोजख भरना। बडा सुख मिलता है मुझे इस से? बेटा परायी लुगाई को घर मे लाया और अपना सगा खून भूल गया। और क्या यह ठीक है?"

"नहीं यह तो ठीक नहीं है," मै सच्चे हृदय से कहता।

"देखा? ये बाते हैं"

और वह पूरी बेशर्मी के साथ, अपनी बहू की चादर उतारना शुरू करती

"गुसलखाने मे मैंने उसे नहाते देखा है। पता नहीं, उसकी किस चीज पर वह इतना लट्टू है? ऐसी क्या रूपवती कहलावे है?"

पुरुष और स्त्रियो के सम्बधो का जिक्र करते समय वह चुन चुनकर गद से गदे शब्दो का इस्तेमाल करती। शुरू-शुरू मे उसकी बातो से मुझे बडी घिन मालूम होती, लेकिन शीघ्र ही बडे ध्यान और गहरी दिलचस्पी से मैं उसकी बातें सुनने लगा, क्योकि मै महसूस करता था कि उसके शब्दो के पीछे कोई कटु सत्य प्रकट होने के लिये कसमसा रहा था।

"लुगाई मे बडी ताकत है," हथेली को मेज पर पटपटाते हुए वह भनभनाती। "लुगाई ने भगवान को भी धोखा दे दिया था। समझा? हौवा की वजह से सभी लोगो को दोजख का मुह देखना पडता है!"

स्त्री की शक्ति का बखान करने से वह कभी नहीं थकती, और हर बार मुझे ऐसा मालूम होता मानो इस तरह की बाते करके वह किसी को डरा रही है। उसकी यह बात मुझे कभी नहीं भूली कि "हौवा ने खुदा को भी धोखा दे दिया"।

हमारे अहाते मे एक और घर था जो उतना ही बडा था जितना कि हमारा। दो इमारतो के आठ फ्लटो मे से चार मे फौजी अफसर रहते थे। फौज का पादरी एक अन्य फ्लट मे रहता था। अहाते मे साईसों, अर्दलियों की भरमार थी, बावर्चिनें, धोबिनें और घर की नौकरानियां

उनसे मिलने आती रहती थीं। रसोईघरो मे नित्य ही नये गुल खिलते, इश्क और आशनाई के शिगूफे छूटते, आसुओ और मारपीट तक की नौबत आती। सिपाही आपस मे लडते, खाई खोदनेवालो और घर-मालिक के मजदूरो तक से भिड जाते, औरतो को पीटते थे। अहाता क्या था, मानो हट्टे-कट्टे मर्दो की पाशविक और बेलगाम भूख का, नगी कामुकता और वासना का सागर हिलोरें ले रहा था। मेरे मालिक लोग जब दोपहर का खाना खाने, चाय पीने या साझ का भोजन करने बठते तो कोरी कामुकता और बेमानी बबरता मे डूबे इस जीवन और उसकी उखाड पछाड के गदे किस्सो का पूरी बारीकी और बेशर्मी से चटखारे ले लेकर बयान करते। बूढी मालकिन अहाते की एक एक बात की खबर रखती और रस ले-लेकर उसे दोहराती।

छोटी मालकिन चुपचाप इन किस्सों को सुनती और उसके गदराए हुए होठो पर मुस्कराहट थिरकने लगती। वीक्तर हसी से दोहरा हो जाता, लेकिन मालिक नाक भौंह सिकोडकर कहता

"बस भी करो, मा! "

"हाय राम, तुम्ह तो मेरा बोलना भी नहीं सुहाता!" मा शिकायत करती।

वीक्तर शह देता

"बोले जाओ, मा। इस मे शम की क्या बात है? यहा सभी अपने लोग ही ह "

बडे लडके के हृदय मे मा के प्रति तिरस्कार भरी दया का भाव था। वह हमेशा मा के साथ अकेला रहने से बचता, और अगर सयोगवश कभी ऐसा हो भी जाता तो मा उसकी पत्नी को लेकर शिकायतो का अम्बार लगा देती और अत मे पसे मागने से कभी न चूकती। दो-तीन रुबल, कुछ रेजगारी निकालकर वह झट से उसके हाथ पर रख देता।

"तुम्ह पसा की भला अब क्या जरूरत है, मा? यह नहीं कि मुझे देते दुख होता है, लेकिन सवाल यह है कि लेकर करोगी क्या?"

"मुझे तो बस वह भिखारियो के लिये, चच मे मोमबत्तिया ले जाने के लिये "

"भिखारियो की बात न करो, मा! वीक्तर का तुम सत्यानास करके छोडोगी!"

"तुम्हे अपना भाई भी फूटी आखो नहीं सुहाता! यह बडा पाप है!"

बेचैनी से हाथ हिलाकर वह मा के पास से चल देता।

वीक्तर मुहफट था और मा का जरा भी लिहाज नहीं करता था। खाने की चीजो पर वह बुरी तरह टूटता, और उसका मन कभी नहीं भरता। रविवार के दिन बडी मालकिन मालपूवे बनाती और उसके लिये कुछ मालपूवे निकालकर अलग रखना कभी नहीं भूलती। उन्हे मतबान मे छिपाकर वह काउच के नीचे रख देती जिसपर मैं सोता था। गिरजे से लौटते ही वीक्तर सीधे मतबान पर झपट्टा मारता और बडबडाकर कहता

"ऊट की दाढ मे जीरा! थोडे मालपूवे और रख देती तो क्या तेरा कुछ बिगड जाता। बूढी चमरखट्टो!"

"ज्यादा बोलो नहीं। चुपचाप निगल जाओ। अगर किसी ने देख लिया तो "

"तो क्या? मैं साफ कह दूगा कि शैतान की मौसी खुद इस बूढी खूसट ने मेरे लिए ये मालपूवे चुराकर रखे थे!"

एक दिन मैंने मतबान निकाला और दो एक मालपूवे खुद चट कर गया। वीक्तर ने मेरी खूब मरम्मत की। वह मुझसे उतनी ही घृणा करता था जितनी कि मैं उससे। वह मुझे चिढाता, दिन मे तीन बार अपने जूतो पर मुझसे पालिश कराता, अपने तख्ते पर लेटने के बाद लकडी की पट्टिया खिसकाता और मेरे सिर का निशाना साधकर दरार के बीच से जोरो से थूकता।

अपने बडे भाई की भाति जिसे बात-बात मे 'कुडक-मुर्गियो' या इसी तरह के दूसरे फिकरे कसने की आदत थी, वह भी कुछ खास ढले-ढलाए फिकरे दोहराने की कोशिश करता। लेकिन उसके फिकरे हद से ज्यादा बेहूदा और बेतुके होते थे।

"मां, मटन्नान! मेरे मोजे कहां हैं?"

बेमानी सवालो से वह मेरी जान खाता। जसे

"अलेक्सेई, बता 'बुलबुल' लिखकर हम उसे 'गुलगुल' क्या पढते हैं? जिस तरह कुछ लोग 'चाकू' को 'काचू' कहते हैं, वसे ही 'चाबुक' को 'काबुच' क्या न कहा जाए। और यह 'कुच' शब्द क्या 'कूची' से बना है? अगर ऐसा है तो.."

उनकी बोलचाल और बातचीत करने का ढग मुझे बहुत बुरा लगता। जन्म से ही नाना और नानी की साफ-सुथरी और सुघड भाषा की घुट्टी पीकर मैं बडा हुआ था। बेमेल शब्दो का गठबधन कर जब वे प्रयोग करते तो शुरू-शुरू मे मुझे बडा अजीब लगता। मेरी समझ मे न आता कि यह क्या गोरखधधा है। "भयानक मजा", "इतना खाने का दिल है कि मर ही जाऊ", "भीषण प्रसन्नता", या इसी तरह के अन्य बेमेल शब्दो को जोडकर वे इस्तेमाल करते। और मैं सोचता कि जो 'मजेदार' है वह 'भयानक' कैसे हो सकता है, भोजन या खाने के साथ मरने का भला क्या सम्बध हो सकता है, और 'प्रसन्नता' के साथ 'भीषण' शब्द का जोड कैसे बैठ सकता है?

और मैं उनसे सवाल करता

"इस तरह बोलना क्या ठीक है?"

झुझलाकर वे जवाब देते

"बस-बस, ज्यादा उस्तादी झाडने की कोशिश मत कर! नहीं तो तेरे कान तोड देंगे "

मुझे यह भी गलत मालूम हुआ। कान भी क्या कोई पेड-पौधा या फूल पत्तिया हैं जिन्हे तोडा जा सकता है?

यह दिखाने के लिए कि मेरे कानों को [illegible] जा सकता है, उन्होने मेरे कान खींचे। लेकिन मैं निश्चल [illegible] और अन्त मे विजय के स्वर मे चिल्लाकर बोला

"अहा, कान खींचने को तुम कान तोडना कहते हो! मेरे कान तो अभी भी वहीं हैं, जहा पहले थे!"

चारो ओर जिधर भी नजर [illegible], पूरी हृदयहीनता से लोग एक-दूसरे को सताते, दुनिया भर की [illegible] और घिनौने [illegible] का प्रदर्शन करते। यहा की गन्दगी और [illegible] ने दुर्गन्धियों के बाड [illegible] और चकलाखाने को भी मात कर [illegible] था [illegible] पर [illegible] घर थे और हरजाई औरतों का [illegible] पर [illegible] दिखाई देते थे दुर्गन्धियों की गदगी और [illegible] के [illegible] तो [illegible] खोज का आभास मिलता था जिसने इस [illegible] और [illegible] साथ बना दिया था [illegible], [illegible] और [illegible] देनेवाली घिसघिस का [illegible] कर दिया था। [illegible]

रहते थे, चन से जीवन बिताते थे, और श्रम के बदले गरजरुरी समझ मे न आनेवाली हलचल मे डूबते उतराते थे। यहा हर चीज तेज, झझलाहट भरी ऊब से रगी हुई थी।

मेरी बुरी हालत थी, और जब कभी नानी मुझसे मिलने आती तब तो मानो मेरी जान पर ही बन आती। वह हमेशा पीछे के दरवाजे से रसोई मे दाखिल होती। पहले वह देव प्रतिमाओ के सामने सलाब का चिह्न बनाती, इसके बाद अपनी छोटी बहन के सामने झुकते समय वह एकदम दोहरी हो जाती। उसका इस तरह झुकना मुझे पूर्णतया कुचल देता, ऐसा मालूम होता मानो ढाई मन का बोझ मेरे ऊपर आ गिरा हो।

एकदम ठडे, उपेक्षापूर्ण अदाज मे मालकिन कहती

"अरे, तुम यहा कहा से टपक पडीं, अकुलीना?"

नानी मेरी पहचान से बाहर हो जाती। इस अदाज मे वह अपने होठो को काटती कि उसके चेहरे का भाव एकदम बदल जाता। ऐसा मालूम होता मानो वह नानी का चेहरा नहीं है। वह वहीं, गदे पानी वाले डोल के पास, दरवाजे के साथ लगी बेंच पर चुपचाप बठ जाती और मुह से एक शब्द भी न निकालती—एकदम गुमसुम, मानो उसने कोई अपराध किया हो। अपनी बहन के सवालो के जवाब भी वह दब और सहमे हुए से स्वर मे देती।

मुझसे यह सहन न होता। झुझलाकर कहता

"यह तुम कहा बठ गयीं?"

दुलार भरी कनखिया से वह मेरी ओर देखती, और प्रभावपूर्ण ढग से कहती

"बहुत जबान न चला। तू क्या इस घर का मालिक है?"

"इसके तो ढग ही निराले हैं," बूढी मालकिन कहती, "चाहे जितना इसे मारो या डाटो, पर यह हर बात मे अपनी टाग अडाने से बाज नहीं आता!" और इसके बाद शिकायतो का सिलसिला शुरू हो जाता।

कभी-कभी बडे ही कुत्सित ढग से वह अपनी बहन को कोचती

"तो अब माग-ताग कर गुजर हो रहा है, अकुलीना?"

"बुरी बात क्या है"

"जब लाज ही बाकी न रही तो बात ही क्या है!"

"लोग कहते हैं ईसा मसीह भी माग-ताग कर ही गुजर करते थे "

"यह तो मूर्खों की बाते हैं। नास्तिक ही ऐसी बाते करते हैं। और तुम बूढ़ी उनकी बात सुनती हो! ईसा मसीह क्या भिखारी था? वह भगवान का बेटा था। कहा गया है कि एक दिन वह आएगा और सभी के भले-बुरे कामो का जायजा लेगा—जो जिन्दा हैं उनके भी और जो मर गए हैं उनके भी—याद रखो! तुम गल सडकर चाहे धूल में क्यो न मिल जाओ, उसकी नजरो से फिर भी न छिप सकोगे। वह तुम्हें और तुम्हारे वासीली से बदला लेगा, तुम्हारे घमड के लिए और मेरे लिए, जब अपना धनी रिश्तेदार समझकर मैंने तुम्हारे आगे हाथ फलाया था "

नानी ने अविचलित स्वर मे जवाब दिया

"मुझसे जो बना, तुम्हारे लिए सदा करती रही। और भगवान ने हमसे बदला लिया है तुम्हे मालूम है "

"थोडा लिया है, थोडा "

उसकी जबान रुकने का नाम नहीं लेती, और उसके शब्द नानी के हृदय पर कोडे बनकर बरसते। मुझे बडा अटपटा मालूम होता और समझ मे न आता कि नानी यह सब कैसे बरदाश्त करती है। नानी का यह रूप मुझे जरा भी अच्छा नही लगता।

तभी छोटी मालकिन कमरा मे से आती और अहसान सा जताते हुए कहती

"चलो, खाने के कमरे मे चलो। हा हा, सब ठीक है। बस, चली आओ!"

बडी मालकिन नानी को पीछे से आवाज देती

"अपने पाव तो साफ कर लिए होते, चर-मर चरखे की माल!"

मेरे मालिक का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठता। नानी को देखते ही वह कहते

"ओह, पडिता अकुलीना! कहो, कैसी हो? बूढ़ा काशीरिन तो अभी जिन्दा है न?"

नानी के चेहरे पर अत्यन्त स्नेहपूर्ण मुस्कराहट खेलने लगती।

"और तुम्हारा क्या हाल है? क्या अब भी उसी तरह काम मे जुटे रहते हो?"

"हा काम मे ही जुटा रहता हू। कैदी की तरह।"

मालिक के साथ नानी की बातचीत मे अपनापन और सहृदयता का भाव रहता। वह इस तरह बातें करती जैसे बडे छोटो से करते हैं। कभी कभी मालिक मेरी मा का भी जिक्र करता, कहता

"वर्वारा वासील्येव्ना क्या औरत थी—दिलेर और ताक़तवर!"

"तुम्हे याद है न," नानी की ओर मुह करते हुए उसकी पत्नी कहती, "मैंने उसे एक लबादा दिया था—काले रेशम का, और शीशे के मोती जडा!"

"हा, हा, याद है "

"एकदम नया मालूम होता था "

"ऊह, लबादा, सबादा—जीवन का कबाडा!" मालिक बडबडाया।

"यह क्या—क्या कहा तुमने?" उसकी पत्नी सदेहपूर्वक पूछती।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं सुखी दिन गुजर जाते हैं, अच्छे लाग गुजर जाते हैं "

पत्नी के माथे पर चिता की रेखाए दौड गई। बोली

"मेरी समझ मे नहीं आता—यह क्या बाते कर रहे हो तुम?"

इसके बाद नानी नवजात बच्चे को देखने चली गई और मै चाय के बरतन आदि साफ करने के लिए रह गया। मालिक ने धीमे और विचारमग्न से स्वर मे कहा

"बडी अच्छी है नानी तेरी "

उसके इन शब्दो को सुनकर मेरे हृदय मे कृतज्ञता पदा हो गयी। लेकिन अकेले मे मुझसे नहीं रहा गया। दुखते हृदय से मैंने नानी से कहा

"तुम यहा आती ही क्या हो? क्या तुम नहीं देखती कि ये किस किस्म के लोग हैं?"

"हां अल्योशा, मैं सब कुछ देखती हू," नानी ने उसांस भरते हुए कहा और मेरी तरफ देखा। नानी के अद्भुत चेहरे पर एक बहुत ही कोमल मुसकराहट जगमगा उठी, और मैंने तुरत लज्जा का अनुभव किया। सचमुच, नानी की आंखों से कुछ छिपा नहीं था—वह सब कुछ देखती थी, सभी कुछ जानती थी, यह उस उथल-पुथल तक से परिचित थी जो कि उस समय मेरे हृदय मे हो रही थी।

नानी ने चौकस होकर इधर-उधर नजर डाली और यह देखकर कि आस-पास मे कोई नहीं है, मुझे अपनी बाहो मे खींच लिया और उमडते हुए हृदय से बोली

"अगर तुम न होते तो मैं यहा कभी नहीं आती—इन लोगो से भला मेरा क्या वास्ता? फिर नाना बीमार हैं और उनकी बीमारी के चक्कर मे मेरा सारा समय चला जाता है। मैं कुछ काम नहीं कर पाती, इस लिए हाथ भी तग है। उधर बेटा मिखाइलो ने अपने साशा को धता बता दिया है, सो उसका खाना-पीना भी मुझे ही जुटाना पडता है। इन्होंने तुम्हें छ रूबल साल देने का वायदा किया था। सो मैंने सोचा कि अगर ज्यादा नहीं तो कम से कम एक रूबल इनसे मिल ही जाएगा। क्यो, आधा साल तो होने आया न तुम्हें इनके यहा काम करते?" नानी और भी नीचे झुक गई और फुसफुसाकर मेरे कान मे कहने लगी "उन्होने मुझसे तुम्हे डाटने के लिए कहा है। शिकायत करते थे कि तुम कहना नहीं मानते। कुछ दिन और यहा टिक जाओ—एक दो साल, जब तक खुद मजबूत नहीं हो जाते—निभा लो किसी तरह, निभाओगे न?"

मैंने वादा तो कर लिया, लेकिन था यह बेहद कठिन। तुच्छ, ऊबाऊ, खाने की भाग दौड मे सिमटा यह जीवन मेरे लिए बडा भारी बोझ था। मुझे ऐसा मालूम होता मानो दुःस्वप्नो की दुनिया मे मेरा जीवन बीत रहा है।

कभी-कभी मेरे मन मे होता कि यहा से भाग चलू। लेकिन कम्बख्त जाडा अपने पूरे जोर पर था। रात को बर्फ की आधिया चलतीं, अटारी मे हवा साय-साय करती और ठड से जकडी लकडी की छते चरमरा उठतीं। ऐसे मे भागकर मैं जाता भी कहा?

बाहर जाकर खेलना मेरे लिए मना था, सच तो यह है कि मुझे खेलने की फुरसत ही नहीं मिलती थी। जाडा के छोटे दिन योंही काम की चकरघिन्नी मे गायब हो जाते थे।

लेकिन मुझे गिरजे जरूर जाना पडता—एक तो शनिवार के दिन सध्या प्रार्थना के लिए, दूसरे त्यौहार के दिन दोपहर की प्रार्थना के लिए।

गिरजे जाना मुझे अच्छा लगता था। किसी लुके छिपे सूने कोने को मैं खोज करता और वहा जाकर खडा हो जाता। देव प्रतिमाओ को दूर

से देखने मे बडा अच्छा लगता—ऐसा मालूम होता मानो पत्थर के धूसर फर्श के ऊपर प्रवाहित मोमबत्तियो के सुनहरे प्रकाश की प्रशस्त धारा मे देव प्रतिमाओ की वेदी तर रही हो। देव प्रतिमाओ की काली आकृतियों मे हल्का सा कम्पन पदा होता और राज द्वारो की सुनहरी झालरें झूमकर झिलमिला उठतीं। नीले से शून्य मे लटकी मोमबत्तिया की लौ सुनहरी मधुमक्खिया की भाति मालूम होती और स्त्रियो तथा लडकियो के सिर फूलों की भाति दिखाई देते।

सहगान शुरू होता और हर चीज मानो उसकी स्वरलहरियो के साथ थिरकने लगती, हर चीज मानो इस पार्थिव जगत से ऊपर उठकर परियों के लोक में पहुच जाती, समूचा गिरजा हौले हौले डोलने लगता, मानो काजर की भाति गहन, अधेरे शून्य मे पालना झूल रहा हो।

कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि गिरजा किसी झील मे गोता लगाकर दुनिया की आखो से दूर, खूब गहराई मे, छिप गया है जिससे कि वह अपना एक अलग और अन्य सब से भिन्न जीवन बिता सके। यह भावना शायद नानी की एक कहानी का फल थी जो क्तिेज नगर के बारे मे थी। अपने चारो ओर की हर चीज के साथ-साथ मैं भी बहुधा उनींदा सा झूमने लगता—सहगान की स्वरलहरिया मुझे थपकिया देतीं, फुसफुसाकर बोली गयी प्रार्थनाए और पूजा करनेवालो की उसासे मेरा पलका को मूद देतीं, और मैं नानी की उस उदासी भरी मधुर कहानी को मन ही मन गुनगुनाने लगता

> सुबह का था समय, शुभ और पवित्र।
> बज रहे थे घटे गिरजो मे मातिन प्रार्थना के।
> तभी किया धावा धर्म-द्वेषी तातार लुटेरो ने
> घोडो पर कसे जीन, कील-काटो और अस्त्रो से लस
> घेर लिया आनन फानन मे प्यारे नगर क्तिेजग्राद को!
> ओ इस दुनिया के प्यारे स्वामी,
> ओ प्यारी मरियम पवित्र!
> खुदा के बदा की खातिर उतरो इस धरती पर,
> न पडे कोई विघ्न उनकी पूजा प्रार्थना मे,
> दैवी प्रकाश से हो नागरिका के हिय का अधेरा दूर!
> पवित्रता तेरे मंदिर की कर सके न कोई नष्ट,
> न रौंदी जाए लाज नगर कन्याओ की,

न फिरे नन्हे बच्चो के गलो पर तेग,
न आए बडे-बूढा और दुर्बलो पर आच।
परम पिता जेहोवाह ने यह सुना
और सुना मा मरियम पवित्र ने।
कर दिया उन्हे विचलित और व्यथित
लोगा के क्रदन और दुख की गुहारो ने।
और दिया आदेश परम पिता जेहोवाह ने
अपने सबसे बडे फरिश्ते मिखाईल को
मिखाईल, मानव लोक मे जरा जाओ तो
कितेजग्राद की धरती को जरा हिलाओ तो
फटे धरती और फूट पडें पानी के सोते
छिप जाए कितेजग्राद, पानी की लहरो मे
तातार लुटेरा की पहुच से दूर—बहुत दूर!
और खुदा के बन्दे
हों, अपनी प्राथनाओ मे सलग्न,
अविरल और अविश्रान्त,
सुबह, साझ और आठों याम, वप प्रति वर्ष—
बहे जब तक जीवन की अनन्त धारा!

उन दिनो नानी की कविताए मेरे रोम रोम मे वसी हीं समायी थीं जसे मधुमक्खियो के छत्ते मे शहद। यहा तक कि मेरे विचार और कल्पनाए तक उन्हीं कविताओ के साचे मे ढली होती थीं।

गिरजे मे जाकर मैं प्रार्थना नहीं करता था, नाना की द्वेप भरी मिन्नतो और मानताओ तथा उदास ईश प्राथनाओ को नानी के भगवान के सामने दोहराते मेरी जुबान अटकती। मुझे पक्का यकीन था कि नानी का भगवान उन्हे उतना ही नापसद करेगा जितना कि मैं करता हू। इसके अलावा वे सब किताबो मे छपी छपायी थीं। दूसरे शब्दो मे यह कि किसी भी पढ़े लिखे व्यक्ति की भाति भगवान को भी वे जबानी याद होंगी।

इस कारण जब कभी मेरा हृदय किसी मधुर उदासी से दुखता या बीते हुए दिन के छोटे-मोटे आघातो से कराह उठता तो मैं अपनी निजी प्रार्थनाए रचने का प्रयत्न करता। और उसके लिए मुझे कोई खास प्रयास भी नहीं करना पडता। अपने दुखी जीवन पर मैं एक नजर डालता और शब्द अपने आप आकार रूप ग्रहण कर प्रकट होने लगते

भगवान, ओ मेरे भगवान
हूं मैं कितना दुखिया
विनती मेरी,
झटपट मुझे बड़ा बना दे!
बहुत सहा–सह चुका बहुत मैं,
न होना मुझपर गुस्सा
गर हो जाऊं मैं तंग
और कर दूं इस जीवन का अंत!

मरती यहां सभी की नानी
नहीं सिखाते, नहीं सिखाते
खाक–धूल, कुछ नहीं बताते
और यह बुढ़िया आफत की परकाला
जीवन को जंजाल बनाती,
सदा डांटती, कान खींचती।
कर दे उसका मुंह काला।
भगवान, ओ मेरे भगवान,
हूं मैं कितना दुखिया!

खुद रची हुई इन "प्रार्थनाओं" में से कितनी ही मुझे आज दिन भी याद हैं। बचपन में जिस तरह दिमाग़ काम करता है, उसकी छाप कभी कभी हृदय पर इतनी गहरी पड़ती है कि मृत्यु के दिन तक नहीं मिटती।

गिरजे में बहुत ही सुहावना मालूम होता। वहां मैं उतने ही सुख और सन्तोष का अनुभव करता जितना कि पहले खेतों और जंगलों में करता था। मेरा नन्हा हृदय जो अभी से ही रात दिन की चोटों से छलनी और जीवन की बेहूदगियों से विथला हो चुका था, धुंधले, पर रंग बिरंगे सपनों में तरने लगता।

लेकिन मैं केवल तभी गिरजे जाता जब बला की ठंड पड़ती या जब नगर में बर्फानी आंधियां सनसनातीं और ऐसा मालूम होता मानो आकाश भी जमकर बर्फ हो गया हो, कि हवा ने उसे बर्फ के बादलों में बदल दिया हो, और धरती पर इतनी बर्फ गिरती कि पूरी की पूरी ढक जाती, जमकर वह भी बर्फ ही जाती और ऐसा मालूम होता मानो उसके हृदय की धड़कन अब फिर कभी नहीं सुनाई देगी।

रात के सन्नाटे मे मुझे नगर मे घूमना अधिक अच्छा लगता, कभी इस सडक को नापता तो कभी उस। एकदम निराले कोनो की मैं खोज करता। तेजी से मेरे डग उठते, मानो पर लगे हो। मैं सडक पर ऐसे ही तरता जसे आकाश मे चाद तरता है, बिना किसी सगी-साथी के, अपने आप मे अकेला। मेरी परछाईं मुझसे आगे चलती, प्रकाश मे चमकते हिमकणो पर पड उन्हे बुझा देती और हास्यास्पद ढग से खम्बो तथा बाडो से टकराती। खाल का भारी भरकम कोट पहने, हाथ मे लाठी और साथ मे अपना कुत्ता लिए चौकीदार सडक के बीचोबीच गश्त लगाता दिखाई देता।

उसका भारी भरकम आकार देखकर मुझे लगता कि लकडी का कुत्ता घर न जाने कसे आंगन मे से लुढ़ककर सडक पर आ गया था और किसी अज्ञात मजिल की ओर आगे बढ़ चला था। और दुखी कुत्ता उसके पीछे हो लिया था।

कभी-कभी खिलखिलाती जवान लडकियो और उनके चहेतो से मुठभेड होती और मैं मन ही मन सोचता कि ये लोग भी गिरजे से भाग आए हैं।

खिडकिया रोशनी से चमचमाती रहतीं। उनकी दराजो मे से स्वच्छ हवा मे कभी-कभी एक अजीब किस्म की गध आती—भीनी और अपरिचित गध जो एक भिन्न प्रकार के जीवन का आभास देती। खिडकी के पास रुककर मैं कान लगाकर सुनता था और यह पता लगाने का प्रयत्न करता कि किस तरह के लोग यहा रहते हैं, कसा जीवन वे बिताते हैं। उस समय जबकि सभी भले लोगो को सध्या प्रार्थना मे शामिल होना चाहिए, ये लोग हसते और अठखेलिया करते हैं, खास क़िस्म का गिटार झनझनाते और खिडकियो मे से मधुर स्वर लहरिया प्रवाहित करते हैं।

दो सूनी सडको—तिखोनोव्स्काया और मरतीनोव्स्काया—के कोने पर स्थित एक नीचा, एकमजिला घर मुझे खास तौर से अजीब मालूम हुआ। सर्दिया खत्म होने के त्यौहार से पहले की बात है। मौसम बदल चला था और बर्फ पिघलने लगी थी। इन्हीं दिनो, चादनी खिली रात मे, इस घर के पास से मैं गुजरा और वहीं उलझकर रह गया। गर्म भाप के साथ-साथ खिडकी मे से एक अदभुत आवाज भी गा रही थी, ऐसा मालूम होता था मानो कोई बहुत ही मजबूत और बहुत ही दयालु व्यक्ति होठो को बद किये गा रहा हो। बोल तो समझ मे नहीं आते थे, लेकिन धुन

बहुत ही जानी-पहचानी और समझी-बूझी मालूम होती थी। मैं उसे समझ भी लेता, लेकिन उसके साथ जिस बेसुरे ढंग से तार का बाजा झनझना रहा था, वह मानो गीत के प्रवाह और उसकी बोधगम्यता को छिन्न भिन्न कर रहा था। मैं समझ गया कि किसी जादू भरे, हृदय को मरोड़ देने की अद्भुत शक्ति से सम्पन्न वायलिन से यह सगीत प्रवाहित हो रहा है और यहीं सडक के किनारे पत्थर के बने पीढ़े पर बठ गया। सगीत का एक एक स्वर वेदना मे डूबा था। कभी-कभी उसका स्वर इतना जोरदार हो जाता कि लगता मानो समूचा घर थरथरा उठा है, खिड़कियों के काच झनझनाने लगे हैं। पिघली हुई बर्फ छत पर से टपाटप गिरती, और आसुओं की बूदें मेरे गालो पर से ढुलकतीं।

मैं अपने आप मे इतना खो गया था कि चौकीदार के आने का मुझे पता तक नहीं चला। धक्का देकर उसने मुझे पीढ़े पर से गिरा दिया।

"यहा किस लौफरी की ताक मे बठे हो?" उसने पूछा।

मैंने बताया

"जरा सगीत!"

"सगीत सुन रहा था, – ऊह! बस, नौ-दो ग्यारह हो जाओ यहा से।"

मैं जल्दी से इमारतो के पीछे से घूमकर फिर उसी घर के सामने आ गया। लेकिन अब कोई सगीत सुनाई नहीं दे रहा था। खिड़की में से अब चुहल और अठखेलियो की उल्टी पल्टी आवाजें आ रही थीं जो उस उदास सगीत से इतनी भिन्न थीं कि मुझे लगा मानो वह सगीत मैंने सपने मे सुना था।

क़रीब-करीब हर शनिवार को मैं उस घर के पास पहुचने लगा, लेकिन वह सगीत केवल एक ही बार और सुनने को मिला। वसन्त के दिन थे। पूरी आधी रात तक, बिना रुके, सगीत चलता रहा। इसके बाद जब मैं घर लौटा तो खूब मार पडी।

जाड़ा की रात, आकाश मे तारे जडे हुए और नगर की सूनी सडकें, मैं खूब घूमता और तरह-तरह के अनुभव बटोरता। मैं जान-बूझकर दूर की बस्तियो की सडकें चुनता। नगर की मुख्य सडको पर जगह जगह लालटेनें जलती थीं। मेरे मालिको की जान-पहचान के लोगों मे से अगर कोई मुझे देख लेता तो उन्हें खबर कर देता कि मैं सध्या प्रार्थनाओं से

गायब रहता हू। इसके सिवा नगर की मुख्य सडको पर शराबियो, पुलिस वाला, और शिकार की खोज मे निकली हरजाई स्त्रियो से टकराने पर घूमने का सारा मजा किरकिरा हो जाता था। केन्द्र से दूर की निराली सडको पर मै निश्चिन्त होकर घूमता। चाहे जहा जाता और निचले तल्ले की चाहे जिस खिडकी मे झाककर देखता—बशर्ते कि उस पर परदा न पडा हो, या पाले ने उसे ढक न दिया हो।

इन खिडकियो मे से मैं अनेक प्रकार के दृश्यो की झाकी लेता। कहीं लोग प्रार्थना करते दिखाई देते, कहीं चूमा चाटी करते, कहीं एक दूसरे के बाल नोचते, कहीं ताश खेलते और कहीं, पूरी गम्भीरता से, दबे हुए स्वरो मे बातचीत करते। एक के बाद दूसरे दृश्य मेरी आखो के सामने से गुजरते—मछलियो की भाति मूक, मानो सन्दूकची के शीशे पर आखें गडाए मैं बारह मन की धोबन वाला खेल देख रहा हू।

निचले तल्ले की एक खिडकी मे से दो स्त्रियो पर मेरी नजर पडी—एक युवती, दूसरी कुछ बडी। दोनो मेज पर बैठी थीं। उनके सामने मेज के दूसरी ओर लबे बालो वाला एक छात्र बैठा था और खूब हाथ हिला हिलाकर वह उन्हे कोई पुस्तक पढकर सुना रहा था। युवती कुर्सी से पीठ लगाए बैठी थी और बडे ध्यान से सुन रही थी। उसकी भौंहे सिकुड गई थीं। बडी स्त्री ने जो बहुत ही दुबली पतली थी और जिसके बाल ऊन के गोले मालूम होते थे, सहसा दोनो हाथो से अपना मुह ढक लिया, उसके कधे हिलने लगे। छात्र ने अपनी पुस्तक नीचे पटक दी, युवती उछलकर खडी हो गई और भागकर कमरे से बाहर चली गई। तब छात्र उठा और मुलायम बालो वाली स्त्री के सामने घुटनो के बल गिरकर उसके हाथ चूमने लगा।

एक अन्य खिडकी मे से एक लमतडग दाढ़ी वाले आदमी पर मेरी नजर पडी। लाल ब्लाउज पहने एक स्त्री को वह अपने घुटनो पर इस तरह झुला रहा था मानो वह कोई छोटा बच्चा हो। साथ ही वह कुछ गाता भी मालूम होता था। कारण कि रह रहकर वह भद्दा सा अपना मुह खोलता और दीदे मटकाता। स्त्री खिलखिलाकर दोहरी हो जाती, पीछे की ओर झुकती और अपनी टागो को हवा मे नचाने लगती। वह फिर उसे सीधा बठाता, गाता और वह फिर खिलखिलाकर दोहरी हो जाती। बहुत देर तक मैं उन्हें देखता रहा और तभी वहा से हिला जब

बहुत ही जानी पहचानी और समझी-बूझी मालूम होती थी। मैं उसे समझ भी लेता, लेकिन उसके साथ जिस बेसुरे ढग से तार का बाजा झनझना रहा था, यह मानो गीत के प्रवाह और उसकी बोधगम्यता को छिन्न भिन्न कर रहा था। मैं समझ गया कि किसी जादू भरे, हृदय को मरोड़ देने की अद्भुत शक्ति से सम्पन्न वायलिन से यह सगीत प्रवाहित हो रहा है और वहीं सडक के किनारे पत्थर के बने पीढ़े पर बैठ गया। सगीत का एक एक स्वर वेदना मे डूबा था। कभी-कभी उसका स्वर इतना जोरदार हो जाता कि लगता मानो समूचा घर थरथरा उठा है, खिडकियो के काच झनझनाने लगे हैं। पिघली हुई बर्फ छत पर से टपाटप गिरती, और आसुओ की बूदें मेरे गालों पर से ढुलकतीं।

मैं अपने आप मे इतना खो गया था कि चौकीदार के आने का मुझे पता तक नहीं चला। धक्का देकर उसने मुझे पीढ़े पर से गिरा दिया।

"यहां किस लोफरी की ताक मे बैठे हो?" उसने पूछा।

मैंने बताया

"जरा सगीत!"

"सगीत सुन रहा था, — ऊह! बस, नौ-दो ग्यारह हो जाओ यहा से!"

मैं जल्दी से इमारतो के पीछे से घूमकर फिर उसी घर के सामने आ गया। लेकिन अब कोई सगीत सुनाई नहीं दे रहा था। खिडकी में से अब चुहल और अठखेलियो की उल्टी पल्टी आवाजें आ रही थीं जो उस उदास सगीत से इतनी भिन्न थीं कि मुझे लगा मानो वह सगीत मैंने सपने मे सुना था।

करीब-करीब हर शनिवार को मै उस घर के पास पहुचने लगा, लेकिन वह सगीत केवल एक ही बार और सुनने को मिला। वसन्त के दिन थे। पूरी आधी रात तक, बिना रुके, सगीत चलता रहा। इसके बाद जब मैं घर लौटा तो खूब मार पडी।

जाडे की रात, आकाश मे तारे जडे हुए और नगर की सूनी सडकें, मैं खूब घूमता और तरह-तरह के अनुभव बटोरता। मै जान-बूझकर दूर की बस्तियो की सडकें चुनता। नगर की मुख्य सडको पर जगह जगह लालटेनें जलती थीं। मेरे मालिको की जान-पहचान के लोगो मे से अगर कोई मुझे देख लेता तो उन्हें खबर कर देता कि मैं सध्या प्रार्थनाओ से

गायब रहता हू। इसके सिवा नगर की मुख्य सडको पर शराबियो, पुलिस वालो, और शिकार की खोज मे निकली हरजाई स्त्रिया से टकराने पर घूमने का सारा मजा किरकिरा हो जाता था। केन्द्र से दूर की निराली सडको पर मै निश्चिन्त होकर घूमता। चाहे जहा जाता और निचले तल्ले की चाहे जिस खिडकी मे झाककर देखता—बशर्ते कि उस पर परदा न पडा हो, या पाले ने उसे ढक न दिया हो।

इन खिडकियों मे से मै अनेक प्रकार के दृश्या की झाकी लेता। कहीं लोग प्रार्थना करते दिखाई देते, कहीं चूमा चाटी करते, कहीं एक दूसरे के बाल नोचते, कहीं ताश खेलते और कहीं, पूरी गम्भीरता से, दबे हुए स्वरो मे बातचीत करते। एक के बाद दूसरे दृश्य मेरी आंखो के सामने से गुजरते—मछलियो की भांति मूक, मानो सन्दूकची के शीशे पर आखें गडाए मैं बारह मन की धोबन वाला खेल देख रहा हू।

निचले तल्ले की एक खिडकी मे से दो स्त्रिया पर मेरी नजर पडी—एक युवती, दूसरी कुछ बडी। दोना मेज पर बठी थीं। उनके सामने मेज के दूसरी ओर लबे बालो वाला एक छात्र बठा था और खूब हाथ हिला हिलाकर वह उन्हें कोई पुस्तक पढ़कर सुना रहा था। युवती कुर्सी से पीठ लगाए बठी थी और बडे ध्यान से सुन रही थी। उसकी भौंहें सिकुड गई थीं। बडी स्त्री ने जो बहुत ही दुबली-पतली थी और जिसके बाल ऊन के गाले मालूम होते थे, सहसा दानों हाथों से अपना मुह ढक लिया, उसके कधे हिलने लगे। छात्र ने अपनी पुस्तक नीचे पटक दी, युवती उछलकर खडी हो गई और भागकर कमरे से बाहर चली गई। तब छात्र उठा और मुलायम बालों वाली स्त्री के सामने घुटनों के बल गिरकर उसके हाथ चूमने लगा।

एक अन्य खिडकी में से एक लम्बी दाढी वाले आदमी पर मेरी नजर पडी। लाल ब्लाउज पहने एक स्त्री को वह अपने घुटनों पर इस तरह झुला रहा था मानो वह कोई छोटा बच्चा हो। साथ ही वह कुछ गाता सा मालूम होता था। कारण कि रह-रहकर वह [illegible] मुह खोलता और सिर झटकता। स्त्री खिलखिलाकर हंसती ही जाती, पीछे की ओर झुकती और अपने हाथों को हवा में [illegible]। वह फिर उसे [illegible], [illegible] और वह फिर खिलखिलाकर हंसती ही जाती। बहुत देर तक मैं उन्हें देखता रहा और [illegible]

समझ गया कि उनका यह गाना और खिलखिलाना सारी रात इसी तरह चलता रहेगा।

यह तथा इसी तरह के अन्य कितने ही दृश्य मेरी स्मृति मे सदा के लिए अंकित हो गए। इन दृश्यो को बटोरने मे बहुधा मैं इतना उलझ जाता कि घर देर मे पहुचता और मालिको के हृदय मे सन्देह का कीड़ा कुलबुलाने लगता। वे पूछते

"किस गिरजे मे गया था? कौन से पादरी ने पाठ किया था?"

वे नगर के सभी पादरियो को जानते थे। उन्हे यह भी मालूम था कि कब कौनसी प्रार्थना होती है। मैं झूठ बोलता तो वे आसानी से पकड़ लेते।

दोनो स्त्रिया नाना वाले क्रोधमूर्ति भगवान की पूजा करती थीं, एक ऐसे भगवान की जो चाहता कि सब उससे डरें, सब उसका आदेश मानें। भगवान का नाम सदा उनके होठो पर नाचता रहता, उस समय भी जब कि वे लड़तीं झगड़तीं।

"जरा ठहर तो कुतिया, भगवान तेरी ऐसी खबर लेगा कि तू याद रखेगी!" वे एक दूसरी पर चीखतीं।

इसाई चालीसे के पहले रविवार को बूढ़ी मालकिन मालपूवे बना थी जो कड़ाई मे ही चिपककर जलते जा रहे थे।

"इन मरो को भी मेरी ही जान खानी थी!" झुझलाकर चिल्लाई। आग की तपन से उसका मुह तमतमा रहा था।

सहसा कड़ाही की गध सूघकर उसके चेहरे पर घटा घिर आई, कड़ को उठाकर उसने फर्श पर पटक दिया और चीख उठी

"ओह मेरे भगवान, कड़ाही से घी की गध आ रही है! सोमवार के दिन मैं इसे तपाकर शुद्ध करना भूल गई! मै अब क्या हे भगवान!"

वह घुटनो के बल गिर गई और आखों मे आसू भरकर भग से फरियाद करने लगी

"क्षमा करना भगवान, मुझ पापिन को क्षमा करना, मुझपर खाना। मेरी तो बुद्धि सठिया गई है, भगवान!"

मालपूवे कुत्ते के सामने डाल दिये गये। कड़ाही भी तपाकर कर ली गई। लेकिन इसके बाद, जब भी मौका मिलता, छोटी माल बड़ी मालकिन को इस घटना की याद दिलाकर कोचने से न चू

"तुम तो चालीसे के पवित्र दिनो मे भी घी लगी कडाही मे मालपूवे बनाती हो!" झगडा होने पर वह कहती।

घर मे जो भी बात होती, वे भगवान को घसीटना न भूलतीं। अपने तुच्छ जीवन के हर अधेरे कोने मे वे भगवान को भी अपने साथ खींचकर ले जातीं। ऐसा करने से मरे गिरे जीवन मे कुछ महत्व और बडप्पन का पुट आता तथा वह (जीवन) प्रत्येक क्षण किसी ऊची शक्ति की सेवा मे लगा हुआ लगता। हर ऐरी-गैरी चीज के साथ भगवान को चस्पा करने की उनकी आदत मुझे दबाती, अनायास ही ओनो कोनो मे मेरी नजर पहुच जाती, और मुझे ऐसा मालूम होता मानो कोई अदृश्य आखें मुझे ताक रही हैं। रातो के अधेरे मे डर के ठडे बादल मुझे घेर लेते। उनका उदय रसोई के उस कोने मे होता जहा धुए मे काली पडी देव-प्रतिमाओ के सामने दिन-रात एक दिया जलता रहता था।

ताक से लगी हुई दोहरे चौखटे की एक बडी सी खिडकी थी। खिडकी के उस पार नीले शून्य का अनन्त विस्तार दिखाई देता था। ऐसा मालम होता मानो यह घर, यह रसोई, और यहा की हर चीज जिसमे मैं भी शामिल था, एकदम कगारे से अटके हो और अगर जरा सा भी हिले डुले तो बफ से ठडे इस नीले शून्य मे, तारो से भी परे पूण निस्तब्धता के सागर मे, डूबते चले जाएगे, ठीक वसे ही जसे पानी मे फेंका गया पत्थर डूबता चला जाता है। सिकुडा सिमटा, हिलने डुलने तक का साहस न करते हुए मैं दीघकाल तक दुनिया के प्रलयकारी अत की प्रतीक्षा मे निश्चल पडा रहता।

यह तो अब याद नहीं पडता कि इस डर से किस प्रकार मैंने छुटकारा प्राप्त किया, लेकिन इस डर से मेरा पीछा छूट गया, और सो भी बहुत जल्दी ही। स्वभावत नानी के भगवान ने मुझे सहारा दिया, और मुझे लगता है कि उन दिनो मे भी एक सीधी सादी सचाई का मैंने साथ नहीं छोडा था। वह यह कि मैंने कोई गलती नहीं की है, और अगर मै बेकसूर हू तो दुनिया मे कोई कानून ऐसा नहीं है जो मुझे सजा दे सके, और यह कि दूसरा के गुनाहो के लिए मुझे कठघरे मे नहीं खडा किया जा सकता।

दोपहर की प्राथना से भी मैं गायब रहने लगा—खास तौर से वसन्त के दिनो मे। प्रकृति के नवयौवन का अदम्य उभार गिरजे के आकपण पर पानी फेर देता। इसके अलावा मोमबत्ती खरीदने के लिए अगर मुझे कुछ

7*

पसे मिल जाते तब तो कहना ही क्या! मोमबत्तियों के बजाय मैं गोलियाँ खरीदता और खूब खेलता। प्रार्थना का सारा समय खेल में बीत जाता और घर में प्रदयवाश्‍र देर से पहुंचता। एक बार प्रसाद और मन्नतों की प्रार्थना के लिए मुझे दस कोपेक मिले और मैंने उन्हें भी ऐसे ही उड़ा दिया। नतीजा इसका यह हुआ कि जब गिरजाघर वेदी से थाल लिए उतरे तो मैंने अन्य किसी के प्रसाद पर हाथ साफ किया।

खेलने का मुझे बेहद शौक़ था, और खेल से मैं कभी नहीं थकता था। मेरा बदन तगड़ा और चपल था। गेंद, गोटियाँ और गोरोन्की में खूब खेलता था। शीघ्र ही समूची बस्ती में मेरा सिक्का जम गया।

चालीसे के दिनों में मुझे भी गुनाह-मुक्ति के चक्र में से गुज़रना पड़ा। हमारे पड़ोसी पादरी दोरीमेदोन्त पोक्रोव्स्की के सामने हम अपने गुनाह स्वीकार करते थे। मेरे मन में उनका आतंक बैठा था और वे सब शैतानी हरकतें मेरे हृदय में लड़बड़ मचा रही थीं जो कि मैं उनके खिलाफ़ आज़मा चुका था। पत्थर मारकर उनके मंडप की खपच्चियों के मैंने परखचे उड़ाए थे, उनके बच्चों को मारा-पीटा था और अन्य बहुत से जुर्म किए थे जिनकी वजह से वह मुझे बहुत बड़ा पापी समझ सकते थे। एक-एक करके सभी कुछ मुझे याद आ रहा था, और उस समय जब अपने गुनाह स्वीकार करने के लिए मैं उस छोटे और ग़रीब से गिरजे में जाकर खड़ा हुआ, तो मेरा हृदय बुरी तरह धकधक कर रहा था।

लेकिन पादरी दोरीमेदोन्त उस समय मानो भलमनसाहत का पुतला बना हुआ था।

"ओह, तुम तो हमारे पड़ोसी हो अच्छा तो अब घुटनों के बल बैठ जाओ, बताओ, क्या-क्या गुनाह किये हैं?"

उसने मेरे सिर पर भारी मख़मल डाल दिया। मोम और लोबान की गंध से मेरा दम घुटने लगा, बोलना मुश्किल हो रहा था और दिल भी नहीं कर रहा था।

"अपने बड़ों का कहना मानते हो?"

"नहीं!"

"कहो, मैंने गुनाह किया!"

अनायास ही, न जाने कैसे, मैं कह उठा

"प्रसाद चुराया था।"

"क्या, यह क्या कहा तुमने? कहां चोरी की?" एक क्षण रुककर पादरी ने स्थिर भाव से पूछा।

"तीन सन्तो के गिरजे मे, पोक्रोव गिरजे मे और सत निकोलाई "

"मतलब सभी गिरजो मे .. बुरी बात है, बेटा। ऐसा करना पाप है—समझे?"

"हा।"

"कहो, मैंने गुनाह किया! तुम बडे नादान हो। क्या खाने के लिए प्रसाद चुराया था?"

"कभी-कभी खाने के लिए, लेकिन कभी-कभी ऐसा होता कि गोटियो के खेल मे मैं अपने पसे हार जाता और प्रसाद के बग़ैर मैं घर लौट नहीं सकता था, इसलिए चोरी करके जान छुडाता "

पादरी दोरीमेदोन्त ने दबे स्वर मे बुदबुदाकर कुछ कहा, फिर दो-चार सवाल और किए। इसके बाद, कडे स्वर मे पूछा

"क्या तुम भूमिगत छापेखाने से निकली पुस्तके भी पढते रहे हो?"

यह सवाल ऐसा था जो मैं समझ नहीं सका। मेरे मुह से निकला

"क्या?"

"वर्जित पुस्तके, क्या तुमने कभी पढी हैं?"

"नहीं, मैंने नहीं पढीं "

"अच्छी बात है। तुम गुनाहो से मुक्त हुए अब खडे हो जाओ!"

मैंने कुछ अचकचाकर उसके चेहरे की ओर देखा। उसका चेहरा गम्भीर और दया के भावो से पूण था। मैं कटकर रह गया। गुनाह मुक्ति के लिए भेजते समय मालकिन ने मेरी तो रूह ही कब्ज कर दी थी। ऐसी ऐसी डरावनी बातें उसने बताई थीं कि अगर मैंने कुछ भी छिपाकर रखा तो मानो प्रलय ही हो जायेगी।

मैं बोला, "मैंने तुम्हारे मडप पर पत्थर फेंके थे।"

"यह बुरा किया। लेकिन अब तुम भाग जाओ "

"और तुम्हारे कुत्ते पर "

पादरी ने जसे सुना ही नहीं। मुझे विदा करते हुए बोले

"चलो, अब किसकी बारी है?"

विक्षोभ से भरा और धोखा खाया हुआ महसूस करते हुए मैं वहां से चला आया। जिस चीज़ को लेकर मन ही मन मैंने इतना तूमार बाधा

था और हृदय का एक-एक तार झनझना उठा था, वह कुछ भी तो नहीं निकली – इस मे कोई भयानक बात नहीं थी, उलटे दिलचस्प थी। रहस्यमय पुस्तको की बात ही दिलचस्प थी। मुझे उस पुस्तक का ध्यान आया जिसे वह छात्र घर के निचले तल्ले मे दो स्त्रियो को पढ़कर सुना रहा था। और मुझे 'बहुत ख़ूब' का भी ध्यान आया। उसके पास भी काली जिल्द की कितनी ही मोटी-मोटी किताबें थीं जिनमें अजीबोग़रीब चित्र बने हुए थे।

अगले दिन पन्द्रह कोपेक देकर मुझे यूखारिस्ट प्रसाद लेने भेजा गया। उस साल ईस्टर का उत्सव कुछ देर से आया था। बर्फ पिघल चुकी थी और सूखक सड़को पर धूल के छोटे-छोटे बगूले उड़ते थे। मौसम रुपहला और ख़ूब सुहावना था।

गिरजे की चारदीवारी के पास कुछ मजदूर गोटियां खेल रहे थे। मेरा मन ललचा उठा। मैंने सोचा, प्रसाद लेने से पहले एक-दो हाथ यहां भी हो जाए तो क्या बुरा है। मैंने पूछा

"मुझे भी खेलने दोगे?"

"खेल मे शामिल होने के लिए – एक कोपेक – समझे!" लाल बाल और मुह पर चेचक के दाग वाले एक मजदूर ने गर्व से ऐलान किया।

मैंने भी उतने ही गर्व से जवाब दिया

"बाईं ओर से दूसरी जोडी, मै तीन कोपेक रखता हूं!"

"पहले पैसे निकालो!"

और खेल शुरू हो गया!

मैंने पन्द्रह कोपेक का अपना सिक्का भुना लिया और तीन कोपेक गोटियो की जोडी पर रखे। जो कोई उस जोडी को गिरा देगा तीन कोपेक जीत लेगा, नहीं तो मै उससे तीन कोपेक हासिल करता हूं। मेरा सितारा ऊचा था। दो ने मेरे पैसो का निशाना लगाया, और दोनो ही चूक गए। मुझे छ कोपेक मिले। बडी उम्र के लोगो को मैंने मात दी, इससे मेरी हिम्मत बंधी

तब खिलाडियो मे से एक ने कहा

"इस पर निगाह रखना – कहीं ऐसा न हो कि एकाध दाव जीतकर यह भाग निकले!"

यह मेरे सम्मान पर चोट थी। मैंने तडाक से चिल्लाकर कहा

"बाईं ओर, आख़िरी जोडी पर, मेरे नौ कोपेक!"

मेरी इस बहादुरी का खिलाडियो पर कोई रोब नहीं पडा। लेकिन मेरी ही आयु का एक अन्य लडका चेतावनी देते हुए चिल्लाया

"सभल के—इसकी किस्मत तेज है। यह ज्वेज्दीन्का मुहल्ले का है, नक्शानवीस, मैं इसे जानता हू।"

"नक्शानवीस है? वाह, भई, वाह" एक दुबले पतले मजदूर ने कहा जिसके बदन से चमडे की गध आती थी।

उसने सावधानी से निशाना साधा और मेरे दाव को पीट दिया।

"क्यो बच्चू, आई रुलाई?" मेरे ऊपर झुकते हुए वह बोला।

"दाहिनी ओर, आखिरी जोडी पर, तीन कोपेक और!" मैंने जवाब मे कहा।

"देखते जाओ, मैं इसे भी नहीं छोडूगा।" शेखी बघारते हुए उसने निशाना साधा पर चूक गया।

क़ायदे के अनुसार एक आदमी तीन से अधिक बार लगातार दाव नहीं लगा सकता। सो मैंने दूसरो की जोडियो को गिराना शुरू किया और इस तरह चार कोपेक और बहुत सी गोटिया जीतीं। इसके बाद दाव लगाने का जब मेरा नम्बर आया तो मै अपनी सारी जमा पजी हार गया। ठीक इसी समय गिरजे की प्राथना खत्म हुई—घटे बजने लगे, और लोग गिरजे से बाहर निकल आए।

"शादी हो चुकी है?" चमडा कमानेवाले मजदूर ने पूछा और मेरे बाल पकडने की कोशिश की।

मैं उसके चगुल से निकल भागा और एक युवक के पास पहुचा जो खूब बढिया कपडे पहने गिरजे से निकला था। मैंने मुलामियत से पूछा

"क्या तुम यूखारिस्ट प्रसाद लेकर आ रहे हो?"

"क्यो, तुम से मतलब?" सन्देह से देखते हुए उसने जवाब दिया।

मैंने उससे जानना चाहा कि यूखारिस्ट लेने मे कसे क्या हुआ, पादरी ने क्या कहा और यूखारिस्ट मे शामिल होनेवाले को क्या करना था।

युवक ने घूरकर मुझे देखा और गरजते हुए बोला

"अच्छा, तो यूखारिस्ट के वक्त घमता रहा, नास्तिक? मै तुझे कुछ नहीं बताऊगा—करने दे तेरे बाप को तेरी धुनाई!"

मैं अब घर की ओर लपका। मुझे पक्का यकीन था कि घर पर पूछ-ताछ होगी और यह बात खुल जाएगी कि मै यूखारिस्ट मे शामिल नहीं हुआ।

लेकिन बडी मालकिन ने मुझे बधाई देने के बाद केवल एक सवाल पूछा

"पादरी को तुमने क्या दिया?"

"पाच कोपेक," मैंने योही ग्रलल्लटप्पू जवाब दे दिया।

"तू भी निरा भोदू ही है!" बडी मालकिन ने कहा। "उसके लिए तो तीन भी बहुत होते, और बाकी दो तू अपने पास रख लेता!"

चारो ओर वसन्त छाया था। प्रत्येक दिन एक नया बाना धारण करके आता, बीते दिन से और भी ज्यादा उज्ज्वल तथा और भी ज्यादा सुदर। घास की नयी कोपलो और भोज-वृक्ष की ताजी हरियाली से मादक गध निकलती। बाहर खेतो मे सुहावनी धरती पर लेटकर भरत पक्षी का चहचहाना सुनने के लिए मन बुरी तरह उतावला हो उठता। लेकिन मैं था कि यहां जाडो के कपडो पर बुरा करके उन्हें ट्रक में बद करता, तम्बाकू की पत्तियां कूटता और गद्देदार फर्नीचर की गद झाडता—सुबह से रात तक ऐसे कामो मे जुटा रहता जिन्हें न तो मैं पसद करता था, और न आवश्यक ही समझता था।

और जो थोडा बहुत समय काम से बचता, वह भी यो ही बेकार चला जाता। मेरी समझ में न आता कि फुरसत की इन घडियो का क्या करू। हमारी गली एकदम सूनी थी, और उसकी सीमा से बाहर जाने की मुझे मनाही थी। हमारा अहाता खाई खोदनेवाले थके हारे और चिड चिडे मजदूरों, फटेहाल बावचिना और धोबिनों से अटा पडा था। और हर साझ साठ गाठ के इतने बेहूदा और घृणित दृश्य दिखाई देते कि मैं विक्षुब्ध हो उठता और घबराकर अपनी आखें बद कर सोचता कि मैं अधा क्यो न हुआ।

कैची और कुछ रगीन कागज लेकर मै ऊपर अटारी मे पहुच जाता और फल पत्तियां काटकर उनसे छत के शहतीरो और खम्भो को सजाता। इससे मेरे मन की ऊब और नीरसता कुछ हल्की हो जाती। किसी ऐसी जगह जाने के लिए मेरा हृदय बुरी तरह ललकता जहां लोग कम सोते हों, कम झगडते हो और कभी न खत्म होनेवाले अपने रोने झीखने से भगवान को या कभी न चूकनेवाले अपने कडवे बोलो से लोगो को इस हद तक न सताते हो।

ईस्टर के शनिवार को हमारे नगर मे ओरान्स्की मठ से व्लादीमिर्स्काया मरियम की प्रतिमा का आगमन हुआ। यह प्रतिमा अपने चमत्कारा के लिए प्रसिद्ध थी। जून के मध्य तक वह हमारे नगर की

मेहमान थी और इस काल मे एक एक करके बस्ती के सभी घरा मे उसे ले जाया जा रहा था।

एक दिन सुबह के समय मेरे मालिको के घर भी उसका आगमन हुआ। मैं रसोई मे बठा बरतन चमका रहा था। एकाएक दूसरे कमरे से छोटी मालकिन सकपकाई सी आवाज मे चिल्लाई

"जाकर बाहर का दरवाजा खोल। ओरान्स्काया माता आ रही है!"

मेरे हाथ चिकनाई और पिसी हुई ईंट के चूरे से लथपथ थे। वसी ही गदी हालत मे मैं लपक्कर नीचे उतरा और बाहर का दरवाजा खोल दिया। दरवाजे पर एक युवक मठवासी खडा था। उसके एक हाथ मे लालटेन थी, और दूसरे मे लोबान का धूप दान।

"अभी तक सो रहे हो?" उसने भुनभुनाकर कहा। "इधर आ, थोडा सहारा दे "

वो नगरनिवासी मरियम की भारी प्रतिमा उठाए थे। वे उसे लेकर तग जीने पर चढने लगे। मैंने भी सहारा दिया। प्रतिमा के एक कोने के नीचे मैंने कधा लगाया और अपने गदे हाथो से उसे थाम लिया। हमारे पीछे कुछ गोल-मटोल मठवासी और थे जो अनमने अदाज से भारी स्वर मे गुनगुना रहे थे

"मा मरियम सुनो टेर हमारी "

उदास विश्वस्तता के साथ मैंने सोचा

"माता मरियम जरूर इस बात का बुरा मानेगी कि मैंने गदे हाथो से उसे छुआ और मेरे हाथ सूख जाते रहेंगे "

दो कुर्सियो को जोडकर उनपर एक सफेद चादर बिछा दी गई। प्रतिमा को उन्हीं पर टिका दिया गया। अगल बगल दो युवक मठवासी उसे थामे थे—देखने मे सुदर, चमकदार आखें, मुलायम बाल और चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए। ऐसा मालूम होता मानो वे कोई फरिश्ते हों।

पूजा प्रार्थना शुरू हुई।

घने बालो मे छिपे गाठ गठीले से अपने कान की लोलकी को लाल उगली से बार-बार छूते हुए एक लम्बे चौडे पादरी ने ऊची आवाज मे गया

"मां मरियम, जगत जननी "

अन्य मठवासियो ने अनमने भाव से साथ दिया

"पवित्र पावन मा, दया करो "

मैं माता मरियम को जीजान से चाहता था। नानी ने मुझे बताया था कि दुखियो के ग्रासू पोछने ग्रौर उनके जीवन मे ग्रानद भरने के लिए मरियम ने ही धरती को फूलो से सजाया, हर उस चीज की रचना की जो भली ग्रौर सुदर है। ग्रौर जब उसके हाथो को चूमने की रस्म ग्रदा करने का समय ग्राया तो मैंने, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि बड़े क्या कर रहे हैं, कापते हृदय से देव प्रतिमा को होठो पर चूम लिया।

एकाएक किसी के मजबूत हाथ का धक्का खाकर मै दरवाजे के पास कोने मे जा गिरा। यह तो मुझे याद नहीं कि मठवासी प्रतिमा को उठाकर कसे विदा हो गए, लेकिन यह मुझे खूब ग्रच्छी तरह याद है कि मैं फर्श पर बठा था, मेरे मालिक तथा मालकिन मुझे घेरे हुए थे ग्रौर परेशान मुद्रा मे दुनिया भर की ग्रलाय बलाय का जिक्र कर रहे थे जा मुझपर नाजिल हो सकती थीं।

"पादरी के पास चलकर हमे इसका उपाय पूछना चाहिए," मेरे मालिक ने कहा, ग्रौर फिर मुझे हल्की सी डाट पिलाते हुए बोला

"यह तूने क्या किया, बेवकूफ! क्या तुझे इतना भी नहीं मालूम कि मरियम के होठो को नहीं चूमा जाता? ग्रौर तू स्कूल मे पढ़ता था!.."

कई दिन तक एक इसी बात का हौल मेरे दिल मे समाया रहा कि इसकी न जाने मुझे क्या सजा मिलेगी। यही क्या कम था कि गदे हाथों से मैंने मरियम को छुग्रा, तिस पर मैंने गलत ढग से उसे चूम भी लिया। निश्चय ही इसकी मुझे सजा मिलेगी, किसी प्रकार भी मैं छूट नहीं सकूगा!

लेकिन, ऐसा मालूम होता था मानो मरियम ने ग्रनजाने मे किए गए इन गुनाहो को माफ कर दिया था। मेरे मन मे बुरी भावना नहीं थी। प्रेम से ग्रनुप्राणित होकर ही मैंने ये गुनाह किए थे। या फिर यह भी हो सकता है कि मरियम ने मुझे जो सजा दी वह इतनी हल्की थी कि इन भले लोगो की बारहमासी डांट फटकार के चक्कर मे मुझे उसका पता तक न चला।

कभी-कभी बूढ़ी मालकिन को चिढ़ाने के लिए मैं ग्रफसोस भरे स्वर मे कहता

"मालूम होता है, मानो मरियम को मुझे सजा देना याद नहीं रहा! "

"तू देखता रह, अभी आगे क्या होता है.." बड़ी मालकिन द्वेषपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब देती।

..चाय के गुलाबी लेबुलों, टीन के पत्तों, वृक्ष की पत्तियों और इसी तरह की अन्य छोटी-मोटी चीजों से अटारी मे छत के शहतीरो और खम्भों को सजाने समय जो भी मन मे आता मैं गुनगुनाने लगता और उसे गिरजे के गीतों की धुन में गूथने की चेष्टा करता, जसा कि रास्ते में कलमीक किया करते हैं

बैठा हुआ अटारी मे
कैंची लिये हाथ मे
ऊब उठा हू खूब मैं!
गर होता कुत्ता मैं
न टिकता क्षण भर यहा
जहा रहना है दुश्वार!
चीखकर कहते सब
बदकर यह तोबडा
कहना मान, न बडबडा
नहीं तो फूटेगा खोपड़ा!

बूढ़ी मालकिन जब मेरी कारीगरी और सजावट देखती तो वह हुमहुमाकर सिर हिलाते हुए कहती

"रसोईघर को भी क्यो नहीं ऐसे ही सजा देता?"

एक दिन मालिक भी अटारी मे आए, मेरी कारीगरी पर एक नजर डाली और उसास लेते हुए बोले

"तू भी अजीब है, पेशकोव। पता नहीं तेरा क्या बनेगा? क्या जादूगर बनने की तैयारी कर रहा है? कुछ कहा भी नहीं जा सकता"

और उसने मुझे निकोलाई प्रथम के काल का पाच कोपेक का एक बडा सिक्का भेंट किया।

सिक्के को मैंने महीन तार के सहारे तमगे की भांति लटका दिया। मेरी रग बिरगी सजावट के बीच उसे प्रथम स्थान मिला।

लेकिन अगले ही दिन वह गायब हो गया। मुझे पक्का यकीन है कि बूढ़ी मालकिन ने ही उसपर हाथ साफ किया होगा!

आखिर वसन्त के दिनों मे मैं भाग निकला। सुबह को चाय के लिए मैं रोटी लेने गया था। मैं पावरोटी खरीद ही रहा था कि किसी बात पर पावरोटी वाले का अपनी पत्नी से झगडा हो गया, उसने उसके सिर पर भारी बटखरा दे मारा। वह बाहर की ओर भागी और सडक पर आकर ढेर हो गई। चारो ओर लोग जमा हो गए और उसे एक गाडी मे डालकर अस्पताल ले चले। मैं भी लपककर गाडी के साथ-साथ हो लिया और इसके बाद, पता नहीं कैसे, एकदम अनजाने मे ही वोल्गा के तट पर पहुच गया। मेरी मुट्ठी मे बीस कोपेक का सिक्का था।

वसन्त का दिन वसन्ती मुसकान की वर्षा कर रहा था। वोल्गा के पाट का कोई वार पार नहीं था, विशाल धरती कोलाहलमय थी। लेकिन मै–मैं था कि उस दिन तक चूहे की भाति एक बिल मे जीवन बिता रहा था। मैंने निश्चय किया कि अपने मालिक के घर अब नहीं लौटूगा, न ही अपनी नानी के पास कुनाविनो जाऊगा। नानी को मैंने वचन दिया था, और उसे पूरा न कर सकने के कारण उसके सामने जाते मुझे झिझक मालूम होती थी। और नाना तो जसे ऐसे अवसरा के लिए लपलपाते ही रहते थे।

दो या तीन दिन तक मै नदी-तट पर यो ही मटरगश्ती करता रहा। भाईचारे मे घाट-मजदूर खाना खिला देते, घाट पर ही उनके साथ मैं रात को सोता। आखिर उनमे से एक ने कहा

"इस तरह मुफ्तखोरी से काम नहीं चलेगा, बलुआ! "दोब्री" जहाज मे नौकरी क्यो नहीं कर लेते? रसोईघर मे तश्तरियो साफ करने के लिए उन्हे एक आदमी की जरूरत है "

मैं चल दिया। बारमन एक लमतडग दाढ़ी वाला आदमी था–सिर पर रेशम की काली टोपी, और चश्मे के भीतर से झांकतीं धुधली सी आखें। सिर उठाकर उसने मेरी ओर देखा और धीरे से बोला

"दो रूबल महीना। पासपोट ला।"

मेरे पास पासपोट नहीं था। बारमन ने एक क्षण कुछ सोचा। फिर बोला

"मां को ले आ!"

भागा हुआ मैं नानी के पास पहुचा। नानी ने मेरे इस नये कदम का समर्थन किया और नाना को भी समझा-बुझाकर व्यवसायों के दफ्तर में भेजा ताकि वह मेरे लिए पासपोर्ट ले आए। और खुद मेरे साथ जहाज पहुची।

"बहुत ठीक," बारमन ने उडती नज़र से हमारी ओर देखा। "मेरे साथ चला आ।"

वह मुझे जहाज के पिछले हिस्से मे ले गया जहा तगडे बदन का बावर्ची सफेद पोशाक पहने और टोपी लगाये मेज के पास बठा था। वह चाय पी रहा था और साथ ही एक मोटी सिगरेट से धुआ उडा रहा था। बारमन ने मुझे उसकी ओर धकेलते हुए कहा

"यह बरतन साफ करेगा।"

इसके बाद वह उल्टे पाव लौट गया। बावर्ची ने नाक सिकोडी, फिर अपनी काली मूछो को फरफराया और बारमन को लक्ष्य कर फनफ्नाते हुए बोला

"किसी भी ऐरे-गैरे को रख लेते हो, बस मजदूरी कम देनी पडे! "

अपने भारी भरकम सिर को जिसके काले बाल खूब महीन छटे हुए थे, झुझलाकर उसने पीछे की ओर फेंका, फिर अपनी काली आखो से मेरी ओर ताकते और अपने गालों को कुप्पा सा फुलाते हुए चिल्लाकर कहा

"कौन है तू?"

यह आदमी मुझे क़तई पसद नहीं आया। इसके बावजूद कि वह सिर से पाव तक सफेद कपडों मे ढका था, वह मुझे गदा मालूम हुआ। उसकी उगलियों पर खूब घने बाल थे, और उसके छाज से कानों पर भी बाल थे।

"मुझे भूख लगी है," मैंने कहा।

उसने अपनी आखें मिचमिचाईं, और अचानक उसके चेहरे का रूखापन देखते-देखते ग़ायब हो गया। प्रशस्त मुसकराहट से वह खिल उठा, उसके लाल गाल लहरिया लेते कानो तक फल गए, और उसके बडे-बडे घोडे जसे दांत चमकने लगे। उसकी मूछें विनम्र भाव से झुक गई और वह एक मोटी-ताजी कोमलहृदया गृहिणी जसा लगने लगा।

गिलास मे बची चाय उसने जहाज से नीचे पानी मे फेंक दी, फिर

गिलास मे ताजी चाय उडेली और सासेज के एक बड़े टुकड़े के साथ पावरोटी का टुकड़ा मेरी ओर बढ़ा दिया।

"लो, यह खाओ," उसने कहा। "तुम्हारे मां-बाप तो हैं न? चोरी करना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सीख जाओगे। चोरी करने मे यहा सभी माहिर हैं!"

वह बोलता गया, भौंकता था। वह इतनी कसकर हजामत बनाये हुए था कि उसके भारी भरकम गाल नीले लगते थे। नाक के इर्द गिर्द महीन लाल शिराओं का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी सी लाल नाक मूछों के साथ दखलदाजी करती थी, उसका निचला मोटा होंठ उपेक्षा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने मे एक सिगरेट चिपकी हुई थी। लगता था मानो वह अभी गुसलखाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन से भोज वृक्ष की टहनियो और मिरचौनी वोद्का की गध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपटियो पर पसीने की बूदें उभर आई थीं।

जब मैं भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ मे एक रूबल थमा दिया।

"अपने लिए दो एप्रन खरीद लेना। नहीं, रहने दो। मैं खुद ही खरीदकर ला दूगा!"

उसने टोपी को ठीक किया और रीछ की तरह भारी कदमो पर डगमगाता, पैरो से डेक को टटोलता चल दिया।

रात का समय था। चद्रमा उज्ज्वल छटा फैलाता हमारे जहाज से बायें चरागाहो की ओर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कत्थई रग का हमारा जहाज, जिसकी चिमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने चप्पूदार चक्कर से असमान छप छप कर रहा था। जहाज को भेंटने के लिए नदी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाइयां डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरो की खिडकियो से लाल झिलमिलाहट हो रही थी। गाव की ओर से गाने की आवाज आ रही थी—गाव की लडकिया घेरे मे नाच गा रही थीं और उनके गीत की टेक 'आयलूली' से 'हल्लिलूयाह' की धुन का धोखा होता था

हमारा जहाज तारो के एक लम्बे रस्से के सहारे बजरे को खींच रहा था। इस बजरे का रग भी मटमला कत्थई था। डेक पर लोहे का एक

बडा सा कठघरा था और कठघरे मे जलावतनी और कठोर श्रम की सजा पाए क़ैदी बद थे। गलही पर खडे सतरी की सगीन मोमबत्ती की लौ की भाति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश मे छोटे छोटे तारे भी मोम बत्तियो की भाति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चाद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठघरे की काली सलाखो के पीछे गोल धूमिल परछाइया दिखाई देती थीं। यह कदी वोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीज से गिरजे का आभास मिलता था, यहा तक कि तेल की गध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे को ओर देखते देखते मुझे अपने बचपन की याद हो आई आस्त्राखान से नीज्नी की यात्रा, नकाब के समान मा का चेहरा और मेरी नानी जिसकी उगली पकडकर मैंने जीवन की इन कठोर, कितु दिलचस्प राहो पर पाव रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घृणित और हृदय को कचोटनेवाले पहलू मानो ग़ायब हो जाते, हर चीज बदल जाती, पहले से ज्यादा हृदयग्राही और ज्यादा सुखद बन जाती, और लोग ज्यादा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुदरता मुझे इतना उद्वेलित कर रही थी कि मेरी आखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेलित कर रहा था। वह ताबूत की भाति दिखाई देता था और इस छलछलाती नदी के प्रशान्त वक्ष और इस सुहावनी रात की ध्यानोमुखी निस्तब्धता मे उसका अस्तित्व बहुत ही अटपटा तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाए जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय मे स्फूर्ति का सचार करतीं और मन मे अच्छा बनने तथा मानव जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरें लेने लगती।

जहाज के हमारे यात्री भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढे भी और जवान भी, पुरुष भी और स्त्रिया भी—एक ही साचे मे ढले हो। कछुवे की चाल से हमारा जहाज चल रहा था। काम-काज वाले लोग डाकजहाज से सफर करते। और हमारे जहाज की शरण केवल मस्त निखट्टू ही लेते। सुबह से साझ तक ये खाते और पीते पिलाते, ढेर सारी तश्तरियो, छुरी काटो और चम्मचो को गदा करते। और मेरा काम था इन तश्तरियो को साफ करना तथा छुरी-काटो को

गिलास मे ताजी चाय उडेली और सासेज के एक बडे टुकडे के साथ पावरोटी का टुकडा मेरी ओर बढा दिया।

"लो, यह खाओ," उसने कहा। "तुम्हारे मां-बाप तो हैं न? चोरी करना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सीख जाओगे। चोरी करने मे यहा सभी माहिर हैं!"

वह बोलता गया, भौंकता था। वह इतनी कसकर हजामत बनाये हुए था कि उसके भारी भरकम गाल नीले लगते थे। नाक के इर्द गिर्द महीन लाल शिराओ का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी सी लाल नाक मूछों के साथ दखलन्दाजी करती थी, उसका निचला मोटा होंठ उपसा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने मे एक सिगरेट चिपकी हुई थी। लगता था मानो वह अभी गुसलखाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन से भोज वृक्ष की टहनियो और मिरचौनी वोद्का की गध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपटियो पर पसीने की बूदें उभर आई थीं।

जब मैं भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ मे एक रूबल थमा दिया।

"अपने लिए दो एप्रन खरीद लेना। नहीं, रहने दो। मैं खुद ही खरीदकर ला दूगा!"

उसने टोपी को ठीक किया और रीछ की तरह भारी कदमो पर डगमगाता, पैरो से डेक को टटोलता चल दिया।

रात का समय था। चद्रमा उज्ज्वल छटा फलाता हमारे जहाज से बायें चरागाहो की ओर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कत्थई रग का हमारा जहाज, जिसकी चिमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने चप्पूदार चक्कर से असमान छप-छप कर रहा था। जहाज को भेंटने के लिए नदी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाइया डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरों की खिडकियो मे लाल झिलमिलाहट हो रही थी। गाव की ओर से गाने की आवाज आ रही थी—गाव की लडकिया घेरे मे नाच गा रही थीं और उनके गीत की टेक 'आयलूली' से 'हल्लिलूयाह' की धुन का धोखा होता था

हमारा जहाज तारो के एक लम्बे रस्से के सहारे बजरे को खींच रहा था। इस बजरे का रग भी मटमला कत्थई था। डेक पर लोहे का एक

बडा सा कठघरा था और कठघरे मे जलावतनी और कठोर श्रम की सजा पाए कदी बद थे। गलही पर खड़े सतरी की सगीन मोमबत्ती की लौ की भाति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश मे छोटे छोटे तारे भी मोम बत्तियो की भाति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चाद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठघरे की काली सलाखो के पीछे गोल धूमिल परछाइया दिखाई देती थीं। यह कदी वोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीज से गिरजे का आभास मिलता था, यहा तक कि तेल की गध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे की ओर देखते देखते मुझे अपने बचपन की याद हो आई आस्त्राखान से नीज्नी की यात्रा, नकाब के समान मा का चेहरा और मेरी नानी जिसकी उगली पकडकर मैंने जीवन की इन कठोर, किन्तु दिलचस्प राहो पर पाव रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घृणित और हृदय को कचोटनेवाले पहलू मानो ग़ायब हो जाते, हर चीज बदल जाती, पहले से ज्यादा हृदयग्राही और ज्यादा सुखद बन जाती, और लोग ज्यादा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुदरता मुझे इतना उद्वेलित कर रही थी कि मेरी आखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेलित कर रहा था। वह ताबूत की भाति दिखाई देता था और इस छलछलाती नदी के प्रशस्त वक्ष और इस सुहावनी रात की ध्यानोन्मुखी निस्तब्धता मे उसका अस्तित्व बहुत ही अटपटा तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाए जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय मे स्फूर्ति का सचार करतीं और मन मे अच्छा बनने तथा मानव-जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरें लेने लगती।

जहाज के हमारे यात्री भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढे भी और जवान भी, पुरुष भी और स्त्रिया भी—एक ही साचे मे ढले हों। कछुवे की चाल से हमारा जहाज चल रहा था। काम-काज वाले लोग डाकजहाज से सफर करते। और हमारे जहाज की शरण केवल मस्त निखट्टू ही लेते। सुबह से साझ तक ये खाते और पीते पिलाते, ढेर सारी तश्तरियो, छुरी काटा और चम्मचा को गदा करते। और मेरा काम था इन तश्तरियो को साफ करना तथा छुरी-काटो को

गिलास मे ताजी चाय उडेली और सासेज के एक बडे टुकडे के साथ पावरोटी का टुकडा मेरी ओर बढ़ा दिया।

"लो, यह खाओ," उसने कहा। "तुम्हारे मां बाप तो हैं न? चोरी करना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सीख जाओगे। चोरी करने मे यहा सभी माहिर हैं!"

वह बोलता गया, भौंकता था। वह इतनी कसकर हजामत बनाये हुए था कि उसके भारी भरकम गाल नीले लगते थे। नाक के इर्द गिर्द महीन लाल शिराओ का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी सी लाल नाक मूछो के साथ दखल दाजी करती थी, उसका निचला मोटा होंठ उपेक्षा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने मे एक सिगरेट चिपकी हुई थी। लगता था मानो वह अभी गुसलखाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन से भोज वृक्ष की टहनियो और मिरचौनी वोदका की गंध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपटियो पर पसीने की बूदें उभर आई थीं।

जब मै भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ मे एक रूबल थमा दिया।

"अपने लिए दो एप्रन खरीद लेना। नहीं, रहने दो। मैं खुद ही खरीदकर ला दूगा!"

उसने टोपी को ठीक किया और रीछ की तरह भारी कदमो पर डगमगाता, परो से डेक को टटोलता चल दिया।

रात का समय था। चद्रमा उज्ज्वल छटा फलाता हमारे जहाज से बायें चरागाहो की ओर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कत्यई रग का हमारा जहाज, जिसकी चिमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने चप्पूवार चक्कर से असमान छप छप कर रहा था। जहाज को भेंटने के लिए नदी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाइयां डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरो की खिडकियो मे लाल झिलमिलाहट हो रही थी। गांव की ओर से गाने की आवाज आ रही थी—गांव की लड़कियां घेरे मे नाच गा रही थीं और उनके गीत की टेक 'आयलूली' से 'हल्लिलूयाह' की धुन का धोखा होता था

हमारा जहाज तारो के एक लम्बे रस्से के सहारे बजरे को खींच रहा था। इस बजरे का रग भी मटमला कत्यई था। डेक पर लोहे का एक

बडा सा कठघरा था और कठघरे मे जलावतनी और कठोर श्रम की सजा पाए कदी बद थे। गलही पर खडे सतरी की सगीन मोमबत्ती की लौ की भाति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश मे छोटे-छोटे तारे भी मोम बत्तियो की भाति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चाद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठघरे की काली सलाखो के पीछे गोल धूमिल परछाइया दिखाई देती थीं। यह क़ैदी वोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीज से गिरजे का आभास मिलता था, यहा तक कि तेल की गध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे की ओर देखते-देखते मुझे अपने बचपन की याद हो आई आस्त्राख़ान से नीज्नी की यात्रा, नकाब के समान मा का चेहरा और मेरी नानी जिसकी उगली पकडकर मैंने जीवन की इन कठोर, किन्तु दिलचस्प राहो पर पाव रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घृणित और हृदय को कचोटनेवाले पहलू मानो ग़ायब हो जाते, हर चीज़ बदल जाती, पहले से ज्यादा हृदयग्राही और ज्यादा सुखद बन जाती, और लोग ज्यादा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुदरता मुझे इतना उद्वेलित कर रही थी कि मेरी आखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेलित कर रहा था। वह ताबूत की भाति दिखाई देता था और इस छलछलाती नदी के प्रशस्त वक्ष और इस सुहावनी रात की ध्यानोन्मुखी निस्तब्धता मे उसका अस्तित्व बहुत ही अटपटा तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाए जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय मे स्फूर्ति का सचार करतीं और मन मे अच्छा बनने तथा मानव जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरे लेने लगती।

जहाज़ के हमारे यात्री भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढे भी और जवान भी, पुरुष भी और स्त्रिया भी—एक ही साचे मे ढले हो। कछुवे की चाल से हमारा जहाज़ चल रहा था। काम-काज वाले लोग डाकजहाज़ से सफर करते। और हमारे जहाज़ की शरण केवल मस्त निखट्टू ही लेते। सुबह से साझ तक ये खाते और पीते पिलाते, ढेर सारी तश्तरियो, छुरी काटो और चम्मचो को गदा करते। और मेरा काम था इन तश्तरियो को साफ करना तथा छुरी-काटो को

चमकाना। सुबह के छ बजे से लेकर रात के बारह बजे तक दम मारने की भी फुरसत नहीं मिलती। दोपहर के दो बजे से लेकर छ बजे तक और रात को दस से बारह तक, काम का जोर कुछ हल्का हो जाता। कारण कि भोजन करने के बाद यात्री केवल चाय, बीयर या वोद्का पीते। इन घटो मे सभी वेटर अर्थात मेरे सभी साहब खाली होते। कनेल के पास एक मेज पडी थी। चाय पीने के लिए आम तौर से यहीं उनका अखाडा जमता। बावर्ची स्मूरी, उसका सहायक याकोव इवानोविच, रसोई के बरतन माजनेवाला मक्सिम और गालों की उभडी हड्डियों वाले चेचक के दागो से भरे चेहरे, चिपचिपी आखो वाला और कुब निकला वेटर सेर्गेई जो डेक पर यात्रियो को चीजें परसने का काम करता, सभी इस मण्डली मे जमा होते। याकोव इवानोविच उन्हे गदी कहानिया सुनाता और अपने सडे हुए हरे दात दिखाते हुए जब वह हसता तो ऐसा मालूम होता मानो सुबकिया ले रहा हो। सेर्गेई का मेढकनुमा मुह इस कान से उस कान तक फैल जाता। सदा रूखा मक्सिम चुप्पी साधे रहता और अनिश्चित रग की अपनी बेजान आखो से उन्हे ताकता।

बडा बावर्ची रह-रहकर अपनी गूजती आवाज मे चिल्ला उठता

"आदमखोर! मोर्दोवियनो की औलाद!"

मैं इन सभी से घिनाता था। मोटा गजा याकोव इवानोविच जब देखो तब केवल स्त्रियो का ही जिक्र करता, सो भी निहायत गदे ढग से। उसके भावशून्य चेहरे पर नीले चकत्ते पडे थे। एक गाल पर मस्सा था जिसमे लाल बाल उगे थे, जिन्हे उमेठकर वह सुई सी बनाता। जहाज पर जसे ही कोई चचल और नरम स्वभाव की स्त्री सवार होती वह उसके सामने बिछ जाता और भिखारी की भाति छाया बना उसके साथ लगा रहता, चाशनी मे पगे मिमियाते स्वरो मे उससे बतियाता, उसके होठो पर झाग उफन आते जिन्हें उसकी गदी जबान लपलपाकर तेजी से चाटती रहती। न जाने क्या, मुझे ऐसा लगता कि जल्लाद भी ठीक इतने ही मोटे होते होगे।

"औरतो को फुसलाना भी एक हुनर है!" वह सेर्गेई और मक्सिम को सिखाने लगा, वे मुह बाये, मन ही मन उमडते घुमडते, सुन रहे थे और उनके चेहरों पर लाली दौड रही थी।

गूजती आवाज मे स्मूरी घृणा से चिल्लाया

"ग्रादमखोर!"

फिर कसमसाकर वह उठा ग्रौर मुझसे बोला

"पेश्कोव, मेरे साथ ग्राग्रो!"

जब हम उसके केबिन मे पहुचे तो उसने मेरे हाथ मे एक किताब थमा दी जिसपर चमडे की जिल्द बधी थी। फिर वह ग्रपने तख्ते पर लम्बा पसर गया जो कोल्ड स्टोरेज रूम की दीवार से सटा था।

"इसे पढ़कर सुनाग्रो!"

मकारोनी सिवइयो की एक पेटी पर बठकर मैं ग्रदब से पढकर सुनाने लगा।

"ग्रम्बराकुलम मे ग्रगर तारे छिटके दिखाई दें तो इसका ग्रर्थ है कि स्वग के देवता तुम से प्रस न है, सारे कलुष ग्रौर गदगी से मुक्त होकर तुम दिव्य ज्ञान प्राप्त करोगे "

सिगरेट जलाकर ग्रौर मुह से धुए का बादल छोडते हुए स्मूरी भुनभुनाया

"ऊट के ताऊ! क्या लिखा है! "

"ग्रगर उघडी हुई बाईं छाती दिखाई दे तो इसका ग्रथ है निष्कपट हृदय "

"किसकी बाईं छाती?"

"यह तो कुछ नहीं लिखा।"

"मतलब स्त्री की ग्रोह, लुच्चे कहीं के!"

उसने ग्राखें बद कर लीं ग्रौर हाथो का सिरहाना बनाकर लेट गया। होंठो के कोने से लगी ग्रपनी सिगरेट को जो करीब-करीब बुझ सी चली थी, सम्भालकर उसने ठीक किया ग्रौर इतने जोरो से कश खींचा कि उसके सीने के ग्र दर से कोई सीटी सी ग्रावाज ग्रायी ग्रौर उसका बडा चेहरा धुए मे डूब गया। कई बार बीच बीच मे मुझे लगता कि वह सो गया है, मैं पढ़ना बद कर देता ग्रौर उस मनहूस किताब की ग्रोर चुपचाप देखता रहता।

लेकिन उसकी भौंकने जसी ग्रावाज सुनाई देती

"पढ़ो, पढ़ो!"

"वेनेराब्ल ने जवाब दिया देखो, मेरे नेकदिल फ्रेहर सूवेरियन "

"सेवेरियन "

"सूवेरियन लिखा है "

"मारो गोली इसे। अन्त मे कुछ कविताए छपी हैं। उन्हे पढ़ो "

मैने पढना शुरू किया

ऐ अज्ञानियो, हमारी लीलाओ को जानने को तुम उत्सुक,
निष्कात नेत्र तुम्हारे देख न पायेंगे उन्हे कभी,
और न जानोगे तुम यह भी, कसे गाते है फ़ेहर

"बस करो!" स्मूरी ने चिल्लाकर कहा। "यह भी कोई कविता है? लाओ, इसे मुझे दो!"

किताब को अपने हाथ मे लेकर उसने गुस्से से उसके मोटे, नीले पन्ने उलटे पल्टे और फिर गद्दे के नीचे ठूस दिया।

"दूसरी लाकर पढ़ो! "

मेरी मुसीबत को लोहे के कुन्दे और कीलकाटो से लस काले रग का उसका सदूक किताबो से अटा पडा था। इनमे ऐसी पुस्तके थीं "सत ओमीर की वाणी", "तोपखाने के सस्मरण", "लाड सेडेनगाली के पत्र", "किताब नुकसानदायक कीडे खटमल के बारे मे और उन्हें मारने की, दूसरे कीडो को भी मारने के नुस्खो के साथ", ऐसी भी पुस्तके थीं जिनका न आदि था, न अन्त। कभी कभी बावर्ची मुझसे सब किताबें निकलवाता और उनके नाम पढवाता,—मैं पढता और वह गुस्से मे बडबडाता

"शैतान कहीं के, लिखते क्या हैं, मानो औचक मे मुह पर तमाचा सा मारते है। और किस लिए—समझ मे नहीं आता। गेरवास्सी! भाड मे जाए गेरवास्सी! अम्बराकुलम! "

अटपटे और अजीब शब्द, ऐसे नाम जो न कभी देखे और न कभी सुने, स्मृति मे आकर अटक जाते, उन्हे बार-बार दोहराने के लिए मेरी जीभ खुजलाने लगती—शायद उनकी ध्वनि से उनका अर्थ मेरी समझ मे आ जाये। खिडकी से बाहर कामा नदी गाती और छपछपाती रहती। मेरा मन डेक पर जाने के लिए उतावला हो उठता जहा बक्सो के बीच जहाजिया की चौकडी जमती। वे गीत गाते, दिलचस्प क़िस्से सुनाते या ताश के खेला मे यात्रिया की जेबें खाली करते। उनके साथ बठकर उनकी सीधी सादी बातें सुनना और कामा नदी के तटो, खम्बो की

भाति सीधे खडे देवदार वृक्षो के ऊचे तनो और चरागाहो की ओर देखना जहा बाढ का पानी जमा होने से छोटी छोटी झीले बन गई थीं जिनमे नीला आसमान टूटे हुए आईने के टुकडो की भाति चमकता दिखाई देता था, बहुत अच्छा लगता था। हमारा जहाज तट से कटा हुआ था और उससे दूर भाग रहा था। लेकिन तट की ओर से थके हुए दिन के सन्नाटे मे आखो से ओझल किसी गिरजे के घटो की आवाज हवा के साथ बहकर आती और आबाद बस्तियो तथा लोगो की हलचल की याद दिलाती। किसी मछियारे का डोगा रोटी के टुकडे की भाति पानी पर नाचता नजर आता। फिर एक गाव निकट आता दिखाई देता जहा छोटे लडको का एक दल पानी मे छपछप खेल रहा था और लाल कमीज पहने एक किसान पीले फीते की भाति फली रेत पर चला आ रहा था। दूर से देखने पर हर चीज सुहावनी मालूम होती। हर चीज खिलौनो की भाति अजीब ढग से रग बिरगी और नन्ही मुन्नी लगती है। मन करता है कि स्नेहसिक्त, दयार्द्र शब्द जोर जोर से बोलू ताकि किनारे वाले और बजरे वाले भी उन्ह सुन पायें।

कत्थई रग का वह बजरा मानो मेरे मन मे बसा था। मन्त्रमुग्ध सा मैं घटा बठा उसके ठुके पिटे से अग्रभाग को गदला पानी चीरकर अपना रास्ता बनाते एकटक देख सकता था। हमारा जहाज गले मे रस्सी बधे सुअर की भाति उसे खींच रहा था। तारो का रस्सा जब ढीला पडता तो पानी से टकराता और इसके बाद, नाक के बल बजरे को खींचते समय, पानी को काटता हुआ फिर तन जाता और उसपर से पानी की प्रचुर बूदें गिरतीं और वह फिर बजरे को गलही से खींचता। मन मे होता कि बजरे पर जाकर उन लोगो के चेहरे देखू जो जानवरो की भाति लोहे के कठघरे मे बद थे। पेम मे जब उन्हें बजरे से उतारा जा रहा था, मैं भी जहाज से उतरने के तख्ते पर अपना रास्ता बना रहा था, दल के दल मटमले जीव, थला के बोझ से दोहरे और अपनी जजीरो को बजाते, मेरे पास से गुजरे। उनमे पुरुष थे, स्त्रिया थीं, उनमे बूढे थे और जवान थे, सुदर और असुदर, सभी तरह के लोग थे—ठीक वसे ही जसे कि सब लोग होते हैं, सिवा इसके कि वे दूसरी तरह के कपडे पहने थे, और सिर घुटे होने के कारण उनके चेहरे मोहरे भद्दे दिखाई देते थे। वे जरूर डाकू ही रहे होंगे। लेकिन नानी तो डाकुओ के बारे मे इतने

बढ़िया किस्से सुनाया करती थी। स्मूरी औरों से कहीं ज्यादा दबंग और जानदार लुटेरा मालूम होता था।

"भगवान ऐसे दिन न दिखाना!" बजरे की ओर देखते हुए वह बुदबुदाता।

एक दिन मैंने उससे पूछा

"ऐसा क्यों है कि तुम खाना पकाते हो और दूसरे लोग—हत्या करते हैं, लूटते हैं?"

"खाना तो औरतें भी पकाती हैं, पर बावर्ची का काम वे नहीं करतीं। मैं बावर्ची हूं, समझा?" उसने थोड़ा हंसकर कहा। फिर एक क्षण कुछ सोच कर बोला

"लोगों में अंतर उनकी बेवकूफी का होता है। कुछ लोग सयाने होते हैं, कुछ कूढ़ दिमाग़ और कुछ बिल्कुल गोबर गणेश। और समझदार बनने के लिए ठीक ढंग की—जैसे काला जादू तथा ऐसी दूसरी बहुत सी—किताबें पढ़नी चाहिये। सभी किताबें पढ़नी चाहिये तभी सही किताबों का पता लगेगा "

वह मुझसे सदा यही कहता

"पढ़ो, अगर कोई किताब समझ में न आए तो उसे सात बार पढ़ो। अगर सात बार पढ़ने पर भी समझ में न आये तो उसे बारह बार पढ़ो "

स्मूरी जहाज पर हर किसी से, यहां तक कि सदा चुप रहनेवाले बारमन से भी दो-टूक बातें करता था। बोलते समय उसका निचला होंठ उपेक्षापूर्वक लटका होता, मूछें खड़ी हो जातीं और शब्द ऐसे निकलते मानो लोगों को ढेले मार रहा हो। लेकिन मेरे साथ वह मुलामियत से पेश आता, हालांकि उसकी इस हार्दिकता में भी कुछ ऐसी बात थी जिससे मुझे डर लगता था। कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि नानी की बहन की भांति उसके दिमाग़ का भी कोई पुर्जा ढीला है।

"पढ़ना बंद करो!" वह मुझसे कहता और आंखें बंद किये नाक से सू-सू करते हुए देर तक चुपचाप पड़ा रहता, उसका भारी पेट उठता और गिरता, उसके हाथ सीने पर लाश की भांति आड़े रखे रहते, उसकी बालों वाली झुलसी हुई उंगलियां इस प्रकार मुड़तीं मुड़तीं मानो वह अदृश्य सलाइयों से कोई अदृश्य मोजा बुन रहा हो।

फिर, एकाएक, वह बुदबुदाना शुरू करता

"हा, भई। लो यह लो अक्ल और जियो। पर अक्ल तो कजूसी से मिली है और वह भी बराबर नहीं। अगर कहीं सब एक से अक्लमन्द होते, पर–नहीं एक समझता है, दूसरा नहीं समझता और ऐसे भी हैं, जो समझना ही नहीं चाहते, क्यो!"

लडखडाते हुए से शब्द उसके मुह से निकलते और वह अपने सनिक जीवन की कहानिया सुनाता। उसकी कहानियों मे मुझे कभी कोई तुक नहीं दिखाई देती और वे मुझे हमेशा बेमजा मालूम होतीं,–खास तौर से इसलिए भी कि वह कभी शुरू से शुरू नहीं करता, बल्कि जहा से भी बात याद आ जाती, वहीं से सुनाना शुरू कर देता।

"सो रेजीमेंट के कमाण्डर ने उस सनिक को तलब किया और उससे पूछा 'तुम से लेफ्टीनेन्ट ने क्या कहा था?' और उसने सभी कुछ बता दिया, कुछ भी छिपाकर न रखा, क्योंकि सैनिक का यह फर्ज है कि वह सच बोले। लेफ्टीनेन्ट ने उसकी ओर इस तरह देखा मानो वह दीवार हो, फिर मुह फेरकर सिर झुकाया। ऊह! "

बावर्ची को क्रोध आ रहा था, धुआ छोडते हुए वह बुदबुदाया

"मानो मुझे मालूम ही हो कि क्या कहना चाहिए और क्या नहीं! उन्होंने लेफ्टीनेन्ट को जेल मे बद कर दिया, और उसकी मा ओह, मेरे भगवान! मुझे तो कुछ भी सिखाया नहीं किसी ने "

बडी उमस थी। इर्दगिर्द की हर चीज काप और भनभना रही थी। केबिन की लौह दीवार से बाहर जहाज का चप्पूदार चक्कर धम धम करता घूम रहा था और पानी से छपछप कर रहा था। खिडकी मे से पानी की चौडी धारा उमडती घुमडती दिख रही थी, दूर चरागाह की हरियाली नजर आ रही थी और वृक्षो के झुरमुट आखा के सामने उभरने लगे थे। सब आवाजों को सुनते-सुनते मेरे कान इतने आदी हो गये कि निस्तब्धता के सिवा मुझे अन्य किसी चीज का भान नहीं होता, हालाकि जहाज की गलही पर एक मल्लाह एकरस आवाज मे बराबर दोहरा रहा था

"सा आ-त सा आ-त "

मैं हर चीज से अलग रहना चाहता था,–न कुछ सुनना चाहता था, न करना,–बस किसी ऐसे कोने मे छिप जाना चाहता था जहां रसाई की

गम और चिकनी गंध प्रवेश न कर सके और जहां बैठकर पानी पर तैरते हुए इस हलचल रहित और थके हारे जीवन को अलसायी उनींदी आंखों से देखा जा सके।

"पढ़ो!" झकझोरते हुए स्वर में स्मूरी ने आदेश दिया।

पहले दर्जे के बेटर तक उससे डरते और ऐसा मालूम होता मानो सहमा सिमटा, घुन्ना और मुहबंद बारमन भी मन ही मन स्मूरी से भय खाता है।

"ऐ सूअर!" स्मूरी बेटरों आदि पर चिल्लाता। "इधर आ चोर, आदमखोर अम्बराकुलम!"

मल्लाह और कोयला झोंकनेवाले उसकी इज्जत करते थे, यहां तक कि उसकी नजरों में अच्छा बनने का भी प्रयत्न करते थे। वह उन्हें शोरबे में से गोश्त की बोटियां निकालकर देता, उनके बाल-बच्चों और गांव के जीवन के बारे में पूछता। कालिख में सने और चिक्कट कोयला झोंकनेवाले बेलोरूसी लोग जहाज की तलछट समझे जाते थे। उन सभी को एक ही नाम – यागूत – से पुकारा जाता था और उन्हें चिढ़ाते थे

"यागू, आगू, भागू "

स्मूरी जब यह सुनता तो उसका पारा गर्म हो जाता। उसकी मूछें फरफराने लगतीं, चेहरा तमतमा जाता और कोयला झोंकनेवालों से वह चिल्लाकर कहता

"तुम इन कत्सापों* से डरते क्यों हो? इनका तोबड़ा क्यों नहीं तोड़ डालते!"

एक बार मल्लाहों के मुखिया ने जो शक्ल सूरत से अच्छा तथा स्वभाव से चिड़चिड़ा था, उससे कहा

"यागूत और खोखोल** – दोनों एक बराबर हैं।"

स्मूरी ने एक हाथ से उसकी पेटी दबोची और दूसरे से गरदन। फिर सिर से ऊंचा उठाकर उसे हिलाते झंझोड़ते हुए चिल्ला उठा

"बोल, निकाल दूं कचूमर?"

अक्सर झगड़े होते थे और कभी-कभी लड़ाई तक बढ़ जाते। लेकिन

---

*कत्साप – रूसी के लिए एक अपमानजनक शब्द। – सं०

**उक्राइनी के लिए एक अपमानजनक शब्द। – सं०

स्मूरी को कभी कोई हाथ नहीं लगाता था। एक तो इसलिए कि ताकत मे वह पूरा देव था, दूसरे इसलिए भी कि कप्तान की पत्नी उससे अक्सर विनम्रतापूर्वक बातें करती थी। वह ऊंचे कद की स्त्री थी, मरदाना चेहरा और लडको की भाति सीधे कटे हुए बाल।

वह वोदका बहुत पीता था, लेकिन मदहोश कभी नहीं होता। सुबह से वह पीना शुरु करता, चार पेगा मे ही एक बोतल खाली कर देता, और फिर दिन भर बीयर चुसकता रहता। धीरे धीरे उसका चेहरा लाल हो जाता, और उसकी काली आखें इस तरह फल जातीं मानो उनमे अचरज का भाव भरा हो।

कभी-कभी, साझ के समय, सफेद रग की भीमाकार प्रतिमा की भाति वह चुप्पी साधे डेक पर घटो बैठा रहता और मुह फुलाए पीछे छूटती हुई दूरी को घूरा करता। ऐसे क्षणो मे प्राय सभी उससे और भी ज्यादा डरते, लेकिन मुझे उसपर तरस आता।

याकोव इवानोविच रसोई से बाहर निकलता, चेहरा लाल और पसीने मे तर वह अपनी गजी खोपडी को खुजलाता और फिर निराशा से हाथ हिलाता हुआ गायब हो जाता। या वह दूर से कहता

"मछली मर गई "

"मिले-जुले सूप मे डाल दो "

"अगर कोई मछली का शोरबा या भाप मे पकी मछली मांगने लगा तो क्या करोगे?"

"बना डालो। वे सब चट कर जायेंगे!"

कभी-कभी साहस बटोरकर मै उसके पास चला जाता। बडी कठिनाई के साथ आखें मेरी ओर घुमाकर वह पूछता

"क्यो?"

"कुछ नहीं।"

"ठीक है "

एक बार मैंने उससे ऐसे एक मौके पर पूछ ही लिया

"तुम सभी को डराते क्यो हो—तुम तो दयालु हो?"

मेरी आशा के विपरीत वह झुझलाया नहीं।

"मै केवल तुम्हारे साथ ही दयालु हू," उसने जवाब दिया, और फिर कुछ सोचते हुए खुले दिल से बोला

"शायद यह ठीक है—मैं सभी के साथ दयालु हू। केवल मैं दिखाता नहीं। लोगों को यह कभी नहीं दिखाना चाहिए, अन्यथा वे तुम्हें नोच खायेंगे। जो भला होता है, लोग उसपर इस तरह चढ़ बठते हैं मानो वह दलदल के बीच सूखी मिट्टी का कोई टीला हो और वे उसे पांव तले रौंद डालते हैं। जाओ, बीयर उठा लाओ "

एक के बाद एक कई गिलास बीयर पीने के बाद उसने अपनी मूछो को चाटा और बोला

"अगर तुम कुछ बडे होते तो तुम्हे बहुत सी बातें सिखाता मैं भी थोडी-बहुत काम की बाते जानता हू—निरा बौडम नहीं हू तुम पुस्तके पढो, पुस्तकों मे काम की सभी बातें होनी चाहिए। किताबें फिजूल की चीज नहीं हैं। क्यो, कुछ बीयर पियोगे?"

"मुझे अच्छी नहीं लगती।"

"यह अच्छी बात है। कभी नशा न करना। नशा एक बहुत बडी बला है। वोदका शतान की देन है। अगर मैं अमीर होता तो पढने के लिए तुम्हे स्कूल भेज देता। अनपढ़े आदमी को पूरा बल ही समझो। चाहो तो उसपर जुआ लाद दो, चाहे उसे काटकर खा जाओ—दुम फडफडाने के सिवा वह और कुछ नहीं करता "

कप्तान की पत्नी ने उसे गोगोल की एक पुस्तक दी "भयानक प्रतिशोध"। मुझे यह पुस्तक बहुत पसद आई। लेकिन स्मूरी गुस्से से चिल्ला उठा

"निरी बक्वास, परियो की कहानी जसी। मैं जानता हू—और दूसरी किताबें हैं "

उसने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली और कप्तान की पत्नी से एक अय पुस्तक ले आया।

"लो, अब इसे पढ़ो—तारास—जरा देखो तो, इसका पूरा नाम क्या है? ढूढो।" अपनी तरग मे बहते हुए उसने आदेश दिया। "वह कहती है कि बहुत बढ़िया कहानी है लेकिन बढिया किस के लिए? हो सकता है कि यह उसके लिए बढिया हो, और मेरे लिए घटिया। और देखो न, अपने बाल कटा लिए! अपने कान भी क्यो नहीं कटा लिए?"

पुस्तक पढते पढते जब मै उस स्थल पर पहुचा जहा तारास ने श्रोस्ताप को लडने के लिए ललकारा, बावर्ची भरभराई सी श्रावाज मे हसा।

"यह—सही है! श्रौर क्या?" उसने कहा। "तू विद्वान, मै बलवान! क्या छापते हैं! ऊट की श्रौलाद! "

वह ध्यान से सुन रहा था लेकिन बीच-बीच मे भुनभुनाता भी जाता था।

"ऊह, यह भी क्या बकवास है। एक ही वार मे कधे से कमर तक श्रादमी को नहीं काटा जा सकता। एकदम गलत। श्रौर बर्छी की नोक पर श्रादमी को भला कैसे उठाश्रोगे, वह टूट न जाएगी? क्या मै जानता नहीं, मैं खुद सनिक रह चुका हू "

श्राद्रेई के विश्वासघात का प्रसग सुनकर वह बुरी तरह श्राहत हो उठा

"नीच जात है, न? लुगाई पर मर गया। थू!"

पर जब तारास ने श्रपने बेटे के सीने मे गोली दागी तो स्मूरी उचककर बठ गया, श्रपनी टागो को उसने तख्ते से नीचे लटका लिया, उसके किनारे को दोनो हाथो से पकडकर झुका श्रौर रोने लगा। श्रासू धीरे धीरे उसके गालो पर से लुढकते हुए फश पर गिरने लगे। नथुने फडकाते हुए वह बुदबुदाया

"श्रोह, मेरे भगवान मेरे भगवान "

सहसा वह मुझपर चिल्ला उठा

"पढना क्यो बद कर दिया, शतान का पूत!"

वह श्रौर भी जोरो से, फफक फफककर रोने लगा उस समय जब श्रोस्ताप श्रपने प्राणदण्ड से पहले चीख उठा, "बापू! मुझे सुन रहे हो?"

"सभी कुछ समाप्त हो गया," स्मूरी भुनभुनाया। "कुछ भी बाकी नहीं बचा। खत्म भी हो गया? श्राह, सत्यानास हो इसका, पर लोग क्से थे, हैं? यह तारास क्या श्रादमी था! हा, यह थे श्रसली श्रादमी "

उसने पुस्तक मेरे हाथ से ले ली श्रौर ध्यान से उसे देखता रहा, किताब की जिल्द श्रासुश्रो से भीग गयी।

"बडी श्रच्छी किताब है! तबीयत खुश कर दी।"

इसके बाद "श्राइवनहो" का पाठ हुश्रा। स्मूरी को रिचड प्लाटागेनेट का चरित्र बहुत पसद श्राया।

"बादशाह हो तो ऐसा!" उसने रोबीली आवाज मे कहा। मुझे यह किताब उबानेवाली लगी।

आम तौर पर हमारी रुचि एक दूसरे से भिन्न थी। "थोमस जोन्स की कहानी" ने, जो "लावारिस टाम जोन्स की जीवनी" का पुराना अनुवाद था, मुझे मन्त्रमुग्ध कर लिया। लेकिन स्मूरी बडबडाया

"एकदम बकवास! भाड मे जाये तुम्हारा थामस। मुझे उससे क्या लेना? बढ़िया पुस्तको को खोजना चाहिए "

एक दिन मैने उसे बताया कि मुझे मालूम है कि पुस्तको की एक और किस्म होती है वजित पुस्तके, जिन्हे केवल रात के समय तहखानों मे बठकर पढा जाता है।

उसकी आखें फल गइ, मूछें फरफराने लगीं।

"क्या कहा तुमने? क्यो बेपर की उडा रहे हो?"

"मै झूठ नहीं कहता। पाप स्वीकारोक्ति के समय खुद पादरी ने उनके बारे मे मुझसे पूछा था, और उससे भी पहले मैंने लोगो को उन्हे पढ़ते और उनपर आसू बहाते देखा है "

रूखी सी आखो से उसने मेरी ओर देखा।

"आसू बहाते देखा है? कौन था वह?"

"एक स्त्री जो सुन रही थी, और दूसरी तो डर के मारे भाग ही गई! "

"जरा होश मे आओ, क्या बडबडा रहे हो?" अपनी आखो को धीरे धीरे सिकोडते हुए स्मूरी ने कहा। फिर कुछ रुककर बोला

"बेशक कहीं होनी चाहिए कोई गुप्त चीज न होना असम्भव है मेरी उम्र वसी नहीं और स्वभाव भी तो नहीं फिर भी "

बिना रुके घटो तक वह इसी तरह बातें कर सकता था

एकदम अनजाने मे ही मुझे पढ़ने की आदत पड गई और मैं चाव के साथ किताबें पढ़ता, पुस्तको मे वर्णित जीवन वास्तविक जीवन से, जो अधिकाधिक दूभर होता जा रहा था, कहीं सुखद था।

स्मूरी की दिलचस्पी भी पुस्तको मे बढ़ती गई। अक्सर वह मुझे अपना काम भी न करने देता। कहता

"पेशकोव, चलो पुस्तक पढ़कर सुनाओ।"

"यहा जूठे बर्तनों का ढेर लगा हुआ है।"

"मक्सिम साफ कर लेगा।"

स्मूरी बड़े बर्तन माजनेवाले की गरदन दबोचकर उससे मेरा काम लेता, वह काच के गिलास तोड़कर अपना बदला चुकाता। और बारमन निश्चल आवाज मे मुझे चेतावनी देता

"तुम्हे जहाज से निकाल दगा।"

एक दिन मक्सिम ने जान-बूझकर गदे पानी के बरतन मे गिलास पडे रहने दिये। मैंने बरतन का गदा पानी जहाज से नीचे फेंका तो गिलास भी उसके साथ-साथ जा गिरे।

"यह कसूर मेरा है," स्मूरी ने बारमन से कहा। "गिलासो के दाम मेरे हिसाब मे से काट लेना।"

वेटरो ने भी मुझसे जलना और कुढना शुरू कर दिया। मुझे कोचते हुए कहते

"कहो किताबी कीडे, खूब हराम की खाते हो आजकल!"

मेरा काम बढ़ाने के लिए वे जान-बूझकर रकाबियो को गदा कर देते। मैं समझता था कि इस छेडछाड का अत अच्छा नहीं होगा और ऐसा ही हुआ भी।

साझ का समय था। एक छोटे से घाट से एक लाल चेहरे वाली स्त्री हमारे जहाज पर सवार हुई। उसके साथ एक लडकी भी थी जो पीले रग का रूमाल और गुलाबी रग का नया ब्लाउज पहने थी। दोनो कुछ कुछ नशे मे थीं। स्त्री बराबर मुस्कराती, झुककर सभी का अभिवादन करती और उसके मुह से तोते की भाति शब्द निकलते

"मुझे माफ करना, मेरे प्यारे! आज मैंने थोडी सी चढा ली है। मेरे पर मुकदमा चला था और मै बेदाग छूट गई, सो मैं अब खुशी मना रही हू "

लडकी भी अपनी धुधली आखो से सभी पर डोरे डालती हस रही थी और स्त्री को धकेल रही थी

"अरी जा, सिरफिरी "

जहाज के दूसरे दर्जे के डेक-रूम के पास उस केबिन के सामने जहा याकोव इवानोविच और सेर्गेई सोते थे, दोनो ने अपना अड्डा जमाया।

स्त्री तो शीघ्र ही कहीं ग़ायब हो गई, और सेर्गेई लड़की की बग़ल में जाकर जम गया। उसका मेढकनुमा मुह लालसापूर्वक फैला था।

काम-काज से निपटकर उस रात सोने के लिए मैं मेज पर चढ़ा ही था कि सेर्गेई मेरे पास आया और मेरा हाथ खींचते हुए बोला

“चल, हम आज तेरी जोड़ी मिलायेंगे ..”

वह नशे मे धुत्त था। मैंने उससे अपना हाथ छुड़ाना चाहा तो उसने मुझे मारा

“चल!”

तभी मक्सिम भागा हुआ आ गया। वह भी नशे मे धुत्त था। दोनों ने मुझे पकड़ा और डेक तथा सोते हुए यात्रियों के पास से खींचते हुए मुझे अपने केबिन की ओर ले चले। लेकिन दरवाजे के पास स्मूरी और ठीक दरवाजे के बीचोंबीच याकोव इवानोविच लड़की का रास्ता रोके खड़ा था। वह उसकी पीठ पर घूसे बरसा रही थी और नशीली आवाज मे बार-बार चिल्ला रही थी

“जाने दो ..”

स्मूरी ने मुझे मक्सिम और सेर्गेई के चंगुल से छुड़ा लिया, बाल पकड़कर उनके सिरों को एक-दूसरे से टकराया, और परे फेंक दिया—वे दोनो गिर पड़े।

“आदमखोर!” वह याकोव पर चिल्लाया और झटके से उसके मुह पर दरवाजा बद कर दिया। फिर मुझे धकियाते हुए गुर्रा उठा

“दफा हो यहां से!”

मैं जहाज के दुबुसे की ओर भाग गया। बादलों घिरी रात थी, नदी काली थी। जहाज के पीछे पानी मे दो भूरी धारिया उफनती हुई अदृश्य तटों की ओर भागी जा रही थीं। इन धारियो के बीच बजरा घिसट रहा था। कभी दाहिनी ओर कभी बाईं ओर रोशनियो के लाल धब्बे दिखाई देते और फिर, किसी चीज को आलोकित किये बिना ही नदी के घुमावो के पीछे तुरत ग़ायब हो जाते। उनके ओझल हो जाने के बाद रात का अधेरा और मेरे अतरमन को लगी चोट और गहरी होती चली गई।

बावर्ची आकर मेरे पास ही बैठ गया। गहरी सास खींचकर उसने सिगरेट सुलगाई।

“क्या वे तुम्हे उस छछूदर के पास ले जा रहे थे? बदजात कहीं के! मैंने सुना था, वे कैसे उसपर हाथ डाल रहे थे ..”

"तुमने उसे उनके चगुल से छुडाया?"

"उसे?" भद्दे से शब्दो मे उसने लडकी को कोसा और फिर भारी आवाज मे बोला

"यहा सभी कमीने हैं! यह जहाज देहात से भी बदतर है। क्या तू कभी देहात मे रहा है?"

"नहीं।"

"देहात–पूरी मुसीबत है। जाडा मे तो खास तौर से "

उसने सिगरेट का टुर्रा पानी मे फेंक दिया और कुछ रुककर बोला

"इन सूग्ररो के झुड के बीच तेरा सत्यानाश हो जायेगा! तुझे देखकर दुख होता है पिल्ले। दुख तो मुझे सभी पर होता है। और कभी-कभी तो न जाने क्या करने को तयार होता हू मन करता है कि घुटनो के बल गिरकर मैं उनसे कहू 'यह तुम क्या कर रहे हो, हरामी पिल्लो! क्या तुम अधे हो?' ऊट कहीं के "

जहाज ने देर तक सीटी की आवाज की, तार का रस्सा पानी मे गिरकर छपछपाया, घने अधेरे मे लालटेन की रोशनी झूल उठी जो इस बात की सूचक थी कि जहाज घाट यहा है, और भी रोशनिया धुधलके मे झिलमिलाने लगीं।

"यहीं है वह 'नशीला जगल'" बावर्ची बडबडाया। "नशीली नाम की नदी भी है। एक अफसर था 'शराबोव'। और एक पियक्कड नाम का क्लक भी मैं किनारे पर जाऊगा "

कामा प्रदेश की हट्टी-कट्टी स्त्रिया लम्बी डोलियो पर लकडी लादकर ला रही थीं। फुर्ती से छोटे छोटे डग भरती, बोझ से झुकी, दो दो के जोडो मे जहाज के ईंधनघर तक आतीं और उसके काले मुह मे जोरो से 'धाईशा आ' की आवाज करती हुई लकडी के कुदो को झाक देतीं।

जब ये लकडो लेकर आतीं तो मल्लाह उनकी टागें खींचते, उनकी छातियो को पकडकर मसकते और स्त्रियां कोसती हुई उनके मुह पर थूकतीं। लकडिया उतारकर जब वे लौटतीं तो जहाजियो के धक्को और चिकोटियो से बचने के लिए वे पलटकर अपनी डोलियो से उनपर वार करतीं। दसियो बार, हर फेरे मे, मै यह देख चुका था। जहा कहीं भी जहाज ईंधन लेता, इसी तरह के दृश्य दिखाई देते।

मुझे ऐसा मालूम होता मानो मैं कोई बडा बूढा आदमी हू, लम्बे अर्से

से जहाज पर रह रहा हू, और पहले से ही बता सकता हू कि यहा अगले दिन, अगले सप्ताह, अगली शरद मे या अगले वर्ष क्या होगा।

उजाला हो चला था। घाट से परे रेत के टीले पर देवदार के एक बडे जगल की शक्ल दिखाई देने लगी। जगल की ओर स्त्रिया टीले पर जा रही थीं। वे हसतीं, गीत गातीं और किलकारिया भरतीं। अपनी लम्बी डोलियो से लस वे सनिकों के दल की भाति दिखाई देतीं।

जी रोने को चाहता था। आसू हृदय मे उमड घुमड रहे थे, वह मानो उनमे उबल रहा था, इससे मुझे बहुत पीडा पहुच रही थी।

लेकिन रोते मुझे शम मालूम हुई। सो मैं उठा और डेक साफ करने मे मल्लाह शूरिन का हाथ बटाने लगा।

शूरिन उन जहाजियो मे से था जिनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। पीला और बेरग, जहाज के कोने काने मे छिपकर बैठ बस अपनी छोटी आखें मिचमिचाता रहता।

एक दिन मुझसे बोला

"असल मे मेरा नाम शूरिन नहीं, सूरिन है। जिस मा ने मुझे जन्म दिया, वह पूरी सूरी थी। और मेरी बहन—वह भी अपनी मा से कम नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि विधाता ने इन दोनों के भाग्य मे यही लिख दिया था। भाग्य, मेरे भाई, उस पत्थर की भाति है जो गले मे बधा रहता है। तुम उबरने के लिए हाथ-पाव मारते हो, और वह तुम्हें ले डूबता है "

और अब, डेक को साफ करते समय, धीमे स्वर मे कहने लगा

"देखा तूने, ये लोग लडकियो को किस तरह मसकते और कचोटिया काटते हैं? कौन नहीं जानता कि अगर पीछे पडे रहो तो सीली लकडी भी गरमा जाती है! मुझसे यह नहीं देखा जाता। नहीं भाई, मैं यह सब सहन नहीं कर सकता। अगर मैं लडकी होता तो ईसामसीह की कसम खाता हू, किसी अधे कुवे मे डूब मरता इसान तो यो ही आजाद नहीं होता ऊपर से लोग उकसाते हैं। बधिये तो, भाई मेरे, कोई भूल थोडे ही हैं, कभी सुना है बधियो के बारे मे? समझदार लोग हैं—भले जीवन का रास्ता खोजने मे उन्हें देर न लगी। बस, मन को भटकानेवाली इन छोटी चीजो को जड़-मूल से काटकर फेंक दो और, शुद्ध शरीर हो, भगवान की सेवा करो "

कप्तान की पत्नी हमारे पास से गुजरी। डेक पर पानी फैला था। अपने घाघरो को भीगने से बचाने के लिए वह उन्हे ऊचा उठाए थी। वह हमेशा जल्दी उठ जाती थी। लम्बी और सुघड, चेहरा कुछ इतना निष्कपट और भोलेपन का कुछ ऐसा भाव लिये कि मेरा मन ललक उठता, जी करता कि भागकर उसके पीछे जाऊ और
उडेलते हुए उससे कहू

"मुझसे बातें कीजिये—कुछ तो कहिये!"

जहाज धीरे धीरे घाट से दूर होने लगा।

"चल दिये!" शूरिन ने कहा, और अपने हाथ
बनाया

६
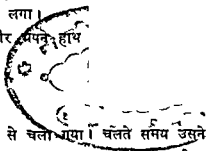
सारापूल पहुचने पर मक्सिम जहाज से चला गया। चलते समय उसने किसी से विदा तक न ली। बस, एकदम चुपचाप, शात और गम्भीर, वह जहाज से चल दिया। रगीन स्वभाव की वह स्त्री भी हसती और खिलखिलाती, उसके पीछे-पीछे चल पडी। साथ मे लडकी भी थी—मसली और मुरझाई सी, आखें सूजी हुई। सेर्गेई कप्तान के केबिन के सामने देर तक बैठा रहा, दोनो घुटने टेके हुए। दरवाजे की चौखट को वह चूमता था, और रह रहकर उससे अपना सिर टकराता था।

"मुझे माफ करो," झींकता हुआ वह कहता। "मैंने कुछ नहीं किया। वह सब मक्सिम का कसूर था"

मल्लाहो, बार वाला, यहा तक कि कुछ यात्रियो को भी मालूम था कि वह झूठ बोल रहा है। फिर भी वे उसे उक्सा और बढावा दे रहे थे

"ठीक है, डटा रह। वह माफ कर देगा!"

कप्तान ने उसे भगाया, यहा तक कि ऐसी लात जमायी कि सेर्गेई फर्श पर गिर गया, लेकिन फिर माफ कर दिया। अगले ही क्षण सेर्गेई हाथो मे नाश्ते की ट्रे लिए डेक पर इधर से उधर लपकता और मार खाये पिल्ले की भांति लोगो की आखो मे झाकते हुए नजर आने लगा।

मक्सिम की जगह जिस आदमी को रखा गया, वह व्यात्का प्रदेश का रहनेवाला था और पहले फौज मे नौकरी कर चुका था। हड्डियो का ढांचा,

छोटा सा सिर और लाल-भूरी आखें। आते ही छोटे बावर्ची ने उसे मुगिया काटने भेज दिया। दो तो उसने काट डालीं, और बाकी डेक पर निकल भागीं। यात्रियो ने उन्हे पकडने की कोशिश की, और तीन मुगिया फुदककर जहाज से पानी मे जा गिरीं। रसोईघर के पास लकडियो के ढेर पर निराशा से सिर झुकाये सनिक बठ गया, और फूट फूटकर रोने लगा।

"अरे बुद्धू कहीं का, हुआ क्या?" स्मूरी ने अचरज मे भरकर पूछा। "छि, सनिक भी कभी रोते हैं, क्या?"

सनिक ने धीमे स्वर मे कहा

"मैं तो गैर लडाकू सनिक था।"

यह कहना ही था कि उसका तो तमाशा बन गया। आध घटा बीतते न बीतते जिसे देखिये वही जहाज मे उसपर हस रहा था। एक एक करके लोग उसके एकदम नजदीक आते, उसके चेहरे पर आखें गाढ देते और पूछते

"क्या यही है?"

इसके बाद बहुत ही भोडे और भद्दे ढग से खिलखिलाकर वे उसकी हसी उडाते, और हसते हसते दोहरे हो जाते।

शुरू मे सनिक का ध्यान न तो उनकी ओर गया और न ही उनके खिलखिलाने और हसने की ओर। वह केवल उसी जगह बठा हुआ अपनी फटी पुरानी सूती कमीज की आस्तीन से अपने आसुओ को इस तरह पोछता रहा मानो उन्हें अपनी आस्तीन मे छिपाने का प्रयत्न कर रहा हो। लेकिन शीघ्र ही उसकी लाल भूरी आखें गुस्से से दमकने लगीं और व्यात्का निवासियो के चुहचुहाते लहजे मे उसकी जबान कतरनी सी चल पडी

"इस तरह दीदे फाडकर मुझे क्यो घूर रहे हो? तुम्हारी बोटी-बोटी नुचे, मुओ! "

उसकी इस बात ने लोगो को और भी गुदगुदा दिया। वे आते और उसकी पसलियो मे अपनी उगलिया गडाते, उसकी कमीज और उसका एप्रन पकडकर खींचते मानो बकरे के साथ खेल रहे हो। इस तरह भोजन का समय होने तक वे उसे पूरी बेरहमी से चिढाते रहे। भोजन के बाद किसी ने लकडी के चमचे के हत्थे मे निचुडा नींबू गडाकर उसे उसके एप्रन की डोरियो से पीठ पीछे बांध दिया। सनिक जब इधर उधर

हिलता-डुलता तो चमचा भी उसके साथ-साथ झकोले खाता और लोग उसे देख देखकर हसी के मारे दोहरे हो जाते। चूहेदानी मे बद चूहे की भांति वह छटपटाता और भुनभुनाता – उसकी समझ मे न आता कि आखिर ये लोग इतना हस क्यो रहे हैं।

बिना कुछ बोले, बडी गम्भीरता से, स्मूरी ने उसे देखा और उसका चेहरा किसी स्त्री के चेहरे की भांति कोमल हो उठा।

मुझे भी सनिक पर तरस आया। मैंने स्मूरी से पूछा

"कहो तो चमचे के बारे मे उसे बता दू?"

स्मूरी ने सिर हिलाकर अनुमति दे दी।

जब मैंने सनिक को यह बताया कि वह क्या चीज है जिसपर सब लोग हस रहे हैं तो उसका हाथ झपटकर चमचे पर पहुचा, उसकी डोरी को उसने तोड डाला, फिर चमचे को फर्श पर पटक उसे पाव तले रौंदा और अपने दोनो हाथो से मेरे बाल पकडकर मुझे खींचना शुरू कर दिया। फिर क्या था, हम दोनो गुत्यमगुत्था हो गये और अन्य सब लोग तुरत घेरा सा बनाकर बडी खुशी से हमारा तमाशा देखने लगे।

स्मूरी ने सब को इधर-उधर कर हमे एक दूसरे से छुडा दिया। पहले उसने मेरे कान गरम किये, फिर सनिक को कान से पकड लिया। अपना कान छुडाने के लिए जब टुइया से उसके बदन ने एठना और बल खाना शुरू किया तो लोग उसे देख देखकर उछल पडे और उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। तालियो और सीटियो की आवाज से लोगो ने आसमान सिर पर उठा लिया और हसी के मारे दोहरे हो गये।

"वाह रे मेरे शेर! देखता क्या है, मार सिर बावर्ची की तोद मे!"

लोगो के झुड के इस जगलीपन को देखकर मेरे मन मे हुआ कि एक लट्ठा उठाकर इन सब के सिर चकनाचूर कर दू।

स्मूरी ने सनिक को छोड दिया और जगली सुअर की भांति उसने अब लोगों की ओर रुख किया। उसके हाथ उसकी कमर के पीछे थे, उसके दात चमक रहे थे और मछो के बाल फरफरा रहे थे।

"दफा हो जाओ – अपनी अपनी जगह! आदमखोर कहीं के"

सनिक एक बार फिर मेरी तरफ झपटा, लेकिन स्मूरी ने उसे एक हाथ से उठा लिया और इसी प्रकार उठाए उठाए उसे पानी के नल तक ले गया। फिर पानी निकालते हुए उसने सनिक का सिर नल के नीचे कर

दिया और उसने टुइयो से बदन को पानी की धार के नीचे इस तरह उलट-पलटकर घुमाने लगा मानो यह चिथड़ो की गुड़िया हो।

कुछ मल्लाह, उनका मुखिया और कप्तान का सहायक, लपककर बाहर निकल आये और एक बार फिर भीड़ जमा हो गई। भीड़ में बारमन का सिर सबसे ऊचा दिखाई दे रहा था, वह सदा की भांति चुप था, मानो बोलना जानता ही न हो।

सनिक रसोईघर के पास लकड़ी के ढेर पर बठ गया और कापते हाथों से अपने जूते उतारने लगा। उसने उन चिथड़ो को निचोड़ा जो उसके पांवो मे लिपटे थे। लेकिन वे सूखे थे जबकि बेतरतीबी से बिखरे हुए उसके बालो से पानी टपटप गिर रहा था। यह देख लोगा ने फिर हसना शुरू कर दिया।

"कुछ भी हो," सनिक ने जोर लगाकर पतली आवाज मे कहा, "छोकरे को मैं जीता न छोड़ूगा।"

स्मूरी मेरा कधा थामे था। उसने कप्तान के सहायक से कुछ कहा। मल्लाहो ने लोगो को तितर बितर कर दिया। जब सब चले गये तो स्मूरी ने सनिक से पूछा

"बोलो, तुम्हारा अब क्या किया जाये?"

सनिक कुछ नहीं बोला। जानवरो सी आखो से बस मेरी ओर देखता भर रहा। उसका समूचा शरीर अजीब ढग से बल खा रहा था।

"अटेंशन, बातो के शेर!" स्मूरी ने कहा।

"ठेंगा ले ले। यहां कोई फौज वौज नहीं है।" सनिक ने जवाब दिया।

बावर्ची अचकचा गया। उसके फूले हुए गाल पिचक गये, उसने थूका और मुझे अपने साथ घसीटता हुआ ले चला। मुझे भी जसे काठ मार गया। बार-बार मुडकर मैं सनिक की ओर देखता। स्मूरी बुदबुदाया

"बडा ढीठ है। ऐसे आदमी के मुह कौन लगे?"

तभी सेर्गेई लपककर हमारे पास आया और न जाने क्यो फुसफुसाकर बोला

"वह तो अपना गला काटने पर उतारु है!"

"क्या?" स्मूरी के मुह से निकला और वह तेजी से उल्टे पाव मुड चला।

हाथ मे बडा सा चाकू लिए जो मुर्गियो की गरदन हलाल करने तथा ईंधन के लिए छिपटियां चीरने के काम आता था, सनिक उस केबिन के दरवाजे पर खडा था जिसमे वेटर रहते थे। चाकू कुंठित था, उसमे आरी जसे दाते बन गये थे। केबिन के सामने लोग फिर जमा हो गये थे, और बालो से पानी चूते इस टुइया से आदमी को देख रहे थे जो उनके लिए एक अच्छा खासा तमाशा बन गया था। ऊपर को उठी नाक वाला उसका चेहरा जली की भाति काप रहा था, उसका मुह जसे खुले का खुला रह गया था, उसके होठो म बल पड रहे थे और वह बार-बार बुदबुदा रहा था

"जालिम ह-त्या रे "

मैं उछलकर किसी चीज पर खडा हो गया और उचककर लोगो के चेहरों को देखने लगा। खिलखिलाकर वे हस रहे थे, और एक-दूसरे को कोहनियाते हुए कह रहे थे

"अरे देखो, उसे देखो "

अपने बच्चो जसे दुबले पतले हाथ से जब उसने पतलून के भीतर अपनी कमीज खोसनी शुरू की तो मेरे पास ही खडे हुए एक अच्छे खासे डीलडौल वाले आदमी ने उसास भरते हुए कहा

"ठीक है। गरदन चाहे साफ हो जाये पर पतलून नहीं खिसकनी चाहिए "

लोग और भी जोरो से हसने लगे। सभी समझते थे कि यह मरदूद जान नहीं दे सकता। मेरा भी ऐसा ही खयाल था। लेकिन स्मूरी ने, उछलती सी नजर से देखने के बाद, लोगो को अपने पेट से धकियाते और इधर उधर करते हुए उन्हे डाटना शुरू किया

"हट जा यहा से, बेवकूफ कहीं का!"

समूह को एक व्यक्ति की भाति "बेवकूफ कहीं का" कहने की उसे आदत थी। चाहे कितने ही लोग क्यो न जमा हो, वह उनके पास जाता और उन सबको एकवचन मे कहता

"दफा हो जा, बेवकूफ कहीं का!"

उसे ऐसा करते देख हसी छूटती, लेकिन यह भी सच था कि आज, सुबह से ही, मानो सभी लोगो ने एक बहुत बडे "बेवकूफ" का रूप धारण कर लिया था।

लोगो को तितर बितर करने के बाद वह सनिक के पास गया और अपना हाथ फलाते हुए बोला

"इधर दे चाकू "

"सब बराबर है " सैनिक ने कहा और चाकू की धार स्मूरी की ओर कर दी। स्मूरी ने चाकू मुझे थमा दिया और सनिक को केबिन मे धकेला

"लेटकर सो जाओ! आखिर तुम्हे यह क्या सूझा?"

सनिक सोने के तख्ते पर चुपचाप बठ गया।

"यह तुम्हारे लिए कुछ खाना और थोडी सी वोदका ले आयेगा। वोदका पीते हो?"

"थोडी सी पी लेता हू "

"और देखो इसे हाथ न लगाना। तुम्हारी हसी उडानेवाला मे यह नहीं था। मै कहता हू यह नहीं था "

सनिक ने धीमे स्वर मे पूछा

"ये क्या मेरी जान के पीछे पडे हैं?"

कुछ क्षण तक स्मूरी चुप रहा। अत मे बोला

"मुझे क्या मालूम?"

मेरे साथ रसोईघर की ओर जाते हुए स्मूरी बुदबुदाया

"ऊह, मरे को मारे शाह मदार! देखा तुमने? भाई मेरे, लोगो का वश चले तो तुम्हारी जान ही निकाल ले बस, खटमलो की भांति चिपक जाते हैं, और बस, छोडने का नाम नहीं खटमल तो क्या, उनसे भी बुरे "

सनिक के लिए जब मैं कुछ रोटी, मांस और वोद्का लेकर उसके पास पहुचा तो वह तख्ते पर बठा स्त्रियो की भाति सिसक सिसककर रो रहा था और उसका बदन आगे पीछे हिल रहा था। रकाबी मेज पर रखते हुए मैंने कहा

"यह लो, खाओ "

"दरवाजा बद कर दो।"

"अधेरा हो जायेगा।"

"बद कर दो, कहीं वे फिर न आ जायें "

मैं बाहर निकल आया। सनिक मुझे अटपटा लगा। उसके प्रति मेरे

हृदय मे सहानुभूति या दया का कोई भाव पदा नहीं हुआ। और मैं बेचन हो उठा—नानी ने सदा मुझे सीख दी थी

"लोगो पर तरस खाना चाहिए, सभी अभागे हैं, मुसीबतो के मारे "

"खाना दे आये?" वापस लौटने पर बावर्ची ने पूछा। "अब उसका क्या हाल है?"

"रो रहा है।"

"निरा पाजामा है यह भी कोई सनिक है क्या?"

"मुझे तो उसपर जरा भी तरस नहीं आया।"

"क्या? क्या कहा तुमने?"

"लोगो के साथ दया का बरताव करना चाहिए "

स्मूरी ने मेरा हाथ पकडकर मुझे अपने निकट खीच लिया।

"किसी पर जबदस्ती दया कसे दिखाओगे, और झूठ बोलना तो और भी बुरा है। समझे?" उसने रोबीले स्वर मे कहा। "इस तरह मोम बनने से काम नहीं चलेगा, अपने काम मे मस्त रहा करो "

उसने मुझे अपने से दूर धकेल दिया। फिर उदास स्वर मे बोला

"नहीं, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं। तुम्हे कहीं और होना चाहिए। तुम यहा बेकार आ फसे। लो, सिगरेट पी लो "

यात्रियो के बरताव ने मेरे हृदय मे गहरी उथल पुथल मचा दी। जिस बुरे ढग से उन्होंने सनिक को चिढाया और स्मूरी के उसका कान पकडकर उठाने पर जिस कुत्सित ढग से खिलखिलाकर वे हसे, वह सब मुझे अकथनीय रूप से अपमानजनक तथा अवसादक लगा। इस घृणित और दयनीय स्थिति मे भी कोई हसने की बात थी? उसमे उन्हे ऐसा क्या दिखाई दिया जो वे हसी की अपनी इस बाढ़ को रोक नहीं सके?"

पहले की भाति वे अब फिर डेक पर सायबान के नीचे बठे या लेटे हुए थे। उनके जबडे चल रहे थे, वे पी और चबा रहे थे, ताश खेल रहे थे, शात और सुघड ढग से बातें कर रहे थे, और नदी का नजारा देख रहे थे। उन्हे देखकर कोई सोच भी नहीं सकता था कि यही वे लोग थे जो एक घटा पहले एकदम बेलगाम होकर उछल उछलकर सीटिया बजा रहे थे। सदा की भाति वे अब फिर निश्चल और काहिल हो गए थे। मच्छरो या सूरज की रोशनी मे चक्कर लगाते धूल के कणो की भाति

सुबह से साझ तक ये जहाज मे टल्लानवीसी करते, इधर से उधर गोल गर्दिश मे घूमते। यह देखो, दसेक लोग उतरने के तख्ते के पास धक्का मुक्की करते सलीब का चिह्न बनाते जहाज से घाट पर उतर रहे हैं और घाट से उन्हीं जसे लोग सीधे उनपर चढ़े आ रहे हैं, ये भी उन्हीं जसे कपडे पहने हैं और उन्हीं की भाति पोटले पोटलियो के बोझ से झुके हैं-

लोगो की इस निरतर आवा-जाही से जहाज के जीवन मे कोई अन्तर न पडता। नये यात्री भी उन्हीं चीजो के बारे मे बातें करते जिनके बारे मे दूसरे कर चुके थे जमीन और काम के बारे मे, खुदा और स्त्रियों के बारे मे। यहा तक कि उनके शब्दा के प्रयोग मे भी कोई भिन्नता न होती

"भगवान का हुक्म है कि इसान सब कुछ सहता जाये, सो सहता जा, बदे। और कर ही क्या सकता है, आदमी की किस्मत ही ऐसी है "

इस तरह की बातो से मुझे बडी ऊब मालूम होती, मन झुझलाने लगता। गदगी से मेरा बर था। न ही मैं यह सहन करना चाहता था कि मेरे साथ कोई दुखदायी, बेरहमी और नार इन्साफी का बरताव करे। मुझे पक्का विश्वास था, मैं महसूस करता था कि मैं इस तरह के बरताव के योग्य नहीं हू। सनिक न ही ऐसे बरताव के योग्य था। शायद वह खुद अटपटा दीखना चाहता था

स्मिसम जसे गम्भीर और दयालु आदमी को तो उन्हाने जहाज से निकाल दिया जब कि कुत्सित सेर्गेई की नौकरी पर कोई आच नहीं आई। ये सारी बातें ठीक नहीं हैं। और क्या ये लोग जो किसी को भी सहज ही इस हद तक सता सकते हैं कि वह पागल हो जाये, मल्लाहा के भोडे से भोडे आदेशो को दुम दबाकर मानते हैं और उनकी गदी से गदी गालियो और डाट-डपट को गले के नीचे याही उतार लेते हू?

"ऐ, बाडे पर जमघट न लगाओ!" सुदर लेकिन क्रोध भरी आखो को सिकोडते हुए मल्लाहो का मुखिया चिल्लाता। "जहाज सारा इधर झुक गया है! हट जाओ यहाँ से, शतान के पिल्लो!"

शतान के पिल्ले भाग के डेक के दूसरे बाजू पहुच गये, और वहा से फिर उन्हें भेडा के रवड का भाति खदडा जाता

"जाओ, मुओ "

उमस भरी राता मे दिन के तपे हुए टीन के सायबान तले टिकना दूभर हो जाता। यात्री तिलचट्टो की भाति डेक पर बिखर जाते और जहाँ

भी जी करता, पडे रहते। हर घाट पर मल्लाह ठोकर और घूसे मारकर उन्हे जगाते।

"ऐ, रास्ता छोडो! भागो अपनी अपनी जगहो पर!"

वे चौंककर उठ बठते और उनींदी आखो से चाहे जिस दिशा मे चल देते।

मल्लाहो और यात्रियो मे केवल इतना ही अन्तर था कि दोनो की वेशभूषा भिन्न थी। फिर भी वे यात्रियो को पुलिस वालो की भाति डाटते फटकारते और इधर से उधर खदेडते।

लोगो के बारे में सब से मुख्य बात यह है कि वे सकोची, दब्बू और सिर पर जो आ पडे उसे उदास भाव से सहन करनेवाले होते है और वे उस समय बहुत ही अजीब तथा भयानक मालूम होते हैं जब हुक्मबरदारी का उनका बाध एकाएक टूट जाता है और बबर उछखलता की एक ऐसी बाढ मे वे डूबने उतरने लगते हैं जो क्रूर, अर्थहीन और प्राय उदासी भरी होती है। मुझे ऐसा मालूम होता मानो इन लोगो को यह भी पता नहीं है कि उन्हे कहा ले जाया जा रहा है और इस बात का भी उनके लिए कोई विशेष महत्व नहीं है कि जहाज उन्हे कहा उतारता है। जहा कहीं भी जहाज उन्हे उतारेगा, तट पर वे थोडी देर ही रहेगे और फिर इस या किसी दूसरे जहाज पर सवार हो जायेंगे और वह उन्हे अन्य किसी जगह ले जायेगा। वे सब के सब कुछ भटके हुए से, घर द्वारहीन थे, सारी पृथ्वी उनके लिए पराई थी और वे सभी पागलपन की हद तक बुजदिल थे।

एक दिन, आधी रात बीते मशीन मे किसी चीज के टूटने का बडे जोर से धमाका हुआ मानो किसी ने तोप दागी हो। देखते देखते समचा डेक भाप के सपेद बादल से घिर गया जो इजन घर से निकल रही थी और सभी दरारो मे दिखाई दे रही थी। कोई अदृश्य कानफोड आवाज मे जोर से चिल्ला रहा था

"गाव्रीलो! लाल सीसा, नमदा लाओ!"

मैं इजन घर की बगल मे उसी मेज पर सोता था जहा मैं तश्तरिया साफ करता था। धमाके की आवाज और मेज के हिलने से जब मेरी आख खुली तब डेक पर सन्नाटा छाया था, मशीन भाप से सनसना रही थी और हथौडियां तेजी से खटा खट कर रही थीं। लेकिन अगले ही क्षण डेक पर

मानियों की भयानक चीखपुकार ने आसमान सिर पर उठा लिया और तत्क्षण बडा भयानक सा लगने लगा।

धुंध की सफेद चादर को चीरकर, जो अब तेजी से झीनी पड़ती जा रही थी, बिखरे हुए बालो वाली स्त्रियां और मछलियो जसी गोल आंखों वाले पुरुष घबराहट मे इधर उधर भाग रहे थे, एक-दूसरे को धक्का देकर गिरा रहे थे। सब के सब अपने पोटले-पोटलियों, थैलो और सूटकेसों से जूझ रहे थे, ठोकरें खा रहे थे और भगवान तथा सन्त निकोलाई से फरियाद कर रहे थे तथा एक दूसरे को मार रहे थे। दृश्य भयानक था, और साथ ही दिलचस्प भी। लोगो की हरकतों को देखने और यह जानने के लिए कि वे क्या करते हैं, मैं भी उनके साथ-साथ चक्करघिन्नी बना हुआ था।

जहाज पर रात मे फली बेचैनी का यह मेरा पहला अनुभव था और फौरन ही ऐसा लगने लगा कि यह सारा बवडर गलती से हुआ है। जहाज उसी तेजी से चल रहा था। दाहिने तट पर, बहुत ही नजदीक, घसियारो के अलाव जल रहे थे। उजली रात थी। पूनो का ऊचा भरा-पूरा चाद चादनी बरसा रहा था।

लेकिन डेक पर लोगा की घबराहट बढ़ती जा रही थी। पहले दर्जे के यात्री भी निकल आये। कोई छलांग मारकर पानी मे कूद गया। कुछ औरो ने भी उसका साथ दिया। दो किसान और एक पुरोहित ने लपककर लकडी के कुदे उठाये और उनसे डेक पर पेचा से कसी बचो मे से एक उखाड डाली। दबूसे से मुगियो से भरा बडा सा पिजरा पानी मे फेंका गया। डेक के बीचाबीच, कप्तान के मच की सीढियो के पास एक किसान घुटनो के बल खडा होकर सामने से भागते हुए लोगा के सम्मुख झुक झुककर भेडिये की तरह चीख रहा था

"ओ खुदा के सच्चे बन्दो, मैं पापी हू!"

एक मोटा साहब जो नगे बदन, केवल पतलून पहने ही बाहर निकल आया था, छाती फूट फूटकर चिल्ला रहा था

"डोगी, शतान के बच्चो, डोगी!"

मल्लाह भीड मे झपटकर कभी एक को गरदन नापते, कभी किसी दूसरे के सिर पर घूसा लगाते और ठोकरे मारकर उन्हें एक ओर पटक देते। स्मूरी भी रात के कपडा पर कोट डाले भारी धमक के साथ यहा

से वहा जा रहा था और गरजती हुई आवाज मे हरेक को डाट रहा था

"कुछ तो शम करो! अपने दिमाग़ का इतना दिवाला न निकालो! देखते नहीं, जहाज रुक गया है, रुका हुआ है। दो हाथ पर ही नदी का किनारा है। और वह देखो, उधर दो डोगिया दिखाई दे रही हैं, आदमियो से लदीं। ये वही बेवकूफ हैं जो पानी मे कूद पडे थे। घसियारो ने सभी को बाहर निकाल लिया है!"

जहा तक तीसरे दर्जे के यात्रियो का सबध है, उनकी खोपडियो पर वह ऊपर से नीचे को घूसा मारता था कि वे डेक पर बोरो की भाति ढह जाते थे।

हगामा अभी शान्त होने भी न पाया था कि लकदक कपडे पहने एक स्त्री चम्मच हिलाते हुए झपटकर स्मूरी के पास पहुची और उसके मुह के सामने चम्मच हिलाते हुए चिल्लाकर बोली

"यह क्या बदतमीजी है?"

भीगे हुए साहब ने उसे रोकते हुए और अपनी मूछो को चूसते हुए झुझलाकर कहा

"छोडो इस मूसल चद को"

स्मूरी ने अपने कधे बिचकाये और घबराकर आखें मिचमिचाते हुए मुझसे पूछा

"यह बात क्या है भला? क्या मेरे सिर पडी है यह? मैं तो इसे पहली बार देख रहा हू!"

एक किसान जो नाक से बहते हुए खून को सुडकने का प्रयत्न कर रहा था, चिल्लाया

"लोग क्या हैं, पूरे डाकू हैं–डाकू!"

पूरी गर्मियो मे दो बार जहाज़ पर ऐसी भगदड मची थी और दोनो ही बार सचमुच के किसी ख़तरे ने नहीं, बल्कि ख़तरे के डर ने लोगो को बौखला दिया था। तीसरी बार यात्रियो ने दो चोरो को पकडा – उनमे से एक तीर्थयात्री के भेष मे था और मल्लाहो से छिपकर यात्रियो ने पूरे एक घटे तक उनकी ख़ूब मरम्मत की। अत मे मल्लाहो ने उनके चगुल से चोरो को छुडाया तो लोग उन पर भी झपटे। चिल्लाकर बोले

"चोर चोर मौसेरे भाई!"

"तुम खुद चोर हो, और इसीलिए उन्हें भी छूट देते हो "

चोरों को इस हद तक पीटा गया था कि वे बेहोश हो गए थे। और जब अगले घाट पर उन्हें पुलिस के हवाले किया गया, वे अपने पाव पर खडे भी नहीं हो सकते थे

एक के बाद एक इस तरह की अनेक घटनाए घटीं, इस हद तक हृदय को कोंचनेवाली कि दिमाग भन्ना जाता और समझ मे न आता कि लोग सचमुच मे नेक हैं या दुष्ट, दब्बू हैं या जानमार? आखिर क्या चीज है यह जो उन्हें इतनी क्रूरता और हवस की हद तक दुष्ट और इसी के साथ-साथ शमनाक हद तक दब्बू तथा दीन-हीन बनाती है?

स्मूरी से जब कभी मैं इस बारे मे पूछता तो वह सिगरेट से इतना धुआ छोडता कि उसका सारा मुह ढक जाता और झुझलाकर जवाब देता

"आखिर तुमसे मतलब? लोग जसे होते हैं, वसे होते हैं कोई चतुर होता है, और कोई एकदम बुद्धू। उनकी चिन्ता छोड, और पुस्तकों मे मन लगा। उनमे तुझे सभी सवालो के जवाब मिल जायेंगे, अगर वे ठीक ढंग की हुईं "

धार्मिक पुस्तकें और सन्तों की जीवनियां उसे पसद नहीं थीं। उनका जिक्र आने पर कहता

"वे तो पादरियो के लिए हैं, या फिर पादरियो के छोकरो के लिए "

उसे खुश करने के लिए मैंने एक पुस्तक भेंट करने का निश्चय किया। कज़ान पहुचने पर मैंने जहाज़ घाट पर पाच कोपेक मे एक पुस्तक खरीदी "किस्सा उस सिपाही का, जिसने जान बचायी प्योत्र महान की"। लेकिन उस समय वह नशे मे चूर था और गुस्से मे था और मुझे यह साहस नहीं हुआ कि मैं उसे अपनी भेंट दू, सो पहले खुद यह पुस्तक मैंने पढ डाली। मुझे वह बेहद पसद आई। हर बात थोडे मे, बहुत ही साफ सुथरे, सीधे सादे और इतने दिलचस्प ढंग से कही गई थी कि मैं मुग्ध हो गया। मुझे पक्का विश्वास था कि वह भी उसे खूब पसद करेगा।

लेकिन जब मैंने उसे पुस्तक दी, तो हुआ यह कि उसने, चुपचाप, पुस्तक को हथेलियो के बीच दबोचकर उसकी गेंद सी बनायी और उसे पानी मे फेंक दिया।

"वह गई तेरी पुस्तक, मूख कहीं का!" उसने झल्लाकर कहा। "मैं तुझे शिकारी कुत्तो की तरह साध रहा हू और तू जगली चिडिया ही रहना चाहता है!"

फश पर उसने अपना पाव पटका और मुझपर चिल्लाया

"यह क्या किताब है? मैं सारी बक्वास पढ चुका हू। इसमे क्या लिखा है—सच लिखा है? कहो!"

"मुझे नहीं मालूम।"

"लेकिन मैं जानता हू। अगर आदमी का सिर काट दिया जाये तो वह सीढी से नीचे लुढ़क आयेगा और दूसरे लोग सूखी घास के अम्बार पर नहीं चढेंगे—सनिक इतने बेवकूफ नहीं होते। वे सूखी घास के अम्बार मे आग लगा देते जिससे सारा झझट ही मिट जाता। समझे?"

"हा।"

"देखा, यह बात है! और तुम्हारा वह प्योत्र ज़ार—मैं जानता हू कि उसके साथ कभी उस तरह की कोई घटना नहीं घटी। बस, अब दफा हो जा यहा से।"

मुझे लगा कि बावर्ची की बात सही है, लेकिन पुस्तक के साथ मेरा मन फिर भी उलझा रहा। मैने उसे दुबारा खरीदा और एक बार फिर पढा और इस बार यह जानकर खुद मुझे भी अचरज हुआ कि पुस्तक सचमुच मे दो कौडी की थी। मुझे अपने ऊपर बडी शम आयी, और स्मूरी को मैं और भी ज्यादा आदर तथा भरोसे की नजर से देखने लगा और वह खुद, कारण चाहे जो भी हो, बहुधा मुझसे झुझलाहट के साथ कहता

"अह, तुम्हें तो लिखना पढना चाहिए। यह जगह तुम्हारे लिए ठीक नहीं"

मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करता कि यह जगह मेरे लिए नहीं है। सेर्गेई मेरे साथ बेहद बुरा बरताव करता। मेरी मेज पर से वह चाय के बतन उडा लेता और इस तरह यात्रियो से मिलनेवाले पसे को बारमैन को सौंपने के बजाय अपने पास रख लेता। मै जानता था कि इस तरह की कमाई को चोरी कहा जाता है। स्मरी भी एक से अधिक बार मुझे चेता चुका था

"ज़रा चौक्स रहना। ऐसा न हो कि वेटर तुम्हारी मेज़ से चाय के बर्तनों का सफाया कर दे!"

इसी तरह की मेरे लिए और भी कितनी ही बुरी बातें थीं। अक्सर मन मे होता कि अगले ही घाट पर जहाज़ छोड़कर जगलो की राह लू! लेकिन स्मूरी की वजह से ऐसा न कर पाता। उसकी घनिष्ठता बराबर बढती जा रही थी। इसके अलावा जहाज़ की निरंतर गति का भी कुछ कम आकर्षण नहीं था। घाटो पर जब भी जहाज़ रुकता, मुझे बडा बुरा मालूम होता और किसी ऐसी घटना या चमत्कार की मैं प्रतीक्षा करता जिसकी बदौलत, पलक झपकते, कामा नदी से बेलाया और उससे भी सब आगे व्यात्का या वोल्गा नदी की मैं सैर करू, और नये तटो, नये नगरों तथा नये लोगो को देखने का मुझे अवसर मिले।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। मेरे जहाज़ी जीवन का एकाएक और शर्मनाक ढग से अत हो गया। एक साझ, उस समय जब कि हम कज़ान से नीज़्नी की ओर यात्रा कर रहे थे, बारमन ने मुझे अपने पास बुलाया। जब मै उसके सामने हाजिर हुआ तो उसने दरवाज़ा बद कर दिया और कालीन चढ़े एक स्टूल पर उदास मुद्रा मे बठे स्मूरी से उसने कहा

"लो, आ गया।"

"क्या तुम सेर्गेई को चम्मच और दूसरी चीज़ें देते हो?" स्मूरी ने रूखी आवाज़ मे पूछा।

"मेरी आख बचाकर इन चीज़ो को वह खुद अपने आप उठा लेता है।"

"देखता नहीं, पर पता है इसे।" बारमन ने धीमे से कहा।

स्मूरी का मुट्ठी-बधा हाथ धम से घुटने पर गिरा और फिर वह उसे सहलाने लगा।

"ज़रा ठहरो। ऐसी कोई जल्दी नहीं है," उसने कहा और रुककर किसी सोच मे पड गया।

मैंने बारमैन की ओर देखा और उसने मेरी ओर, लेकिन मुझे ऐसा लगा माना उसके चश्मे के पीछे आखें है ही नहीं।

वह नि शब्द जीवन बिताता था, चलते समय ज़रा भी आवाज़ नहीं करता था और धीमे स्वरा मे बोलता था। कभी-कभी उसकी रग उडी

ढी और खोखली आखें किसी कोने मे झलकतीं और फिर तुरत विलीन जातीं। सोने से पहले एक लम्बे अर्से तक घुटनो के बल वह देव प्रतिमा सामने बैठा रहता जिसके सामने, दिन हो चाहे रात, चौबीसो घटे, क दीया जलता था। दरवाजे मे बने पान के इक्के से छेद मे से मैं उसे खता था, लेकिन उसे प्रार्थना करते मैं कभी देख नहीं पाया–घुटनो के ल बैठा हुआ वह केवल देव प्रतिमा और दीये की ओर एकटक देखता, ांस लेता और अपनी दाढी सहलाता रहता था।

थोडी देर रुककर स्मूरी ने फिर पूछा

"क्या सेर्गेई ने तुझे कभी पैसे दिये?"

"नहीं।"

"कभी भी नहीं?"

"नहीं, कभी भी नहीं।"

"यह झूठ नहीं बोलेगा," स्मूरी ने बारमन से कहा।

"इससे कोई फर्क नहीं पडता," बारमन ने धीमे स्वर मे ाब दिया।

"चल अब!" मेरी मेज के पास आते और सिर पर हल्के से चपत ते हुए स्मूरी ने चिल्लाकर कहा "चुगद! और चुगद तो मैं भी हू तेरे बारे मे चौकस नहीं रहा"

नोज्नी मे बारमैन ने मेरा हिसाब चुकता कर दिया। मुझे करीब आठ ल मिले। यह पहला मौका था जब मुझे अपनी कमाई की इतनी बडी न मिली थी।

विदा के समय स्मूरी उदास स्वर मे बोला

"आगे अपनी आखें खुली रखियो, समझा? यह नहीं कि मुह बाये खया पकड रहे हैं"

काच के रग बिरगे मोती जडा तम्बाकू रखने का एक चमकदार बटुवा ने मेरे हाथ मे थमा दिया।

"यह ले, यह बहुत बढिया चीज है! मेरी मुह-बाली बेटी ने यह मेरे बनाया था अच्छा अब जा! पुस्तके पढना, उनसे बडा साथी और कोई नहीं मिलेगा!"

उसने मुझे बाहो के नीचे से पकडा, हवा मे उठाकर मेरा मुह और फिर सभालकर मजबूती से मुझे घाट पर खडा कर दिया। मुझे

अपने पर भी दुख हुआ, और उसपर भी। और जब वह, एकदम एकाकी, अपने भारी भरकम, हिंडोले से झूलते शरीर को लिए घाट-मजदूरों को धकियाता हुआ जहाज की ओर लौट चला तो मैं बड़ी मुश्किल से अपने आसुओं को रोक पाया

उस जसे न जाने कितने लोग,—इतने ही भले, इतने ही अकेले और जीवन से इतने ही छिटके हुए,—आगे भी मेरे जीवन मे आये

७

नानी और नाना अब फिर नगर मे आ बसे थे। इस बार जब मैं उनके पास पहुचा तो मेरा मन गुस्से से उमड घुमड रहा था और हर किसी से लडने को जी चाहता था। मेरा हृदय भारी बोझ से दबा जा रहा था—आखिर क्यों और किस बिते पर मुझे चोर ठहराया गया था?

नानी ने मुझे बड़े प्यार से अपनाया, और तुरत समोवार गरम करने चली गई। नाना अपनी आदत के अनुसार चिंगारियां छोडने से न चूके

"क्यो, कितना सोना बटोर लाया?"

खिडकी के पास बैठते हुए मैंने कहा

"जो भी बटोरा, सब मेरी मिल्कियत है।"

बडी गभीरता के साथ मैंने जेब मे हाथ डाला, और सिगरेट का पकेट निकालकर रोब के साथ धुआ उडाने लगा।

"ओहो," मेरी प्रत्येक हरक्त का मुआयना करते हुए नाना ने कहा, "यह बातें हैं! यह शैतान की बूटी भी पीने लगा? बडी जल्दी लगी थी?"

"मुझे तो भेंट मे तम्बाकू का बटुवा भी मिला है!" मैंने शेखी बघारी।

"तम्बाकू का बटुवा!" नाना चीख उठे। "तू क्या मुझे चिढ़ा रहा है?"

वह मेरी ओर झपटे। उनके पतले, मजबूत हाथ आगे बढ़े हुए थे और हरी आंखें चिंगारियां छोड़ रही थीं। मैंने उछलकर उनके पेट में सिर से टक्कर मारी। बूढ़ा वहीं फर्श पर बठ गया और सन्नाटे से पूण उन भारी क्षणों मे, अधेरी खोह की भांति हक्का-बक्का सा अपना मुह बाये,

अचरज मे आखें मिचमिचाकर मेरी ओर देखता रह गया। फिर शान्त भाव के साथ पूछा

"तूने मुझे, अपने नाना को धकेला मुझे अपनी मा के सगे बाप को?"

"मेरी चमडी उधेडने मे तुम्हीं कौन कसर छोडते थे," यह समझकर कि सचमुच मुझसे एक घिनौनी हरकत हो गयी है मै बुदबुदाया।

नाना, अपना सूखा हल्का फुलका बदन लिए उठ खडे हुए और मेरी बग़ल मे आकर बठ गए। मेरे हाथ से उन्होंने तपाक से सिगरेट छीन ली और उसे खिडकी से बाहर फेंक भय से कापती आवाज मे बोले

"तू भी निरा काठ का उल्लू है! इस तरह की हरकत के लिए भगवान तुझे ताजिन्दगी माफ नहीं करेंगे!" फिर वह नानी की ओर मुडे

"देखा री अम्मा, और किसीने भी नहीं इसने मुझे मारा, हा, इसीने मुझे मारा! यकीन न हो तो खुद पूछ देखो!"

पूछना-ताछना तो दूर, नानी सीधी मेरे पास आई और बाल पकडकर मुझे झझोडने लगी।

"इसकी यही सजा है," नानी ने कहा और बालो को झटका सा देते हुए दोहराया, "यही सजा है "

नानी की इस सजा ने, और खास तौर से नाना की घणापूण हसी ने, मेरे शरीर को चोट तो नहीं पहुचाई, लेकिन मेरे हृदय को बुरी तरह घायल कर दिया। नाना कुर्सी पर बैठे उचक रहे थे और घुटनो पर हाथ मारते हुए हसते हसते कौए की तरह का का कर रहे थे

"ठीक, बहुत ठीक "

नानी के चगुल से अपने को छुडाकर मैं डयोढी मे भागा, और वहा एक कोने मे पडा रहा खिन्न और सूना सूना सा। कानो मे समोवार मे पानी के खलबलाने की आवाज आ रही थी।

नानी आई और मेरे ऊपर झुकते हुए इतने धीमे स्वर मे फुसफुसाकर बोली कि उसके शब्द बडी मुश्किल से सुनाई देते थे

"बुरा न मानना, मैं तुम्हे सचमुच की सजा थोडे ही दे रही थी। इसके सिवा मै और करती भी क्या? तुम्हारे नाना तो बूढे आदमी हैं, और उनका तुम्हे ध्यान रखना चाहिए। उन्होने क्या कम किस्मत की मार खाई है? सारी हड्डिया टूटी हुई हैं, और उनका हृदय दु खो से लबालब भरा

है। उन्हे और चोट पहुचाना क्या अच्छी बात है? तुम अब नन्हे-मुन्ने तो हो नहीं, खुद सारी बाते समझ सकते हो और तुम्हे समझना चाहिए, अल्योशा, नाना भी बस बच्चो की हालत मे हैं"

नानी के शब्दो ने मरहम का काम किया। ऐसा मालूम हुआ मानो सुहानी बयार का झोका हृदय को सहलाता हुआ निकल गया हो। नानी के शब्दो की प्यार भरी सरसराहट से मेरा हृदय हल्का हो गया। सारी दुखन जाती रही, लाज का मैंने अनुभव किया और मैं कसकर नानी से लिपट गया। नानी ने मुझे, और मैंने नानी को चूम लिया।

"जाओ, नाना के पास जाओ। डरो नहीं, सब ठीक हो जाएगा। केवल नाना के सामने एकाएक सिगरेट निकालकर अब फिर न पीने लगना। अभी वह तुम्हे सिगरेट पीता देखने के आदी नहीं हैं। इसके लिए कुछ तो समय चाहिए न?"

जब मैंने कमरे मे पाव रखा और नाना पर नजर डाली तो मेरे लिए हसी रोकना मुश्किल हो गया। इस समय वह, सचमुच, बच्चो की भाति प्रसन्न थे। चेहरा खिला हुआ था, पाव पटक रहे थे और ललौहे बालों वाले अपने पजों से मेज पर धमाधम तबला सा बजा रहे थे।

"बोल मरखने बकरे की औलाद, फिर आ गया,—टक्कर मारने का शौक क्या अभी भी पूरा नहीं हुआ? डाकू कहीं का! आखिर है तो अपने बाप का ही बेटा! मुह उठाया और सीधे घर मे चले आए, न सलीब का चिह्न बनाया, न किसी से दुआ-सलाम की, और एक टुकड्ची सिगरेट मुह मे दबाकर धुआ उडाना शुरू कर दिया! वाह रे, टकियल नेपोलियन!"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उनके शब्द चुक गए और वह थककर चुप हो गये। लेकिन चाय के समय उन्होंने फिर मुझे लक्चर पिलाना शुरू किया

"बिना लगाम के घोडा और बिना भगवान के डर का आदमी, दोनों एक से हैं। भगवान के सिवा और कौन हमारा मीत हो सकता है? इसान का सब से बडा दुश्मन है इसान!"

नाना के केवल इन शब्दो की सचाई ने तो मेरे हृदय को छुआ कि इसान ही इसान का दुश्मन है। इसके अलावा नाना ने जो कुछ कहा, उसका मेरे हृदय पर कोई असर नहीं हुआ।

"देग, अभी तू अपनी मौसी मान्योना के यहा लौट जा, और वहाँ काम कर। इसके बाद चाहे तो वसन्त मे फिर किसी जहाज मे नौकरी कर लेना। लेकिन जाडो भर तू उन्हीं के यहा रहियो, और उन्हें यह न बताइयो कि वसन्त मे तू गोल हो जायेगा "

"लेकिन यह तो धोखा देना होगा," नानी ने कहा जो अभी कुछ देर पहले सजा के नाम पर मुझे झूठमूठ हिला-भझोडकर खुद नाना को धोखा दे चुकी थी।

"धोखा दिये बिना जीया ही नहीं जा सकता," नाना अपनी बात पर जोर दे रहे थे, "जरा बता तो, धोखे के बिना कौन रहता है?"

उसी साझ जब नाना धर्मग्रंथ का पाठ करने बैठे तो मैं और नानी फाटक से बाहर निकल आए और खेतो की ओर चल दिए। छोटा सा दो खिडकियों वाला यह घर जिसमे नाना अब रहते थे, नगर के एकदम छोर पर, उस कनातनाया गली के पिछवाडे मे था, जहा किसी जमाने मे उनका निजी मकान था।

"देखो न, घूम फिरकर हम भी अब कहां आ बसे हैं!" नानी ने हसते हुए कहा। "तुम्हारे नाना को कहीं शाति नहीं मिलती, सो वह बराबर घर बदलते रहते हैं। मुझे तो यह घर अच्छा लगता है, लेकिन नाना को यहा भी चैन नहीं है!"

हमारे सामने दो-ढाई मील लम्बा चौडा, सूखे नालो से कटा फटा मैदान फैला था। उसके अन्त मे कजान जाने वाली सडक थी जिसके किनारे भोज वृक्ष खडे थे। सूखे नाला मे से झाडिया की नगी-बूची टहनियां निकली हुई थीं, साझ के सूरज की ठडी पडती हुई लाली मे वे खून का दाग लगे हण्टरा की भाति मालूम होती थीं। हल्की हवा के झोंके झाडियो को सरसरा रहे थे। पास वाले नाले के उस पार युवक-युवतियो के जोडे टहल रहे थे और उनकी छाया आकृतिया भी, झाडियो की भाति, हवा मे हिल रही थीं। दूर दाहिने छोर पर पुरातनपथियो के कब्रिस्तान की लाल दीवार थी। यह कब्रिस्तान "बुग्रोव्स्को स्कीत" कहलाता था। बाईं ओर नाले के ऊपर जहा वक्षो का एक काला सा झुरमुट दिखाई देता था, यहूदियों का कब्रिस्तान था। हर चीज पर नहूसत सी छाई थी, हर चीज मानो क्षत विक्षत धरती से चुपचाप चिपटी हुई थी। शहर के छोर पर खड़े छोटे-छोटे घरो की खिडकिया मानो सहमी हुई नजरा से धूल भरी सड़क को

श्रोर ताकती रहतीं जिसपर भूख की मारी मुर्गिया गश्त लगाती थीं। देविची मठ के पास से रंभाती हुई गायो का एक रेवड गुज़र रहा था और पास की छावनी से फौजी सगीत की आवाज़ आ रही थी—ड्रम बज रहे थे।

कोई शराबी, पूरी बेरहमी से एकाडियन बजाते हुए, लड़खड़ाते डगों से जा रहा था और ठोकरें खाते हुए बुदबुदा रहा था

"तुझे खोज ही लूगा कहीं न कहीं "

सूरज की लाल रोशनी में आखें मिचमिचाते हुए नानी बोली, "किसे खोज लेगा, बेवकूफ! यहीं कहीं लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा, दीन-दुनिया का कुछ होश नहीं रहेगा और कोई ऐसा सफाया करेगा, तेरा यह एकार्डियन तक गायब हो जायेगा जिसे तू अपने हृदय से सटाये है "

मै चारो ओर देखता जाता था और नानी को अपने जहाज़ी जीवन के बारे मे बताता भी जाता था। उस जीवन मे जो कुछ मैं देख चुका था उसके बाद मुझे अपना मौजूदा वातावरण बहुत ही बोझिल मालूम दे रहा था और मै उदास था। नानी मेरी बातो को बडे चाव और ध्यान से सुन रही थी, वसे ही जसे कि मैं नानी की बातें सुनना पसन्द करता था और जब मैंने स्मूरी का ज़िक्र किया तो नानी ने अभिभूत होकर सलीब का चिह्न बनाया और बोली

"भला आदमी था, मां मरियम उसका भला करे। और देख, उसे कभी न भूलना! अपने दिमाग के कोठे मे अच्छी चीजो को कसकर बन्द रखना और बुरी चीजो को,—बस, आखें मूदकर ठुकरा देना "

जहाज़ से निकाले जाने की बात को नानी के सामने खोलकर रखना मुझे बेहद कठिन मालूम हुआ। लेकिन मैंने दात भींचकर अपना जी कड़ा किया और जसे भी बना, नानी को सब बता दिया। नानी के हृदय पर उसका ज़रा भी असर नहीं हुआ। सारी घटना सुनने के बाद उपेक्षा से इतना ही कहा

"तुम अभी छोटे हो। जीना नहीं जानते "

"सब एक दूसरे से यही कहते हैं कि तुम जीना नहीं जानते," मैंने कहा, "किसानो को मैंने ऐसा कहते सुना है, जहाज़ी लोग भी ऐसा ही कहते थे, और मौसी मात्र्योना भी अपने बेटे के सामने यही राग अलापती थी। आखिर जीना सीखने का क्या मतलब है?"

नानी ने अपने होंठ भींच लिए और सिर हिलाते हुए जवाब दिया "यह तो मैं नहीं जानती।"

"नहीं जानती तो फिर इस बात को बार-बार दोहराती क्यो हो?"

"दोहराऊ क्या नहीं?" नानी ने अविचलित स्वर मे जवाब दिया। "लेकिन तुम्हे बुरा नहीं मानना चाहिए। तुम अभी छोटे हो, इतनी कम उम्र मे भला जीवन के रग ढग तुम कसे जान सक्ते हो? सच तो यह है कि जीवन को जानने का दावा कोई भी नहीं कर सकता, केवल चोरों को छोडकर। अपने नाना ही को देखो – पढे लिखे और काफी चतुर हैं, लेकिन सब एकदम बेकार, कोई चीज अब साथ नहीं देती "

"और तुम – तुम्हारा अपना जीवन कसा रहा?"

"मेरा? अच्छा ही जीवन बिताया मैंने। और बुरा भी। हर तरह का.. "

हमारे पास से लोग धीरे धीरे गुजर रहे थे, उनकी लम्बी परछाइया उनके पीछे घिसट रही थीं और पावो से उडी धूल धुए की भाति उठकर परछाइयों पर छा जाती थी। साझ की उदासी और भी बोझिल हो चली थी और खिडकी मे से नाना के भुनभुनाने की आवाज आ रही थी

"ओ भगवान, अपने गुस्से का पहाड मेरे सीने पर न तोड! मुझे इतनी तो सजा न दे कि मैं बरदाश्त ही न कर सकू "

नानी मुसकराई।

"भगवान भी इसका रोना झींकना सुनते-सुनते तग आ गया होगा," उसने कहा। "हर साझ इसी तरह हूके भरते हैं, पर किस लिए? बूढा ता हो गया है, जीवन मे कोई भी साध बाकी नहीं रही, फिर भी मिमियाना और रोना झींकना नहीं छूटता! हर साझ इसकी आवाज सुनकर भगवान मुस्कराता होगा कि यह लो, वासीली काशीरिन फिर भुनभुना रहा है चलो अब, सोने का वक्त हो आया..."

मैंने निश्चय किया कि अब गानेवाली चिडियों को पकडने का धधा शुरू किया जाये। मुझे लगा कि इससे अच्छे पसे मिल जायेंगे। मैं चिडिया को पकडकर लाऊगा और नानी उन्हें बाजार मे बेच आया करेगी। सो मैंने एक जाल, एक फदा, लासे का कुछ सामान खरीद लिया और कुछ पिजरे बना लिए। और लो सवेरा होते ही मैं सूखे नाले की झाडियों में

छिपकर बैठ गया और नानी, एक बोरा और टोकरी लिए, आस-पास के जगल मे जाकर खुमिया, बेरो और जगली अखरोटो की खोज मे निकल गयी।

सितम्बर महीने का थका हुआ सा सूरज अभी अभी निकला था। उसकी पीली किरणें कभी तो बादलो मे ही खो जातीं और कभी रुपहले पख की भाति फलकर उस जगह भी पहुच जातीं जहा मैं छिपा हुआ था। नाले के तल पर अभी भी परछाइयां तर रही थीं और एक सफेद कुहरा सा उठ रहा था। नाले की खडी ढाल एकदम काली, और नगी-बूची थी, दूसरी अधिक ढलवा ढाल पर मुरझी हुई और लाल, पीली और कत्थई पत्तियो वाली झाडिया उगी थीं। हवा के झोंको से पत्तियां उड-उडकर नाले मे छितर रही थीं।

तल की कटीली झाडियो मे गोल्डफिंच पक्षी चहचहा रहे थे और झिनझिनी पत्तियो के बीच उनके छोटे-छोटे बाके सिरो पर गुलाबी मुकुट झिलमिला रहे थे। मेरे अगल-बगल और आगे-पीछे कुतूहली गगरे पछी टिटिया रहे थे, अपने सफेद गालो को अनोखे ढग से फुलाए वे मेले-ठेले के दिन कुनाविनो की युवतियो की भाति दुनिया भर का शोर मचा रहे थे। चपल चतुर और रसीले—हर चीज की ओर वे लपकते, उसे छूने कुरेदने के लिए ललक उठते, और इस प्रकार एक के बाद एक फदे मे फसते जाते। इसके बाद वे इतनी बुरी तरह छटपटाते कि उन्हे देखकर हृदय मसोस उठता। लेकिन व्यापारी का मेरा धधा सख्ती का है और मैं उन्हे पास के पिजरे मे बद करके एक बोरी मे डाल देता, अधेरे मे वे शान्त हो जाते।

बन-सजली की झाडी को सूरज की किरणो ने रग दिया था। सिसकिन पक्षियो का एक झुड उसपर आकर बठा। सूरज की सुहानी किरणो मे पक्षियो की खुशी का वारपार नहीं था, अपने उछलने-कूदने मे वे स्कूली लडको से मिलते-जुलते थे। लालची, चौकस और अपनी गांठ का पक्का श्राइक पक्षी—जिसने गम प्रदेशो की ओर प्रयाण करने मे देरी लगायी थी—बन-गुलाब की झूमती हुई टहनी पर बठा हुआ चोच से अपने परो को सवार रहा था और काली आखो से शिकार की खोज मे इधर उधर देख रहा था। सहसा लाक पक्षी की भाति ऊपर उडकर उसने एक भौंरे को पकडा, उसे बडे ध्यान से एक काटे मे बींधा और फिर बठकर

चोर की भाँति चोरनी अपनी मटमली गदन को इधर-उधर घुमाने लगा। एक पाइन सिच पक्षी जिसे मार के लालच भरे सपने मैं मन से देख रहा था—सन से उड़ता हुआ मेरे पास से निकला—कितना अच्छा हो अगर इसे पकड़ सकू! लाल रग का बुलफिच पक्षी, जनरल की भाँति गर्वीला, अपने झुड से अलग होकर गुस्ताने क लिए एक आल्डर झाडी पर जा बठा और अपनी काली चोच को ऊपर-नीचे करते हुए रोब से चिचियाने लगा।

जसे-जसे सूरज आकाश मे ऊचा उठता, वसे-वसे पक्षियो की सख्या भी बढ़ती जाती, वे और भी खुशी से चहचहाने लगते। समूचा नाला उनके सगीत से भर जाता, हवा के झोंको म झाड़ियो की निरतर सरसराहट इस सगीत की मुख्य धुन थी। पक्षियों की यांकी आवाजा या उभार इस मृदु, मधुर और उदास सरसराहट को दबा न पाता। मुझे उसमें ग्रीष्म विदा-गीत की ध्वनि का आभास मिलता, यह मेरे कान मे अनोखे शब्द फुसफुसाती, जो अपने आप गीत का रूप धारण कर लेते और बीते हुए जीवन क दृश्य बरबस मेरे स्मृति-पट पर मूत हो उठते।

सहसा कहीं ऊचे से नानी की आवाज सुनाई दी

"तुम कहां हो?"

वह नाले के कगार पर बठी थी। पास ही जमीन पर रूमाल बिछा था और पावरोटी, खीरे, शलजम और कुछ सेब रूमाल पर सजे थे। इन सब बरकतों के बीच कट-ग्लास की एक बहुत ही सुदर मीना रखी थी जिसका बिल्लौरी काग नेपोलियन के सिर की आकृति का था। मीना मे वोदका छलछला रही थी जिसमे, उसे और भी सुगधित बनाने के लिए, सतजौन नामक घास मिली हुई थी।

नानी ने गदगद हृदय से सन्तोष की सांस छोडी

"कितना अच्छा है यह सब, मेरे भगवान!"

"मैंने एक गीत बनाया है!"

"क्या सचमुच?"

मैंने कुछ इस तरह की पक्तियां सुनानी शुरू कीं

निर्झर निरन्तर आता जाता,
होता है यह भान,
विदा, विदा ओ सूय ग्रीष्म के,
विदा तुम्हें दिनमान!

नानी मुझे बीच मे ही टोककर बोली

"ऐसा एक गीत तो मुझे पहले से ही याद है और तुम्हारे इस गीत से अच्छा है।"

और नानी ने गुनगुनाते हुए गीत सुनाया

हाय, चल दिया सूय ग्रीष्म का
काली रातो से मिलने को, दूर, जगलो के उस पार।
हाय, रह गयी मैं युवती तो
सब वसन्त की खुशियो के बिन, खोकर अपना प्यार

सुबह-सवेरे गाव छोर पर जब जाती,
मई महीने की मौजो की सुधि आती,
खुला-खुला मदान, नहीं मुझको भाता
यौवन यहा लुटाया, याद मुझे आता।

अरी, सुनो तो तुम, सखियो प्यारी मेरी!
यहां, बफ की पहली चादर जब पाओ,
तुम निकाल दिल मेरा गोरी छाती से
उसी बफ मे दफनाओ!

गीत रचने की अपनी क्षमता पर मुझे जो गव था, उसे ज़रा भी चोट नहीं पहुची। नानी का यह गीत मुझे बेहद अच्छा लगा और गीत की कुवारी लडकी के लिए मेरा हृदय भी वेदना से भर गया।

"देखा, वसक का गीत किस तरह गाया जाता है," नानी ने कहा। "यह गीत किसी कुवारी लडकी का रचा हुआ है। वसन्त मे उसका साजन उसके साथ था। लेकिन जाडा आते आते वह विदा हो गया, उसे अकेली छोड गया शायद किसी दूसरी के पास चला गया और उसके हृदय की वेदना आसू बनकर बह निकली और इन आसुओ से इस गीत का जन्म हुआ जिसके हृदय मे कभी टीस नहीं उठी, उसके गीतो मे तडप भी कहा से आयेगी? देखा, कितना अच्छा गीत बनाया है उस लडकी ने!"

पक्षियो के बेचने पर पहली बार जब चालीस कोपेक हाथ मे आये तो नानी चकित रह गई

"कमाल हो गया। मैं तो सोचती थी कि इससे कुछ पल्ले नहीं पडेगा। सोचा कि छोटे लडके की जिद्द है, लेकिन देखो न, यह तो भारी मुनाफे की चीज निकली!"

"तुमने तो सस्ते मे ही बेच दिया "

"सच ?"

जिस दिन बाज़ार लगता, यह एक रूबल या इससे भी अधिक कमाकर लाती और अपने इस अचरज को पचा न पाती कि छोटी-मोटी चीजो से भी कितना अधिक धन मिल सकता है!

"और कोई स्त्री दिन भर कपडे धोकर या किसी दूसरे के घर जाकर बरतन भांडे साफ करके मुश्किल से पच्चीस कोपेक कमाती है। और तुम खेल ही खेल मे इतना कमा लेते हो। नहीं, इसमे कोई तुक नहीं है। यह गलत है। और पक्षियो को पकड-पकडकर पिजरे मे बद करना भी गलत है। यह अच्छा धधा नहीं है, अल्योशा! तुम इसे छोड दो!"

लेकिन पक्षियो को पकडने का मुझे भारी चसका लगा। इसमे मुझे आनद आता और पक्षिया को छोड अन्य किसी को इससे जरा सी भी परेशानी नहीं होती थी और मैं किसी पर निभर नहीं था। अब मैं बढ़िया साज़-सामान से लैस था। पुराने बहेलियो से मिल-जुलकर मैंने बहुत कुछ सीख लिया था। अब मैंने अकेले ही बीस पच्चीस मील दूर स्थित कस्तोव्स्की जगल मे धावे मारने शुरू किए वहा वोल्गा के तट पर, देवदार के ऊचे वृक्षो के बीच क्रासविलो या एक ख़ास जाति के लम्बी दुम और सफेद रग वाले बेहद सुदर और दुलभ गगरो को पकड सकता था जिनकी पक्षियों के प्रेमी भारी कद्र करते थे।

प्राय मैं साझ के समय रवाना होता और रात भर कज़ान वाली सडक पर चलता रहता – कभी-कभी शरद की वर्षा मे कीचड भरे रास्ते पर। मेरी कमर पर मोमिया थला लदा होता जिसमे फुसलाऊ पक्षी होते और हाथ मे रहती एक मोटी लाठी। शरद की अधेरी रातें ठडी और डरावनी होतीं – बहुत ही डरावनी! सडक के किनारे बिजली-मारे पुराने भोज-वृक्ष खडे होते और वर्षा मे भीगी उनकी टहनिया मेरे सिर के ऊपर थीं, बाईं ओर पहाडी की तलहटी मे जिधर वोल्गा बहती थी आखिरी जहाज़ो और बजरो के मस्तूलो की रोशनिया चमक उठतीं और तरते हुए निकल जातीं, मानो वे किसी अतल गहराई मे समाते जा रहे हो। उनके भोपुओं और चप्पुओ के पानी मे छप छप करने की आवाज़ें सुनाई देतीं।

कच्चे लोहे सी कडी भूमि पर सडक के किनारे गावों के घर अधेरे

मे से उठ खडे होते, कटखने भूखे कुत्ते मेरी टागो की ओर झपटते और रात का चौकीदार अपने खटखटे बजाते हुए भय से चीख उठता

"कौन है? किसकी बला आयी है!"

मुझे डर लगता कि कहीं मेरे फदे आदि न छीन लिए जाए और इस लिए, चौकीदारो का मुह बद करने के लिए, पाच कोपेक के सिक्के मैं सदा अपनी जेब मे रखता। फोकिनो गाव के चौकीदार से तो मेरी दोस्ती भी हो गई। हर बार मुझे देखकर वह आश्चर्यचकित सा आह-आह करता

"फिर चल दिया! वाह रे, मेरे निडर, रात के पछी!"

उसका नाम था नीफोन्त। कद का छोटा, सफेद बालो वाला। वह कोई सत लगता था। अकसर वह अपनी कमीज मे हाथ डालता और शलजम या सेब, या मुट्ठी भर मटर के दाने निकालकर मुझे देते हुए कहता

"ले, दोस्त, तेरे लिए थोडी सी सोगात रख छोडी थी, खा ले, मुह मीठा कर ले।"

और वह गाव के छोर तक मेरे साथ चलता।

"अच्छा जा, भगवान तेरा भला करे।"'

मैं पौ फटने के साथ जगल मे पहुचता, अपने जाल फलाता, झासे के पक्षियो के साथ खासे लटकाता और जगल के किनारे लेटकर दिन निकलने की बाट जोहने लगता। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हर चीज शरद की गहरी नींद मे डूबी हुई थी। धुध लिपटी पहाडियो की तलहटी मे दूर दूर तक फली चरागाहो की हल्की सी झलक दिखाई दे रही है जिन्हें काटती हुई वोल्गा बह रही है। नदी के पार चरागाहें कुहासे में घुल रही हैं। बहुत दूर, चरागाहो के उस पार जगलो के पीछे से उज्ज्वल सूरज अलस भाव से निकलता है, पेडो के काले अयालो पर रोशनिया दमक उठती हैं और देखते-देखते एक अदभुत और रोम रोम मे व्याप्त हो जानेवाली हरकत शुरू हो जाती है' सूरज की किरणो मे चादी सी चमकती धुध की चादर अधिकाधिक तेज गति से चरागाहो के ऊपर उठती है। झाडियां, पेड और सूखी घास के गांज मानो धीरे धीरे धरती से सिर उठाने लगते हैं। लगता है जसे कि सूरज की गर्मी पाकर चरागाहें

पिघलने और सभी दिशाओं मे अपनी सुनहरी-पीत आभा लेकर बहने लगी हैं। नदी-तट पर पहुचे सूरज ने अब उसके निश्चल जल का स्पश किया है और ऐसा लगता है मानो समूची नदी उसी एक स्थल की ओर उमड चली है जहां सूरज ने डुबकी ली है। सोने का थाल ऊचा उठता जाता है और चारो ओर खुशी के लाल गुलाल की वर्षा होने लगी है। शीत से सिकुडी सिमटी और कापती धरती मे जान पडी है, वह कसमसाई है और अपनी कृतज्ञतापूण उसासा से शरद की साधी सुगध फलाने लगी है। पारदर्शी वायु से धरती विशाल दिख रही है, वायु ने उसके विस्तार को निस्सीम रूप से बढा दिया है। हर चीज मानो दूर धरती के नीले छोरा को छूने के लिए ललक रही है और अय सब को भी अपने इसी रग मे रगने के लिए अपना मायाजाल फला रही है। सूरज निकलने का यह दश्य, इसी जगह से, बीसियो बार मैंने देखा है, और हर बार एक नयी दुनिया मेरी आखों के सामने उभर आती है जिसका सौंदय हर बार नया होता है

सूरज से, न जाने क्यो, मुझे खास तौर से प्रेम है। मुझे उसका नाम, उसके नाम की मधुर ध्वनिया, उनमे छिपी हुई झकार बहुत अच्छी लगती है। आखें बन्द करके सूरज की गरम किरणो की ओर मुह करना, बाडे की दरार या पेड की टहनियो के बीच से तीर सी निकलती किरण को हथेली पर पकड लेना मुझे बहुत अच्छा लगता है। नाना "राजा मिखाईल चेर्नीगोव्स्की और बोयारिन फेओदोर जिन्होंने सूरज के आगे सिर नहीं झुकाये" की बडी इज्जत करते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि वे बडे कुत्सित, जिप्सियो की भाति काले और मनहूस मोरदोविया के गरीबो की भाति चपड चुधी आखो वाले रहे होंगे। जब चरागाहो के पीछे से सूरज ऊपर उठता है तो मैं बरबस मुस्करा उठता हू।

मेरे सिर के ऊपर चीड का जगल गूजता है। वह अपने हरे पत्तो से ओस की बूदें झाडता है। और नीचे, पेडो की छाया मे, पर्णांग झाडियो की नक्काशीदार पत्तियो पर ओस की बूदें सुबह के पाले से जम गई हैं, ऐसा मालूम होता है मानो किसीने रुपहले वेल-बूटे काढ़ दिये हो। कत्थई घास बारिश से कुचली हुई है, धरती की ओर झुके हुए डण्ठल निश्चल पडे हैं। लेकिन सूरज की किरणो का स्पश पाकर उनमे भी हल्की सी

फुनमुनाहट दौड़ जाती है, मानो जीवित रहने के लिए ये आखिरी प्रयास कर रहे हों।

पछी जाग गये हैं। गगरों ने भूरे रग की गुलगुली गेंदों की भांति, डाल डाल पर फुदकना शुरू कर दिया है। अगिया आसंविल देवदार की फुनगियो पर अपनी टेढ़ी चोंचों से देवदार के शकु तोड़ रहे हैं। देवदार की पजानुमा टहनी के छोर पर सफेद नटहैच पक्षी अपने लबे पख हिलाता झूल रहा है, मनके सी काली आंख मेरे जाल की ओर सदेह भरी तिरछी नजर से देख रही है। बिल्कुल अनायास ही सुनाई देता है, कसे समूचा जगल जो एक क्षण पहले तक गभीर सा गहरे चिंतन में डूबा था, अब सकडो पछियो की सुस्पष्ट आवाजों से गूज उठा है, धरती के सबसे पवित्र जीवो के कोलाहल से भर गया है। इन्हीं के रूप पर इस धरती पर सौंदय के पिता मानव ने अपने मन के सुख के लिए परियों, केरुबीम और सेराफीम फरिश्तो की कल्पना की है।

पछियों को पकडना दुखद था और उन्हे पिजरो मे कद करना शमनाक। उन्ह स्वच्छद देखने से मुझे अधिक आनन्द प्राप्त होता। लेकिन शिकारी की लगन और पसा कमाने की इच्छा का पलडा भारी पडता और मेरी सवेदनशीलता को झुका देता।

पक्षियों की चतुराई देखकर मुझे हसी आती। नीले गगरे ने ध्यान जमाकर जाल का सविस्तार अध्ययन किया, उसमे छिपे खतरे को समझ गया और बगल की ओर से जाकर छडो के बीच से बिना किसी खतरे के अदर रखे बीजा को निकाल लिया। गगरे बडे चतुर हैं, पर उनमे जरूरत से ज्यादा कौतूहल भरा है और यह बात उन्हें ले डूबती है। शानदार बुलफिच बुद्धू होते हैं। गिरजे की ओर जा रहे बस्ती के मोटे ताजे लोगो की भांति वे मेरे जाल मे झुड के झुड आ फसते हैं। जब मैं उन्हे बद करता हू तब वे चौंक उठते हैं, भारी अचरज के साथ अपनी आखो को टेरते और अपनी मोटी चोचो से मेरी उगलियों को नोंचते हैं। क्रासबिल बडी शांति और शान से जाल मे फस जाता है। निराला फिच—अज्ञात, किसी भी अन्य पक्षी से भिन्न—चौडी दुम से टेक लगाकर और अपनी लम्बी चोच को अलस भाव से इधर उधर घुमाते हुए देर तक जाल के सामने बठा रहता है। वह गगरो के पीछे-पीछे पेडो के तनो पर कठफोडवे की तरह भागता है। भूरे रग का यह छोटा सा पक्षी, न जाने क्यों, मुझे

बडा मनहूस मालूम होता,—एकदम अकेला, जिसके पास कोई नहीं फटकता, न ही वह किसी के पास फटकता है। मुटरी की भाति वह भी छोटी छोटी चमकीली चीजें चुराना और उन्हे छिपाना पसन्द करता है।

दोपहर तक मैं अपना काम समाप्त कर लेता और जगलो तथा खेतो मे से होकर घर लौटता। सडक का रास्ता पकडकर गावो से होकर जाने पर गाव के लडके मेरे पिजरो को छीन लेते और मेरे जाल को तोड डालते। मैं यह भोग चुका था।

घर पहुचते पहुचते साझ हो जाती। बदन थककर चूर-चूर हो जाता और पेट मे चूहे कूदने लगते। लेकिन मुझे लगता था कि दिन मे मैं और बडा तथा बलवान हो गया हू, मैंने कुछ नयी बात जान ली है। इस नयी शक्ति के सहारे मै नाना के ताने तिशनो को ठडे दिल से सुनता था। यह देखकर नाना गम्भीरतापूवक मतलब की बात कहने लगते

"छोड दो यह बेमतलब का धधा, छोड दो! चिडिया पकडकर दुनिया मे आज तक कोई आगे नहीं बढ़ा! अपने लिए कोई ठिकाना खोजो और दिमाग की समूची शक्ति से एक जगह जमकर काम करो। आदमी का जीवन इसलिए नहीं है कि उसे ओछी बातो मे नष्ट किया जाये। वह भगवान का बीज है और अच्छी फसल पदा करना उसका काम है! आदमी सिक्के की भाति है। अगर उसे ठीक ढग से काम मे लाया जाये तो वह अपने साथ और सिक्का को भी खींच लाता है। क्या तुम जीवन को आसान समझते हो? नहीं, वह एक कठोर चीज है, बहुत ही कठोर! दुनिया अधेरी रात के समान है जिसमे हर व्यक्ति को खुद मशाल बनकर अपने लिए उजाला करना होता है। भगवान ने हम सभी को समान रूप से दस उगलिया दी हैं, लेकिन हर आदमी दूर दूर तक अपने पजो को फलाना और सभी कुछ दबोच लेना चाहता है। अपनी ताक़त दिखानी चाहिये, अगर ताकत नहीं है तो—चालाकी दिखाओ। जो बडा नहीं, बलवान नहीं—वो इधर भी नहीं, उधर भी नहीं। लोगो के साथ मेल-जोल रखना, लेकिन यह कभी न भूलना कि तू अकेला है। बात सबकी सुनना, लेकिन विश्वास किसी पर न करना। आखो देखी बात भी झूठी हो सकती है। जबान मुह मे रखना—घर और शहर जबान से नहीं,

रुपये और हथौड़े से बनते हैं। तू न तो खानाबदोश फ़कीर है, न वाल्मीक जिनकी सारी पूंजी है जुए और भेड़ें!"

रात घिर आती और उनकी बातों का यह सिलसिला फिर भी ख़त्म न होता। उनके शब्द मुझे ज़बानी याद थे। जब वह बोलते तो उनके शब्दों की ध्वनि तो मुझे अच्छी लगती, लेकिन उनके अर्थ के बारे में संदेह रहता। वह जो कुछ कहते, उसे सुनकर एक ही बात समझ में आती। वह यह कि दो ताकतें हैं जो जीवन को कठिन बना रही हैं भगवान और लोग।

खिड़की के पास बैठकर, अपनी चपल उंगलियों से तकली को फिरकी भांति नचाते हुए, नानी बेल-बूटा के लिए सूत कातती। नाना के शब्दों को देर तक वह चुपचाप सुनती, फिर एकाएक कह उठती

"जैसी मां मरियम की इच्छा होगी, वही होगा!"

"यह क्या?" नाना चिल्लाते, "मैं भगवान को भूला नहीं, मैं भगवान को जानता हूं। बेअक्ल बुढ़िया, भगवान ने ज़मीन पर मूस जमे हैं, क्या?"

मुझे लगता था कि धरती पर सबसे अच्छी तरह से सैनिक और कज्ज़ाक रहते हैं, उनका जीवन सीधा-सादा और मौजी है। अच्छा मौसम होने पर सुबह-सुबह वे आकर हमारे घर के सामने खाई के उस पार वाले मैदान में इधर उधर बिखर जाते और उनका मज़ेदार जटिल खेल शुरू हो जाता मजबूत और चतुर, सफ़ेद कमीजें पहने, हाथों में राइफलें ताने वे फुर्ती के साथ मैदान में दौड़ते, खाई में छिप जाते, बिगुल की आवाज़ सुनते ही फिर दौड़कर बाहर निकल आते और "हुर्रा" की आवाज़ों तथा फ़ौजी ढोल को कंपा देनेवाली धमाधम के साथ, सीधे हमारे घर की ओर रुख किये, तेज़ी से बढ़ने लगते। उनकी संगीनें चमचमातीं, मानो अगले ही क्षण वे हमारे घर पर टूट पड़ेंगे और सब कुछ उलट-पुलटकर उसे मलबे का एक ढेर बना देंगे।

मैं भी ज़ोरों से "हुर्रा" की आवाज़ करता और उनके पीछे-पीछे दौड़ता। फ़ौजी ढोलों की जानसोख आवाज़ सुन मेरे मन में कुछ नष्ट करने, किसी बाड़े को खींचकर गिराने या लड़कों को पकड़कर पीटने के लिए उतावली पैदा होती।

अवकाश के क्षणो मे वे मुझे अपना घटिया तम्बाकू माखोरका पिलाते और अपनी भारी राइफलो से खेलने देते। कभी-कभी उनमे से कोई मेरे पेट मे अपनी सगीन की नोक गडा देता और गुस्से मे भौंहो को चढाकर बनावटी आवाज मे चिल्लाता

"अभी बींध दूगा तिलचट्टे को!"

सगीन धूप मे चमचमा उठती और उसमे जिन्दा साप की भाति बल पडने लगते, ऐसा मालूम होता कि बस, अभी वह मुझे डस लेगी। इससे भय लगता था लेकिन उल्लास भय से भी अधिक होता था।

मोरदोविया निवासी एक लडके ने जो ढोलची था, मुझे ढोल बजाने की मुगरिया पकडना सिखाया। पहले वह मेरी कलाइया पकडकर हाथो को दद होने तक घुमाता, फिर ढीली पडी मेरी उगलिया मे मुगरिया थमा देता।

"हा, अब बजा—इक-दू, इक दू! धाम धा धा धम! बजा—बाया—हल्का, दाया—दबाके, धाम धा धा धम!" चिडिया जसी गोल आखो से वह मुझे घूरता और फटे हुए गले से रेंकता।

क्वायद समाप्त होने तक मैं भी सनिको के साथ साथ दौडता, फिर उनके साथ समूचे नगर मे माच करता हुआ उनकी बरको तक जाता, उनके जोरदार गाने सुनता और उनके दयालु चेहरो को एकटक देखता रहता जो मुझे, एक सिरे से, अभी अभी टकसाल से निकले सिक्को की भाति एकदम नये और उजले मालूम होते।

एकरूप आदमियो का यह ठोस समूह उल्लासपूर्वक सडक पर सयुक्त शक्ति का रूप लेकर बहता था, अपने प्रति मित्रता का भाव पदा करता था। मन उसमे डूबने, उसमे प्रवेश करने के लिए उतावला हो उठता—जसे कि कोई नदी मे डूब जाता है या जगल मे प्रवेश करता है। डर इन लोगो को छू तक नहीं गया था। साहस के साथ हर चीज का ये सामना करते थे, कुछ भी ऐसा नहीं था जो उनके लिए अजेय हो, जिसे वे चाह और प्राप्त न कर सकें, और सब से बढकर यह कि वे नेक दिल और सीधे-सच्चे थे।

लेकिन एक दिन, अवकाश के क्षणों मे एक युवा सूबेदार अफसर ने मुझे मोटी सी सिगरेट भेंट की।

"यह लो, सिगरेट पियो। यह एक बहुत ही बढ़िया क़िस्म की सिगरेट है। तुम्हारे सिवा अगर और कोई होता तो उसे कभी न देता। तुम इतने अच्छे हो, इसीलिए मैं तुम्हे यह सिगरेट दे रहा हू।"

मैंने सिगरेट सुलगाई। वह पीछे हट गया। एकाएक सिगरेट से लाल लपट निकली और मैं चौंधिया गया–मेरी उगलियां, नाक और भौंहें झुलस गयीं। भूरे तेजाबी धुए ने नाक मे वह दम किया कि छींकते-खासते हुलिया तग हो गया। आखो के चौंधिया जाने और घबराहट के मारे मैं उसी एक जगह खडा हाथ-पाव नचा रहा था। सनिक मेरे चारो ओर घेरा बनाए खडे थे और खूब खिलखिलाकर हस रहे थे। मैं घर की ओर चल दिया। पीछे से उनके हसने, सीटियां बजाने और गडरियो जसा हटर फटकारने की आवाज़ आ रही थी। मेरी उगलियो मे जलन थी, चेहरे मे काटे से चुभ रहे थे और आखों से आसू बह रहे थे। लेकिन इस पीडा से भी अधिक जानलेवा, अधिक परेशान करनेवाली चीज दुख और अचरज का वह भाव था जो मेरे हृदय को मथ रहा था और जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। आखिर उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यो किया? इतने भले लोग भी इस तरह की चीज मे कसे आनन्द ले सके?

घर पहुचने के बाद मै ऊपर अटारी पर चढ़ गया, और बहुत देर तक वहा बठा हुआ समझ मे न आनेवाली बबरता के उन सभी मौको को याद करता रहा जिनसे मेरा वास्ता इतना अकसर पड रहा था। सारापूल का वह टुइयां सा सनिक मेरी कल्पना मे मूत हो उठा। एकदम सजीव रूप मे, मेरी आखो के सामने खडा वह मुझसे मानो पूछ रहा हो

"क्यो, समझा?"

शीघ्र ही मुझे कुछ और भी ज्यादा क्रूर तथा हृदय को और भी ज्यादा आहत करनेवाला अनुभव हुआ।

मैंने पेचेरस्काया स्लोबोदा के निकट उन बरको मे भी जाना शुरू कर दिया जिनमे कज्जाक रहते थे। कज्जाक और सनिको से भिन्न थे–केवल इसलिए नहीं कि वे उनसे अच्छे कपडे पहनते थे और मजे हुए घुडसवार थे, बल्कि इसलिए कि उनके बोलने का ढग भिन था, वे भिन गीत गाते थे, और कमाल का नाचते थे। साझ को घोडो की मलाई-दलाई करने के बाद सब कज्जाक अस्तबल के पास घेरा बनाकर जमा हो जाते। नाटे क़द का लाल सिर वाला एक कज्जाक घेरे के बीच मे निकल आता और

अपने सहरदार वालो को पीछे की ओर झटकाकर नफीरी जसी तेज आवाज मे गाने लगता। धीमे धीमे तनकर वह शान्त दोन या नीली डेन्यूब के बारे मे उदास गीत गाता। प्रात-पक्षी की भांति वह अपनी आखें बद कर लेता जो अक्सर उस समय तक गाता रहता है जब तक कि वह निष्प्राण होकर धरती पर नहीं गिर पडता। उसके सलूके का गला खुला रहता जिसमें से उसकी हसुली तपे हुए तांबे की लगाम की भाति दिखाई देती। और उसका समूचा शरीर तांबे की ढली हुई प्रतिमा मालूम होता। पतली टांगो पर झूलता, मानो उसके तले जमीन डोल रही हो, हाथो को लहराता, बद आंखें, गूजती आवाज–वह मानो इसान न रहकर बिगुलवादक का बिगुल या गडरिये की बासुरी बन गया हो। कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि वह अभी पीठ के बल धरती पर गिर पडेगा और प्रात पक्षी की भाति ही निष्प्राण हो जायेगा, क्योंकि उसने अपना सारा हृदय, अपनी सारी शक्ति गीत मे लगा दी थी।

उसके साथी उसके इद गिद खडे हैं, हाथो को अपनी जेबो मे डाले या कमर के पीछे किये। उनकी आखें, बिना पलक झपकाये, उसके ताम्र चेहरे और लहराते हुए हाथा पर टिकी हैं और गिरजे के सहगान की भाति वे शान्त और गम्भीर ढग से गा रहे हैं। ऐसे क्षणो मे ये सब–दाढ़ी वाले भी और बिना दाढ़ी के भी–समान रूप से देव प्रतिमाओ की भाति मालूम होते–लोगो से उतने ही अलग, उतने ही भयोत्पादक। और गीत इतना ही अनन्त जितना कि अनन्त राजपथ होता है, उतना ही समतल, चौडा और युगा-युगो का अनुभव अपने मे समेटे हुए। गीत के स्वर रोम रोम मे समा जाते हैं। न दिन का ज्ञान रहता है, न रात का। न बुढ़ापे की सुध रहती, न बचपन की। सभी कुछ भूल जाता है! गायको की आवाजें निस्तब्धता मे डूब जाती हैं तो घोडो की गहरी उसासे सुनाई देती हैं जिन्हें स्तेपी के विस्तारो की याद सता रही है। और खेतो की ओर से शरद रात्रि के अदम्य आगमन की पदचाप सुनाई देती है। भीतर से एक उबाल सा उठता है और भावनाओ का यह भरा-पूरा और असाधारण उभार, देश की धरती और उसपर बसनेवाले लोगो के प्रति मौन अनुराग की यह व्यापक भावना, मेरे हृदय मे उमडती घुमडती और बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगती है।

मुझे ऐसा मालूम होता था कि तपे तांबे सा माटे कद का यह करज़ाक निरा मानव नहीं है, वरन् वह मानव से बडा और उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है—वह मानव जीवधारियों से अलग और उनसे ऊपर, लोककथाओं का जीव है। मुझसे उससे बात करते नहीं बनता। वह मुझे कुछ पूछता तो खुशी से मेरा चेहरा खिल उठता और मैं शर्माता हुआ चुप रहता। उसे देखने, उसका गाना सुनने के लिए, एक वफादार कुत्ते की भांति, मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलते रहने को तयार था।

एक दिन मैंने उसे अस्तबल के कोने मे खडा देखा। वह हाथ चेहरे के पास करके अपनी उंगली मे चांदी की एक सादी अंगूठी को बडे ध्यान से देख रहा था। उसके सुंदर होंठ हिल रहे थे, उसकी छोटी-छोटी लाल मूछें बल खा रही थीं। उसके चेहरे पर उदास और चोट खाया हुआ सा भाव मंडरा रहा था।

इसके बाद, एक दिन अंधेरी सांझ के समय स्ताराया सेनाया चौक के शराबखाने मे मैंने उसे देखा। शराबखाने का मालिक गानेवाली चिड़ियों का बेहद शौकीन था, और मुझसे अक्सर चिड़िया खरीदा करता था। इस समय भी कुछ पिंजरे लेकर मैं उसके पास गया था।

करज़ाक बार के निकट, अलावघर और दीवार के बीच, बठा था। उसके साथ एक मोटी थलथल स्त्री थी जो आकार प्रकार मे क़रीब-करीब उससे दूनी थी। उसका गोल-मटोल लाल चिकना चेहरा चमक रहा था था और वह बडे चाव और लगन से करज़ाक की ओर देख रही थी, जसे मा अपने बच्चे की ओर देखती है, उसकी नजर मे कुछ-कुछ चिंता झलक रही थी। वह नशे मे धुत्त था और उसके पांव मेज़ के नीचे बराबर कुलबुला रहे थे। वह जरूर ही स्त्री को ठोकर मार रहा था क्योंकि वह चौंककर भौंहें सिकोडती और धीमे स्वर मे उससे अनुरोध करती

"यह क्या हरकत है?"

करज़ाक बडी मुश्किल से अपनी भौंहे उठाता लेकिन वे फिर शिथिल सी गिर जातीं। गर्मी के मारे बुरा हाल था। उसने अपने कोट और कमीज के बटन खोल डाले और उसकी गरदन नंगी हो गई। स्त्री ने रूमाल सिर से खिसकाकर अपने कंधा पर डाल लिया, फिर अपनी हृष्ट पुष्ट सफेद बांहों को मेज पर रखा और दोनो हाथो को मिलाकर इतने जोर से भींचा

कि उगलियो के पोरवे लाल पड गये। जितना ही अधिक मैं उन्हे देखता, उतना ही अधिक यह कज्जाक मुझे नेक मा के लडके की भाति मालूम होता जिससे कोई कसूर हो गया है। औरत उसे प्यार और ताने के साथ कुछ कह रही थी और वह लज्जित सा चुप था—उसके जायज तानो के जवाब मे उसके पास कहने को कुछ नहीं था।

सहसा वह खडा हो गया, मानो किसी बिच्छू ने उसे काट लिया हो। अपनी टोपी को उसने माथे पर खींचा और थपथपाकर उसे खूब जमा लिया। इसके बाद, कोट के बटन बन्द किये बिना ही, वह दरवाजे की ओर बढा। स्त्री भी उठ खडी हुई।

"हम अभी लौट आयेंगे, कुजमिच," स्त्री ने शराबखाने के मालिक से कहा।

लोगो ने उन्हे हसी और फब्तियो के साथ विदा किया। किसी ने सख्ती के साथ गहरी आवाज मे कहा

"लौटने दो मल्लाह को—वो ससुरी की खबर लेगा।"

मैं भी उनके पीछे पीछे चल दिया। वे अधेरे मे मुझसे कोई बीसेक क़दम आगे चल रहे थे। कीचड भरे चौक को पारकर वे सीधे वोल्गा के ऊचे तट की ओर चल दिये। मैंने देखा कि कज्जाक अपने लडखडाते पावो से चल नहीं पा रहा है, और उसे सभालने के प्रयत्न मे खुद स्त्री भी डगमगा जाती है। उनके पावो के नीचे कीचड के पिचरने की आवाज तक सुनाई दे रही थी। स्त्री, दबे स्वर मे, उससे बार-बार मिन्नत सी करती हुई पूछ रही थी

"यह आप किधर चल दिये? बोलिये न, किधर?"

मैं भी उनके पीछे-पीछे कीचड मे चलने लगा, हालाकि मेरा रास्ता दूसरा था। जब वे ढाल की पटरी पर पहुचे तो कज्जाक रुक गया, एक कदम पीछे हटा और फिर एकाएक स्त्री के मुह पर भरपूर हाथ से तमाचा मारा। स्त्री भय और अचरज से चीख उठी

"ओह राम, यह किसलिए?"

मैं भी चौंक उठा, और लपककर उसके पास पहुचा। लेकिन कज्जाक ने झपटकर स्त्री को कमर से उठा लिया, रेलिग के उस पार फेंक दिया, और खुद भी उसके पीछे-पीछे कूद गया और दोनो, काले ढेर की भाति

घास उगी ढाल पर से नीचे लुढ़कते चले गये। मुझे जसे काठ मार गया, और बुत की तरह वहीं खडा हुआ तडप झडप की, कपडों के फटने और करवाक के हाफने और भरभराने की, आवाज सुनता रहा। स्त्री, नीचे स्वर मे, रह रहकर बुदबुदा रही थी

"मैं चिल्ला पड़ूगी   मैं चिल्ला पड़ूगी!"

उसने जोरो से दद भरी आह मारी और सब तरफ सन्नाटा सा छा गया। मैंने एक पत्थर टटोला और उसे नीचे लुढका दिया—घास की सरसराहट सुनाई दी। चौक पर शराबखाने का काच का दरवाजा झनझना रहा था, कराहने-कासने की आवाज आई जैसे कोई गिर पडा हो और उसके बाद फिर सन्नाटा छा गया, जिसके गभ मे आतक और डर छिपा हुआ था।

ढाल के नीचे बडे आकार की कोई सफेद सी चीज दिखाई दी। लडखडाती सी, सुबकती और भुनभुनाती, वह धीरे धीरे ऊपर चढ़ रही थी। वह स्त्री थी। भेड की भाति, दोनो हाथो और पावो के सहारे, वह चढ रही थी। मैंने देखा कि उसका बदन कमर तक नगा है। उसकी बडी बडी गोल छातिया सफेद दमक रही थीं, और ऐसा मालूम होता था मानो उसके तीन चेहरे हो। आखिर वह रेलिंग से आ लगी, और मेरे पास ही उसपर बठ गई। वह गरमाये हुए घोडे की भाति हाफ रही थी, और अपने उलझे बिखरे बालो को सुलझाने का प्रयत्न कर रही थी। उसके सफेद बदन पर कीचड के काले निशान साफ दिखाई देते थे। वह रो रही थी, मुह साफ करती बिल्ली की सी हरकतो से अपने आसुओं को पोछ रही थी।

"हाय राम, कौन है?" मुझपर नजर पडते ही वह धीमे से चिल्लाई। "भाग यहां से—बेशम कहीं का!"

लेकिन मुझसे भागा नहीं जाता। गहरे दु ख और अचरज से मैं बुत सा बन गया हू। मुझे नानी की बहन के शब्द याद आते हैं

"लुगाई मे बडी ताक़त हैं, हौवा ने भगवान को भी धोखा दे दिया था.."

स्त्री उठकर खडी हो गई। कपडो के नाम पर जो कुछ बच रहा था, उससे उसने अपनी छातियो को ढका, और ऐसा करने के प्रयत्न मे अब उसकी टागें उघरी रह गइ। तेज डगा से वह चल दी। तभी ढाल पर करवाक चढ़ता दिखाई दिया। उसके हाथ मे कुछ सफेद कपडे थे जिन्हें वह

हवा मे हिला रहा था। धीमे से उसने सीटी बजाई, कान लगाकर सुना, फिर प्रसन्न आवाज मे बोला

"दार्या! क्यो? कज्जाक जो चाहता है उसे लेकर ही छोडता है.. तूने समझा कि मुझे नशा चढ़ा है? लेकिन नहीं, ना-आ-आ, यह तो बस तुझे ऐसा लगा था.. दार्या!"

उसके पाव जमीन पर मजबूती से जमे थे। उसकी आवाज मे नशे का नहीं, व्यग्य का पुट था। नीचे झुककर स्त्री के कपडो से उसने अपने जूतो का कीचड पोछा, और फिर बोला

"यह ले, अपना स्वटर ले जा! ज्यादा बन मत"

और फिर जोर से स्त्रियो के लिए शर्मनाक नाम लेकर उसे पुकारा।

मै पत्थरो के ढेर पर बठा उसकी आवाज सुनता रहा—रात की निस्तब्धता मे इतनी अकेली और इतनी दबग।

मेरी आखो के सामने चौक की लालटेनो की रोशनिया नाच रही थीं। दाहिनी ओर काले पेडो के झुरमुट के बीच कुलीन वग की लडकिया के स्कूल की सफेद इमारत दिखाई दे रही थी। अलस भाव से गदे शब्दो को अपने मुह से उगलता और सफेद कपडो को हिलाता कज्जाक चौक की ओर बढ़ा और एक दु स्वप्न की भाति ओझल हो गया।

ढाल के नीचे, पप घर की ओर से, भाप निकालने के पाइप की सनसनाती आवाज आ रही थी। ढाल पर से खडखड करती बग्घी जा रही थी। चारो ओर सन्नाटा था। मैं विपाक्त सा ढाल के किनारे किनारे चलने लगा। हाथ मे एक ठडा पत्थर था जिसे मैं कज्जाक पर फेंक न पाया। सन्त जाज विजेता के गिरजे के पास चौकीदार ने मुझे रोका और झुझलाकर पूछने लगा कि मैं कौन हू और मेरी पीठ पर लटके थले मे क्या है।

मैंने उसे कज्जाक का सारा किस्सा बताया। हसते हसते वह दोहरा हो गया, चिल्लाते हुए बोला

"क्या हाथ मारा है!! कज्जाक, भाई मेरे, बडे घुइया होते हैं। हमारा तुम्हारा मुकाबला क्या! और वो औरत, कुतिया..."

वह फिर हसते हसते दोहरा हो गया और मैं आगे बढ़ चला। मेरी समझ मे न आया कि हसी की ऐसी क्या बात उसने देखी?

"अगर वह स्त्री मेरी मा या मेरी नानी होती तो?" मैं सोचता, और मेरा हृदय भय से काप उठता।

८

बर्फ गिरना शुरू होते ही नाना मुझे फिर नानी की बहिन के यहा ले गये। बोले

"कोई बुराई नहीं इसमे तेरे लिए, कोई बुराई नहीं।"

मुझे लगता था कि बीती गर्मियो मे मैंने बहुत दुनिया देख ली है, मैं बडा हो गया हू, मुझे कुछ अक्ल आ गई है, और मालिको के यहा इस बीच ऊब और भी गहरी हो गई है। वसे ही उन्हे अपने पेटूपन के कारण बदहज़मी होती रहती है, वे बीमार पडते रहते है और एक दूसरे को ब्योरेवार अपनी बीमारी का हाल बताते हैं, बुढिया की भगवान को गुस्से से भरी, जहरीली प्राथनाए जारी हैं। छोटी मालकिन बच्चा जनने के बाद कुछ दुबली हो गई है, आकार मे थोडी कम हो गई फिर भी पहले जसे ही, जब वह गभवती थी, धीरे धीरे और रौब से चलती है। जब वह बच्चो के कपडे सीती है तो हमेशा एक ही गीत गुनगुनाती रहती है

वान्या, वान्या, वानिचका
नन्हा वान्या, प्यारा वान्या
अपनी अम्मा की गाडी खींचेगा
अपनी अम्मा का कहना मानेगा

अगर मैं कमरे मे आ जाता तो वह तुरत गाना बद कर देती

"क्या चाहिए?"

मुझे यकीन था कि इसके सिवा वह अन्य कोई गीत नहीं जानती।

साझ होते ही मालिक लोग मुझे भोजन के कमरे मे तलब करते और कहते

"हा तो, सुना, जहाज पर तेरे साथ और क्या-क्या बीती?"

पाखाने के दरवाजे के पास कुर्सी पर मैं बठ जाता और उन्ह सारी बातें बताता। इस अनचाहे और अनचेते जीवन के बीच उस जीवन की याद

करना मुझे अच्छा लगता। उसका वणन करने मे मैं इतना डूब जाता कि मुझे अपनी मालक्नि की उपस्थिति तक का ध्यान न रहता। लेकिन यह हालत अधिक देर तक न टिकती। दोनो औरतो ने कभी जहाज पर यात्रा नहीं की थी। वे सवाल करतीं

"फिर भी तुझे डर तो जरूर लगा होगा?"

मेरी समझ मे नहीं आया कि डरना किस बात का?

"अगर कहीं गहरे मे जाकर जहाज पानी मे समा जाता तो?"

मालिक खिलखिलाकर हसता और मैं, यह जानते हुए भी कि जहाज गहरे पानी मे नहीं डूबते हैं, स्त्रियो के हृदय मे यह बात नहीं बठा पाता। बूढ़ी मालकिन को पक्का यकीन था कि जहाज पानी मे तरता नहीं, बल्कि उसके पहिये सडक पर चलनेवाली गाडी के पहियो की भाति नदी की तह मे चलते हैं।

"अगर जहाज लोहे का बना है तो वह तर कसे सकता है? कुल्हाडी तो तरती नहीं, एकदम डूब जाती है"

"लेकिन डोल नहीं डूबता?"

"डोल की खूब कही। एक तो वह छोटा होता है, और दूसरे खोखला"

स्मूरी का और उसकी पुस्तको का जब मैंने उनसे जिक्र किया तो उन्होंने सदेह की नजर से मुझे देखा। बूढी मालकिन को यकीन था कि पुस्तके धमभ्रष्ट और बेवकूफ लोग ही लिखते हैं।

"और भजन सहिता किसने लिखी? और राजा दाऊद?"

"भजन सहिता की बात छोड–यह एक पवित्र पुस्तक है। यो दाऊद राजा ने भी अपनी भजन सहिता के लिए भगवान से माफी मागी थी!"

"यह कहा लिखा है?"

"यहा मेरे हाथ पर जिसका तमाचा पडते ही तुझे सब पता चल जायेगा!"

वह सदा हर बात जानती थी और बडे विश्वास के साथ हर बात की नुक्ताचीनी करती थी जो कि हमेशा बेहूदा होती थी।

"पेचोर्का गली मे एक तातार मरा तो मुह के रास्ते उसकी जान निक्ली कोलतार की तरह–एकदम काली!"

"जान का मतलब है आत्मा," मैं बोला, लेकिन वह तिरस्कार भरे स्वर मे चिल्लाई

"तातार के आत्मा नहीं होती, बेवकूफ!"

छोटी मालकिन भी पुस्तको को हौवा समझती।

"किताबें पढ़ना बहुत बुरा है, खास तौर से कच्ची उमर मे," वह कहती। "हमारे मोहल्ले मे—ग्रेबेशोक गली मे अच्छे भले घर की एक लडकी भी किताबें पढ़ती थी और बस पढ़ते पढ़ते पादरी से इश्क करने लगी। पादरी की घरवाली ने उसकी वो बेइज्जती की—तौबा, तौबा! भरी गली मे, सारे लोगो के सामने "

कभी-कभी मैं उन शब्दो को दोहराता जो मैंने स्मूरी की पुस्तको मे पढ़े थे। इन पुस्तको मे से एक मे मैंने पढ़ा था, "असल बात यह है कि बारुद का किसी एक व्यक्ति ने आविष्कार नहीं किया, वह उन छोटे छोटे प्रयोगो और खोज-कार्यों का नतीजा था जिनका लम्बा सिलसिला बहुत पहले ही शुरू हो चुका था।"

न जाने क्यो, ये शब्द मेरी स्मृति मे जमकर बैठ गए। खास तौर से शुरू का टुकडा 'असल बात यह है कि' मुझे बहुत पसद आया और मुझे लगा कि बात करने का यह ढग काफी जोरदार है। इसका इस्तेमाल करने के कारण मुझे बहुत दु ख भोगना पडा, हास्यास्पद दु ख। ऐसा भी होता है।

एक बार मालिको ने जब मुझसे अपने जहाजी जीवन की और कोई कहानी सुनाने के लिए कहा तो मेरे मुह से निकला

"असल बात यह है कि अब और कुछ कहने के लिए बाकी नहीं रहा.."

सुनकर वे अचकचा गये और लगे मेढक की भाति टर्राने

"यह क्या? क्या कहा तूने?"

फिर चारो खूब खिलखिलाकर हसे, और उन्होंने बार-बार दोहराना शुरू किया

"असल बात यह है—ओ मेरे भगवान!"

मालिक तक ने मुझसे कहा

"यह तो तुझे बुरी ही सूझी, सनकी!"

और काफी दिनों तक, वे मुझे 'असल बात' कहकर पुकारते और चिढ़ाते रहे

"अरे, असल बात, जरा इधर आ। बच्चे ने फर्श गदा कर दिया है। असल बात, इसे झटपट साफ तो कर दे!"

उनका यह बेमतलब चिढ़ाना मुझे बडा अजीब लगता। बुरा मानने के बजाय मैं अचरज से उनकी ओर देखता।

जानलेवा उदासी की धुघ मुझपर छाई रहती। उससे छुटकारा पाने के लिए मैं जी तोड काम करता। काम की कोई कमी नहीं थी। घर मे दो बच्चे थे, दोनों गोद के। कोई भी दाई या आया उनके यहा टिक नहीं पाती थी–रोजाना बदलती रहती थी। नतीजा इसका यह कि बच्चो की देखभाल भी ज्यादातर मेरे ही सिर पडती। रोज मै उनके पोतडे धोता और हफ्ते मे एक बार जदार्मी झरने पर जाकर कपडे पछाडता। यहा धोबिनें मेरी हसी उडातीं

"यह तू क्या औरतो का काम कर रहा है?"*

कभी-कभी, चिढ़कर, गीले कपडो के कोडो से मै उनकी खबर लेता। कोडे का जवाब वे भी कोडे से देतीं। बडा मजा आता और उनके साथ खूब जी लगता।

जदार्मी झरना गहरी खाई मे बहता था। यह खाई ओका नदी की ओर निकलती थी और वहा नगर से एक मैदान अलग कर देती थी जिसका नाम प्राचीन स्लाव देवता के नाम पर–यारीलो–था। ईस्टर के बाद सातवे सप्ताह मे बहस्पति के दिन नगर निवासी इस मदान मे जमा होते और सेमिक उत्सव मनाते थे। नानी ने मुझे बताया था कि उसकी युवावस्था तक लोग यारीलो देवता को मानते थे और उसकी पूजा किया करते थे। वे एक पहिए पर कोलतार मे डुबोया पटुआ लपेटते और आग लगाकर उसे पहाडी पर से लुढ़का देते थे। लोग खूब शोर मचाते और गीत गाते। अगर पहिया ओका नदी तक पहुच जाता तो समझते कि यारीलो ने उनका पूजन स्वीकार कर लिया है, ग्रीष्म ऋतु इस बार बहुत बढ़िया होगी, और घर घर वसन्त छा जायेगा।

अधिकाश धोबिनें यारीलो मदान मे रहती थीं। फुर्ती उन सब मे कूट कूटकर भरी थी और कतरनी की भाति उनकी जबान चलती थी। नगर के जीवन की एक एक बात उन्हे मालूम थी और दुकानदारो, क्लर्कों

---

*रूस में कपडे धोने का काम केवल स्त्रिया करती थी।–स०

और अफसरों के बारे मे, जिनके यहां वे कपडे धोती थीं, उनकी कहानिया बहुत ही दिलचस्प होती थीं। जाडा के दिना मे जब झरने का पानी बर्फ की भाति ठडा हो जाता तो कपडे पछाडना बडा जालिम काम मालूम होता। स्त्रियो के हाथ सुन्न हो जाते और लाल तडकने लगती। लकडी की नाद पर, जिसमे पानी बहकर आता था, झुके झुके कमर अकड जाती। सिर पर लकडी की एक गिरी पडी सी छत थी जो न तो हवा से उनकी रक्षा कर पाती थी, न हिमकणो की बौछारो से। उनके चेहरे लाल और पाला मारे हो जाते, दुखती हुई उगलियो के जोड काम करने से इनकार कर देते, आखो से पानी बहता, लेकिन उनका चहकना फिर भी एक क्षण के लिए बद न होता, वे बराबर बतियाती रहतीं, ताजी से ताजी घटनाओ के बारे मे एक दूसरे से चर्चा करतीं, और लोगो तथा दुनिया भर की चीजों का निबटारा करने मे असाधारण साहस का परिचय देतीं।

बात करने मे नताल्या कोज्लोव्स्काया उनमे सबसे तेज थी। आयु तीस से कुछ ऊपर, ताजी और हृष्ट पुष्ट, जबान खास तौर से तेज और लचकीली, और खिल्ली उडाती सी आखें। जब वह बोलती तो सबके कान उसकी ओर लग जाते, जब कोई बात सिर पर आ पडती तो सब उससे सलाह लेतीं और काम मे दक्ष होने के कारण सब उसकी इज्जत करतीं। इसके अलावा उसकी इज्जत करने के कारणा मे यह भी था कि वह बहुत ही साफ सुथरे और सुघड ढग से कपडे पहनती थी, और यह कि वह अपनी लडकी को पढ़ने के लिए स्कूल मे भेजती थी। वा औवा भर गीले कपडो के बोझ से झुकी, पथ की रपटन से बचती, जब वह आती तो सबके चेहरे खिल जाते और वे हमदर्दी के साथ पूछतीं

"तुम्हारी लडकी तो मजे मे है न?"

"हा, अच्छी तरह है। पढ रही है। भला करें भगवान!"

"मेम बनेगी, हैं?"

"इसीलिए ता स्कूल मे भर्ती कराया है। साहबो की लाली, कहां से आ ली? सब हम मूख गरीबो मे से ही तो, और कहा से? सारी बात विद्या की है, जितनी ज्यादा विद्या, उतने लबे हाथ, उतना ज्यादा समेट लेगा इसान, और जिसने ज्यादा ले लिया, उसने मामला जीत लिया भगवान तो भेजता है हमे दुनिया मे नादान बच्चे बनाकर, वापस मागता है अक्लमद बुड्ढे, मतलब पढ़ना चाहिए!"

सहज विश्वास के साथ, बिना किसी दुविधा के, उसके मुह से शब्दो की धारा निकलती और सब, एकदम चुप होकर उसकी बाते सुनतीं। मुह पर वे उसकी तारीफ करतीं और उसकी पीठ के पीछे भी। उसकी शक्ति, लगन और चतुराई देखकर वे चकित रह जातीं। लेकिन उस जमा बनने की बात किसी को न सूझती। कोहनी तक अपनी बाहो की हिफाजत करने और अपनी आस्तीनो को भीगने से बचाने के लिए उसने उनपर फुलबूट के ऊपरी चमडे को काट छाटकर सी लिया था। यह देख सभी ने उसकी सूझ-बूझ की सराहना की, लेकिन अन्य किसी ने अपने लिए ऐसा नहीं किया और जब मैंने किया तो सबने मेरा मजाक उडाया।

"हो-हो-हो, महरिया की नक्ल करता है!"

उसकी लडकी के बारे मे वे कहतीं

"कौन बडी बात है। क्या हुआ, एक मेम और हो जायेगी, यही न? और कौन जाने, पढाई पूरी भी होगी, पहले ही मर गई, तो "

"पढे लिखे ही कौन सुखी हैं? वो बाखीलोव की लडकी तो पढ़ती रही, पढती रही। और फिर आप ही जाकर मास्टरनी बन गई। और मास्टरनी कहा ब्याहेगी "

"और नहीं तो क्या! ब्याहनेवाले तो अनपढी को भी ले जायेंगे, बस लेने को कुछ होना चाहिए "

"लुगाई की अक्ल खोपडी मे थोडे ही रखी है "

अपने ही बारे मे जब वे इतनी निलज्जता से बाते करतीं तो बडा अजीब और अटपटा लगता। सनिको, जहाजियो और बेलदारो को स्त्रियो के बारे मे दुनिया भर की उल्टी सीधी बाते करते मै सुन चुका था, और पुरुषो को आपस मे डींग मारते और इस बात से अपने पुरुषत्व की माप करते भी मैं देख चुका था कि कितनी स्त्रियो को उन्होने उल्लू बनाया। उन की बातो और व्यवहार मे 'घाघरा वग' के प्रति दुश्मनी का भाव साफ झलकता, लेकिन जब कभी भी मै किसी पुरुष के मुह से उसकी 'विजयो' का वणन सुनता तो मुझे लगता कि यह डींग मार रहा है, उसकी बातो मे सचाई कम है और व्यथ का तूमार अधिक।

धोबिनें एक दूसरे से अपने प्रेम के किस्सो का बखान नहीं करती थीं, लेकिन पुरुषो का जब वे जिक्र करतीं तो उसमे हसी उडाने और

बदला लेने का भाव झलकता जो इस कथन की पुष्टि करता कि लुगाई मे सचमुच एक ऐसी ताक़त है जिसे मात देना आसान नहीं है।

"मर्द कहीं भी जाये, किसी के साथ भी रहे," नताल्या ने एक दिन कहा, "पर घूम फिरकर औरत के तलुवे ही चाटेगा।"

"तलुवे नहीं चाटेगा तो और क्या करेगा!" एक बूढ़ी धोबिन ने फटे बास जसी आवाज मे कहा। "साधु-सन्यासी तक पूजा-पाठ छोड औरत के पीछे खिचे चले आते हैं!"

पानी की सुबकती छपाछप और कपडो के पछाडने की आवाजो के साथ बाता का यह सिलसिला चलता रहता और खाई मे तल पर, इस सडाध भरी दरार मे जिसे जाडे की बर्फ तक अपनी शुद्ध चादरो से ढक नहीं पाती, निहायत नगे और कुत्सापूर्ण ढग से जन-सृष्टि के उस महान रहस्य का परदा उघाडा जाता जिसके फलस्वरूप सभी जातियो और सभी कबीलो का इस दुनिया मे आना सम्भव हुआ है। उनकी ये बातें मुझमे भयावनी घृणा पदा करतीं और मेरे विचारो और भावनाओ को 'इश्क' की बाता से दूर भगातीं, जिससे मैं बुरी तरह से घिरा हुआ था। मेरे मन मे यह बात घर कर गयी कि 'इश्क' का मतलब ही गदी, कामुकता भरी बात है।

यह सब होने पर भी खाई मे धोबिनो के साथ, या रसोईघरो मे अफसरा के अरदलियो अथवा तहखानो मे बेलदारो के साथ, समय बिताना मुझे कहीं अच्छा लगता। इसके मुकाबले मे मालिको के घर पर बोलने चालने, सोचने और घटनाओ की एकरूपता केवल बोझिल तथा क्षोभ भरी ऊब पदा करती थी। मालिको का जीवन क्या था, खाने पाने, सोने और बीमार पडने का एक कुत्सित चक्र था, या खाने की तयारियां हो रही हैं, या सोने की, बातें पाप और मौत की ही करते थे, उससे वे बहुत डरते थे, चक्की मे डाले दानो का सा उनका जीवन था, हर घडी यही डर कि अब पाट तले पिसे कि पिसे।

काम से छुट्टी मिलने पर मैं बाहर सायबान मे चला जाता और लकडियां चीरने लगता। इस तरह मैं अकेले रहने का प्रयत्न करता, लेकिन बहुत कम सफल हो पाता अफसरा के अरदली, अदवदाकर, आ धमकते और अहाते के जीवन के बारे मे बातें शुरू कर देते।

इन अरदलियो मे से दो, येरमोखिन और सीदारोव, अक्सर मेरे

पास आते थे। मेरमोलिन कलूगा प्रदेश का रहनेवाला था। लम्बा कद और कधे झुके हुए, छोटा सिर, आखें धुधली और उसका समूचा शरीर, ऊपर से नीचे तक, मोटी और मजबूत शिराओ का ताना-बाना मालूम होता था। वह काहिल और इतना बेवकूफ था कि उससे तबीयत भन्ना जाती थी। चाल-ढाल मे वह बेढगा और सुस्त था। जब किसी स्त्री को देख लेता तो मिमियाने लगता और आगे की ओर यो झुक्ता मानो अभी उसके पावों पर गिरकर ढेर हो जायेगा। बावर्चिनो और नौकरानियो पर वह इस तरह आनन-फानन डोरे डालता कि अहाते मे सभी चकित रह जाते। सभी उससे ईर्ष्या करते, और भालू जसी उसकी शक्ति से भय खाते। सीदारोव तूला का रहनेवाला था। दुबला-पतला और कडियल। वह हमेशा उदास सा रहता, दबे हुए स्वर में बात करता, और सहमा हुआ सा खासता-खखारता। उसकी आखो में जैसे डर झलक मारता और वे हमेशा अधेरे कोनो की खोज करतीं। चाहे वह फुसफुसाकर बातें करता हो, या एकदम चुप बठा हो, उसकी आखें हमेशा सबसे अधेरा कोना खोजतीं और वहीं चिपकी रहतीं।

"इधर क्या देख रहा है?"

"हो सक्ता है, कोई चूहा उधर से निक्ल आये। मुझे चूहे पसद हैं–चुपचाप इधर-उधर भागते रहते हैं"

अरदली मुझसे चिट्ठिया लिखवाते, कभी अपनी प्रेमिकाओ के नाम, कभी अपने घर वाला के नाम जो देहातो मे रहते थे। मुझे चिट्ठिया लिखना अच्छा लगता, खास तौर से सीदोरोव की चिट्ठिया लिखने मे मेरा खूब जी लगता। हर शनिवार के दिन वह अपनी बहन के नाम चिट्ठी लिखाता, जो तूला मे रहती थी।

वह मुझे अपने रसोईघर मे ले जाता और एक मेज पर मेरी बग़ल मे बठ जाता। अपने सफाचट सिर को तेजी से खुजलाता और मेरे कानो मे फुसफुसाता

"हा तो अब शुरू कर! सबसे पहले तो सिरी नामा लिख 'मेरी अत्यन्त पूजनीय बहन, भगवान तुम्हें सदा खुश रखे,'–और जो सब लिखना चाहिये। अब आगे लिख 'तुमने जो रूबल भेजा था सो मुझे मिल गया, लेकिन यह तुमने ठीक नहीं किया, आगे तुम्ह ऐसा नहीं करना चाहिए, और इसके लिए बहुत-बहुत धयवाद। यहां किसी चीज

की जरूरत नहीं है, मैं बहुत अच्छी तरह से हू'—असल मे तो किर्गी कुत्ता से भी बदतर है, पर तू यह नहीं लिख, लिख कि अच्छी है! वो तो अभी छोटी है—कुल चौदह साल की—उसे यह सब क्या जानना? अब आगे अपने आप लिख, जसे तुझे सिखाया गया है "

और वह मेरे कधे पर झुक जाता। उसके मुह से निकली बदबू भरी गम सास मेरे मुह पर आती और वह बराबर फुसफुसाकर कहता

"और यह भी लिख दे कि वह लडको को अपने पास न फटकने दे, छातिया या और कहीं पर उनकी हवा तक न लगने दे। और लिख कि कभी किसी की मीठी बातो के बहकावे मे न आये। अगर कोई मीठी बातें करे तो समझे कि वह उसे उल्लू बना रहा है, और उसका नास करने का जाल रच रहा है "

खासी रोकने के भारी प्रयास मे उसका भूरा चेहरा लाल हो उठता, उसके गाल कुप्पा से हो जाते, आखो मे आसू आ जाते, वह कुर्सी पर कुलबुलाता और मुझे धकेलता।

"तुम बार-बार मेरा हाथ हिला रहे हो!"

"कोई बात नहीं, लिखता जा 'साहब लोगो से खास तौर से बचकर रहना। ये पहली बार मे ही मिट्टी खराब कर देते हैं। वे कुछ इस ढग से चिकनी चुपडी बातें करते हैं कि एक बार अपने जाल मे फसाने के बाद तुम्हे वे कसबिन बनाकर ही छोडेंगे। अगर तुम रूबल जोड लो तो उसे पादरी के पास जमा करा देना, लेकिन यह देख लेना कि पादरी ईमानदार हो। अच्छा तो यह होगा कि उसे कहीं जमीन मे गाडकर छिपा दो ताकि किसी की नजर न पडे, और जिस जगह गाडो, उसे भूल न जाओ।'"

खिडकी के एक हिस्से मे लगी टीन की फिरकी की चरचराहट मे डूबी उसकी फुसफुसाहट हृदय को बुरी तरह कुरेदती है। सिर उठाकर मैं कालिख लगे अलावघर और बरतन रखने की अलमारी की ओर देखता हू जिसे मक्खियो के दाग धब्बो ने रग रखा है। रसोई क्या है, गदगी का घर है। खटमलो की भरमार है और धुए, मिट्टी के तेल और जली हुई चर्बी की गध से भरा है। अलावघर के ऊपर रखी छिपटियो मे तिलचट्टे सरसरा रहे हैं। मेरा हृदय बोझिल और उदास हो रहा है, और इस

ग़रीब सिपाही तथा उसकी बहन पर तरस के मारे आखो मे आसू उमड रहे हैं। क्या इस तरह जीना ठीक है, उचित है?

सीदोरोव की फुसफुसाहट से बेखबर मै लिखता ही जाता हू। लिखता हू कि जीवन कितना बोझिल, कितने दर्द और दु खो से भरा है। और वह ठडी सास लेते हुए बोलता है

"तूने ढेर सारा लिख दिया, शुक्रिया। अब उसे मालूम हो जायेगा कि किन किन चीज़ो से उसे डरना चाहिये "

"किसी भी चीज़ से डरना नहीं चाहिये!" मै झुझलाकर कहता हू, हालाकि मैं ख़ुद भी कितनी ही चीज़ो से डरता हू।

खासते हुए वह हसता है और बोलता है

"तू निरा बुद्धू है! डरे बिना भला कैसे रहा जाये? साहबो का डर, भगवान का डर और कम चीज़ें हैं डरने की क्या?"

जब उसे अपनी बहन का ख़त मिलता तो वह लपका हुआ मेरे पास आता। कहता

"ज़रा जल्दी से पढकर सुना तो "

और निराशाजनक हद तक छोटे तथा बेकार उस ख़त को जिसकी लिखावट समझना अच्छा-खासा मुश्किल काम होता, वह मुझसे तीन बार पढ़वाकर सुनता।

वह दयालु और नम्र स्वभाव का आदमी था। लेकिन स्त्रियो के प्रति उसका रवैया भी वैसा ही था जैसा कि दूसरे लोगों का—अनगढ और आदिम। चाहे अनचाहे इन सबधो को देखते हुए, जो अकसर मेरे आखो के सामने ही विस्मयकारी तथा घृणित तेज़ी के साथ शुरू से अत तक विकसित होते थे, मै देखता कि किस तरह सीदोरोव औरत के सामने अपने कठोर सैनिक जीवन का रोना रोकर उनके हृदय मे सहानुभूति जगाता, कैसे इस प्यार भरे झूठ से औरत को नशा चढाता और बाद मे येरमोखिन से अपनी विजय का ज़िक्र करते समय मुह बनाकर वह इस तरह ज़मीन पर थूकता मानो उसने कोई कडवी दवा पी हो। यह देखकर मेरे कलेजे को चोट लगती और मैं ग़ुस्से मे भरकर सिपाही से पूछता कि क्यो वे सब औरतो को धोखा देते हैं, उनसे झूठ बोलते हैं और बाद मे उनकी खिल्ली उडाते हुए उन्हे एक के बाद दूसरे के हाथो मे उछालते हैं, और अक्सर उन्हें मारते-पीटते भी हैं?

वह धीमे धीमे हसता और बोलता

"तेरे लिए इन सब बातो की ताक झाक करना ठीक नहीं। ये बातें बुरी हैं, सोलहो ग्राना पाप हैं। तू ग्रभी बहुत छोटा है। ग्रभी तेरा समय नहीं ग्राया "

लेकिन एक दिन मैंने उसे सीधा ग्रौर साफ जवाब देने पर विवश कर दिया। ग्रौर उसका यह जवाब मैं उम्र भर न भूला।

"तेरी समझ मे ग्रौरत यह नहीं जानती कि उसे उल्लू बनाया जा रहा है," ग्रांख मारकर खखारते हुए उसने कहा। "वह इसे खूब ग्रच्छी तरह जानती है। वह खुद चाहती है कि उसे उल्लू बनाया जाये। इस मामले मे सभी झूठ बोलते हैं। ऐसा है यह मामला, सभी को शर्म मालूम होती है न? ग्रसलियत यह है कि कोई किसी से प्रेम नहीं करता, केवल मजे के लिए यह सब करते हैं। ग्रौर यह एक बहुत ही शर्मनाक बात है कुछ दिन की कसर ग्रौर है, बडा होने पर खुद तू भी यह सब सीख जायेगा। रात का ग्रधेरा इसके लिए जरूरी है, ग्रौर ग्रगर दिन हो तब भी किसी ग्रधेरे कोने की जरूरत पडती है। इस बात पर भगवान ने ग्रादम ग्रौर हौवा को स्वर्ग से निकाल दिया, ग्रौर इसी की वजह से दुनिया मे सभी दुखी हैं "

यह सब उसने कुछ इतना खुलकर, सच्चे ग्रौर उदास हृदय से कहा कि उससे एक हद तक मैं उसके इश्को को बर्दाश्त करने लगा। उसके साथ मैं जितना घुलमिल गया, उतना येरमोखिन के साथ नहीं। येरमोखिन से तो मैं घृणा करता था। उसकी नाक मे दम करने ग्रौर उसका मजाक उडाने से कभी नहीं चूकता था। मेरा तीर निशाने पर बठता ग्रौर येरमोखिन, मेरी जान का दुश्मन बना हुग्रा, बहुधा ग्रहाते मे मेरे पीछे झपटता, लेकिन उसका बेढगापन साथ न देता ग्रौर मैं साफ निकल भागता।

"इसकी मनाई है।" सीदोरोव कहा करता था।

यह वर्जित है, यह तो मै भी जानता था, लेकिन मानव की सारी मुसीबता ग्रौर दु ख दद की जड भी वही है, यह बात मेरे गले के नीचे नहीं उतरती थी। यह देखते हुए भी कि लोग दुखी हैं, मैं इसपर विश्वास नहीं कर पाता था, क्योकि उस ग्रसाधारण चमक से मैं परिचित था जो प्रेम मे पडे स्त्री-पुरुषो की ग्राखो मे दिखाई देती थी। मैं प्रेमी प्रेमिकाग्रो की ग्रदभुत हार्दिकता महसूस कर चुका था। हृदय का यह उत्सव देखना सदा प्रिय लगता था।

फिर भी जीवन और भी अधिक बोझिल, और भी अधिक क्रूर होता लग रहा था। लगता था कि जीवन सदा सदा के लिये उन सम्बन्धो और रूपो मे जकडा हुआ है जिन्हे मै आये दिन देखता रहा था। जो कुछ हर रोज अटलता के साथ आखो के सामने आता रहता है, उससे अच्छा भी कुछ हो सकता है, ऐसी सभावना का विचार भी नहीं आता था।

लेकिन एक बार सैनिको के मुह से मैंने एक ऐसी घटना सुनी जिससे मेरा हृदय बुरी तरह झनझना उठा। हमारे अहाते के ही एक फ्लैट मे एक कटर रहता था। वह नगर के सबसे अच्छे दर्जी की दुकान पर काम करता था। वह शान्त स्वभाव का बहुत ही भला आदमी था। वह रूसी नहीं था। उसकी पत्नी एक छोटी सी औरत थी—फकतदम, न कोई बच्चा, न कच्चा। दिन भर किताबें पढा करती। शोर-गुल भरे अहाते मे शराबियो से भरे घरो मे वे दोनो अदृश्य और शान्त जीवन बिता रहे थे। वे कभी किसी को अपने घर नहीं बुलाते, न ही खुद कहीं जाते, एक रविवार को छोडकर जब थियेटर देखने के लिए वे बाहर निकलते।

पति तडके ही काम पर चला जाता, और गई रात लौटता। उसकी पत्नी जो देखने मे चौदह पन्द्रह साल की लडकी मालूम होती थी, सप्ताह मे दो बार दोपहर के समय पुस्तकालय जाती। छोटे छोटे डग भरती, डगमगाती हुई, मानो लगडाती हो, स्कूली लडकियो की सी सीधी सादी, प्यारी, नयी, साफ, छोटे छोटे हाथो मे दस्ताने पहने और पुस्तक उठाये जब वह गली मे से गुजरती तो मैं उसे देखा करता। चिडिया जैसा उसका चेहरा था, और छोटी छोटी चपल आखें। वह सारी इतनी सुन्दर थी मानो ताक पर रखी जानेवाली चीनी की गुडिया। सैनिकों का कहना था कि उसके दाहिने बाजू की एक पसली गायब है, इसीलिए चलते समय वह इस अजीब ढग से डगमगाती है। लेकिन मुझे वह प्रिय लगती और वह हमारे अहाते में रहनेवाली अन्य महिलाओं—अफसरों की बीवियों से एकदम भिन्न लगती। अपनी ऊची आवाज, रंग-बिरंग कपड़ों के बावजूद ये स्त्रिया घिसी हुई सी लगती थीं मानो वे अपनी कोठी में बेकार की चीजों के बीच देर तक भूली बिसरी पड़ी रही हों।

अहाते मे कटर की छोटी सी पत्नी नीम पागल मानी जाती थी। लोगों का कहना था कि किताबों से उसका अपना दिमाग फिर गया है और वह इस लायक भी नहीं रही कि घर का कोई काम कर सके। उनके

पति ही खुद बाजार से सौदा-सुलफ लाता है, खुद बावर्चिन को खाने का आदेश देता है। यह बावर्चिन भी कोई गर-हसी थी—भारी भरकम और नकचढी। उसकी एक लाल आख थी जो बराबर बहती रहती थी और दूसरी आख की जगह एक पतली गुलाबी पट्टी ही थी। घर की मालकिन का यह हाल था कि वह—पडोसियो के शब्दो मे—सूग्रर मास और गोमास तक मे तमीज नहीं कर सकती थी। एक दिन वह बाजार गई और गाजर के बजाय मूली खरीदकर खूब बेवकूफ बनी!

तौबा, तौबा, जरा सोचो तो भला!

वे तीनो अहाते मे पराये से लगते थे मानो योही, सयोगवश, मुर्गियों के इस बडे दरबे मे आ टपके हो, आकाश मे उडनेवाले उन पक्षियो की भाति जो बर्फीली हवा के थपेडो से बचने के लिये रोशनदान के रास्ते लोगो के किसी गदे और दमघोट निवास मे घुसकर शरण लेते हैं।

और अचानक अरदलियो के मुह से मैंने सुना कि कटर की इस छोटी सी पत्नी के साथ उनके अफसर एक बहुत ही कमीना और बेहूदा खल खेल रहे हैं बिला नागा, करीब-करीब हर रोज उनमे से कोई उसके नाम परवाना भेजता, अपने प्रेम और हृदय की खुदर-पुदर का राग अलापता, उसकी खूबसूरती की तारीफ के पुल बाधता। जवाब मे वह लिखती कि मुझे बख्शो। इस बात पर वह दुःख प्रकट करती कि उसे लेकर उनके हृदय की यह हालत हुई, और कामना करती कि भगवान उन्हे शीघ्र ही इस रोग से छुटकारा दिलाए। उसका ऐसा पत्र पाते ही सब अफसर जमा होकर उसे पढ़ते, जी भरकर हसते, और फिर सब मिलकर नया पत्र लिखते जिसपर उनमे से कोई एक दस्तखत कर देता।

यह सब बताते समय अरदली भी हसने और स्त्री की टांग खींचने मे पीछे न रहते।

"यह लगडी भी एकदम उल्लू है!" येरमोखिन अपनी गहरी गूजती हुई आवाज मे कहता और सीदोरोव धीमी आवाज मे हामी भरता

"हरेक लुगाई चाहती है कि उसे कोई उल्लू बनाये। यह सब जानती है-"

मुझे यकीन नहीं हुआ कि कटर की पत्नी जानती है कि अफसर उसे उल्लू बना रहे हैं। और मैंने उसे तुरत खबर देने का निश्चय कर लिया। एक दिन, यह देखकर कि बावर्चिन नीचे तहखाने मे गई हुई है, पीछे

के जीने से लपककर मैं उसके घर में चढ़ गया। रसोईघर में मैंने प्रवेश किया, वह खाली था। फिर कमरा में गया। वहा कटर की पत्नी दिखाई पड़ी। एक हाथ में वजनदार सुनहरा प्याला और दूसरे में एक पुस्तक लिए वह मेज के पास बैठी थी। डर के मारे उसने पुस्तक अपनी छाती से सटा ली, और धीमे स्वर में चीख उठी

"कौन है? देखो तो, आगुस्ता! कौन हो तुम?"

झटपटे से कुछ शब्द तेजी से मेरे मुह से निकले और मुझे लगा कि प्याला या किताब दोनो में से कोई एक चीज अभी मेरे सिर से आकर टकराएगी। बगनी रग की बड़ी सी आरामकुर्सी पर वह बैठी थी, आसमानी रग का लबादा उसने पहन रखा था जिसमे नीचे झालर और गले तथा कलाइयों पर लेस लगी थी, और सुनहरे रग के घुघराले बाल उसके कधों पर लहरा रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे गिरजे के राजद्वार की मेहराब के फरिश्तों में से एक यहा उतर आया है। आरामकुर्सी की टेक से चिपककर वह गोल-मटोल आखो से नजर गडाकर मेरी ओर देखने लगी। पहले तो उसकी आखो मे गुस्से की लपक थी, फिर उसपर अचरज और मुसकराहट नजर आयी।

उसे सब कुछ बताने के बाद मैं साहस खोकर दरवाजे की ओर मुड़ा।

"जरा ठहरो!" वह चिल्लाई।

प्याला उसने ट्रे मे टिका दिया, किताब को मेज पर पटककर उसने हथेलियों को मिलाया और बड़े आदमी की भरपूर आवाज मे बोली

"तुम भी कितने अजीब लडके हो.. जरा इधर आओ!"

सहमा सा मैं उसकी ओर बढा। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया, और छोटी ठडी उगलियों से उसे थपथपाते हुए पूछा

"क्या, मुझे यह सब बताने के लिये किसी और ने तो तुम्हें नहीं भेजा? अच्छा अच्छा, तुम्हारी बात का मैं यकीन करती हू, देखती हू कि तुम खुद अपने मन से ही यहा आए हो--"

उसने मेरा हाथ छोडकर अपनी आखो को बद किया और धीमी, खिची हुई आवाज मे बोली

"तो ये मुहजले फौजी मेरे बारे मे इस तरह की वाही-तबाही बकते हैं।"

"आप यह जगह छोड क्या नहीं देतीं, यहां से कहीं और चली जाइये," बड़ों की भांति मैंने सलाह दी।

"क्या ?"

"ये आपको तंग कर मारेंगे।"

वह बड़े ही सुहावने ढंग से हंसी, फिर पूछा

"क्या तुम पढ़ना लिखना जानते हो? तुम्हें पुस्तकें पढ़ने का चाव है?"

"मुझे वसे ही फुरसत नहीं मिलती।"

"पढ़ने का चाव हो तो फुरसत भी निकाल ही लोगे। अच्छा तो अब जाओ – धन्यवाद!"

उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। अगूठे और उगली के बीच मे चादी का एक सिक्का था। इस ठडी चीज को लेने मे मुझे शर्म आयी, लेकिन मुझसे इनकार करते नहीं बना और लौटते समय मैंने उस सिक्के को जीने के खबे पर छोड दिया।

गहरी और सवथा नयी छाप लेकर मैं इस स्त्री के यहा से लौटा। मेरे सामने मानो नयी उपा का उदय हुआ हो। कई दिन तक मुझपर उल्लास सवार रहा और उस खुले से कमरे तथा फरिश्ते की भांति आसमानी लबादा पहने कटर की पत्नी की याद मे मैं झूमता रहा। वहां की हर चीज मे एक अनदेखा सौदय था। उसके पांव के नीचे गुदगुदा सुनहरा कालीन बिछा था और जाडो का ठिठुरा हुआ दिन, मानो उसके स्पश से अपने को गरमाने के लिए, रुपहली खिडकियो मे से भीतर झाक रहा था।

मेरा मन उसे एक बार और देखने के लिए ललक रहा था। किताब मागने के बहाने अगर मैं उसके पास जाऊ तो कसे रहे?

मैं गया, और उसे ठीक उसी जगह पर बठे देखा। इस बार भी वह अपने हाथो मे एक किताब लिए थी। लेकिन इस बार उसके चेहरे पर लाल से रग का रूमाल बधा था, और उसकी एक आख सूजी हुई थी। उसने मुझे काली जिल्द वाली एक किताब उठाकर दे दी और बुदबुदाकर कुछ कहा जो मैं समझ नहीं सका। भारी हृदय से मैं पुस्तक लेकर चला आया। पुस्तक मे से क्रेयोसोट और अनीसीड दवा की सुगध आ रही थी। घर लौटने पर मैंने पुस्तक को एक कागज और साफ कमीज मे लपेटा

और ऊपर जाकर अटारी मे छिपा दिया। मुझे डर था कि अगर पुस्तक मालिको के हाथ पड गई तो वे उसे नष्ट कर डालेगे।

मेरे मालिक "नीवा" पत्रिका मगाते थे, यह इसलिये कि इसमे पोशाको के नमूने छपते थे और ग्राहको को मुफ्त उपहार मिलते थे। पत्रिका को वे पढ़ते कभी नहीं थे, केवल चित्रो को देखते और इसके बाद, सोने के कमरे मे, कपडे रखने की अलमारी के ऊपर उसे डाल देते। साल पूरा होने पर वे उसकी जिल्द बधवा लेते और पलग के नीचे छिपाकर रख देते जाहा "चित्र जगत" की तीन जिल्दें रखी हुई थीं। जब कभी मै सोने के कमरे का फर्श धोता तो गदा पानी किताबो के नीचे चला जाता। इनके अलावा मेरा मालिक "रूसी कोरियर" समाचारपत्र भी मगाता था और साझ के समय उसे पढ़ते हुए बडबडाता

"शतान जाने, यह सब क्या लिखते हैं! निरी बोरियत है "

शनिवार के दिन कपडे सुखाने के लिये जब मैं ऊपर अटारी मे गया तो मुझे किताब का ध्यान हो आया। मैंने उसे बाहर निकाला, उसका कागज खोला और शुरू की पक्ति पर नजर डाली

"इसानो की भाति घरो की भी अपनी अपनी शक्ल होती है।" इसकी सचाई ने मुझे स्तब्ध कर दिया। मैंने आगे पढ़ना शुरू किया और रोशनदान से सटा उस समय तक पढता रहा जब तक कि ठड के मारे वहा बठे रहना असम्भव न हो गया। साझ को जब मेरे मालिक गिरजे चले गए तो पुस्तक के साथ मैंने रसोईघर मे अडडा जमाया और पतझड के पत्तो की भाति पीले पडे उसके जीण पन्नो मे इतना डूब गया कि कुछ सुध न रही। उन्होंने मुझे दूसरी ही दुनिया मे पहुचा दिया, नये नामो और नये नाते रिश्तो की दुनिया मे, एक ऐसी दुनिया मे जिसमे नेक नायक भी थे और खल नायक भी—इस दुनिया के उन सभी लोगो से भिन्न जिन्हे मैं जानता-पहचानता और अपने चारो ओर देखता था। यह द-मौन्तेपिन का लिखा उपन्यास था। उनके सभी उपन्यासो की तरह यह भी लबा तथा पात्रो और घटनाओ से भरे अजीब, द्रुत प्रवाही जीवन का चित्र था। उपन्यास मे हर चीज अश्चयजनक रूप से सीधी सादी और स्पष्ट थी मानो पक्तियो के पीछे कोई रोशनी छिपी हो जो हर बुरे और भले पहलू को उजागर करती, प्रेम और घृणा करने मे मदद देती तथा एकजाल मे घने फसे लोगो के भाग्यो के उतार चढाव पर अपलक नजर रखने को

खाना खाते समय मुह के साथ-साथ उनकी जबान भी चलती रही और मुझे भला-बुरा कहने मे उन्होने कोई कसर नहीं छोडी। जाने अनजाने मेरे सभी गुनाहो का उन्होने जिक्र किया और मुझे चेताया कि मेरा अजाम बुरा होगा। लेकिन मै जानता था कि उनकी सारी डाट फटकार के पीछे न तो कोई बुरी भावना है और न भली, बल्कि यह सब वे अपनी ऊब को डुबोने के लिए बोल रहे हैं। और यह देखकर मुझे बडा अजीब लगा कि पुस्तक के पात्रो के मुकाबले मे वे कितने तुच्छ और कितने बेहूदा मालूम होते हैं।

खाना खाकर वे बोझिल हो गये और थके-थके सोने के लिए चल दिए। बूढी मालकिन, झुझलाहट भरी शिकायता से कुछ देर तक भगवान की नाक मे दम करने के बाद अलावघर पर चढकर चित हो गई। तब मैं उठा, अलावघर के नीचे से किताब निकाली और खिडकी के पास आया। उजली रात थी, आकाश मे पूरा चाद चमक रहा था, लेकिन पुस्तक के छोटे छोटे अक्षरा को पढना मुश्किल था। हृदय मे पढ़ने की ललक इतनी जोरदार थी कि उसे दबा न सका। बरतनो के खाने मे से मने ताम्बे का एक पतीला निकाला और चाद की किरणो का उसपर जो अक्स पडा, उससे पुस्तक के पन्नो को चमकाने की कोशिश की। लेकिन चमकने के बजाए पन्ने और भी धुधले दिखाई देने लगे। तब मैं कोने मे रखी बेंच पर खडा हो गया और देव प्रतिमा के दीये की रोशनी मे पढने लगा। जब थकान के मारे टागें जवाब देने लगीं तो मैं वहीं बेंच पर पडकर सो गया। बूढ़ी मालकिन की चिल्लाहट और घूसो ने मुझे जगा दिया। केवल रात का लबादा पहने, नगे पाव, वह वहा खडी गुस्से मे अपना लाल बालो वाला सिर झटक रही थी। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था, मेरी पुस्तक अपने हाथ मे लिए उसी से मेरे कधो पर प्रहार कर रही थी, जिनसे बडा दर्द होता था। अलावघर के बगल मे बने सोने के तख्ते से वीक्तर हूक रहा था

"ओहो, यह चिल्लाना बद करो, मा! जीना हराम कर रखा है"

मैं सोच रहा था कि अब किताब की खैर नहीं, बिना फाडे बुढिया दम न लेगी।

सुबह चाय के समय मेरी पेशी हुई।

"यह किताब कहा से लाया?" मालिक ने कडे स्वर मे सवाल किया।

स्त्रिया एक दूसरी को टोकते हुए चिल्ला रही थीं। बीवतर शफ में भरा पुस्तक के पन्ने सूघ रहा था और कह रहा था

"इसमे से तो इत्र की गध आती है, खुदा की कसम "

यह जानकर कि पुस्तक पादरी की है वे सब पुस्तक को उलट-पुलटकर देखने लगे और उपन्यास पढ़नेवाले पादरी पर झुझलाहट तथा अचरज उतारने लगे। इससे उनका गुस्सा कुछ हल्का पडा, हालाकि मालिक मुझे फिर भी देर तक समझाता रहा कि पुस्तके पढना नुकसानदेह और खतरनाक है। बोला

"यही किताबें पढनेवाला ने तो रेल की पटरिया उडा दीं, लोगो को मारना चाहते थे "

"तुम पागल तो नहीं हो गए!" भय और गुस्से भरी आवाज मे मालकिन पति पर चिल्लायी। "क्या कह रहे हो इसे?"

मौन्तेपिन की पुस्तक लेकर मैं सनिक के पास पहुचा और जो कुछ बीता था, सब उसे कह सुनाया। बिना कुछ कहे सीदोरोव ने पुस्तक को अपने हाथ मे ले लिया, छोटा सा सदूक खोलकर उसने एक साफ तौलिया निकाला, पुस्तक को उसमे लपेटा और फिर उसे सदूक मे छिपा दिया।

"उनकी बात मत सुन। यहा आकर पढ़ लिया कर। मैं किसी से नहीं कहूगा," उसने कहा, "और अगर तू आये और मैं उस समय नहीं मिलू तो कुजी देव प्रतिमा के पीछे लटकी होती है। सदूक खोल और पढ "

पुस्तक के प्रति मालिको के इस रवये ने मेरी आखो मे एकदम उसे गम्भीर और भयोत्पादक रहस्य की ऊचाई पर उठा दिया। यह तथ्य कि 'पुस्तके पढ़नेवाले' कुछ लोगो ने किसा की हत्या करने के लिए रेल की पटरिया उडा दी थीं, मुझे विशेष दिलचस्प नहीं मालूम हुआ, लेकिन मुझे पाप-स्वीकारोक्ति के दौरान किया गया पादरी का सवाल याद आया। न ही मैं उस छात्र को भूला था जिसे मैंने निचले तल्ले के मकान मे दो स्त्रिया के सामने पुस्तक पढ़ते देखा था, स्मूरी की याद भी मेरे दिमाग मे ताजी थी जो 'सही ढग' की पुस्तको का जिक्र किया करता था। साथ ही काली बुरी पुस्तके पढ़नेवाले उन फ्रीमसनो की भी मुझे याद हो आयी थी जिनका जिक्र करते हुए नाना ने मुझे बताया था

"और उन दिना जब ज़ार अलेक्सान्द्र पावलोविच ईश्वर प्रदत्त शासन

की बागडोर अपने हाथो मे सभाले थे, ऊचे कुलीनो ने साजिश का ऐसा जाल बिछाया कि रूस की समूची जनता रोम के पोप के चगुल मे फस जाती, काफिर कहीं के! लेकिन भला हो जनरल आराक्चेयेव का, ऐन वक्त पर आकर उसने सब को रगे हाथ पकड लिया। उसने न किसी के ओहदे का ख्याल किया, न किसी की हैसियत का। बस, सब का पुलिन्दा बाधकर साइबेरिया के लिए रवाना कर दिया। गल सडकर वे भी उसी तरह खत्म हो गये जसे कि हर सडी गली चीज खत्म हो जाती है "

'अम्बराकुलम मे अगर तारे छिटके दिखायी दें' भी मुझे याद था, न ही मै 'गेरवास्सी' और उन गम्भीर तथा खिल्ली भरे शब्दो को भूला था

"ऐ अज्ञानियो, हमारी लीलाओ को जानने को तुम उत्सुक, निष्काम नेत्र तुम्हारे देख न पायेंगे उन्हे कभी!"

मुझे ऐसा मालूम हो रहा था मानो किसी महान रहस्य का भेद मेरी आखो के सामने खुलनेवाला है और मैं इस तरह घूमता मानो मेरे सिर पर कोई भूत सवार हो। मै पुस्तक को जल्दी से जल्दी खत्म करना चाहता था। साथ ही यह भय भी मेरे हृदय को कचोटता रहता कि सनिक के पास वह खो जायेगी या वह उसे किसी न किसी तरह खराब कर देगा। तब मै कटर की पत्नी को क्या कहूगा?

बूढी मालकिन की नजर सदा मेरा पीछा करती और इस बात की ताक झाक मे रहती कि कहीं मैं अरदली के पास न खिसक जाऊ। वह मुझे बराबर डाटती रहती

"किताबचाटू! जिसे बदमाशी सीखना हो वह बस किताबें पढ़ना शुरू कर दे। उस चुचमुही को देखो न जो हर घडी किताबो मे ही डूबी रहती है, किताबो के पीछे जो अब घर के लिए सौदा-सुलफ लेने तक नहीं जा सकती। बस, अफ्सरो से चोचे लडाया करती है। क्या मै नहीं जानती कि दिन दहाडे वे किस तरह उसके यहा जाते हैं!"

मै उतावला हो उठा कि चिल्लाकर बुढ़िया का मुह बद कर दू

"यह सफेद झूठ है! वह अफसरो से कतई चोचे नहीं लडाती!"

लेकिन कटर की पत्नी की हिमायत मे मैं जबान खोलने का साहस नहीं कर सका। मुझे डर था कि कहीं बुढ़िया यह न भाप ले कि पुस्तक मै वहीं से लाया हू।

कटर की पत्नी की पुस्तकें बेहद कीमती लगती थीं, और इस भय से कि बूढ़ी मालकिन उन्हें जला डालेगी मैंने उससे पुस्तकें लेने का ख्याल तक अपने दिमाग से निकाल दिया, और उस दुकान से जहा नाश्ते के लिए मै पावरोटी खरीदने जाता था, चटख रग की छोटी छोटी पुस्तकें लाना शुरू कर दिया।

दुकानकार बहुत बदनुमा लडका था—मोटे मोटे होठ, जब देखो तब पसीने मे लथपथ, फोडे फुसियो के दागो और नश्तरो से कटा फटा थलथल और लेई सा चेहरा, पीलिया आखें, और बादी फूले हाथो की छोटी, भोडी उगलिया। साझ होते ही हमारे मोहल्ले के छोकरो और छिछोरी लडकियो का उस दुकान पर जमघट लगता। मेरे मालिक का भाई भी बीयर पीने और ताश खेलने के लिए लगभग हर साझ वहा पहुचता। साझ के खाने का समय होने पर मुझे अक्सर दौडाया जाता कि लपककर उसे दुकान से बुला ला। एक से अधिक बार मैंने दुकान के पीछे एक छोटे से कमरे मे दुकानदार की लाल गालो वाली और गोबर दिमाग बीवी को बीक्तर या और किसी छोकरे के घुटनो पर बठे देखा था। लगता था कि दुकानदार बुरा नहीं मानता। न ही उसे उस समय बुरा मालूम होता जब उसकी बहन, जो ग्राहको को निबटाने मे उसका हाथ बटाती थी, सनिको और गायको और अन्य सभी के साथ जो जरा भी इशारा करते, धमा-चाटी पर उतर आती। दुकान मे बहुत ही कम बिक्री का सामान दिखाई देता। पूछने पर मालिक बताता कि अभी नया-नया ही काम शुरू किया है और दुकान का ढर्रा बठाने के लिए उसे अभी तक समय नहीं मिला, हालाकि दुकान का कारबार उसने पतझड के दिनो मे शुरू किया था। वह अपने ग्राहको को गदी तस्वीरें दिखाता और हर किसी को, जो भी इसकी इच्छा प्रकट करता, गदी तुकबदियो की नकल करने देता।

प्रति पुस्तक एक कोपेक किराए के हिसाब से मैंने
की पुस्तकें पढ डालीं जिनमे कोई थी। य . था।
फिर इन पुस्तकों के पढने म
अदम्य वफादारी", "वेनिस का
का युद्ध, या कुछ गुजरी जो
तरह की किताबें मुझे
झुझला उठता। ऐसा

मेरी खिल्ली उड़ा रही हो। निहायत भोडी भाषा और एकदम बे सिर पर की असम्भव बातें उनमें भरी थीं!

"स्त्रेलत्सी", "यूरी मिलोस्लाव्स्की", "रहस्यमय सन्त", और "तातार घुड़सवार यापाचा"—ऐसी पुस्तकें मैं अधिक पसंद करता, कम से कम मेरे हृदय पर वे कुछ तो छाप छोड़तीं। लेकिन सबसे ज्यादा खुशी मुझे होती सन्तों की जीवनियां पढ़कर। इनमें गम्भीरता होती, उनकी बातों पर यकीन करने को जी चाहता, और कभी कभी तो ये हृदय में गहरी उथल-पुथल मचा देतीं। जाने क्यों, महान सन्तों के बारे में जब मैं पढ़ता तो मुझे 'बहुत खूब' का ध्यान हो आता, स्त्री सन्ता के बारे में पढ़ता तो नानी का चित्र आंखों के सामने घूमने लगता और ऊंचे पादरियों के बारे में पढ़कर मुझे उन क्षणों की याद हो आती जिनमें कि नाना अपने श्रेष्ठतम रूप में दिखाई देते थे।

पुस्तकें पढ़ने के लिए मैं ऊपर अटारी की शरण लेता या फिर सायबान में उस समय पढ़ता जब मैं वहां लकड़ियां चीरने जाता। दोनों ही जगहें समान रूप से ठंडी और तक्लीफदेह थीं। कभी कभी अगर पुस्तक खास तौर से दिलचस्प होती या किसी वजह से मैं खुद उसे जल्दी से खत्म करना चाहता तो मैं रात को उठ बैठता और मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ता। लेकिन बूढ़ी मालकिन की नजरों से यह छिपा न रहा कि रात में मोमबत्तियां छोटी हो जाती हैं। नतीजा यह कि वह अब मोमबत्तियां को लकड़ी की खपच्ची से नापती और खपच्ची को कहीं छिपाकर रख देती। इस खपच्ची को मैं अक्सर खोज निकालता और तोड़कर उसे भी जली हुई मोमबत्ती की लम्बाई का बना देता। जब कभी मैं ऐसा करने में चूक जाता और सुबह उठने पर वह देखती कि खपच्ची और मोमबत्ती की लम्बाई में अन्तर है, तो रसोईघर में इस बुरी तरह शोर मचाती कि सारे घर को सिर पर उठा लेती। एक दिन उसकी आवाज सुनकर वीक्तर झुंझला उठा और उसने तख्ते पर से चिल्लाकर कहा

"यह टाय-टाय बंद करो मां, जीना हराम कर रखा है! वह मोमबत्तियां जरूर जलाता है, न जलाए तो दुकान से लाई हुई पुस्तकें कैसे पढ़े। मुझे मालूम है! जरा अटारी पर जाकर देखो तो-"

बुढ़िया अटारी की ओर लपकी। एक पुस्तक उसके हाथ लगी जिसे उसने चीर चीरकर दिया।

कहने की जरूरत नहीं कि यह एक आघात था, लेकिन इसने पुस्तक पढने की मेरी लगन को और भी तेज कर दिया। मुझे इसमे जरा भी सन्देह नहीं था कि चाहे कोई सन्त ही क्यो न इस घर मे चला आए, मेरे मालिक लोग उसे भी सबक पढ़ाना और उसे अपने मनचीते साचे मे ढालना शुरू कर देंगे। और यह वे अपनी ऊब को डुबोने के लिए करेंगे। अगर उन्हें कभी चीखना चिल्लाना, दूसरे लोगो पर फतवे कसना और उनका मजाक उडाना छोड देना पडे तो वे गूगे हो जाए, बोलने के लिए उनके पास कुछ न रहे और उन्हें अपने आपे की सुध रखने के लिए जरूरी है कि आदमी दूसरो के प्रति कोई रवया अपनाये। मेरे मालिक लोग अन्य लोगो के प्रति केवल एक ही रवया जानते थे—सिखानेवालो और निंदा करनेवालो का रवया। अगर कोई अपने आपको खुद उनके साचे मे ढालने की कोशिश करता तो वे इसके लिए भी उसे आडे हाथो लेने से न चूकते। यह उनकी घुट्टी मे मिला हुआ था।

पढ़ने के लिए मुझे नित्य नये पतरे बदलने पडते। बूढी मालकिन कई बार मेरी पुस्तके फाड चुकी थी और अचानक मैं दुकानदार का कर्जदार हो गया—पूरे सतालीस कोपेक की भारी रकम का बोझ मेरे सिर पर लदा था। दुकानदार तुरत अदायगी के लिए तकाजा करता और धमकी देता कि पावरोटी खरीदने के लिए जब मैं मालिको के पैसे लेकर आऊंगा तो वह उनमे से काट लेगा।

"तब क्या होगा?" वह मुझे कोचते हुए पूछता था।

उससे मुझे इतनी घिन मालूम होती कि मैं बरदाश्त न कर पाता। शायद उसने यह भांप लिया और दुनिया भर की धमकियां देकर मुझे सताने मे वह खास मजा लेता। मेरे दुकान मे पाव रखते ही उसके मोचे खोंचे से चेहरे पर मुसकराहट का लेप चढ़ जाता।

"क्यो, मेरा कर्जा लाया?" वह धीमे स्वर मे कहता।

"नहीं।"

यह उसे डराता, वह अपनी भौंहें चढ़ा लेता।

"नहीं? तो क्या कचहरी मे तेरी शिकायत करू? ताकि तेरी मालिश हो जाये और तुझे हवालात की सैर करनी पडे?"

पैसा पाने का कोई रास्ता नहीं था। जो पगार मुझे मिलती थी, वह नाना के हवाले कर दी जाती थी। मेरी समझ मे नहीं आता था कि

क्या किया जाए। जब मैंने दुकानदार से कुछ दिन की और मोहलत मागी तो यह डबल रोटी की भाति मोटा और चौक्ट अपना हाथ आगे की ओर बढ़ाकर बोला

"चूम ले! मोहलत मिल जाएगी!"

लेकिन जब मैंने काउण्टर पर से बटखरा उठाकर उसके सिर का निशाना साधा वह डुबकी सी लगाकर चिल्लाया

"अरे, अरे, यह क्या करता है? मैं तो बस मजाक कर रहा था!"

मैं समझा था कि वह मजाक नहीं करता। उससे छुटकारा पाने के लिए मैंने चोरी करने का निश्चय किया। मेरे मालिक की जेबो मे छुट्टा रेजगारी पडी रहती थी। सुबह कोट साफ करते समय यह मै अक्सर देख चुका था। कभी-कभी जेब से निकलकर वह फर्श पर भी आ गिरती, और एक बार तो ऐसा हुआ कि एक सिक्का लुढकता हुआ जीने के नीचे लकडियो के ढेर मे जाकर ओझल हो गया। दूसरे कामो मे इसका मुझे कुछ ध्यान नहीं रहा और मैं अपने मालिक को बताना भूल गया। बाद मे, लकडिया उठाते समय, बीस कोपेक का वह सिक्का मुझे मिला। जब मैंने उसे मालिक को लौटाया तो उसकी पत्नी बोली

"देखा तुमने? जेब मे रेजगारी छोडने से पहले गिन तो लिया करो!"

"अरे नहीं, यह चोरी नहीं करेगा, मुझे विश्वास है," मेरी ओर मुसक्राकर देखते हुए मालिक ने जवाब दिया।

और अब, चोरी के अपने निश्चय को पूरा करने के लिए जब मैं आगे बढा, मुझे मालिक के इन शब्दो और उसकी विश्वास भरी मुसकराहट का ध्यान हो आया। इससे मेरा काम और भी कठिन हो गया। कई बार मैंने उसकी जेब से रेजगारी निकाली, उसे गिना, और फिर उसकी जेब मे ही डाल दिया। तीन दिन तक मैं अपने से सघर्ष करता रहा, और इसके बाद सारा मामला एकाएक आसानी से तय हो गया।

"*पेशकोव, तुझे आजकल हो क्या गया है?*" *अनायास ही मेरे मालिक ने* मुझसे पूछा, "तू अपने आपे मे नहीं दिखाई देता। क्या तबीयत खराब है?"

अपनी परेशानी का कारण मैंने साफ-साफ बता दिया।

"देखा न, किताबो ने तुझे किस उलझन मे फसा दिया है," भौंहे चढ़ाकर उसने कहा। "वे कोई न कोई मुसीबत जरूर खडी करेंगी—यह तो पक्की बात है"

उसने मुझे पचास कोपेक का सिक्का दे दिया। साथ ही सख्ती से चेतावनी दी

"देख, बीबी या मा के काना मे इसकी भनक तक न पडे, नहीं तो तूफान बरपा हो जाएगा।"

इसके बाद, बहुत ही भले ढग से हसते हुए, बोला

"तू अपनी धुन का पक्का है, शतान! लेकिन ठीक है, धुन का पक्का होना बुरा नहीं। बस, एक बात है। वह यह कि किताबो को धता बताओ। नये साल से मै एक अच्छा अखबार मगा दूगा। उसे पढा करियो "

और लो, हर साझ चाय और भोजन के बीच, मैं अपने मालिको को "मोस्कोव्स्की लीस्तोक" पढ़कर सुनाने लगा जिसमे वाश्कोव, रोक्शानिन, रुदनिकोव्स्की और इसी तरह के अन्य कितने ही लेखकों के उपन्यास ऊब के मारे लोगो के हाजमे के लिये छपते थे।

जोर जोर से पढ़कर सुनाना मुझे अच्छा नहीं लगता था, इससे शब्दो का अर्थ पकडने मे बाधा पहुचती थी। लेकिन मेरे मालिक लोग बड़े ध्यान से, श्रद्धालु लालच से सुनते, नायको की बदमाशी पर आह भरकर अचकचाते और गव के साथ एक दूसरे को कहते

"और हमे देखो तो—चन से, शोर शराबे से दूर जी रहे हैं, कोई लेना-देना नहीं, शुक्र है भगवान तेरा!"

वे हर चीज को ग़लत सलत कर देते, प्रसिद्ध लुटेरे चूर्किन के कारनामो को वे गाडीवान फोमा कुचीना के सिर मढ़ देते, नामो के बारे मे वे अदबदाकर गडबड करते और मैं जब उनकी भूलो और उलझावो को सीधा करके उनके सामने रखता तो वे अचरज मे भरकर कहते

"वाह, क्सी याददाश्त है!"

अक्सर "मोस्कोव्स्की लीस्तोक" मे लिओनीद यावे की कवितायें भी छपतीं। मुझे वे बेहद पसद आतीं और मैं उन्ह अपनी कापी मे उतार लेता। लेकिन मेरे मालिक कवि पर फतवे कसते

"देखो न, बुढ़ापे मे इसे कविता का शौक चर्राया है।"

"उस जसा शराबी कबाबी और नीम पागल और करेगा भी क्या!"

स्त्रूजकिन और काउट मेमेन्तो-मोरी की कविताए भी मुझे बहुत अच्छी लगतीं, लेकिन बूढ़ी और छोटी दोनो मालकिनें इस राय पर अड जातीं कि कविता निरी बकवास है

"भाड और नाटकवालो के सिवा और कोई कविताओं मे बाते नहीं करता।"

जाडो की सांझें, छोटा सा कमरा, जिसमे सास लेते दम घुटता, और मालिका की नजरें जो मुझपर जमी रहती, मेरा जी बुरी तरह उक्ता जाता। खिडकी से बाहर, मौत की भाति सन्नाटा खींचे रात फली होती, जब तब बफ के चटखने की आवाज आती और लोग, बफ से सुन मछलियों की भाति, मेज के इधर उधर गुमसुम बठ रहते। या फिर तेज हवा अपने पजो से दीवारो तथा खिडकियो को नोचती झकझोरती और चीखती सनसनाती चिमनी मे घुसती और नमदानो को खडखडाती। जो कसर रह जाती उसे बच्चो के कमरे से उनका रोना-टर्राना पूरा कर देता। मेरा मन भीतर ही भीतर उबलता उफनता और जी चाहता कि यहा से चुपचाप खिसक जाऊ, और किसी अधेरे कोने मे पहुचकर भेडिये की भाति हूकना शुरू कर दू।

मेज के एक छोर पर सिलाई या बुनाई का काम थाम लिए स्त्रिया बठी होतीं, दूसरे छोर पर वीक्तर अनमने भाव से उस नक्शे पर झुका रहता जिसकी कि वह नकल उतारता होता। बीच-बीच मे वह चीखता भी जाता

"मेज न हिलाओ, शतान की दुमो! क्यो, इस घर मे रहने भी दोगी या नहीं?"

कुछ हटकर एक बाजू मेरा मालिक बठा था। उसके सामने एक लम्बा-चौडा चौखटा रखा था। चौखटे मे एक मेजपोश कसा हुआ था और वह सुई धागे से उसपर कसीदे का काम काढ रहा था। उसकी चपल उगलियो के स्पश से लाल केकडे, नीली मछली, वसन्ती तितलिया और पतझड के पीले पत्ते आकार ग्रहण कर रहे थे। ये डिजाइन खुद उसके बनाए हुए थे और उन्हे पूरा करते उसे तीन जाडे बीत चुके थे। इस मेजपोश से अब वह पूरी तरह से उकता चुका था और अक्सर, अगर दिन मे मै खाली हाथ होता तो मुझे बुलाकर कहता

"चल, पेशकोव, यह मेजपोश तेरा इतजार कर रहा है। लग जा काम मे!"

मै कसीदा काढने की मोटी सुई उठाता और मेजपोश पर अपना हाथ आजमाने लगता। अपने मालिक पर मुझे तरस आता और जसे भी बनता,

में उसका हाथ बटाने की कोशिश करता। मुझे ऐसा लगता था कि यह नक्शे बनाना, कसीदे काढना, और ताश खेलना एक दिन वह छोड देगा और कोई दूसरा काम शुरू कर देगा, कोई ऐसा काम जो कुछ दिलचस्प हो, जो उसके उन सपनो से मेल खाता हो जिन्हे कि वह कभी-कभी देखा करता। काम करते-करते वह एकाएक रुक जाता और अचरज के भाव से इस तरह उसकी ओर निहारता मानो वह कोई एकदम अनजानी चीज हो। उसके बाल उसकी भौंहो से हाथ मिलाते और उसके गालो का स्पर्श करते, मानो वह कोई सन्यासी हो।

"क्या सोच रहे हो?" उसकी पत्नी पूछती।

"यों ही," वह जवाब देता और फिर अपने काम मे जुट जाता।

मै मन ही मन अचरज करता कि भला यह भी कोई पूछने की बात है कि कोई क्या सोच रहा है? फिर इस तरह के सवाल का कोई जवाब भी क्या दे सकता है? एक साथ, एक ही वक्त मे, बहुत सी चीजों के बारे मे आदमी सोचता है—उन चीजो के बारे मे जिन्हे कि उसकी आखें इस समय देख रही हैं, उन चीजो के बारे मे भी जिन्हें उसने कल या पिछले साल देखा था और इस तरह जितने भी चित्र आखो के सामने उभरते हैं, सभी धुधले और उलझे हुए, बराबर चलायमान और हर घडी बदलते हुए होते हैं।

"मोस्कोव्स्की लीस्तोक" के व्यग्य लेख सास के लिये काफी नहीं पडते। मैंने सुझाव दिया कि पलग के नीचे पडी पत्रिकाओ को पढ़ना शुरू किया जाये।

"ये भी कोई पढ़ने की चीज हैं?" छोटी मालकिन ने अविश्वास के साथ कहा। "उसमे सिवा तस्वीरों के और होता ही क्या है?"

लेकिन पलग के नीचे अकेला "चित्र जगत" ही नहीं था, "ओगोन्योक" पत्रिका भी थी। उसे निकालकर हमने सालियास कृत उपन्यास "काउट त्यातिन-बाल्तीइस्की" पढ़ना शुरू किया। मेरे मालिक को इस उपन्यास का मूढ सा नायक बहुत पसद आया। युवा रईस के मुसीबतो भरे कारनामो पर वह बेरहमी के साथ आसू निकल आने तक हसता और चिल्लाता

"ओह, कितनी मजेदार चीज है!"

"सब मनगढ़न्त है," उसकी पत्नी कहती यह दिखाने के लिये कि वह भी अपना दिमाग़ रखती है।

पलग के नीचे पडे साहित्य ने मेरा एक बडा काम किया। इन पत्रिकाओं को रसोईघर मे ले जाने और उन्हें रात को पढ़ने का अधिकार मैंने जीत लिया।

मेरे सौभाग्य से बुढ़िया बच्चों के कमरे मे अपना बिस्तर लगाने लगी— माया ने रात दिन पीना शुरू कर दिया था। वीक्तर को मेरे पढ़ने न पढ़ने की कोई चिन्ता नहीं थी। जब सब सो जाते तो वह चुपचाप कपडे पहनता और सज धजकर सुबह तक के लिये बाहर खिसक जाता। मोमबत्ती मुझे नहीं दी जाती, उसे अपने साथ दूसरे कमरे मे ले जाया जाता और मैं बिना रोशनी के रह जाता। मोमबत्ती खरीद लाने के लिए मेरे पास पसे नहीं थे। तब मैं मोमबत्तियो के पिघले हुए मोम को चुपचाप बटोरने लगा और उसे एक खाली टीन की डिबिया मे जमा कर देता। मोम के ऊपर देव प्रतिमा के दीये मे से कुछ तेल भी डाल लेता। फिर धागो को बटकर एक बत्ती बनाता और इस तरह तयार किए अपने लम्प को, जो रोशनी से अधिक धुआ देता था, अलावघर के ऊपर जमा देता।

भारी भरकम जिल्दो के पन्नो को जब मैं पलटता तो लम्प की नन्ही लाल लौ कापने और दम तोडने लगती। बत्ती बार-बार खिसककर पिघले हुए सुगध भरे तरल मोम मे डूबने लगती, और धुए से मेरी आखें कडुवा उठतीं। लेकिन ये सब झझट-बाधाए उस आनन्द मे डूब जातीं जिसके साथ मैं तस्वीरा को देखता और नीचे छपे परिचयो को पढ़ता।

ये चित्र मेरे सामने दुनिया को फलाते और बढ़ाते जा रहे थे। उन्होने उसे अदभुत नगरों, गगनचुम्बी पहाडा और सुदर समुद्र तटा से सजा दिया। जीवन मे एक सुदर फलाव आ रहा था। भाति भाति के नगरा, लोगो और काम धधो की बहुलता धरती को और भी आकर्षक बना देती, वह मुझे और भी रग बिरगी मालूम होती। अब वोल्गा के उस पार के विस्तारो को देखते हुए मैं जानता था कि उनमे निरा सूनापन नहीं है। पहले इन विस्तारा को जब मैं देखता था तो अकबकाकर उदास हो उठता था अन्तहीन सपाट चरागाहें, काले धब्बो सी इक्की दुक्की झाडियां, चरागाहो से परे जगल की कटी फटी सी दीवार, चरागाहो के ऊपर धुधली सी ठडी नीलिमा। सूनी और उदास धरती। मेरा हृदय भी सूना हो जाता,

एक कोमल उदासी उसे मथती, सभी अरमान मुरझा जाते, सोचने के लिए कुछ बाक़ी न रहता, आखें मूद लेने को जी चाहता। वीरानी का यह आलम, हृदय की हर आकाक्षा को सोख लेता, आशा उसके स्पर्श से बेजान हो जाती।

चित्रो के नीचे लिखे मजमूनो ने सीधी सादी भाषा मे दूसरे देशो और दूसरे लोगो से मेरा परिचय कराया, अतीत और वतमान की बहुत सी घटनाओ के बारे मे बताया जिनमे से कई मेरी समझ मे न आतीं, और इससे मेरा हृदय कचोट उठता। कभी कभी, तीर की भाति, कुछ विचित्र शब्द मेरे दिमाग से आकर टकराते 'अधितारिवकी', 'किलियरम', 'चाटिस्ट' आदि। ये शब्द मेरे जी का जजाल बन जाते और मेरे दिमाग़ मे घुसकर इतना फलते बढते कि उनके सिवा और कुछ सुझाई न देता, और मुझे ऐसा लगता कि इन शब्दो के अथ का पता लगाए बिना मेरी समझ मे कभी कुछ नहीं आएगा, मानो ये शब्द प्रहरियो की भाति सभी रहस्यो के द्वार पर खडे हो। बहुधा, समूचे के समूचे वाक्य मेरे दिमाग़ मे अटककर रह जाते, मास मे घुसी फास की भाति खटकते और मेरे लिए अन्य किसी ओर ध्यान लगाना असम्भव कर देते।

एक दिन मैंने अजीब पक्तिया पढीं

पहने हुए इस्पाती जामा
काला और मौत सा गम्भीर
हूणो का सरगना अतीला
रौंद रहा रेगिस्तानो को।

उसके पीछे उसके योद्धा, काली घटा की भाति, उमड उमडकर गरज रहे थे

कहा है रोम,
कहा है शक्तिशाली रोम?

यह तो मैं जानता था कि रोम एक नगर है, लेकिन ये हूण कौन थे? मुझे अब इस रहस्य का उदघाटन करना था।

अनुकूल अवसर देख मैंने अपने मालिक से पूछा।

"हूण?" उसने कुछ अचरज से कहा। "शतान ही जानता है कि यह क्या है? होगी ऐसी ही कोई बकवास"

फिर उसने नाराज़ी के भाव से सिर हिलाया

"पेशकोव, दुनिया भर का कबाड़ तूने अपने दिमाग मे जमा कर लिया है, यह बहुत बुरा है!"

बुरा हो चाहे भला, मुझे तो इसका पता लगाना ही था।

मैंने अदाज लगाया कि हो न हो, फौज के पादरी सोलोव्योव को जरूर मालूम होगा कि हूण कौन थे। अहाते मे मुठभेड होने पर मैंने उसके सामने अपना मसला पेश कर दिया।

वह एक मरियल सा आदमी था पीले रग का, रोगी और सदा चिडचिडा। उसकी आखें लाल थीं, भौंहे नदारद और छोटी सी पीली दाढी।

"तुझे हूणो से क्या लेना?" अपनी काली लाठी को धूल मे धसाते हुए उसने उल्टे मुझे ही कुरेदा।

लेफ्टिनेन्ट नेस्तेरोव के सामने जब मैंने अपना सवाल रखा तो वह जोरो से चिल्लाया

"क्या-आ-आ?"

तब मैंने दवाफरोश से पूछने का निश्चय किया। वह काफी मिलनसार मालूम होता था। समझदार चेहरा, भारी भरकम नाक जिसपर सुनहरा चश्मा चढा हुआ था।

"हूण," दवाफरोश पावेल गोल्डबर्ग ने मुझसे कहा, "किरगिज़ो की भाति खानाबदोश जाति के लोग थे। अब वे नहीं ह—सब के सब मर खप गए।"

मुझे बडी निराशा हुई और झुझलाहट ने मुझे घेर लिया, इसलिए नहीं कि हूण मर खपकर लोप हो गए थे, बल्कि इसलिए कि जिस शब्द ने मुझे इतना सताया, उसका अर्थ इतना साधारण और मेरे लिए इतना बेकार सिद्ध हुआ।

फिर भी हूणो का मैं बेहद कृतज्ञ था। उन्ह लेकर इतनी परेशानियो मे से गुजरने के बाद शब्द मुझे कम सताने लगे। और भला हो अतीला का, उसकी वजह से दवाफरोश से मेरी जान-पहचान हो गई।

भारी भरकम और पण्डिताऊ शब्दो का सीधा-सादा अर्थ उसे मालूम था और हर रहस्य की कुजी उसके पास थी। हाथ की दो उगलियो से वह अपने चश्मे को ठीक करता और मोटे शीशो के भीतर से घूरकर मेरी

आंखो मे देखता और इस तरह बोलना शुरू करता मानो अपने शब्दो को, कीलो की भांति, वह मेरे दिमाग में ठोंक रहा हो

"शब्द, मेरे मित्र, उसी तरह होते हैं जसे पड मे पत्ते, और यह जानने के लिए कि पत्ते का रूप रग ऐसा ही क्यो है, किसी दूसरे प्रकार का क्या नहीं, यह जानना जरूरी है कि पेड किस प्रकार बढ़ता पनपता है, अध्ययन करना चाहिए। पुस्तकें, मेरे मित्र, एक सुदर बाग के समान हैं, जिसमे तुम्हें हर वह चीज मिलेगी जो सुहावनी और लाभदायक है "

बडे-बूढ़ो के वास्ते सोडा और मगनीशिया लाने जिन्ह हमेशा पेट और छाती मे जलन की शिकायत रहती थी, और छोटो के वास्ते लारेल का मरहम तथा अन्य छोटी-मोटी दवाइयां लाने मुझे अक्सर दवाफरोश की दुकान के चक्कर लगाने पडते। दवाफरोश की नपी-तुली सीखो की बदौलत पुस्तकों के साथ मेरा लगाव और भी गहरा हो गया और अनजाने मे वे मेरे लिये उतनी ही अनिवाय हो उठीं जितनी कि एक शराबी के लिए वोदका।

पुस्तके मुझे एक दूसरी दुनिया की सर करातीं, जिसमे आशा-आकांक्षाओं का सागर हिलोरें लेता, उसके भवर मे पडकर लोग भले से भले और बुरे से बुरे काम करते। लेकिन जिस तरह के लोगो को मैं अपने चारो ओर देखता था, उनमे न भले काम करने की सकत थी, न बुरे। किताबों मे जो कुछ लिखा था, उससे सवथा भिन्न—एकदम अलग जीवन वे बिताते थे, और उनके इस जीवन में खोजने पर भी कोई दिलचस्प चीज नजर नहीं आती थी। जो हो, एक चीज मेरे दिमाग मे साफ थी—वह यह कि मैं वसा जीवन नहीं बिताना चाहता था, जसा कि वे बिताते थे

चित्रो के नीचे मजमूनो से मुझे पता चला कि प्राग, लदन और पेरिस मे, नगर के बीचोबीच, न तो कूडा-करकट के पहाड दिखाई देते हैं, न गद भरे नाले नजर आते हैं। वहा की सडके चौडी और सीधी होती हैं, और इमारतें तथा गिरजे सवथा भिन्न। और वहा के लोग लम्बे जाडो के मारे पूरे छ महीना तक घरो मे बद नहीं रहते, न ही वहां व्रत उपवास के पतालीस दिन होते हैं जिनमे नमकीन बदगोभी, खुमियों, जौ के आटे, और अलसी के घिनौने तेल मे तरते आलुओ के सिवा और कुछ नहीं खाया जा सकता। व्रत उपवास के दिनो मे पढ़ना गुनाह होता है इसलिए "चित्र जगत" को उठाकर रख दिया गया, और मुझे भी इस सूने उपवासी जीवन का अग बनने के लिए मजबूर किया

गया। अब, किताबो के जीवन से इस जीवन की तुलना करने के बाद, मुझे यह और भी बेरग, और भी बदनुमा मालम होता। पुस्तके पढने पर मुझे लगता कि मेरी शक्ति बढ गई है, मैं अधिक स्वस्थ बन गया हू और मैं भारी लगन तथा आपा भूलकर काम मे जुट जाता था, क्योकि मेरे सामने अब एक लक्ष्य होता वह यह कि जितनी जल्दी काम खत्म होगा, उतना ही अधिक समय मुझे पढ़ने के लिए मिलेगा। अब किताबा के न रहने पर मैं सुस्त और काहिल हो गया था, खोया खोया सा घूमता, और एक ऐसी विकृत बेखबरी ने मुझे जकड लिया जिसका मुझे पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था।

मुझे याद है कि उन्हीं नीरस दिनों मे एक रहस्यमय घटना घटी। साझ का समय था सब लोग सोने की तयारियां कर रहे थे। तभी बडे गिरजे का घटा एकाएक बजना शुरू हुआ। सकपकाकर सभी लोग चौके, और अधूरे कपडो मे ही खिडकियो पर जा खडे हुए।

"यह खतरे का घटा है? क्या कहीं आग लगी है?" वे एक दूसरे से पूछ रहे थे।

अन्य घरो से भी लोगो के इधर-उधर डोलने और दरवाजो को बन्द करने की आवाजें आ रही थीं। एक आदमी, घोडे की लगाम थामे, अहाते मे भाग रहा था। बूढी मालकिन चिल्ला रही थी कि गिरजा लूटा गया है। मालिक ने उसका मुह बन्द करते हुए कहा

"चुप भी रहो, मा, साफ तो सुनाई दे रहा है कि यह खतरे का घटा नहीं है!"

"तब फिर क्या है, कहीं बडे पादरी तो नहीं मर गए!"

वीक्तर अपने तख्ते से नीचे उतर आया।

"मैं जानता हू कि क्या हुआ है, मुझे सब मालूम है," कपडे बदन पर डालते हुए वह बुदबुदा रहा था।

यह देखने के लिए कि कहीं आकाश मे आग की दमक तो नजर नहीं आती, मालिक ने मुझे अटारी पर दौडा दिया। लपककर मैं ऊपर चढ़ गया और रोशनदान मे से बाहर छत पर निकल आया। आकाश में कहीं कोई लाली नहीं दिखाई दे रही थी। गिरजे का बडा घटा अभी भी उसी गति से स्थिर और पालामारे वायुमण्डल को गुजा रहा था। उनींदा नगर धरती से चिपटा हुआ था। नजर की पहुच से बाहर लोग दौड रहे थे

श्रौर उनके पावो के नीचे बर्फ के कचरने की श्रावाज श्रा रही थी। बर्फ पर गाडियो के दौडने की श्रावाज भी सुनाई पड रही थी। गिरज के बडे घटे की श्रावाज हृदय को अधिकाधिक कपा रही थी। मैं नीचे उत्तर श्राया। मैंने कहा

"नहीं, श्राग ता नहीं लगी है।"

मालिक ने मेरी बात को सुना-अनसुना करते हुए "टटटट" की श्रावाज की। वह कोट श्रौर टोपी पहने था। उसने श्रपना कालर ऊपर खींच लिया श्रौर श्रनिश्चयता के साथ जूतो मे पाव डालने लगा।

"बाहर न जाश्रो! मेरी मानो, बाहर न जाश्रो " उसकी पत्नी ने रोकना चाहा।

"क्यो नहीं!"

योक्तर भी कोट श्रौर टोपी पहने था श्रौर यह कहकर सभी को चिढा रहा था

"मैं सब जानता हू "

जब दोनो भाई चले गए तो स्त्रियो ने मुझे समोवार गरम करने मे जोत दिया श्रौर खुद खिडकियो पर जमकर बठ गईं। उसी समय मालिक ने दरवाजे की घटी बजाई, तेज डगो से चुपचाप ऊपर श्राया, बड़े कमरे का दरवाजा खोला श्रौर भरभराई सी श्रावाज मे घोषित किया

"जार का कत्ल हो गया!"

"क्या कहा, जार की हत्या कर दी गई?" बुढिया ने चौंककर कहा।

"हा, कत्ल हो गया है। एक श्रफसर ने मुझे बताया। श्रब क्या होगा?"

इसी बीच वीक्तर ने दरवाजे की घटी बजाई श्रौर श्रपना लबादा उतारते हुए झुझलाहट मे बोला

"श्रौर मैंने तो सोचा था लडाई छिड गयी!"

इसके बाद सब शान्त होकर चाय पीने बठ गए श्रौर चौकन्ने से होकर दबे स्वरों मे बातें करने लगे। बाहर श्रब सन्नाटा छाया था। घटे का बजना बद हो गया था। दो दिनो तक वे लोग लगातार फुसफुसाते रहे, कहीं बाहर जाते श्रौर उनके यहा भी लोग श्राते श्रौर बारीकी के साथ किसी बात का वणन करते। मैंने बहुतेरा सिर मारा, लेकिन मैं समझ नहीं सका कि श्राखिर हुश्रा क्या है। मालिक समाचारपत्र मुझसे छिपाते

थे, और जब सीदोरोव से मैंने यह सवाल किया कि ज़ार को क्यो मार डाला गया, तो वह धीमे स्वर मे बोला

"इस बारे मे बातें करना मना है "

समूची घटना जल्दी ही आई गई हो गई, आए दिन के जीवन की घिस घिस ने उसे पीछे डाल दिया, और इसके कुछ बाद ही एक बहुत ही अप्रिय घटना घटी।

रविवार का दिन था। परिवार के लोग सुबह की प्रार्थना में शामिल होने गिरजे गए थे। और मैं, समोवार गर्माने के बाद, घर की सफाई करने मे जुटा था। इसी बीच बडा बच्चा रसोईघर मे घुस गया, समोवार की टोंटी को खींचकर उसने बाहर निकाल लिया और मेज के नीचे रेंगकर उससे खेलने लगा। समोवार के बीच के नलके मे कोयले दहक रहे थे, जब सारा पानी निकल गया तो समोवार बुरी तरह गरमा गया और उसके जोड तडकने लगे। दूसरे कमरे मे मैंने समोवार को गुस्से मे भरकर अजीब आवाजें करते सुना। लपककर मैं रसोईघर मे पहुचा। यह देखकर मैं काप उठा कि वह एकदम नीला पड गया है, और इस तरह काप रहा है मानो उसे मिर्गी का दौरा पडा हो। जोड खुला नलका जिसमे टोंटी लगी थी, निराशा से गरदन लटकाए था, ढक्कन एक ओर खिसक गया था, हत्थो के नीचे टिन पिघल गया था और बूद-बूद टपक रहा था, और नीला काला पडा समोवार ऐसा मालूम होता था मानो वह नशे मे धुत्त हो। जब मैंने उसपर ठडा पानी उडेला तो वह सनसनाया और उदास भाव से फर्श पर ढह गया।

दरवाजे की घटी बजी। दरवाजा खोलते ही बूढ़ी ने पहला सवाल समोवार के बारे मे किया

"समोवार तो तैयार है न?"

"हा, तयार है," सक्षेप मे जवाब देकर मैं [illegible] गया।

भय और शर्म से कटकर ही मैंने शायद [illegible] उत्तर दिया था। लेकिन यह भी मेरी गुस्ताखी में [illegible] और उसी [illegible] से मेरी सजा भी दुगुनी कर दी गई। [illegible] की गयी। [illegible] देवदार की छिपटियो का इस्तेमाल [illegible] लेकिन पीठ पर त्वचा मे [illegible]

मेरी पीठ सूजकर तकिए की भांति हो गई, और अगले दिन दोपहर तक मेरे मालिक को मुझे लेकर अस्पताल जाना पड़ा।

डाक्टर इतना लम्बा और इतना पतला था कि देखकर हंसी छूटती थी। उसने मेरी जांच की, और फिर गहरी, स्थिर आवाज में बोला

"इस जुल्म की मैं सरकारी हैसियत से रिपोर्ट करूंगा।"

मालिक का चेहरा लाल हो उठा, वह पांव घसीटने लगा, फिर बुदबुदाकर उसने डाक्टर से कुछ कहा, लेकिन डाक्टर ने अपनी नजर से उसका सिर लांघकर कहीं दूर देखते हुए दो टूक शब्दों में कहा

"नहीं, यह नहीं हो सकता।"

फिर मेरी ओर मुड़ा। पूछा

"क्या तुम शिकायत दर्ज कराना चाहते हो?"

मुझे बेहद दर्द हो रहा था लेकिन मैंने कहा

"नहीं। जल्दी से मेरा इलाज करो।"

मुझे दूसरे कमरे में ले जाया गया, मेज पर मुझे लिटाकर डाक्टर ने चिमटी से फांसों को निकालना शुरू किया। चिमटी का ठंडा स्पर्श गुदगुदाता सा मालूम होता था। डाक्टर अपना काम भी करता जाता था, और बोलता भी जाता था

"तुम्हारी चमड़ी को अच्छा संवारा है इन लोगों ने, दोस्त। इसके बाद तुम वाटरप्रूफ हो जाओगे..."

डाक्टर असहाय रूप से मुझे गुदगुदाते हुए जब अपना काम खत्म कर चुका तो बोला

"बयालीस फांसें निकाली हैं, दोस्त, मैंने। याद रख लो, कभी शेखी बघारोगे। कल इसी समय आकर अपनी पट्टी बदलवा जाना। क्या तुम्हारी अक्सर मरम्मत करते हैं?"

"पहले अक्सर किया करते थे," मैंने एक क्षण सोचकर कहा।

डाक्टर ने अपनी गहरी आवाज में ठहाका मारा।

"सब कुछ अच्छा हो रहा, दोस्त, सब कुछ!"

जब वह मुझे मालिक के पास वापस ले गया तो उससे कहा

"संभालो इसे, बिल्कुल नया बना दिया है। कल इसे फिर भेज देना पट्टी करवाने के लिए। तुम्हारी खुशकिस्मती है कि लड़का हंसोड़ है..."

गाडी मे बठकर जब हम घर लौट रहे थे तो मालिक ने कहा

"पेशकोव, मैं भी खूब पिटता था। क्या किया जाये? श्रौर कितनी बुरी तरह मुझे मारते थे! तुम्हारे साथ कम से कम इतना तो है कि मैं थोडी-बहुत सहानुभूति दिखा सकता हू, लेकिन मेरे साथ तो कभी कोई सहानुभूति नहीं दिखाता था। लोगो की यो कमी नहीं थी, लेकिन सहानुभूति के दो शब्द कहने के लिए कोई पास तक न फटकता श्रोह, कुडक मुर्गियो!"

रास्ते भर वह बुरा भला कहता रहा। मुझे उसपर तरस श्राया, श्रौर कृतज्ञता का भी मैंने श्रनुभव किया कि वह मेरे साथ इसानो की तरह बातें कर रहा है।

जब हम घर पहुचे तो सबने इस तरह मेरा स्वागत किया मानो वह मेरा जन्मदिन हो। स्त्रिया ने मुझे बठाकर सारा हाल सुना कि डाक्टर ने किस तरह फासो को निकाला श्रौर क्या-क्या कहा। वे सुनतीं श्रौर बीच-बीच मे श्राह, श्राह की ध्वनि करती जातीं, श्रपने होंठो पर जीभ फेरकर चटकारा लेतीं श्रौर इस या उस बात पर भौंहें चढ़ातीं। बीमारी ईबारी में, दु ख श्रौर दद मे, हर उस चीज मे जो श्रादमी को परेशान कर सकती है, उनकी विकृत दिलचस्पी ने मुझे चकित कर दिया।

मैंने देखा कि वे इस बात से खुश थीं कि मैंने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराने से इनकार कर दिया। इससे उत्साहित होकर मैंने उनसे कहा कि श्रगर इजाजत हो तो कटर की पत्नी से पुस्तके माग लाया करु। उनसे श्रब इनकार करते नहीं बना, सिफ बुढ़िया ने चकित होकर कहा

"बडा शतान है तू!"

श्रगले ही दिन मैं कटर की पत्नी के सामने खडा था, श्रौर वह प्यार के साथ मुझसे कह रही थी

"मैंने तो सुना था कि तुम बीमार पड गए हो श्रौर तुम्हे श्रस्पताल पहुचा दिया गया है। देखो न, लोग भी कसी कसी श्रफवाह उडाते हैं?"

मैंने उसकी बात को काटा नहीं। उसे सच बात बताते मुझे शम मालूम हुई—ऐसी श्रौघड श्रौर जी भारी करनेवाली बातें कहकर श्राखिर उसे क्यो परेशान किया जाए? मेरे लिए यही क्या कम खुशी की बात थी कि वह श्रन्य लोगो की तरह नहीं थी।

मैंने श्रब बडे ड्यूमा, पौनसौन-द-तरेल, मौंतेपिन, जाकोन्ने,

गार्बोरिश्रो, एमर श्रौर युम्रागोये की मोटी-मोटी जिल्दो को पढ़ना गह किया। मैं इन पुस्तको को, एक के बाद एक, तेजी से पढ़ गया, श्रौर इन्हे पढ़कर मेरा हृदय खुशी से नाच उठा। मुझे लगा कि जसे मैं उनके असाधारण जीवन का एक हिस्सा बन गया हूँ। मधुर भावो का मुझमे सचार हुआ और स्फूर्ति का मैंने अनुभव किया। एक बार फिर हाथ का बना मेरा लम्प चेतन होकर धुआँ छोडने लगा, मैं रात भर, पौ फटने तक पढ़ता ही रहता। मेरी आँखें दुखने लगीं और बूढ़ी मालकिन मो आवाज मे बोली

"जरा ठहर, किताबचाटू! तेरे दीदे फूट जायेंगे, अधा हो जायेगा!

शीघ्र ही मैंने देखा कि ये तमाम दिलचस्प पुस्तकें, कथानको । विविधता और मौके-महल में भिनता के बावजूद, एक सी बात कहतं हैं। वह यह कि जो भले लोग हैं, वे हमेशा दुख उठाते हैं और बुरे लोगो के हाथों उन्हे अनेक मुसीबतो का शिकार होना पडता है। बुरे लोग, भलो के मुकाबले मे ज्यादा मजे मे रहते हैं और उनसे ज्यादा चतुर होते हैं। और अत मे, किसी चमत्कार के सहारे बुराई की सदा हार होती है और भलाई की सदा जीत। 'प्रेम' से भी मेरा जी उकता गया, जिसके बारे मे पुस्तको के सभी पुरुष और सभी स्त्रियाँ, सदा एक सी भाषा मे, बातें करते थे। इससे मन तो ऊबता ही, साथ ही अनेक धुधले सन्देहों को वह जन्म देता।

कभी कभी, कुछ पन्ने पढ़ने के बाद ही यह साफ हो जाता कि अत मे किसकी जीत होगी, और किसकी हार। और कथानक की गुत्थी का एकाध सिरा हाथ मे आते ही मैं खुद उसे खोलना शुरू कर देता। पुस्तक को मैं अलग रख देता, गणित के सवाल की भांति मैं उसपर दिमाग लडाने लगता, और मेरे हल अधिकाधिक सही निकलते,—यह कि किस पात्र को हर तरह के सुखो का स्वर्ग नसीब होगा, और किसको जहन्नुम रसीद किया जायेगा।

लेकिन इस सब के पीछे मुझे सजीव और मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई की झलक मिलती थी, अन्य जीवन, अन्य सबधो के दृश्य नजर आते थे। मैं अब साफ-साफ देखता कि पेरिस के गाडीवान, मेहनत-मजदूरी करनेवाले, सनिक और अन्य सब "निम्न" लोग नीज्नी नोवगोरोद, कजान और पेर्म की ऐसी ही तलछट से भिन्न हैं, साहबो के सामने उनकी बोलती

बद नहीं होती, उनके सहज भाव और स्वतत्र चेतना को पाला नहीं मारता, खुलकर और साहस से वे बातें करते हैं। इस एक सनिक को ही लीजिए जो उन सभी सनिको से भिन्न था जिनसे कि मेरा वास्ता पड चुका था—न वह सीदोरोव से मिलता था, न उस सनिक से जिसे मैंने जहाज पर देखा था, न येर्मोखिन से। उसमे कहीं ज्यादा आदमियत थी। स्मूरी से वह कुछ-कुछ मिलता था, लेकिन उसमे स्मूरी जितना भोडापन और पाशविकता नहीं थी। या फिर इस दुकानदार को लीजिए। वह भी उन सभी दुकानदारो से अच्छा था जिन्ह कि मैं जानता था। यही बात पादरियो के बारे मे थी। वे भी मेरे जाने पहचाने पादरियो से भिन्न थे। लोगो के साथ वे अधिक प्रेम और सहानुभूति का बरताव करते थे। कुल मिलाकर यह कि पुस्तको के पन्नो मे चित्रित दूसरे देशो का जीवन उस जीवन से ज्यादा अच्छा, ज्यादा सहज और ज्यादा दिलचस्प मालूम होता था जिसे कि मैं अपने चारो ओर देखता था। दूसरे देशो मे लोग इतना अधिक और इतनी बबरता से नहीं लडते थे, आदमी के साथ उस तरह का कुत्सित खिलवाड नहीं करते थे जसा कि जहाज के यात्रियो ने उस सनिक के साथ किया था, और भगवान से प्राथना करते समय उस तरह की कुढन और जलन का परिचय नहीं देते थे जो बूढी मालकिन मे दिखाई देती थी।

पुस्तको मे खल पात्रो की, कमीने और कफन खसोटनेवाले लोगो की कमी नहीं थी। और इस बात की ओर खास तौर से मेरा ध्यान गया कि पुस्तको के इन खल पात्रो मे भी समझ मे न आनेवाली वह क्रूरता, और दूसरो को सताने की वह धुन नहीं दिखाई देती जिससे कि मैं इतना परिचित था। पुस्तको के खल पात्र क्रूरता का परिचय देते थे, लेकिन तभी जब उन्ह कोई मतलब साधना होता था। उनकी क्रूरता, बहुत कर ऐसी नहीं होती थी कि समझ मे न आए। लेकिन मैं जिस क्रूरता से परिचित था, उसमे कोई तुक नहीं दिखाई देती थी, बिल्कुल बेमानी और बेमतलब, मनबहलाव के सिवा जिसका और कोई लक्ष्य नहीं था और जिससे किसी फायदे की आशा नहीं थी।

हर नयी पुस्तक, रूस और दूसरे देशो के जीवन के बीच इस अन्तर और उनके भेद को उभारकर रखती, धुधला असन्तोष मेरे हृदय मे उमडता, और मेरा यह सन्देह जोर पकडने लगता कि इन पीले पडे तथा गदे कोनो वाले पन्नो मे जो कुछ लिखा है, वह एकदम सच नहीं है।

अचानक गोनस्टोर्ट का उपन्यास "खेमृगान्नो यम्पु" मेरे हाथों मे पड़ा। मैंने उसे फौरन पढ़ डाला और एक नयी अनुभूति से विस्मित सा, जिसका मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था, मैं इस सीधी-सादी दुःख भरी कहानी को दुबारा पढ़ने लगा। इसमे न तो कोई पेचीदा कथानक था, न ही फालतू बनाव सिंगार की चकाचौंध थी। यहां तक कि शुरू मे यह कुछ रूखा और सन्तो की जीवनियो की भांति गम्भीर मालूम हुआ। इसकी भाषा इतनी नपी-तुली और सिंगार से इतनी कोरी थी कि पहले-पहल बडी निराशा हुई, लेकिन कुछ देर बाद ही उसके सक्षिप्त से शब्दो और सबल वाक्यो ने तीर की भांति सीधे मेरे हृदय मे प्रवेश करना शुरू किया और इसने नट-बन्धुओ के जीवन-सघर्ष का इतना सजीव और सच्चा चित्र मेरी आंखो के सामने खडा कर दिया कि मेरे हाथ यह किताब पढ़ने के आनद से कांपते थे। और उस समय जब मुसीबतो का मारा नट टूटी टांगें लिए बडी मुश्किल से ऊपर चढ़कर अपने भाई के पास पहुचा जो अटारी मे छिपकर जान से भी प्यारी अपनी नट-कला का अभ्यास कर रहा था, तो मैं फूट फूटकर रोने लगा।

इस अदभुत पुस्तक को कटर की पत्नी को लौटाते हुए मैंने इस जसी ही एक और पुस्तक देने का अनुरोध किया।

"इस जसी ही का क्या मतलब, भला?" उसने व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।

उसकी इस व्यग्यपूर्ण मुस्कान से मैं सहम गया और उसे यह समझा नहीं सका कि 'इस जसी ही' से मेरा क्या मतलब है। वह बोली

"यह कोई मजेदार पुस्तक नहीं है। जरा ठहरो, मैं तुम्हें एक बढ़िया पुस्तक ला दूंगी, बहुत ही दिलचस्प "

कुछ ही दिन बाद उसने मुझे ग्रीनवुड कृत "एक आवारा लडके की सच्ची कहानी" दी। पुस्तक का नाम मुझे कुछ चुभा, लेकिन पहला पन्ना पढ़ते न पढते मेरे हृदय मे आनद की मुस्कान खिल गयी और इस मुस्कान के साथ ही मैंने पूरी पुस्तक अत तक पढ़ डाली। कितने ही अशों को तो दो दो, तीन-तीन बार तक पढ़ गया।

सो दूसरे देशो मे भी छोटे लडको को कुछ कम मुसीबत नहीं उठानी पडती हैं! मेरी तो हालत इतनी बुरी बिल्कुल नहीं है सो हिम्मत खोने की कोई बात नहीं है!

ग्रीनवुड ने मुझे बडा सहारा दिया और इसके शीघ्र बाद ही एक ऐसी पुस्तक हाथ लगी जो सचमुच मे 'सही ढग' की थी—"यूजेनी ग्राण्डे"।

बूढ़े ग्राण्डे की कहानी पढ़कर मेरी आखो के सामने अपने नाना का सजीव चित्र खडा हो गया। मुझे खेद हुआ कि पुस्तक इतनी छोटी है और साथ ही अचरज भी हुआ कि इसमे कितनी सचाई भरी है। यह एक ऐसी सचाई थी, जो मेरे लिए जानी पहचानी थी तथा जिससे जीवन मे मैं ऊब चुका था। लेकिन पुस्तक ने इसे एक नयी रोशनी मे—शांत, कटुतारहित ढग से प्रस्तुत किया। गौनकोट को छोडकर अन्य जितने भी लेखक मैंने पढ़े थे, मेरे मालिको की भाति वे सब भी उतने ही निमम और चिडचिडे ढग से लोगो की निदा करते, अक्सर पाठक खल नायक से सहानुभूति करने लगता और भले पात्रो की 'भलमनसाहत' से तग आ जाता। यह देखकर मैं हमेशा परेशान हो उठता कि लाख सिर खपाने और हाथ-पाव मारने के बाद भी आदमी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाता, आगे नहीं बढ़ पाता—शुरु से लेकर आखिर के पन्ने तक, कदम-कदम पर, यह भलमनसाहत ही उसके माग मे आडे आती। पत्थर की दीवार की तरह वह उसके प्रयत्नो को विफल करती। माना कि खल नायक की सारी चाले और सारे इरादे इस दीवार से टकराकर चकनाचूर हो जाते, लेकिन दीवार कोई ऐसी चीज नहीं होती कि उसके लिए हृदय मे प्यार जगे, हृदय उसके साथ कुछ लगाव अनुभव करे। पत्थर की दीवार अपने आप मे चाहे जितनी सुदर और मजबूत क्यो न हो, लेकिन उस आदमी को जिसके हृदय मे दीवार के दूसरी ओर उगे सेबो को पाने की ललक है, न तो दीवार की सुदरता भली लगेगी, न उसके पत्थरों की मजबूती। और मुझे यह लगने लगा था कि जीवन मे अधिकाधिक मूल्यवान और सजीव जो कुछ भी है, वह कहीं भलमनसाहत के पीछे छिपा हुआ है

गौनकोट, ग्रीनवुड और बाल्जाक के उपन्यासो मे न तो खल नायक थे और न भले नायक। केवल सीधे सादे लोग थे, इतने सजीव कि देखकर अचरज होता। वे इस बात मे कोई सदेह नहीं छोडते कि उन्होंने जो कुछ कहा या किया वह सब सचमुच ठीक उसी रूप मे कहा या किया गया होगा, और ठीक इसी रूप मे उसे कहा या किया जा सकता है, अन्य किसी रूप मे नहीं।

अब मेरे लिए यह सुख कोई बेगानी चीज नहीं रहा जो किसी अच्छी पुस्तक, 'सही ढग' की पुस्तक को पढ़ने से प्राप्त होता है। लेकिन एसी पुस्तके पाना भी एक समस्या थी। कटर की पत्नी इसमे मेरी कोई मदद नहीं कर सकी।

"लो, यह कुछ अच्छी पुस्तके हैं," कहती और मुझे मार्सेल हौरसाये कृत "गुलाब, स्वण और रक्त से रजित हाथ" या बलेपू, पाल दकाक अथवा पाल फेवाल के उपन्यास थमा देती। लेकिन एसी पुस्तकों को पढ़ना अब मुझे काफी भारी मालूम होता।

मरियाट और बनर के उपन्यास उसे पसद थे, लेकिन मैं उन्हें पढ़कर ऊब गया। न ही मुझे श्पीलहागेन के उपन्यास पसन्द आए। लेकिन अवरबाख की कहानियां मुझे खूब अच्छी लगीं। स्यू और ह्यूगो मुझे इतने पसद नहीं आए जितने कि वाल्टर स्काट। मैं ऐसी पुस्तके चाहता जिन्हें पढ़कर मेरे हृदय के तार झनझना उठें, मेरा रोम रोम खुशी से नाच उठे, जो लेखनी के जादूगर बालजाक की पुस्तका की भाति हो। चीनी की गुडिया के समान सुदर कटर की पत्नी भी अब मुझे कम अच्छी लगने लगी।

उसके यहा जाने से पहले मैं साफ सी कमीज पहनता, बालों मे कघी करता और हर वह उपाय करने मे कोई कसर नहीं छोडता जिससे कि मैं कुछ भला दिख सकू। इसमे कितनी सफलता मुझे मिलती थी, यह तो पता नहीं, लेकिन इतनी उम्मीद म अवश्य करता था कि भले आदमियो जसी मेरी इस सजधज को देखकर वह मुझसे अधिक सहज और मित्रतापूण भाव से बाते करेगी, और अपने साफ-सुथरे चेहरे को बिल्लौरी मुस्कान से मुक्त रखेगी। लेकिन वह मुसकराये बिना न रहती और थकी हुई सी मधुर आवाज मे पूछती

"तुमने पढ़ लिया इसे? पसन्द तो आई न?"

"नहीं।"

वह अपनी बारीक भौंहो को हल्का सा बल देती, और उसास भरकर अपने उसी परिचित स्वर मे गुनगुनाती

"लेकिन क्यो?"

"यह सब तो मैं पहले ही पढ़ चुका हू।"

"यह सब क्या?"

"यही प्रेम-प्रेम की बाते"

आखें सिकोडकर वह मीठी हसी हसती।

"अच्छा! पर प्रेम की बातें तो सभी पुस्तको मे लिखी होती हैं!"

बडी सी आरामकुर्सी पर बठे हुए वह अपने छोटे छोटे पावो को झुलाती, जिनमे वह रोएदार स्लीपर पहने थी, जम्हाई लेती, आसमानी लबादे को खींचकर अपने कधो से जरा और सटा लेती तथा गोद मे पडी पुस्तक को अपनी गुलाबी उगलिया के छोरो से ठक्ठकाती।

मेरा जी चाहता कि उससे पूछू

"आप यहा से किसी दूसरी जगह क्यो नहीं चली जातीं? अफसर अभी भी आपके पास चिटें भेजते हैं और आपका मजाक उडाते है "

लेकिन मेरा साहस साथ न देता और मैं, हाथ मे 'प्रेम' सम्बधी मोटी पुस्तक और हृदय मे निराशा लिए, वहा से चला आता।

अहाते मे अब उसका और भी कुत्सित तथा बेहूदा मजाक उडाया जाता, दुनिया भर की उल्टी सीधी बात उसके बारे मे की जातीं। इन गदी और शायद झूठी बातो को सुनकर मेरा हृदय कचोट उठता। जब मैं उसके सामने न होता तो मुझे उसपर तरस आता, और उसे लेकर अनेक आशकाए मेरे हृदय को कुरेदने लगतीं। लेकिन जब मै उसके सामने होता और उसकी पनी आखो, बिल्ली की भाति लचीले शरीर और हमेशा उल्लास भरे उसके चेहरे पर नजर डालता तो मेरी सारी हमदर्दी और आशकाए कोहरे की भाति गायब हो जातीं।

वसन्त मे वह एकाएक कहीं चली गई और इसके कुछ ही दिन बाद उसके पति ने भी घर छोड दिया।

उनके कमरो मे अभी कोई नया किरायेदार नहीं आया था, वे खाली पडे थे। मैंने उनका चक्कर लगाया। सूनी दीवारो पर तुडी मुडी कीलो या उनके छेदो के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। दीवार के वे स्थल जहा तस्वीरें लटकी थीं, साफ उभरे हुए दिखाई देते थे। रोगनदार फर्श पर रग बिरगे कपडो के चिथडे, कागज के टुकडे, दवाइयो की टूटी फूटी डिबिया, इत्र की शीशिया और उनके बीच पीतल की एक बडी पिन दिखाई पड रही थी।

यह सब देखकर मेरा जी उदास हो गया और कटर की पत्नी को एक बार और देखने तथा उसके सामने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरा मन ललकने लगा

अब मेरे लिए यह गुल कोई बेगानी चीज नहीं रहा जो किसी अच्छी पुस्तक, 'सही ढंग' की पुस्तक को पढ़ने से प्राप्त होता है। लेकिन ऐसी पुस्तकें पाना भी एक समस्या थी। कटर की पत्नी इसमें मेरी कोई मदद नहीं कर सकी।

"लो, यह कुछ अच्छी पुस्तकें हैं," कहती और मुझे आर्सेन हौसाये कृत "गुलाब, स्वर्ण और रक्त से रंजित हाथ" या बलेयू, पाल दक्काक अथवा पाल फेवाल के उपन्यास थमा देती। लेकिन ऐसी पुस्तकों को पढ़ना अब मुझे काफी भारी मालूम होता।

मरियाट और वनर के उपन्यास उसे पसंद थे, लेकिन मैं उन्हें पढ़कर ऊब गया। न ही मुझे इपीलहागेन के उपन्यास पसन्द आए। लेकिन अवरबाख की कहानियां मुझे खूब अच्छी लगीं। स्यू और ह्यूगो मुझे इतने पसन्द नहीं आए जितने कि वाल्टर स्काट। मैं ऐसी पुस्तकें चाहता जिन्हें पढ़कर मेरे हृदय के तार झनझना उठें, मेरा रोम रोम खुशी से नाच उठे, जो लेखनी के जादूगर बाल्ज़ाक की पुस्तकों की भांति हों। चीनी की गुड़िया के समान सुन्दर कटर की पत्नी भी अब मुझे कम अच्छी लगने लगी।

उसके यहां जाने से पहले मैं साफ सी कमीज पहनता, बालों में कंघी करता और हर वह उपाय करने में कोई कसर नहीं छोड़ता जिससे कि मैं कुछ भला दिख सकूं। इसमें कितनी सफलता मुझे मिलती थी, यह तो पता नहीं, लेकिन इतनी उम्मीद मैं अवश्य करता था कि भले आदमियों जैसी मेरी इस सजधज को देखकर वह मुझसे अधिक सहज और मित्रतापूर्ण भाव से बातें करेगी, और अपने साफ-सुथरे चेहरे को बिल्लौरी मुस्कान से मुक्त रखेगी। लेकिन वह मुसकराये बिना न रहती और थकी हुई सी मधुर आवाज में पूछती

"तुमने पढ़ लिया इसे? पसन्द तो आई न?"

"नहीं।"

वह अपनी बारीक भौंहों को हल्का सा बल देती, और उसास भरकर अपने उसी परिचित स्वर में गुनगुनाती

"लेकिन क्यों?"

"यह सब तो मैं पहले ही पढ़ चुका हूं।"

"यह सब क्या?"

"यही प्रेम व्रेम की बात"

आखें सिकोडकर वह मीठी हसी हसती।

"अच्छा! पर प्रेम की बाते तो सभी पुस्तकों मे लिखी होती हैं!"

बडी सी आरामकुर्सी पर बठे हुए वह अपने छोटे-छोटे पावो को झुलाती, जिनमे वह रोएदार स्लीपर पहने थी, जम्हाई लेती, आसमानी लबादे को खींचकर अपने कधो से जरा और सटा लेती तथा गोद मे पडी पुस्तक को अपनी गुलाबी उगलियो के छोरो से ठकठकाती।

मेरा जी चाहता कि उससे पूछू

"आप यहा से किसी दूसरी जगह क्यो नहीं चली जातीं? अफसर अभी भी आपके पास चिटें भेजते हैं और आपका मजाक उडाते है"

लेकिन मेरा साहस साथ न देता और मै, हाथ मे 'प्रेम' सम्बधी मोटी पुस्तक और हृदय मे निराशा लिए, वहा से चला आता।

अहाते मे अब उसका और भी कुत्सित तथा बेहूदा मजाक उडाया जाता, दुनिया भर की उल्टी-सीधी बाते उसके बारे मे की जातीं। इन गदी और शायद झूठी बातो को सुनकर मेरा हृदय कचोट उठता। जब मैं उसके सामने न होता तो मुझे उसपर तरस आता, और उसे लेकर अनेक आशकाए मेरे हृदय को कुरेदने लगतीं। लेकिन जब मैं उसके सामने होता और उसकी मनो आखा, बिल्ली की भाति लचीले शरीर और हमेशा उल्लास भरे उसके चेहरे पर नजर डालता तो मेरी सारी हमदर्दी और आशकाए कोहरे की भाति गायब हो जातीं।

वसन्त मे वह एकाएक कहीं चली गई और इसके कुछ ही दिन बाद उसके पति ने भी घर छोड दिया।

उनके कमरो मे अभी कोई नया किरायेदार नहीं आया था, वे खाली पडे थे। मैने उनका चक्कर लगाया। सूनी दीवारो पर तुडी-मुडी कीला या उनके छेदो के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। दीवार के वे स्थल जहा तस्वीरें लटकी थीं, साफ उभरे हुए दिखाई देते थे। रोगनदार फर्श पर रग बिरगे कपडा के चियडे, कागज के टुकडे, दवाइयो की टूटी फूटी डिबियां, इन को शोभिया और उनके बीच पीतल की एक बडी पिन दिखाई पड रही थी।

यह सब देखकर मेरा जी उदास हो गया और क्टर की पत्नी को एक बार और देखने तथा उसके सामने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरा मन ललकने लगा..

१०

बन्दर का पानी न भर जाने से भी पहले से हमारे घर के निक-
टिंग में रहने वाली मासी वाली एक युवा महिला रहा करती थी। साथ में एक
छोटी बच्ची और महिला की मां भी थी। मां बुढ़िया थी। उनके पति
गुजर हो गए थे और कमरे के सिगरेट-होल्डर को मुंह में दबाए बैठे-बैठे
वह सिगरेट का धुआं उड़ाती रहती थी। युवा महिला बड़ी खूबसूरत,
गर्वीली और नाक को घमंड से ऊंचा रखनेवाली थी। आवाज गहरी और
मधुर, लोगों से बोलते समय वह कुछ इस अन्दाज से पलका गिरा कर
का धार फेंकती तथा आंखों को सिकोड़ लेती मानो वे इतना दूर हों कि
साफ-साफ न दिखाई पड़ते हों। करीब-करीब हर रोज उसका सईस गोवर
जिसका नाम गुस्ताव था, लम्बी टांगों वाले कत्थई घोड़े को लेकर उसके
घर के सामने आ खड़ा होता और महिला हल्के रंग की घुड़सवारी की
लम्बी चमचमाती पोशाक पहने, हाथों में कटोरादार सफेद दस्ताने पहने
और पांव में घुटने ऊंचे बूट पहने बाहर निकल आती। एक हाथ से अपनी
पोशाक का छोर थाम और अपनी पतली को मूठ वाला हण्टर पकड़े दूसरे
हाथ से वह घोड़े के नथुने थपथपाती। घोड़े की नथौती पसर उठती,
अपनी आंखों को वह घुमाता तथा बड़ी शान से फुरफुराता, और उसके
समूचे बदन में एक सिहरन सी दौड़ जाती।

"रोवर! रोवर!" वह धीमे स्वर में गुनगुनाती और घोड़े की सख्त
हो सुंदर खमदार गरदन को जोर-जोर से थपथपाती।

फिर गुस्तावे के घुटने पर अपना पांव रखता, हल्के से उछलकर फुर्ती
से घोड़े पर सवार हो जाती और घोड़ा गर्व के साथ इठलाता-नाचता बांध
के किनारे किनारे चलने लगता। घोड़े पर वह कुछ इतने सहज भाव से
बैठती मानो जन्म से ही घुड़सवारी करती आयी हो।

यह उन विरल सुंदर स्त्रियों में से थी जिनका सौंदर्य सदा नया और
निराला प्रतीत होता है, जिन्हें देखकर हृदय पर एक नशा सा छा जाता
है, और रोम रोम खुशी से नाचने लगता है। जब मैं उसकी ओर देखता
तो ऐसा लगता कि डायना द-पोयतिये, रानी मार्गो, ला-वलियेर तथा
ऐतिहासिक उपन्यासों की अन्य नायिकाओं का सौंदर्य भी, बिला शक,
ऐसा ही रहा होगा।

छावनी के फौजी अफसर उसे बराबर घेरे रहते। साझ के समय उसके यहां बेला, प्यानो और गिटार बजाये जाते, नाच होते और गीत गाये जाते। अपनी ठिगनी टागो पर उसके सामने फुदकने मे ओलेसोव नाम का एक मेजर अन्य सभी को मात कर देता। मोटा-ताजा बदन, सफेद बाल और लाल चेहरा जिसकी चिक्नाहट देखकर जहाज के किसी मकैनिक के चेहरे का गुमान होता। वह गिटार बजाने मे माहिर था, और युवा महिला के सामने इस तरह बिछ जाता था मानो वह उसका बहुत ही वफादार और जमीन चूमनेवाला चाकर हो।

घुघराले बालों वाली उसकी पाच वर्षीया बच्ची भी उतनी ही उज्ज्वल और सुदर थी जितनी कि वह खुद। अपनी बडी-बडी नीली सी आखो से वह बडे ही शान्त, गम्भीर और आशा भरे अदाज मे देखती। उसकी इस गम्भीरता मे बचपन से अधिक बडप्पन का पुट दिखाई देता।

बच्ची की नानी पौ फटते ही उठ बठती और गई रात तक घर के धधो मे जुटी रहती। भौंहे चढ़ा और मुहबद तुफामेव और थलथल तथा एचो-तानी महरी काम मे बुढ़िया का हाथ बटाती। बच्ची के लिए कोई आया नहीं थी और वह लगभग बिना किसी देख भाल और निगरानी के, पल और बढ़ रही थी। ओसारे मे या उसके सामने जमा कुडा के ढेर पर वह दिन भर खेलती रहती। साझ होते ही मै बहुधा उसके पास पहुच जाता, उसके साथ खेला करता और वह मुझे बहुत प्यारी मालूम होती। शीघ्र ही वह मुझसे इतनी हिलमिल गई कि परियो की कहानिया सुनते-सुनते वह मेरी गोद मे ही सो जाती। जब वह सो जाती तो मैं उठता और उसे अपनी बाहो मे सभाले उसके बिस्तर पर सुला आता। देखते-देखते वह इतनी हिल गई कि जब तक मैं उसके पास जाकर उससे शुभरात्रि न कहता, वह सोने से इनकार कर देती। मैं उसके कमरे मे पर रखता, रोब के साथ वह अपना छोटा सा गुलाबी हाथ फलाती और कहती

"खुदा हाफिज कल तक के लिए। कसे कहना चाहिए, नानी?"

"खुदा तुम्हें खैरियत से रखे," मुह और पतली नाक मे से धुए की नीली धारें छोडते हुए उसकी नानी जवाब देती।

"खुदा तुम्हें खलियत से लखे कल तक, औल मैं अब सोऊगी।" वह दोहराती और लेस लगी अपनी रजाई मे कुनमुनाने लगती।

"बस डर नहीं, बल्कि हमेशा तबियत से रहे," उसकी नानी उसे ठीक करती।

"बस क्या हमेशा नहीं होता?"

'बस' शब्द से उसका खास लगाव था और जो भी चीज उसके मन को भाती उसे ही वह बस के खाते मे डाल देती। फूलों या टहनियों को वह मिट्टी मे गाड़ देती और कहती

"बस यह बाग बन जाएगा"

"एक दिन बस में एक घोला खलीदूगी औल मम्मा की तलह उसपल सवाल होकल घूमने जाया कलूंगी"

वह बहुत ही समझदार थी, लेकिन उत्साह और उछाह उसमें अधिक नहीं था। अक्सर खेलते-खेलते वह कुछ सोचने लगती और एकाएक पूछ बैठती

"पाईनिया के बाल ओलनों जसे क्यों होते हैं?"

एक दिन कटीली झाड़ी उसको चुभ गयी। वह उंगली से उसे धमकाते हुए कहने लगी

"देखो, मैं भगवान से पलालथना कलूंगी औल वो तुम्हें बली सजा देंगे। भगवान सभी को सजा दे सकते हैं—मम्मी को भी–"

कभी-कभी एक शान्त, गम्भीर उदासी उसपर छा जाती, अपने बदन को वह मुझसे सटा लेती। नीली, आशा भरी आंखों से आकाश की ओर देखती और कहती

"नानी कभी-कभी गुस्सा होती हैं, पल मम्मी कभी गुस्सा नहीं कलतीं, वो तो बस हसती लहती हैं। मम्मी को सब प्याल कलते हैं, क्योंकि उनके मेहमान आते लहते हैं, आते लहते हैं औल मम्मी को देखते हैं, क्योंकि वो बली सुदल हैं। वो—प्याली मम्मी हैं। प्रोफेसोव भी यही कहते हैं—प्याली मम्मी!"

बचपन की भाषा मे एक अनजानी दुनिया के बारे मे जब वह मुझे बताती तो बड़ा अच्छा लगता। अपनी मा का जिक्र करते समय उसके उछाह और तत्परता का वारापार न रहता, एक नए जीवन की मुझे झांकी मिलती और रानी मार्गो की कहानी की मुझे याद हो आती। इससे पुस्तकों मे मेरा विश्वास और भी बढ़ता, अपने चारो ओर के जीवन मे मैं और भी दिलचस्पी लेता।

एक दिन की बात है। सांझ का समय था। मेरे मालिक घूमने गए थे और मैं, बच्ची को अपनी गोद मे लिए, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। बच्ची की आखें झपक गई थीं। तभी उसकी मा घोडे पर सवार बाहर से लौटी, लचक के साथ वह जीन से नीचे उतरी और झटके से सिर ऊचा करके पूछा

"क्या सो गई है?"

"हा।"

"यह बात है "

सनिक तुफायेव लपककर आया और घोडे को अपने साथ ले गया। हटर को अपनी पेटी मे खोसते हुए महिला ने अपनी बाह फलाइ और मुझसे कहा

"इसे मुझे दे दो।"

"मैं खुद इसे पहुचा दूगा।"

"ऐं! " पाव पटककर वह इस तरह चिल्लाई मानो मैं घोडा हू।

लडकी चौंक उठी, आखें मिचमिचाकर उसने देखा, मा पर उसकी नजर पडी, और उसने भी अपनी बाहे फला दीं। दोनो भीतर चली गईं।

डाट डपट का मै आदी था। लेकिन इस महिला का चिल्लाना मुझे बहुत अटपटा मालूम हुआ। वह अगर हल्का सा इशारा भी करती तो सब उसकी आखो के आगे बिछ जाते।

कुछ ही क्षण बाद एची-तानी महरी ने मुझे आवाज दी। बच्ची ने हठ पकड ली थी और बिना मुझसे विदा लिये बिस्तर पर सोने से इनकार कर दिया था।

कुछ गव के साथ मैंने ड्राइगरूम मे पाव रखा। महिला लडकी को गोद मे लिए बठी थी और फुर्ती से उसके कपडे उतार रही थी।

"लो, यह आ गया तुम्हारा अवधूत!" उसने कहा।

"*यह अवदूत नहीं, यह तो मेया साथी है!*"

"यह बात है? बहुत अच्छा। चलो तुम्हारे इस साथी का कोई चीज भेंट करते हैं। करें?"

"हा हा, जलूल भेंट क्लो मा!"

"अच्छा तो तुम अब झटपट अपने बिस्तर पर चली जाओ। मै अभी उसे कोई चीज देती हू।"

"कल तक के लिए, खुदा हाफ़िज़!" हाथ फलाते हुए लड़की ने कहा। "खुदा तुम्हें खैरियत से रखें, कल तक..."

"अरे, यह तुमने कहां सीखा?" उसकी मां ने अचरज से पूछा। "क्या नानी ने सिखाया है?"

"हां"

जब लड़की सोने के लिए चली गई तो महिला ने मुझे अपने पास बुलाया

"तुम क्या लेना पसद करोगे?"

मैंने कहा कि मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं है, अगर पढ़ने के लिए कोई किताब मिल जाए तो अच्छा हो।

उसने अपनी सुहावनी, महकती हुई उगलियो से मेरी ठोडी को ऊपर उठाया और प्रसन्न भाव से मुस्कराते हुए कहा

"अच्छा, यह बात है, तुम्हे किताबें पढ़ने का शौक है, है न? *कौन-कौन सी किताबें पढ़ चुके हो?*"

जब वह मुसकराती तो और भी सुदर लगती। म अचकचा गया और हडबडाहट मे जो दो चार नाम याद आए, गिना दिए।

"इन पुस्तको मे क्या चीज़ तुम्हे अच्छी लगी?" उसने मेज पर हाथ रखकर और हल्के से उगलियो को हिलाते हुए पूछा।

उसके बदन से फूलो की तेज और मीठी महक आ रही थी जिसमे घोडे के पसीने की गध भी कुछ अजीब ढग से मिली हुई थी। अपनी लम्बी बरौनियों की आट मे से वह मुझे बडे ध्यान से परख रही थी। यह पहला अवसर था जब किसीने इस तरह मेरी ओर देखा था।

कमरा किसी पछी का घोसला मालूम होता था—इस हद तक वह सुदर गद्देदार मेज-कुसियो से भरा था। खिडकिया पौधो की घनी हरियाली मे छिपी थीं। सांझ की धुधली रोशनी मे अलावघर के बफ की भाति सफेद टाइल चमक रहे थे। पास ही मे काला प्यानो रखा था। दीवारो पर गिलट के धुधले चौखटो मे जडी सनदें लटक रही थीं। सनदो का कागज मटमैला पड गया था और उनपर स्लाव लिखावट मे कुछ लिखा था। प्रत्येक चौखटे से एक डोरी लटकी थी जिसके छोर में एक बडी सी मोहर झूल रही थी। ये सभी चीजें, मेरी ही भाति, विनत और श्रद्धाभाव से उसकी ओर देख रही थीं।

मुझसे जितना बन सका, मैंने बताया कि मुसीबतो ने मेरे जीवन को कितना बोझिल और रसहीन बना दिया है, और यह कि पुस्तके पढ़ने से कुछ देर के लिए जी जरा हल्का हो जाता है।

"अच्छा-आ, यह बात है?" उठते हुए उसने कहा। "बात तो बुरी नहीं है, बल्कि ठीक ही है अच्छा, तो किताबें मै तुम्हे दूगी, लेकिन इस वक्त मेरे पास कोई नहीं है हा, याद आया, अगर चाहो तो अभी इसे ले जा सकते हो "

काउच पर पीली जिल्द की एक पुरानी सी पुस्तक पडी थी। उसे उठाकर उसने मुझे दे दिया।

"जब इसे पढ़ चुको तो इसका दूसरा भाग ले जाना—इसके चार भाग हैं "

मेश्चेर्स्की लिखित "पीटसबग के रहस्य" बगल मे दबाए मैं वहा से लौट आया, और बडे ध्यान से उसे पढ़ने बठ गया। लेकिन पहले ही पन्नो से मुझे स्पष्ट हो गया कि मेड्रिड, लन्दन अथवा पेरिस के 'रहस्यो' के मुकाबले मे पीटसबग के 'रहस्यो' मे कहीं अधिक बोरियत भरी है। लेदेकर पुस्तक मे मुझे एक ही चीज पसन्द आई। वह चीज थी लाठी और आजादी के बीच सवाद

"मैं तुमसे बढ़कर हू," आजादी बोली, "क्योकि मेरे पास बुद्धि है।"

"ओह नहीं, मै तुमसे बढ़कर हू, क्योकि मैं सबल हू," लाठी ने जवाब दिया।

कुछ देर तक दोनो बहस करती रहीं और फिर गरमाकर लडने पर उतर आईं। लाठी ने आजादी की खूब मरम्मत की, और जहां तक मुझे याद है घायल हो जाने के कारण उसे अस्पताल ले जाया गया जहा उसने दम तोड दिया।

पुस्तक मे एक *निहिलिस्ट** की बात हो रही थी। मुझे याद है कि

---

*निहिलिज्म (सवखडनवाद)—१९वीं सदी के सातवे दशक मे रूस मे इस विचारधारा ने जन्म लिया। इसके अनुयायी, स्वतत्र विचारो के मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी कुलीन-बुजुआ रीतिया-परपराओ और भू-दासता की विचारधारा का जोरदार खडन करते थे।—स०

"कल तक के लिए, खुदा हाफिज़!" हाथ फैलाते हुए लड़की ने कहा। "खुदा तुम्हें खलियत से लखे, कल तक..."

"अरे, यह तुमने कहां सीखा?" उसकी मां ने अचरज से पूछा। "क्या नानी ने सिखाया है?"

"हां"

जब लड़की सोने के लिए चली गई तो महिला ने मुझे अपने पास बुलाया

"तुम क्या लेना पसद करोगे?"

मैंने कहा कि मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है, अगर पढ़ने के लिए कोई किताब मिल जाए तो अच्छा हो।

उसने अपनी सुहावनी, महकती हुई उगलिया से मेरी ठोडी को ऊपर उठाया और प्रसन्न भाव से मुस्कराते हुए कहा

"अच्छा, यह बात है, तुम्ह किताबें पढ़ने का शौक है, है न? कौन-कौन सी किताबें पढ़ चुके हो?"

जब वह मुसकराती तो और भी सुदर लगती। म अचकचा गया और हड़बड़ाहट मे जो दा चार नाम याद आए, गिना दिए।

"इन पुस्तको मे क्या चीज तुम्हे अच्छी लगी?" उसने मेज पर हाथ रखकर और हल्के से उगलियो को हिलाते हुए पूछा।

उसके बदन से फूलो की तेज और मीठी महक आ रही थी जिसमे घोड़े के पसीने की गध भी कुछ अजीब ढग से मिली हुई थी। अपनी लम्बी बरौनिया की ओट मे से वह मुझे बड़े ध्यान से परख रही थी। यह पहला अवसर था जब किसीने इस तरह मेरी ओर देखा था।

कमरा किसी पछी का घोसला मालूम होता था—इस हद तक यह सुदर गद्देदार मेज-कुर्सियो से भरा था। खिड़किया पौधो की घनी हरियाली मे छिपी थीं। साझ की धुधली रोशनी मे अलावघर के बर्फ की भाति सफेद टाइल चमक रहे थे। पास ही में काला प्यानो रखा था। दीवारों पर गिलट के धुधले चौखटो मे जड़ी सनदें लटक रही थीं। सनदों का कागज मटमला पड़ गया था और उनपर स्लाव लिखावट मे कुछ लिखा था। प्रत्येक चौखटे से एक डोरी लटकी थी जिसके छोर मे एक बड़ी सी मोहर झूल रही थी। ये सभी चीजें, मेरी ही भाति, विनत और श्रद्धाभाव से उसकी ओर देख रही थीं।

मुझसे जितना बन सका, मैंने बताया कि मुसीबतों ने मेरे जीवन को कितना बोझिल और रसहीन बना दिया है, और यह कि पुस्तकें पढ़ने से कुछ देर के लिए जी जरा हल्का हो जाता है।

"अच्छा-आ, यह बात है?" उठते हुए उसने कहा। "बात तो बुरी नहीं है, बल्कि ठीक ही है अच्छा, तो किताबें मैं तुम्हें दूंगी, लेकिन इस वक्त मेरे पास कोई नहीं है हां, याद आया, अगर चाहो तो अभी इसे ले जा सकते हो "

काउच पर पीली जिल्द की एक पुरानी सी पुस्तक पड़ी थी। उसे उठाकर उसने मुझे दे दिया।

"जब इसे पढ़ चुको तो इसका दूसरा भाग ले जाना–इसके चार भाग हैं-"

मेश्चेर्स्की लिखित "पीटर्सबर्ग के रहस्य" बगल में दबाए मैं वहां से लौट आया, और बड़े ध्यान से उसे पढ़ने बैठ गया। लेकिन पहले ही पन्नों से मुझे स्पष्ट हो गया कि मैड्रिड, लन्दन अथवा पेरिस के 'रहस्यों' के मुकाबले में पीटर्सबर्ग के 'रहस्यों' में कहीं अधिक बारीकी नहीं है। ले-देकर पुस्तक में मुझे एक ही चीज पसन्द आई। वह था लाठी और आजादी के बीच संवाद

"मैं तुमसे बढ़कर हूं," आजादी बोली, "क्योंकि मेरे पास बुद्धि है।"

"ओह नहीं, मैं तुमसे बढ़कर हूं, क्योंकि मैं मजबूत हूं," लाठी ने जवाब दिया।

कुछ देर तक दोनों बहस करती रहीं और फिर गरमाकर लड़ने पर उतर आईं। लाठी ने आजादी की खूब मरम्मत की, और जहां तक मुझे याद है घायल हो जाने के कारण उसे अस्पताल में लाया गया जहां उसने दम तोड़ दिया।

पुस्तक में एक निहिलिस्ट* की बात हो रही थी। मुझे याद है कि

---

*निहिलिज्म (शून्यवाद)–१९वीं सदी के सातवें दशक [illegible] में इस विचारधारा ने जन्म लिया। इसके अनुयायी, [illegible] मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी पुरानी [illegible] रीति-रिवाजों और [illegible] विचारधारा का [illegible] खण्डन करते थे।–सं०

पुस्तक के लेखक प्रिंस मेन्चेरस्की ने इस पात्र को एक ऐसा विषला हौवा बनाकर पेश किया था जिसकी नजर पड़ने से मुर्गियां यहीं की वहीं ढेर हो जाती हैं। मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो निहिलिस्ट शब्द अपमानजनक तथा अनिष्ट है। इसके अलावा और कुछ मेरे पल्ले नहीं पड़ा और इस बात से मेरा जी भारी हो गया। मुझे लगा कि अच्छी पुस्तकों को समझना मेरे बते से बाहर है। पुस्तक के अच्छी होने में मुझे रत्ती भर भी सन्देह नहीं था। मैं यह सोच तक नहीं सकता था कि इतना सुंदर और रोबदार महिला का बुरी पुस्तकों से कभी कोई लगाव हो सकता है।

"क्या पसन्द आई?" जब मैं मेन्चेरस्की का पीला उपन्यास लौटाने गया तो उसने पूछा।

मुझसे यह स्वीकार करते नहीं बना कि पुस्तक अच्छी नहीं लगी। डर था कि कहीं वह बुरा न मान जाए।

वह केवल हंस दी और पर्दा उठाकर अपने सोनेवाले कमरे में गायब हो गई। कमरे में से वह लौटकर आई तो उसके हाथ में चमड़े की नीली जिल्द बंधी एक पुस्तक थी।

"यह तुम्हें अच्छी लगेगी। लेकिन इसे गंदा न कर लाना, समझे!"

इसमें पुश्किन की कविताएं थीं। एक ही बैठक में मैं सारी कविताएं पढ़ गया। मैं एक ऐसी अनबूझ अनुभूति से ओतप्रोत था, जिसका अनुभव अनदेखे सुंदर स्थल पर पहुंच जाने पर होता है—सदा यह इच्छा होता है कि तुरंत ही सारी जगह भाग भागकर देख ली जाये। ऐसी अनुभूति तब होती है, जब बड़ी देर तक दलदली जंगल के कांटेदार चप्पों पर चलने के बाद, यकायक आंखों के सामने फूलों से भरा, धूप में नहाता खुला मैदान खुलता है। एक क्षण के लिए हम उसे मंत्रमुग्ध से देखते रहते हैं, फिर आनंद मग्न भागकर उसका पूरा चक्कर लगाते हैं और पैरों पर उर्वरा धरती की नरम घास के प्रत्येक स्पर्श से हृदय में खुशी की लहर दौड़ जाती है।

पुश्किन की कविताओं ने, उनकी सादगी और संगीत ने, मुझपर कुछ ऐसा जादू किया कि इसके बाद बहुत देर तक गद्य मुझे अस्वाभाविक लगने लगा और उसे पढ़ना अटपटा लगता। "रूस्लान और ल्युदमीला" का

कया प्रवेश तो मानो नानी की श्रेष्ठतम कहानियो का निचोड था और कुछ पक्तियो ने अपनी सच्चाई से मुझे मुग्ध कर दिया

वहा, उन अनजानी पगडडियो पर,
अनदेखे जतुओ के पद चिन्ह

इन अदभुत पक्तियो को मै बार-बार गुनगुनाता और मेरी आखो के सामने हर डग पर ओझल हो जानेवाले उन पथो का चित्र मूर्त हो उठता जिनसे कि मैं खूब परिचित था, वे पगडडिया मेरी आखो के सामने उभर आतीं जिनकी रौंदी हुई घास किसी के अभी अभी उधर से गुजरने की कहानी कहती और घास की दबी कुचली पत्तियो पर ओस के कण पारे की भारी बदो की भाति अभी भी चमकते होते। भरी पूरी ध्वनि से युक्त पक्तिया सहज ही जबान पर चढ जातीं। हर बात मे एक अजीब निखार दिखाई देता। मेरा रोम रोम खुशी से भर जाता, जीवन अधिक आसान और सुहावना मालूम होता। कविताए क्या थीं नये जीवन का हृप नाद थीं। कितनी अच्छी बात है कि मुझे पढना आता है!

पुश्किन की पद्यमय गाथाए मेरे हृदय और समझ के लिए सबसे निकट थीं। कुछेक बार पढने पर मुझे जबानी याद हो गइ। जब मैं सोने के लिए जाता तो चुपचाप लेटकर अपनी आखें बद कर लेता, उन्हे मन ही मन दोहराता और मुझे पता भी न चलता कि कब नींद आ गई। कभी कभी मैं अफसरो के साईसो-अरदलियो को भी उन्हे सुनाता। उनके चेहरे खिल जाते और वे चकित होकर कसमे खाते,—गालिया प्रशसा के उदगार बनकर उनके मुह से प्रकट होतीं। सीदोरोव मेरा सिर सहलाता और धीमे स्वर मे कहता

"वाह, कितनी सुदर है, है ना?"

मालिको से यह छिपा न रहा कि आजकल मैं किस रग मे डूबा हू। बुढ़िया मुझे डाटना झिडकना शुरू करती

"देखो तो, किताबो मे मस्त हो गया है, शतान की दुम, और समोवार तो चार दिन से साफ नहीं किया। दा-चार बेलने पडे, तो पता चलेगा"

लेकिन पुश्किन की कविताओ के सामने बेलने की भला क्या बिसात? जवाब मे मैं पुश्किन की पक्तिया गुनगुना उठता

बढ़ी से उठी प्यार,
काले दिल की धुड़स सुर्राट...

महिला मेरी नजरों मे और भी ऊची उठ गयी। जो इतनी बढ़िया पुस्तकें पढ़ती थी! वह धोनो की गुड़िया नहीं थी

पुस्तक को लौटाते समय मेरा जी भारी हो गया। उसने पुस्तक मेरे हाथ से ले ली और विश्वास के साथ बोली

"यह तो तुम्हें पसद आई है न! क्या तुमने कभी पुश्किन के बारे मे सुना है?"

पुश्किन के बारे मे एक पत्रिका मे मैं कुछ पढ़ चुका था। लेकिन मैंने इसका जिक्र तक नहीं किया। मैं खुद उसके मुह से सुनना चाहता था कि यह क्या कहती है।

पुश्किन के जीवन और मत्यु का थोड़े में कुछ हाल बताने के बाद वसती दिन की भांति मुसक्राकर उसने पूछा

"देखा तुमने, स्त्री से प्रेम करना कितना खतरनाक होता है?"

अब तक जितनी भी पुस्तके मैं पढ़ चुका था, उनके हिसाब से तो निश्चय ही यह खतरनाक था—खतरनाक, लेकिन साथ ही अच्छा भी। मैंने कहा

"खतरनाक है, फिर भी सब प्रेम करते हैं! और स्त्रियां भी इससे तड़पती हैं"

बरौनियो के पीछे से उसने मेरी ओर देखा, जसे कि वह हर चीज को देखती थी। फिर गम्भीर स्वर मे बोली

"अच्छा, यह बात है? तुम यह समझते हो? तो मैं तुम्हें यही कहूगी कि इस सत्य को कभी आंखो की ओट न होने देना!"

इसके बाद उसने पूछना शुरु किया कि कौन कौन सी कविताए मुझे खास तौर से अच्छी लगीं।

मैं उसे बताने लगा। कई कविताए मैं जबानी सुना गया। सुनाते समय उछाह के साथ मैं हाथ भी हिलाता जाता। वह चुपचाप, सन्नाटा खींचे सुनती रही। फिर वह उठी और कमरे मे टहलने लगी। गम्भीर स्वर में बोली

"मेरे बेशकीमती नन्हे बवर, तुम्हें स्कूल मे जाना चाहिए। मैं इस बारे मे सोचूगी जिनके यहां तुम काम करते हो, क्या वे तुम्हारे रिश्तेदार हैं?"

जब मैंने बताया कि हां, रिश्तेदार हैं, तो उसने कुछ इस अन्दाज से 'ओहो' कहा मानो मेरी निंदा कर रही हो।

इसके बाद उसने मुझे "बेरांजे के गीतों" का एक संग्रह दिया। यह बहुत ही बढ़िया सुनहरी कोर और चमड़े की लाल जिल्द वाला संस्करण था। गीतो के साथ चित्र भी थे। इन गीतों में तीखी, झुलसा देनेवाली कड़वाहट भी थी और सभी बाधा-बन्धनो को तोड़कर बहनेवाली खुशी की लहर भी। इन दोनो का हृदय पर छा जानेवाला अद्भुत मेल था।

"बूढ़े भिखारी" के तीखे शब्दों से मेरी रगो मे रक्त की रवानी रुक गई

> दुष्ट कीड़ा—करता परेशान है तुम्हें?
> कुचल दो परो तले घिनौने कीड़े को!
> तरस क्या, रौंद डालो फौरन!
> क्यो मुझे पढ़ाया नहीं,
> प्रचण्ड शक्ति को नहीं दिया निकास?
> जाता कीड़ा भी चींटी बन!
> मरता मैं भी भाइयो की बांहो मे।
> किंतु बूढ़ा अकेला मैं मरता हू
> मिले तुम्हें बदला,
> पुकार यह करता हू।

एक दूसरे गीत "रोता हुआ पति" को पढ़कर मैं इतना हसा कि आखो से पानी निकलने लगा। उसकी यह फबती मुझे खास तौर से याद है

> हैं जो सीधे सादे लोग
> नहीं मन मे जिनके कुछ खोट
> सीख लेते वे ही जल्दी,
> कला हसने और हसाने की!

बेराजे के गीत मेरी भावनाओ को मुहजोर बनाते, शतानी करने, चुटकिया लेने तथा फबतिया कसने के लिए मुझे उकसाते और अटपटा तथा बुरी लगनेवाली बाते करने के लिए मेरा जी ललकता और शीघ्र ही मैंने यह सब शुरू कर दिया। उसकी पक्तिया भी मुझे जबानी याद हो गई और जब भी अरदलियो के रसोईघर मे जाने का मौका मिलता, बेहद उत्साह के साथ मे उन्हें सुनाता।

लेकिन, निम्न पक्तियो की वजह से, मुझे जल्दी ही यह सब छोड देना पडा

बरस सत्रह की छोकरी का,
कौन न पकडे छोर!

इन पक्तियो के बाद स्त्रियो को लेकर अत्यत घिनौनी चर्चा चल पडी। अपमान की भावना से मेरा दिमाग भन्ना गया, गुस्से के मारे मैंने पतीला उठाया और उसे सनिक येरमोखिन के सिर पर दे मारा। सीदोरोव और दूसरे अरदलियो ने लपककर उसके बेडौल पजो से मुझे छुडाया। इसके बाद अफसरो के रसोईघरो मे जाने का मैंने नाम नहीं लिया।

बाहर घूमने फिरने की मुझे मनाही थी, और सच तो यह है कि मटरगश्ती के लिए समय भी नहीं मिलता था। पहले से कहीं ज्यादा काम मुझे अब करना पडता था। अब बरतन माजने, झाड बुहारी देने और बाजार से सौदा सुलफ लाने के अलावा मै हर रोज चौडे तख्तो पर कार्लो से कपडा जमाता, फिर मालिक के खींचे हुए डिजायन उसपर चिपकाता, इमारती पश्मीनो की नकले उतारता और ठेकेदारो के बिलो की जाच पडताल करता—मेरा मालिक मशीन की भाति सुबह से लेकर रात तक काम मे जुटा रहता।

मेले की सावजनिक इमारत उन दिनो सौदागरो के निजी हाथों मे जा रही थीं। बाजारो को फिर से बनाने के काम मे खूब आपाधापी चल रही थी। मेरे मालिक ने पुरानी दुकानो की मरम्मत करने और नयी दुकानें बनाने का ठेका लिया था। सीधी मेहराबों के पुनर्निर्माण, रोशनदानों को बनाने और इसी तरह की अन्य चीजो के नक्शे वह बनाता था। इन नक्शो तथा इनके साथ लिफाफे मे पच्चीस रूबल का एक नोट लेकर मैं बूढे वास्तुकार के पास पहुचता। वह लिफाफा सभालकर रख लेता और

नक्शो पर लिख देता "नक्शे सही हैं। सारा काम इनके मुताबिक मेरी निजी निगरानी मे हुआ है।" अत मे वह अपने दस्तखत बना देता। कहने की आवश्यकता नहीं कि निर्माणाधीन इमारतें उसने देखी तक न थीं तथा जांच और निगरानी करने का तो सवाल ही नहीं उठता था, क्योंकि बीमारी ने उसे बेकार कर दिया था, और वह हमेशा घर के भीतर ही बद रहता था।

मेले के इन्स्पेक्टर तथा अन्य कई जरूरी लोगो को भी मैं घूस का पैसा देने जाता और उनसे, अपने मालिक के शब्दो मे, 'विभिन्न क़ानूनो को ताक पर रखने का परमिट' ले आता। मेरे इन सब कामो से खुश होकर मालिक ने मुझे यह इजाजत दी कि साझ के समय जब कभी वे बाहर घूमने जाए तो अहाते मे बैठकर मैं उनका इन्तजार कर सकता हू। ऐसा बिरले ही होता, लेकिन जब भी जाते तो आधी रात के बाद लौटते। इस तरह मुझे कई घटे मिल जाते, ओसारे या उसके सामने पडे कुदो के ढेर पर मैं अड्डा जमाता और रानी मार्गो के घर की खिडकियो पर नजर जमाए वहा छनछनकर आते सगीत, चुहल की आवाजो को अवाक सुनता रहता।

खिडकिया खुली होतीं। परदो और फूलो की बेलो की झिरियो मे से मुझे अफसरो की सुदर आकृतियो की झलक दिखाई देती जो कमरे मे इधर से उधर मडराते रहते। अदभुत सादगी और सौदय से सदा सज्जित वह मानो कमरे मे तरती मालूम होती और गोल-मटोल थलथल मेजर उसके दामन से चिपका लुढ़कता-पुढकता रहता।

मन ही मन मैंने उसका नाम रानी मार्गो रख छोडा था। खिडकियो पर मेरी आखें जमी होतीं और मन ही मन मै सोचता था

"तो यह है वह इन्द्रधनुषी जीवन जिससे फ्रासीसी उपन्यासो के पन्ने रगे रहते हैं!" मेरा जी अदबदाकर भारी हो जाता, और मेरा छोटा सा हृदय ईर्ष्या से बल खाने लगता जब मैं रानी मार्गा के चारो ओर पुरुषो को इस तरह मडराते भनभनाते देखता जसे फूला पर भौंरे मडराते हैं।

कभी कभी, लम्बे कद और गम्भीर चेहरे वाले एक अफसर पर मेरी नजर पडती। अन्य लोगो के मुकाबले मे वह बहुत कम आता था। उसके माथे पर घाव का निशान था, और उसकी आखें खूब गहरी धसी थीं।

वह हमेशा अपनी वायलिन साथ लेकर आता। वायलिन बजाने मे उसे कमाल हासिल था। तारो को जब वह छेडता तो राह चलते लोग ठिठककर सुनने लगते, मोहल्ले के लोग कूडो के ढेर पर आकर बठ जाते, यहां तक कि मेरे मालिक भी—अगर वे उस समय घर पर होते—खिडकियां खोलकर मुग्ध भाव से सुनते, वायलिन बजानेवाले की सराहना करते। मुझे याद नहीं पडता कि मैंने उनके मुह से किसी की तारीफ सुनी हो,—केवल कथीड्रल के पादरी को छोडकर, और मैं जानता था कि मछली की मजेदार कचौरियों पर उनकी राल जितनी टपकती थी, उतनी किसी भी सगीत पर नहीं।

कभी कभी, भरभरी सी आवाज मे, अफसर गाता या कविताए सुनाता। गाते समय वह जोरो से सास भरता, हथेली को माथे से सटा लेता। एक दिन, उस समय जब मैं खिडकी के नीचे बच्चो से खेल रहा था, रानी मार्गो ने उससे गाने के लिए अनुरोध किया। कुछ देर तक तो वह टालता रहा, फिर बहुत ही सुनिश्चित अदाज मे उसके मुह से निकला

> है केवल गीत को आवश्यकता सौदर्य की—
> सौदय को नहीं चाहिए गीत भी...

मुझे ये पक्तियां बेहद पसद आईं और, न जाने क्या, इस अफसर पर मुझे तरस आया।

और उस समय तो मैं निहाल हो जाता जब मेरी रानी पियानो पर अकेली बठी होती, कमरे मे उसके सिवा जब और कोई न होता। मेरे मस्तिष्क और हृदय पर सगीत का एक नशा सा छा जाता, खिडकी के सिवा और कुछ न दिखाई देता, लम्प की सुनहरी रोशनी मे उसके कमनाय शरीर की रेखाए और भी उभर आतीं, उसका गर्वीला चेहरा बहुत ही कोमल और सुदर मालूम होता और उसकी श्वेत उगलिया पक्षियों की भांति पियानो के पर्दों पर फडफडाती रहतीं।

मैं उसे देखता रहता, सगीत की उदास स्वर लहरिया मेरे कानों का स्पश करतीं और मैं अजीब-अजीब सपनो का ताना-बाना बुनने लगता कहीं जमीन में गडा खजाना मेरे हाथ लग जाता है और मैं वह सब उसे ही सौंप देता हू—वह धनवान हो! कल्पना में नये स्कोबेलेव का रूप धारण कर मैं तुर्कों क खिलाफ युद्ध करता, उनसे भारी हर्जाना लेकर नगर के सब से अच्छे हिस्से—ओत्कोस मे—उसके लिए एक घर बनवाता, ताकि

उसे हमारे इस घर मे न रहना पडे, हमारे इस मोहल्ले से वह दूर चली जाए जहा सब एक स्वर से उसके बारे मे गदी बाते करते और उसपर कीचड उछालते हैं।

हमारे अहाते मे काम करनेवाले सभी नौकर चाकर और उसमे आबाद सभी लोग, खास तौर से मेरे मालिक, रानी मार्गो के बारे मे भी वसी ही कुत्सित बातें करते थे जसी कि वे कटर की पत्नी के बारे मे करते थे, अन्तर इतना ही था कि इसका जिक्र करते समय वे कुछ अधिक चौकन्ने हो जाते थे, धीमे स्वर मे चारो और देख देखकर बोलते थे।

शायद वे उससे डरते थे। कारण कि वह किसी ऊचे कुल के व्यक्ति की विधवा थी। तुफ़ायेव ने एक बार मुझे बताया था,—और वह निरक्षर भट्टाचाय नहीं, बल्कि पढ़ना जानता था और सदा इजील का पाठ करता रहता था,—कि उसकी दीवार पर लटकी सनदें रूस के प्राचीन जारो ने—गादुनोव, अलेक्सेई और प्योत्र महान ने—उनके पति के दादा-परदादाओ को दी थीं। लोग शायद इसलिए भी इससे डरते थे कि कहीं वह बगनी पत्थर की मूठ वाले अपने हण्टर से उनकी खबर न लेने लगे। कहा जाता था कि एक बार इस हण्टर से उसने किसी बडे अफसर की खूब मरम्मत की थी।

लेकिन फुसफुसाकर और धीमे स्वरो मे कहे गए शब्द केवल इस लिए अच्छे नहीं हो जाते कि वे जोरो से नहीं कहे गए। मेरी रानी के चारों ओर ऐसी दुश्मनी के बादल मडराते जो मेरी समझ मे नहीं आती थी और मुझे सताती थी। वीक्तर दून की हाकता कि एक बार आधी रात के बाद लौटते समय उसने रानी मार्गो के शयनकक्ष की खिड़की में [illegible] देखा। वह काउच पर सिफ सोने का लबादा पहने बैठी थी और [illegible] घुटनो के बल झुका हुआ उसके पाव के नाखून काट [illegible] और [illegible] से उसके पाव पखार रहा था।

यह सुनकर बूढ़ी मालकिन ने जमीन पर थूका [illegible] दिया। छोटी मालकिन के गाल बुरी तरह लाल [illegible]।

"ओह वीक्तर!" वह चीख उठी। "[illegible] है? और इन बड लोगा की चाल-ढाल [illegible]—[illegible] पिये बिना उन्हें चन नहीं आता!"

मालिक केवल मुसकराकर [illegible], [illegible]। [illegible]

मन ही मन मैंने उसका भारी अहसान माना। लेकिन यह डर बराबर बना रहा कि अपनी जबान खोलकर इस नक्कारखाने में किसी भी क्षण हमर्री के साथ यह अपना स्वर मिला सकता है। स्त्रिया न खूब सिसकारियां भरीं, आह और ओह का अम्बार लगा दिया और खोद खोदकर एक एक बात उन्होंने बोक्तर से पूछी महिला ठीक किस तरह बठा थी, और मेजर ठीक किस प्रकार उसके सामने झुका हुआ था, और बोक्तर चबे हुए निवाले उनके सामने फेंकता रहा

"मेजर का थूथा एकदम चुकन्दर जसा लाल था और जीभ बाहर निकल आई थी "

मुझ इसमे गमिदगी की ऐसी कोई बात नहीं दिखाई दी कि मेजर महिला के पांव के नाखून काट रहा था। लेकिन यह बात मेरे मन मे नहीं जमी कि उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी। मुझे लगा कि यह घिनौना झूठ उसका मनगढ़त है।

"अगर यह ठीक नहीं था तो तुम खिडकी के भीतर नजर गडाए देखते कसे रहे?" मैंने कहा। "तुम कोई बच्चे तो हो नहीं "

झिडकिया की उन्होने मुझपर बौछार की, लेकिन उनकी झिडकियों की मुझे चिंता नहीं थी। मेरे मन मे एक ही लगन थी—लपककर जीने से नीचे उतर जाऊ और मेजर की भाति महिला के सामने घुटनो के बल झुककर कहू

"आप यहा से चली जाइये, इस घर को छोड दीजिये, मेरी बात मानिये!"

अब जब मै जान चुका था कि दुनिया मे दूसरी तरह का जीवन और दूसरी तरह के लाग, दूसरी तरह के विचार और भावनाए भी हैं, तो यह अहाता और इस अहाते मे बसनेवाले मुझे और भी ज्यादा घिनौने मालूम होते। कुत्सा का ऐसा जाल यहा फैला था कि उसमे सभी फसे थे,—एक भी माई का लाल ऐसा न था जो उससे बचा हो। फ़ौज का पादरी जो फटे हाल और सदा रोगी सा आदमी था, उसे भी इन लोगों ने नहीं छोडा था—चरित्रहीन पियक्कड के रूप मे उसे बदनाम कर रखा था। मेरे मालिको की जबान जब चलती तो वे सभी अफसरो और उनकी पत्नियो को एक सिरे से पाप के कुण्ड मे डुबा देते। स्त्रियो के बारे मे सनिको की आये दिन एक सी बातो से मुझे उबकाई आने लगी थी और

सबसे ज्यादा उबकाई मालिको पर आती थी—उनके फतवा की असलियत, जिन्हे वे दूसरो पर करते थे, मैं खूब अच्छी तरह पहचानता था। दूसरो की छीछालेदर करना, उनके नुक्स निकालकर रखना, एक ऐसा मनोरंजन है जिसपर कुछ खर्च नहीं करना पडता, और बे-पसे का यह मनोरंजन ही उनका एक मात्र मनबहलाव था। ऐसा मालूम होता मानो ऐसा करके वे खुद अपने जीवन की ऊब, नेकचलनी और घिसघिस का बदला चुका रहे हो।

रानी मार्गो के बारे मे जब वे एक से एक गदे किस्से बघारने लगते तो मेरा हृदय बुरी तरह उमडता घुमडता और ऐसी ऐसी बाते मुझे झझोड डालतीं जिनसे कि उस आयु मे मेरा कोई वास्ता नहीं होना चाहिए था। कुत्सा फलानेवालो के खिलाफ मेरे हृदय मे जोरा से घृणा सिर उठाती, जी करता कि सबको चिढ़ाऊ, उनके लिए जीना हराम कर दू। लेकिन कभी-कभी अपने पर और अन्य सब लोगा पर तरस की भावना मुझे घेर लेती। तरस की यह गुमसुम भावना मुझे घृणा से ज्यादा असह्य मालूम होती।

रानी मार्गो के बारे मे मैं जितना जानता था, उतना वे नहीं, और मैं मन ही मन डरता कि कहीं उन्हे भी यह सब न मालूम हो जाए जो मैं जानता हू।

त्योहारो के दिन सुबह के समय जब घर के लोग गिरजे चले जाते तो मै अपनी रानी के पास पहुच जाता। वह मुझे अपने शयनकक्ष मे ही बुला लेती, और मै सुनहरी गद्दियो से सुसज्जित एक छोटी सी आरामकुर्सी पर बठ जाता, बच्ची उचककर मेरी गोदी मे सवार हो जाती और मै उसकी मा से उन किताबो के बारे मे बातें करता जिन्हे मैं पढ चुका था। अपनी छोटी छोटी हथेलियो पर गालो को टिकाए वह एक चौडे पलग पर लेटी रहती, कमरे की अन्य सभी चीजा की भाति उसके बदन पर भी सुनहरे रग की रजाई पडी होती चोटी मे गुथे हुए काले बाल उसके गेहुवा कधे पर लटके उसके सामने बिखरे होते और कभी पलग की पट्टी से खिसककर फश तक झूलने लगते।

मेरी बातें सुनते समय कोमल नजरो से वह मुझे देखती और हल्की सी मुसकराहट के साथ कहती

"अच्छा, यह बात है?"

मुझे ऐसा मालूम होता मानो सचमुच की रानी की भांति किसी ऊंचे सिंहासन से वह अपनी मुस्कान का दान कर रही हो। गहरी और कोमल आवाज में जब वह बोलती तो मुझे ऐसा लगता मानो वह कह रही हो

"मैं जानती हूं कि मैं अन्य लोगों से ऊंची, उत्कृष्ट हूं, और यह कि वे मेरे लिए किसी मसरफ के नहीं हैं।"

उसकी आवाज से सदा यही एक ध्वनि निकलती।

कभी-कभी मैं उसे आईने के सामने एक नीची सी कुर्सी पर बैठे हुए बाल संवारते देखता। उसके बाल भी उतने ही घने और लंबे थे जितने कि नानी के। वे उसके घुटनों और कुर्सी की बांहों पर छा जाते, उसकी पीठ पर से झूमते हुए फर्श को छूने लगते। आईने में मुझे उसकी गदराई हुई छातियां दिखाई देतीं। मेरी मौजूदगी में ही वह अपनी चोली कसती और मोजे पहनती, लेकिन उसका नंगा बदन मेरे हृदय में कामनाक भावनाएं नहीं जगाता, बल्कि उसका सौंदर्य एक आह्लादपूर्ण गौरव का मुझमें संचार करता। उसके बदन से सदा फूलों की महक निकलती जो वासना में डूबे विचारों और भावनाओं से कवच की भांति उसकी रक्षा करती।

मैं मजबूत बदन का और खूब भला-चंगा था। स्त्री-पुरुष के संबंधों के भेद मुझसे छिपे नहीं थे। लेकिन इन संबंधों के बारे में लोगों को मैं इतने गंदे और हृदयहीन ढंग से तथा इस हद तक कुत्सित रूप में रस लेते हुए बातें करते सुन चुका था कि इस स्त्री के साथ किसी पुरुष के आलिंगन की मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था, मेरे मन में यह बात खूब गहरी पैठ गई थी कि उसके शरीर को अपने निर्लज्ज और दुस्साहसी हाथों से छूने का किसी का अधिकार नहीं है। मुझे पक्का यकीन था कि रसोईघरों और कोने-कोने वाले प्रेम से रानी मार्गो का कोई वास्ता नहीं हो सकता। वह जरूर ही किसी अन्य, ज्यादा ऊंचे और भले आनंद का, एक दूसरे ही प्रकार के प्रेम का, भेद जानती होगी।

लेकिन एक दिन काफी दोपहर बीते जब मैंने उसके बैठने के कमरे में पांव रखा तो मेरी रानी के खिलखिलाकर हंसने और शयनकक्ष वाले दरवाजे पर पड़े पर्दे के पीछे किसी पुरुष के बोलने की आवाज सुनकर मैं ठिठक गया।

"अरे जरा ठहरो तो!" वह कह रहा था। "तुम भी गजब करती हो। कोई क्या कहेगा?"

मै समझता था कि मुझे उलटे पाव लौट जाना चाहिए, लेकिन मेरे पावो ने मानो हिलने से इनकार कर दिया।

"कौन है?" उसने पूछा। "अरे, तुम हो? भीतर चले आओ!"

कमरा फूलो की महक मे डूबा था। खिडकियो पर परदे खिचे हुए थे। कमरे मे अधेरा सा छाया था रानी मार्गो ठोडी तक अपने बदन पर रजाई खीचे पलग पर लेटी थी। उसके पास ही, दीवार की ओर मुह लिए, वह वायलिन-वादक अफसर बठा था। वह केवल एक कमीज पहने था। कमीज का गला खुला था और दाहिने कधे से लेकर सीने तक घाव का एक निशान था—इस हद तक चटक लाल कि इस अध उजियाले कमरे मे भी साफ नजर आता था। उसके बाल कुछ अटपटे ढग से बिखरे हुए थे। उसके उदास तथा घाव-लगे चेहरे को मैंने पहली बार मुसकराते हुए देखा। वह अजीब ढग से मुसकरा रहा था और अपनी बडी-बडी स्त्रण आखो से मेरी रानी की ओर इस तरह देख रहा था मानो उसके सौदय को उसने पहली बार ही देखा हो।

"यह मेरा मित्र है," रानी मार्गो ने कहा, और मैं समझ नहीं पाया कि किसके लिए उसने इन शब्दो का इस्तेमाल किया था मेरे लिए अथवा उस अफसर के लिए।

"अरे, तुम वहीं ठिठककर क्यो खडे खडे रह गए?" उसकी आवाज जसे कहीं बहुत दूर से आती मालूम हुई। "इधर आओ "

जब मैं निकट पहुचा तो उसने अपनी उघरी हुई गम बाह मेरे गले में डाल दी और बोली

"बडे होने पर तुम भी जीवन के सुख का आनन्द ले सकोगे जाओ!"

किताब को मैंने ताक पर रख दिया, एक दूसरी पुस्तक उठाई और वहा से चला आया।

मेरे हृदय मे कोई चीज कचर गई। स्पष्ट ही, एक क्षण के लिए भी मैं यह नहीं सोच सकता था कि मेरी रानी भी अन्य साधारण लोगो की भाति प्रेम करती होगी, न ही उस अफसर के बारे मे ऐसी कोई बात मेरे दिमाग मे आती थी। मैं उसकी मुसकान देख रहा था—वह खुशी के साथ मुसकरा रहा था, जसे कोई बच्चा सहसा विस्मित होकर मुसकराता है, उसके उदास चेहरे का जसे एकदम कायापलट हो गया था।

उसका हृदय, निश्चय ही, उसके प्रेम से डगमगा रहा था। और यह कोई अनहोनी बात नहीं थी—ऐसा भला कौन था जो उसे प्रेम करने से अपने आप को रोक सकता? और एक ऐसे आदमी पर जो इतनी सुंदर वायलिन बजाता था और भावों में खूब गहरे डूबकर कविताएं सुनाता था, उसका प्रेम न्योछावर करना भी कोई अनहोनी घटना नहीं था

इन दिलासों को पाने की जरूरत इस बात का स्पष्ट सूचक थी कि जो कुछ मैंने देखा है उसके प्रति और खुद रानी मार्गो के प्रति मेरे रवैये में जरूर कहीं न कहीं कोई खोट है। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई चीज खो गई हो। कई दिन गहरी उदासी ने मुझे घेरे रखा।

एक दिन मेरे दिमाग पर जैसे शैतान सवार हो गया और मैंने जमकर उत्पात मचाया। पुस्तक लेने जब मैं महिला के पास पहुंचा तो उसने कड़ी आवाज में कहा

"मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि तुम इतना जंगलीपन करोगे शैतानी की भी एक हद होती है!"

मैं यह बरदाश्त नहीं कर सका, मेरा हृदय भर आया और मैंने उसे बताना शुरू किया कि मेरे लिए जीना कितना कठिन है, कि उस समय जब लोग उसके बारे में वाहीतबाही बकते हैं तो मेरे हृदय पर क्या गुजरती है। वह मेरे सामने खड़ी थी, उसका हाथ मेरे कंधे पर रखा था। पहले तो वह सन्नाटा खींचे चुपचाप सुनती रही, फिर एकाएक खिल खिलाकर हंसी और मुझे हल्के हाथ से धकेलते हुए बोली

"बस-बस, मैं यह सब जानती हूं। समझे, मुझसे कुछ भी छिपा नहीं है!"

इसके बाद मेरे दोनों हाथ उसने अपने हाथों में ले लिए और बहुत ही कोमल आवाज में बोली

"इन गंदी बातों पर जितना कम ध्यान तुम दोगे, तुम्हारे लिए उतना ही अच्छा होगा पर तुम हाथ तो अपने ठीक से नहीं धोते"

भला यह भी कोई कहने की बात थी, मेरी तरह अगर उसे भी बरतन मांजने, कमरों के फर्श और गंदे पोतड़े धोने पड़ते, तो मैं समझता हूं, उसके हाथ भी मुझसे कोई खास अच्छे न दिखाई देते।

"जब कोई अच्छी तरह से रहना और जीवन बिताना जानता है तो लोग उससे कुढ़ते और जलते हैं, और अगर वह नहीं जानता तो उसकी

मुह पर थूक्ते हैं," उसने गम्भीर स्वर मे कहा। फिर, मुझे उचकाकर अपनी ओर खींचते हुए उसने गहरी नजरो से मेरी आखो मे देखा और मुसकराते हुए बोली

"क्या तुम मुझे चाहते हो?"

"हा।"

"बहुत?"

"हा, बहुत।"

"लेकिन – क्या ?"

"न जाने क्यो "

"शुक्रिया। तुम बहुत ही प्यारे लडके हो। बडा अच्छा लगता है जब मुझे कोई चाहता है "

वह एक छोटी सी हसी हसी और ऐसा मालूम हुआ मानो वह कुछ कहने जा रही हो, लेकिन एक उसास भरकर चुप हो गई। मेरे हाथा को वह अभी भी अपने हाथो मे थामे थी।

"तुम्हे यहा आने की पूरी छूट है। जब भी मौका मिले, चले आया करो "

उसके इस बुलावे का मैंने पूरा फायदा उठाया और उसकी मित्रता से मुझे भारी लाभ हुआ। दोपहर का भोजन करने के बाद मेरे मालिक जब झपकी लेते तो मैं तुरत खिसक जाता और अगर वह घर पर होती तो उसके साथ एकाध घटा या इससे भी अधिक समय बिताता।

"तुम्हे रूसी किताबें पढनी चाहिए, हमारे अपने रूसी जीवन को जानना-समझना चाहिए।" वह मुझे सीख देती और अपनी चपल गुलाबी उगलिया से महक्ते हुए बाला मे पिनें खोसती रहती।

इसके बाद वह रूसी लेखको के नाम बताती और फिर पूछती

"इन्हे भूलोगे तो नहीं?"

बहुधा ऐसा होता कि वह सोचने लगती और एकाएक, मानो अपने आप को झिडकी देते हुए, कह उठती

"मैं भी कसी हू? तुम यो ही घूमते हो, और मुझे याद तक नहीं रहता कि तुम्हारी पढ़ाई के लिए कुछ करना है "

कुछ देर उसके पास बठने के बाद, हाथो मे कोई नयी किताब लिए, जब मैं लपककर वापस लौटता तो हृदय मे एक नये निखार का अनुभव करता।

अक्साकोव की लिखी हुई पुस्तक "जीवनवृत्त", बढ़िया रूसी उपन्यास "जगलो मे", चकित कर देनेवाले "शिकारी के सस्मरण"* मैं पढ़ चुका था। पेचेर्स्की और सोल्लोगुब की कितनी ही पुस्तकें और वेनेवितीनोव, श्रोदोयेव्स्की तथा त्युत्चेव की कविताए भी मैं पढ़ गया था। इन पुस्तकों ने मेरे हृदय को निखारा और उन खरोचों तथा दाग धब्बों को साफ कर दिया जो कटु और मलो-कुचली यास्तविकता से रगड खाने के कारण मेरे हृदय पर पड गए थे। अच्छी किताबो का महत्व, उनके माने अब मैं समझता था और जानता था कि मेरे लिए उनका होना कितना जरूरी है। उन्हें मैं पढ़ता और एक अडिग विश्वास से मेरा हृदय भर जाता— मुझे लगता कि दुनिया मे मैं अकेला नहीं हू और, देर या सवेर, मैं अपना रास्ता खोज ही लूगा!

नानी मुझसे मिलने आती। मैं उसे रानी मार्गो के बारे मे बताता। मुग्ध कर देनेवाले शब्द मेरे मुह से निकलते। नानी सुनती और चुटकी मे भरपूर नास लेकर सूघते हुए कहती

"जी खुश हो गया सुनकर। भले लोगो की इस दुनिया मे कमी नहीं। आखें उठाकर जरा देखने भर की जरूरत है, यह नहीं हो सकता कि वे न मिलें।"

एक बार उसने कहा

"कहो तो मैं भी उससे मिल आऊ। तुम्हारे लिए उसका शुक्रिया ही अदा कर आऊगी।"

"नहीं जाओ "

"अच्छी बात है, मैं नहीं जाऊगी यह दुनिया भी कितनी सुदर है, ऐ मेरे भगवान! मैं तो इससे कभी विदा न लेने को राजी हू!"

मुझे स्कूल भेजने की अपनी इच्छा को रानी मार्गो पूरा होते नहीं देख सकी। ईस्टर के बाद सातवे रविवार को, त्योहार के दिन, एक ऐसी दु खद घटना घटी कि [illegible] दिया होता।

त्योहार से कुछ समय प[illegible] सूज गई थीं और मेरी आखें करीब-करीब [illegible] घबराए कि कहीं मेरी आखें न [illegible] समाया

---

*महान रूसी

था। वे मुझे जान-पहचान के एक अच्छा डाक्टर के पास ले गये। हेइनरिख रोदजेविच उसका नाम था। मेरी पलकों को उलटकर उसने उनमे रोहो को चीरा और आखो पर पट्टी बाधे निपट अधकार मे अधा बना कई दिन तक मैं दुख से कराहता रहा। त्योहार से एक दिन पहले पट्टी खुली और बिस्तर से उठते समय ऐसा मालूम हुआ मानो मै कब्र मे से उठ रहा हू जिसमे मुझे जिन्दा ही दफना दिया गया था। अधा होने से बढकर भयानक और कुछ नहीं। जिसके सिर यह मुसीबत पडती है, उसके लिए दस मे से नौ हिस्से दुनिया चौपट हो जाती है।

त्योहार का उल्लास भरा दिन था। आखो की वजह से दोपहर मे ही मुझे सब कामो से छुट्टी मिल गयी और अरदलियो से मिलने के लिए मैं एक के बाद एक सभी रसोईघरो के चक्कर लगाने लगा। गम्भीर तुफायेव को छोडकर अन्य सब नशे मे धुत्त थे। साझ के समय येर्मोखिन ने सीदोरोव के सिर पर लकडी का ऐसा कुदा जमाया कि वह दरवाजे पर ही ढेर हो गया। येरमोखिन की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और वह नाले मे कहीं छिप गया।

सारे अहाते मे सीदोरोव की हत्या की घबराहट भरी खबर फल गयी। ओसारे के पास भीड जमा हो गई जहा, रसोई और दरवाजे के बीच, सीदोरोव निश्चल पडा हुआ था। लोग दबे स्वरो मे कानाफूसी कर रहे थे कि पुलिस को बुलाना चाहिए, लेकिन न तो कोई पुलिस बुलाने गया और न ही किसी ने उसके बदन को हाथ लगाने का साहस किया।

तभी धोबिन नताल्या कोज्लोव्स्काया वहा आई। वह बगनी रग का नया फ्राक पहने थी और अपने कधो पर एक सफेद रूमाल डाले थी। तमतमाकर लोगो को इधर उधर करती और भीड को चीरती वह ड्योढ़ी मे चली आयी, लाश के पास पहुची और झुककर उसे देखने लगी।

"काठ के उल्लुओ, यह जिन्दा है!" उसने जोरो से चिल्लाकर कहा। "पानी लाओ!"

"अरी, तू क्या बाच मे टाग अडाती है?" लोग चेतावनी देने लगे। "कहीं ऐसा न हो कि लेने के देने पड जाए!"

"बक नहीं, पानी लाओ, पानी!" उसने इस तरह चिल्लाकर कहा मानो उसे आग बुझाने के लिए पानी की जरूरत हो। इसके बाद, बहुत ही कामकाजी ढग से, उसने अपना नया फ्राक खींचकर घुटनो पर चढ़ा

अवसाकोव की लिखी हुई पुस्तक "जीवनवृत्त", बढ़िया रूसी उपन्यास "जंगलों में", चकित कर देनेवाले "शिकारी के संस्मरण"* मैं पढ़ चुका था। ग्रेबेन्को और सोल्लोगुब की कितनी ही पुस्तकें और वेनेवितिनोव, ओदोयेव्स्की तथा त्युत्चेव की कविताएं भी मैं पढ़ गया था। इन पुस्तकों ने मेरे हृदय को निखारा और उन खरोंचों तथा दाग-धब्बों को साफ कर दिया जो कटु और मैली-कुचैली वास्तविकता से रगड़ खाने के कारण मेरे हृदय पर पड़ गए थे। अच्छी किताबों का महत्व, उनके माने अब मैं समझता था और जानता था कि मेरे लिए उनका होना कितना जरूरी है। उन्हें मैं पढ़ता और एक अडिग विश्वास से मेरा हृदय भर जाता—मुझे लगता कि दुनिया में मैं अकेला नहीं हूं और, देर या सवेर, मैं अपना रास्ता खोज ही लूंगा!

नानी मुझसे मिलने आती। मैं उसे रानी मार्गो के बारे में बताता। मुग्ध कर देनेवाले शब्द मेरे मुंह से निकलते। नानी सुनती और चटकी में भरपूर नास लेकर सूंघते हुए कहती

"जी खुश हो गया सुनकर। भले लोगों की इस दुनिया में कमी नहीं। आंखें उठाकर जरा देखने भर की जरूरत है, यह नहीं हो सकता कि वे न मिलें।"

एक बार उसने कहा

"कहो तो मैं भी उससे मिल जाऊं। तुम्हारे लिए उसका शुक्रिया ही अदा कर आऊंगी।"

"नहीं जाओ "

"अच्छी बात है, मैं नहीं जाऊंगी यह दुनिया भी कितनी सुंदर है, ऐ मेरे भगवान! मैं तो इससे कभी विदा न लेने को राजी हूं!"

मुझे स्कूल भेजने की अपनी इच्छा को रानी मार्गो पूरा होते नहीं देख सकी। ईस्टर के बाद सातवें रविवार को, त्योहार के दिन, एक ऐसी दुखद घटना घटी कि उसने मेरा बण्टाढार ही कर दिया होता।

त्योहार से कुछ समय पहले ही मेरी पलकें बुरी तरह सूज गई थीं और मेरी आंखें करीब-करीब पूरी बंद हो गई थीं। मेरे मालिक घबराए कि कहीं मेरी आंखें न जाती रहें। खुद मेरे हृदय में भी यही डर समाया

---

*महान रूसी लेखक इवान तुर्गेनेव का एक कहानी संग्रह।—सं०

था। वे मुझे जान-पहचान के एक अच्छा डाक्टर के पास ले गये। हेइन्रिख रोद्ज़ेविच उसका नाम था। मेरी पलकों को उलटकर उसने उनमे रोहो को चीरा और आखो पर पट्टी बाधे निपट अधकार मे अधा बना कई दिन तक मैं दुख से कराहता रहा। त्योहार से एक दिन पहले पट्टी खुली और विस्तर से उठते समय ऐसा मालूम हुआ मानो मैं कब्र मे से उठ रहा हू जिसमे मुझे जिन्दा ही दफना दिया गया था। अधा होने से बढकर भयानक और कुछ नहीं। जिसके सिर यह मुसीबत पडती है, उसके लिए दस मे से नौ हिस्से दुनिया चौपट हो जाती है।

त्योहार का उल्लास भरा दिन था। आखो की वजह से दोपहर मे ही मुझे सब कामो से छुट्टी मिल गयी और अरदलियो से मिलने के लिए मै एक के बाद एक सभी रसोईघरो के चक्कर लगाने लगा। गम्भीर तुफायेव को छोडकर अन्य सब नशे मे धुत्त थे। साझ के समय येरमोखिन ने सीदोरोव के सिर पर लकडी का ऐसा कुन्दा जमाया कि वह दरवाजे पर ही ढेर हो गया। येरमोखिन की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और वह नाले मे कहीं छिप गया।

सारे अहाते मे सीदोरोव की हत्या की घबराहट भरी खबर फल गयी। ओसारे के पास भीड जमा हो गई जहा, रसोई और दरवाजे के बीच, सीदोरोव निश्चल पडा हुआ था। लोग दबे स्वरो मे कानाफूसी कर रहे थे कि पुलिस को बुलाना चाहिए, लेकिन न तो कोई पुलिस बुलाने गया और न ही किसी ने उसके बदन को हाथ लगाने का साहस किया।

तभी धोबिन नताल्या कोज्लोव्स्काया वहा आई। वह बगनी रग का नया फ्राक पहने थी और अपने कधो पर एक सफेद रूमाल डाले थी। तमतमाकर लोगो को इधर उधर करती और भीड को चीरती वह ड्योढी मे चली आयी, लाश के पास पहुची और झुककर उसे देखने लगी।

"काठ के उल्लुओ, यह जिन्दा है!" उसने जोरो से चिल्लाकर कहा। "पानी लाओ!"

"अरी, तू क्यो बीच मे टाग अडाती है?" लोग चेतावनी देने लगे। "कहीं ऐसा न हो कि लेने के देने पड जाए!"

"बक नहीं, पानी लाओ, पानी!" उसने इस तरह चिल्लाकर कहा मानो उसे आग बुझाने के लिए पानी की जरूरत हो। इसके बाद, बहुत ही कामकाजी ढग से, उसने अपना नया फ्राक खींचकर घुटनो पर चढ़ा

लिया, झटक्कर अपना पेटीकोट नीचे खिसका लिया और सैनिक का खून से लथपथ सिर अपने घुटने पर रख लिया।

डरपोक लोग जो वहा खडे तमाशा देख रहे थे, भुनभुनाते और भला बुरा कहते धीरे धीरे छट गए। ड्योढी के अध उजियाले मे धोबिन की छलछलाती हुई आखो पर मेरी नजर पडी जो उसके गोल-मटोल चिट्टे चेहरे पर तमतमाती चमक रही थीं। लपक्कर मै एक डोल पानी ले आया। वह मुझसे बोली कि इसे सीदोरोव के सिर और छाती पर उडेल दू।

"लेकिन मुझे तर न कर देना, मै मिलने जा रही हू।" चेताते हुए उसने कहा।

सैनिक को होश आ गया, उसने अपनी आखें खोलीं और कराह उठा।

"इसे जरा उठा तो," नताल्या ने कहा और अपने हाथ आगे फलाकर उसकी बगल मे डाले जिससे कपडे खराब न हो, और उसे थाम लिया। हम दोनो उसे उठाकर रसोईघर मे ले गए और बिस्तर पर लिटा दिया। फिर एक गीले कपडे से उसने उसका मुह साफ किया, और बाहर जाते हुए बोली

"कपडा गीला करके इसके माथे पर रखता रह। मैं बाहर जाती हू और उस दूसरे उल्लू को अभी खोजकर लाती हू। शैतान कहीं के! अभी नशा है, जब जेल मे चक्की पीसनी पडेगी, तब सारा नशा उड जाएगा!"

खून के दाग लगा अपना पेटीकोट खिसकाकर उसने नीचे उतार दिया और एक कोने मे फॅक दिया। फिर सावधानी से थपथपाकर कलफलगे अपने नये फ्राक को ठीक किया। इसके बाद वह बाहर चली गई।

सीदोरोव ने अपना बदन लम्बा फला लिया, हिचकिया लेने और आहें भरने लगा। उसके सिर से काले रग का खून टपक-टपककर मेरे नगे पाव पर गिर रहा था। मुझे बडी घिन आई, लेकिन डर के मारे मुझसे अपना पाव हटाते नहीं बना।

मुझे बडी उदासी मालम हुई। बाहर हर चीज त्योहार के रग मे रगी थी और खुशी से छलछला रही थी, घर का ओसारा और फाटक नवजात भोज वृक्षो से सजे थे, हर खम्भे पर मेपल और रोवन वृक्ष की टहनियों का सिगार था, मोहल्ले मे सब कुछ हरा भरा दिख रहा था और प्रत्येक चीज नयी तथा यौवन से इठलाती मालूम होती थी। सवेरे से मुझे ऐसा

मालूम हो रहा था मानो वसंत का यह उल्लास जल्दी ही विदा न होगा और जीवन अब अधिक उजला, कूडे करकट से साफ और खुशी से छलछलाता बीतेगा।

सनिक ने उबकाई लेकर उल्टी कर दी। गम वोदका और हरे प्याज की दमघोट गध से रसोईघर भर गया। जब तब धुधले तथा चपटे चेहरे और चिपकी नाके खिडकी के शीशो से सटी हुई दिखाई देतीं, और चेहरे के दोना ओर फली हुई उसकी हथेलिया बेढगे कानो की भाति मालूम होतीं।

सनिक यह याद करते हुए कि कसे क्या हुआ बडबडा रहा था

"यह क्या? क्या मै गिर पडा था? येरमोखिन? अच्छा दोस्त निकला "

वह खासा, खुमारी मे उसने आसू बहाए और रोने झींकने लगा

"मेरी बहिना ओ बहिना "

पानी मे भीगा, कीच मे सना और गधाता, वह उठा और अपने पावो पर खडे होने का उसने प्रयत्न किया, लेकिन चकराकर फिर बिस्तर पर ही ढह गया और नय से आखो को टेरते हुए बाला

"बिल्कुल ही मार डाला रे "

यह सुनकर मुझे हसी आ गई।

"कौन शतान हसता है?" धुधली आखो से मेरी ओर देखते हुए उसने कहा। "तू हसता कसे हे? अरे, मै तो हमेशा के लिए मारा गया "

और बडबडाते हुए वह मुझे अपने दोनो हाथा से धकेलने लगा

"पहले तोफेत मे पगम्बर इल्यास, दूसरे आडे वक्त मे घोडे पर सवार सत जाज, और तीसरे—हट जा भेडिये मेरे रास्ते से!"

"पागल मत बन," मैने कहा।

वह बेमतलब गुस्सा हो गया, दहाडने लगा, पर रगडने लगा।

"मै मारा गया, और "

उसने अपने भारी, गदे और ढीले हाथ से मेरी आखो पर जोरो से प्रहार किया। मैं चिल्लाकर अधा सा बना जैसे-तसे बाहर अहाते मे भागा जहा नताल्या येरमोखिन की बाह पकडे उसे खींचती हुई ला रही थी और चिल्लाकर कह रही थी

"चलता है कि नहीं, लदद्दू घोड़े? यह क्या हुआ?" मुझे सभालते हुए उसने पूछा।

"लडता है "

"लडता है?" नताल्या ने अचरज से कहा। फिर येरमोखिन झटकाकर बोली

"शुक्राना भेज भगवान को, उसने तुझे इस बार बचा लिया!"

मैने आखो को पानी से धोया और डयोढी से ही भीतर झाकर देखा दोनो सनिक गले से लिपटे हुए नशीले मेल मिलौवल मे एक-दूसरे का मुह चूम चाट रहे थे और उनकी आखो से आंसू बह रहे थे। इसके बाद वे नताल्या को गले से लगाने के लिए लपके, लेकिन थप्पड से खबर लेते हुए वह चिल्लाई

"कुत्ते नहीं तो, खबरदार जो मेरी ओर जरा भी अपने पजे फलाए! मुझे भी क्या तुमने बबुवाइन समझा है। खर इसी मे है कि अपने मालिकों के आने से पहले एकाध झपकी लेकर भले आदमी बन जाओ। नहीं तो तुम्हारी जान पर आफत आयेगी।"

छोटे बच्चो की भाति उसने दानो को लिटा दिया, एक को पलग पर, दूसरे को फश पर। जब दोनो खर्राटे भरने लगे तो वह डयोढी मे निकल आई।

"मेरी फ्राक तो चुरमुर हो गई है, और मै थी कि लोगो से मिलने जुलने के लिए घर से निकली थी। उसने तुझे मारा? बेवकूफ कहीं का! वोदका जो न कराए थोडा है। तू कभी न पीना, मेरे बच्चे, इसको मुह कभी न डालना "

फाटक के पास एक बेंच पर उसके पास ही बठते हुए मैने पूछा

"तुम्हे शराबियो से डर नहीं लगता?"

"मैं किसी से नहीं डरती—कोई नशे मे हो या न हो। मैं सभी को इससे काबू मे रखती हू!" कसकर बधी अपनी लाल मुट्ठी दिखाते हुए उसने कहा। "खसम मेरा, भगवान को प्यारा हो गया, वह भी कसकर पीता था। तो मैं, जब वो ज्यादा नशे मे होता, मैं उसके हाथ-पाव रस्सी से जकड देती। और जब वो सो उठता, नशा उसका उतर जाता तो उसका पतलून खींचकर मोटी-ताजी और मजबूत सटिया से उसकी मरम्मत करती, 'खबरदार जो फिर कभी मुह से लगाई, ब्याह किया तो

फिर पीने का कोई काम नहीं, दिल बहलाने को बोवी है, वोदका नहीं।' हा, बस खूब खबर लेती और जब तक मेरे हाथ जवाब न देते, तडातड सटिया जडती रहती। सटियो की मार से वह इतना नम हो जाता कि चाहो तो चियडे की भाति उगली पर लपेट लो!"

"तुम ताक्तवर हो," मैं कहता, और मुझे हौवा का ध्यान हो आता जिसने खुदा को भी चकमा दिया था।

नताल्या ने सास खींचते हुए कहा

"औरत को मर्द से भी ज्यादा ताकत की जरूरत है,—उसके पास दो मर्दों के बराबर ताक्त होनी चाहिए, लेकिन भगवान ने मर्दों को ज्यादा बलवान बना दिया। लेकिन मर्दों पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता।"

वह बहुत ही इत्मीनान से, बिना किसी जलन या कुढन के, बोल रही थी। उसकी कोहनिया मुडी हुई थीं और उसके हाथ उसकी भरी पूरी छातियो पर बधे हुए थे। इसकी पीठ बाडे से सटी थी और उसकी आखें कूडा-करकट छितरे रोडो से भरे बाध पर उदास भाव से जमी थीं। उसकी सयानी बातो मे कितना समय निकल गया, कितना नहीं, मुझे कुछ ध्यान न रहा। सहसा, बाध के दूसरे छोर पर, अपने मालिक पर मेरी नजर पडी। पत्नी के साथ, उसे अपनी बाह का सहारा दिए, वह इधर ही आ रहा था। धीमे डगो से, रोब के साथ, मुर्गे-मुर्गी के जोडे की भाति तिरछी गरदन किए वे चले आ रहे थे। वे हमारी ही ओर देख रहे थे और आपस मे कुछ बाते कर रहे थे।

मैं लपक्कर ओसारे का दरवाजा खोलने भागा। जीने पर चढते हुए मेरी मालकिन ने तीखी आवाज मे कहा

"क्यो, धोबिना से चुहल करने लगा? सीख लिया नीचे वालो से यह सब?"

बात इतनी बेसिर पर की थी कि उसने मेरे हृदय को छुआ तक नहीं। मुझे अधिक दु ख इस बात से हुआ कि मालिक भी हल्की हसी हसते हुए बोला

"हुआ क्या—इसका भी वक्त आ गया है! "

अगले दिन सुबह के समय जब मैं लकडी लेने सायबान मे गया तो दरवाजे मे बिल्लियो के लिए बने छेद के पास, मुझे एक खाली बटुवा

पडा हुआ मिला। इस बटुवे को सीदोरोव के हाथो मे मैं बीसियों बार देख चुका था। सो मैं उसे लेकर तुरन्त सीदोरोव के पास पहुचा।

"और पसे कहा हैं?" अपनी उगलियो से बटुवे के भीतर टटोलते हुए उसने पूछा। "एक रूबल और तीस कोपेक थे। निकाल इधर!"

उसने अपने सिर पर एक तौलिया लपेट रखा था। उसका चेहरा पीला और खिचा हुआ सा था। अपनी सूजी हुई आखो को मिचमिचाकर उसने मेरी ओर देखा और इस बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि मुझे जब बटुवा मिला तो वह खाली था।

तभी येरमोखिन भी आ गया और उसपर अपना रग चढाते हुए यह सिद्ध करने की कोशिश करने लगा कि मैं चोर हू।

"इसी ने बटुवा खाली किया है," मेरी ओर सिर हिलाकर इशारा करते हुए उसने कहा, "कान पकडकर इसे इसके मालिक के पास ले चल। कोई भी सिपाही किसी दूसरे सिपाही भाई की चोरी नहीं करेगा!"

उसके शब्दो से साफ मालूम होता था कि यह सब उसका ही करतूत है, पसा निकालकर उसने बटुवा हमारे सायबान मे डाल दिया। मैंने आव देखा न ताव, उसके मुह पर ही कहा

"झूठा कहीं का, पसे खुद तूने चुराये है!"

मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरा यह अन्दाज सही है, क्योंकि मेरी बात सुनते ही डर और झुझलाहट से उसका चेहरा तिकोनिया बन गया। वह चीखा

"है कोई सबूत?"

लेकिन मैं सबूत कहा से देता। येरमोखिन ने चीखकर मुझे पकडा और खींचता हुआ बाहर अहाते मे ले गया। सीदोरोव भी चीखता हुआ पीछे-पीछे लपका। शोर सुनकर पडोसियो के सिर खिडकियो से बाहर निकल आए। रानी मार्गो की मा भी दम साधे, निश्चल भाव से सिगरेट पीते हुए देख रही थी। यह सोचकर कि अपनी रानी की नजरो में मेरी अब कोई साख न रहेगी, मेरा सिर एकदम चकरा गया।

मुझे याद है कि सनिको ने मेरे हाथ जकड रखे थे। मेरे मालिक लोग उनके सामने खडे थे, एक-दूसरे के स्वर से स्वर मिलाकर शिकायतें सुन रहे थे। छोटी मालकिन चिहुक उठी

"यह इसी की करतूत है। कल रात, फाटक के पास, यह धाबिन

से चुहल कर रहा था। इसकी जेब न खनखनाती होती, तो वह इसे हाथ तक न धरने देती "

"जरूर यही बात है!" येरमोखिन चिल्लाया।

मेरे पावो के नीचे फर्श मानो हिल गया। सारे बदन मे आग लग गई। झल्लाकर मै मालकिन पर चिल्लाया और इसके बाद बुरी तरह मार खाई।

लेकिन पिटाई से मेरा हृदय इतना घायल नहीं हुआ जितना इस बात से कि रानी मार्गो मेरे बारे मे अब क्या सोचेगी। उसकी नजरो मे अपने को अब मैं कसे ऊचा उठा सकूगा? बहुत बुरा था मेरा हाल उस समय।

सौभाग्य से देखते देखते सारे अहाते और मोहल्ले के समूचे ओर छोर मे सनिका ने चोरी की यह घटना तेजी से फला दी। साझ होते न होते, उस समय जबकि मै अटारी मे मुह छिपाए पडा था, मुझे नताल्या कोज्लोव्स्काया के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी

"बडा नवाबजादा है जो मैं अपना मुह बद रखू? बस, सीधी तरह से चला आ, मैं कहती हू कि चला आ, ज्यादा नानुकर न कर। नहीं तो तेरे अफसर के सामने सारा भडाफोड कर दूगी और तू खिचा खिचा फिरेगा!"

मै फौरन भाप गया कि हो न हो, यह तडप झडप मुझसे ही सबध रखती है। वह हमारे ओसारे के पास ही खडी थी और चिल्ला रही थी और उसकी आवाज अधिकाधिक तेज होती और अधिकाधिक जोर पकडती जा रही थी।

"कल तूने मुझे कितने पसे दिखाये थे? कहा से आये वे तेरे पास—बता तो जरा?"

खुशी के मारे मेरा गला रुध सा गया। सीदोरोव का मिनमिनाना भी सुनाई पड रहा था

"ओह, येरमोखिन, येरमोखिन "

नताल्या कह रही थी

"और सिर पर पडी इस लडके के—चोर भी बना, मार भी खाई?"

मेरा मन हुआ कि लपक्कर फौरन नीचे पहुच जाऊ और खुशी से झूमकर धोबिन को चूम लू। लेकिन तभी, शायद खिडकी मे से, मुझे अपनी मालकिन के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी

"चुप रह छिनाल! लडके को चोर किसीने नहीं समझा, न ही इसके लिए वह पिटा। उसने मार खाई अपनी बदतमीजी के लिए!"

"छिनाल तुम खुद हो, मेम साहिबा और ऊपर से मोटी गाय भी।"

उनकी यह तडप झडप मेरे लिए मधुर सगीत थी। दिल पर लगी चोट और नताल्या के प्रति कृतज्ञता के आसू मेरे हृदय मे उमड घमड आए और उन्हे रोकने के प्रयत्न मे दम घुटने लगा।

फिर मेरा मालिक, धीमे डगो से, अटारी मे आ गया और पास ही बाहर को निकली एक कडी पर बैठ गया।

"क्यो, भाई, पेशकोव, तेरी किस्मत ही खराब है," अपने बा को ठीक करते हुए उसने कहा। "करे कोई, और भुगते कोई!"

कोई जवाब दिए बिना ही मैंने मुह फेर लिया।

कुछ रुककर उसने फिर कहा

"लेकिन इसमे भी कोई शक नहीं कि तू बेहद मुहफ्टा है!"

"ठीक होने पर मैं आपके यहा से चला जाऊगा " मैंने कहा।

कुछ देर तक उसने कुछ नहीं कहा, चुपचाप बठा सिगरेट का धुआं उडाता रहा। इसके बाद, सिगरेट के छोर पर अपनी नजर गडाए बोला

"जसा तू ठीक समझे। तू कोई बच्चा तो है नहीं, अपना भला-बुरा खुद सोच सकता है "

और वह चला गया। सदा की भाति मुझे उसपर तरस आया।

चार दिन बाद मैंने वह जगह छोड दी। मेरे मन मे गहरी इच्छा थी कि रानी मार्गो के पास जाकर उससे विदा ले आऊ, लेकिन उस तक पहुचने का साहस न बटोर सका और, सच बात तो यह है कि, मन ही मन में यह उम्मीद बाधे था कि वह खुद मुझे बुलायेगी।

बच्ची से विदा लेते समय मैंने कहा

"अपनी मां से कहना कि मैं उनका कृतज्ञ हू और उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देता हू। कहोगी न?"

"हां," बहुत ही कोमल और प्यारी मुसकान के साथ उसने वचन दिया। फिर बोली, "विदा, कल तक के लिए, है ना!"

बीस वर्ष बाद उससे फिर मेरी भेंट हुई। तब वह राजनीतिक पुलिस के एक अफसर की पत्नी थी...

एक बार फिर मैंने जहाज मे बरतन धोने का काम सभाला। इस जहाज का नाम था "पेर्म", बडा और तेज रफ्तार, हस की भाति एकदम सफेद। इस बार मेरा ओहदा था—किचन ब्वाय। मेरा काम बावर्चियो का हाथ बटाना था। वेतन सात रूबल महीना।

जहाज का बारमन एक गोल-मटोल गावदुम और बददिमागी से वफरा हुआ, गेंद सा गजा आदमी था। हाथो को कमर के पीछे बाधे सुबह से साझ तक वह डेक पर चक्कर लगाता, उस सूअर की भाति जो गर्मी और धूप से बौखलाकर किसी छायादार कोने की खोज मे भटक रहा हो। उसकी पत्नी बार की शोभा बढ़ाती। उम्र चालीस के ऊपर, सुदर लेकिन मुर्झायी हुई सी। पाउडर इतना थोपती कि गालो पर से झडने लगता और सफेद चिपचिपी धूल की भाति उसके भडकीले कपडो पर जमा होता रहता।

रसोईघर की बागडोर भारी वेतन पानेवाले बावर्ची इवान इवानोविच के हाथो मे थी जिसे सब नाटा भालू कहते। नाटा कद, स्थूल शरीर, तोते जसी नाक और सबको ठेंगे पर रखने वाली आखें। तबीयत का शौकीन, हमेशा कलफदार कालर लगाता, रोज दाढी छीलता, इस हद तक कि उसके गालो की खाल मे नीलापन झलकता था। उसकी बलदार काली मूछें ऊपर को खडी रहतीं, जब भी खाली हाथ होता अपनी तपी हुई लाल उगलियो से उन्हे बराबर ऐंठता और एक छोटे से गोल दस्ती शीशे मे देखकर गर्व से तन जाता।

जहाजी याकोव शूमोव, जो भट्टी मे ईंधन डालने का काम करता था, जहाज के लोगो मे सब से ज्यादा दिलचस्प था। चौकोर काठी, चौडे कधे। नाक की नोक ऊपर को उठी हुई, चेहरा फावडे की भाति चपटा, घनी भौंहो मे छिपी भालू जसी आखें, दलदल की काई की भाति छल्लेदार दाढ़ी गालो को घेरे हुए, सिर पर इन घुघराले बालो के गुथने से टोपी सी बन गयी थी, अपनी टेढी मेढ़ी उगलियो को वह मुश्किल से उनके बीच से गुजार पाता।

वह ताश खेलने मे बहुत तेज था, बाजी पर पसे लगाता था और खाने पर इस बुरी तरह टूटता कि देखकर अचरज होता। भूखे कुत्ते की

भांति वह रसोईघर के आस-पास ही लटका रहता। कभी बोटी के लिए हाथ फैलाता और कभी हड्डियों के लिए। सांझ को वह नाटे भालू के साथ चाय पीता और अपने जीवन के अजीब गरीब किस्से सुनाता।

बचपन में वह रियाज़ान नगर के गडरिये के साथ गुज़र करता था। एक दिन कोई ईसाई साधु उधर से गुज़रा और उसके कहने फुसलाने से वह मठ में भर्ती हो गया। नये साधु के रूप में वह चार साल तक मठ में रहा।

"आज दिन भी मैं साधु ही होता,—खुदा का एक काला सितारा," वह सरपट बोलता जाता, "पर एक तीर्थ यात्रिनी ने हमारे मठ में आकर सब गड़बड़ कर दिया। वह पैंज़ा की रहने वाली थी। क्या बताऊं, इस नन्ही सी औरत ने मेरा दिमाग ही पलट दिया। 'ओह कितना अच्छा, ओह कितना मज़बूत!' मुझे देखकर वह चहकी। फिर बोली, 'एक मैं हूं, बेदाग विधवा, एकदम अकेली। चलो न मेरे साथ? घर-बाहर का काम करना। मेरा अपना घर है, मुर्गे-मुर्गियों के परों का धंधा करती हूं। बोलो, क्या कहते हो?'"

"मुझे भला क्या उज्र होता? मैं उसके साथ हो लिया। वह मुझे अपना सेवक बनाना चाहती थी, पर मैं उसका प्रेमी भी बन गया। तीन साल तक उसके साथ मौज की और "

नाटा भालू अपनी नाक पर निकले मस्सा को व्यग्र भाव से देखते हुए उसकी बातें सुन रहा था। आखिर वह झुंझला उठा।

"सफेद झूठ बोलना कोई तुमसे सीखे!" बीच में ही उसने कहा। "झूठ बोलने से अगर सोना बरसता तो कारूं का खज़ाना बटोर लेता!"

याकोव जुगाली सी करता मुंह चला रहा था। उसकी छल्लेदार सफेद दाढ़ी जबड़े के साथ ऊपर-नीचे हरकत कर रही थी और उसके छाज से कान फड़फड़ा रहे थे। बावर्ची के चुप हो जाने पर उसकी ज़बान फिर समगति से चक्की की भांति चलने लगी

"उम्र में वह मुझसे बड़ी थी। जल्दी ही मैं उससे उकता गया। सच जानो, मैं उससे तंग आ गया और उसे छोड़ उसकी भतीजी पर मैंने डोरे डाले। एक दिन उसे इसका पता चल गया। फिर क्या था, उसने मेरी गरदन दबोची और लात मारकर घर से बाहर निकाल दिया...'

"यानी बाकायदा हिसाब चुकता करके उसने तुम्हें विदा कर दिया!" बावर्ची ने भी याकोव की ही भांति सहज भाव से कहा।

जहाजी याकोव ने चीनी की एक डली अपने मुह मे डाली और फिर कहना जारी रखा

"इसके बाद सूखे पत्ते की तरह हवा के साथ मैं इधर उधर उडता और भटकता रहा। फिर व्लादीमिर के एक बूढ़े फेरीवाले के साथ मेरा गठबधन हुआ। उसके साथ मैंने आधी दुनिया नाप डाली—बाल्कन पहाडो का नाम सुना है? मैं वहा गया। सभी तरह के रग बिरगे लोगो को देखा—तुर्कों और रुमानियाइया, यूनानिया और आस्ट्रियाइया, दुनिया भर के लोगो से वास्ता पडा। एक से खरीदा, दूसरे को बेचा "

"चोरी भी की?" बावर्ची ने पूरी गम्भीरता से पूछा।

"बूढ़े फेरीवाले ने किसी पर कभी हाथ साफ नहीं किया,—नहीं, कभी नहीं। और उसने मुझे भी कहा था, पराये देशो मे किसी चीज पर हाथ न डालना। उन देशो का रिवाज था कि अगर कोई मामूली से मामूली चीज भी चुराता तो उसका सिर साफ धड से अलग कर दिया जाता। लेकिन यह न समझना कि मैंने चोरी करने की कोशिश नहीं की। कोशिश तो मैंने की, लेकिन कुछ बना नहीं। एक दिन मैं एक व्यापारी के अस्तबल से घोडा खालकर भागा। लेकिन भाग नहीं सका, उन्होने मुझे पकड लिया, और यह समझ लो कि खूब मारा। मारने से जब उनका जी भर गया तो मुझे खींचते हुए थाने मे ले गए। थाने वालो ने मुझे बद कर दिया। सचमुच तो हम दो थे—एक असली और खूब खरा घोडा चोर था, दूसरा मैं जिसे घोडा चुराने का केवल शौक चर्राया था कि देखो, इसमे क्या मजा आता है। हा तो उसी व्यापारी ने उन दिनो एक नया हम्माम बनवाया था और मैं उसमे अलावघर बना रहा था। अब हुआ यह कि वह बीमार पड गया और बुरे-बुरे सपनो मे वह मुझे देखता और बस उसकी सिट्टी पिट्टी गुम। घबराकर वह बडे अफसर के पास गया और उससे भिनभिनाकर बोला, 'उसे छोड दो। सपना मे भी वह मेरा पीछा नहीं छोडता। अगर मैं उसे माफ नहीं करूगा तो कौन जाने, वह मेरी जान ही ले ले। कम्बख्त जादू जानता है, मुझे सपनो मे परेशान करता है।' हा तो अफसर ने उसकी बात मान ली। मानता क्यो नहीं, वह बहुत बडा व्यापारी जो था। सो मैं थाने से बाहर निकल आया "

"वे चूक गए। तुझे हर्गिज नहीं छोडना चाहिए था। तू इस लायक है कि गले से पत्थर लटकाकर तीन दिन तक तुझे पानी मे छोड दिया

भांति यह रसोईघर के आस-पास ही लटका रहता। कभी बोटा के लिए हाथ फैलाता और कभी हड्डियों के लिए। सांझ को वह नाटे भालू के साथ चाय पीता और अपने जीवन के अजीब-ग़रीब क़िस्से सुनाता।

बचपन में वह रियाज़ान नगर के गडरिये के साथ गुज़र करता था। एक दिन कोई ईसाई साधु उधर से गुज़रा और उसके कहने-फुसलाने से वह मठ में भर्ती हो गया। नये साधु के रूप में वह चार साल तक मठ में रहा।

"आज दिन भी मैं साधु ही होता,—ख़ुदा का एक काला सितारा," वह सरपट बोलता जाता, "पर एक तीर्थ यात्रिनी ने हमारे मठ में आकर सब गड़बड़ कर दिया। वह पेंज़ा की रहने वाली थी। क्या बताऊं, इस नन्ही सी औरत ने मेरा दिमाग़ ही पलट दिया। 'ओह कितना अच्छा, ओह कितना मज़बूत!' मुझे देखकर वह चहकी। फिर बोली, 'एक मैं हूं, बेदाग़ विधवा, एकदम अकेली। चलो न मेरे साथ? घर-बाहर का काम करना। मेरा अपना घर है, मुर्ग़े-मुर्ग़ियों के परों का धंधा करती हूं। बोलो, क्या कहते हो?'"

"मुझे भला क्या उज्र होता? मैं उसके साथ हो लिया। वह मुझे अपना सेवक बनाना चाहती थी, पर मैं उसका प्रेमी भी बन गया। तीन साल तक उसके साथ मौज की और..."

नाटा भालू अपनी नाक पर निकले मस्सों को व्यग्र भाव से देखते हुए उसकी बातें सुन रहा था। आख़िर वह झुंझला उठा।

"सफ़ेद झूठ बोलना कोई तुझसे सीखे!" बीच में ही उसने कहा। "झूठ बोलने से अगर सोना बरसता तो क़ारूं का ख़ज़ाना बटोर लेता!"

याकोव जुगाली सी करता मुंह चला रहा था। उसकी छल्लेदार सफ़ेद दाढ़ी जबड़े के साथ ऊपर-नीचे हरकत कर रही थी और उसके छाज से कान फड़फड़ा रहे थे। बावर्ची के चुप हो जाने पर उसकी ज़बान फिर समगति से कैंची की भांति चलने लगी

"उम्र में वह मुझसे बड़ी थी। जल्दी ही मैं उससे उकता गया। सच जानो, मैं उससे तंग आ गया और उसे छोड़ उसकी भतीजी पर मैंने डोरे डाले। एक दिन उसे इसका पता चल गया। फिर क्या था, उसने मेरी गरदन दबोची और लात मारकर घर से बाहर निकाल दिया..."

"यानी बाक़ायदा हिसाब चुकता करके उसने तुझे विदा कर दिया!" बावर्ची ने भी याकोव की ही भांति सहज भाव से कहा।

जहाजी याकोव ने चीनी की एक डली अपने मुह मे डाली और फिर कहना जारी रखा

"इसके बाद सूखे पत्ते की तरह हवा के साथ मे इधर उधर उडता और भटकता रहा। फिर व्लादीमिर के एक बूढे फेरीवाले के साथ मेरा गठबधन हुआ। उसके साथ मैंने आधी दुनिया नाप डाली—बाल्कन पहाडो का नाम सुना है? मैं वहा गया। सभी तरह के रग बिरगे लोगो को देखा—तुर्कों और रूमानियाइयो, यूनानियो और आस्ट्रियाइयो, दुनिया भर के लोगो से वास्ता पडा। एक से खरीदा, दूसरे को बेचा"

"चोरी भी की?" बावर्ची ने पूरी गम्भीरता से पूछा।

"बूढे फेरीवाले ने किसी पर कभी हाथ साफ नहीं किया,—नहा, कभी नहीं। और उसने मुझे भी कहा था, पराये देश मे किसी चीज पर हाथ न डालना। उन देशो का रिवाज था कि अगर कोई मामूली से मामूली चीज भी चुराता तो उसका सिर साफ धड से अलग कर दिया जाता। लेकिन यह न समझना कि मैंने चोरी करने की कोशिश नहीं की। कोशिश तो मैंने की, लेकिन कुछ बना नहीं। एक दिन मैं एक व्यापारी के अस्तबल से घोडा खोलकर भागा। लेकिन भाग नहीं सका, उन्होने मुझे पकड लिया, और यह समझ लो कि खूब मारा। मारने से जब उनका जी भर गया तो मुझे खींचते हुए थाने मे ले गए। थाने वालो ने मुझे बद कर दिया। सचमुच तो हम दो थे—एक असली और खूब खरा घोडा चोर था, दूसरा मै जिसे घोडा चुराने का केवल शौक चर्राया था कि देखो, इसमे क्या मजा आता है। हा तो उसी व्यापारी ने उन दिनो एक नया हम्माम बनवाया था और मैं उसमे अलावघर बना रहा था। अब हुआ यह कि वह बीमार पड गया और बुरे-बुरे सपनो मे वह मुझे देखता और बस उसकी सिट्टी पिट्टी गुम। घबराकर वह बडे अफसर के पास गया और उससे भिनभिनाकर बोला, 'उसे छोड दो। सपनो मे भी वह मेरा पीछा नहीं छोडता। अगर मैं उसे माफ नहीं करूगा तो कौन जाने, वह मेरी जान ही ले ले। कम्बख्त जादू जानता है, मुझे सपनो मे परेशान करता है।' हा तो अफसर ने उसकी बात मान ली। मानता क्यो नहीं, वह बहुत बडा व्यापारी जो था। सो मै थाने से बाहर निकल आया"

"वे चूक गए। तुझे हर्गिज नहीं छोडना चाहिए था। तू इस लायक है कि गले से पत्थर लटकाकर तीन दिन तक तुझे पानी मे छोड दिया

जाये, ताकि भेजे मे जो भूसा भरा हुआ है, वह बह जाये।
बावर्ची ने कहा।

याकोव तुरत सुर मे सुर मिलाते हुए बोला

"सच कहो, भूसा तो मुझमे कम नहीं है। सच पूछो तो इतना भू
मुझमे भरा है कि सारे गांव के लिए काफी है..."

बावर्ची ने अपने कालर में उगली गडाई, गुस्से से उसे खींचा और
सिर हिलाते हुए झुझलाहट भरी आवाज मे शिकायत की

"क्या बकवास है! ऐसा डगर जमीन पर चरता, पीता घूम र
है पर किसलिए? जरा बता तो, तेरे जीने का मकसद क्या है?"

चटखारे भरते हुए याकोव ने जवाब दिया

"यह मैं नहीं जानता। बस जीता हू, क्योंकि जीता हू। कोई ले
रहता है, कोई चलता रहता है और बाबू कुर्सी ही तोडता रहता है
लेकिन अपना दोजख भरे बिना किसी को चैन नहीं पडता।"

बावर्ची और भी झुझला उठा

"तू इतना सूअर है कि कुछ कहते नहीं बनता। जानता है, सू
क्या खाते हैं? तू बस वही है! "

याकोव अचरज के साथ बोला

"अरे, डाटते क्यों हो? सभी देहाती एक ही पेड की गुठलिया हैं
तुम मत डाटो, इससे मैं बेहतर तो हो नहीं चला.."

इस आदमी ने मुझे फौरन ही और काफी मजबूती से अपने आकर्ष
मे बाध लिया। चकित भाव से मैं उसकी ओर देखता और मुह बाये उसकी
बातें सुनता। मेरा जी उससे कभी न उकताता। मुझे लगता था कि उ
जीवन का कोई अपना ठोस ज्ञान है। वह हरेक से, बिना किसी बनाव
के खुलकर बातें करता और उतना ही खुलकर अपनी फरफराती हुई भौं
के नीचे से सब की ओर देखता। उसके लिए कोई नीचा नहीं था
कप्तान, बारमन, और फस्ट क्लास के बडे-बडे मुसाफिर भी उसके लि
वसे ही थे जसे अन्य जहाजी, बार के बरे, तीसरे दर्जे के मुसाफि
और वह खुद।

कभी कभी बनमानुष जसी ... ब ... के पीछे किए
कप्तान या मशीनिये के सा ... । काहिल
अथवा ताश के खेल मे बेर ... से उ

डाटते डपटते और वह चुपचाप सुनता रहता। साफ मालूम होता कि डाट-डपट का उसपर कोई असर नहीं पड रहा है और अगले ही घाट पर उसे जहाज से उतार देने की उनकी धमकिया उसके कानो से टकराकर हवा मे छितर रही हैं।

'बहुत खूब' की भाति याकोव मे भी एक अपना निरालापन था। वह अन्य लोगो से कुछ भिन्न, उनसे कुछ अलग कोटि का, मालूम होता था। और जसे खुद उसे भी इस बात का विश्वास था कि वह औरो से अलग, उनकी पहुच और समझ से बाहर है।

इस आदमी को मैंने कभी उदास होते या मुह फुलाते नहीं देखा। न ही वह मुझे कभी एक लम्बे अर्से तक चुप्पी साधे दिखाई दिया। शब्दो की एक अतहीन धारा, मानो उसकी इच्छा न होने पर भी उसके मुह से निकलती रहती। जब भी उसपर डाट डपट पडती, या वह कोई दिलचस्प क़िस्सा सुनता, तो उसके होठ इस तरह हिलते मानो वह सुनी हुई बात को दोहरा रहा हो या अपनी बात कहता जा रहा हो। हर रोज अपना काम खत्म करने के बाद जब वह बाहर निकलता तो उसका सारा शरीर पसीने और तेल से लियडा होता। नगे पाव और बिना पेटी की गीली कमीज वह पहने होता जिसका गला खुला रहता और घने घुघराले बालो से घिरा उसका सीना उसके भीतर से झाकता दिखाई देता। फिर मुह से गहरी और एकरस आवाज निकलती और वर्षा की बूदो की भाति डेक पर शब्दो की बौछार होने लगती।

"कहो, अम्मा, कहा जा रही हो? क्या कहा, चिस्तोपोल? मैं भी वहा रह चुका हू। एक अमीर तातार किसान के यहा काम करता था। हा, अहसान गुब्रदूलिन उसका नाम था। खुर्राट कहीं का, तीन-तीन बीविया रखता था। मजबूत काठी और चुकदर सा लाल चेहरा। उसकी एक बीवी बस गुडिया जसी थी। छोटे कद की इस तातार स्त्री के साथ मैंने भी मजे किये "

कोई जगह ऐसी नहीं थी जहा वह न गया हो, और रास्ते मे मिली कोई स्त्री ऐसी नहीं थी जिसके साथ उसने मजे न किए हो। बडी शान्ति और स्थिरता के साथ वह यह सब बातें बताता, मानो कडवाहट और मान-अपमान का उसने अपने जीवन मे कभी अनुभव न किया हो। पलक झपकते जहाज के दबूसे से उसकी आवाज सुनाई देती

"है कोई ताश का खिलाड़ी? पत्ता-पटक छक्का, पंजा,–चने भाड़ो जिसे ताश खेलना हो। ताश से बढ़िया चीज इस दुनिया में कोई नहीं है। मजे से पटककर पत्ते फटकारो, और बड़े सौदागर की तरह आराम से धन बटोर लो!"

'भला', 'बुरा', या 'कमीना'–ऐसे शब्द उसके मुंह से शायद ही कभी निकलते थे। उसके लिए हमेशा हर चीज 'लुभावना' या 'आरामदेह' अथवा 'अजीब' होती थी। जब वह किसी सुंदर स्त्री का जिक्र करता तो उसे 'गुड़िया सी सुंदर' कहता, धूप निखरा रुपहला दिन उसे 'आरामदेह दिन' मालूम होता। उसका सब से प्रिय सम्बोधन था

"गोली मारो!"

सब उसे काहिल समझते, लेकिन मुझे लगता कि दमघोट और सड़ांध भरे भट्टी घर मे वह भी उतनी ही लगन से जान तोड मेहनत करता था जितनी कि अन्य। वह बात दूसरी थी कि इंधन डालनेवाले अन्य जहाजियो की भांति न तो वह कभी रोता झींकता था, न ही वह काम के बोझ को लेकर कभी तोबा तिल्ला मचाता था।

एक दिन मुसाफिरो मे से किसी बूढ़ी स्त्री का बटुवा चोरी चला गया। शांत और साफ सांझ थी। सभी उमग से भरे थे। कप्तान ने बुढ़िया को पांच रूबल दिए और मुसाफिरो ने भी उसके लिए चन्दा जमा किया। जब उसे पैसे दिए गए तो उसने सलीब का चिह्न बनाया और कमर तक झुकते हुए बोली

"मेरे बेटो, मुझे तीन रूबल ज्यादा दे दिये। मेरे बटुवे मे तो इतने रूबल थे भी नहीं!"

कोई प्रसन्न भाव से चिल्लया

"ले लो, दादी अम्मा! यह अच्छा ही है कि पास मे कुछ पडा रहे। वक्त पर काम देगा"

किसी अन्य ने एक बढ़िया फबती कसी

"पसा आदमियों से बढ़कर है। उसे कोई नहीं ठुकराता!"

लेकिन याकोव ने बुढ़िया के सामने एक निराला ही सुझाव रखा

"फालतू पसा मुझे दे दो। मैं इससे ताश खेलूगा!"

सब हसने लगे। समझे कि वह मजाक कर रहा है। लेकिन वह पूरी गम्भीरता से बुढ़िया के पीछे पडा था

"लाओ, दादी अम्मा! एक पाव तो तुम्हारा क़ब्र मे लटका है, तुम पसो का क्या करोगी?"

यह देख सब उसपर बमक पडे और उसे बुढ़िया के पास से दूर खदेड दिया। अचरज मे आंखें फाडते हुए उसने मुझसे कहा

"अजीब लोग हैं ये भी! भला ये क्यो बीच मे टाग अडाते हैं? वह खुद कहती थी कि उसे फालतू पसे नहीं चाहिए। ओह, तीन रूबल पाकर मेरी तबीयत हरी हो जाती "

ऐसा मालूम होता मानो उसे धन की, सिक्को की, शक्ल सूरत से प्रेम हो। बातें करते समय उसे अपने पतलून पर सिक्का रगडना अच्छा लगता और फिर जब सिक्का खूब चमक जाता तो उसे अपनी टेढ़ी-मेढ़ी उगलियो मे पकडे अपनी ऊपर को मुडी नाक के पास ले जाता और भौंहे हिला हिलाकर उसे देखता। लेकिन वह लालची नहीं था।

एक बार उसने पत्ता-पटक खेलने के लिए मुझे बुलाया। लेकिन मैं खेलना नहीं जानता था।

"अरे, यह क्या—तू किताबें पढ़ लेता है," उसने अचरज से कहा, "लेकिन पत्ता-पटक खेल नही जानता। अच्छी बात है, मै तुझे सिखाऊगा। चल, पहले ऐसे ही खेले, चीनी की डली की बाजी लगाकर "

उसने आधा पौंड चीनी मुझसे जीती। वह जीतता जाता और चीनी की डली मुह में रखता जाता। जब उसने समझा कि मैं अब खेलना सीख गया तो बोला

"अब हम सचमुच का खेल खेलेंगे, पसो की बाजी लगाकर। जेब मे कुछ है?"

"पाच रूबल हैं।"

"मेरे पास भी ऐसे ही दो-एक रूबल होगे।"

देखते देखते मैं सभी कुछ हार गया। उसे वापस लौटाने की धुन मे पाच रूबल के बदले मैंने अपने लबे गर्म कोट की बाज़ी लगा दी, और उसे भी गवा बठा। फिर अपने नये ऊचे जूतो को दाव पर रखा और उन्हें भी खो दिया। इसके बाद याकोव ने चिडचिडाकर क़रीब क़रीब गुस्से मे कहा

"नहीं, तू खेल नहीं सकता, जल्दी गरमा जाता है—फौरन कोट भी बाजी पर और जूते भी बाजी पर! इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं। यह

ले अपने कपड़े वापस और पैसे भी, चार रूबल, एक रूबल मेरा, तु अक्ल देने का.. ठीक है?"

मेरा हृदय कृतज्ञता से भर गया।

"गोली मार!" मेरी कृतज्ञता के जवाब मे उसने कहा। "खल खर है—मतलब मनबहलाव। लेकिन तू तो बाकायदा कुश्ती करने लगा। और यह गम दिमागी तो लडाई मे भी काम नहीं देगी,—खूबी इस बात में है कि विरोधी को ठडे दिमाग से चित करो। फिर, गरम होने की बात भी क्या है? तू जवान है, और तुझे अपने को क़ाबू मे रखना चाहिए। एक बार चूका, पाच बार चूका, सात बार—फिर गोली मार! एक डग पीछे हट जा, दिमाग को ठडा कर, और फिर जूझ पड। समझा, खेल इस तरह खेला जाता है!"

वह मुझे बराबर अच्छा लगता और साथ ही बुरा भी। कभी-कभी जब वह बोलता तो मुझे अपनी नानी की याद हो आती। उसमे बहुत कुछ था जो मुझे अपनी ओर खींचता, लेकिन लोगो के प्रति उसकी स्थिर, गहन उदासीनता, जो लगता था अत तक उससे चिपकी रहेगी, मुझे उससे विमुख करती।

एक दिन सूरज छिपे दूसरे दर्जे के मुसाफिर, पेम के निवासी एक मोटे सौदागर ने इतनी पी ली कि लडखडाकर जहाज से नीचे पानी मे जा गिरा। वह बुरी तरह हाथ पाव पटक रहा था और जहाज से फटी लाल सुनहरे पानी की लीक मे बहा जा रहा था। जहाज के इजन तुरत बन्द कर दिए गए और वह पहियेनुमा चप्पुओं के नीचे से झाग का बादल छोडकर एकदम स्थिर हो गया। छिपते सूरज की लाली से झाग खून की भाति लाल हो रहा था। रक्तिम लाली के इस उमडते सागर मे एक काला शरीर जो अब काफी पीछे छूट गया था, छटपटा रहा था और पानी में से हृदयवेधी चीखें उठ रही थीं। मुसाफिर भी चिल्लाते और एक-दूसरे को धकियाते हुए जहाज के दयूसे पर जमा हो रहे थे। डूबनेवाले आदमी का गजे सिर और तावे जसे रग के चेहरे वाला एक साथी जो खुद भी नशे में धुत था, भीड को चीरता आगे बढ़ने के लिए चिल्ला रहा था

"रास्ता छोड दो! मैं अभी उसे पकड लाऊगा!"

दो जहाजी पानी मे पहुँच चुके थे और तरकर डूबने हुए आदमी की ओर बढ़ रहे थे। जान बचानेवाली एक नाव नीचे उतारी जा रही थी।

जहाजियो की चिल्लाहट और स्त्रियो की चिल्लपो को वेधकर याकोव की शान्त और गदराई हुई आवाज सुनाई दे रही थी

"यह गर्म कोट पहने है, डूबने से भला कैसे बचेगा। अगर बदन पर भारी लबादा हो तो डूबना तय है। औरतो को लो,–आदमियो के मुकाबले वे क्यो इतनी जल्दी पानी की तह मे बैठ जाती हैं? यह उनके घाघरो की करामात है। औरत पानी मे गिरी नहीं कि ढाई मन के पत्थर की भाति सीधी तल को छूकर ही दम लेती है देखो, वह डूब भी चुका है, मैं यो ही थोड़े कहता हू "

वह सचमुच डूब चुका था। करीब दो घटे तक वे उसकी लाश की खोज करते रहे लेकिन बेकार, लाश नहीं मिली। उसका साथी जो अब होश मे था, जहाज के दबूसे पर उदास बैठा बुदबुदा रहा था

"देखा न, यह क्या हो गया? अब क्या होगा? उसके घरवालो के सामने क्या मुह लेकर मैं जाऊगा, उनसे क्या कहूगा? उसके घरवाले जो हैं "

पीठ के पीछे अपने हाथ बाधे याकोव उसके सामने खडा हो गया और ढारस बधाने लगा

"रोओ मत सौदागर! कोई नहीं जानता कि मौत से किस भेष मे मुठभेड होगी। कभी कभी ऐसा होता है कि एक आदमी अच्छा भला खुमी खाता है और सीधे क़ब्र की राह लेता है। हजारो आदमी खुमिया खाकर मोटे-ताजे बन जाते हैं, लेकिन वह है कि उसे मौत दबोच लेती है। और यह खुमी भी आखिर है क्या?"

वह सौदागर के सामने खडा था–चौडा चकला, चक्की के पत्थर की भाति ठोस, भूसी की भाति अपने शब्दो को बिखेरता हुआ। पहले सौदागर धीमे धीमे रो रहा था और अपनी चौडी हथेली से दाढी पर ढुरक आए आसुओ को पोंछता जाता था। लेकिन याकोव के शब्दो के अर्थ ने जब उसके हृदय को छूना शुरू किया तो वह फुक्का मारकर चीख उठा

"चले जाओ यहा से, शैतान के पूत! मेरा हृदय पहले ही दुख रहा है, तुमने आकर उसे और कुरेदना शुरू कर दिया। भले लोगो, इसे ले जाओ यहा से! नहीं तो जाने मैं क्या कर बैठू!"

याकोव शान्त भाव से हटते हुए बोला

"लोग सचमुच मे अजीब हैं। उन्हे भली बात कहो, तो मारने को दौडते हैं "

कभी कभी याकोव मुझे भोले दिमाग का आदमी लगता था, लेकिन बहुधा मैं यह सोचता था कि वह केवल बनता है। मेरा जी बुरी तरह ललकता कि उसके मुह से उन जगहो का हाल सुनू, जहा वह हो आया है, उन चीजो के बारे मे जानू जिन्हे वह देख चुका है। लेकिन इससे कुछ नहीं बनता। वह अपना सिर पीछे की ओर तान लेता, भाव भरी काली आखो को आधा मूद लेता, अपने थलथल चेहरे को थपथपाता और आप बीती याद करते हुए धीरे धीरे बातो की लडिया खोलने लगता

"आदमी ही आदमी, जहा भी जाओ, चीटियो के दल की तरह आदमी ही आदमी दिखाई देते हैं। यहा भी आदमी, वहां भी आदमी—ढेर के ढेर। उनमे भी ज्यादातर किसान, पतझड के पत्ता जसे सारी दुनिया मे बिखरे हुए। बुल्गार? सच, बुल्गारिया के लोगो को मैंने देखा, और यूनानियो को भी, और सर्बिया—रूमानिया के लोगो और सभी तरह के जिप्सी भी देखने को मिले। लोग कसे थे? ऊह, कसे क्या होते? शहरों मे शहरी लोग थे, और देहातो मे देहाती। ठीक हमारी ही तरह एकदम मिलते-जुलते। उनमे से कुछ तो हमारी बोली भी जानते हैं। हां, ठीक से नहीं बोल पाते। मिसाल के लिए जसे तातार और मोरदोविया वाले। यूनानी हमारी बोली नहीं बोल सकते, पता नहीं वे क्या ऊल-जलूल बोलते हैं। सुनने मे तो लगता है कि शब्द मुह से निकल रहे हैं, लेकिन मतलब समझना चाहो तो कुछ पल्ले नहीं पडता। उनसे हाथ के इशारो से बात करनी पडती है। और यह बूढ़ा खुर्राट जिसके साथ मैं काम करता था, यह दिखाने के लिए कि वह यूनानियो की बोली समझता है, हर घडी 'कारामारा, कालिमेरा' बडबडाता रहता। यह सचमुच मे खुर्राट था, बड़ा ही चलता पुर्जा। उलटे उस्तरे से उनकी हजामत बनाता। क्या कहा तूने? यह कि वह कसे थे? बार-बार यही सवाल दोहराता है! मेरे बुद्धू, यह भी कोई जानने की बात है? जरूर उनका रग काला होता है, और ऐसे ही रूमानियों का भी—ये सब एक ही मजहब मानते हैं। बुल्गार भी काले होते हैं, लेकिन उनका मजहब हमारे जसा है। और यूनानी—वे तुर्कों जसे होते हैं..."

मुझे लगता कि वह सब कुछ नहीं बता रहा है, कोई चीज है जिसे वह छिपा रहा है।

पत्र-पत्रिकाओ मे छपे चित्रो से मैं जानता था कि यूनान की राजधानी एथेन्स है जो एक प्राचीन और सुंदर नगर है। लेकिन याकोव ने अविश्वास से सिर हिलाया और एथेंस के अस्तित्व से इनकार करते हुए बोला

"यह तो तुझे झूठ बताया गया है, भाई मेरे! एथेंस नाम की कोई चीज नहीं है, केवल एथोस है, और वह भी नगर न होकर एक पहाड है जिसपर एक मठ बना है। बस, इसके सिवा और सब झूठ है। इसे लोग पवित्र एथोस परवत कहते हैं। मेरा बूढा इस परबत की तसवीरे भी बेचता था। डेन्यूब नदी के किनारे बेलगोरोद नाम का एक नगर जरूर है, हमारे यारोस्लाव्ल या नीज्नीसे मिलता-जुलता। उनके नगर किसी काम के नहीं हैं, लेकिन उनके गाव – उनकी तो बात ही दूसरी है और उनकी औरतें भी, – बस, कुछ न पूछो। ऐसी ही एक औरत के चक्कर मे मैं वहा फस गया। भला क्या नाम था उसका?"

उसने अपनी हथेलियो को गालो पर कसके रगडा और उसकी दाढी के बाल धीमे से चरचरा उठे। फिर, उसके गले की गहराई से फूटी हुई घटी की भाति हसी सुनाई दी

"वाह भई, आदमी भी कितनी जल्दी भूल जाता है। वह मेरे पीछे पागल थी और मैं उसके जब मैं वहा से चला तो वह फूट-फूटकर रोई, और सच मान चाहे झूठ, मेरी आखों से भी आसू बहने लगे "

इसके बाद, पूरी बेशर्मी से, उसने मुझे सिखाना शुरू किया कि स्त्रियों के साथ कसे क्या करना चाहिए, किस तरह उनके साथ पेश आना चाहिए।

जहाज के दबूसे पर हम बठे थे। सुहावनी और चादनी खिली रात बाह पसारे हमारी ओर बढ रही थी। बाईं ओर रुपहले पानी के उस पार चरागाहो की भूमि आखो से लगभग ओझल हो चली थी, दाहिनी ओर पहाडियो पर जहा-तहा पीली रोशनिया टिमटिमा रही थीं। ऐसा मालूम होता या माना पृथ्वी ने आकाश के तारा को यहा लाकर बदी बना दिया हो। हर चीज गतिवान, सजग और स्पदनशील थी, शात किन्तु जीवन की गहराई से भरपूर। और उसके भरभराते हुए शब्द मधुर और उदास निस्तब्धता से छनकर गिर रहे थे

"हाथ-पर फलाकर लबी हो जाती "

याकोव के क़िस्सो मे नगापन होता, लेकिन घिनौनापन नहीं, उनमें न शेखी का पुट होता, न क्रूरता का। वे अलगढ़ और कुछ हद तक उनामी मे डूबे होते। ऊपर आकाश मे चांद तरता होता, बिना किसी आवरण के, उतना ही उघडापन लिए, और हृदय मे उतने ही उदास भावो का सचार करनेवाला। मुझे केवल उन्हीं चीजो की याद आती जो अच्छी थीं, सबन अच्छी रानी मार्गो, और सचाई से भरी ये पक्तियां जिन्हें कभी नहीं भूला जा सकता

है केवल गीत की आवश्यकता सौदय को
सौदय को नहीं चाहिये गीत भी

सोच विचार के अपने मूड को मैं हल्की नींद की तरह झटककर फिर उसपर दबाव डालता कि वह अपने जीवन और जो कुछ उसन देखा-सुना है उसके बारे मे बताए। वह कहता

"तू भी अजीब जानवर है! तुझे मैं क्या-क्या बताऊ? सभी कुछ तो मैंने देखा है। मठ?—हा, मैंने मठ देखा है। और भटियारखाना?—हा, भटियारखाना भी। साहब लोगो का जीवन भी मैंने देखा है और देहातियों का जीवन भी। भूख भी देखी और छककर खाया भी"

फिर धीरे धीरे, मानो वह किसी गहरी नदी के चरर-मरर करते पुल पर से गुजर रहा हो, वह अपना अतीत याद करता

"मिसाल के लिए एक यही बात लो, थाने वाली बात, घोडा चुराने के बाद जब मैं हवालात मे बद था। मुझे लगा कि अब जान नहीं बचेगी, जरूर काले कोसो साइबेरिया के लिए बिस्तर गोल करना पडेगा। तभी पुलिस अफसर पर मेरी नजर पडी। वह अपने नये घर के अलावघरो को कोस रहा था जो खूब धुआ देते थे। मैंने उससे कहा, 'सरकार, अगर हुक्म हो तो मैं उन्हें ठीक कर सकता हू।' पजे पने कर वह मुझपर झपटा। बोला, 'तेरी यह हिमाकत? नगर का सबसे अच्छा अलावघर बनानेवाला तो उन्हे ठीक नहीं कर सका, और तू डाग मारता है कि ठीक कर देगा!' लेकिन मैं भी डटा रहा। कहा, 'कभी-कभी निरा बुद्धू भी काजी को पछाड देता है।' काले कोसो साइबेरिया मेरे सिर पर मडरा रहा था। सो मैं जरा भी नहीं दबा। आखिर उसने कहा, 'अच्छी बात है। तू भी कोशिश कर देख। लेकिन तेरे हाथ लगाने के बाद अगर

उन्होंने ज्यादा धुआ देना शुरु किया तो समझ ले, तेरा कचूमर ही निकाल दूंगा!' झटपट दो दिन के भीतर मैंने अलावघरों को ठीक कर दिया। अफसर अचरज मे पड गया, 'अरे काठ के उल्लू! छछूदर की दुम! तू इतना बडा कारीगर, और घोडे चुराता फिरता है? आखिर क्यो?' मैंने कहा, 'यही तो मेरी बेवकूफी है, सरकार!' वह बोला, 'ठीक कहता है। यह बेवकूफी है। कितने दुख की बात है। मुझे तुझपर तरस आता है।' सुना तूने? एक पुलिस अफसर, जिसके पेशे मे तरस और रहम के लिए कोई जगह नहीं होती, लेकिन वह है कि मुझपर तरस खा रहा है! "

"हां तो फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"कुछ भी नहीं। बस, उसका दिल पिघला, उसने मुझपर तरस खाया। और तुझे क्या चाहिए?"

"लेकिन तुम तो चट्टान जसे मजबूत और हट्टे-कट्टे हो। तुम्हे देखकर क्या कोई तरस खा सकता है?"

याकोव बहुत ही भली हसी हसा।

"तू भी अजीब जानवर है। क्या कहा तूने—चट्टान जसा? लेकिन चट्टान भी मान रखने की चीज है। यह भी अपना काम करती है। चट्टान के पत्थरो से सडके बनती हैं। हर चीज का एक अपना मान है, उसका एक अपना उपयोग है। रेत को ही लो। रेत आखिर होती क्या है? लेकिन उसमे भी घास उगती है "

याकोव जब ऐसी बातें करता तो मुझे खास तौर से अनुभव होता कि उसके ज्ञान की पहुच मेरी समझ से बाहर है।

"बावर्ची के बारे मे तुम्हारा क्या ख्याल है?" मैंने उससे पूछा।

"कौन नाटा भालू?" याकोव ने उपेक्षा से कहा। "उसके बारे मे भला मेरा क्या ख्याल हो सकता है? ख्याल करने को उसमे कोई बात भी तो हो!"

उसका कहना ठीक था। इवान इवानोविच इतना सपाट और चिकना, और कुछ इतना ठीकोठीक था कि ख्याल नाम की चीज लटकाने लायक खूटिया उसमे नहीं थी। उसमे केवल एक ही दिलचस्प चीज थी वह याकोव से घृणा करता था और जब देखो तब उसे डाटता रहता था, लेकिन चाय फिर भी सदा उसके साथ ही पीता था।

एक दिन उसने याकोव से कहा

"अगर तू मेरा दास और मैं तेरा मालिक होता तो हफ्ते में सात बार तेरी चमड़ी रंगता, सोफ्रो के सरदार!"

"हफ्ते मे सात बार तो कुछ ज्यादा है," याकोव ने पूरी गम्भीरता से जवाब दिया।

इस निरन्तर डांट डपट के बावजूद, न जाने क्यों, बावर्ची बराबर उसके पेट का कुआं भरता रहता। खाने की कोई न कोई चीज वह उसे देता और कहता

"यह ले, पेटू की दुम!"

"तुम्हारी दया से खूब ताक़त बटोर लूंगा, इवान इवानोविच।" खाने की चीज को अलस भाव से चबाते हुए याकोव कहता।

"लेकिन अपनी इस ताक़त का करेगा क्या, काहिलों के सिरताज!"

"क्यों, लबी उम्र जीऊंगा, और क्या "

"जीकर करेगा क्या, बेताल?"

"बेताल भी जीना चाहता है। या फिर तुम्हें जीवन बेरस मालूम होता है? जीवन बहुत ही मजेदार चीज है, इवान इवानोविच.."

"वाह मूर्खाधिराज!"

"क्या कहा?"

"मू र्खा धि रा-ज!"

"क्या शब्द है यह भी!" याकोव अचरज से कहता, और मार भालू मुझसे कहता

"जरा इसे देख, तो। तू और मैं इन भट्ठियो मे सिर दिए अपना खून पसीना एक करते है, लेकिन यह है कि सूअर की तरह जबड़ा चला रहा है!"

"हरेक का अपना अपना भाग होता है," उसने अपना जबड़ा चलाते हुए कहा।

मैं जानता था कि बावर्चीखाने की भट्ठियो के पास खड़े होने के मुक़ाबले भट्ठी मे ईंधन डालना कहीं अधिक जानलेवा और हाड़ झुलसा देनेवाला काम है, एक या दो बार रात को मैं खुद याकोव के साथ काम करके यह देख चुका था, लेकिन इस बात को वह कभी पलटकर नहीं कहता था। यह मेरी समझ मे न आता और मेरा या

विश्वास और भी ज्यादा दृढ़ होता जाता कि उसके पास कोई विशेष ज्ञान है

उसे सभी डाटते-डपटते थे – कप्तान भी, मशीनिये भी, मल्लाहो का मुखिया भी – वे सब जिनका उससे कुछ भी वास्ता पडता। मुझे अचरज होता कि लात मारकर वे उसे निकाल क्यो नहीं देते? ईंधन डालने वाले जहाजी उसके साथ कुछ अधिक नर्मी से पेश आते, हालाकि वे सिर-पैर की उसकी बकवास और उसकी पत्तेबाजी पर वे भी खूब मजाक उडाते थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा

"क्या याकोव अच्छा आदमी है?"

"याकोव बिल्कुल ठिकाने का आदमी है। कभी नाराज नहीं होता। कितना ही उसे उलटो-पलटो, चाहे उसकी कमीज के भीतर जलते हुए कोयले ही क्यो न छोड दो, उसका दिमाग कभी नहीं गडबडाता "

ईंधन डालने का थकाकर चूर कर देनेवाला जानलेवा काम करने और अपने पेट का कुआ ठसाठस भर लेने के बाद भी याकोव बहुत कम सोता। अपनी पाली का काम खत्म होते ही वह दबूसे पर आ जाता, गर्दा और पसीने मे बुरी तरह तर, बहुधा वही काम के काले चीकट कपडे पहने और सारी रात बैठा रहता, मुसाफिरो के साथ बतियाता या ताश खेलता।

मेरे लिए वह तालेबन्द सन्दूक के समान था। मुझे लगता कि उसके भीतर अवश्य कोई ऐसी चीज बन्द है जिसके बिना मेरा काम नहीं चल सकता और इस ताले को खोलनेवाली कुजी पाने के लिए मैं बेहद बेचैन हो उठता।

भौंहो की ओट मे अदृश्य आखो से वह मुझे देखता। फिर कहता, "तेरे सिर पर तो भूत सवार है, भाई मेरे! मेरी समझ मे नहीं आता कि तू चाहता क्या है? दुनिया के बारे मे जानना चाहता है? यह सच है कि मैंने दुनिया छानी है। लेकिन इससे क्या? तू भी अजीब पछी है। अच्छा तो सुन, एक दिन की बात मैं तुझे बताता हू।"

और जो किस्सा उसने मुझे सुनाया, वह इस प्रकार है बहुत दिन हुए, किसी सूबाई शहर मे एक नौजवान जज रहता था। वह तपेदिक का मरीज था। किसी जर्मन लडकी से उसने शादी की थी हट्टी-कट्टी, न

कोई बाल न बच्चा। उसका दिल एक सौदागर के लिए कुड़मड़ाने लगा जो तीन बच्चों का बाप था, और जिसकी खूबसूरत पत्नी थी। सौदागर ने जब यह देखा कि जमन औरत उसपर न्यौछावर होने के लिए तयार है तो उसने उसके साथ एक मजाक करने की सोची। कहा कि बाग़ में रात को आकर मुझसे मिलो और अपने दो साथियों को झुरमुटों मे छिपा दिया।

"ठीक है। जमन औरत आई, गरमागरम और उबक चुबक करती, इशारा पाते ही उसके सामने बिछ जाने को तयार। लेकिन उसने कहा, "नहीं श्रीमती जी, मैं तुम्हें गले से नहीं लगा सकता। मैं शादी-शुदा हूं। लेकिन तुम्हारे लिए मेरे दो साथी मौजूद हैं—एक कुवारा है और दूसरा रडुआ।" इसपर औरत ने आह भरी और सौदागर के एक ऐसा घात जमाया कि वह कलाबाजी खाकर बेंच पर से उलट गया और उसने ठोकरें मार-मारकर उसका तोबड़ा ठीक कर दिया। मैं जज के यहां काम करता था और उस औरत को मैं ही बाग़ मे पहुचाने आया था। बाड़ के पीछे झिरियो मे से मैंने यह सारा तमाशा देखा। उसके दोनो साथी उछलकर झुरमुटो में से निकल आए और औरत की ओर झपटे और उसके बाल पकड़कर खींचते हुए ले चले। अब क्या था, बाड़े को फांदकर मैं उनसे भिड़ गया। 'यह भी कोई तरीका है,' मैंने कहा, 'औरत ने उसका विश्वास किया और यहा चली आई, लेकिन वह उसकी मिट्टी पलीद करने पर उतर आया।' उसको उनके चगुल से छुड़ाकर मैं अपने साथ ले चला। पीछे से उन्होंने मेरी खोपड़ी का निशाना साधा और एक इंट फेंककर मारी औरत का बुरा हाल था। अहाते मे बेचैनी से टहलती रहती। मुझसे कहती, 'मैं चली जाऊगी यहा से, मै जमनी, अपने लोगों के पास, चली जाऊंगी, याकाव! मेरा पति दो दिन का मेहमान है, उसके मरते ही मैं यहा से चल दूगी।' मै बोला, 'यह ठीक है। यहां रहकर तुम करोगी भी क्या?' और हुआ भी ऐसा ही। जज मर गया और वह चली गई। वह बहुत ही भली थी और समझदार भी। और जज भी बहुत भला था, भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे"

उसकी इस कहानी का मतलब मेरी समझ मे नहीं आया। मैंने उसे सुना और चुपचाप बैठा रहा। उसमे मुझे कुछ वसी ही क्रूरता और निरथकता दिखाई दी जिससे कि मै परिचित था। बस इतना ही, और कुछ नहीं।

"क्यों, कहानी पसन्द आई?" [illegible]

झुंझलाहट से मैं कुछ [illegible] मुझे समझाते हुए बोला

"वो मालदार लोग हैं, हर बात में [illegible] हंसी-मजाक को भी करना है, पर [illegible] करना आता नहीं उन्हें। बस तो [illegible] हैं काम-काज वाले। व्यापार में तो दिमाग [illegible] है और दिमाग से काम करते-करते तो आदमी ऊब ही जाता है सो बस [illegible] लेना चाहते हैं।"

जहाज पानी को चीरता और मथता, पानी में बल डालता और झागों के बादल उड़ाता, आगे बढ़ रहा था। पानी के उबलने-उफनने की आवाज आ रही थी और काले नदी-तट धीरे-धीरे दूर होते जा रहे थे। डेक पर से मुसाफिरों के खर्राटों की आवाज आ रही थी। काले कपड़े पहने एक लम्बी और दुबली-पतली स्त्री बेंचों और सोते हुए लोगों के बीच से लचक सुई सी गुजर रही थी। उसका सिर झुका था और उसके सफेद बाल चमक रहे थे। याकोव ने मुझे धक्का मारा और बोला

"इसे देख, मालूम होता है, उदास है—"

मुझे लगा कि दूसरों का उदास देखने में उसे मजा आता है।

वह हमेशा कोई न कोई क़िस्सा सुनाता और मैं बड़े चाव से सुनता। मुझे उसके सभी क़िस्से याद थे, लेकिन उनमें ऐसा एक भी नहीं था जो खुशी से सराबोर हो। किताबों के मुकाबले वह कहीं ज्यादा असलग्न और तटस्थ मालूम होता था। किताबें पढ़ते समय बहुधा साफ पता चल जाता था कि लेखक की भावनाएं क्या हैं—न उसकी खुशी छिपी रहती, न उसका गुस्सा। साफ झलक जाता कि यहां वह दुःख प्रकट कर रहा है, और यहां हंसी उड़ा रहा है। लेकिन याकोव न कभी मजाक उड़ाता था, न किसी पर भले या बुरे का लेबुल लगाता था। वह कोई ऐसी बात न प्रकट करता जिससे उसकी नाराजी या खुशी का पता चलता। वह अदालत में एक तटस्थ गवाह की भांति बोलता, उस आदमी की भांति जिसके लिए अपराधी, सरकारी वकील और जज सभी एक समान हों। उसकी यह तटस्थ असलग्नता मुझे अधिकाधिक बुरी और बोझिल मालूम होती, और याकोव के प्रति झुंझलाहट भरी दुश्मनी का वह मुझमें संचार करती।

बायलरो की भट्ठी मे उठनेवाली लपटो की भांति जीवन उसकी आंखो के सामने नाचता रहता और वह, भालू जैसे अपने पंजे मे लकडी की हथौड़ी दबोचे, बायलर के पास खड़ा हुआ धनर के बर्वे को चुपचाप ठकठकाता रहता और ईंधन को घटाता या बढाता रहता।

"क्या तुम्हे किसीने चोट पहुचाई है?"

"मुझे भला कौन चोट पहुचा सकता है? मेरा यह शरीर नहीं देखा, एक ही घूसे में काम तमाम कर दू "

"मेरा यह मतलब नहीं था। मेरा मतलब भीतर की, दिल और आत्मा की, चोट से था।"

"आत्मा को भला कोई कैसे चोट पहुचा सकता है," उसने कहा "वह अपमान से परे है। उसे कोई चीज नहीं छू सकता – नहीं कोई भी नहीं "

डेक के मुसाफिर, जहाजी और अन्य सभी लोग, आत्मा के बारे में भी उसी तरह बातें करते नहीं अघाते थे जिस तरह कि वे जमीन या अपने धंधे, रोटी-पानी अथवा स्त्रियो के बारे मे बातें करते नहीं अघाते आम लोगा के शब्द भडार मे आत्मा शब्द एक चलता हुआ सिक्का था पाच कोपेक के सिक्के की भांति उसका व्यापक प्रचार और चलन था। मुझे यह देखकर बडा बुरा मालूम होता कि यह शब्द लोगो की चिकनी जबानो से इस हद तक चिपककर रह गया है, और जब कोई किसान गंदे शब्दो की बौछार करते करते प्यार और द्वेष के साथ आत्मा की दुहाई देने या उसे कोसने लगता तो मुझे ऐसा मालूम होता मानो किसी ने मेरे सीने पर सीधा आघात किया हो।

मुझे अच्छी तरह से याद था कि मेरी नानी जब भी आत्मा का, प्रेम और आल्हाद तथा सौंदय के इस रहस्यमय पात्र का, जिक्र करती तो श्रद्धा से उसका माथा झुक जाता, और मुझे पक्का विश्वास था कि जब कोई भला आदमी मरता है तो सफेद फरिश्ते उसकी आत्मा को नीले आसमान मे नानी के दयालु भगवान के पास ले जाते हैं और वह बड़े ही प्यार और दुलार से उसका स्वागत करता है

"आ मेरी प्यारी, मेरी पवित्र – बडे कष्ट भोगे, बडे दुःख झेले?"

और वह आत्मा को फरिश्तों जैसे छ सफेद पख अता कर देता है।

याकोव शूमोव भी, नानी की भांति, उतनी ही श्रद्धा से उतनी ही

कम मात्रा मे और उतने ही अनमने भाव से आत्मा के बारे मे बात करता था। वह आत्मा को कभी नहीं कोसता था। और जब कभी वह दूसरो को ऐसा करते सुनता या देखता तो वह चुप हो जाता, अपना सिर नीचे झुका लेता। लाल भभूका और साड की भाति मजबूत उसकी गरदन लटक जाती। जब मैं उससे पूछता कि आत्मा क्या है तो वह जवाब देता

"आत्मा एक हवा है, ईश्वर की सास "

मुझे इससे सन्तोष न होता और अन्य सवालो की मैं झडी लगा देता। आख झुकाकर वह कहता

"आत्मा का भेद तो पादरी भी नहीं जानते, मेरे भाई। यह एक गुप्त रहस्य है "

मैं बराबर उसके ही बारे मे सोचता रहता, और उसे समझने मे अपनी सारी कोशिश लगा देता। लेकिन बेकार। इसके अलावा मुझे याकोव के सिवा और कुछ दिखाई न देता, उसके भारी भरकम शरीर की ओट मे मानो सभी कुछ छिप जाता।

बारमन की पत्नी का इधर मेरी ओर कुछ जरूरत से ज्यादा झुकाव हो गया था। हर रोज सुबह वह मुझसे ही नहाने धोने के लिए पानी भरवाती, हालाकि यह काम क़ायदे से मेरा नहीं बल्कि दूसरे दर्जे की साफ-सुथरी, प्रसन्नमुख, टुइया सी परिचारिका लूशा का था। छोटे से सकरे केबिन मे कमर तक नगी इस स्त्री के पास जब मैं खडा होता तो खट्टे खमीर की भाति लिजबिज उसके पीले शरीर से मुझे बडी घिन मालूम होती और अनजाने ही, रानी मार्गो के पुष्ट और ताम्बे की भाति दमकते बदन से मैं उसकी तुलना करने लगता। और बारमन की पत्नी की जबान बराबर चलती रहती, कभी वह कोसती और शिकायत सी करती, और कभी गुस्से मे बडबडाने और धज्जिया सी उधेडने लगती।

उसकी बात मेरे पल्ले न पडती, हालाकि मानो कहीं दूर से मै उसका मतलब भापता था जो दयनीय, भिखमगा और शमनाक मतलब था। लेकिन मेरा मन जरा भी नहीं डिगा। मेरे और बारमन की पत्नी के बीच, और उस हर चीज के बीच जो जहाज पर घटती या होती थी, एक दूरी थी। एक भीमाकार काई चढ़ी चट्टान मुझे अपने चारो ओर की दुनिया से अलग किए थी। और यह दुनिया स्थिर नहीं, गतिशील थी—दिन प्रति दिन समय के साथ तरती और हर घडी आगे बढ़ती हुई।

"यारमा की औरत तो तुमपर बुरी तरह लट्टू है!" सिल्ली उड़ानेवाली लूगा की आवाज गूंज उठती और भूरा इस तरह मुस्कराता मानो वह सपने में बोल रही हो। "अब क्या है, मजे से गोते लगा, दा-धड़े गगा बड़े भाग से आती है "

मेरी सिल्ली उड़ानेवालो मे अकेली यही नहीं थी। बार के सभी कर्मचारी इस स्त्री के लगाव से परिचित थे। बावर्ची मुह बिचकाकर आवाज कसता

"और सब चीजों का जायका तो देवी जी ले चुकीं, सो अब पेस्ट्री चखने का शौक चर्राया है! सभलकर पाव रखना, पाकोव, नहीं तो गड़गच्च हो जायगा!"

पाकोव ने भी पिता के अन्दाज मे कामकाजी सलाह दी

"अगर तू दो या तीन साल और बड़ा होता तो निश्चय ही तब मैं दूसरे ही अन्दाज मे बातें करता। लेकिन इस उम्र मे—अच्छा है कि अछूता ही रह। लेकिन मैं तुझे रोकूगा नहीं, जो अच्छा लगे सो कर.."

"मारो गोली," मैंने कहा, "मुझे तो घिन आती है "

"ठीक, गोली मारो!"

लेकिन, कुछ क्षण बाद ही अपने उलझे हुए बालो को उगलियो से ठीक करने की कोशिश करते हुए अपने गोल-मटोल शब्दों को बाज की भांति बिखेरना शुरू कर देता

"लेकिन उसकी बात भी समझनी चाहिए, ढलती उम्र है बेचारी की कुत्ता तक यह चाहता है कि उसे कोई थपथपाए, इसान को तो इसकी और भी जरूरत है। प्यार-दुलार पर ही तो औरत जीती है, जैसे खुमियां नमी पर जीती हैं। शायद वह इससे खुद शर्माती हो, लेकिन वह करे भी क्या? शरीर मागता है कि उसे दुलारा थपथपाया जाए, बस बात सारी यही है..."

उसकी रहस्यमयी आखो मे आखें गड़ाकर मैंने पूछा

"क्या तुम्हें उसपर तरस आता है?"

"मुझे? मेरी क्या वह मा लगती है? लोग तो अपनी मा पर भी तरस नहीं खाते। सचमुच, तू भी अजीब पछी है!"

वह धीमी हसी हसता, फूटी हुई घटी की आवाज जैसी।

कभी कभी जब मैं उसकी ओर देखता तो ऐसा मालूम होता मानो मैं निःशब्द शून्य मे, किसी अतल गढे और अंधेरे मे डूबा चला जा रहा हू।

"और सब लोग शादी करते हैं, याकोव! तुम क्यों नहीं करते?"

"किस लिए? औरत के लिए मुझे कभी तड़पना नहीं पड़ता,—भला हो भगवान का, आसानी से मिल जाती है विवाह के बाद आदमी घर से बंध जाता है, उसे खेतीबाड़ी करनी पड़ती है। मेरे पास जमीन है, लेकिन बहुत ही कम, वो भी मेरे चाचा ने हथिया ली है। मेरा भाई जब फौज से लौटा तो उसने चाचा से झगड़ा शुरू किया, मुकदमा चलाया और उसका फिर फोड़ दिया। खून-खराबा किया। इसके लिए पूरे डेढ़ साल की उसे सजा हुई, और इसके बाद—सजा-काटे आदमी के लिए एक ही रास्ता रह जाता है जो उसे फिर जेल पहुंचा देता है। अच्छी सी नौजवान घरवाली थी उसकी—छोड़, क्या कहना। शादी कर ली तो बस बैठ जा अपनी मड़या की रखवाली करने, पर सिपाही तो अपनी जिंदगी का मालिक नहीं, एक जगह बैठा नहीं जा सकता।"

"क्या तुम खुदा की प्रार्थना करते हो?"

"क्या सवाल किया है पंछी ने। जरूर करता हूं"

"किस तरह करते हो?"

"कई तरह से।"

"तुम्हें कौन सी प्रार्थनाएं याद हैं?"

"मैं कोई प्रार्थना-वार्थना नहीं जानता। बस, सीधे कहता हूं, महाप्रभु ईसा, जीवितों पर तरस खा, मरों को शान्ति दे, बीमारी चकारी से हमारी रक्षा कर और ऐसी ही कुछ और बातें कहता हूं"

"क्या बातें?"

"ओह, मतलब यह कि जो कुछ भी कहना हो, वह महाप्रभु ईसा के पास पहुंच जाता है।"

वह मेरे साथ बड़ी नर्मी बरतता और एक प्रकार के कौतुक में भरकर मुझे देखता, मानो मैं कोई चतुर पिल्ला हूं जो मजेदार करतब दिखा सकता है। सांझ को मैं उसके पास बैठ जाता, उसके बदन से तेल, आग और प्याज की गंध आती रहती,—प्याज उसे बहुत पसंद था और उसे सेब की भांति कच्चा ही खा जाता। बैठे-बैठे उसे न जाने क्या सूझती कि एकाएक कहता

"हां तो अल्योशा-वल्योशा, अब कोई कविता ही सुना दे!"

मुझे ढेर सारी कविताएं जबानी याद थीं। उनके अलावा मेरे पास एक

मोटी कापी भी थी जिसमें मैं वे सभी कविताए उतार लेता था जो मुझे अच्छी लगती थीं। मैं उसे पुश्किन की कविता "रुस्लान और ल्यदमीला" सुनाता और वह निश्चल सुनता रहता—न उसकी आंखें हरकत करतीं, न जबान—सास लेने की अपनी घरघराहट तक को वह रोक लेता। अन्त मे धीमे स्वर मे कहता

"कितनी प्यारी कहानी है! क्या खुद तूने इसे गढा है? क्या कहा, पुश्किन ने लिखी थी? एक बड़े कुलीन आदमी को तो मैं भी जानता हूं। मुश्किन-पुश्किन उसका नाम था।"

"वह नहीं, यह दूसरा पुश्किन है। बहुत दिन हुए उसे मार डाला गया था।"

"किसलिए?"

थोड़े मे मैंने उसे पुश्किन के जीवन और मौत की कहानी बता दी जो मुझे रानी मार्गो ने सुनाई थी। जब मैं सुना चुका तो उसने शान्त स्वर में कहा

"औरतो के पीछे न जाने कितने लोग अपनी जान से हाथ धो बठते है "

मैं बहुधा उसे किताबो मे पढ़ी कहानिया सुनाया करता। ये कहानियां, सब की सब, मेरे दिमाग़ मे कुछ इतनी उलट-पुलट और गड्ड-मड्ड हो जातीं कि आपस में गुथ-गुथकर एक लम्बी-चौडी धारा का रूप धारण कर लेतीं, एक ऐसी धारा का जिसमे गहरी उथल-पुथल होती और सौंदर्य भी, प्रेम और वासना की लपलपाती लपटें होतीं और गरदन-तोड साहसिक कृत्य भी, नेक नायक, चकित कर देनेवाली सौभाग्य की अद्भुत वर्षा, द्वन्द्व-युद्ध और मौत, बढ़िया-बढिया शब्द और कुटिलता मे सिर से पांव तक डूबे खल-नायक—इसी धारा मे गुथ जाते। रोकाम्बोल को मैं लामाल, हनीबाल और कोलोनस का शौर्य प्रदान करता, ग्यारहवें लुई को पिता ग्रांडे के गुणो से लस कर देता, और कोरनेट ओतलेतायेव की मैं एसा कायापलट करता कि उसे देखकर हैनरी चतुर्थ का धोखा होता। मुझे नयी से नयी बात सूझती। लोगो के चरित्रों मे मैं फेर फार करता और घटनाओं को नये सिरे से सजा देता,—एक ऐसी दुनिया आबाद करता जिसका मैं एक मात्र शासक होता, अपने नाना के खुदा की भांति जो लोगो के साथ मनमाने खेल खेलता है। लेकिन इस दुनिया के चारो ओर फली

हुई जीवन की वास्तविकता मेरी आखो की ओट न होती, न ही जीवित लोगो को समझने की मेरी इच्छा को पाला मारता, बल्कि किताबी दुनिया का यह ऊहापोह पारदर्शी और अभेद्य रक्षाकवच बनकर जीवन मे व्याप्त विपली गदगी और सडाध से हर घडी ताक मे रहनेवाले अनगिनत घातक कीडो से मेरी रक्षा करता।

किताबो ने मुझे बहुत सी चीजो के लिए अभेद्य बनाया यह जान लेने के बाद कि प्रेमी किस तरह प्रेम करते और तडपते हैं, भूलकर भी किसी चकले मे पाव रखना असम्भव था। छिनाल का यह सस्ता रूप देख मुझे तरस आता और मेरा हृदय उन लोगो के प्रति घृणा से भर जाता जो इसमे रस लेते। रोकाम्बोल ने मुझे सिखाया कि परिस्थितियो की ताक़त से लोहा लो, उन के सामने कभी न झुको। ड्यूमा के नायको ने किसी ऊचे और महत्वपूर्ण लक्ष्य के लिए जीवन अर्पित करने की मुझे सीख दी। और सबसे अधिक मुग्ध किया मुझे राजा हेनरी चतुर्थ के मौजी चरित्र ने। मुझे ऐसा लगता मानो उसी को लक्ष्य मे रखकर बेराजे ने अपना यह मस्ती भरा गीत रचा हो

मिली छूट खूब जनता को उससे,
और था पीने का वह भी शौकीन!
हा, जीती जब जनता सुख से,
तो हो क्यो न राजा भी रगीन?

उपन्यासो मे हेनरी चतुर्थ एक नेक और जनता के हृदय में घर कर लेनेवाले आदमी के रूप मे चित्रित था। सुनहरी धूप की भाति उजला उसने मेरे दिल मे अडिग भाव से यह बात बिठाई कि फ्रास से बढ़िया देश इस दुनिया मे और कोई नहीं है जहा किसानो के कपडे पहने लोग भी उतने ही नेक और अच्छे हैं जितने कि वे जो शाही शान शौकत मे रहते हैं। आजे पितोय भी उतना ही आन-बान वाला था जितना कि द आरतायान। जब हेनरी मारा गया तो मेरा हृदय भारी हो गया, आखो से आसू बहने लगे और गुस्से के मारे रवेलाक पर मैंने खूब दात पीसे। हेनरी करीब-क़रीब उन सभी कहानिया का हीरो होता जो मैं याकोव को सुनाता, और मुझे लगता कि उसके हृदय मे भी हेनरी और फ्रास ने अपना स्थान बना लिया है।

17*

"मजे का आदमी है, तुम्हारा यह हेनरी बादशाह भी।" उसने
कहा। "एकदम यार बाश, चाहो तो उसके साथ मछली मारो या सर
सपाटा करो।"

कहानी सुनते समय न कभी वह वाह-वाहो करता न बीच मे टोकता
न सवालों की झडी लगाता था। वह चुपचाप सुनता रहता,—भौंहें तने
हुई, चेहरे पर वही एक भाव जो कभी नहीं बदलता था,—काई बने
पुरानी चट्टान की भांति। लेकिन अगर किसी वजह से मैं बीच में रु
जाता तो वह तुरत कहता

"क्या खत्म हो गई?"

"अभी नहीं।"

"तो रुक नहीं, कहे जा।"

एक दिन फ्रांस के लोगा के बारे मे जब हम बातें कर रहे थे तो
उसने लम्बी सास भरी और बोला

"मजे की जिंदगी है उनकी – बढ़िया और ठडी.."

"सो कैसे?"

"हां, बढ़िया और ठडी," उसने कहा, "एक हम-तुम हैं जो हर
वक्त बहकते रहते हैं, काम की गर्मी एक घडी ठडा नहीं होने देती।
लेकिन वो बस प्याले छनकाते और सर-सपाटा करते हैं – मजे की
जिंदगी है!"

"लेकिन काम तो वे भी करते हैं।"

"करते होंगे, तेरी कहानियो से तो इसका पता नहीं चलता,"
माकोव ने जवाब दिया। बात सही थी और मैंने एकाएक अनुभव कि
कि ढेर की ढेर किताबें जो मैं पढ़ चुका था, उनसे यह पता नहीं चलता
था कि उनके नेक नायक कैसे काम करते हैं, किस श्रम पर वे जीते हैं।

"अच्छा तो अब जरा नींद ले ली जाए," माकोव कहता और कमर
के बल वहीं पसर जाता जहां वह बठा हुआ होता और अगले ही क्षण
उसके खुर्राटे सुनाई देने लगते।

पतझड़ के दिनों में जब कामा नदी के किनारों पर लाल-बसन्ती रंग
छाया था, पेड़ों के पत्ते पीले पड़ चुके थे और सूरज की तिरछी किरणें
फीकी हो चली थीं, माकोव एकाएक जहाज से अलग हो गया। इससे
एक ही दिन पहले उसने मुझसे कहा था

"परसो हम पेम पहुच जायेंगे, अल्योशा-वल्योशा! सबसे पहले किसी हम्माम मे जाकर हम दोनो खूब नहायेंगे, फिर सीधे भटियारखाने की राह लेगे जहा बाजा भी बजता हो—बडा मजा आयेगा। भई, बाजा बजते देखना तो बडा ही अच्छा लगता है मुझे।"

लेकिन सारापूल मे मोटा गावदुम, दाढ़ी सफाचट और स्त्रियो जसे फूले हुए चेहरे वाला एक आदमी जहाज पर सवार हुआ। लम्बे कोट और लोमडी के फर वाले कनटोप मे उसे देखकर और भी ज्यादा धोखा होता कि पुरुष न होकर वह स्त्री है। आते ही रसोईघर के पास वह एक मेज पर बैठ गया, जहा गरमाई अधिक थी, चाय के लिए उसने आडर दिया और अपना कोट या कनटोप उतारे बिना ही गरम चाय की चुस्कियां लेने लगा। देखते-देखते उसका सारा बदन पसीने मे तर हो गया।

बाहर पतझड की महीन बौछारे पड रही थीं। जब वह अपने चौखाने रुमाल से माथे का पसीना पोछता तो मानो बौछारें भी सास लेने के लिए रुक जातीं, इसके बाद जब फिर तेजी से पसीना निकलता तो बौछारें भी उतनी ही तेज हो जातीं।

कुछ ही देर बाद याकोव भी उसके पास नजर आया और दोनो मिलकर कलडर मे एक नक्शे को बडे ध्यान से देखने लगे। मुसाफिर फिर नक्शे की रेखाओ पर उगली फेरकर कुछ बता रहा था। और याकोव शान्त स्वर मे कह रहा था

"ठीक है! कोई बात नहीं। मेरे लिए सब वाए हाथ का खेल है"

"ठीक," मुसाफिर ने पतली आवाज मे कहा और कलडर को उठाकर चमडे के एक खुले थले मे खोस दिया जो उसके पाव के पास रखा था। बाद इसके वे चाय पीते और चुपचाप बाते करते रहे।

याकोव की पाली शुरू होने से पहले मैंने उससे पूछा कि यह कौन है। हल्की हसी के साथ उसने जवाब दिया

"देखने मे तो जनखा मालूम होता है। दूर साइबेरिया का रहनेवाला है। अजीब पछी है—हर चीज का नक्शा बनाकर चलता है"

इसके बाद, काली और खुर की भाति सख्त अपनी नगी एडियो से डेक को झनझनाता, वह मेरे पास से चल दिया। फिर रुका और अपने पहलू को खुजलाता हुआ बोला

"मैंने उसकी चाकरी मजूर कर ली है। पेम पहुचते ही मैं जहाज को

"मजे का आदमी है, तुम्हारा यह हेनरी बादशाह भी!" उसने कहा। "एकदम यार बाश, चाहो तो उसके साथ मछली मारो या छप-सपाटा करो।"

कहानी सुनते समय न कभी वह वाह-वाही करता न बीच मे टोकता न सवालो की झडी लगाता था। वह चुपचाप सुनता रहता,—भौंहें तने हुई, चेहरे पर वही एक भाव जो कभी नहीं बदलता था,—काई बनी पुरानी चट्टान की भाति। लेकिन अगर किसी वजह से मैं बीच में रुक जाता तो वह तुरत कहता

"क्या खत्म हो गई?"

"अभी नहीं।"

"तो रुक नहीं, कहे जा।"

एक दिन फ्रांस के लोगो के बारे मे जब हम बातें कर रहे थे तो उसने लम्बी सास भरी और बोला

"मजे की जिदगी है उनकी – बढ़िया और ठडी "

"सो कसे?"

"हां, बढ़िया और ठडी," उसने कहा, "एक हम-तुम हैं जो हर वक्त दहकते रहते हैं, काम की गर्मी एक घडी ठडा नहीं होने देती। लेकिन वो बस प्याले छनकाते और सर-सपाटा करते हैं – मजे की जिदगी है!"

"लेकिन काम तो वे भी करते हैं।"

"करते होंगे, तेरी कहानियो से तो इसका पता नहीं चलता," याकोव ने जवाब दिया। बात सही थी और मैंने एकाएक अनुभव किया कि ढेर की ढेर किताबें जो मैं पढ़ चुका था, उनसे यह पता नहीं चलता था कि उनके नेक नायक कैसे काम करते हैं, किस श्रम पर वे जीते हैं।

"अच्छा तो अब जरा नींद ले ली जाए," याकोव कहता और हमारे बेंच पर वहीं पसर जाता जहां वह बैठा हुआ होता और अगले ही क्षण उसके खुर्राटे सुनाई देने लगते।

पतझड़ के दिनों में जब कामा नदी के किनारों पर लाल-कत्थई रंग छाया था, पेड़ों के पत्ते पीले पड़ चुके थे और सूरज की तिरछी किरणें फीकी हो चली थीं, याकोव एकाएक जहाज से अलग हो गया। इससे एक ही दिन पहले उसने मुझसे कहा था

"परसो हम पेर्म पहुच जायेंगे, अल्योशा-वल्योशा! सबसे पहले किसी हम्माम मे जाकर हम दोनो खूब नहायेंगे, फिर सीधे भटियारखाने की राह लेंगे जहा बाजा भी बजता हो—बडा मजा आयेगा। भई, बाजा बजते देखना तो बडा ही अच्छा लगता है मुझे।"

लेकिन सारापूल मे मोटा गावदुम, दाढ़ी सफाचट और स्त्रियो जसे फूले हुए चेहरे वाला एक आदमी जहाज पर सवार हुआ। लम्बे कोट और लोमडी के फर वाले कनटोप मे उसे देखकर और भी ज्यादा धोखा होता कि पुरुष न होकर वह स्त्री है। आते ही रसोईघर के पास वह एक मेज पर बठ गया, जहा गरमाई अधिक थी, चाय के लिए उसने आडर दिया और अपना कोट या कनटोप उतारे बिना ही गरम चाय की चुस्किया लेने लगा। देखते-देखते उसका सारा बदन पसीने मे तर हो गया।

बाहर पतझड की महीन बौछारें पड रही थीं। जब वह अपने चौखाने रूमाल से माथे का पसीना पोछता तो मानो बौछारें भी सास लेने के लिए रुक जातीं, इसके बाद जब फिर तेजी से पसीना निकलता तो बौछारें भी उतनी ही तेज हो जातीं।

कुछ ही देर बाद याकोव भी उसके पास नजर आया और दोनों मिलकर कलेंडर मे एक नक्शे को बडे ध्यान से देखने लगे। मुसाफिर फिर नक्शे की रेखाओ पर उगली फेरकर कुछ बता रहा था। और याकोव शान्त स्वर मे कह रहा था

"ठीक है! कोई बात नहीं। मेरे लिए सब बाए हाथ का खेल है.."

"ठीक," मुसाफिर ने पतली आवाज मे कहा और कलडर को उठाकर चमडे के एक खुले थले मे ठास दिया जो उसके पाव के पास रखा था। बाद इसके वे चाय पीते और चुपचाप बातें करते रहे।

याकाव की पाली शुरू होने से पहले मैंने उससे पूछा कि यह कौन है। हल्की हसी के साथ उसने जवाब दिया

"देखने मे तो जनखा मालूम होता है। दूर साइबेरिया का रहनेवाला है। अजीब पछी है—हर चीज का नक्शा बनाकर चलता है"

इसके बाद, काली और खुर की भाति सख्त अपनी नगी एडियो से डेक को झनझनाता, वह मेरे पास से चल दिया। फिर रुका और अपने पहलू को खुजलाता हुआ बोला

"मैंने उसकी चाकरी मजूर कर ली है। पेम पहुचते ही मैं जहाज को

नौकरी को धता बताऊंगा और तुमसे विदा लूंगा, अल्योशा-बल्याशा। दूर है वह जगह, जहां उसके साथ मैं जाऊंगा। पहले हम रेलगाड़ी सवार होंगे, फिर पानी के जहाज पर और उसके बाद घोड़ों पर। पहुचने मे पूरे पाच हफ्ते लग जायेंगे। लोगो ने भी कितनी दूर-दूर अपने घोसले बना लिए हैं!"

"क्या तुम्हारी उससे जान-पहचान है?" याकोव के इस आकस्मिक फसले से चकित होकर मैंने पूछा।

"जान-पहचान कसी? पहले कभी उसकी, और उस जगह की जहां वह रहता है, शक्ल तक नहीं देखी "

अगले दिन, सुबह के समय, याकोव भेड की खाल की एक जाकेट जो उसके बदन पर अट नहीं पाती थी, सिर पर एक खस्ता सींको का हैट जिसके किनारे दगा दे चुके थे और जो किसी जमाने नाटे भालू की सम्पत्ति था, और नगे पावो मे घिसी पिटी चप्पल पहने दिखाई दिया। लोहे जसी अपनी उगलियो मे मेरा हाथ दबाते हुए उसने कहा

"क्यो, तू भी मेरे साथ चल न? अगर मैं उससे कहूं तो सब तुझे भी रख लेगा। बोल, क्या कहता है? चल, बडा मजा रहेगा। अगर तू वह चीज कटवाने के लिए तयार हो गया जिसके बिना भी आदमी जिन्दा रह सकता है, तब तो तेरे गहरे हैं। बडी धूम धाम से वे लोगों खस्सी करते हैं, और इसके लिए अच्छी रकम तक भी देते हैं "

जनरल कटहरे के पास खडा था और बगल मे एक सफेद पोटली दबाए मुर्दा सी आखो से याकोव की ओर देख रहा था। उसका चेहरा उतना ही भारी और फूला हुआ था जितना कि पानी मे डूबे हुए आदमी का। मैंने धीमे से उसे कोसा, याकोव एक बार फिर मेरा हाथ दबाते हुए बोला

"गोली मार! हर आदमी अपने-अपने खुदा की पूजा करता है। हमे इससे क्या लेना देना है? अच्छा तो मैं अब चलता हू। मजे से रहना।"

और बडे भालू की भाति झूमता, झकोले खाता याकोव शूमोव ओझल हो गया, मेरे हृदय मे बोझिल जटिल भावनाएं छोड गया। मुझ पर तरस भी आ रहा था और झुंझलाहट भी हो रही थी। मुझे याद है उसे इतनी दूर एक अनजानी जगह जाते देख ईर्ष्या और चिंता का

भी मेरे हृदय को मथ रहा था कि उसने अनजानी जगह जाना क्यो तय किया।

आखिर यह याकोव शूमोव आदमी किस कडे का था?

१२

पतझड के दिन बीत चले और जब जहाजो का चलना बद हो गया मैंने एक वकशाप मे काम सीखने के लिए नौकरी शुरू की। यहा देव-प्रतिमाओ को रगा चुना और उन्हे वकशाप की दुकान मे बेचा जाता था। काम सीखना शुरू करने के दूसरे ही दिन मेरी मालकिन ने, जो एक छोटे कद की ढीली-ढाली और शराबी सी बूढी स्त्री थी, ऐलान किया

"अब दिन छोटे और साझ बडी होने लगी हैं, सो तुम सुबह से तो दुकान पर काम करना और साझ को वकशाप मे काम सीखोगे।"

और उसने मुझे दुकान के कारिंदे के हवाले कर दिया। वह एक छोटा सा, तेज कदम युवक था, सुदर चेहरा, जिसपर शहद मे डूबी मुस्कान चिपकी थी। दुकान नीज्नी बाजार की बारादरी मे दूसरी मजिल पर थी। अधेरे-मुह हम, वह और मै उठते और ठड से कलाबत्तू बने नींद मे ऊघते सौदागरो की गली इल्यीन्का से होते हुए सारा शहर पार करके दुकान पहुचते। दुकान, जो पहले किसी का स्टोर रूम थी, छोटी और अधेरी थी। लोहे का उसमे दरवाजा लगा था और एक छोटी सी खिडकी थी जो टीन की छत वाली बालकनी की ओर खुलती थी। हमारी दुकान देव प्रतिमाओ से भरी पडी थी। छोटी, बडी और मझोली, सभी आकार प्रकार और काट छाट की प्रतिमाए थीं। साथ ही देव प्रतिमाओ के चौखटे भी हम बेचते थे, सादे भी और कामदार भी, जो तरह-तरह के बेल-बूटो से सजे हुए थे। चमडे की पीली जिल्द चढी और प्राचीन स्लाव लिखावट की धार्मिक पुस्तको का स्टाक भी दुकान मे मौजूद था। हमारे बगल में ही देव प्रतिमाओ और धार्मिक पुस्तको की एक और दुकान भी थी। इस दुकान का मालिक काली दाढ़ी वाला एक सौदागर था। वोल्गा के उस पार केर्चेनेत्स नदी के समूचे इलाके मे प्रसिद्ध एक कट्टर पुरातनपथी*

*पुरातनपथ का आरभ रूस मे सत्रहवी शताब्दी के मध्य में हुआ। रूसी आर्थोडाक्स चर्च के तत्कालीन सर्वोच्च महा पादरी नीकान ने जार अलेक्सेई

नौकरी को धता बताऊगा और तुमसे विदा लूगा, अल्याशा-बल्याशा। का दूर है यह जगह, जहा उसके साथ मैं जाऊगा। पहले हम रेलगाड़ी पर सवार होगे, फिर पानी के जहाज पर और उसके बाद घोडों पर। वहा पहुचने मे पूरे पाच हफ्ते लग जायेंगे। लोगो ने भी कितनी दूर-दूर तक अपने घोसले बना लिए हैं!"

"क्या तुम्हारी उससे जान-पहचान है?" याकोव के इस आकस्मिक फसले से चकित होकर मैंने पूछा।

"जान-पहचान कसी? पहले कभी उसको, और उस जगह को भी जहा वह रहता है, शक्ल तक नहीं देखी "

अगले दिन, सुबह के समय, याकोव भेड की खाल की एक चौरस जाकेट जो उसके बदन पर अट नहीं पाती थी, सिर पर एक खस्ताहाल सींको का हैट जिसके किनारे दगा दे चुके थे और जो किसी जमाने में नाटे भालू की सम्पत्ति था, और नगे पावो मे घिसी पिटी चप्पलें पहने दिखाई दिया। लोहे जसी अपनी उगलियो मे मेरा हाथ दबोचते हुए उसने कहा

"क्यो, तू भी मेरे साथ चल न? अगर मैं उससे कहू तो सच वह तुझे भी रख लेगा। बोल, क्या कहता है? चल, बडा मजा रहेगा। और अगर तू वह चीज कटवाने के लिए तयार हो गया जिसके बिना भी आदमी जिन्दा रह सकता है, तब तो तेरे गहरे हैं। बडी धूम धाम से वे लोगों को खस्सी करते हैं, और इसके लिए अच्छी रकम तक भी दते हैं "

जनखा कटहरे के पास खडा था और बगल मे एक सफद पोटली दबाए मुर्दा सी आखो से याकोव की ओर देख रहा था। उसका बदन उतना ही भारी और फूला हुआ था जितना कि पानी मे डूबे हुए आदमी का। मैंने धीमे से उसे कोसा, याकोव एक बार फिर मेरा हाथ दबोचते हुए बोला

"गोली मार! हर आदमी अपने-अपने खुदा की पूजा करता है। हमे इससे क्या लेना-देना है? अच्छा तो मैं अब चलता हू। मजे से रहना!"

और बडे भालू की भाति झूमता, झकोले खाता याकोव शूमोव विदा हो गया, मेरे हृदय मे बोझिल जटिल भावनाए छोड गया। मुझे उसपर तरस भी आ रहा था और झुझलाहट भी हो रही थी। मुझे याद है कि उसे इतनी दूर एक अनजानी जगह जाते देख ईर्ष्या और चिता का भाव

भी मेरे हृदय को मथ रहा था कि उसने अनजानी जगह जाना क्यो तय किया।

आखिर यह याकोव शूमोव आदमी किस कडे का था?

१२

पतझड के दिन बीत चले और जब जहाजो का चलना बद हो गया मैंने एक वकशाप मे काम सीखने के लिए नौकरी शुरू की। यहा देव-प्रतिमाओ को रगा चुना और उन्हे वकशाप की दुकान मे बेचा जाता था। काम सीखना शुरू करने के दूसरे ही दिन मेरी मालकिन ने, जो एक छोटे कद की ढीली-ढाली और शराबी सी बूढी स्त्री थी, ऐलान किया

"अब दिन छोटे और साझ बडी होने लगी है, सो तुम सुबह से तो दुकान पर काम करना और साझ को वकशाप मे काम सीखोगे।"

और उसने मुझे दुकान के कारिदे के हवाले कर दिया। वह एक छोटा सा, तेज कदम युवक था, सुदर चेहरा, जिसपर शहद मे डूबी मुस्कान चिपकी थी। दुकान नीज्नी बाजार की बारादरी मे दूसरी मजिल पर थी। अधेरे-मुह हम, वह और मैं उठते और ठड मे कलाबत्तू बने नींद मे ऊघते सौदागरो की गली इल्यीन्का से होते हुए सारा शहर पार करके दुकान पहुचते। दुकान, जो पहले किसी का स्टोर रूम थी, छोटी और अधेरी थी। लोहे का उसमे दरवाजा लगा था और एक छोटी सी खिडकी थी जो टीन की छत वाली बालकनी को ओर खुलती थी। हमारी दुकान देव-प्रतिमाओ से भरी पडी थी। छोटी, बडी और मझोली, सभी आकार प्रकार और काट छाट की प्रतिमाए थीं। साथ ही देव प्रतिमाओ के चौखटे भी हम बेचते थे, सादे भी और कामदार भी, जो तरह-तरह के बेल-बूटो से सजे हुए थे। चमडे की पीली जिल्द चढी और प्राचीन स्लाव लिखावट की धार्मिक पुस्तको का स्टाक भी दुकान मे मौजूद था। हमारे बगल मे ही देव प्रतिमाओ और धार्मिक पुस्तको की एक और दुकान भी थी। इस दुकान का मालिक काली दाढ़ी वाला एक सौदागर था। वोल्गा के उस पार केर्जेनेत्स नदी के समूचे इलाके मे प्रसिद्ध एक कट्टर पुरातनपथी*

---

*पुरातनपथ का आरभ रूस म सत्रहवी शताब्दी के मध्य मे हुआ। रूसी आर्थोडाक्स चच के तत्कालीन सर्वोच्च महा पादरी नीकोन ने ज़ार अलेक्सेई

परिवार का यह नातेदार था। मेरी ही उम्र का उसका एक लड़का था, काजू-वाजू, बचकाना शरीर और बूढ़ों जैसा बेरंग, छोटा सा चेहरा, शेर जैसी चंचल आंखें।

दुकान खोलते ही मेरी दौड़ शुरू हो जाती। सबसे पहले मैं निकटतम भटियारखाने का रास्ता नापता और चाय के लिए वहां से खौलता हुआ पानी लाता। चाय के बाद मैं दुकान लगाता और माल की गर्द झाड़कर उसे साफ-सुथरा करके रखता। दुकान को खूब चौकस बनाने के बाद मैं बालकनी मे जा खड़ा होता। मेरा काम था कि ग्राहकों को अपने हाथ से न निकलने दूं, यह न हो कि वे हमारी दुकान मे न आकर बराबर वाली दुकान मे चले जाएं।

"ग्राहक तो काठ के उल्लू हैं," कारिंदा कहता, "दुकान से उन्हें क्या गरज, वे तो वहीं मुंह मारते हैं जहां सस्ती चीज मिलती है। गधा घास उनके लिए सब बराबर हैं!"

उसके हाथ तेजी से चलते रहते। देव प्रतिमाओं को वह उठाता और सटा-सटाकर रखता। व्यापार सम्बन्धी अपना ज्ञान बघारने में जरा भी नहीं चूकता और मुझे सबक पढ़ाना शुरू करता

"म्स्तेरा गांव का बना माल सस्ता होता है, तीन बाई चार साइज़ का अपना दाम है, छ बाई सात साइज का अपना दाम है... सन्त को जानता है? याद कर ले यह सन्त बोनिफाती हैं—पियक्कड़ बनने से बचाते हैं। और यह सन्त वर्वारा की प्रतिमा है—दांत-दाढ़ के दर्द और अकाल मृत्यु से बचाने के लिए, और यह पहुंचे हुए सिद्ध वासीली हैं—बुखार और सरसाम के दौरों से बचाने के लिए। और मरियमों को जानता है?* देख—यह ...

मिखाइलोविच के अनुमोदन से धार्मिक पुस्तकों तथा चर्च की रस्मों में यूनानी आर्थोडॉक्स परंपरा के अनुसार कुछ संशोधन किये। पादरियों के एक बहुत बड़े भाग ने इन संशोधनों का विरोध किया। कालांतर में संशोधन-विरोधी पुरातनपंथी कहलाये। राजकीय धर्म का विरोध करने के कारण इन्हें सरकार के अत्याचारों का शिकार होना पड़ता था।—सं०

*माता मरियम की विभिन्न शैलियों और विभिन्न मुद्राओं में बनी प्रतिमाओं और साथ ही विभिन्न नगरों, गिरजों में स्थित प्रतिमाओं के अलग-अलग नाम होते थे। कई प्रतिमाएं अपनी चमत्कारी शक्ति के लिए विशेष नामों से जानी जाती थीं।—सं०

शोकातुर मरियम, यह त्रिभुज मरियम और यह 'मेरा शोक दूर करो' मरियम है, इसके अलावा हैं यजान, पोत्रोव और सेमिस्त्रेलनाया मरियम "

बडी-छोटी और कारीगरी के हिसाब से किस प्रतिमा के कितने दाम हैं, यह सब मैंने बडी जल्दी याद कर लिया, और विभिन्न मरियमो को पहचानने मे भी मुझे अब कोई दिक्कत नहीं होती, लेकिन यह याद रखना मुझे एक अच्छा-खासा जजाल मालूम होता कि किस सन्त की प्रतिमा किस तरह के शोक-ताप हरती या किस तरह के वरदान देती है।

कारिदा अक्सर मेरा इम्तहान लेता। दुकान के दरवाजे पर खडा मैं न जाने किस ख्याली दुनिया मे मग्न होता कि उसकी आवाज आती

"बोल, बच्चा जनने की पीडा कम करना किसके हाथ मे है?"

अगर मेरा जवाब गलत निकलता तो उसकी भौंहे चढ़ जातीं

"आखिर तेरी यह खोपडी किस काम आएगी?"

ग्राहकों को पटाना और भी ज्यादा मुश्किल मालूम होता। प्रतिमाओं के भौंडे चेहरे मुझे बुरे मालूम होते और उन्हें बेचने मे शर्म आती थी। नानी से कहानियां सुन-सुनकर मेरे मन मे यह बात बैठ गई थी कि माता मरियम कम उम्र, भली और सुन्दर थी। पत्रिकाओं मे माता मरियम के जो चित्र मैंने देखे थे, वे भी ऐसे ही थे। लेकिन प्रतिमाओं मे वह बूढ़ी और कठोर स्वभाव की मालूम होती थी, लम्बी और नोकनुकीली नाक तथा बेजान हाथ।

बुध और शुक्रवार के दिन बाजार लगता और हमारी अच्छी बिक्री होती। किसानो और बूढ़ी स्त्रियो का हमारी दुकान मे ताता लगा रहता और कभी-कभी तो बच्चो के साथ पूरा परिवार का परिवार आ धमकता—सब के सब पुरातनपंथी, भौंहें चढ़ाये और आखो मे अविश्वास भरे, वोल्गा पार के जगलों मे गुजर करनेवाले। ऐसा भी हुआ करता था कि कोई भारी भरकम, बालकनी पर धीरे धीरे कदम रखते हुए, मानो वह डर रहा हो कि बालकनी से गिर जायेगा, आ रहा होता। मैं उसे देखता और उसके सामने शर्मिंदा और अटपटा सा महसूस करने लगता। आखिर, भारी उलझन के बाद, मै उसके रास्ते मे जम जाता और उसके भारी-भरकम, ऊचे जूतो वाले पावों के पास नाचता हुआ मच्छर की तरह भनभनाने लगता

"क्या लोगे, बाबा जी? सभी कुछ हमारे यहां है—समय-समय विभाजित भजन-संहिता, टीका टिप्पणी और अथ सहित बाइबल के गीत, येफ्रेम सीरिन और किरील की बनाई पुस्तकें। एक बार चलकर जरा देख लीजिए। और सभी तरह की देव प्रतिमाए—सस्ती से सस्ती और महगी से महगी, अव्वल दर्जे की कारीगरी और गहरे रग। हम आर्डर पर देव प्रतिमाए तयार भी करते हैं। जो भी सन्त या माता मरियम आपको पसन्द हो, हमसे बनवाइये। या आप अपने नाम के, अपने परिवार के सत की प्रतिमा बनवाना चाहें, तो वो भी बना देंगे। हमारी वर्कशाप समूचे रूस मे बेजोड है। नगर मे इससे बढ़िया दुकान ढूढ़े नहीं मिलेगी!"

अभेद्य और समझ मे न आनेवाला ग्राहक देर तक चुप रहता और इस तरह मुझे घूरकर देखता मानो मैं कोई कुत्ता हू। एकाएक भारी हाथ से वह मुझे धकियाता और बराबर वाली दुकान मे घुस जाता। कारिंदा अपने छाज से कानो को मलता और गुस्से से भुनभुना उठता

"क्यो, उसे निकल जाने दिया, न? अच्छा चौपट दुकानदार है तू "

और पास वाली दुकान से मुलायम तथा शहद मे लिपटे शब्दो की वर्षा होने लगती

"भगवान भला करे, बाबा जी हम कोई भेडा की खाल नहीं बेचते, न ही हम चमडे के जूतो का धधा करते हैं। हमारे यहा तो केवल दवी न्यामतें हैं, जिनका न चादी से मोल आका जा सकता है न सोने से, वे अनमोल हैं, दुनिया की हर चीज उनके सामने हेच है "

कारिंदा सुनता और ईर्ष्या तथा प्रशसा से कलाबत्तू बन जाता

"देख न कम्बख्त को, भोले देहाती के कानो मे क्या मीठा जहर उडेल रहा है। ग्राहको को ऐसे पटाया जाता है, समझा!"

ग्राहको को पटाने की कला, सीखने के लिए मैं जी जान से प्रयत्न करता। सोचता कि जब काम हाथ मे लिया है तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। लेकिन ग्राहको पर डोरे डालने और उनके माथे चीजें मढ़ने की दिशा मे मेरी प्रतिभा ने मानो उजागर होने से इनकार कर दिया। तोबडा चढे गुम-सुम देहातियो और चूहो की भाति खुदफुद करती, भय से ग्रस्त तथा दीन चेहरे वाली बूढ़ी स्त्रियो को जब भी मैं देखता, मुझे उनपर बडा तरस आता, मेरा जी करता कि चुपके से उनके कानो मे इन

प्रतिमाओं की असल कीमत बता दूं ताकि गाढ़ी कमाई के जो दस-बीस कोपेक उनकी गाठ मे पडे हैं, वे उनके पास ही बने रहे। वे सब इतने फटेहाल, इतने ग़रीब और भूखे मालूम होते कि मैं चकरा जाता, और मेरी समझ मे न आता कि बाइबल की भजन-संहिता के लिए, जो सबसे ज्यादा बिकती थी, उनकी गाठ से साढे तीन रूबल कैसे निकल आते थे।

किताबो का ज्ञान और देव प्रतिमाओं के दोष-गुणो की उनकी परख देखकर मैं दग रह जाता। और एक बार पके बालो वाले एक बूढ़े ने, जिसे मैं अपनी दुकान मे फुसला लाने का प्रयत्न कर रहा था, मुझसे कहा

"नहीं, बेटा, यह ग़लत है कि रूस मे सबसे अच्छी प्रतिमाए तुम्हारे यहा बनती हैं। सबसे अच्छी तो मास्को मे रोगोजिन की वर्कशाप है।"

सकपकाकर मैं एक ओर हट गया और वह पडोसी की दुकान को भी पार करता हुआ धीमे से आगे बढ़ चला।

"मिल गये लडढे?" कारिंदे ने जल भुनकर कहा।

"तुमने तो रोगोजिन के बारे मे कभी कुछ बताया ही नहीं।"

कारिंदा झुझलाहट उतारने लगा

"घूमते फिरते हैं ऐसे चुप्पे, साले। सभी कुछ जानते हैं, सब समझते हैं, बुड्ढे खूसट "

खूबसूरत, खाता-पीता और घमडी कारिंदा देहातियो से नफरत करता था और जब मूड मे होता तो मेरे सामने अपना रोना रोने लगता

"मैं अक्लमन्द हू, साफ-सुथरी चीजें और बढ़िया खुशबू मैं पसद करता हू—लोबान, गुलाबजल, तेल फुलेल और मेरे जसे गुणी आदमी को इन बदबू मारते देहातिया के सामने झुकना पडता है, ताकि मालकिन की जेब मे दो चार कोपेक मुनाफा जाए। मैं ही जानता हू कि मेरे दिल पर कसी क्या गुजरती है। आखिर ये देहातिये है क्या? कीडे पडी खाल, जूए कहीं की, और मुझे "

विक्षुब्धा सा वह बोलते-बोलते चुप हो जाता।

मुझे देहातिये पसद थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे अपने भीतर कोई बहुत बडा रहस्य छिपाए हो, ठीक वसे ही जसे याकोव को देखकर मुझे अनुभव होता था।

भेड की खाल की जकट के ऊपर भारी लबादा लादे कोई देहातिया लस्टम-पस्टम दुकान मे चला आता। अपनी बालदार टोपी को वह सिर

से उतारता, कोने मे जल रहे दिये की लौ पर आखें जमाए अपनी दो उगलियो से सलीब का चिह्न बनाता। फिर दिये से आलोकित न होनेवाली प्रतिमाओं से नजर बचाते हुए यह चुपचाप अपने इर्दगिर्द देखकर कहता

"जरा बाइबल की भजन सहिता दिखाओ, टीका वाली।"

अपने लबादे की आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर, मुखपृष्ठ के अक्षरों के साथ वह देर तक सिर खपाता, और उसके फटे हुए मटियाले होंठ बिना कोई आवाज निकाले हरकत करते रहते। अन्त मे वह कहता

"इससे पुरानी नहीं है?

"पुरानी प्रतिया एक हजार रूबल से कम मे नहीं मिलतीं,–तुम तो जानते ही हो "

"हां, मैं जानता हू।"

फिर थूक से अपनी उगली को नम कर वह पन्ना पलटता जिससे हाशिये पर मली-कुचली उगलियो का काला धब्बा पड जाता। कारिदा देहातिये की खोपडी की ओर गुस्से से घूरते हुए कहता

"धम ग्रथो की उम्र मे भी क्या कोई भेद भाव होता है? पुराने हो चाहे नये, सब एक ही उम्र के होते हैं। भगवान ने अपने शब्दो को नहीं बदला है "

"यह सब हम भी जानते हैं, सुना है। भगवान ने अपने शब्दो को नहीं बदला, लेकिन नीकोन ने तो उन्हे बदल दिया है न?

और ग्राहक ग्रथ को बन्द करते हुए चुपचाप दुकान से बाहर हो जाता। जगलो के ये निवासी कभी-कभी कारिदे से बहस करने लगते और मैं साफ देखता कि धम पुस्तकों की जितनी ज्यादा जानकारी उन्हे है, उतनी उसे नहीं।

"दलदल के कीडे, ईंट पत्थरो को पूजने वाले।" कारिदा बडबडाता।

मैंने यह भी देखा कि यद्यपि नयी पुस्तक देहातिये को पसद नहीं आती फिर भी वह उसे श्रद्धा के साथ देखता है, उसे सावधानी से छूता है मानो पुस्तक उसके हाथ से पक्षी की भाति उड जा सकती हो। यह देखकर मुझे बडा आनन्द आता, कारण कि पुस्तके मेरे लिए भी अदभुत चीज थीं जिनमे उनके रचयिताओं की आत्माए बद थीं। पुस्तक खोलकर मैं मानो उनकी आत्माए उन्मुक्त करता और वे रहस्यमय ढग से मेरे साथ बातचीत करने लगतीं।

अक्सर ऐसा होता कि ये बूढे पुरुष और स्त्रिया नीकोन के समय से भी पहले की पुरानी छपी हुई पुस्तके या इस तरह की पुस्तको की हस्तलिखित नकले बेचने के लिए लाते। ये नकले पुरातनपथी इरगीज़ या केर्जेनेत्स मठो की भिक्षुणियो के हाथो मे लिखी बहुत ही सुदर होती थीं। वे द्मीत्री रोस्तोव्स्की द्वारा असशोधित सन्तो की जीवनिया, प्राचीन देव प्रतिमाए, इनामेल चढे, श्वेत सागर के तटवर्ती प्रदेशो के कारीगरो द्वारा बनाए गए पीतल के त्रिपाद और सलीब, मास्को के महाराजो द्वारा शराबखानो के मालिको को भेंट किए गए चादी के कलछे आदि लेकर आते। इन सब चीजो को वे चोरी के माल की भाति छिपाकर लाते और अगल बगल कनखियो से देखते रहते कि कहीं किसी की नज़र तो नहीं पड रही है।

हमारा कारिदा और पडोसी दुकानदार दोनो ही इस तरह के माल के लिए जीभ लपलपाते रहते और उसे कम दामो मे हथियाने मे एक-दूसरे को मात देने की कोशिश करते। प्राचीन से प्राचीन निधियो की क़ीमत भी वे इकाइयो मे या बहुत हुआ तो दहाइयो मे देते और मेले मे धनी पुरातनपथियो के हाथ उन्हें बेचकर ख़ुद सैकडो रूबल झटकारते।

"देखना, कोई बूढ़ा शतान या कोई बुढ़िया भुतनी नज़र बचाकर न निकल जाए," वह मुझसे कहता। "ये कम्बख्त अपने थलो मे नक्द हुडिया लिए घूमते हैं!"

जब भी कोई ऐसा सौदागर सामने आता, कारिदा मुझे प्राचीन पुस्तको, देव प्रतिमाओ और इस तरह की अन्य पुरानी चीज़ो के पारखी प्योत्र वासील्येविच के पास दौडाता कि उसे बुला लाओ।

वह एक लम्बे क़द का बूढा आदमी था। उसकी आखो मे समझदारी की चमक थी, चेहरा और उसकी लम्बी दाढ़ी देखकर सत वासीली का धोखा होता था। उसके एक पाव का पजा गायब था और हमेशा लम्बी लकडी का सहारा लेकर वह चलता था। गर्मी हो चाहे सर्दी, पादरी के लबादे की भाति वह हमेशा एक हल्का पतला कोट और सिर पर मखमल की अजीब सी शक्ल की टोपी पहने रहता था। आम तौर से जब वह चलता तो काफी सीधा-सतर और फुर्तीला मालूम होता, लेकिन दुकान मे पाव रखते ही अपने कधे ढीले छोड देता, हल्की सी आह भरता और पुरातनपथियो के रिवाज के अनुसार दो उगलियो से सलीब का चिह्न

बनाता, मुह से प्रार्थनाओं और भजनों के शब्द बुदबुदाता। बुढ़ापे और धार्मिकता की यह नुमाइश दुर्लभ चीजें बेचनेवालों के हृदयों में उस के प्रति विश्वास का सचार करती थी।

"कहो, किस काम के लिए बुलाया था मुझे?" बूढ़ा कहता।

"यह आदमी एक देव प्रतिमा लाया है और कहता है कि यह स्त्रोगानोव की बनायी देव प्रतिमा है।"

"क्या-आ?"

"स्त्रोगानोव की बनायी।"

"अच्छा आ सुनाई कम देता है। शुक्र है भगवान का, मुझे बहरा बनाकर उस झूठ और पाखड को सुनने से बचा लिया जो नीकोन के बाद से फैला हुआ है"

वह अपनी टोपी उतारकर रख देता, और प्रतिमा को सामने रखकर आखें सिकोडे, चित्रकारी को ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, फिर अगल-बगल से और सीधे देखता और बुदबुदाता जाता

"इन नास्तिक नीकोनियाइयो ने यह देखकर कि लोगो पर प्राचीन देव रूपी सौंदर्य का प्रभाव है, और शैतान की सीख मे आकर देव प्रतिमाओं की झूठी और विकृत नकले उतरवाना शुरु कर दीं। और यह काम अद्भुत होशियारी से आजकल किया जा रहा है। पहली नजर मे यही मालूम होता है मानो यह असली स्त्रोगानोव या उस्तयुग शैली की प्रतिमा है या फिर सुज्दाल प्रतिमाओं जैसी है। लेकिन अतर्दृष्टि से देखने पर साफ मालूम हो जाता है कि यह झूठी और विकृत नकल है!"

जब वह किसी प्रतिमा को 'झूठी और विकृत' कहता तो इसका अर्थ सिवा इसके और कुछ न होता कि वह एक दुर्लभ और कीमती चीज है। इस तरह के शब्दो की एक बाकायदा फेहरिस्त उन्होने बना रखी थी जिससे कारिदे को पता चल जाता कि किस चीज का कितना दाम उसे लगाना चाहिए। मै जानता था कि 'शोक और निराशा' शब्दो का अर्थ है—दस रूबल, 'नीकोन शेर'—पच्चीस रूबल। बेचनेवाले को इस तरह धोखा देना मुझे बडा शर्मनाक मालूम होता, लेकिन बूढा इतनी चालाकी से यह खेल खेलता कि मैं भी इसमे खिच आता था।

"नीकोनियाई, नीकोन शेर के ये चपड कनाती, शैतान के सिखाये सब कुछ कर सकते है। इसे ही देखो, कौन कह सकता है कि इस प्रतिमा

का आधार सच्चा नहीं है, अथवा यह कि इसके कपडो पर उन्हीं हाथो ने रग नहीं किया है? मगर जरा देव मुख-मडल तो देखो—यह दूसरी ही कूची से बनाया गया है। पोमेन उशाकोव जसे पुराने उस्ताद—ईश्वर द्रोही चाहे वे क्यो न रहे हो—समूची छवि को खुद ही रगते थे। देव प्रतिमा के वस्त्र भी वे अपने ही हाथो से रगते थे, और मुख-मडल भी, यहा तक कि उसका आधार भी वे खुद ही रगते-चुनते थे। लेकिन हमारे आज के ये टकियल चेले चाटी तो टें बोल गए हैं। इनके बस का कुछ नहीं है! एक जमाना था जब प्रतिमाए तयार करना ईश्वर की सेवा करना था। लेकिन आज तो वह पेट भरने का, कोरी रगाई का धधा बन गया है!"

अत मे वह प्रतिमा को काउण्टर पर सावधानी से रख देता और टोपी पहनकर कहता

"तौबा, कसा पाप है।"

इसका मतलब था आखें बद करके खरीद लो!

पारखी के मीठे शब्दो से अभिभूत होकर और उसकी जानकारी के रोब मे आकर बेचनेवाला श्रद्धा से पूछता

"तो इस प्रतिमा के बारे मे क्या कहते ह, बाबा?"

"यह नीकोनियाइयो के हाथ की बनी है।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता। हमारे दादा परदादा, बल्कि लकडदादा के जमाने की यह प्रतिमा है। वे सब इसीकी पूजा प्राथना किया करते थे "

"इससे क्या हुआ? नीकोन तुम्हारे लकडदादा से भी पहले हुआ था।"

इसके बाद, बूढ़ा देव प्रतिमा को फिर अपने हाथा मे उठाता और उसे बेचनेवाले के मुह के सामने ले जाते हुए प्रभावशाली आवाज मे कहता

"देखते हो, कितनी तडक भडक और रगीनी है इसमे? क्या देव प्रतिमाए भी कभी इतनी रगीन होती हैं? यह तो निरी सजावटी चीज है, वासना मे डूबी कला, नीकोन के चेले चाटियो की लालसाओ का मूत रूप। इस कृति मे आत्मा जसी कोई चीज नहीं है! क्या तुम समझते हो कि मै झूठ बोल रहा हू? मेरे बाल पककर सफेद हो गए हैं। दीन ईमान के पीछे न जाने कितनी यत्रणाए मैंने सही हैं। दो दिन बाद भगवान

के दरबार मे मुझे पेश होना है। तुम्हीं बताओ, ऐसी हालत मे अपनी आत्मा को बेचने से मेरे पल्ले क्या पडेगा?"

बुढापे के बोझ से डगमगाता, खासता और कराहता, दुकान से वह बालकनी मे आ जाता, और ऐसा दिखाता मानो उसकी बातो पर अविश्वास प्रकट करके उन्होने उसके हृदय को घायल कर दिया है। कारिंदा कुछ रूबल देकर प्रतिमा खरीद लेता और बेचनेवाला दुकान से विदा लेता, प्योत्र वासील्येविच की ओर मुडते हुए खूब झुककर अभिवादन करता और अपना रास्ता पकडता। इसके बाद मुझे दौडाया जाता कि भटियारखाने से चाय के लिए खौलता हुआ पानी ले आओ। लौटने पर मैं देखता कि पारखी फिर प्रसन्नचित्त और फुर्ती भरा नजर आ रहा है। खरीदी हुई प्रतिमा को वह चाव से देखता और कारिंदे को सिखाता

"देख, इसके रगो मे कितनी सफाई और सादगी झलकती है, प्रत्येक रेखा मे परमात्मा का भय और उसके प्रति सम्मान झलकता है—जीव ससार की भावना का लेश मात्र भी नहीं दिखाई देता "

कारिंदे की आखें चमकने और उसका रोम रोम थिरकने लगता। खुशी से उछलता हुआ पूछता

"यह किस कारीगर के हाथो का चमत्कार है?"

"अभी तेरी उम्र नहीं हुई, यह जानने की!"

"कोई कद्रदान इसके लिए क्या देगा?"

"यह मुझे मालूम नहीं है। दो चार लोगो को दिखाकर मालूम करूगा "

"आह, प्योत्र वासील्येविच "

"और अगर खरीदार मिल गया तो पचास रूबल तेरे और इससे ऊपर के मेरे!"

"आह "

"ज्यादा आह आह मत कर "

वे चाय पीते, पूरी बेशर्मी से सौदेबाजी करते और मक्कारी भरी नजरो से एक दूसरे का जायजा लेते। साफ मालूम होता कि कारिंदे का पलडा बेहद कमजोर है, बूढ़े के सामने उसकी एक नहीं चल सकती। जब बूढ़ा चला जाता तो कारिंदा कहता

"देख, मालकिन के कानो मे इस सौदे की भनक तक न पडे, समझा!"

प्रतिमा को बेचने के बारे मे जब सब कुछ तय हो जाता तो कारिदा कहता

"और सुनाओ, प्योत्र वासील्येविच, शहर मे और क्या कुछ हो रहा है, कोई नयी-ताज़ी खर-खबर?"

बूढ़ा पीले हाथ से अपनी दाढ़ी सहलाता, तेल चुपडे से उसके होठ दिखाई देने लगते और वह धनी सौदागरो की जिन्दगी, व्यापार करने के उनके कारगर हथकण्डो, बीमारी चकारियो, ब्याह शादियो, रास रग और ऐयाशियो, पति को उल्लू बनानेवाली पत्नियो और पत्नियो को धकमा देनेवाले पतियो के क़िस्से बयान करता। कुशल बावचिन की भाति वह इन कहानियो मे बघार लगाता और बढिया पकवान की भाति, अपनी फुसफुसी हसी की चाशनी चढाकर, फुर्ती से उन्हे परोसता। कारिदे के गोल चेहरे पर रश्क और ईर्ष्या की लाली दौड जाती और उसकी आखो मे सपने तैरने लगते। आह भरकर वह कहता

"कितना रास रग है उनके जीवन मे, और एक मै हू कि "

"जसा जिसका भाग्य," बूढा बमकता, "एक भाग्य वह है जिसे खुद फरिश्ते चादी की नन्ही-नन्ही हथौडिया से गढ़ते हैं, और दूसरा वह जिसे शतान अपनी कुल्हाडी के दस्ते से गढ़ता है "

कडियल और चीमड वह बूढा हर चीज़ की ख़बर रखता था समूचे नगर का जीवन, सौदागरो के गुप्त से गुप्त भेद, दफ्तरो के बाबुओ, पादरियो और मध्य वग के लोगों की छिपी-ढकी बातें, सभी कुछ उसे मालूम था। उसकी नजर गिद्ध की भाति तेज थी, भेडिये और लोमडी का अश उसमे मिला हुआ था। उसे कोचने के लिए मेरा जी सदा ललकता, लेकिन आखें सिकोडकर कुछ इस धुधले अन्दाज से वह मेरी ओर देखता कि मैं निरस्त्र हो जाता। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वह चारो ओर गहरी खाई से घिरा था जो निकट आने का दुस्साहस करनेवाले हर व्यक्ति को निगल जाने के लिए मुह बाए थी और मुझे लगता कि जहाज़ी याकोव शूमोव और वह मानो एक ही थली के चट्टे-बट्टे हैं।

कारिदा बूढ़े की चतुराई का कायल था और मुग्ध भाव से उसे दाद देता था। बूढ़े के मुह पर ही नहीं, उसकी पीठ पीछे भी वह उसकी तारीफ

करता। लेकिन कभी कभी एसे भी क्षण आते जब वह मेरी तरह बूढ़े को कोचने और उसकी हसी उडाने के लिए ललक उठता।

एक दिन, चित कर देनेवाली नजर से बूढे की ओर देखते हुए, कहने लगा

"लोगो की आखो मे धूल झोकना और उन्हे धोखा देना कोई तुमसे सीखे!"

"केवल भगवान ही ऐसा है जो कभी लोगो को धोखा नहीं देता," अलस भाव से हसते हुए बूढे ने जवाब दिया। "बाकी सब उल्लुओ के बीच जीवन बिताते हैं। अगर उल्लुओ को उल्लू नहीं बनायें तो और क्या उनका अचार डालें?"

कारिदा गुस्से का दामन पकडता

"सभी देहातिये उल्लू नहीं होते। व्यापारी लोग क्या आसमान से टपकते हैं? वे भी तो इन्हीं देहातियो के बीच से आते हैं!"

"उन देहातियो की बात छोडो जो व्यापारी बन गए हैं। ठगने के लिए जितने बडे दिमाग की जरूरत है, वह उल्लू देहातियो के पास कहा से आ गया? वे तो निरे बुद्धू–बिना दिमाग के सन्त–होते हैं"

शब्दो की वह इतने निश्चल भाव से कुल्लिया करता कि तबीयत बुरी तरह झुझला उठती। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वह मिट्टी के एक सूखे ढूह पर खडा हो और उसके चारो ओर दलदल फैली हो। उसे परेशान करना या चिढाना असम्भव था। या तो गुस्सा उसके हृदय को छूता नहीं था, या गुस्सा छिपाने की कला मे उसे कमाल हासिल था।

बहुधा वह खुद चिढाना शुरू करता। अपनी थूथनी को मेरे नजदीक लाकर वह अपनी दाढी के भीतर ही भीतर हसता और कहता

"हा तो फ्रास के उस लेखक का जाने क्या भला सा नाम बताया था तूने–पोस्तोन?"

वह कुछ इस अन्दाज से नामो को तोडता-मरोडता कि मैं भन्ना उठता, लेकिन कुछ देर तक मैं अपने को सभाले रहता और कहता

"पोनसोन-द-तरेल।"

"किधर तरा?"

"आप बच्चे नहीं हैं। शब्दो को तोड-मरोडकर उनके साथ खिलवाड न करो।"

"ठीक कहता है। भला मुझे बच्चा कौन कहेगा? तुम्हारे हाथ मे यह कौन सी पुस्तक है?"

"येफ्रेम सीरिन की पुस्तक है।"

"कौन ज्यादा अच्छा लिखता है—वह या यह किस्सा कहानी गढ़नेवाले?"

मै कोई जवाब न देता। वह फिर पूछता

"ये कहानी किस्सा गढने वाले ज्यादातर क्या लिखते हैं?"

"उन सभी चीजो के बारे मे जो दुनिया मे मौजूद हैं।"

"कुत्तो और घोडो के बारे मे? ये भी तो इस दुनिया मे मौजूद हैं।"

कारिंदे के पेट मे बल पड जाते और मै भीतर ही भीतर उफनता। मेरे लिए वहा बठे रहना बोझिल और अप्रिय हो जाता, लेकिन जसे ही मैं खिसकना शुरू करता, कारिंदा चिल्ला उठता

"किधर चला? बठ यहीं पर!"

बूढा मुझे कुरेदना जारी रखता

"तुझे अपने लम्बे दिमाग पर गव है। जरा यह पहेली तो बूझो। तेरे सामने एक हजार लोग खडे हैं, एकदम मादरजात नगे। पाच सौ पुरुष और पाच सौ स्त्रिया। और उन्हीं के बीच आदम और हौवा छिपे हैं। बोल, उन्हे कसे पहचानेगा?"

कुछ देर मेरा सिर चकराने के बाद अन्त मे वह विजयी अन्दाज से कहता

"बेवकूफ की दुम, उन्हे खुद खुदा ने अपने हाथो से गढा था, किसी स्त्री के पेट से वे पदा नहीं हुए थे। इसका मतलब यह कि उनके शरीर मे नाभि नहीं हो सकती!"

बूढ़ा इस तरह की अनगिनत पहेलियो की खान था और मुझे परेशान करने के लिए उन्हे पेश करता रहता था।

दुकान पर आने के बाद, शुरू-शुरू मे, अपनी पढी हुई पुस्तको के कुछ किस्से मैंने कारिंदे को सुनाए थे। वे किस्से अब मेरे जी का जजाल बन गए। हुआ यह कि अपनी ओर से मनमाना नमक मिच लगाकर तथा खूब गदा बनाकर कारिंदा उन किस्सो को प्योत्र वासील्येविच को सुनाता। बूढा खोद-खोदकर घिनौने सवाल करता और उसे उकसाता। नतीजा इसका

यह होता कि अपनी गदी जबान से ये मेरे प्रिय पात्रों—यूजेनी ग्राण्डे, ल्युद्मीला और हेनरी चतुर्थ की खूब छीछालेदर करते।

मैं यह जानता था कि किसी कुत्सित इरादे से नहीं, बल्कि दो घड़ी दिल बहलाने या जीवन की ऊब कम करने के लिए वे ऐसा करते थे, फिर भी उनका ऐसा करना मेरे लिए असह्य हो उठता। वे सूअरों की भांति अपने ही पैदा किये हुए कीचड़ में लोटते और सुन्दर कृतियों को कीचड़ में लथेड़कर खुश होते, क्योंकि सुंदर चीज़ उन्हें अजीब, समझ में न आनेवाली और इसीलिए हास्यास्पद मालूम होती थी।

अगल-बगल के सभी दुकानदार और व्यापारी निराले ढंग का जीवन बिताते थे। उन्हें बड़ा मजा आता जब वे किसी को बनाते। उनके मजाक बहुत ही बेहूदा, बचकाना और कुत्सापूर्ण होते। अगर कोई देहातिया पहली बार नगर में आता और किसी जगह का रास्ता पूछता तो वे अदबदाकर उसे उलटा रास्ता बताते। लेकिन, यह मजाक इतना घिसपिट गया था कि उसमें अब उन्हें कोई रस नहीं मिलता था। दो चूहों को पकड़कर सौदागर उनकी दुमों को एक दूसरे से बांधकर, उन्हें सड़क पर छोड़ देते और अलग खड़े होकर मजे लेते हुए उन्हें दांत-पंजे चलाते और विरोधी दिशाओं में एक-दूसरे को खींचते हुए देखते। कभी-कभी वे चूहे पर मिट्टी का तेल उड़ेलकर दियासलाई भी दिखा देते। या वे कुत्ते की दुम में टीन बांध देते, कुत्ता घबराकर जीभ निकाले भागता। पीछे से टीन खड़खड़ करता और लोग हंसी के मारे दोहरे हो जाते।

इस तरह, आए दिन, ये कोई न कोई तमाशा करते रहते। ऐसा मालूम होता कि सभी व्यक्ति—और खास तौर से देहाती—मानो बाजारवालों का दिल बहलाव करने के लिए ही पैदा हुए हैं। सौदागर और उनके कर्मचारी इस बात की ताक में रहते कि कोई आए और उसका मजाक बनाया जाए या उसे छेड़ा और नोचा-खरोंचा जाए,—जैसे भी हो, उसे परेशान किया जाए और उसे रुलाकर खुद हंसा जाए। और सबसे अजीब बात तो यह थी कि जो पुस्तकें मैं पढ़ता था, उनमें एक-दूसरे की खिल्ली उड़ाने की लोगों की इस इच्छा का कोई जिक्र नहीं होता था।

बाजार के इन मनबहलावों में से एक मुझे खास तौर से घिनौना लगता था।

हमारी दुकान के नीचे ऊन और नमदे के जूतो की दुकान थी। इस दुकान का कारिंदा इतना अधिक खाता था कि समूचे नीजनी बाजार मे प्रसिद्ध था। दुकान का मालिक अपने कारिंदे का भोजन चट करने की अद्भुत क्षमता का उतनी ही शेखी और गर्व के साथ ऐलान करता जितने गर्व के साथ लोग अपने शिकारी कुत्तो की खूख्वारी या अपने घोडो की ताकत का बखान करते हैं। अक्सर अपने पडोसियो से वह शर्त तक बदता

"बोलो, है कोई दस रूबल लगाने को तयार? मेरा दावा है कि मीशा पाच सेर मास दो घटे के भीतर चटकर जाएगा।"

सभी जानते थे कि मीशा पाच सेर मास चट कर जाएगा। यह उसके लिए मुश्किल नहीं है। बोले

"शर्त तो हम नहीं बदते। लेकिन मास हम अपनी जेब से खरीद देंगे। वह खाना शुरू करे और हम तमाशा देखेंगे।"

"लेकिन पाच सेर मास ही मास होना चाहिए, कहीं हड्डिया न उठा लाना—समझे!"

कुछ देर अलस बहस होती रही, अत मे अधेरे गोदाम मे से एक दुबला-पतला आदमी प्रकट हुआ। उसका चेहरा सफाचट था, जबडे की हड्डिया उभडी हुई थीं। वह एक लम्बा कोट पहने और कमर मे लाल पटका कसे हुए था। सारे कोट मे ऊन के गुच्छे बुरी तरह लिपटे हुए थे। छोटे से सिर से सम्मान के साथ टोपी उतारकर उसने मालिक के गोल, लाल सुर्ख तथा घास की तरह दाढी उगे चेहरे की ओर धुधली सी आखो से देखा।

मालिक ने पूछा

"पाच सेर मास को हजम कर सकता है?"

"कितनी देर मे?" पतली और कामकाजी आवाज मे मीशा ने सवाल किया।

"दो घटे मे।"

"मुश्किल है!"

"मुश्किल है—और तेरे लिए?"

"बीयर के बिना नहीं चलेगा। वह और होनी चाहिए!"

"अच्छी बात है, शुरू कर!" मालिक ने कहा और फिर अपने पडोसियो की ओर मुडकर शेखी बघारते हुए बोला, "यह न समझना

कि हमारा पेट खाली है! अरे नहीं, एक सेर पाव रोटी तो हमने आज सवेरे ही नाश्ते में चट की, इसके बाद खूब डटकर दोपहर का भोजन किया!"

मांस लाकर उनके सामने रख दिया गया, दर्शकों की एक भीड़ इर्द गिर्द जमा हो गई। ये सब के सब सौदागर और व्यापारी थे। जाड़ों का भारी लबादा कसके पहने हुए वे बड़े-बड़े अजगर जैसे लगते थे। उनकी तोंदें निकली हुई थीं, चेहरा, उनींदी और ऊब भरी छोटी-छोटी आंखें, घुपी सी, गालों की चर्बी में पगी हुई झांक रही थीं।

हाथों को अपनी आस्तीनों में खोंसे, कसकर घेरा बनाए, वे मामा के चारों ओर खड़े थे। हाथ में एक चाकू और राई की डबल रोटी लिए मोशा भी तैयार था। तेजी से, जल्दी-जल्दी सलीब का चिह्न बनाने के बाद, वह ऊन के एक बोरे पर बैठ गया। मांस के लोथड़े को उसने एक पेटी पर रख लिया और कोरी आंखों से उसे परखने लगा।

डबल रोटी में से उसने एक पतला सा टुकड़ा तराशा, फिर मांस का मोटा सा टुकड़ा काटकर बड़ी सफाई से उसके ऊपर रखा और दोनों हाथों से पकड़कर अपने मुंह तक ले गया। कुत्ते की भांति उसकी लम्बी जीभ बाहर निकली, कांपते हुए अपने होंठों को चाटकर उसने साफ किया, उसके छोटे-छोटे तेज दांतों की एक झलक दिखाई दी। फिर, कुत्ते की ही तरह मांस को उसने अपने जबड़ों में दबोच लिया।

"अरे इसने थूथनी चलाना शुरू कर दिया!"

"घड़ी देखकर समय नोट कर लो!"

सबकी आंखें उसके चेहरे, चप चप की आवाज करते उसके जबड़ों, कानों के पास उभर आनेवाली गुल्लियों, और समगति से उठने और गिरनेवाली उसकी नुकीली ठोडी पर जमी थीं। रह रहकर वे आपस में टिप्पणियां भी करते जाते थे

"मुंह तो देखो कैसे भालू की तरह चल रहा है!"

"कभी देखा भी है भालू को मुंह चलाते हुए?"

"मैं क्या जंगल में रहता हूं? यह तो एक कहावत है भालू की तरह मुंह चलाना।"

"नहीं कहावत यह नहीं है। कहावत है सूअर की तरह मुंह मारना।"

"सूअर क्या सूअर का मांस खाते हैं?"

सब अनचाहे हसने लगे, और तभी कोई लाल बुझक्कड बोला

"सूअर सभी कुछ खा सकता है—चाहे उसके अपने बच्चे कच्चे या भाई-बहन ही क्यो न हो "

देखते-देखते मीशा का चेहरा लाल हो गया, कान नीले पड गए। उसके दीदे कोटरो से बाहर झाकने लगे, और उसकी सास बाजा सी बजाने लगी। लेकिन उसका मुह था कि लगी-बधी रफ्तार से चल रहा था।

"जल्दी कर, मीशा, तेरा समय खत्म हुआ जा रहा है!" वे उसे उक्साते। बाकी मास का वह बेचनी से अन्दाजता, बीयर का घट चढ़ाता और जबडे चलाना जारी रखता। दशको की उत्तेजना बढती जाती, उचक-उचककर और लम्बी गरदनें करके वे मीशा के मालिक के हाथ मे घडी पर नजर डालते, और एक दूसरे को चेताते हुए कहते

"इस बात का ध्यान रखना कि कहीं वह घडी की सुई को पीछे न कर दे। अच्छा यह हो कि घडी इसके हाथ से ले ली जाए!"

"मीशा पर भी नजर रखना। नहीं तो आख बचाकर वह मास अपनी आस्तीन मे छिपा लेगा!"

"देख लेना, समय के भीतर वह कभी इसे खत्म नहीं कर सकता!"

"मैं अब भी पच्चीस रूबल की शत बदने के लिए तयार हू!" मीशा का मालिक आवेश मे आकर चिल्लाया। "मीशा, मुझे नीचा न दिखाइयो!"

उकसावा और बढावा देने के लिए दशक चिल्लाए तो बहुत, लेकिन शत बदने के लिए कोई तयार नहीं हुआ।

मीशा का जबडा चलता रहा, एक क्षण के लिए नहीं रुका, चला सो बराबर चलता ही रहा। उसका चेहरा भी मास जसा ही बन गया, उसकी नुकीली दरेंदार नाक दयनीय सीटी बजाने लगी। उसे देखकर डर मालूम होता, मुझे लगता कि उसके चीख उठने मे अब देर नहीं है। किसी भी क्षण उसके मुह से आवाज निकल सकती है

"मुझपर रहम करो!"

या फिर, मास के गले तक अट जाने के कारण वह दशको के सामने ही ढेर हो जाएगा, और उसकी जान निकल जाएगी।

आखिर उसने सारा मास खत्म कर दिया। दीदे टेरते हुए दशको की ओर उसने देखा, और हाफता हुआ सा बोला

"पीने के लिए कुछ दो "

उसके मालिक ने घडी पर नजर डाली और बडबडा उठा

"चार मिनट ऊपर हो गए, कुत्ते की दुम।"

"चूक गए, अगर शर्त बद ली होती बडा मजा आता," दर्शकों ने चिढ़ाना शुरू किया। "तुम सोलहो आना चित्त हो जाते।"

"लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि है यह पूरा साड।"

"इसे तो किसी सरकस मे भर्ती हो जाना चाहिए "

"भगवान भी कभी-कभी कसे बेढब इसान पदा करता है, हैं?'

"इस वक्त अगर चाय भी हो जाए तो क्या हर्ज है?"

और वे सब बजरो की तरह तरते हुए भटियारखाने की ओर चल दिये

मेरी समझ मे न आता कि क्या बात है कि गभीर और भारी भरकम ये लोग एक बेहाल जीव के चारो ओर इस तरह जमा हो जाते हैं मानो यह कोई तमाशा हो, और फिर किसी को घिनौनेपन के साथ ठूस ठूस कर खाते हुए देखने मे उन्हे क्या मजा मिलता है?"

ऊन की गाठो, भेड की खालो, सन, रस्सो, नमदे के जूतो और काठियो से अटी हुई बाजार की सकरी बालकनी उदास और अघेरी थी। समय की मार से जजर और सडक की धूल-कीचड से काले पडे ईंटा के मोटे-मोटे बदनुमा खम्बे बालकनी और पक्की पगडडी के बीच सीमा रेखा का काम देते थे। रोज, हर घडी, इन खम्बो पर मेरी नजर पडती और मुझे ऐसा मालूम होता मानो उनकी एक एक ईंट और एक एक दरार को हजारो बार मैंने गिना और देखा भला है, यहा तक कि उनका समूचा बदनुमा ढाचा, भोडी बनावट और दाग धब्बो का आल-जाल, मेरी स्मृति मे खूब गहरे उतरकर पूरी तरह से नक्श हो गया है।

पक्की पगडडी पर लोग अलस भाव से आते जाते, और उतने ही अलस भाव से माल से लदी स्लेज और घोडा गाडिया सडक पर से गुजरतीं। सडक के पार लाल ईंटो की दुमजिला दुकानो से घिरा एक चौक था जहां जमीन पर माल भरने की पेटिया, भूसा और बण्डल बाधने के कागज, गदी बफ मे रौंदे हुए सब गड्ड-मड्ड पडे थे।

निरतर और हर घडी की इस हलचल के बावजूद ऐसा मालूम होता मानो यहा सब—मय लागो और घोडो के—निश्चल और स्थिर है, किसी अदृश्य जजीर से बधे कोल्हू के बल की भाति सब एक ही जगह पर चक्कर

लगा रहे हैं। एकाएक महसूस होता था कि ध्वनियों की निधनता ने जीवन को इतना पस्त बना दिया है कि इसे गूंगों-बहरों की पांत में रखा जा सकता है। स्लेजों के दौडने की आवाजें आतीं, दुकानों के दरवाजे झनझनाते और खटपट करते, पाव रोटी और गम शरबत बेचनेवाले चिल्लाते, लेकिन आदमियों की आवाजें इतनी बेरस, जीवनशून्य और एक-जसी होतीं कि कान शीघ्र ही उनकी ओर ध्यान देना बद कर देते, उनका होना या न होना बराबर हो जाता।

गिरजों के घंटे इस तरह बजते मानो मातम मना रहे हों। उनकी उदासी भरी आवाज मानो कानों में अटककर रह जाती। लगता था मानो घंटों की आवाज सुबह से लेकर रात तक बाजार के वायुमण्डल में मंडराती रहती है, दिल व दिमाग में घुसकर हर विचार और हर भावना से चिपक जाती है और हर अनुभूति पर भारी ताम्बे की सी परत की तरह जम जाती है।

जानलेवा ठंडी ऊब को गहरा बनाने में हर चीज हाथ बटाती—गदी बर्फ का कम्बल ओढ़े धरती, छतों पर जमे बर्फ के भूरे ढेर, इमारतों और दुकानों की मास जसी लाल ईंटें। चिमनियों से निकलनेवाला भूरा धुआ भी इसी ऊब से कसमसाता और नीचे लटक आए भूरे सूने आकाश में रेंगने लगता। घोडों की पसलियों और लोगों के नथुनों में भी इसी ऊब की धौंकनी चलती और लोग उसी की सास लेते। एक अजीब गध—पसीने, चर्बी, धुएं, तेल और चिकनाई में डूबे पकौडों की बेरस और बोझिल गध से यह ऊब सराबोर होती। यह गध एक तग, गम टोपी की तरह सिर को दबाती और छाती में छनकर एक अजीब नशा पदा करती। जी करता कि आखें बद कर लो, अपनी पूरी ताकत से दहाडो और कहीं भागकर सिर को पत्थर की पहली दीवार से टकराकर चकनाचूर कर दो।

सौदागरों के चेहरों को मैं बडे ध्यान से देखता—अति तृप्त, बढिया खून की लाली से दमकते, पाला-काटे, और इस प्रकार निश्चल मानो नींद में डूबे हुए हों। रह रहकर वे जम्हाइया लेते और सूखे तट पर पडी हुई मछली की भांति उनके मुह भट्टे से खुल जाते।

जाडों में बाजार ठंडा रहता और वह सजग हिसाब किताबी चमक भी सौदागरों की आखों से गायब हो जाती जो गमियों में उनकी आखों में दौडती रहती है और उन्हें पूरी तरह से अपने रग में रग लेती हैं।

"पीने के लिए कुछ दो "

उसके मालिक ने घड़ी पर नजर डाली और बडबडा उठा

"चार मिनट ऊपर हो गए, कुत्ते की दुम।"

"चूक गए, अगर शत बद ली होती बडा मजा आता," दर्शकों ने चिढ़ाना शुरू किया। "तुम सोलहो आना चित्त हो जाते।"

"लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि है यह पूरा साड।"

"इसे तो किसी सरकस मे भर्ती हो जाना चाहिए "

"भगवान भी कभी-कभी कैसे बेढब इंसान पैदा करता है, है?"

"इस वक्त अगर चाय भी हो जाए तो क्या हर्ज है?"

और वे सब बजरो की तरह तैरते हुए भटियारखाने की ओर चल दिये।

मेरी समझ मे न आता कि क्या बात है कि गभीर और भारी भरकम ये लोग एक बेहाल जीव के चारो ओर इस तरह जमा हो जाते हैं मानो वह कोई तमाशा हो, और फिर किसी को घिनौनेपन के साथ ठूस ठूस कर खाते हुए देखने मे उन्हे क्या मजा मिलता है?"

ऊन की गाठो, भेड की खालो, सन, रस्सो, नमदे के जूतो और काठियो से अटी हुई बाजार की सकरी बालकनी उदास और अधेरी थी। समय की मार से जर्जर और सडक की धूल कीचड से काले पडे इटो के मोटे मोटे बदनुमा खम्बे बालकनी और पक्की पगडडी के बीच सीमा रेखा का काम देते थे। रोज, हर घडी, इन खम्बो पर मेरी नजर पडती और मुझे ऐसा मालूम होता मानो उनकी एक एक ईंट और एक एक दरार को हजारो बार मैंने गिना और देखा भाला है, यहा तक कि उनका समूचा बदनुमा ढाचा, भोडी बनावट और दाग धब्बों का जाल-जाल, मेरी स्मृति मे खूब गहरे उतरकर पूरी तरह से नक्श हो गया है।

पक्की पगडडी पर लोग अलस भाव से आते जाते, और उतने ही अलस भाव से माल से लदी स्लेज और घोडा गाडिया सडक पर से गुजरतीं। सडक के पार लाल ईंटो की दुमजिला दुकानो से घिरा एक चौक था जहा जमीन पर माल भरने की पेटिया, भूसा और बण्डल बांधने के कागज, गदी बर्फ मे रौंदे हुए सब गड्ड-मड्ड पडे थे।

निरतर और हर घडी की इस हलचल के बावजूद ऐसा मालूम होता मानो यहां सब—मय लोगो और घोडो के—निश्चल और स्थिर हैं, किसी अदृश्य जजीर से बधे कोल्हू के बैल की भांति सब एक ही जगह पर चक्कर

लगा रहे हैं। एकाएक महसूस होता था कि ध्वनियो की निधनता ने जीवन को इतना पस्त बना दिया है कि इसे गूगा-बहरो की पात मे रखा जा सकता है। स्लेजो के दौडने की ग्रावाजें ग्रातीं, दुकानो के दरवाजे झनझनाते ग्रौर खटपट करते, पाव रोटी ग्रौर गम शरबत बेचनेवाले चिल्लाते, लेकिन ग्रादमियो की ग्रावाजें इतनी बेरस, जीवनशूय ग्रौर एक-जसी होतीं कि कान शीघ्र ही उनकी ग्रोर ध्यान देना बद कर देते, उनका होना या न होना बराबर हो जाता।

गिरजो के घटे इस तरह बजते मानो मातम मना रहे हो। उनकी उदासी भरी ग्रावाज मानो कानो मे ग्रटककर रह जाती। लगता था मानो घटो की ग्रावाज सुबह से लेकर रात तक बाजार के वायुमण्डल मे मडराती रहती है, दिल व दिमाग़ मे घुसकर हर विचार ग्रौर हर भावना से चिपक जाती है ग्रौर हर ग्रनुभूति पर भारी ताम्बे की सी परत की तरह जम जाती है।

जानलेवा ठडी ऊब को गहरा बनाने मे हर चीज हाथ बटाती–गदी बफ का कम्बल ग्रोढ़े धरती, छतो पर जमे बफ के भूरे ढेर, इमारतो ग्रौर दुकानो की मास जसी लाल ईंटें। चिमनियो से निकलनेवाला भूरा धुग्रा भी इसी ऊब से कसमसाता ग्रौर नीचे लटक ग्राए भूरे सूने ग्राकाश मे रेंगने लगता। घोडो की पसलिया ग्रौर लोगो के नथुना मे भी इसी ऊब की धौंक्नी चलती ग्रौर लोग उसी की सास लेते। एक ग्रजीब गध–पसीने, चर्बी, धुए, तेल ग्रौर चिकनाई मे डूबे पकौडो की बेरस ग्रौर बोझिल गध से यह ऊब सराबोर होती। यह गध एक तग, गम टोपी की तरह सिर को दबाती ग्रौर छाती मे छनकर एक ग्रजीब नशा पदा करती। जी करता कि ग्राखें बद कर लो, ग्रपनी पूरी ताकत से दहाडो ग्रौर कहीं भागकर सिर को पत्थर की पहली दीवार से टकराकर चकनाचूर कर दो।

सौदागरो के चेहरो को मैं बडे ध्यान से देखता–ग्रति तृप्त, बढ़िया खून की लाली से दमकते, पाला-काटे, ग्रौर इस प्रकार निश्चल मानो नींद मे डूबे हुए हो। रह रहकर ये जम्हाइया लेते ग्रौर सूखे तट पर पडी हुई मछली की भाति उनके मुह भट्टे से खुल जाते।

जाडो मे बाजार ठडा रहता ग्रौर वह सजग हिसाब किताबी चमक भी सौदागरो की ग्राखो से गायब हो जाती जो गर्मियो मे उनकी ग्राखो मे दौडती रहती है ग्रौर उन्हें पूरी तरह से ग्रपने रग मे रग लेती है।

भारी लबादा अब हाथ पाव हिलाने मे बाधक होता और वे धरती के साथ जाम हो जाते। अलसाहट मे वे बातें करते, लेकिन जब झुझला उठते तो एक दूसरे को खूब लम्बी झाड पिलाने से भी न चूकते। मुझे ऐसा मालूम होता कि वे जान-बूझकर इस तरह गुल गपाडा मचाते हैं–एक दूसरे का जताने के लिए कि वे जिंदा हैं, उनकी रगो का खून ठडा नहीं पड गया है।

मेरे लिए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि ऊब उन्हे खोखला बना रही है, भीतर और बाहर से उन्हे खत्म कर रही है। और मेरे विचार मे हर चीज पर समा जानेवाली इस ऊब से उनका निष्फल सघर्ष ही उनके क्रूर, बेमानी मनबहलावो का एकमात्र कारण था।

कभी-कभी प्योत्र वासील्येविच से मैं इसका जिक्र करता। यो ताने तिश्ने कसने और मुझे चिढाने मे उसे मजा आता था, लेकिन किताबें पढने की ओर मेरा झुकाव उसे पसद था और भूले भटके, काफी गम्भीरता और सीख भरे अन्दाज मे वह मुझसे बाते करता था। एक दिन मैंने उससे कहा

"ये सौदागर भी क्या जीवन बिताते हैं? मुझे उनका ढर्रा जरा भी अच्छा नहीं लगता।"

दाढी की लट को उसने अपनी उगली मे लपेटा और पूछने लगा

"तुझे क्या मालूम कि वे कसा जीवन बिताते हैं? क्या तू उनके घरो मे जाता रहता है? यह तो बाजार है, मेरे लडके, और लोग बाजार मे जीवन नहीं बिताते। बाजार मे तो वे व्यापार करते है, या घर पहुचने की जल्दी मे तेजी से डग उठाते हुए गुजर जाते हैं! बाजार मे लोग कपडो से लदे फदे रहते है और कुछ पता नहीं चलता कि भीतर से वे कसे है। केवल घर ही एक ऐसी जगह है जहा, अपनी चार दीवारो के भीतर, आदमी उन्मुक्त जीवन बिताता है। अब तू ही बता क्या तूने यह जीवन देखा है?"

"लेकिन उनके ख्यालो मे तो इससे अन्तर नहीं पडता। घर हो चाहे बाहर, वे एक से रहते हैं।"

"यह कोई कसे बता सकता है कि हमारा पडोसी किस समय क्या सोचता है?" बूढे ने कडी नजर से मुझे घूरकर देखा और वजनदार आवाज मे बोला। "विचार जूओ की भाति है, उन्हे गिना नहीं जा सकता–

बडे बूढो ने यो ही यह नहीं कहा है। हो सकता है जब आदमी घर लौटकर देव प्रतिमा के सामने घुटने टेककर मिनमिनाता या आसू बहाते हुए प्रार्थना करता हो मुझे माफ करना, महाप्रभु, आज तुम्हारे पवित्र दिन मैंने पाप किया है। सभव है कि उस के लिए घर मठ के समान हो। प्रभु के सिवा अन्य किसी चीज से उसका लगाव नहीं। समझा! हर मकडी को भगवान ने एक कोना दिया है—खूब जाल बुनो, लेकिन अपना वजन पहचानते हुए, ऐसा न हो कि वह तुम्हारा बोझ न सभाल सके"

जब वह गम्भीरता से बातें करता तो उसकी आवाज मे एक अजीब गहराई पदा हो जाती, मानो वह किसी महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन कर रहा हो।

"अब तूने इतनी छोटी उम्र मे ही बाल की खाल निकालना शुरू कर दिया है। दिमाग के सहारे नहीं, इस उम्र मे तुझे आखो के सहारे जीना चाहिए। दूसरे शब्दो मे यह कि देख और दिमाग़ मे बटोर रख और जबान पर लगाम कसे रख। दिमाग व्यापार के लिए है, विश्वास—आत्मा के लिए। किताबें पढना अच्छी बात है, लेकिन हर चीज की अपनी एक सीमा होती है। कुछ लोग इतना पढते हैं कि न उनका अपना कोई दिमाग़ रहता है, न भगवान रहता है। वे इन दोनो से हाथ धो बठते हैं"

मुझे वह अमर लगता था, यह कल्पना करना कठिन था कि वह कभी अधिक बूढा हो सकता है या बदल सकता है। वह बडे चाव से किस्से सुनाता—सौदागरो के, डाकुओ के, नामी जालसाजो के, जो बाद मे मशहूर बन जाते थे। अपने नाना से मै इस तरह के बहुत से किस्से सुन चुका था। केवल कहने के ढग मे फक था। नाना का ढग उससे कहीं अच्छा था। परन्तु कहानी की मूल भावना वही थी भगवान और मानव को रौंदे बिना धन नहीं बटोरा जा सकता। प्योत्र वासील्येविच के हृदय मे लोगो के लिए कोई दया नहीं थी, लेकिन भगवान का बडे चाव और लगन से जिक्र करता था, उसकी पलके झुक जातीं और हृदय से उसासे निकलने लगतीं।

"देखो न, लोग किस तरह भगवान को धोखा देते नहीं अघाते। लेकिन प्रभु ईसा यह सब देखता है और उनके लिए आसू बहाता है,

'आह मेरे बच्चो, नासमझ बच्चो, तुम्हे नहीं मालूम कि अपने लिए किस नरक की तुम तयारी कर रहे हो!'"

एक दिन साहस बटोर मैंने उससे पूछा

"आप भी तो देहातियो को धोखा देते हैं?"

उसने जरा भी बुरा न माना। बोला

"ऊह, उससे उन्हें ज्यादा नुकसान नहीं पहुचता। मुश्किल से चार या पाच ही रूबल तो मैं अपने लिए उनसे झटकता हू। बस इतना ही, और कुछ नहीं!"

जब वह मुझे कुछ पढ़ते हुए देखता तो पुस्तक मेरे हाथ से ले लेता, उसमे लिखी बातो के बारे मे पूछता-ताछता और सन्देह तथा अचरज में भरकर कारिदे की ओर मुडते हुए कहता

"देखा, यह नन्हा बदर किताबो मे लिखी बातें समझ लेता है!"

और नपे-तुले, कभी न भूलनेवाले अन्दाज मे वह मुझे सीख देता

"मेरे शब्द ध्यान से सुनना—वक्त पर तुम्हारे काम आएगे। किरील नाम के दो आदमी हुए हैं, दोनो ही पादरी, एक अलेक्सान्द्रिया का रहने वाला, और दूसरा येरुशलम का। पहले ने ईश्वर द्रोही नेस्तर को आडे हाथो लिया जो लोगो मे इस तरह की गदी बातो का प्रचार करता था कि मरियम हमारी-तुम्हारी भाति इसी दुनिया की एक स्त्री थी जिसने भगवान को नहीं बल्कि हमारे-तुम्हारे जसे ही ईसा नाम के एक आदमी को जन्म दिया था। यह आदमी दुनिया का तारनहार बना। इसका मतलब यह कि मरियम को भगवान की मां न कहकर ईसा की मा कहना चाहिए। समझा, यही वह चीज है जिसे लोग धम द्रोह कहते हैं। इसी प्रकार येरुशलम के किरील ने धम द्रोही अरिया की धज्जिया उडाईं"

ईसाई धम के इतिहास की उसे अद्भुत जानकारी थी। इसका मुझपर गहरा असर पडता। हल्के और मुलायम हाथ से वह अपनी दाढ़ी सहलाता और शेखी बघारता

"इन विषयो का मैं जनरल हू, बडे मोर्चे मैंने सर किये हैं। पचाशती के दिनो मे मैं मास्को गया था और नीकोन के कितावचाट् चेले-चाटियों, पादरियो और दूसरे सपोलियो के साथ शास्त्राथ किया। एक प्रोफेसर तक से मैंने वाद विवाद किया। एक पादरी को मैंने अपनी जबान के ऐसे कोडे लगाये कि उसकी नाक से खून तक बहने लगा।"

उसके गाल लाली से दमकने लगे और आखो मे चमक दौड गई।

विरोधी की नकसीर क्या फूटी मानो उसे बहुत बडी रियासत मिल गई, उसके गौरव के सुनहरे ताज मे मानो किसी ने चमकता हुआ लाल जड दिया। बडे ही उल्लास और विजय के गर्व के साथ उसने इसके बारे मे बताया

"बहुत ही खूबसूरत और भारी भरकम पादरी था वह। मच पर वह खडा था और उसकी नाक खून के आसू रो रही थी–टपाटप टपाटप–खून नीचे टपक रहा था। और मजा यह कि उसे पता तक नहीं था कि उसकी नाक क्या गुल खिला रही है। बाप रे, वह शेर की भाति झपटता था और उसकी आवाज ऐसे गूजती थी जसे कोई बहुत बडा घटा बज रहा हो। लेकिन मैं भी मोर्चे पर डटा था और उसकी आत्मा को खजर की भाति अपने शब्दो से छलनी कर रहा था। शान्ति से, खूब निशाना साधकर, ठीक उसकी पसलियो की सीध मे मैं अपने शब्दो की मार कर रहा था ईश्वर द्रोही कुत्सित बातो की खिचडी पकाते-पकाते वह तदूर की भाति गरमा गया था ओह, क्या दिन थे वे भी!"

हमारी दुकान पर अक्सर दूसरे पारखी भी आते थे पाखोमी, जिसकी भारी तोद और केवल एक आख थी। वह बोलता क्या था, मानो खर्राटे लेता था। हमेशा वही एक पुराना चौकट कोट पहने रहता, नाटे कद का, चूहे की भाति चिकना चुपडा, मीठे स्वभाव का और फुर्तीला बूढा लुक्यिान आता था। वह अपने साथ एक और आदमी को लाता जो देखने मे कोचवान सा मालूम होता–भारी भरकम, तोबडा चढ़ा हुआ, काली दाढ़ी, निश्चल आखें और खोया-खोया सा सूना चेहरा जो खूबसूरत होते हुए भी अच्छा नहीं मालूम होता था।

वे लगभग कभी खाली हाथ न आते। हमेशा कोई न कोई चीज बेचने के लिए लाते पुरानी पुस्तकें, देव प्रतिमाए, धूपदान, पूजा के बरतन। कभी-कभी, चीजें बेचनेवाले–वोल्गा प्रदेश के किसी बूढ़े या बुढ़िया को भी अपने साथ ले आते। जब सौदा पट जाता तो सब दुकान मे इस तरह बठ जाते जसे मुडेर पर कौवे। चाय पीते और खाने की चीजों पर हाथ साफ करते। बातो का सिलसिला चलता और नीकोनपथी धर्माधिकारियो के जुल्मो का जिक्र करते। एक जगह खानातलाशी ली गयी और पुराने धमग्रथ छीने गये, दूसरी जगह पुलिस ने प्रार्थनाघर को बद कर दिया,

उसके मालिकों को पकड़कर अदालत में पेश किया गया, और धारा १०३ का उल्लंघन करने के अपराध में उनपर मुकदमा चलाया। धारा १०३ पर वे खूब बातें करते। लेकिन वे इसका उल्लेख निस्संग भाव से करते, मानो यह कोई अनिवार्य और उनके वश से बाहर की चीज़ हो, ठीक वैसे ही जैसे जाड़ों में पाला।

पुलिस, खानातलाशी, जेल, अदालत, साइबेरिया जैसे शब्दों का वे बार-बार प्रयोग करते, और ये शब्द दहकते अंगारों की तरह मेरे हृदय से आकर टकराते। इन बूढ़े लोगों के प्रति जो अपने विश्वास की वजह से इतनी मुसीबतें झेल रहे थे, मेरे हृदय में सहानुभूति और शुभ कामनाओं की लौ जाग उठती। नैतिक साहस की मैं कद्र करता और उन लोगों के आगे मेरा सिर झुक जाता जो अपने लक्ष्य की पूर्ति में डिगना नहीं जानते। यह मैंने पुस्तकों से सीखा था।

इन जीवन-गुरुओं की व्यक्तिगत त्रुटियां मेरी आखों से ओझल हो जातीं, मुझे केवल उस शान्त दृढ़ता का ध्यान रहता जिसके पीछे—मेरी समझ में—अपने सत्य में इन गुरुओं का अडिग विश्वास और सत्य के लिए सभी मुसीबतें झेलने की उनकी तत्परता छिपी थी।

आगे चलकर बुद्धिजीवियों तथा आम लोगों के बीच पुराने विश्वास के ऐसे ही या इनसे मिलते-जुलते अनेक रक्षकों से मिलने के बाद, मेरे लिए साफ हो गया कि जिसे मैं उनकी दृढ़ता समझे था, वह वास्तव में एक तरह की निष्क्रियता थी। यह उन लोगों की निष्क्रियता थी जो एक नुक्ते पर पहुंचकर रुक गये थे। जिन्हें उस नुक्ते से आगे और कुछ नहीं दिखाई देता था और जिनमें असंदिग्ध रूप में उससे आगे बढ़ने की कोई इच्छा भी नहीं थी। वे घिसे पिटे और जड़ शब्दों तथा जर्जर मान्यताओं के जाल में उलझकर रह गए थे। उनकी इच्छाशक्ति इतनी निर्जीव और अक्षम हो गई थी कि भविष्य की ओर आगे बढ़ना उनके लिए सम्भव नहीं रहा था, इस हद तक कि अगर बाहर से कोई आघात उन्हें उनकी जगह पर से हटाता है तो वे यंत्रवत नीचे लुढ़कना शुरू कर देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पहाड़ी ढाल पर से पत्थर लुढ़कता है। अतीत के संस्मरणों की जीवनहीन शक्ति और यंत्रणा तथा दमन सहने का विकृत प्रेम मृत सत्यों की कब्रगाह में उन्हें उनकी चौकियों पर बनाये रखता था। यंत्रणा सहने का अवसर हाथ से निकलते ही वे खोखले हो जाते और उसी तरह

ग़ायब हो जाते जसे कि तेज़ हवा बादलो के टुकडो को उडा ले जाती है।

जिस विश्वास के लिए इतनी तत्परता और आत्मगौरव के साथ वे अपने को बलिदान करते थे, उसकी दढता से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन यह दृढता उन पुराने कपडो की याद दिलाती थी जिनपर धूल और गद की इतनी मोटी तह जम गई है कि समय का विनाशकारी असर उनपर नहीं पडता। उनके विचार और भावनाए अधविश्वासो और जड सूत्रो के चौखटे मे कसे रहने की आदी हो गई थीं, भले ही इन चौखटो ने उन्हे विकृत और पगु बना दिया हो, लेकिन इससे उन्हे ज़रा भी परेशानी नहीं होती थी।

आदतवश विश्वास करना—यह हमारे जीवन की एक अत्यन्त कुत्सित और दु खद घटना है। इस विश्वास मे दमघोट चौखटे के भीतर, मानो पत्थर की दीवार की छाया मे कोई नयी चीज़ नहीं पनप पाती—पनपती भी है तो धीरे धीरे, विकृत और लुजपुज रूप मे। इस अधकारमय विश्वास मे प्रेम की किरणें बहुत कम चमकती हैं और घणा की—बदले की भावना, कुत्सा और ईर्ष्या की लपटें उठती हैं। इस विश्वास की अग्नि गलने सडने की, फास्फोरस की दमक है।

लेकिन इस सत्य तक पहुचने के लिए मुझे वर्षों तक पापड बेलने और मुसीबते झेलनी पडीं, अपनी आत्मा मे बहुत सी तोड फोड करनी पडी, स्मृति-पटल से बहुत कुछ मिटाना पडा। इसमे कोई शक नहीं कि बोझिल, बेरस और गर जिम्मेदारी से भरे जीवन के बीच जो मेरे चारो ओर फला था, जीवन के इन गुरुओ को जब पहली बार मैंने देखा तो मुझे लगा कि वे अदभुत नतिक साहस के धनी, बल्कि कहना चाहिए कि इस धरती की जान हैं। सभी, किसी न किसी समय, अदालत मे घसीटे जा चुके थे, जेल की चक्की पीस चुके थे, नगरो से बाहर खदेडे और अन्य अपराधियो के साथ जलावतनी का जानलेवा रास्ता नाप चुके थे। सभी, चौबीसो घटे, सासत से जीवन बिताते, लुक छिपकर रह रहे थे।

लेकिन, यह सब होने पर भी, मैंने देखा कि एक ओर जहा वे नीकोनिया के अत्याचारा और इस बात का रोना रोते कि वे उनकी आत्मा के पीछे पडे रहते हैं, वहा दूसरी ओर ये खुद बूढे लोग भी बडी तत्परता और उछाह से एक-दूसरे पर झपटते रहते थे।

पाना पाखोमी, जब कभी वह तरंग में होता, बड़े चाव से अपनी अदभुत याददाश्त के करतब दिखाता। कुछ धर्म-ग्रंथ तो उसकी ज़बान पर चढ़े थे और वह उन्हें उसी तरह पढ़ता था जिस तरह यहूदी पुजारी तालमुद पढ़ते हैं। वह ग्रंथ खोलता, आंख बन्द कर किसी भी शब्द पर अपनी उंगली टिका देता और जो भी शब्द पकड़ में आता, उसके बाद से मुलायम और गुनगुनी आवाज़ में वह ज़बानी सुनाना शुरू कर देता। उसकी नज़र हमेशा फ़र्श की ओर झुकी होती और उसकी अधेली आंख बड़ी तत्परता से अगल-बगल लपकती झपकती, मानो वह किसी खोई हुई बहुमूल्य चीज़ की टोह में हो। अपना करतब दिखाने के लिए वह ज़्यादातर प्रिंस मिशात्स्की की पुस्तक "रूस का अंगूर" से काम लेता। 'भारी धीरज और साहस से ओतप्रोत वीर और निडर शहीदों की कुरबानियां' उसे सब से अच्छी तरह याद थीं। प्योत्र वासील्येविच उसकी ग़लतियां निकालने के लिए हमेशा पंजे पनाए रहता।

"ग़लत! यह घटना सन्त डेनिस के साथ घटी थी, सन्त किप्रियान के साथ नहीं!"

"डेनिस? डेनिस नहीं, सही नाम है डिओनिसी, समझे?"

"नाम को लेकर मेरे साथ चपाड़बाज़ी न करो!"

"तो तुम भी मुझे सबक पढ़ाने की कोशिश न करो!"

लेकिन यह तो शुरूआत ही थी। कुछ क्षण बीतते न बीतते उनके चेहरे गुस्से से तमतमा जाते, वे एक-दूसरे को नीचे गिरानेवाली नज़रों से ताकते और चुने हुए शब्दों के गोले दागने लगते

"गावदुम, बेशर्म, अपनी इस तोंद को तो देख क्या मटके सी फूलती जा रही है!"

पाखोमी जमा-बाकी का हिसाब लगानेवाले मुनीम की तरह जवाब देता

"बकरे की दुम, फिसड्डी और नीच, घाघरे के पिस्सू!"

आस्तीनों के भीतर अपने हाथों को खोसे कारिंदा उन्हें देखता, उसके चेहरे पर कुत्सापूर्ण मुसकराहट नाचने लगती और प्राचीन धर्म के इन रक्षकों को वह इस तरह उकसाता मानो वे स्कूली बच्चे हों

"ऐसे, ऐसे! और ज़ोर से, वाह, शाबाश!"

एक दिन बूढ़े सचमुच में लड़ पड़े। प्योत्र वासील्येविच ने पाखोमी

के मुह पर ऐसा थप्पड रसीद किया कि वह मदान छोडकर भाग निकला। प्योत्र वासीलयेविच ने थके हुए भाव से अपने माथे का पसीना पोछा और भागते हुए पाखोमी को लक्ष्य कर चिल्लाया

"सुन ले, यह पाप तेरे सिर पर है। तूने ही मेरे इस हाथ को आज यह पाप करने के लिए उत्तेजित किया! थू है तुझपर!"

वह अपने साथियो पर विश्वास की कमी और 'नकारवाद' के चक्कर मे फसने का आरोप लगाकर खास तौर से खुश होता

"आखिर तुमने भी उसी ईश्वर द्रोही कौवे अलेक्सान्द्र की बोली बोलना शुरू कर दिया न!"

लेकिन जब उससे पूछा जाता कि जिस 'नकारवाद' से वह इतना चिढ़ता और भय खाता है, वह आखिर है क्या बला, तो उससे कोई साफ जवाब देते न बनता

"नकारवाद सबसे तीखा और घातक धम द्रोह है जो खुदा को जहन्नुम रसीद कर उसकी जगह बुद्धि को बठाता है। मिसाल के लिए फरजाको को लो। वे केवल बाइबल को मानते हैं। और यह बाइबल साराताेव के जमनो से—लूथर से—उनके हाथ लगी। और लूथर के बारे मे कहा गया है, 'लुटेरा-लूथर, रगीला लूथर, शतान लूथर!' जमनो के कबीले का मतलब है खरहा दिमागो या फिर हटूनडा। यह सारी अलाय-बलाय पश्चिम से, वहा के धम द्रोहियो के पास से आई है।"

अपना विकृत पाव वह जमीन पर पटकता और ठडी वजनदार आवाज मे कहता

"असल मे ये लोग हैं जिनका इन नये धम वालों को दुनिया तग करना चाहिए, बीन-चीनकर जिन्हें पकडना और टिकटियों पर जिन्हें भूनना चाहिए। असल मे दमन इनका होना चाहिए, न कि हमारा। हम, जो रूसी हैं—पुश्त दर पुश्त से दुनिया बनी है तब से हमारा विश्वास और दीन-ईमान एकदम पूर्वी, सच्चे मानो मे रूसी है। लेकिन ये लोग और इनकी विकृत आजादख्याली—यह सब पश्चिम की देन है, एकदम विदेशी। जमनो और फ्रासीसियो से नुकसान के सिवा और क्या पल्ले पडेगा? जरा पीछे मुडकर देखो, १८१२ मे"

जोश मे उसे इस बात का भी ध्यान न रहता कि कच्ची उम्र के एक लडके से वह बातें कर रहा है। अपने मजबूत हाथ मे मग पकडे उसने

झटका देकर कभी वह मुझे अपनी ओर खींचता, कभी दूर धकेल देता। उसकी आवाज एक अजीब, बिल्कुल युवकों जसी उत्साह से भरी होती थी। यह कहता

"आदमी का दिमाग हवाई जगल मे खूखार भेडिये की भाति मडराता है। शैतान के हाथो मे उसकी नकेल होती है और उसकी आत्मा, परमात्मा का उच्चतम वरदान, नष्ट हो जाती है। शैतान के इन चेलों के दिमाग ने क्या गढा? नकारवाद के ये कठमुल्ला सीख देते थे शैतान भी खुदा का बेटा और प्रभु ईसा का बडा भाई है! देखा, कहां तक पहुचे? और वे लोगों को यह पाठ भी पढ़ाते थे अधिकारियो का कहना न मानो, काम धधे न करो, अपने बीवी-बच्चो को धता बताओ। हर व्यवस्था के वे खिलाफ हैं। बस, आदमी को छुट्टा छोड दो, ताकि वह शैतान के इशारे पर नाचे। अब देखो यह अलेक्सान्द्र आ धमका है, ओह, कीड "

कभी-कभी बीच मे ही, कोई काम करने के लिए कारिदा मुझे बुला लेता। बालकनी मे वह अब अकेला ही रह जाता, लेकिन उसका बोलना फिर भी बद न होता, बूढे के मुह से निकले शब्द शून्य मे बिखरते रहते

"ओ, पर-कटी आत्माओ, ओ अधे पिल्लो, न जाने कब तुमसे छुटकारा मिलेगा!"

फिर, पीछे की ओर अपने सिर को फेंकता और हथेलियो को अपने घुटनो पर टिकाकर देर तक चुप रहता, जाडा के धूसर आकाश पर नजर गडाए वह एकटक देखता रहता।

मेरे साथ उसका बरताव धीरे धीरे अधिक नरम होता गया और वह मेरा काफी ध्यान रखने लगा। जब वह मुझे कोई पुस्तक पढते देखता तो मेरे कधे को थपथपाते हुए कहता

"यह ठीक है, मेरे लडके, पढ और खूब पढ़। वक्त पर काम आएगा। भगवान ने तुझे अच्छा दिमाग दिया है। अफसोस की बात है कि तू बडो का कहना नहीं मानता, और हर किसी के सामने अड जाता है। जानता है, यह शैतानी तुझे कहां ले जाएगी? जेल मे, मेरे लडके, जेल मे। किताबें पढ़, खूब पढ़, लेकिन यह न भूल कि किताब आखिर किताब ही है। ऐसा न हो कि तेरा अपना दिमाग ठप हो जाए। जानता है, खिलस्ती पथ का एक गुरु दनीलो था, वह इस विचार पर पहुच गया कि किताबो की कोई जरूरत नहीं, वे नयी हो या पुरानी, किताबो को बोरे मे भरकर उसने

उन्हें नदी मे डुबा दिया। यह भी गलत है। फिर शतान का गुर्गा वह अलेक्साद्र है जो लोगो को उलटा पाठ पढाता है और उनके दिमागो को खराब करता है "

अलेक्साद्र का वह अक्सर जिक्र करता और बात-बात मे उसका नाम लेता। एक दिन जब वह दुकान मे आया तो उसका चेहरा बेहद परेशान था। तेज स्वर मे कारिंदे से बोला

"कुछ सुना तूने, अलेक्साद्र यहा, हमारे नगर मे ही मौजूद है—कल ही आया है। सुबह से घूम रहा हू, कोई जगह मैंने नहीं छोडी, लेकिन कुछ पता नहीं चला जाने कहा चोर की तरह छिपा है। सोचा, कुछ देर तेरी दुकान पर चलकर बठू। शायद यहीं टकरा जाए "

"रोज ही सैकडो ऐरे-गरे आते रहते ह। मेरा उनसे क्या वास्ता!" कारिंदे ने कुढकर कहा।

बूढ़े ने सिर हिलाया। बोला

"ठीक है—तेरे लिए सब लोग या खरीदार हैं या बेचनेवाले और कोई हैं ही नहीं। चल एक गिलास चाय तो पिला दे "

खौलते पानी से भरी पीतल की एक बडी सी केतली लेकर जब मैं लौटा तो देखा कि दुकान मे कुछ और मेहमान भी मौजूद हैं। इनमे बूढ़ा लुकियान भी था। खुशी के मारे उसकी बत्तीसी खिली थी। दरवाजे के पीछे अंधेरे कोने मे एक अजनबी बठा था। वह नमदे के ऊचे जूते, हरे पटके से कसा गरम कोट और सिर पर टोपी पहने था जिसे नीचे खींचकर उसने अपनी आखो को ढक लिया था। उसका चेहरा मुझे अच्छा नहीं लगा, हालाकि वह काफी शान्त और विनम्र जीव मालूम होता था। उसका मुह बुरी तरह लटका हुआ था, दुकान के उस कारिंदे की भाति जिसे अभी अभी नौकरी से निकाल दिया गया हो और इस कारण जसे उसके होश हवास गुम हो गये हो।

उसकी ओर नजर तक डालने की चिन्ता न करते हुए प्योत्र वासील्येविच कुछ कह रहा था। उसकी आवाज मे विरोधी को चित्त कर देनेवाली सख्ती, वजन और जोर था। अजनबी का दाहिना हाथ ऐंठता हुआ अपनी टोपी से खेल करने मे जुटा था। वह बाह उठाता, इस तरह मानो सलीब का चिह्न बनाने जा रहा हो, और हल्का सा झटका देकर टोपी को पीछे की ओर खिसका देता। एक बार, दो बार, तीन बार, अन्त मे टोपी

चांद पर खिसक जाती और वह उसका छोर पकडकर झटके से उसे खींचता और फिर अपनी आखो पर जमा लेता। उसकी इन ऐंठन की हरकतों का देखकर मुझे 'जेब मे मौत' वाले पागल इगोशा की याद हो आई।

"ये गदी मछलिया हमारी गदली नदी मे किलबिला रही हैं और दिन दिन दूनी गदगी उछाल रही हैं!" प्योत्र वासील्येविच कह रहा था।

अजनबी ने, जो किसी दुकान का कारिदा मालूम होता था, शान्त और निश्चल आवाज मे पूछा

"यह सब क्या तुम मेरे बारे मे कह रहे थे?"

"तुम्हारे बारे मे ही सही "

अजनबी ने, उतने ही निश्चल अन्दाज और आत्मिकता से फिर पूछा

"और खुद अपने बारे मे तुम क्या कहते हो, बदे?"

"अपने बारे मे मै भगवान के दरबार मे कहूगा—वह मेरा निजी मामला है "

"ओह नहीं, बदे, अकेले तुम्हारा ही नहीं, वह मेरा मामला भी है," अजनबी ने जोरदार और गम्भीर आवाज मे कहा। "सचाई से आखें न चुराना और अपने को जान बूझकर अधा न करना। भगवान और इसान के सामने यह बडा पाप है!"

मुझे यह अच्छा लगा कि प्योत्र वासील्येविच को उसने 'बदा' कहकर सम्बोधित किया। उसकी शान्त और गम्भीर आवाज ने भी मुझपर गहरा असर किया। वह उसी तरह बोल रहा था जसे कि कोई अच्छा पादरी धम ग्रथ का पाठ करता है, "सबका स्वामी, इस दुनिया का सिरजनहार..." वह बोलता जाता था और कुर्सी पर आगे की ओर खिसकता जाता था, अपने हाथ को मुह के सामने लाकर हिलाते हुए बोला

"मेरी निदा मत करो, मै तुमसे अधिक पापी नहीं हू "

प्योत्र वासील्येविच ने तिरस्कारपूवक कहा

"लगा समोवार खौलने!"

अजनबी ने उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और बोला

"केवल भगवान ही यह बता सकता है कि पवित्र आत्मा के सोतों को कौन अधिक गदा कर रहा है। हो सकता है कि यह पाप तुमने ही किया हो,—किताबी—कागजी लोगो ने, मैं किताबी नहीं, कागजी नहीं, मैं तो एक सीधा सादा जीव हू "

"जानता हू मैं तुम्हारी यह सादगी। बहुत सुन चुका हू!"

"यह तुम लोगो को भरमाते हो, सीधी बातों को तोडते मरोडते हो, कितावी, गिरगिट मैं क्या कहता हू, बताओ?"

"धर्म द्रोह!" प्योत्र वासील्येविच ने कहा। अजनबी अपने हाथ की हथेली को आखो के सामने लाकर इस तरह देख रहा था मानो उसपर लिखी लिखावट पढ़ रहा हो और व्यग्र भाव से बोलता जा रहा था

"तुमने लोगों को एक गदगी से निकालकर दूसरी गदगी मे डाल दिया है और सोचते हो कि इससे उनका जीवन सुधर गया? लेकिन मैं कहता हू कि तुम धोखे मे हो! मैं कहता हू खुदा के बदो, अपने को उन्मुक्त करो! खुदा के सामने न घर की कुछ हस्ती है, न बीवी बच्चो और ढोर डगरो की! अपने को मुक्त करो, उन सभी चीज़ो को छोड दो जो हिंसा और मार-काट की ओर ले जाती हैं—सोने चादी और धन दौलत के सारे बधनो को तोड दो जो सडाध और गदगी का ही दूसरा नाम हैं। इस लबी चौडी धरती पर चाहे जितना भटको, कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति तो केवल स्वर्ग की घाटियो मे मिलती है। किसी चीज का मोह न करो। हर चीज से इनकार करो। मै कहता हू, सभी नातों-बधनो से इनकार करो। इस दुनिया के जाल को नष्ट करो—जो खुदा के दुश्मनो की रचना है मेरा रास्ता सीधा है, मेरी आत्मा अडिग है, मैं इस अधी दुनिया को स्वीकार नहीं करता "

"लेकिन रोटी, पानी और तन ढकने के लिए कपडा को स्वीकार करते हो? ये सब भी तो इसी दुनिया की चीजें है!" बूढे ने जहरीली आवाज मे पूछा।

अलेक्सान्द्र पर इन शब्दो का भी कोई असर नहीं हुआ। वह और भी लगन से बोलता गया। उसकी आवाज धीमी थी, लेकिन मालूम ऐसा होता था जसे पीतल की तुरही गूज रही हो

"बदे, तेरी असली निधि का स्रोत क्या है? तेरी निधि का स्रोत है खुदा, वही तेरी असली दौलत है। निष्कलक बनकर उसके सामने जा, अपनी आत्मा को इस दुनिया के बधनो से मुक्त कर और खुदा देख लेगा—तू अकेला है और वह अकेला है। इसी तरह तुझे खुदा के पास जाना है, इसके सिवा उसके पास पहुचने का और कोई रास्ता नहीं है। कहा है मुक्ति के लिए पिता और मा को छोड, हर चीज का त्याग कर और

घाव पर रिसते जाते और यह उसका छोर पकड़कर झटके से उसे खींचता और फिर अपनी आखों पर जमा लेता। उसकी इन ऐंठन की हरकतों को देखकर मुझे 'जेम म मौत' वाले पागल इगाशा की याद हो आई।

"ये गदी मछलियां हमारी गदली नदी मे बिलबिला रही हैं औ दिन दिन दूनी गदगी उछाल रही हैं!" प्योत्र वासील्येविच कह रहा था

अजनबी ने, जो किसी दुकान का कारिदा मालूम होता था, शां और निश्चल आवाज मे पूछा

"यह सब क्या तुम मेरे बारे मे कह रहे थे?"

"तुम्हारे बारे मे ही सही "

अजनबी ने, उतने ही निश्चल अन्दाज और आत्मिकता से फिर पूछा

"और खुद अपने बारे मे तुम क्या कहते हो, बदे?"

"अपने बारे मे मैं भगवान के दरबार मे कहूगा—वह मेरा निज मामला है "

"ओह नहीं, बदे, अकेले तुम्हारा ही नहीं, वह मेरा मामला भी है," अजनबी ने जोरदार और गम्भीर आवाज मे कहा। "सचाई से आं न चुराना और अपने को जान-बूझकर अधा न करना। भगवान और इसा के सामने यह बड़ा पाप है!"

मुझे यह अच्छा लगा कि प्योत्र वासील्येविच को उसने 'बदा' कहकर सम्बोधित किया। उसकी शान्त और गम्भीर आवाज ने भी मुझपर गहरा असर किया। वह उसी तरह बोल रहा था जसे कि कोई अच्छा पादरी धर्म-ग्रथ का पाठ करता है, "सबका स्वामी, इस दुनिया का सिरजनहार—" वह बोलता जाता था और कुर्सी पर आगे की ओर खिसकता जाता था अपने हाथ को मुह के सामने लाकर हिलाते हुए बोला

"मेरी निंदा मत करो, मैं तुमसे अधिक पापी नहीं हू "

प्योत्र वासील्येविच ने तिरस्कारपूर्वक कहा

"लगा समोवार खौलने!"

अजनबी ने उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और बोला

"केवल भगवान ही यह बता सकता है कि पवित्र आत्मा के स्रोत को कौन अधिक गदा कर रहा है। हो सकता है कि यह पाप तुमने ही किया हो,—किताबी—कागजी लोगो ने, मैं किताबी नहीं, कागजी नहीं मै तो एक सीधा सादा जीव हू "

"जानता हूं मैं तुम्हारी यह सादगी। बहुत सुन चुका हूं!"

"यह तुम लोगों को भरमाते हो, सीधी बातों को तोड़ते मरोड़ते हो, कितायी, गिरगिट मैं क्या कहता हूं, बताओ?"

"धर्म द्रोह!" प्योत्र वासील्येविच ने कहा। अजनबी अपने हाथ की हथेली को आंखों के सामने लाकर इस तरह देख रहा था मानो उसपर लिखी लिखावट पढ़ रहा हो और व्यग्र भाव से बोलता जा रहा था

"तुमने लोगों को एक गंदगी से निकालकर दूसरी गंदगी मे डाल दिया है और सोचते हो कि इससे उनका जीवन सुधर गया? लेकिन मैं कहता हूं कि तुम धोखे मे हो! मैं कहता हूं खुदा के बंदो, अपने को उन्मुक्त करो! खुदा के सामने न घर की कुछ हस्ती है, न बीवी बच्चो और ढोर डंगरों की! अपने को मुक्त करो, उन सभी चीजो का छोड़ दो जो हिंसा और मार-काट की ओर ले जाती हैं—सोने चांदी और धन दौलत के सारे बंधनो को तोड़ दो जो सड़ांध और गंदगी का ही दूसरा नाम हैं। इस लंबी चौड़ी धरती पर चाहे जितना भटको, कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति तो केवल स्वर्ग की घाटियों मे मिलती है। किसी चीज का मोह न करो। हर चीज से इनकार करो। मैं कहता हूं, सभी नातों-बंधनो से इनकार करो। इस दुनिया के जाल को नष्ट करो—जो खुदा के दुश्मनो की रचना है मेरा रास्ता सीधा है, मेरी आत्मा अडिग है, मैं इस अंधी दुनिया को स्वीकार नहीं करता"

"लेकिन रोटी, पानी और तन ढकने के लिए कपड़ा को स्वीकार करते हो? ये सब भी तो इसी दुनिया की चीजें है!" बूढ़े ने जहरीली आवाज मे पूछा।

अलेक्सान्द्र पर इन शब्दो का भी कोई असर नहीं हुआ। वह और भी लगन से बोलता गया। उसकी आवाज धीमी थी, लेकिन मालूम ऐसा होता था जसे पीतल की तुरही गूंज रही हो

"बंदे, तेरी असली निधि का स्रोत क्या है? तेरी निधि का स्रोत है खुदा, वही तेरी असली दौलत है। निष्कलंक बनकर उसके सामने जा, अपनी आत्मा को इस दुनिया के बंधनो से मुक्त कर और खुदा देख लेगा—तू अकेला है और वह अकेला है। इसी तरह तुझे खुदा के पास जाना है, इसके सिवा उसके पास पहुंचने का और कोई रास्ता नहीं है। कहा है मुक्ति के लिए पिता और मा को छोड़, हर चीज का त्याग कर और

उस आंख को निकाल डाल जो हृदय को मोहक चीज़ों से उलझाता है। खुदा के लिए इस नश्वर शरीर का नाश और अनश्वर आत्मा का वरण कर, जिससे तेरी आत्मा की जोत कभी मंद नहीं पड़ेगी..."

प्योत्र वासील्येविच से नहीं रहा गया। उठते हुए मुसकाकर बोला, "छि कुत्ते की दुम! मैं तो समझा था कि पिछले साल के मुकाबले अब तुम कुछ ज्यादा समझदार हो गए होगे, लेकिन लगता है कि तुम्हारा रोग दिन दिन बढ़ता ही जा रहा है..."

बूढ़ा डगमग करता दुकान से बाहर बालकनी में निकल गया। यह देख अलेक्सान्द्र चौंका। तेज़ी से और कुछ अचरज में भरकर पूछा

"अरे, क्या जा रहे हो? भला... यह कैसे?"

शराफत के पुतले लुकियान ने आंख के इशारे से लेप चढ़ाते हुए कहा

"कोई बात नहीं... कोई बात नहीं..."

तब अलेक्सान्द्र ने उसे भी आड़े हाथों लिया

"और तुम भी हो कि अर्थहीन शब्द बिखेरते जा रहे हो—लेकिन इससे क्या फायदा? क्या फर्क पड़ता है?..."

लुकियान ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और खुद भी बालकनी में चला गया। अजनबी ने अब कारिंदे की ओर रुख किया और विश्वास भरी आवाज़ में बोला

"देखा, मेरी आत्मा की शक्ति के सामने न टिक सके। धुआं उसी समय तक मंडराता है जब तक लपटें नहीं उठतीं!"

कारिंदे ने पलकों के नीचे से नज़र उठाकर देखा, और रूखे स्वर में बोला

"मेरे लिए सब बराबर है।"

अलेक्सान्द्र इन शब्दों को सुनकर मानो झेंप गया। अपनी टोपी को आंखों पर खींचते हुए बुदबुदाया

"यह क्या, बराबर कैसे है?... सब बराबर नहीं हो सकता..."

कुछ क्षण तक वह सिर लटकाए चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद बूढ़ों ने उसे आवाज़ दी और तीनों राम-सलाम कहे बिना चले गए।

अंधेरे में जिस तरह आग धधकती है, ठीक वैसे ही यह अजनबी मेरी आंखों के सामने प्रकट हुआ, और मुझे लगा कि इस दुनिया से उसके इनकार में कोई सत्य ज़रूर है।

रात को मौका पाकर भारी उत्साह के साथ इवान लारिग्रोनिच से मैंने उसका जिक्र किया। वह एक बहुत ही शात और भला आदमी था और हमारी वकशाप का बडा उस्ताद था। मेरी बात सुनने के बाद बोला

"वह भगोडा होगा,—यह भी एक पथ है जिसे माननेवाले किसी चीज को स्वीकार नहीं करते।"

"वे कसे रहते हैं?"

"वे किसी एक जगह नहीं टिकते, सदा घूमते रहते है। इसीलिए उनका नाम भी भगौडे पड गया। उनका मत है कि यह धरती और इसकी हर चीज उनके लिए परायी है। पुलिस उन्हे नुकसानदेह समझती है, और उनके पीछे पडी रहती है"

अपने जीवन मे काफी कटुता मैंने देखी थी, फिर भी यह बात मेरे हृदय मे नहीं जमी कि कोई जीवन की हर चीज को ठुकरा कसे सकता है। उस समय अपने चारो ओर के जीवन मे मुझे अच्छी और दिलचस्प चीजें दिखाई देती थीं। नतीजा इसका यह कि कुछ दिन बीतते न बीतते अलेक्सान्द्र का चित्र धुधला पडकर मेरी स्मृति से गायब हो गया।

लेकिन, कभी-कभी, बुरे क्षणो मे उसकी याद ताजा हो जाती और मुझे लगता जसे खेतो के बीच से मटमले पथ को पार करता वह जगल की ओर बढा जा रहा हो। श्रम के दाग धब्बो से अछूता उसका सफेद और साफ-सुथरा हाथ ऐंठता हुआ टोपी को धकेल रहा है और वह बुदबुदा रहा है

"मेरा पथ सीधा और सही है और हर चीज से इनकार करने तथा हर बधन को तोडने का मैं आह्वान करता हू"

और उसके साथ साथ पिता का चित्र भी मेरी आखो के सामने मूत हो उठता,—ठीक वसा ही जसा कि वह नानी को सपनो मे दिखाई देता था अखरोट की लकडी हाथ मे लिए, और एक चित्तीदार कुत्ता, जीभ बाहर निकाले, उसके कदमो के साथ लपकता झपकता हुआ

१३

देव प्रतिमाओ की वकशाप लकडी और ईंट की एक पक्की इमारत के दो कमरो मे थी। एक कमरे मे तीन खिडकिया सहन की तरफ खुलती थीं और दो बगीचे की तरफ, दूसरे कमरे मे एक खिडकी का रुख बगीचे

उस आख को निकाल डाल जो हृदय को मोहक चीजो से उलझाती है। खुदा के लिए इस नश्वर शरीर का नाश और अनश्वर आत्मा का वरण कर, जिससे तेरी आत्मा की जोत कभी मद नहीं पडेगी "

प्योत्र वासील्येविच से नहीं रहा गया। उठते हुए झुझलाकर बोला, "छि कुत्ते की दुम! मैं तो समझा था कि पिछले साल के मुकाबले अब तुम कुछ ज्यादा समझदार हो गए होगे, लेकिन लगता है कि तुम्हारा राग दिन दिन बढता ही जा रहा है "

बढा डगमग करता दुकान से बाहर बालकनी मे निकल गया। यह देख अलेक्सान्द्र चौंका। तेजी से और कुछ अचरज मे भरकर पूछा

"अरे, क्या जा रहे हो? भला यह कसे?"

शराफत के पुतले लुकियान ने आख के इशारे से लेप चढाते हुए कहा

"कोई बात नहीं कोई बात नहीं "

तब अलेक्सान्द्र ने उसे भी आडे हाथो लिया

"और तुम भी हो कि अर्थहीन शब्द बिखेरते जा रहे हो—लेकिन इससे क्या फायदा? क्या फर्क पडता है? "

लुकियान ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और खुद भी बालकनी मे चला गया। अजनबी ने अब कारिंदे की ओर रुख किया और विश्वास भरी आवाज मे बोला

"देखा, मेरी आत्मा की शक्ति के सामने न टिक सके। धुआ उसी समय तक मडराता है जब तक लपटें नहीं उठतीं!"

कारिंदे ने पलको के नीचे से नजर उठाकर देखा, और रूखे स्वर मे बोला

"मेरे लिए सब बराबर है।"

अलेक्सान्द्र इन शब्दो को सुनकर मानो झेंप गया। अपनी टोपी को आखो पर खींचते हुए बुदबुदाया

"यह क्या, बराबर कसे है? सब बराबर नहीं हो सकता "

कुछ क्षण तक वह सिर लटकाए चुपचाप बठा रहा। इसके बाद बूढों ने उसे आवाज दी और तीनो राम-सलाम कहे बिना चले गए।

अधेरे मे जिस तरह आग धधकती है, ठीक वसे ही यह अजनबी मेरी आखो के सामने प्रकट हुआ, और मुझे लगा कि इस दुनिया से उसके इनकार मे कोई सत्य जरूर है।

रात को मौका पाकर भारी उत्साह के साथ इवान लारिग्रोनिच से मैंने उसका जिक्र किया। वह एक बहुत ही शान्त श्रौर भला श्रादमी था श्रौर हमारी वकशाप का बडा उस्ताद था। मेरी बात सुनने के बाद बोला

"वह भगोडा होगा,—यह भी एक पथ है जिसे माननेवाले किसी चीज को स्वीकार नहीं करते।"

"वे कसे रहते हैं?"

"वे किसी एक जगह नहीं टिकते, सदा घूमते रहते हैं। इसीलिए उनका नाम भी भगौडे पड गया। उनका मत है कि यह धरती श्रौर इसकी हर चीज उनके लिए परायी है। पुलिस उन्हे नुक़सानदेह समझती है, श्रौर उनके पीछे पडी रहती है"

श्रपने जीवन मे काफी कटुता मैंने देखी थी, फिर भी यह बात मेरे हृदय मे नहीं जमी कि कोई जीवन की हर चीज को ठुकरा कसे सकता है। उस समय श्रपने चारो श्रोर के जीवन मे मुझे श्रच्छी श्रौर दिलचस्प चीजें दिखाई देती थीं। नतीजा इसका यह कि कुछ दिन बीतते न बीतते श्रलेक्साद्र का चित्र धुधला पडकर मेरी स्मति से गायब हो गया।

लेकिन, कभी-कभी, बुरे क्षणो मे उसकी याद ताजा हो जाती श्रौर मुझे लगता जसे खेतो के बीच से मटमले पथ को पार करता वह जगल की श्रोर बढ़ा जा रहा हो। श्रम के दाग धब्बो से श्रछूता उसका सफेद श्रौर साफ-सुथरा हाथ ऐंठता हुश्रा टोपी को धकेल रहा है श्रौर वह बुदबुदा रहा है

"मेरा पथ सीधा श्रौर सही है श्रौर हर चीज से इनकार करने तथा हर बधन को तोडने का मैं श्राह्वान करता हू"

श्रौर उसके साथ साथ पिता का चित्र भी मेरी श्राखो के सामने मूत हो उठता,—ठीक वसा ही जसा कि वह नानी को सपनो मे दिखाई देता था श्रखरोट की लकडी हाथ मे लिए, श्रौर एक चित्तीदार कुत्ता, जीभ बाहर निकाले, उसके कदमो के साथ लपकता झपकता हुश्रा

१३

देव प्रतिमाश्रो की वकशाप लकडी श्रौर ईंट की एक पक्की इमारत के दो कमरो मे थी। एक कमरे मे तीन खिडकिया सहन की तरफ खुलती थीं श्रौर दो बगीचे की तरफ, दूसरे कमरे मे एक खिडकी का रुख बगीचे

की ओर था और एक का सड़क की ओर। खिड़कियां छोटी और चौकोर थीं, और उनका कांच ज़माने के रंग देखते देखते खुद भी रंग गया था। जाड़ों की धुंधली और छितरी हुई रोशनी मुश्किल से उसे बेधकर भीतर पहुंच पाती थी।

दोनों कमरों में मेज़ें ही मेज़ें भरी थीं। हर मेज़ पर, कमर दोहरी किए, एक या दो कारीगर काम करते। पानी से भरी कांच की गेंदें छत से लटकतीं, ताकि लपों की रोशनी उनके स्पर्श से और भी अधिक उजली तथा शीतल होकर देव प्रतिमाओं के चौरस चौखटों को आलोकित करे।

वर्कशाप के गरम वातावरण में दम घुटता। चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध पालेख, खोलुई और म्स्तेरा गांवों के करीब बीस कारीगर—सब यहीं भरे रहते। खुले गले की छींट की कमीजें और मोटे कपड़े के पायजामे वे पहनते, और जूतों के नाम पर बदनुमा लीतरे होते या एकदम नंगे पांव ही रहते। माखोरका तम्बाकू का कड़वा धुआं उनके सिरों के चारों ओर मंडराता और वार्निश, लाख तथा सड़े अंडों की गंध से हवा भारी हो जाती। व्लादीमिर जन गीत के स्वर, गर्म तारकोल की तरह तरल और भारी तरते रहते

> पाप पंक में लथपथ दुनिया
> रही न लाज कुलाज
> लड़के लड़की सब बेकाबू
> नाचें नंगा नाच

वे अन्य गीत भी गाते, सब इसी ढंग के, जो भारी बनानेवाले। लेकिन यह उनका प्रिय गीत था। गीत के असल बोल, उनके विचारों या काम में कोई बाधा दिए बिना, गूंजते रहते। अरमाइन के महीन बालों वाले ब्रश, बिना किसी भूल-चूक के, सहज गति से चलते, प्रतिमा की रेखाओं को उभारते, सन्तों के चोगों की सलवटों में रंग भरते या उनके सूखे हुए चेहरों पर वेदना की सुरियां बनाते। खिड़कियों के पास से नवशिक्षु गोगोलेव की हथौड़ी की खटखट देती जो छेनी से छेदकर बेल-बूटे बनाता। पकौड़े नीली और नशे में वह धुत रहता था। हथौड़ी गीत । के साथ ताल देती और ऐसा मा कोई ो कुतर रहा हो।

देव प्रतिमाओ की साज सज्जा के इस काम मे किसी का मन न लगता। जाने किस शतान दिमाग़ ने इस काम को अग भग कर अलग अलग टुकडो मे बाट दिया था। नतीजा यह कि अब इस काम मे न कोई आकषण रहा था, न सौंदय–सभी कुछ खडित होकर बिखर गया था। उससे गहरा लगाव पदा करना या उसके प्रति हृदय मे कोई दिलचस्पी जगाना असम्भव था। ऐंचो-तानी आखो वाला, कमीना और द्वेप भरा बढई पनफील सरो और लिण्डन लकडी के रदे से साफ किये हुए, गोद से जुडे छोटे बडे तरह-तरह के आकार के तख़्ते लाता। इसके बाद तपेदिक का मरीज़ दावीदोव तख़्तो पर खास सफेद रग चढाकर उन्हें चित्रकारी के लिए तयार करता। उसका साथी सोरोकिन तख़्तो पर एक खास रग चढाता, मिल्याशिन पेंसिल से देव प्रतिमा की तसवीर बनाता जो किसी मूल चित्र की नकल होती, बूढा गोगोलेव प्रतिमाओ के चौखटो पर सुनहरा रग चढाता और फिर उनपर नक्काशी करता, छोटे कारीगर सीनरी बनाते और सन्तो के कपडो मे रग भरते। इसके बाद प्रतिमा को, बल्कि कहना चाहिए कि प्रतिमा के धड को क्योकि उसमे अभी न सिर लगा होता और न हाथ, दीवार के सहारे खडा कर दिया जाता। चेहरा बनाने का काम दूसरे कारीगर करते।

गिरजे की वेदी या दरवाजे की शोभा बढानेवाली इन बडी बडी प्रतिमाओ को इस तरह बिना चेहरे मोहरे, हाथ या पाव के–केवल चोगा, कवच या फरिश्तो की छोटी कमीजें पहने–दीवार के सहारे टिका देखकर बहुत ही अटपटा मालूम होता। उनके शोख और भडकीले रग मौत की भावना का सचार करते, वह चीज जो जीवन फूक्ती है, उनमे नहीं थी, या कहिए कि वह चीज उनमे कभी मौजूद थी, लेकिन रहस्यमय ढग से विदा हो गई और अब बोझिल लबादे के सिवा उनके पास और कुछ नहीं बचा है।

जब चेहरा-मोहरा बनानेवाले अपना काम खत्म कर लेते तो एक अन्य कारीगर नक्काशी पर मीनाकारी का काम करता। परिचय और स्तुति आदि लिखने का काम किसी दूसरे विशेषज्ञ के सुपुद था। इन सब के हाथो से गुजरने के बाद तयार प्रतिमा पर खुद इवान लारिओनिच, वक्शाप का शान्त स्वभाव मुखिया, लाख की वानिश चढ़ाता।

उसके धूसर चेहरे पर धूसर दाढ़ी थी—महीन और रेशम की तरह मुलायम। उसकी धूसर आंखों की अतल गहराई में उदासी छाई रहती। वह बहुत ही भले ढंग से मुसकराता, लेकिन जाने क्या उसकी मुसकराहट के जवाब में मुसकराना कुछ अटपटा और गलत सा मालूम होता। उसे देखकर लम्बेवाले सन्त सिमियोन की प्रतिमा की याद हो आती—उतना ही दुबला पतला और क्षीण, और उसी की तरह उसकी भावहीन आंखें अपने चारों ओर के वातावरण तथा आसपास के लोगों से बेखबर दूर कहीं देखती रहतीं।

वर्कशाप में काम शुरू किए अभी मुझे दो चार ही दिन हुए थे कि मूर्तियां बनानेवाला कारीगर नशे की हालत में काम पर चला आया। वह दोन प्रदेश का कज्जाक था। नाम कापेंदयूखिन, खूबसूरत और खूब हट्टा कट्टा। दांतों को भींचकर और बहकी बहकी लुगाइया आंखों को सिकोड़कर, बिना किसी से कुछ कहे या सुने, एक सिरे से वह सभी पर आहना घूसों की बौछार करने लगा। उसका चपल शरीर जो डील डौल में ज्यादा बड़ा नहीं था, वर्कशाप में सब पर उसी तरह झपट रहा था जैसे चूहों से आबाद तहखाने में बिलाव झपटता है। घबराकर सब अपने कोनों की ओर लपके, और वहीं दुबके हुए एक दूसरे से चिल्लाकर कहने लगे

"मार, साले को!"

आखिर देव प्रतिमा का चेहरा मोहरा बनानेवाले कारीगर येव्गेनी सितानोव ने बेकाबू हुए इस सांड को शान्त करने में सफलता प्राप्त की। स्टूल उठाकर उसने कज्जाक के सिर पर दे मारा, और वह वहीं फर्श पर ढह गया। देखते देखते सबने उसे पकड़ा और चित लिटाकर तौलियों से बांध दिया। लेकिन अपने दांतों से वह तौलियों को नोचता और शोर शोर करता रहा। यह देख येव्गेनी का गुस्सा सीमा पार कर गया। उछलकर वह मेज पर चढ़ गया और कज्जाक की छाती पर कूदने की धुन में दोनों कोहनियों को बाजुओं से सटाकर अपना वजन तौलने लगा। अपने भारी भरकम वजन के साथ अगर वह कापेंदयूखिन की छाती पर कूद पड़ता तो उसका कचूमर ही निकल जाता। लेकिन तभी गरम टोपी और कोट पहने लारिओनिच उसके बराबर में आकर खड़ा हो गया। सितानोव को उसने उंगली के इशारे से बस में किया, और शान्त तथा दो टूक स्वर में अन्य सब से बोला

"इसे डयोढी मे ले जाकर डाल दो। नशा उतरने पर ठीक हो जाएगा "

कारीगर करजाक को खींचकर वकशाप से बाहर ले गए, फिर मेज कुर्सियो को ठीक ठिकाने से लगाया और अपने काम मे जुट गए। साथ ही वे टीका टिप्पणी भी करते जाते—कापेदयूखिन की ताक्त के बारे मे। उन्होंने भविष्यवाणी की कि एक न एक दिन वह किसी से लडता हुआ मारा जाएगा।

"उसे मारना हसी खेल नहीं है," सितानोव ने बहुत ही शात स्वर मे गहरे जानकार की भाति अपनी राय जाहिर की।

मैंने लारिग्रोनिच की ओर देखा और अचरज से भरा यह पता लगाने की कोशिश करने लगा कि उसमे ऐसी क्या बात है जो सब लोग, अपने जगलीपन के बावजूद उसका इतना कहना मानते हैं।

वह हरेक को बिना किसी भेद भाव के काम करने के गुर सिखाता। पुराने से पुराने और दक्ष कारीगर भी उससे सलाह लेते। कापेदयूखिन को तयार करने पर वह अन्य सबसे ज्यादा समय और शब्द खच करता।

"चित्रकार—तुम चित्रकार हो कापेदयूखिन। और अच्छा चित्रकार वही है जिसके चित्रो मे जान हो, इटली के चित्रकारो की भाति। सुहावने रगो का सामजस्य तेल चित्रो की जान है, लेकिन देखो न, तुमने यहा निरा सफेदा पोतकर रख दिया है। यही वजह है जो माता मरियम की आखें इतनी बेजान और ठिठुरी सी मालूम होती हैं। इसके गाल गोल हैं, उनमे लाली भी खूब है, लेकिन आखो का उनसे कोई मेल नहीं है। फिर आखें यथास्थान भी नहीं हैं—एक नाक के इतनी नजदीक है और दूसरी कनपटी की ओर भागी जा रही है। नतीजा यह कि जिस चेहरे पर दवी आभा, निश्छलता और पवित्रता झलकनी चाहिए, उससे अब मक्कारी और दुनियादारी टपकती है। असल बात यह है कि तुम मन लगाकर काम नहीं करते, कापेदयूखिन।"

करजाक पहले तो मुह सिकोडे सुनता, स्त्रियो जसी अपनी सुदर आखो से बेशर्मी के साथ मुसकराता और फिर अपनी सुहावनी आवाज मे जो नशे के कारण कुछ भारी पड गई थी, कहता

"तुम भी क्या बात करते हो, इवान लारिग्रोनिच! भला यह भी

कोई काम है? भगवान ने मुझे संगीत के लिए पैदा किया था, लेकिन मुझे मठ मे फंसा दिया!"

"मेहनत और लगन से हर काम मे दक्ष बना जा सकता है।"

"नहीं, मैं हू किस खेत की मूली? होता मैं कोचवान और होती मेरे पास हवा से बातें करनेवाले घोड़े जुती ओइका आह "

और अपना टेंटुआ बाहर निकालकर हडकम्पी स्वर मे गाने लगता

ओइका मेरी रग बिरगी
सरपट दौड़ी जाये रे
सजनी मेरी सोलह बरस की
सौ-सौ बल खाये रे!

इवान लारिओनिच उसको ओर देखकर बेबस मुसकराता, अपनी धूसर नाक पर चश्मे को ठीक से बैठाता और चुपचाप वहा से खिसक जाता। फिर, एक साथ मिलकर, बीसो आवाजें गीत के बोल उठातीं और एक बलशाली धारा का रूप धारण कर समूची वर्कशाप को ऊपर हवा मे उठा लेती। गीत के स्वरो के साथ वर्कशाप भी हिंडोले की भाति झूलने लगती

ओइका मेरी रग बिरगी
जोबन की बहार रे

पाश्का ओदिन्तसोव, जो अभी काम सीख रहा था, अडा की जर्दी निकालना बद कर देता, और दोनो हाथो मे अडे के छिलके थामे, बढिया तेज आवाज मे कोरस की पक्तिया पकडता।

गीत की ध्वनि नशा बनकर सबपर छा जाती, अन्य किसी बात की उन्हे सुध न रहती। एकसाथ मिलकर सबके हृदय धडकते, एक ही रागिनी मे सब बहते और कनखियो से उस कज्जाक की ओर देखते जो गाते समय वर्कशाप का एकछत्र स्वामी होता। वह सभी को एक सिरे से, मत्र मुग्ध कर लेता और वे एकटक उसके जोर जोर से झूलते हाथ की हर हरकत का अनुसरण करते। उसकी बाहे इस तरह लहरातीं मानो वह अभी हवा मे उडने लगेगा। मुझे पूरा विश्वास था कि अगर वह एकाएक अपने गीत को रोककर बीच मे ही चिल्ला उठता, "आओ साथियो, वर्कशाप की धज्जियां उडा दें!" तो सब के सब, मय उन कारीगरो के जो अत्यन्त

नफासतपसन्द और भले थे, एकाध मिनट के भीतर समूची वर्कशाप को मलबे का एक ढेर बनाकर रख देते।

वह बिरले ही गाता, लेकिन उसके बनले गीतो मे सदा इतनी अदम्य शक्ति होती कि उनके सामने कोई टिक न पाता, सभी को वे अपने साथ बहा ले जाते। चाहे हृदय कितना ही बुझा हुआ क्यो न हो, उसके गीत की आवाज सुन सभी चेतन हो जाते, एक अजीब जोश और उछाह उनमे लहराने लगता, और उनकी बिखरी हुई ताकतें एक स्वर लय मे गुथकर किसी बलशाली साज का रूप धारण कर लेतीं।

गीतो को सुनकर मुझे गायक और लोगो को मन्त्र मुग्ध करने की उसकी अदभुत शक्ति से जोरदार ईर्ष्या होती। कम्पनशील आतक का मुझमे सचार होता, इस हद तक मैं उमडता घुमडता कि हृदय दुखने लगता, खूब खुलकर रोने और गाते हुए लोगो के सामने अपना हृदय चीरकर रख देने के लिए जी ललक उठता

"ओह, तुम सब मुझे कितने प्यारे लगते हो!"

तपेदिक का मरीज दावीदोव भी, जिसका रग पीला पड गया था और जिसके शरीर पर बाल ही बाल नजर आते थे अपना मुह खोलता और वह अजीब सा, अडा फोडकर अभी अभी बाहर निकले कौवे की तरह लगने लगता।

केवल कज़ाक ही अकेला ऐसा था जिसके गीत इतने आह्लादपूण, इतने तूफानी होते थे। अन्यथा कारीगर, आम तौर से, उदासी मे डूबे और बोझिल गीत गाते थे, जसे—"पाप पक मे लथपथ दुनिया", "आह, घेर लिया जगल ने, छोटे जगल ने", अथवा अलेक्सान्द्र प्रथम की मृत्यु का वणन करनेवाला गीत—"फिर आया वह, हमारा अलेक्सान्द्र, और डाली नजर उसने अपने वीर सनिको पर"।

कभी-कभी वकशाप के सब से अच्छे चेहरासाज जिखरेव के कहने से वे गिरजे के गीत भी गाते, लेकिन उन्हे गाने मे वे भूले भटके ही सफल हो पाते। जिखरेव हमेशा ऐसी धुनो और रागिनियो के पीछे सिर धुनता जिन्हे सिवा उसके और कोई न समझ पाता। सभी मे गाने मे वह आडे आता था।

वह एक दुबला-पतला आदमी था। आयु पतालीस के करीब, काले, घुघराले बालो के अद्धचन्द्र से घिरी चाद, भारी और काली भौंहें जो

मूछो की भाति मालूम होती थीं। ताम्बे से तपे और बढिया नाक-नक्श वाले उसके गर रूसी चेहरे पर घनी और नुकीली दाढी खूब फबती थी। लेकिन यह फबन उसकी दाढी मे ही थी, तोते जसी नाक के नीचे उग आई मूछो मे नहीं जा उसकी भौंहो के सामने बिल्कुल फालतू मालूम होती थीं। उसकी नीली आखें एक-दूसरे से भिन्न थीं—बाई आख दाहिना से बडी नजर आती थी।

"पाश्का!" मेरी ही तरह काम सीखनेवाले साथी से ऊचे स्वर मे वह कहता। "जरा शुरू तो करो 'हे दयामय दीनबधु!' देखो, सब चुप होकर सुनो!"

कमीज पर गमछे से हाथ पोछते हुए पाश्का शुरू करता

"हे दयामय "

"दी ई ई ई न ब अ अ-अ धु " अनेक आवाजें एक साथ मिलकर 'दीन बधु' को ऊपर उठातीं और विचलित जिख़रेव चिल्लाना शुरू करता

"सितानोव! अपनी आवाज नीची करो जिससे मालूम हो कि आत्मा की गहराई मे से वह निकल रही है "

सितानोव ऐसी आवाज मे 'हे दयामय' की खिचडी पका रहा था मानो बरल को उलटकर वह उसे ढपाढप बजा रहा हो

"हम हैं दास तिहारे "

"छि यह भी कोई ढग है! ऐसी आवाज निकलनी चाहिए कि धरती कापने लगे, दरवाजे और खिडकिया अपने आप खुल जायें!"

जिख़रेव का रोम रोम किसी रहस्यमय आवेश मे फडकने लगता, उसकी अजीब गरीब मूछनुमा भौंहे उठतीं और गिरतीं, उसकी आवाज लडखडाने लगती, और उसकी उगलिया किसी अदृश्य साज के तारो को झनझनाती मालूम होतीं।

"हम हैं दास तिहारे—समझे?" भेद भरे अदाज मे वह कहता। "यह आत्मा की आवाज होनी चाहिए, तन, मन को बींधकर निकलती हुई 'हम ह दास तिहारे!' भगवान तुम्हारा भला करे, क्या तुम इतना भी नहीं समझते?"

"यह हम से कभी नहीं बनता, आप को तो मालूम ही है।" सितानोव बडे अदब के साथ कहता।

"तो जाने दो।"

जिख़रेव खीजकर कहता और अपने काम मे जुट जाता। वह हम सबसे अच्छा कारीगर था। वह हर तर्ज के चेहरे बना सकता था—यूनानी, फ्रासीसी या इतालवी। देव प्रतिमा का आर्डर मंजूर करते समय लारिओनिच हमेशा उससे सलाह लेता। मूल देव प्रतिमाओ का वह बहुत बडा पारखी था। चमत्कार दिखानेवाली बहुमूल्य देव प्रतिमाओ—जैसे फेओदोरोव, स्मोलेस्क और कजान मरियमो की सभी कीमती नकले उसके हाथो से गुजरतीं। लेकिन, मूल प्रतिमाओ का ध्यान से अध्ययन करते हुए, वह जोरो से झुझला उठता

"मूल क्या हैं, मानो खूटे हैं जिनमे हम बधे है। देखो न, जरा भी इधर उधर नहीं हो सकते! "

वर्कशाप मे उसका दर्जा सबसे बडा था। फिर भी, अन्य सब की भाति, वह किसी पर रोब नहीं गाठता और काम सीखनेवाला के साथ—पावेल और मेरे साथ—बडी नरमी से पेश आता। ले-देकर वही एक ऐसा था जो हमे अपना हुनर सिखाने मे आनाकानी नहीं करता था।

वह एक अच्छी-खासी पहेली था। कुल मिलाकर वह कोई मौजी आदमी नहीं था। कभी-कभी पूरे सात दिन तक वह मुह न खोलता और गूगे-बहरे की भाति काम मे जुटा रहता। वह नजर उठाकर हमारी ओर देखता भी तो इस तरह मानो कहीं दूर से किसी अजीब और अनजानी चीज को पहली बार देख रहा हो। यो गाने का वह बहुत शौक़ीन था, लेकिन ऐसे दिनो मे न वह खुद गाता, न दूसरो के गाने की आवाज उसके कानो को छूती प्रतीत होती। एक एक कर सभी उसपर अपनी नजर डालते और कनखियो का आदान प्रदान करते। लेकिन वह था कि आडे रखे तख्ते पर झुका रहता, तख्ते का एक सिरा उसके घुटनो पर होता और बिचला हिस्सा मेज के किनारे से टिका होता। वह अपने काम मे डूबा रहता, एक क्षण के लिए भी वह अपना सिर न उठाता और जान खपाकर महीन ब्रुश से प्रतिमा का नाक-नक्शा उभारता। काम करते समय खुद उसका चेहरा भी उतना ही अजीब और अजनबी मालूम होता जितना कि प्रतिमा का।

सहसा, बहुत ही दो टूक और आहत से स्वर मे, वह बडबडा उठता

"'प्रेदतेचा'—क्या मतलब है इसका? प्राचीन स्लाव भाषा में 'तेच' का अर्थ है 'जाना' और 'प्रेद' का 'आगे', तो प्रेदतेचा का अर्थ हुआ यह जो आगे जाए,—अर्थात आगे जानेवाला, या पूर्वगामी, बस और कुछ नहीं।"

उसकी बडबडाहट सुन सब चुपचाप हसते, छिपी हुई नजरों से उसे अपनी हसी का निशाना बनाते और उसके मुह से निकले अजीब श... खामोशी मे गूजते रहते

"और उसे भेड की खाल के लबादे मे नहीं, बल्कि परो के साथ बनाना चाहिए"

तभी किसी कोने मे से आवाज आती

"क्या हवा से बातें कर रहे हो?"

लेकिन वह कुछ जवाब न देता, या तो वह सुनता नहीं या सुनकर भी अनसुना कर देता। उसके बाद प्रतीक्षा भरी निस्तब्धता मे उसके शब्द गूजने लगते

"उनकी जीवनिया जाननी चाहिए, लेकिन उन पवित्र पुस्तकों को क्या कोई समझता है? हम क्या जानते हैं? पर कटे पक्षी की भाति हमारा जीवन बीतता है चेतनाविहीन, आत्माविहीन मूल कृतियों के नमूने ही हमारे पास हैं, लेकिन हृदय नहीं"

इस तरह बडबडाकर जब वह अपने विचार प्रकट करता तो सितानोव को छोड अन्य सब के होठो पर मुसकराहट दौड जाती और उनमे से कोई एक, अदबदाकर फुसफुसाता

"देख लेना, शनिवार के दिन यह शराब के प्याले मे गडगच्च नजर आएगा"

लम्बा और चडियल सितानोव जो बाईस साल का बछेरा था, अपना गोल-मटोल और अभी तक दाढ़ी-मूछ, बल्कि भौंहो तक से अछूता चेहरा उठाकर उदास और सोच मे डूबी नजर से कोने की ओर देखता।

मुझे याद है कि एक बार, फेओदोरोव मरियम की प्रतिलिपि तयार करने के बाद उसे मेज पर रखते समय, जिखरेव बुरी तरह विचलित हो उठा था और जोरो से उसने कहा था

"काम सम्पन्न हुआ, जगत जननी! मा, तू अतल कटोरे समान है, नदी-जगत के आसू अब इसमे बहेंगे"

फिर, जो कोट हाथ लगा उसी को अपने कधे पर डाल वह बाहर निकल गया—शराबखाने की ओर। नौजवान कारीगर हसते हुए सीटिया बजाने लगे, बूढो ने ईर्ष्या से लम्बी सासे भरीं लेकिन सितानोव चुपचाप उठकर देव प्रतिमा के पास पहुचा, ध्यान से उसे देखा, फिर बोला

"जरूर नशे मे गडगच्च होगा, अपने काम से बिछुडने पर दिल जो दुखता है। हर कोई नहीं समझ सकता इस दद को "

जिखरेव हमेशा शनिवार के दिन अपना रगपानी शुरू करता। और उसका यह रगपानी, नशे के आदी अन्य कारीगरो के खुल खेलने जसा नहीं, बल्कि असाधारण होता। उसके रगपानी की शुरुआत इस तरह होती सुबह वह एक पुर्जा लिखता और उसे पावेल के हाथ कहीं रवाना कर देता, उसके बाद ठीक भोजन के समय से कुछ पहले लारिओनिच से कहता

"आज मुझे हम्माम जाना है।"

"कब तक लौटोगे?"

"सो तो "

"अच्छी बात है। लेकिन मगल तक जरूर आ जाना!"

जिखरेव अपनी गजी खोपडी हिलाकर हामी भरता और उसकी भौंहे थिरकने लगतीं।

हमाम से लौटने के बाद सज सजाकर वह पूरा बाका बन जाता—कलफचढ़ी बढ़िया कमीज, गले मे रूमाल और रेशमी जाकेट की जेब से चादी की लम्बी चेन लटकती हुई। फिर, चलते समय, पावेल और मुझे डाट पिलाता

"देखो, आज रात वकशाप को खूब मेहनत से सफाई करना। लम्बी मेज को रगड रगडकर धोना!"

देखते न देखते वकशाप मे छुट्टी का समा छा जाता। कारीगर अपनी मेजो को झाड-पोछकर कायदे से लगाते फिर हम्माम जाकर गुसल करते और जल्दी से साझ का भोजन पेट मे डालते। भोजन के बाद बीयर, मदिरा और खाना लेकर जिखरेव प्रकट होता। उसके पीछे-पीछे एक स्त्री आती, आकार प्रकार और डील डौल मे पूरी बावनगजी, साढ़े छ फुट ऊची। जब वह आती तो उसके अनुपात मे हमारी सारी कुसिया और स्टूल खिलौनो की भाति मालूम होते, यहा तक कि लम्बा सितानोव भी

उसके सामने निरा बच्चा सा दिखाई देता। उसकी काठी मजबूत और सुघड़ थी, छातियों को ढककर जिनका अंकुरा उभार उसकी ठोड़ी को छूता था। उसकी चाल-ढाल भारी और ढीली-ढाली थी। आयु हालांकि चालीस की सीमा लांघ चुकी थी, फिर भी घोड़े जैसी बड़ी-बड़ी आंखों वाले उसके भावशून्य चेहरे पर अभी तक चिकनाई और ताजगी मौजूद थी, और उसका छोटा सा मुंह सस्ती सी गुड़िया की भांति रंगा चुना था। होंठों पर मुसकराहट लाकर वह सब से अपना चौड़ा और गर्म हाथ मिलाती, और बेमतलब की बातें मुंह से निकालती।

"मजे में तो हो न? आज बहुत ठंड है। ओह, तुम्हारा कमरा कितना गर्माता है! रंग रोगन की गंध मालूम होती है। और सब तो ठीक-ठाक हैं न?"

यों देखने में वह अच्छी लगती—चौड़े पाट में बहनेवाली नदी की भांति सबल और शान्त, लेकिन जब वह बोलती तो उबकाई आने लगती। हमेशा बेरस और बेकार की बातें उसके मुंह से निकलतीं। कुछ कहने से पहले वह अपने गुलाबी गालों को फुलाती जिससे उसका लाल चेहरा और भी गोल-मटोल हो जाता।

नौजवान खिलखिलाते और एक-दूसरे से कानाफूसी करते

"औरत हो तो ऐसी,—जाने किस सांचे में ढालकर खुदा ने इसे तैयार किया है!"

"किसी गिरजे की अच्छी-खासी मीनार मालूम होती है!"

होंठों को भींचकर और हाथों को छातियों के नीचे जोड़कर वह समोवार के नजदीक मेज के पास बैठ जाती, और अपनी घोड़े जैसी भली आंखों से एक एक करके सबपर नजर डालती।

सभी उसका मान करते, और नौजवानों के हृदय उसे देखकर सहमे सहमे से हो जाते। ललचाई नजरों से वे उसके भीमाकार शरीर को टोह लेते, लेकिन उसकी सर्वव्यापी नजर की लपेट में आते ही उनके गाल लाल हो उठते और वे अपनी गरदन झुका लेते। जिख़रेव भी उसके साथ अदब से पेश आता, आप कहकर कायदे से उसे सम्बोधित करता और मेज से उठकर जब कोई चीज उसे देता तो झुककर दोहरा हो जाता।

"ओह, इतनी तक़लीफ क्यों करते हैं?" वह अलस भाव से मीठे अंदाज में कहती। "सच, आप मेरे लिए बहुत परेशान होते हैं!"

उसके हर अन्दाज से फुरसत का भाव टपकता। उसके हाथ केवल कोहनियो तक हरकत करते। कोहनियो से ऊपर का हिस्सा वह दोनो बाजू कसकर सटाए रहती। उसके बदन से अलावघर से अभी अभी निकली ताजी पाव रोटी की तेज गध आती।

बूढा गोगोलेव उसे देखकर उलटा हो जाता और उसकी सुदरता की तारीफ करता कभी न अघाता मानो किसी पादरी के मुह से धम-पाठ हो रहा हो जिसे वह, गरदन को श्रद्धाभाव से झुकाए सुनती रहती। जब कभी वह शब्दो मे उलझ जाता तो उसकी इस कमी को वह खुद पूरा कर देती

"अरे नहीं, क्वारेपन मे तो हम इतनी सुदर नहीं थीं, यह तो हम बाद मे फले फूले। तीस बरस की होते न होते तो हम इतनी प्यारी हो गयीं कि बडे-बडे घरो वाले भी हमारी खोज खबर लेते थे। और एक नवाब साहब ने तो हमको दो घोडो वाली गाडी देने का वायदा किया था "

कापेदयूखिन जो अब तक नशे मे धुत्त और हाल बेहाल हो चुका होता था, तीखी नजर से उसे देखते हुए पूछता

"किस लिए?"

"यह भी कोई बताने की बात है?" वह कहती। "निश्चय ही हमारे प्रेम के लिए!"

कापेदयूखिन कुछ सकपका जाता। भुनभुनाते हुए कहता

"प्रेम प्रेम कसा प्रेम भला?"

"बहुत बनो नहीं," सहज भाव से वह जवाब देती, "भला यह कसे हो सकता हे कि तुम्हारे जसे खूबसूरत आदमी से प्रेम की बारहखडी छिपी रहे?"

वकशाप कहकहो की आवाज मे डोलने लगती और सितानोव कापेदयूखिन के कान मे बुदबुदाता

"निरी मूख है या उससे भी बदतर। ऐसी औरत से प्रेम तो वही करेगा, जो ऊब से मरा जा रहा हो, सभी यह जानते हैं "

नशे से उसका चेहरा फक पड गया था, कनपटी पर पसीने की बूदें उभर आई थीं और उसकी चतुर चपल आखो मे आग की लपटें मानो

खतरे का सिगनल दे रही थीं। अपनी भोंडी नाक को घुमाते और पनीली आखो को उगलियो से पोछते हुए वृद्ध गोगोलेव ने पूछा

"कितने बच्चे हुए हैं तेरे?"

"बच्चा हमारे एक हुआ था"

एक लम्प मेज के ऊपर लटका था और दूसरा अलावघर के उधर कोने में। उनकी धीमी रोशनी उन्हीं तक सीमित रहती और वर्कशाप के कोनों मे गहरा अधेरा छाया रहता जिनमे चेहरे-मोहरे विहीन आकृतिया नजर आतीं। हाथो और चेहरो की जगह अधकार के सूने धब्बों को देखकर भूत प्रेतो की दुनिया का गुमान होता और यह भावना और भी जोरों से सिर उभारती कि सन्तों के शरीर, इस तहखाने में अपने रगीन कपड़ों को छोडकर, किसी रहस्यमय ढग से निकल भागे हैं। काच की गेंदें ऊपर खींचकर छत मे लगे हुको से अटका दी गयी थीं और वे, धुए के बादलों के बीच, नीली-नीली सी चमक रही थीं।

जिखरेव को जसे चन नहीं था। सबकी खातिर-तवाजा करता वह मेज के चारो ओर मडरा रहा था। उसकी गजी खोपडी कभी एक की ओर झुकती तो कभी दूसरे की ओर। उसकी पतली उगलिया बराबर हरकत कर रही थीं। वह अब और भी दुबला हो गया था और उसकी तोते सी नाक और भी नुकीली हो गई थी। प्रकाश के सामने से आडा होकर जब वह गुजरता तो उसके गाल पर नाक की काली लम्बी छाया फल जाती।

गूजती हुई आवाज मे वह कहता

"साथियो, खूब छककर खाओ और पियो!"

और स्त्री मालकिन की भाति गुनगुनाती

"आपने भी हद कर दी, पडोसी! इतना तकल्लुफ भी किस काम का? हरेक के पास उसके अपने हाथ और उसका अपना पेट मौजूद है। जिसमे जितनी समात है, उतना ही तो वह खाएगा!"

"परवाह न करो, साथियो! खूब जी भरकर खाओ!" जिखरेव विचलित स्वर मे चिल्लाता। "हम सब उसी एक खुदा के बन्दे हैं। आओ, मिलकर उसका गुण-गान करें 'हे दयामय'"

लेकिन "हे दयामय" का स्वर आगे न बढ़ पाता। सब खाने और वोद्का के नशे में ढीले पड गये थे। कापेन्दूखिन ने अपना एकार्डियन सभाला और नौजवान वीक्तर सलाऊतीन, जो कौवे की भाति काला

श्रौर गम्भीर था, तम्बूरिन से गहरी घन्नाटेदार आवाज निकालने लगा। जो कसर रह गयी उसे तम्बूरिन के इद गिद पडे मजीरो की आह्लादपूण ध्वनि ने पूरा कर दिया।

"रूसी नाच हो जाय!" जिखरेव ने आदेश दिया। फिर बोला, "पडोसिन! अब आप भी उठने की कृपा कीजिए!"

"ओह!" स्त्री ने एक लम्बी सी सास ली और अलस भाव से उठते हुए कहा, "आप भी कितना तकल्लुफ करते हैं!"

उठकर वह कमरे के बीचोबीच जाकर ठोस घटघर की भाति वहा खडी हो गयी। किशमिशी रग का चौडा घाघरा, पीले रग की महीन चोली वह पहने थी और सिर पर लाल रग का रुमाल बाधे थी।

एकार्डियन की सुरीली आवाज आती—छोटी-छोटी घटियो की टुनटुन और घुघरुओ की झुनझुन, तम्बूरिन भारी तथा बेरस उसासे छोडती जो सुनने मे बडी बुरी मालूम होतीं मानो कोई पागल आदमी सुबकिया और आहें भरता हुआ दीवार से सिर टकरा रहा हो।

जिखरेव नाचना नहीं जानता था। न उसे ताल का कुछ ज्ञान था, न सुर का। बस योही अपने पाव उठाता, चमचमाते जूतो की एडियो को फश पर ठकठकाता, छोटे डग भरकर बकरी की भाति इधर से उधर कूदता। ऐसा मालूम होता मानो उसने किसी दूसरे के पाव लगा लिए हों या उसके पावो ने शरीर का साथ न देने का इरादा कर लिया हो। मकडी के जाले मे फसी मक्खी या मछियारे के जाल मे फसी मछली की भाति बहुत ही भद्दे ढग से उसका बदन बल खाता, तुडता और मुडता। लेकिन सभी, वे लोग भी जो नशे मे धुत्त थे, बडे ध्यान से उसकी इस उछल-कूद का अनुसरण करते। उनकी आखें एकटक उसके चेहरे और हाथो पर जमी रहतीं। जिखरेव के चेहरे का भाव इतनी तेजी से बदलता कि देखकर अचरज होता कभी कोमल और लजीला, कभी गव से भरा, कभी तेज और तीखा, कभी चिगारिया सी छोडता। सहसा ऐसा मालूम होता जसे किसी चीज ने उसे आहत कर दिया हो—दद से वह चीख उठता और अपनी आखें बद कर लेता। जब वह आखें खोलता तो गहरी उदासी मे डूबा दिखाई देता। वह अपनी मुट्ठिया भींच लेता और चुपके-चुपके स्त्री के पास पहुचता। फिर, फश पर पाव पटककर घुटनों के बल बठते हुए वह बाहें फलाता और भोहे उठाकर प्रेम मे पगी मुसकराहट का

उसे अर्घ्य चढाता। गरदन झुकाकर वह उसकी ओर देखती, मुसकराकर उसे कृतार्थ करती, और अपने शान्त अन्दाज मे उसे चेताती

"नहीं, आप थक जाएगे!"

वह मीठी मुस्कान के साथ अपनी आखें बन्द करने का प्रयत्न करती, लेकिन उसकी सिक्काशाही आखें इतनी बडी थीं कि बद होने से इनकार कर देतीं, और इसके फलस्वरूप पडी झुरिया उसके चेहरे को केवल बन्द मा बनातीं।

नाचने के मामले मे वह भी काफी कच्ची थी। उसका भारी-भरकम शरीर केवल धीरे धीरे झूमता और बिना आवाज किए इधर से उधर थिरकना जानता था। उसके बाए हाथ मे एक रूमाल था जिसे वह अनमने भाव से हिलाती। उसका दाहिना हाथ कूल्हे से चिपका रहता और ऐसा मालूम होता मानो वह कोई भीमाकार जग हो।

और जिखरेव इस बुत-बरोला स्त्री के चारो ओर मडराता रहता। उसके चेहरे पर विरोधी भाव आते और एक दूसरे को काटते हुए विलीन हो जाते। ऐसा मालूम होता मानो वह अपने भीतर एक साथ दस आदमी छिपाए हो और उनमे से प्रत्येक अपना एक अलग स्वभाव रखता हो एक सकोची और छुईमुई की भाति लजीला, दूसरा एकदम जगली और डरावना, तीसरा खुद डरा और सहमा हुआ, ऐसा मालूम होता मानो इस घिनौनी हिडिम्बा के चगुल से निकल भागने के लिए हाथ-पाव पटकर हुए चिचिया रहा हो। सहसा एक दूसरा ही चेहरा नजर आता—घायल कुत्ते का चेहरा जिसके दात निकले थे और जिसका बदन रह रहकर बल खा रहा था। यह बदरग और भद्दा नाच देखकर मेरा हृदय भारी हो गया और सनिको, बावर्चिना, धोबिनो तथा कुत्ते कुत्तियो के निहग घिनौनेपन की मुझे याद आयी।

सीदोरोव के धीमे से शब्द मेरे दिमाग मे घूमते

"इस मामले मे सभी झूठ बोलते है। ऐसा है यह मामला, सभी को शर्म मालूम होती है न? असलियत यह है कि कोई किसी से प्रेम नहीं करता, केवल मजे के लिए यह सब करते हैं!"

मेरे मन मे यह बात नहीं जमती कि 'ऐसी चीजो के बारे में सभी झूठा ढोग रचते हैं'। क्या रानी मार्गो भी झूठा ढोग रचती थी? और जिखरेव? निश्चय ही उसे ढोगियो की पात मे नहीं रखा जा सकता। और

मुझे यह भी मालूम था कि सितानोव राह चलती किसी हरजाई से प्रेम करता था और इस प्रेम के बदले मे वह एक शमनाक बीमारी का शिकार भी हो गया था। उसके साथिया ने सलाह दी कि वह उस हरजाई को मार-पीटकर ठिकाने लगा दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, उलटे एक कमरा किराये पर लेकर उसे दे दिया, डाक्टर से उसका इलाज कराया, और उसके बारे मे बाते करते समय वह हमेशा भारी लगाव और कोमलता का परिचय देता था।

लम्बे चौडे डील डौल वाली स्त्री अभी भी मटक रही थी, और अपने हाथ मे लिए रुमाल को हिला रही थी। उसके चेहरे पर वही एक मरियल मुस्कान जडी थी। जिखरेव भी उसके इद गिद उछल रहा था मानो उसका शरीर मरोड खा रहा हो। उन्हे देखकर मुझे खयाल आया क्या वह हौवा भी, जिसने खुद खुदा तक को चकमा दिया था इस घोडी से मिलती-जुलती थी? मेरा हृदय घृणा से भर गया।

मुखविहीन देव प्रतिमाए काली दीवारो पर से ताकती रही थीं, खिडकियो से बाहर अधेरी रात घिरती आ रही थी और वकशाप के ऊमस भरे कमरो के लम्प अधेरे को दूर करने के बजाय उसे और भी घना बना रहे थे। पावो की थपथपाहट और आवाजो की भुनभुनाहट के बीच हाथ-मुह धोने के ताम्बे के बरतन के नीचे रखी बाल्टी मे पानी के गिरने की टपाटप आवाज भी सुनाई दे रही थी।

पुस्तका मे चित्रित जीवन से यह सब कितना भिन्न था—भयानक रूप से भिन्न! शीघ्र ही सब ऊबने लगे। तभी कापेन्दयूखिन ने एकाडियन को सलाऊतीन के हाथो मे पटका और चिल्लाकर बोला

"हो जाओ तयार साथियो, अब अगिया बताली नाच होगा!"

वह वान्का त्सिगानोक की तरह नाचता था, ऐसा मालूम होता मानो हवा मे उड रहा हो। पावेल ओदिन्त्सोव और सोरोकिन के पाव की थापो ने भी तेजी पकडी। यहा तक कि तपेदिक का मारा दावीदोव भी बीच मे आ कूदा। धूल और धुए, वोदका और धुए मे पके सोसेजो की कमाये हुए चमडे जसी तीखी गध के मारे खासते और खखारते हुए, वह नाच रहा था।

नाचने, गाने और हा हा, ही ही का यह सिलसिला चलता रहा। ऐसा मालूम होता मानो वे जीवन की इस घडी को आह्लादपूण बनाने पर

तुले हों और एक-दूसरे को उकसाते हुए ज़िन्दादिली, चपलता और सहनशक्ति की कसौटी पर कस रहे हों।

सितानोव, नशे मे धुत्त, एक एक के पास जाकर पूछता

"ज़रा बताओ तो सही, इस घोडी के प्रेम मे वह कैसे फस गया?"

लगता कि वह अभी रो पडेगा।

लारिओनिच अपने कडियल कधो को बिचकाता। जवाब मे कहता

"क्यो, औरता सी औरत है, तुझे भला क्या चाहिये?"

और जिनके बारे मे वे बाते कर रहे थे, इस बीच न जाने कब वे दोनो गायब हो गए। और मै जानता था कि जिखरेव दो-तीन दिन से पहले नहीं लौटेगा। लौटने पर हम्माम मे जाकर पहले वह गुसल करेगा और फिर करीब दो सप्ताह तक अपने कोने मे जमकर बठ जाएगा। न किसी से बोलेगा, न चलेगा, बस चुपचाप और अकेला रोब के साथ अपने काम मे जुटा रहेगा।

"वे चले गये?" उदासी मे डूबी अपनी भूरी नीली आखो से समूचे कमरे को छानते हुए सितानोव ने पूछा। उसका चेहरा अभी से बूढ़ा हो गया था, और वह ज़रा भी खूबसूरत नहीं मालूम होता था, लेकिन उसकी आखें बहुत ही स्वच्छ और भली थीं।

वह मेरे साथ मित्रता से पेश आता। इसका कारण कविताओं से भरी मेरी कापी थी। वह भगवान मे विश्वास नहीं करता था, और सच तो यह है कि एक लारिओनिच को छोड यहा ऐसा और कोई नहीं था जिसके बारे मे यह कहा जा सके कि वह भगवान मे विश्वास करता है, भगवान के साथ उसकी लौ लगी है। भगवान के बारे मे भी वे सब उसी तरह ताने तिरनों के लहजे मे बातें करते जसे कि नौकर अपने मालिकों के बारे मे बातें करते हैं। लेकिन जब वे दोपहर या साझ का भोजन करने बठते तो सलीब का चिह्न बनाना न भूलते, और रात को सोने से पहले बिला नागा भगवान का नाम लेते। रविवार के दिन, सब के सब, गिरजे जाते।

सितानोव इनमे से एक भी बात नहीं करता था और इसी लिए सब उसे नास्तिक कहते थे।

"भगवान जसी कोई चीज़ नहीं है," वह अपनी बात पर बल देते हुए कहता।

"भगवान नहीं है तो यह सारी दुनिया पदा कसे हुई?"

"मुझे नहीं मालूम "

एक दिन मैंने उससे पूछा

"यह तुम कसे कहते हो कि भगवान नहीं है?"

"देख न, भगवान का मतलब है ऊचाई," अपनी लम्बी बाह को सिर से ऊचा उठाते हुए उसने कहा और फिर फश की ओर इशारा करते हुए बोला

"और इसान का मतलब है निचाई। क्यो, ठीक है न? लेकिन बाइबल मे लिखा है कि भगवान ने इसान को अपनी छवि के अनुरूप बनाया है अब तू ही बता, गोगोलेव मे किसकी छवि दिखाई देती है?"

मुझसे कोई जवाब देत न बना। गदा और पियक्कड गोगोलेव, इतना बूढा हो जाने के बाद भी, हस्तलाघव की आदत नहीं छोडता था। नानी की बहन, ग्रेरमोखिन और व्याल्का निवासी वह सनिक—एक एक कर सभी मेरी आखो के सामने घूम गए। इन लोगो मे भगवान की छवि का भला कौन सा अश देखा जा सकता था?

"सभी इसान सूअर हैं!" सितानोव कहता और फिर तुरत ही मुझे सभालता

"लेकिन चिन्ता मत कर, मक्सीमिच, अच्छे लोग हैं, जरूर हैं!"

सितानोव के साथ मुझे जरा भी परेशानी न मालूम होती। जब कोई ऐसी बात आती जिसके बारे मे वह कुछ नहीं जानता तो खुले हृदय से उसे स्वीकार करता।

"मैं नहीं जानता," वह कहता, "मैने कभी इस बारे मे नहीं सोचा।"

यह भी उसकी एक असाधारण विशेषता थी। जिन लोगो से मैं अब तक मिल चुका था, वे सब हर चीज की जानकारी रखते थे, हर चीज के बारे मे वे राय देते थे।

उसके पास भी एक कापी थी जिसमे हृदय को मथनेवाली अत्यन्त प्रभावशील कविताओ के साथ-साथ ऐसी तुकबदिया भी दज थीं जिन्हें पढकर गाल जलने लगते और आखें शम से नीची हो जातीं। यह देखकर मुझे बडा अजीब मालूम होता। जब मैं उससे पुश्किन के बारे मे बातें करता तो वह "गाब्रीलियादा" की ओर इशारा करता जिसे उसने अपनी कापी मे उतार रखा था

"पुश्किन? हल्का-फुल्का कवि है। लेकिन बेनेदीक्तोव,—श्रोह, मक्सीमिच, उसे श्राखो की श्रोट नहीं किया जा सकता,—वह बरबस ध्यान खींचता है! देख "

वह श्रपनी श्राखें बद कर लेता श्रौर धीमे स्वर मे गुनगुनाता

देखो तो तुम, यह रमणी कसी सुदर
क्या उरोज हैं, उठे हुए ऊपर तनकर

न जाने क्यो निम्न पक्तियो को वह बडे ही प्रेम श्रौर गवपूर्ण श्राह्लाद से जोर देते हुए बार-बार दोहराता

पर उकाब की नजरें भी तो
इन तालो के पार न जायें।
फलक न दिल की वे तो पायें

"क्यो कुछ समझ मे श्राया?"

मुझे यह स्वीकार करते बडा सकोच मालूम होता कि मै नहीं समझता वह क्यो इतना खुश हो रहा है।

१४

वर्कशाप मे मेरे जिम्मे कोई बहुत उलझन पदा करनेवाला काम नहीं था। तडके ही, उस समय जब कि सब सोते होते, कारीगरो की चाय के लिए मैं समोवार गम करता। जागने पर रसोई मे जाकर सब चाय पीते श्रौर मैं तथा पावेल वर्कशाप को झाडते-बुहारते, श्रडो की सफेदी से जर्दी श्रलग करते जो रग मे मिलाने के काम श्राती, श्रौर इसक बाद मैं दुकान के लिए रवाना हो जाता। साझ को मैं रग घोलकर रोगन तयार करता श्रौर उस्तादो के पास बठ काम करने के ढग का श्रध्ययन करता। शुरू-शुरू मे तो इस श्रध्ययन मे मेरा बडा जी लगता, लेकिन शीघ्र ही मैंने श्रनुभव किया कि करीब-करीब सभी कारीगर टुकडो मे काम करना पसद नहीं करते, श्रौर यह कि एक श्रसह्य ऊब उन्हे भीतर ही भीतर खाए जा रही है।

मेरा काम जल्दी ही निबट जाता श्रौर साझ के खाली समय मे मैं कारीगरो को श्रपने जहाजी जीवन के किस्से या पुस्तकों मे पढ़ी कहानियाँ

सुनाता। इस प्रकार, एकदम अनजाने मे ही मैंने एक विशेष स्थान ग्रहण कर लिया,—एक तरह से मै वर्कशाप का किस्सागो और पुस्तके पढकर सुनानेवाला बन गया।

मुझे यह मालूम करने मे देर न लगी कि मैंने जितना कुछ देखा और जाना है, उतना इन लोगो ने नहीं। इनमे से अधिकाश एकदम कच्ची उम्र मे ही अपने धधो के तग पिजरो मे बद हो गए थे और तब से उसी मे बद चले आ रहे थे। वर्कशाप मे जितने भी लोग थे, उनमे केवल जिखरेव ही एक अकेला ऐसा था जो मास्को हो आया था और बडे रोब के साथ, भौंहो मे बल देकर, वह इसका जिक्र करता था

"मास्को पर आसुओ का कोई असर नहीं होता। वहा एकदम चौकस रहना पडता है!"

अन्य किसी को शूया या ब्लादीमिर से आगे पाव रखने का कभी मौका नहीं मिला था। मैं जब कज़ान का जिक्र करता तो वे पूछते

"वहा काफी रूसी आबाद है? और गिरजे भी है या नहीं?"

वे पेम को साइबेरिया समझते और उनके लिए यह विश्वास करना कठिन हो जाता कि साइबेरिया उराल के उस पार है।

"उराल की पच और स्टजन मछलिया वहा से—कास्पियन सागर से—ही तो आती हैं? इसका मतलब यह कि उराल कास्पियन सागर पर ही कहीं होगा!"

कभी-कभी ऐसा मालूम होता कि वे मुझे जान-बूझकर चिढा रहे हैं। मिसाल के लिए ऐसे मौको पर जब वे कहते कि इगलड समुद्र के उस पार है, और यह कि नेपोलियन का जन्म कलूगा के किसी कुलीन घराने मे हुआ था। जब मैं उन्हे खुद अपनी आखो देखी सच्ची चीजो के बारे मे बताता तो वे बिरले ही यकीन करते, लेकिन रोगटे खडे कर देनेवाले किस्से और पेचीदा कहानिया वे बडे चाव से सुनते। यहा तक कि बडे बडे लोग भी सत्य के बजाय काल्पनिक कहानिया ज्यादा पसद करते। मैं साफ देखता कि कहानी जितनी ही अधिक अनहोनी तथा अघट घटनाओ से भरी होती, उतना ही अधिक ध्यान से वे उसे सुनते। मोटे तौर से यह कि वास्तविकता मे उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। सब भविष्य के रगीन सपने देखना और वतमान के भोडेपन तथा गरीबी पर भविष्य की सुनहरी चादर डालकर उसे आखो की ओट करना चाहते।

उनका यह रवया मुझे बड़ा अजीब मालूम होता। इसलिए और भी अधिक कि सत्य और कल्पना को एक-दूसरे से अलग करके देखने की भावना मुझमे तेजी से घर करती जा रही थी। मैं उस भेद को अब तेजी से पकड़ने लगा था जो मुझे आए दिन के जीवन और किताबी जीवन के बीच दिखाई देता था। मेरी आंखों के सामने असली, जीते-जागते आदमी मौजूद थे, लेकिन किताबो के पन्नों मे वे कहीं नहीं दिखाई देते थे,- किताबो मे न कहीं स्मूरी नजर आता था, न जहाजी याकोव, न अलेक्साद्र, न जिखरेव, न नतात्या जसी धोबिनें

दावीदोव के ट्रक मे गोलीत्सिन्स्की की कहानियों का एक फटा हुआ सा सग्रह, बुल्गारिन कृत "इवान विजीगिन" और बरन ब्राम्बियस की रचनाओ का एक सग्रह पडा था। ये सब पुस्तके मैंने कारीगरों को पढ़कर सुनाई और वे सुनकर बहुत खुश हुए। लारिओनिच ने कहा

"किताबें पढ़ने से तू-तू मैं मैं का शोर और आपस मे लडना झगड़ना सब साफ हो जाता है, और यह एक अच्छी बात है।"

मैं अब किताबो की टोह मे घूमता, और जो भी पुस्तकें मेरे हाथ लगतीं उन्हे पढ़कर सुनाता। साझ की वे बठकें कभी नहीं भूलतीं। वर्कशाप मे आधी रात का सन्नाटा छाया रहता, छत से लटकी काच की गेंदें सफेद शीतल सितारो की तरह चमकतीं और उनकी किरणें मेज पर झुके हुए गजे या बिखरे हुए बालो वाले सिरो पर पडती रहतीं। शात और गम्भीर भाव से वे पुस्तक सुनते, बीच-बीच मे लेखक या पुस्तक के नायक की तारीफ मे एकाध शब्द कहते जाते। पुस्तक सुनते समय वे एकदम बदल जाते, उनके ध्यान-मग्न चेहरे बहुत ही भोले और भले मालूम होते। मैं उनसे और वे मुझसे पूर्ण अपनत्व का अनुभव करते। मुझे ऐसा मालूम होता जसे मैंने अपनी जगह पा ली हो।

एक दिन सितानोव बोला

"पुस्तकें बसती हवा के उस पहले झोके के समान हैं जो बद कमरे की खिड़की खोलने पर शरीर के रोम रोम मे समा जाता है।"

पुस्तकें पाना कठिन काम था। पुस्तकालय से पुस्तकें मिल सकती थीं, लेकिन यह चीज हमारी कल्पना से बाहर थी। ऐसी हालत मे एक ही रास्ता था। वह यह कि जो भी [illegible] से भिखारी की भाति पुस्तकें मागकर मैं [illegible] के मुखिया ने मुझे

लेर्मान्तोव की कविताओं की एक पुस्तक दी। कविता भी कितनी शक्तिशाली चीज होती है और किस हद तक वह लोगों को प्रभावित कर सकती है यह मैंने इस पुस्तक को पढने के बाद बहुत ही सजीव रूप मे जाना।

मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय जब मैंने लेर्मान्तोव की "दानव" शीर्षक वाली लम्बी कविता पढनी शुरू की तो सितानोव ने उचककर पहले किताब पर नजर डाली फिर मेरे चेहरे की ओर देखा। इसके बाद उसने अपना ब्रुश उठाकर नीचे रख दिया और अपनी लम्बी बाहों को घुटनों के बीच खोसकर चेहरे पर मुसकराहट लिए हिंडोले की भांति आगे पीछे झूलने लगा। झकोलो के साथ-साथ उसकी कुर्सी भी चरचराती जाती।

"सुनो भाइयो, चुप होकर सुनो!" लारिओनिच ने कहा और अपने हाथ का काम अलग रखकर वह भी सितानोव की मेज के पास आ गया जहा मैं पुस्तक पढकर सुना रहा था।

कविता मेरे हृदय के तार झनझना रही थी, मेरी आवाज भर्रा गयी और आखो मे आसू आ जाने की वजह से अक्षरो को साफ-साफ देखना मुश्किल हो रहा था। लेकिन कविता से भी अधिक प्रभावित कर रही थी मुझे कमरे मे अस्पष्ट, सावधान हलचल। सारी वकशाप मानो भारी करवट ले रही थी, जसे कि कोई शक्तिशाली चुम्बक लोगो को मेरी ओर खींच रहा हो। जब मैंने पहला भाग समाप्त किया, तो सभी कारीगर अपनी जगह से उठकर मेज से सटे। मुसकराते हुए और भौंहे ताने, अपनी बाहो को एक दूसरे के गले मे डाले खडे थे।

"पढ़े जा, पढ़े जा," पुस्तक के पन्ने पर मेरा सिर धकेलते हुए जिखरेव ने कहा।

जब मैंने पढ़ना समाप्त किया तो उसने पुस्तक को अपने हाथ मे उठा लिया, आखो के पास ले जाकर उसका नाम पढा और फिर उसे अपनी बगल मे खोसते हुए कहा

"इसे एक बार फिर पढ़ना होगा। कल सुनाना। तब तक पुस्तक को मैं अपने पास चौकस रखूगा।"

यह कहकर वह खिसक गया, अपनी मेज का दराज खोला, लेर्मान्तोव को उसमे बद किया और इसके बाद वह फिर अपने काम मे जुट गया। वकशाप मे एक अजीब निस्तब्धता छायी हुई थी। सब चुपचाप अपनी-अपनी जगहो पर जा रहे थे। सितानोव खिडकी के पास जाकर निश्चल

खडा हो गया। उसका सिर खिडकी के शीशे से सटा हुआ था। जिख़रेव ने एक बार फिर अपना ब्रुश नीचे रखा और कठोर स्वर म कहा

"खुदा के बदो, यही है वह चीज जिसे मैं जीवन कहता हूँ हा, जीवन इसी को कहते है!"

उसने अपने कधे बिचकाये, सिर नीचे झुका लिया और फिर बोला

"दानव की तसवीर क्या मैं नहीं बना सकता? तवा सा काला रग, बेडौल बदन, आग की लपटो जसे पख—एक दम सिंदूरी, और चेहरा, हाथ और पाव नीले, कुछ पीलापन लिए हुए, ठीक वसे ही जसे चादनी रात मे बफ होती है।"

साझ के भोजन के समय तक, बेचनी से बल खाता, वह अपने स्टल से बधा रहा। उगलियो से मेज़ बजाते हुए वह दानव के बारे म, हौवा और स्त्रियो के बारे मे, और स्वग तथा सन्ता के गुनाहो मे फसने के बारे मे, न जाने क्या क्या बुदबुदाता रहता।

"इसमे जरा भी झूठ नहीं!" वह बल देकर कहता। "जब सन्त तक पाप मे डूबी स्त्रियो के साथ मुह काला करने से नहीं चूकते तो दानव का तो काम ही रगीन डोरे डालकर अछूती आत्माओ को अपने जाल मे फसाना है "

जवाब मे किसी ने कुछ न कहा। शायद अय भी मेरी ही भाति अभी तक इतने मत्र मुग्ध थे कि उन्हे बोलना अखरता था। वे काम कर रहे थे, लेकिन बेमन से घडी पर एक आख जमाए, और नौ का घटा बजते ही सबने तुरत काम बद किया।

सितानोव और जिख़रेव बाहर सहन मे निकल आये। मैं भी उनके पास पहुचा। सितानोव ने सिर ऊचा उठाकर तारों की ओर देखा और फिर गुनगुनाने लगा

चलते जाते कारवा
बिखराये नभ दीपो के विस्तार मे

"ज़रा सोचो, क्सी क्सी पक्तिया लिखते हैं!"

और तेज सर्दी मे कुडमुडाते हुए जिख़रेव बोला

"नहीं, मुझे तो कुछ याद नहीं पडता—कुछ याद नहीं। लेकिन दिखाई सब कुछ पडता है। कितनी अजीब बात है कि इसान शतान पर भी तरस खाने के लिए बाध्य कर देता है। क्यो, ठीक कहता हू न?"

"हा," सितानोव सहमति प्रकट करता।

"इसे कहते हैं इसान!" जिखरेव ने कभी न भूलनेवाले अदाज मे कहा।

लौटकर डयोढी मे उसने मुझे ताकीद की

"देख, दुकान पर इस किताब का किसी से जिक्र तक न करना। जरूर यह उन किताबो मे से है जिन्हे पढने की मनाही है!"

यह सुनकर मेरी खुशी का वारपार न रहा। सो ऐसी होती हैं वे वर्जित पुस्तकें जिनके बारे मे पाप-स्वीकारोक्ति के समय पादरी ने मुझसे पूछा!

साझ के भोजन के समय भी सब खोये-खोये से थे। वह चहल-पहल और नोक-झोक गायब हो गयी जो नित्य दिखाई देती थी। ऐसा मालूम होता जसे किसी अनहोनी और भारी घटना ने सब के दिमाग़ को उलझा लिया हो। भोजन के बाद जब अन्य सब सोने के लिए चले गये तो जिखरेव ने पुस्तक निकाली और मुझसे बोला

"यह ले, इसे फिर पढकर सुना। लेकिन धीरे धीरे पढ़ना, बिना किसी उतावली के "

कुछ और लोग अपने बिस्तरो से चुपचाप उठे और मेज के पास आकर उसके इद गिद बठ गये। उनके बदन अधनगे थे।

और जब मैंने पढ़ना खत्म किया तो जिखरेव, अपनी उगलियो से मेज को बजाते हुए, एक बार फिर कह उठा

"इसे कहते हैं जीवन! ओह दानव, दानव तेरे साथ भी बहुत बुरी बीती, मेरे भाई!"

सितानोव ने मेरे कधो पर से उचककर कुछ पक्तियो को पढ़ा, हसा और बोला

"इन्हें मैं अपनी कापी मे उतार लूगा "

पुस्तक अपने हाथ मे लेकर जिखरेव उठा और अपनी मेज की ओर चल दिया। लेकिन एकाएक रुककर आहत और विचलित स्वर मे बोला

"जीवन की दलदल मे हम उन पिल्ला की भाति घिसटते हैं जिनकी आखें कभी नहीं खुलतीं। क्यो और किस लिए, यह कोई नहीं जानता। न खुदा को हमारी जरूरत है, न शतान को। और कहा यह जाता है कि हम खुदा के बदे हैं। जोव खुदा का बदा था, और खुदा उससे बातें

करता था। यही बात मूसा के बारे में भी थी। लेकिन हम– तुम बताओ तो सही कि हम किस खेत की मूली हैं?.."

किताब को उसने मेज के दराज मे बंद कर दिया और कपड़ा पहनते हुए सितानोव से बोला

"भटियारखाने चलेगा?"

"नहीं, मैं अपनी के पास जा रहा हूं," निश्चल आवाज में उसने जवाब दिया।

उनके चले जाने के बाद मैं दरवाजे के निकट पावेल ओदिन्त्सोव के पास ही फर्श पर लेट गया। कुछ देर तक तो वह कांखता-कराहता और करवटें बदलता रहा फिर एकाएक दबे स्वर मे उसने रोना शुरू कर दिया।

"क्यों क्या बात है?"

"अब नहीं सहा जाता," वह बोला, "मुझे इन सब पर रोना आता है। चार साल से मैं इनके साथ जी रहा हूं। सभी को मैं अच्छी तरह जानता हूं.."

मुझे भी इन लोगो पर तरस आ रहा था। काफी रात बीत गयी, लेकिन हमारी आंख नहीं लगी। देर तक फुसफुसाकर हम उनके बारे मे बातें करते रहते। उनमे से हरेक के हृदय मे छिपी भलमनसाहत और अच्छाइयो को हम याद कर रहे थे जिससे दया के हमारे बचकाने आवेश मे और भी तेजी आ रही थी।

पावेल ओदिन्त्सोव और मैं गहरे मित्र बन गए। आगे चलकर वह बहुत ही बढ़िया कारीगर सिद्ध हुआ, लेकिन इस धंधे मे वह ज्यादा दिनो तक नहीं टिका। तीस वर्ष का होते न होते वह पक्का पियक्कड़ बन गया। इसके कुछ समय बाद मास्को की खीत्रोव मार्केट मे वह मुझे दिखाई दिया, एक आवारा के रूप मे। फिर कुछ ही दिन बीते होगे कि सुनने मे आया, मियादी बुखार ने उसकी जान ले ली। कितने ही अच्छे लागो से इस जीवन मे मेरा वास्ता पड़ा और उनके जीवन को, बिना किसी मकसद के, धूल मे मिलते हुए मैंने देखा! उनकी जब याद आती है तो रूह कांप उठती है। यो मरने खपने को तो लोग सभी जगह मरते-खपते हैं। और यह स्वाभाविक भी है। लेकिन जिस तेजी और बेतुके ढग से वे रूस मे मरते-खपते और बरबाद होते हैं, उतने अन्य कहीं नहीं

उन दिनो पावेल गोल-मटोल चेहरे वाला लड़का था। मुझसे कोई दो

साल बडा होगा। चुस्त, चतुर श्रौर ईमानदार। कलाकार की प्रतिभा से सम्पन्न। बिल्ली, कुत्ते श्रौर पक्षियो के चित्र बनाना तो जसे वह मा के पेट मे ही सीखकर श्राया था। साथी कारीगरो के व्यग चित्र बनाने मे वह कमाल करता श्रौर हमेशा पक्षियो के रूप मे वह उन्हे चित्रित करता। सितानोव को वह उदासी मे डूबा कठफोडवा बनाता जो एक टाग पर खडा होता, जिखरेव को वह एक ऐसा मुर्गा समझता जिसकी कलगी छितरा गई थी श्रौर खोपडी के बाल झड गए थे, श्रौर मरियल दावीदोव को वह उदास पीविट पक्षी के रूप मे चित्रित करता। लेकिन सबसे बढिया व्यग चित्र बूढ़े गोगोलेव का होता जो खुदाई के बेल-बूटे बनाता था। उसे वह चमगादड के रूप मे चित्रित करता–खूब बडे-बडे कान, डरावनी नाक श्रौर छोटे छोटे पाव जिनमे छ छ नुकीले नाखून निकले होते। श्रौर उसके गोल चेहरे मे, जिसे वह काला पोत देता, श्राखो के सफेद घेरे दूर से दिखाई देते। घेरो के भीतर पुतलिया बनी होतीं। ऐसा मालूम होता मानो लालटेन उलटकर रख दी गयी हो जिससे उसका चेहरा श्रौर भी उचक्का तथा शतानी से भरा दिखाई देता।

कारीगरो को जब वह श्रपने व्यग चित्र दिखाता तो वे बुरा न मानते, लेकिन गोगालेव का चित्र उन सभी को घिनौना मालूम होता। उसे देखकर वे कहते

"श्रच्छा यही है कि इसे फाड डाल। श्रगर बूढे ने इसे देख लिया तो तेरी जान खा जाएगा!"

यह बूढा जो ऊपर से नीचे तक गदगी श्रौर कमीनेपन मे डूबा था श्रौर चौबीसो घटे नशे मे धुत्त रहता था, काला नाग होते हुए धर्मात्मा होने का ढोग रचता, कारिंदे से हर किसी की चुगली खाता। मालकिन श्रपनी भतीजी को कारिंदे से ब्याहना चाहती थी श्रौर इसलिए वह श्रभी से श्रपने श्रापको वकशाप श्रौर उसमे काम करनेवाले सभी लोगो का मालिक समझने लगा। सभी उससे डरते थे श्रौर घृणा भी करते थे, श्रौर इसी वजह से उसके गुर्गे गोगोलेव से भी सब दूर से ही कन्नी काटते थे।

पावेल ने तो जसे इस बूढे को परेशान करने का इरादा ही कर लिया था। एक क्षण के लिए भी वह गोगोलेव का पीछा न छोडता, श्रौर उसे जरा भी चन से न बठने देता। इस काम मे मैं भी उसका खूब हाथ बटाता। जब भी हम कोई हरकत करते जो लगभग हमेशा बेरहमी

की हद तक नहीं होती, वर्कशाप के कारीगर मन ही मन खुश होते, और चेतावनी देते

"सभलकर रहना! 'कुज़मा तिलचट्टा' तुम्हें छोडेगा नहीं!"

कारिंदे को वर्कशाप मे सब कुज़मा तिलचट्टा कहते थे।

इन चेतावनियो को हम सुना-अनसुना कर देते। बूढ़ा गोगोलेव जब सोता होता तो हम अक्सर उसका मुह रग देते। एक बार उस समय जब कि वह नशे मे धुत्त पडा था, हमने उसकी पकौडे सी नाक पर सुनहरी रोग़न कर दिया जो पूरे तीन दिन तक नाक के रोमो मे समाया रहा। लेकिन हमारी शतानी हरकतो से जब उसके सिर पर गुस्से का भूत सवार होता तो मुझे जहाज़ और ब्यात्का के टूइयां सनिक की याद हो आती, मेरी आत्मा मुझे कचोटती और एक घडी चन न लेने देती। बूढ़ा होने के बावजूद गोगोलेव दम-खम में हमसे बढ़कर था। वह अक्सर औचक में हमे पकड लेता और इतनी मरम्मत करता कि तबीयत हरी हो जाती। इतना ही नहीं, बल्कि पीटने के बाद मालकिन के पास जाकर वह हर बात की शिकायत भी करता।

मालकिन को भी नशे की लत थी, और नशे की तरग मे हमेशा खिलखिलाती और मग्न रहती थी। अपने सूजे हुए से हाथ मेज पर पटककर और चिल्लाकर वह हमे डराने का प्रयत्न करती। कहती

"शतान के बच्चो, तुम अपनी शरारत से बाज नहीं आओगे? इतना भी नहीं देखते कि वह बूढ़ा आदमी है और तुम्हें उसकी इज्जत करनी चाहिए। बोलो, उसके शराब के गिलास मे मिट्टी का तेल किसने उडला?"

"हमने! "

मालकिन ने आखें मिचमिचाकर देखा।

"हाय भगवान, कसे शतानो से पाला पडा है। देखो न, किस तपाक से कहते हैं कि हमने! क्या, ऐसा कहते तुम्हारी जीभ कटकर नहीं गिर जाती? क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि बडे-बूढ़ो की इज्जत करनी चाहिए?"

उस समय तो वह हमे धता बताती और रात को कारिंदे से हमार शिकायत करती। कारिंदा कठोर स्वर मे मुझे डाटता

"यह क्या हरकत है? किताबें पढ़ता है, बाइबल तक पढ लेता है, फिर भी इस तरह की हरकते करने से बाज नहीं आता? सभल के, बच्चू!"

मालकिन का न कोई सगी था न साथी, अकेले सूना जीवन बिताती और उसे देखकर बडी दया आती। अक्सर वह नशे मे धुत्त होकर खिडकी के पास बैठ जाती और उदास तथा उम्र की मार से डावाडोल स्वर मे गुनगुनाती

नहीं कोई ऐसा जो पूछे
अपनी बात,
नहीं कोई ऐसा जो खोले
दिल की गाठ।

एक दिन मैंने देखा कि दूध से भरा मटका हाथ मे लिए वह ज़ीने पर आई और भारी कदमो से थपथप करती एक एक सीढी नीचे उतरने लगी। अपने फले हुए हाथो मे वह मटके को मजबूती से पकडे थी, दूध छलक छलककर उसके कपडो पर गिर रहा था, और वह मटके को बाकायदा डाट पिला रही थी

"देखता नहीं शैतान, किस बुरी तरह छलक रहा है?"

वह मोटी नहीं थी, किन्तु मुलायम और फुसफुसी थी, उस बूढी बिल्ली की भाति जिसके लिए चूहे पकडना बीते दिनो की एक यादगार मात्र रह गया हो, जो खा-खाकर भारी हो गई हो और अब अलस भाव से एक जगह पडकर केवल अतीत के सुहावने रास रगो का ताना-बाना बुन सकती थी।

भौंहो मे बल डालकर सितानोव पुराने दिनो की याद करता

"ऊह, उस जमाने मे यहा का रग देखते तो दग रह जाते। यह एक बहुत ही बडा कारबार था। वकशाप भी खूब बढी चढी थी और उसकी देख भाल का काम एक बहुत ही कुशल कारीगर के जिम्मे था। लेकिन अब वह बात कहा। अब तो सब कुछ 'कुजमा तिलचट्टे' के हाथो मे चला गया। हम चाहे जितना सिर खपाए, चाहे जितना खून पसीना एक करें, घूम फिरकर अकेले उसी की चादी गरम होती है। सोचकर कलेजा बल खाने लगता है, जी करता है कि काम को धता बताकर छत पर चढ जाओ और समूची गमिया आकाश की ओर ताकते हुए बिता दो "

सितानोव के विचारो ने पावेल ओदिन्तसोव को भी ग्रस लिया। बडो की तरह सिगरेट का धुआ उडाते हुए वह भी खुदा, शराबखोरी, स्त्रियो और श्रम की व्यथता के बारे मे लम्बी चौडी बातें करता, "कुछ लोग

दिन रात खून पसीना एक करके चीजें बनाते हैं और दूसरे, बिना कुछ सोचे समझे उन्हें नष्ट करने की ताक मे रहते हैं। काम करना या न करना सब बराबर हो जाता है।"

ऐसे क्षणो मे उसके बच्चो जसे चपल, सुदर और तेज चेहरे पर झुरिया उभर आतीं और ऐसा मालूम होता मानो वह बूढ़ा हो गया हो। रात के समय फश पर बिछे अपने बिस्तर पर वह बठ जाता, घुटनों को अपनी बाहो मे दबोच लेता और उसकी आखें खिडकी के नीले चौखटों का पार कर शीतकालीन आकाश मे छितरे तारो और सायबान का छत की टोह लेतीं जो अब बफ के बोझ से दबी रहती थी।

कारीगर घर्राटे भरते और नींद मे बडबडाते रहते। कोई इस तरह चिल्ला उठता मानो दु स्वप्न देख रहा हो। सबसे ऊपर वाले तख्ते से दावीदोव अपनी जिदगी का बचा खुचा अश खासी और बलगम के रूप मे थूकता रहता। उधर सामने वाले कोने मे 'खुदा के बन्दे' कापेंदयूखिन, सोरोकिन, और पेशिन नशे तथा नींद मे निढाल बोरा की भाति एक दूसरे से सटे पडे रहते। बे सिर, बे हाथ और बे पाव वाली देव प्रतिमाएं दीवारो के साथ टिकी ताकती रहतीं। तेल, सडे अडो और फश की दरारों मे भरे कूडे कचरे की गध सास तक लेना दूभर कर देती।

पावेल बुदबुदाकर कहता, "हे भगवान, इनकी हालत पर मुझे कितना तरस आता है!"

तरस की इस भावना से मेरा हृदय भी भारी और उदास रहता। हम दोनो को, जसा कि मैं पहले भी कह चुका हू, ये लोग अच्छे मालूम होते, लेकिन जिस तरह का जीवन वे बिताते थे वह बुरा, उनके लिए सवथा अनुपयुक्त तथा कठोर, बेहद बेरस और बोझिल था। जब महान व्रत के लिए गिरजे के घटे बजते, बर्फीली आधिया सनसनातीं और घर, पेड तथा धरती की हर चीज कापने, कराहने और सुबकने लगती, तब सीसे की भारी चादर की तरह वकशाप पर गहरी ऊब छा जाती, जो कारीगरो का दम घोटती और ऐसा मालूम होता मानो जीवन का कोई चिह्न उनमे शेष नहीं छोड़ेगी, सभी कुछ पाले मे झुलस और मुरझा जाएगा। घबराकर वे बाहर निकलते, शराबखाने की ओर लपकते, या औरतो की बाहो मे दुबक जाना चाहते जो, वोदका की बोतल की तरह, ऊब को भूलने मे उनका हाथ बटातीं।

इस तरह के क्षणो मे पुस्तको का जादू कुछ काम न करता और मैं तथा पावेल जी बहलाने के अन्य साधनो का सहारा लेते। रग रोगन और काजर से हम अपने चेहरो को पोतते, सन की दाढ़ी और मूछें लगाते, अपनी सूझ-बूझ के अनुसार तरह-तरह का हास्याभिनय करते और ऊब के विरुद्ध वीरतापूर्ण सघर्ष करते हुए लोगो को हसने के लिए बाध्य करते। "एक सनिक ने किस प्रकार प्योत्र महान की जान बचाई" वाली कहानी मुझे याद थी। इस कहानी को मैंने कथोपकथन के रूप मे ढाल लिया। जिस तख्ते पर दावीदोव सोता था, उसे हम अपना मच बनाते और बडे उछाह के साथ कल्पित स्वीडनो के सिर कलम करते। दशक हसते हसते दोहरे हो जाते।

चीनी शतान त्सिगी-यु-तोग की कहानी कारीगर बेहद पसद करते। पाश्का अभागे शतान का अभिनय करता जिसके मन मे, बावजूद इसके कि वह शतान था, भलाई करने की धुन समा गई थी। बाकी सारा अभिनय मैं खुद करता। मुझे स्त्री भी बनना पडता और पुरुष भी, कभी मैं किसी पेड का तना बनकर खडा होता और कभी भली रूह, यहा तक कि मुझे वह पत्थर भी बनना पडता जिसपर कि शतान, भलाई करने के अपने हर प्रयत्न की विफलता के बाद निराश होकर बठता था।

देखनेवाले खूब हसते और उन्ह इतनी आसानी से खुश होते देख मुझे अचरज भी होता और दुख भी। वे चीखते और चिल्लाते

"वाह, मुह मटकाने मे तुम कमाल करते हो! मजा आ गया!"

लेकिन इस सब के बावजूद रह रहकर यह बात आखो के सामने उभरे बिना न रहती कि इन लोगो का रज से जितना वास्ता था, उतना खुशी से नहीं।

हमारे यहा हसी-खुशी या रगरेलिया अधिक दिनो तक कभी नहीं टिकतीं, न ही अपने आप मे उनका कोई मूल्य होता। रज मे डूबे रहने के आदी रूसी हृदय को भरमाने के लिये एक कठिन प्रयास के रूप मे, उनका जान-बूझ कर उपयोग किया जाता। उस हसी खुशी का क्या भरोसा जिसका अपना कोई स्वतत्र अस्तित्व न हो, अपना स्वतत्र अस्तित्व बनाने की जिसमे कोई कामना तक न हो, और केवल जीवन की भयानकता को आखो की ओट करने के लिए ही जिसकी याद की जाती हो!

श्रौर इसलिए रूसियो की हसी-खुशी श्रौर उनकी रगरेलिया, श्राशा के प्रतिकूल श्रौर एकदम श्रनजाने मे ही, श्रवसर क्रूर श्रौर निमम नाटक का रूप धारण कर लेतीं। नाचते-नाचते, ठीक उस समय जब कि नृत्यकार श्रपने बधनो को तोडकर उन्मुक्त भाव से हवा मे तरता श्रौर लहराता मालूम होता, एकाएक उसके भीतर का पशु जाग उठता श्रौर रस्सा तुडाकर हर व्यक्ति श्रौर हर चीज पर टूट पडता – गरजता, उबलता उफनता, सभी कुछ मटियामेट करता हुश्रा

जबरदस्ती के श्रौर एकदम बाहरी श्रवलम्बनो पर टिकी इस हसी खुशी से मै इतना भन्ना जाता श्रौर इस बुरी तरह झुझला उठता कि धन मे श्राकर सभी कुछ ताक पर रख देता, श्रौर उसी क्षण जो भी उलटा सीधा मन मे श्राता, उनका श्रभिनय करने मे पूरी मनमानी का परिचय देता। उन्मुक्त श्रौर स्वत स्फूत खुशी का उनमे सचार करने के लिए मैं पागल सा हो उठता! मेरी कोशिशें पूर्णतया बेकार भी न जातीं। कारीगर चकित हो जाते, मुग्ध भाव से प्रशसा करते, लेकिन वह निराशा श्रौर उदासी जिसे मै समझता कि गायब हो गई है, वापिस लौट श्राती, श्रौर घनी तथा गहरी होती हुई पहले की भाति फिर उन्हे दबोच लेती।

धूसर लारिश्रोनिच कोमल स्वर मे कहता

"सच, तू भी एक कयामत है। खुदा तुझे लम्बी उम्र दे!"

"जी हल्का हो जाता है," जिखरेव स्वर मे स्वर मिलाता। "तू किसी सरकस या नाटक-कम्पनी मे क्यो नहीं भर्ती हो जाता? तुझसे बढ़िया जोकर उन्हे ढूढे न मिलेगा!"

वकशाप मे काम करनेवालो मे केवल कापेन्दयूखिन श्रौर सितानोव ही ऐसे थे जो बडे दिन या श्रोवटाइड के श्रवसर पर नाटक देखने जाते थे। बूढ़े कारीगर इस पाप का प्रायश्चित करने पर जोर देते। कहते कि बर्फ मे गढा खोदकर जब तक नदी मे डुबकी नहीं लगाश्रोगे, खुदा तुम्हें माफ नहीं करेगा। लेकिन सितानोव था कि बार-बार मुझसे कहता

"तू भी कहा श्रा फसा? छोड यह सब, श्रौर नाटक-कम्पनी मे भर्ती हो जा!"

श्रौर विचलित होकर मुझे "श्रभिनेता याकोव्लेव के जीवन" की दद भरी कहानी सुनाने लगता तथा श्रन्त मे कहता

"देखा, दुनिया मे क्या-क्या हो सकता है!"

रानी मेरी स्टुअर्ट का, जिसे वह 'लोमडी' कहता था, बडे चाव से जिक्र करता और "स्पेन का बाका वीर" का जिक्र करते समय तो उसके उछाह का वारापार न रहता। कहता

"दोन सिजार द बजान बाके खानदान का एक बाका वीर था, मक्सीमिच! सचमुच मे असाधारण!"

अपने आप मे वह खुद भी कुछ कम बाका वीर नहीं था। एक दिन, चौक मे दमक्ल की मीनार के सामने, तीन आग बुझानेवाले मिलकर किसी देहातिये पर टूट पडे। चारो ओर करीब चालीस लोगो की भीड जमा हो गई। देहातिये को बचाना तो दूर, भीड ने पीटनेवालो की पीठ थपथपाना और उन्हें खूब उकसाना शुरू कर दिया। सितानोव ने आव देखा न ताव, लपककर वहा पहुचा और अपनी लम्बी बाहो से हमलावरो को मार भगाया। इसके बाद देहातिये को उठाकर उसे भीड के ऊपर धकेल दिया और चिल्लाकर बोला

"ले जाओ इसे!"

अकेला ही वह डटा रहा, तीन-तीन से उसने लोहा लिया। आग बुझाने का स्टेशन पास ही था, केवल बीस एक कदम पर। आग बुझानेवाले अगर मदद के लिए चिल्लाते तो उन्हे साथी मिलने मे जरा भी कठिनाई न होती, और वे सितानोव को ऐसी मार पिलाते कि वह भी याद रखता। गनीमत यही थी कि उनके औसान खता हो गए और वे उलटे पाव भागते नजर आए।

"हरामी कुत्ते!" उन्हे भागता हुआ देख सितानोव चिल्लाया।

रविवार के दिन युवा कारीगर पेत्रोपाव्लोव्स्क कब्रिस्तान के उस पार इमारती लकडी की टालो की ओर जाते और सफाई दल के लोगो और आसपास के गावो के किसानो से घूसेबाजी का खेल खेलते। सफाई दल मे एक प्रसिद्ध मोरदोवियाई घूसेबाज था—देव की भाति डील डौल, छोटा सा सिर, और चिपचिपी आखें। उसे ही वे सबसे आगे खडा करते और वह, फली हुई अपनी टागो को मजबूती से धरती पर जमाए, गदे कोट की आस्तीन से अपनी रिसती हुई आखो को पोछता और सहज भाव से शहरी भाइयो को ललकारता

"चले आओ जिसे आना हो। जल्दी करो, ठड हो रही है!"

कापेदयूखिन आगे बढता। हमारी ओर से एक वही उससे भिडता और मोर्दोवियाई हर बार उसके अजर-पजर ढीले कर देता। खून मे वह रग जाता और हाफता हुआ चिल्लाकर कहता

"देख लेना, एक दिन मैं भी ऐसे दात खट्टे करूगा कि मोरदोवियाई सारी उम्र याद रखेगा!"

और अत मे मोर्दोवियाई के दात खट्टे करना ही उसके जीवन का लक्ष्य हो गया। इसके लिए, पूरी सख्ती से वह अपने को साधता और तयार करता। वह अब शराब न पीता, ज्यादातर मास ही खाता और हर साझ को सोने से पहले, बर्फ से अपना बदन रगडता, बाहो की मछलियां निकालने के लिए दोहरा होकर मन भर पक्का बटखरा उठाता। लेकिन मोरदोवियाई को वह फिर भी नहीं पछाड सका। अन्त मे अपने दस्तानों मे उसने सीसे के टुकडे भर लिए, और सितानोव से शेखी बघारते हुए बोला

"अब उसका अत ही समझो!"

सितानोव की भौंहो मे बल पड गए। कडे स्वर मे बोला

"सीसे के टुकडे निकाल डाल, नहीं तो मैं भिडन्त से पहले ही सारा भडा फोडकर दूगा।"

कापेदयूखिन को विश्वास नहीं हुआ कि वह ऐसा करेगा। लेकिन ठीक भिडन्त से पहले सितानोव ने एकाएक मोर्दोवियाई से चिल्लाकर कहा

"जरा ठहरो, वासीली इवानोविच। कापेदयूखिन से पहले मेरी भिडन्त होगी!"

कज्जाक का चेहरा लाल पड गया। चिल्लाकर बोला

"मैं तुमसे नहीं लडूगा! चला जा यहा से!"

"लडेगा कसे नहीं?" सितानोव ने कहा और बढ चला।

एक क्षण के लिए कापेदयूखिन सकपकाया, फिर तेजी से उसने अपने दस्ताने उतार डाले और उन्हे अपने कोट के भीतर वाली जेब मे खोसता हुआ वहां से नौ-दो ग्यारह हो गया।

दोनो पक्षो मे से एक भी इस तरह की घटना के लिए तयार नहीं था। उन्हें अचरज भी हुआ और दुख भी। भिडन्त का सारा मजा किरकिरा हो गया। भली सी शक्ल के एक आदमी ने गुर्राकर सितानोव से कहा

"यह कायदे के खिलाफ है। खेल मे तुम निजी झगडो का भुगतान नहीं कर सकते!"

सितानोव पर चारो ओर से बौछार होने लगी। काफी देर तक तो वह चुप रहा। फिर भली सी शक्ल वाले आदमी से बोला

"तुम्हारा मतलब यह कि खेल मे खून खराबा हो तो उसे भी होने दिया जाए, — क्यो?"

भली सी शक्ल वाला आदमी तुरत सारा मामला समझ गया, और टोपी उतारकर मुसकराते हुए बोला

"अगर ऐसी बात है तो अपने पक्ष की ओर से हम तुम्हे धन्यवाद देते हैं!"

"लेकिन इस बात का ढोल पीटने की जरूरत नहीं। अपनी जुबान बद ही रखना!"

"मैं जुबान का ढीला नहीं हू। कापेदयूखिन पहुचा हुआ घूसेबाज है, पर बार-बार की हार से आदमी खुदक खाने लगता है, हम यह समझते हैं। लेकिन अब हम, भिडन्त से पहले, उसके दस्ताना को जरूर देख लिया करेंगे।"

"यह तुम जानो, जो ठीक समझो, करो!"

भली सी शक्ल वाला आदमी जब चला गया तो हमारे पक्ष के लोगो ने सितानोव को आडे हाथो लेना शुरू किया

"तू भी निरा चुगद है! आखिर तुझे बीच मे टाग अडाने की क्या जरूरत थी? कापेदयूखिन ने आज सारी कसर निकाल ली होती! लेकिन अब तूने हम सब के मुह पर कालिख पोत दी"

देर तक और बिना दम लिए रस ले लेकर सब सितानोव को कोचते रहे।

सितानोव केवल लम्बी सास खींचकर रह गया और बोला

"आह, कमीने"

इसके बाद एकाएक मोर्दोवियाई को ललकारकर उसने सभी को चकित कर दिया। चुनौती सुनते ही मोरदोवियाई आगे आकर जम गया और घूसा हिलाते हुए हसकर बोला

"अच्छी बात है। आओ, आज तुम्हारे साथ ही बदन को थोडा गरमा लिया जाए!"

"मूरतसाज मे ताकत तो इतनी नहीं है, लेकिन चपल खूब है!" मोरदोवियाई ने हसते हुए कहा। "सच, एक दिन यह अच्छा घूसेबाज बन जाएगा। मैं खुले आम यह ऐलान करता हू।"

युवको ने जो अब तक दर्शक बने हुए थे, एक दूसरे को खुलकर चपतियाने का खेल शुरू कर दिया। सितानोव को लेकर मैं हड्डी बठानेवाले के पास पहुचा। जिस साहस का उसने परिचय दिया था, उससे मेरे हृदय मे उसकी इज्जत और भी बढ गयी। यह मुझे अब और भी ज्यादा अच्छा लगता, और मैं उसका और भी ज्यादा सम्मान करता।

यह सदा न्याय और ईमानदारी का पक्ष लेता, और ऐसा मालूम होता मानो यह सब करना वह अपना कर्तव्य मानता था। लेकिन कापेन्दयूखिन जब भी मौका मिलता उसका मजाक उडाता

"वाह सितानोव तू तो बस लोगो को दिखाने के लिए जीता है। और अपनी आत्मा को रगड रगडकर तूने इतना चमका लिया है कि क्या कोई समोवार को चमकाएगा। इस तरह सब जगह घूमता है, मानो इस दुनिया मे तुझी से उजाला हो। लेकिन सच बात यह है कि तेरी आत्मा पीतल की है और तेरे साथ ऊब आती है "

सितानोव जरा भी टस से मस न होता। वह सीधे अपना काम करता या कापी मे लेर्मोन्तोव की कविताए उतारता। अपना सारा खाली समय वह कविताए उतारने मे ही बिताता। एक दिन मैंने उससे पूछा

"तुम्हारे पास पसे की कमी नहीं। अपने लिए पुस्तक क्यो नहीं खरीद लाते?"

"नहीं, अपने हाथ की लिखावट मे नकल उतारना कहीं ज्यादा अच्छा है!" वह जवाब देता।

वह छोटे छोटे और सुदर अक्षर बनाता। पन्ना भर जाने पर वह स्याही सूखने का इतजार करता, और धीमे स्वर मे गुनगुनाता हुआ पढ़ता

> पश्चाताप, बिना दुख के तुम
> ताकोगी भू की जडता,
> जहां नहीं सुख, सुष्मा सच्ची
> जहा न शाश्वत सुदरता

पास खडे लोगो मे कई ने हाथ मे हाथ डालकर एक बडा सा घेरा बना लिया। भीड घेरे से बाहर हो गई, और लडनेवाले उसके भीतर।

इसके बाद घूसेबाजी शुरू हो गई। एक दूसरे के चेहरे पर नजर गडाए, बाए हाथ की बधी मुट्ठी सीने पर रखे और दाहिने हाथ का घूसा ताने, भवर की भाति वे घेरे के भीतर चक्कर काटने लगे। पारखी दर्शकों ने तुरत भाप लिया कि सितानोव की बाहे मोर्दोवियाई की बाहो से ज्यादा लम्बी हैं। सभी पर सन्नाटा सा छा गया। लडनेवाला के पावा के नीचे बर्फ कचरने के सिवा और कोई आवाज नहीं आ रही थी। तभी किसी ने सन्नाटे के तनाव से उकताकर शिकायती स्वर मे बडबडाते हुए कहा

"इतनी देर से खाली चक्कर लगा रहे हैं "

सितानोव का दाहिना घूसा घूम गया, मोर्दोवियाई ने अपने बचाव मे बाया घूसा उठाया और तभी एकाएक सितानोव ने बाए घूसे से साथ उसके पेट पर प्रहार किया। कराहता हुआ मोर्दोवियाई पीछे हटा और मुग्ध भाव से बोला

"मैं तुम्हे कच्ची उम्र का ही समझता था, लेकिन तुम तो छिपे रुस्तम निकले!"

इसके बाद अखाडा गरमा गया। घूसे जोरो से हवा मे झूलने और एक दूसरे की पसलियां चूर-चूर करने के लिए लपलपाते। देखते-देखते दोनों पक्षो के दर्शको मे एक हलचल सी मच गई। जोश और उत्साह म भरकर वे चिल्लाते और लडनेवालो को बढावा देते

"देखता क्या है, मूरतसाज! बना दे ऐसी तसवीर कि वह भी याद रखे!"

मोर्दोवियाई सितानोव से कहीं तगडा था, लेकिन चपल नहीं था। वह उतनी ही फुर्ती और तेजी से वार नहीं बचा पाता और हर प्रहार के बदले मे दो या तीन प्रहार का उसे भुगतान करना पडता। लेकिन प्रहारों का उसपर कोई खास प्रभाव न होता। अपने प्रतिद्वद्वी पर वह उसी तरह गरजता और उसकी खिल्ली उडाता रहा। अत मे एकाएक उछलकर उसने इतने जोरो से घूसा जमाया कि सितानोव की दाहिनी बाह चूल से बाहर निकल आई।

"अरे, इन्हे छुडाकर एक दूसरे से अलग करो! बराबर का जोड रहा, न कोई हारा न जीता!" एक साथ कई आवाजें चिल्ला उठीं। दर्शक लपककर आगे बढ़े, और लडनेवाला को छुडाकर अलग कर दिया।

"मूरतसाज मे ताक्त तो इतनी नहीं है, लेकिन चपल खूब है!" मोरदोवियाई ने हसते हुए कहा। "सच, एक दिन यह अच्छा घूसेबाज बन जाएगा। मै खुले आम यह ऐलान करता हू।"

युवको ने जो अब तक दशक बने हुए थे, एक दूसरे को खुलकर चपतियाने का खेल शुरू कर दिया। सितानोव को लेकर मैं हड्डी बैठानेवाले के पास पहुचा। जिस साहस का उसने परिचय दिया था, उससे मेरे हृदय मे उसकी इज्जत और भी बढ गयी। वह मुझे अब और भी ज्यादा अच्छा लगता, और मैं उसका और भी ज्यादा सम्मान करता।

वह सदा न्याय और ईमानदारी का पक्ष लेता, और ऐसा मालूम होता मानो यह सब करना वह अपना कतव्य मानता था। लेकिन कापेदयूखिन जब भी मौका मिलता उसका मजाक उडाता

"वाह सितानोव तू तो बस लोगो को दिखाने के लिए जीता है। और अपनी आत्मा को रगड रगडकर तूने इतना चमका लिया है कि क्या कोई समोवार को चमकाएगा। इस तरह सब जगह घूमता है, मानो इस दुनिया मे तुझी से उजाला हो। लेकिन सच बात यह है कि तेरी आत्मा पीतल की है और तेरे साथ ऊब आती है "

सितानोव जरा भी टस से मस न होता। वह सीधे अपना काम करता या कापी मे लेर्मोन्तोव की कविताए उतारता। अपना सारा खाली समय वह कविताए उतारने मे ही बिताता। एक दिन मैंने उससे पूछा

"तुम्हारे पास पसे की कमी नहीं। अपने लिए पुस्तक क्यो नहीं खरीद लाते?"

"नहीं, अपने हाथ की लिखावट मे नक्ल उतारना क्हीं ज्यादा अच्छा है!" वह जवाब देता।

वह छोटे छोटे और सुदर अक्षर बनाता। पन्ना भर जाने पर वह स्याही सूखने का इतजार करता, और धीमे स्वर मे गुनगुनाता हुआ पढता

पश्चाताप, बिना दुख के तुम
ताकोगी भू की जडता,
जहां नहीं सुख, सुष्मा सच्ची
जहा न शाश्वत सुदरता

और आखो को सिकोडते हुए कहता, "यही सचाई है! वाह, क्या गूढ ज्ञान है सचाई का!"

कापेदयूखिन की सभी हरकतो के बावजूद सितानोव उसके साथ इतना भलमानसी से पेश आता कि देखकर अचरज होता। नशे मे बसुध, आते ही जब वह सितानोव से लडने के लिए झपटता तो सितानोव बहुत ही ठडे हृदय से उसे रोकने की कोशिश करता

"भले आदमी, ऊपर क्यो गिरे पडता है। जरा दूर रह!"

लेकिन वह बाज न आता, और अन्त मे सितानोव इतनी बरहमी से उसकी मरम्मत करता, यहा तक कि अन्य कारीगर झडप देखने का प्रबल मोह होने पर भी आगे बढकर दोनो को खींचकर एक दूसरे से अलग कर देते।

"यह तो कहो कि हमने ऐन मौके पर उसे छुडा लिया," वे कहते, "नहीं तो सितानोव उसे मार ही डालता और इस बात का जरा भी परवाह न करता कि बाद मे उसका क्या होता है।"

होश हवास ठीक होने पर कापेदयूखिन भी सितानोव को एक घडी चन न लेने देता, उसके कविता प्रेम तथा हरजाई स्त्री से उसके लगाव की दुःखद घटना की खिल्ली उडाता, और ईर्ष्या की आग मे उसे झुलसाने के लिए गदी से गदी, मगर बेकार हरकतें करने से न चूकता। उसके चिढाने और खिल्ली उडाने का सितानोव कभी जवाब न देता, न ही कभी उत्तेजित होता, बल्कि कभी-कभी तो कापेदयूखिन के साथ-साथ खुद भी अपनी खिल्ली उडाने मे शामिल हो जाता और खूब हसता।

वे पास-पास ही सोते और गई रात तक न जाने क्या-क्या फसफसाते रहते थे।

रात के सन्नाटे मे उन्हे इस तरह फुसफुसाकर बाते करते देख मुझे बडा अजीब मालूम होता। मेरी समझ मे न आता कि एक दूसरे से सर्वथा भिन्न प्रकृति के ये दो आदमी, आखिर किस चीज के बारे मे इतना घुल मिलकर बातें कर रहे हैं! जब कभी भी मै उनके निकट पहुचने की कोशिश करता, कापेदयूखिन तुरत टोकता

"यहा क्यो आया?"

और सितानोव तो मेरी ओर नजर तक उठाकर न देखता।

लेकिन एक बार खुद उन्होने मुझे अपने पास बुलाया।

"मक्सीमिच," कापेदयूखिन ने कहा, "अगर तेरे पास ढेर सारे पसे हो तो तू क्या करेगा?"

"पुस्तके खरीदूगा।"

"और क्या करेगा?"

"और क्या करूगा, यह तो मैं भी नहीं जानता।"

कापेद्यूखिन ने एक लम्बी सास खींची और निराशा से मुह फेर लिया।

"देखा तूने!" अब सितानोव का शात स्वर सुनाई दिया। "यह कोई नहीं बता सकता—चाहे किसी बूढे आदमी से पूछ देखो, चाहे जवान से! मैं तुमसे कहता न था कि धन का अपने आप मे कोई महत्व नहीं है। अपने आप मे वह बेकार है! महत्व की चीज धन नहीं, बल्कि वह है जो धन से पदा होती है, या जिसके लिए धन का उपयोग किया जाता है "

"तुम लोग किस चीज के बारे मे बाते कर रहे थे?" मैंने पूछा।

"किसी खास चीज के बारे मे नहीं। नींद नहीं आ रही थी, इसलिए समय काट रहे थे।" कापेद्यूखिन ने कहा।

बाद मे उनकी बाते सुनकर मैंने देखा कि रात मे भी वे उन्हीं चीजों के बारे मे बातें करते थे, जिनके बारे मे लोग दिन म बातें करते हैं खुदा, न्याय, खुशहाली, स्त्रियो की मूखता और उनकी चालाकी, धनी लोगो की लालसा और लालुपता, और यह कि जीवन ने मोटे तौर से एक ऐसे गडबडझाले का रूप धारण कर लिया है, जिससे कोई पार नहीं पा सकता।

मैं बडे चाव से सुनता और उनकी बातचीत मेरे हृदय मे गहरी हलचल का सचार करती। मुझे यह देखकर खुशी होती कि लगभग सभी लोग इस जीवन को बुरा मानते और उसे बदलने की इच्छा रखते हैं। लेकिन इसी के साथ-साथ मैंने यह भी देखा कि जीवन को बदलने की यह इच्छा निरी इच्छा ही थी, और इस इच्छा के फलस्वरूप किसी पर कोई जिम्मेदारी आयद नहीं होती थी, और न ही इस इच्छा से वकशाप मे जीवन म तथा कारीगरो के बीच उनके आपसी सम्बधो मे कोई अन्तर पडता था। यह सारी बातचीत मेरे सामने जीवन को आलोकित करते हुए उसके पीछे छिपे एक प्रकार के भयावह शून्य और खोखलेपन को प्रकट

करती जिसमे वे ही लोग, पोखर की सतह पर पड़े सूखे पत्तों की भांति, बिना किसी लक्ष्य उद्देश्य के, तेज हवा के झोंके खाकर इधर से उधर तरते, घूमते तथा चक्कर खाते हैं, जो खुद अपने ही मुह से जीवन की इस लक्ष्य तथा उद्देश्यहीनता की शिकायत करते, उसे लेकर रोते और झींकते रहते हैं।

गप्प शप करते समय कारीगर हमेशा या तो शेखी बघारते दिखाई देते, या पश्चाताप करते अथवा किसी के सिर दोष मढते नजर आते। जरा जरा सी बातो को लेकर वे बुरी तरह झगडते, एक-दूसरे का दिल दुखाने से भी बाज नहीं आते। उन्हे चिन्ता थी तो यह कि मर जाने के बाद उनका क्या होगा। और यहा, दरवाजे के पास रखे गदे पानी के डब्ल के निकट, फर्श का एक तख्ता गलसडकर खत्म हो गया था और उसकी जगह एक भभा खल गया था जिसमे से सीलन और सडी हुई मिट्टी की गध से भरी ठडी हवा आती थी और हमारे पाव एकदम सुन्न हो जाते थ। पावेल और मैंने घासफूस और चिथडो से भभा बद कर दिया। नया तख्ता लगाने की बात तो सब करते, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकलता, और भभा दिन दिन बडा होता जाता। बर्फीली आधियो के दिनो में ठडी हवा का जसे नलका सा खुल जाता और सब खासी जुकाम मे जकड जाते। रोशनदान की पखी इतने बेहूदा ढग से चीं चीं करती कि लोग गदी से गदी गालियो की उसपर बौछार करते। लेकिन जब मैंने उसमे तेल लगा दिया तो जिखरेव के कान चौकन्ने हो गये, और मुह बिचकाकर वह बोला

"चीं चीं बद होने से तो यहा ऊब और भी बढ गयी है!"

हम्माम से लौटकर वे अपने गंदे बिस्तरो पर पडे रहते। गदगी और सडाघ की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। इसी तरह अन्य कितनी ही छोटी मोटी चीजें थीं जो जीवन की कटुता को बढ़ाती थीं और जिन्हें आसानी से ठीक किया जा सकता था। लेकिन कोई हाथ न हिलाता।

ये अक्सर कहते

"लोगो के लिए किसी के दिल मे तरस नहीं है। न भगवान उनपर तरस खाता है, न ये खुद अपने पर "

लेकिन जब पावेल और मैंने गदगी तथा जुओ से परेशान दम-तोडते दादीदोव की सफाई धुलाई की तो वे हमारा मजाक उडाने लगे, तेल मालिश की आवाज लगाकर हमे चिढ़ाने लगे, जुवें मारने के लिए

अपनी गदी कमीजें उतारकर हमारे सामने डाल दीं और मोटे तौर से इस तरह हमे उल्लू बनाया मानो हमने कोई शमनाक और बहुत ही हास्यास्पद काम कर डाला हो।

बडे दिन से लेकर चालीस दिन के व्रत तक अपने तख्ते पर लेटा दावीदोव बराबर खासता और खून की कुल्लिया करता रहा। कूडे की बाल्टी का निशाना साधकर वह थूकता, लेकिन अक्सर चूक जाता और खून के थक्के फश पर आ गिरते। रात को जब वह चीखता-चिल्लाता तो हमारी आखें खुल जातीं।

करीब-करीब हर रोज, बिला नागा, वे कहते

"इसे अस्पताल ले जाए बिना काम नहीं चलेगा।"

लेकिन वह कभी अस्पताल नहीं पहुच सका। सबसे पहले तो यह हुआ कि उसके पासपोट की तारीख बीत चुकी थी। इसके बाद उसकी तबीयत कुछ ठीक मालूम हुई, और अस्पताल जाने की बात फिर टल गई। अत म उन्होंने कहा

"अस्पताल ले जाकर ही क्या होगा? दो दिन का यह मेहमान है। चाहे यहा मरे, चाहे अस्पताल मे, बात एक ही है।"

"हा भाई, टिकट कटने मे अब देर नहीं है," खुद मरीज भी उनकी बात की पुष्टि करता।

वह एक बहुत ही खामोश किस्म का हसोड व्यक्ति था, और वक्शाप की उदासी को तितर बितर करने मे अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोडता था। अपने काले और अत्यन्त क्षीण चेहरे को तख्ते से नीचे लटकाकर भरभरी आवाज मे वह घोषणा करता

"भले लोगो, अब इस आदमी की भी आवाज सुनो जिसे खुदा ने इतने ऊचे सिहासन पर पहुचा दिया है"

इसके बाद, भारी भरकम अदाज मे, वह इस तरह की कोई उदासी भरी बकवास तुकबन्दी सुनाना शुरू करता

> पडा मैं अपने तख्ते पर
> सारा-सारा दिन,
> रात रात भर,
> रेंगते तिलचट्टे मुझ पर।

"यह कभी अपना जी छोटा नहीं करता," उसके श्रोता मान भाव से कहते।

कभी-कभी पावेल और मैं उसके तख्ते पर चढ जाते, और वह जबरन खुशी से कहता

"तुम्हारी क्या खातिर करू, मेरे भले दोस्तो! अगर पसद हो तो बढिया, एकदम तर व ताजी, मकडी पेश कर सकता हू।"

बहुत ही धीरे-धीरे, तिल तिल करके, मृत्यु उसे दबोच रही था, और इससे वह और भी उकता गया था।

"मौत भी मेरे पास फटकना नहीं चाहती।" तग आकर वह कहता, और अपनी परेशानी को छिपाने का जरा भी प्रयत्न नहीं करता।

मौत के प्रति उसके इस निडर रवये से पावेल का हृदय दहल जाता। रात को वह चौंक उठता, और मुझे जगाते हुए फुसफुसाकर कहता

"मक्सीमिच, कहीं वह मर तो नहीं गया मुझे लगता है कि ऐसे ही किसी दिन रात में वह मर जाएगा, और नींद मे हमे पता तक नहीं चलेगा। हे भगवान, मरे हुए आदमियो से मुझे कितना डर लगता है!"

या फिर कहता

"आखिर इसने जन्म ही क्यो लिया? बीस वर्ष का भी न हो पाया कि अब विदा ले रहा है!"

एक रात, जब कि चादनी खिली हुई थी, उसने मुझे जगाया। उसकी आखें भय से फटी हुई थीं। फुसफुसाकर बोला

"कुछ सुनाई देता है?"

ऊपर तख्ते पर दावीदोव की सास भरभरा रही थी, और जल्दी जल्दी, साफ सुन पडनेवाले शब्दों मे वह बडबडा रहा था

"इधर, यहा ले आओ, यह देखो इधर"

इसके बाद हिचकी का दौरा शुरु हो गया।

"मर रहा है। सच कहता हू, वह मर रहा है!" पावेल ने विचलित स्वर में फुसफुसाकर कहा।

आज दिन भर मुझे बर्फ की सफाई-ढुवाई करनी पडी थी। मैं बुरी तरह थक गया था, और आखो मे नींद उमडी आ रही थी।

"तुझे मेरी कसम, सो नहीं," पावेल ने अनुरोध किया, "भगवान दया कर, और सो नहीं!"

सहसा वह उछलकर घुटनो के बल खडा हो गया, और वहशियाना अन्दाज मे चिल्ला उठा

"उठो, उठो, दावीदोव मर गया!"

उसकी आवाज सुनकर कुछ कारीगरो की नींद उचट गयी। कुछ बिस्तर छोडकर खडे हो गये, और चिडचिडाकर पूछने लगे कि बात क्या है।

कापेदयूखिन तख्ता पर चढ गया, और चकित स्वर मे बोला

"सचमुच, लगता तो ऐसा ही है कि मर गया,—हालाकि बदन मे अभी भी कुछ गरमाई मालूम होती है "

सबपर एक सन्नाटा सा छा गया। जिखरेव ने सलीब का चिह्न बनाया, और कम्बल को और भी कसकर तानते हुए बोला

"भगवान इसकी आत्मा को शाति दे!"

"अच्छा हो कि इसे यहा से उठा कर ड्योढी मे ले जाए " किसीने सुझाव दिया।

कापेदयूखिन नीचे उतर आया, और खिडकी मे से झाकते हुए बोला

"नहीं, सुबह तक इसे यहीं रहने दो, जीते जी भी इसने किसी का रास्ता नहीं छेंका "

पावेल तकिये के नीचे सिर छिपाकर सुबकिया भरने लगा।

सितानोव बेसुध सोता रहा, वह मसका तक नहीं।

१५

नीचे खेतो मे जमी बर्फ और ऊपर आकाश मे सर्दी के बादल गल रहे थे, और भीगी हुई बर्फ तथा बारिश के छींटे धरती पर गिर रहे थे। सूरज की गति धीमी हो गई थी, और दिन को यात्रा पूरी करने मे अब उसे काफी समय लगता था। हवा मे उतनी ठिठुरन नहीं रही थी। ऐसा मालूम होता था मानो वसत आ तो गया है, लेकिन अभी नगर से बाहर खेतों मे छिपा हुआ आख मिचौनी का खेल खेल रहा है। किलकारिया मारता और चौकडिया भरता किसी समय भी वह नगर मे दाखिल हो जाएगा। सडको पर लाल मटियाला कीचड छाया था। फुटपाथो पर पानी की छोटी छोटी धाराए छलछल करती बह रही थीं। आरेस्तानत्स्काया

चौक मे बर्फ के पिघलने से साफ जगहों पर चिडे चिडिया खुशी से चहक और फुदक रहे थे। चिडे चिडिया की भाति लोग भी उमग से भरे थे। चारो ओर बरात की सुहावनी भनभनाहट सुनाई देती, महान चर्चों की छत पर गिरजे के घटे, सुबह से साझ तक करीब-करीब हर घडी बजते रहते और हृदय को हल्के हल्के झकोले देते। उनकी टनटनाहट मे, बडे लोगो की आवाज की भाति, टीस छिपी होती। उनकी ठडी उदास ध्वनि मे उन दिनो की गूज सुनाई देती जो पीछे, बहुत पीछे, छूट गए थे और जिनके लौटने की अब कोई उम्मीद नहीं थी।

मेरे जन्म दिन के अवसर पर कारीगरो ने मुझे खुदा के प्यारे सन्त अलेक्सेई की एक छोटी सी और बहुत ही सुन्दर रगी चुनी प्रतिमा भेंट की। जिखरेव ने, गम्भीर मुद्रा मे, एक लम्बा भाषण दिया जिसके शब्द सदा के लिए मेरी स्मृति मे अकित हो गए।

"अभी तू क्या है," भौंहो को चढ़ाते और अपनी उगलियो को हिलाते हुए उसने कहा, "कुल तेरह बरस की तेरी उम्र है, न तेरे मा है और न बाप। फिर भी मैं, उम्र मे तुझसे चार गुना बडा होने पर भी, तेरी तारीफ करता हू। जानता है क्यो? इसलिए कि इतनी कच्ची उम्र होते हुए भी तूने जीवन से मुह नहीं मोडा, सीधे तनकर उसका सामना किया। और ऐसा ही होना चाहिये,—हमेशा आखें खोलकर जीवन का सामना करो!"

उसने खुदा के दासो और खुदा के बदो का जिक्र किया, लेकिन दासों और बदो मे क्या भेद है, यह मेरी समझ मे कभी नहीं आया, और मेरा खयाल है कि इस भेद को वह खुद भी नहीं समझता होगा। उसका भाषण बोझिल और उबा देनेवाला था और सब उसपर हस रहे थे। प्रतिमा हाथ मे लिए मैं गुम सुम खडा था, मेरे हृदय मे उथल-पुथल मची थी और परेशानी मे कुछ सूझ नहीं पड रहा था कि क्या करू, क्या न करू। आखिर कापेदयूखिन से नहीं रहा गया। झुझलाकर चिल्ला उठा

"मालूम पडता है किसी मुर्दे के सिरहाने फातिहा पढा जा रहा है। देखो तो, बेचारे के कान भी नीले पड गए!"

इसके बाद मेरी पीठ थपथपाते हुए उसने भी राग अलापना शुरू कर दिया

"तुझमे सबसे अच्छी बात यह है कि तू सभी से घुल मिलकर रहता

है! तेरी यह बात मुझे पसद है, इसकी वजह से तुझे पीटना या डाटना मुश्किल हो जाता है—भले ही तूने सचमुच कसूर किया हो।"

सब के सब, आखो मे चमक भरे, मेरी ओर देख रहे थे। उनके चेहरे खिले हुए थे और मुझे गुमसुम खडा देख मुस्करा रहे थे। मेरा हृदय, भीतर ही भीतर, उमड घुमड रहा था। अगर यह सिलसिला कुछ देर और चलता तो मै अपने को रोक न पाता, मेरी आखो से आसू बहने लगते—निरे आनन्द के आसू। इस भावना से कि ये लोग इस हद तक मुझे अपना समझते हैं, मेरा हृदय भर आया था। ठीक उसी दिन सवेरे ही, मेरी ओर सिर हिलाते हुए कारिदे ने प्योत्र वासील्येविच से कहा था

"बडा बेहूदा छोकरा है, एकदम निकम्मा।"

सदा की तरह उस दिन भी, तडके ही मै दुकान पर काम करने गया था। लेकिन अभी दोपहर हो भी न पायी थी कि कारिदे ने कहा

"घर जा और भडार की छत पर से बर्फ गिराकर कोल्ड-स्टोरेज वाले तहखाने मे जमा दे "

उसे मालूम नहीं था कि आज मेरा जन्म दिन है, और मेरा खयाल था अन्य सब भी यह नहीं जानते। वर्कशाप मे जब बधाइयो का सिलसिला खत्म हो गया तो मैंने कपडे बदले, भागकर अहाते मे पहुचा, और बर्फ गिराने के लिए भडार की छत पर चढ गया। इस बार जाडो मे खूब जमकर बर्फ पडी थी। लेकिन उतावली मे मै तहखाने का दरवाजा खोलना भूल गया और फावडे से बर्फ गिराता रहा। नतीजा यह कि तहखाने का दरवाजा बर्फ के ढेर के नीचे छिप गया। जब मुझे अपनी गलती मालूम हुई तो मैं तुरत दरवाजे से इस ढेर को हटाने मे जुट गया। लेकिन बर्फ नम थी और खूब कडी जम गई थी, और फावडा लोहे का न होकर लकडी का था, जसे ही ज्यादा दबाव पडा, वह टूट गया। इसी समय फाटक पर कारिदा दिखाई दिया और मुझे यह रूसी कहावत याद हो आई कि खुशी के साथ हमेशा दुख का पुछल्ला लगा रहता है।

"यह बात है!" कारिदा मेरे निकट आया और गुस्से मे भनभनाते हुए बोला। "क्या इसी तरह काम किया जाता है, शैतान के पिल्ले! खोपडी पर ऐसा हाथ जमाऊगा कि भेजा बाहर निकल आएगा "

उसने फावडे का टूटा हुआ हत्था उठा लिया और कसकर हाथ घुमाया। लेकिन मैं एक ओर को हट गया और गुस्से मे उफनकर बोला

"अहाता साफ करना मेरी नौकरी मे कतई शामिल नहीं है, समझ!"

लकडी का हत्था उसने मेरे पांवो मे फेंककर मारा। लपककर मैने बर्फ का एक ढेला उठाया और पूरे जोर से ऐन उसके मुह पर दे मारा। सिर्टपिटाकर वह भाग खडा हुआ। मैं भी अधबीच मे ही काम को छोडकर वर्कशाप मे लौट आया। इसके कुछ मिनट बाद कारिंदे की मगेतर सीढियों से उतरकर भागती हुई आयी। वह एक काजूबाजू छोकरी थी और उसका बेरग मुह मुहासो से भरा था। आते ही बोली

"मक्सीमिच, ऊपर जा!"

"मै नहीं जाऊगा," मैंने कहा।

लारिओनिच ने धीमी आवाज मे, चकित भाव से पूछा

"यह क्या, – जायेगा क्यो नहीं?"

मैंने उसे सारा किस्सा बता दिया। मेरी जगह वह खुद ऊपर गया। उसकी भौंहे परेशानी मे कुछ तन गई थीं। जाते समय दबे स्वर मे बोला

"बडा तेज हो गया तू, भया "

वर्कशाप कारिंदे के खिलाफ ताने तिश्नो से गूज उठी।

"अब तो तुझे निकालकर ही छोडेंगे!" कापेन्दयूखिन ने कहा।

लेकिन इसका मुझे डर नहीं था। कारिंदे से मेरी तनातनी काफी दिनों से चल रही थी और सभी सीमाए पार कर चुकी थी। उसकी घृणा ने जिद्द का रूप धारण कर लिया था जो दिनोदिन बढ़ती जाती थी। मेरी घृणा भी उतनी ही हठीली और जोरदार थी जो कम होने का नाम न लेती थी। परन्तु मैं यह समझना चाहता था कि वह मेरे साथ ऐसा बेतुका व्यवहार क्यो करता है।

वह जान-बूझकर कुछ रेजगारी फर्श पर गिरा देता जिससे फर्श साफ करते समय उसपर मेरी नजर पडे। मै उसे उठाता और हमेशा काउण्टर पर रखे भिखारियो वाले प्याले मे डाल देता। अन्त मे इस तरह रेजगारी बिखरने का रहस्य जब मेरी समझ मे आया तो मैंने उससे कहा

"रेजगारी का जाल बिछाकर तुम मुझे नहीं फास सकते। तुम्हारी सारी कोशिशें बेकार जाएगी!"

उसका चेहरा लाल हो गया और एकाएक चिल्लाते हुए बोला

"मुझे ज्यादा सबक पढाने की कोशिश न कर! मैं क्या करता हू और क्या नहीं, यह मैं तुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हू!"

फिर कुछ सभलकर बोला

"तू समझता है मैं रेजगारी जान-बूझकर फर्श पर गिराता हू? वो तो अनजाने ही गिर जाती है "

उसने मुझपर रोक लगा दी कि दुकान मे पुस्तके न पढू। कहने लगा

"ये पुस्तके तेरे लिए नहीं हैं। क्या पारखी बनने का शौक चर्राया है, हरामखोर कहीं का!"

मुझे रेजगारी चोर बनाने की अपनी कोशिशो मे उसने ढील नहीं डाली। मुझे लगा कि अगर किसी दिन बुहारते समय कोई सिक्का लुढककर किसी दराज मे चला गया तो उसे चोरी का इलजाम लगाते जरा भी देर नहीं लगेगी। एक बार फिर मैंने उसे टोका कि मेरे साथ इस तरह का खेल न खेले। लेकिन उसी दिन जब मैं ढाबे से उबलते हुए पानी से भरी केतली लेकर लौट रहा था तो मेरे कानो मे उसकी आवाज की भनक पडी। पडोसी दुकानदार के नये कारिंदे से वह कह रहा था

"तू उससे साठ गाठ करके भजन सहिता चोरी करने के लिए कह। आजकल ही एकदम नयी तीन पेटी पुस्तके हमारे यहा आनेवाली हैं "

मुझे यह भापने मे देर न लगी कि वे मेरे ही बारे मे बाते कर रहे थे। कारण कि मेरे आते ही दोनो सकपका से गए। परन्तु केवल यही नहीं, और कुछ बातो से भी मुझे यह शुबहा था कि वे मेरे खिलाफ मिलकर साजिश कर रहे हैं।

पडोसी दुकानदार का कारिंदा चालाक आखो वाला और दुबले पतले तथा सूखे हुए कमजोर शरीर का जीव था। वह ऐसे ही, थोडे थोडे दिनो के लिए काम करता था। दुकान के काम मे वह होशियार था, लेकिन पूरा पियक्कड था, जब कभी पीने का भूत उसके सिर पर सवार होता तो मालिक उसे नौकरी से अलग कर देता, और इसके बाद फिर रख लेता। यो देखने मे वह काफी विनम्र और अपने मालिक के हल्के से इशारे को भी माननेवाला मालूम होता था, लेकिन अपने मुह के कोने मे सदा एक व्यगपूर्ण मुसकराहट छिपाए रहता और तीखे छींटे कसने मे रस लेता। उसके मुह से गध आती, ठीक वसी ही जसी कि गदे दातो वाले लोगो के मुह से आती है, हालाकि उसके दात भले चगे और सफेद थे।

एक दिन उसने मुझे बडे अचरज मे डाला बहुत ही प्यार भरी

मुसकराहट के साथ वह मेरे पास आया और इसके बाद, एकाएक, उसने मेरी टोपी उतारकर दूर फेंक दी और मेरे बालों को अपने हाथों में दबोच लिया। फिर क्या था हम दोनो गुत्थमगुत्था हो गए। बालकनी से धकेलता हुआ वह मुझे दुकान में ले आया और धक्का देकर मुझे कुछ बड़ी देव प्रतिमाओं पर गिराने की कोशिश करने लगा जो फर्श पर रखी थीं। अगर वह सफल हो जाता तो इसमें सन्देह नहीं कि प्रतिमाओं का काच टूट जाता, उनके बेल-बूटे झड जाते और कीमती चित्रकारी चौपट हो जाती। लेकिन वह कुछ ताकतवर नहीं था। शीघ्र ही मैंने उसे अपने काबू में कर लिया। इसके बाद फर्श पर वह पसर गया और अपनी आहत नाक को सहलाते हुए फुक्का मार कर रोने लगा। इस दाढ़ी वाले आदमी को रोता देखकर मैं हक्का-बक्का सा रह गया।

अगले दिन, सुबह के समय जब हमारे मालिक कहीं चले गए थे और हम दोनो अकेले थे, एक आख के नीचे के और नाक के सूजे हुए हिस्से को सहलाते हुए उसने बड़े ही मित्र भाव से कहा

"तू सोचता है मैं अपनी मर्जी से तेरे ऊपर झपटा था? नहीं, मैं इतना मूर्ख नहीं हू। मुझे पता था कि तू मुझसे जबर है और जल्दी ही मुझे दबोच लेगा। मुझमे ताकत कहा है, नशे की लत ने मुझे खोखला बना दिया है। असल मे खुद मालिक के कहने पर मैंने वह हरकत की थी। मालिक ने कहा 'जाकर उससे लिपट जा और इस तरह लड कि उनकी दुकान मे ज्यादा से ज्यादा तोड फोड हो जाये और भारी नुकसान पहुचे।' अगर मालिक ने मुझे मजबूर न किया होता तो अपने आप मैं कभी ऐसी हरकत न करता! देख, तूने मेरे तोबडे का क्या हाल बना दिया है"

मुझे उसकी बात सच मालूम हुई और मेरा हृदय तरस की भावना से भर गया। यह मैं जानता था कि उसे बहुत कम पैसा मिलता है जिसमे उसका गुजर नहीं होता। तिस पर उसकी पत्नी इतनी जबर थी कि बराबर उसे पीटती रहती थी। फिर भी मैंने उससे पूछा

"अगर वो तुमसे किसी को जहर देने के लिए कहे, तो क्या तुम सचमुच जहर दे दोगे?"

"वो कुछ भी करा सकता है," उसने दयनीय मुस्कराहट के साथ धीमे स्वर मे कहा, "वो मुझसे कुछ भी करा सकता है"

ऐसे ही एक दिन, मौका देखकर, कहने लगा

"मेरे पास फूटी कौडी भी नहीं है, घर का चूल्हा ठडा पडा है—खाने के लिए एक दाना तक नहीं है, श्रौर मेरी श्रौरत घडी भर के लिए चन नहीं लेने देती। श्रगर तू श्रपने स्टोर मे से एक देव प्रतिमा चुपचाप उठाकर दे दे तो मैं उसे बेचकर कुछ पैसे खडे कर लूगा। बोल मुझपर इतनी दया करेगा न? देव प्रतिमा न ला सके तो फिर भजन सहिता सही।"

मुझे जूतो की दुकान श्रौर गिरजे के चौकीदार की बात याद हो श्राई श्रौर ऐसा लगा कि निश्चय ही यह श्रादमी भेदिया है। लेकिन मुझसे इनकार करते नहीं बना। मैंने उसे एक देव प्रतिमा उठाकर दे दी। भजन सहिता कुछेक रूबल की थी श्रौर मुझे लगा कि उसे उठाकर देना ज्यादा बडा पाप होगा। क्या किया जाये? नतिकता मे सदा श्रकगणित छिपा होता है। हमारे समूचे "दण्ड विधान" का वट वृक्ष, न्याय श्रौर धम की चादर मे लिपटा होने पर भी, श्रपने हृदय मे इसी गणना का नहा बीज छिपाए है,—व्यक्तिगत सम्पत्ति का दानव उसके पीछे श्रट्टहास कर रहा है।

पडोस की दुकान के इस दयनीय कारिदे से जब मैंने श्रपनी दुकान के कारिदे को यह कहते सुना कि वह मुझे भजन सहिता चुराने के लिए बहकाए तो मेरा हृदय सहम गया। यह साफ था कि हमारी दुकान के कारिदे से मेरी उस उदारता की बात भी नहीं छिपी है जिससे प्रेरित होकर मैंने दुकान से प्रतिमा की चोरी की थी। दूसरे शब्दो मे यह कि पडोसी दुकान का कारिदा सचमुच मे भेदिया था।

दूसरो की जेब काटकर उदारता दिखाने के सस्तेपन तथा उनके षडयत्र के कमीनेपन ने मेरे हृदय को कचोटना शुरू किया, श्रौर विक्षोभ तथा घणा के भावो से मै भर गया। मुझे श्रपने पर भी गुस्सा श्राया श्रौर दूसरो पर भी। कई दिन तक मै एक श्रजीब झुझलाहट मे फसा रहा। नयी पुस्तको के श्राने तक मेरी बुरी हालत हो गई। श्राखिर पुस्तके श्राईं। स्टोर म जाकर मैंने उन्हें खोलना शुरू किया। तभी पडोस की दुकान का कारिदा मेरे पास श्राया श्रौर भजन सहिता मागने लगा।

"क्या तुमने देव प्रतिमा चुराने की बात मालिक से कही थी?" मैंने उससे पूछा।

"हा," गरदन लटकाते हुए उसने स्वीकार किया, "क्या करू, मेरे पेट मे बात पचती नहीं "

सुनकर मैं सन्न रह गया। पुस्तकों की पेटी खोलना छोड मैं फ़र्श पर बैठ गया और उसके चेहरे की ओर ताकने लगा। अस्तव्यस्त और अत्यन्त दयनीय मुद्रा मे वह जल्दी-जल्दी बडबडा रहा था

"तेरे मालिक ने भाप लिया, या यह कहो कि मेरे मालिक ने भाप लिया, और तेरे मालिक से "

मुझे लगा कि अब खैर नहीं है। इन लोगो के जाल मे मैं फस गया हू और अब, निश्चय ही, बाल अपराधियो की किसी जेल मे मुझे बन्द कर दिया जाएगा! लेकिन जहा सेर, वहां सवा सेर, जब यही सब होना है तो फिर अन्य किसी चीज की चिंता क्यो की जाए! चुल्लू भर पानी मे डूबकर मरने से तो यह कहीं अच्छा है कि गहरे पानी मे डूबकर मरा जाए। सो मैंने भजन संहिता उठाई और कारिंदे को दे दी। उसने उसे कोट के भीतर छिपा लिया और वहा से चल दिया। कुछ भी देर न हुई होगी कि वह फिर लौट आया और पुस्तक मेरे पावो के पास आ गिरी।

"मैं इसे नहीं ले सकता। तेरे साथ तो मैं न रहूगा " कहते हुए वह चला गया।

मैं उसकी बात समझ नहीं सका। यह क्या बात हुई कि मेरे साथ वह नहीं रहेगा? जो हो, यह जानकर मुझे बडी खुशी हुई कि उसने पुस्तक लौटा दी। इसके बाद हमारी दुकान का कोताहकद कारिंदा मुझे और भी ज्यादा दुश्मनी तथा सन्देह की नज़र से देखने लगा।

मालकिन के बुलाने पर भी जब मैं नहीं गया और मेरी जगह लारिओनिच ने जीने से ऊपर जाना शुरू किया तो ये सब बातें मेरे दिमाग़ मे घूम गईं। वह जल्दी ही ऊपर से लौट आया, पहले से भी ज्यादा उदास और एकदम गुमसुम। उस समय उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन सांझ के भोजन से ठीक पहले, उस समय जब कि मैं और वह अकेले थे, वह मुझसे बोला

"मैंने बहुत कोशिश की कि दुकान के काम से छुडाकर तुझे केवल वर्कशाप मे काम करने दें। लेकिन बात नहीं बनी! कुज़मा तिलचट्टा कोई बात सुनने के लिए तयार नहीं था। न जाने तुझसे क्या खार खाये बैठा है "

इस घर मे मेरा एक दुश्मन और था—कारिंदे की मगेतर, एक बहुत चुलबुली लडकी। वर्कशाप के सभी नौजवान उससे खेलते और छेडछाड

करते थे। वे डयोढी मे खडे होकर उसका इन्तजार करते और जब वह आती तो खूब छीना झपटी करते। वह जरा भी बुरा न मानती, पिल्ले की भाति दबे स्वर मे केवल कू-का करती रहती। सुबह से लेकर सोने के समय तक उसका मुह चलता रहता—मिठाई, शहद की रोटिया, केक आदि के टुकडे उसकी जेबो मे सदा भरे रहते। भूरी आखो से युक्त उसका बेरग चेहरा देखने मे बडा बुरा मालूम होता। अपनी आखो को वह बराबर टेरती रहती। जब भी वह आती, पावेल और मुझसे ऐसी पहेलिया बूझती जिनके जवाब गदे होते या ऐसी ध्वनियो और शब्दो का जल्दी जल्दी एक सास मे उच्चारण करने के लिए कहती जिनके मिलने से कोई न कोई गदा अर्थ निकलता।

बूढे कारीगरो मे से एक ने उससे कहा

"क्या, तुम्हें लाज नहीं आती?"

वह खिलखिलाकर हसी और जवाब मे एक गदे गीत की यह पक्तिया गुनगुनाने लगी

> रगीली शरमा जायेगी,
> तो हाथ मलती रह जायेगी!

इस तरह की लडकी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। वह मुझे बडी घिनौनी मालूम होती, और उसके भोडे तौर-तरीको को देखकर मैं सहम जाता। जब उसने देखा कि मै उससे कतराता और बचता हू तो वह और भी जोरो से मेरे पीछे पड गयी।

एक दिन नीचे तहखाने मे वह अचार के मतबानो को भाप दे रही थी। पावेल और मैं भी उसकी मदद के लिए वहा मौजूद थे। तभी उसने कहा

"लौंडो, आओ तुम्ह चुम्मा लेना सिखाऊ।"

"तू क्या सिखाएगी, मै तुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हू।" हल्की हसी हसते हुए पावेल ने कहा और शराफत को थोडा ताक पर रख मैंने उसे सलाह दी कि यह कला अपने मगेतर को सिखाए। मेरी बात सुन वह भुसला उठी। गुस्से मे बोली

"तू निरा सुअर है! यह तक नहीं जानता कि एक लडकी से किस तरह पेश आना चाहिए। मैं तो इतनी मेहरबानी से पेश आती हू और तू नाक चढाता है!"

इसके बाद उगली हिलाते हुए बोली

"तुझे इसका भुगतान करना पडेगा। मैं ग्रासानी से छोडनेवाली नहीं हू!"

पावेल ने मेरा पक्ष लिया। बोला

"अगर तेरे मगेतर को इन हरकतों का पता चला गया तो फिर देखना किस तरह तेरे गाल लाल करता है।"

मुहासे भरे अपने मुह को उसने तिरस्कार से सिकोडा और फनफनाते हुए बोली

"मुझे उसका जरा भी डर नहीं है। इतने भारी दहेज के साथ एक नही बीस मगेता मुझे मिल जाएगें, उससे लाख दर्जे अच्छे! जब तक विवाह का जूग्रा गरदन पर नहीं लदता तभी तक तो लडकी को दो घडी मौज करने का मौका मिलता है।"

इसके बाद वह पावेल से खेल करने लगी और मुझसे ऐसी कुढी कि फिर सीधी न हुई। जब भी मौका मिलता, मेरे खिलाफ इधर की उधर लगाती।

दुकान पर काम करना मेरे लिए एक मुसीबत हो गया और जैसे जसे दिन बीतते गये मेरी मुसीवत बढती गयी। मैं बुरी तरह ऊब चला। जितने भी धमग्रथ वहा थे, सभी मैंने पढ डाले और पारखियो के तर कुतर्क सुनते-सुनते मै तग ग्रा गया। उनकी बातो मे कभी कोई नवीनता नहीं होती, हमेशा और हर बार उन्हीं घिसी पिटी बातो को दोहराते। केवल प्योत्र वासील्येविच ही एक ऐसा था जो ग्रभी भी मुझे कुछ आकर्षक मालूम होता था। मानव जीवन के काले पक्ष का उसे गहरा अनुभव था और बहुत ही दिलचस्प तथा उत्साहपूर्ण ढग से वह अपनी बाता को व्यक्त करता था। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता मानो पगवर येलिसेई ने भी, इसी प्रकार एकदम एकाकी, हृदय मे गहरी जलन और बदले की भावना लिए, इस धरती का चप्पा चप्पा छाना होगा।

लेकिन जब कभी मैं उसे लोगो के बारे मे अपने अनुभव या विचार बताता तो वह बडी तत्परता से सुनता और इसके बाद सारी बातें कारिंदे के सामने दोहरा देता जो या तो मुझे झिडकता अथवा मेरा मजाक उडाता।

एक दिन वृद्ध के सामने मैंने अपना यह भेद प्रकट कर दिया कि

उसकी कही हुई बातो को भी मैं अपनी उसी कापी मे दज करता जाता हू जिसमे कि मैंने कविताए और पुस्तको के अश उतार रखे हैं। यह सुनकर उसकी सिट्टी गुम हो गई, तेजी से वह मेरी ओर झुका और भयभीत सा होकर मुझसे पूछने लगा

"तू ऐसा क्या करता है! यह ठीक नहीं है बच्चे! तू क्या मेरी बातो को याद रखना चाहता है! नहीं, नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। देखो तो, कसा छोकरा है! जरा मुझे अपनी वह कापी तो दिखा!"

बहुत देर तक और जमकर वह इस बात पर जोर देता रहा कि मै कापी उसके हवाले कर दू, या कम से कम उसे जला दू। इसके बाद, विचलित स्वर मे, वह कारिदे से फुसफुसाता रहा।

घर लौटते समय कारिदे ने कडे स्वर मे मुझसे कहा

"मुझे पता चला है कि तू कोई रोजनामचा रखता है। मै तुझसे कहे देता हू कि अपनी यह हरकत बद कर। सुन लिया? केवल खुफिया पुलिस के लोग ऐसा काम करते है!"

"और सितानोव?" अनायास ही मेरे मुह से निकल गया, "उसके बारे मे तुम क्या कहोगे? वह भी तो रोजनामचा रखता है।"

"क्या वह भी रखता है? बेवकूफ नहीं तो!"

कुछ देर वह चुप रहा। फिर कुत्सित नरमाई से दोहरा हो भेद भरे अदाज मे बोला

"एक बात सुन। मुझे अपनी कापी दिखा दे, और सितानोव की भी। मैं तुझे आधा रूबल दूगा। लेकिन देख, यह काम चुपचाप करना। किसी के कान मे भनक तक न पडे, सितानोव के भी नहीं!"

उसे जमे पक्का विश्वास था कि उसकी बात मैं टालूगा नहीं। उसने अपना सुझाव रखा और इसके बाद, बिना किसी दुविधा या झिझक के, अपनी छोटी टागो से दुलकी चाल चलता हुआ मेरे आगे निकल गया।

घर पहुचते ही कारिदे ने जो कुछ कहा था, वह सब मैंने सितानोव को बता दिया। सुनकर उसकी भौंहो मे बल पड गये।

"तूने उससे कहा ही क्यो? अब वह किसी न किसी तरह हमारी कापिया उडा लेगा,—मेरी भी और तेरी भी। लेकिन ठहर, अपनी कापी तू मुझे दे दे। मैं उसे कहीं छिपा दूगा। वह तेरे पीछे पडा है। देख लेना, वह तुझे निकालकर ही दम लेगा।"

मुझे भी इसमे सन्देह नहीं था, और मैंने निश्चय कर लिया कि नानी के घर लौटते ही मैं यह नौकरी छोड दूगा। नानी बलाखना मे थी। सारे जाडे वहीं रही, किसीने अपनी लडकियो को लेस बुनना सिखाने के लिए बुला लिया था। नाना अब फिर कुनाविनो मे ही आ बसे थे। मैं कभी उनसे मिलने नहीं जाता था और भूले-भटके अगर कभी उनका नगर आना होता तो वह खुद भी मुझसे नहीं मिलते थे। एक दिन अनायास ही बाजार मे उनसे मुलाकात हो गई। रैकून का भारी भरकम कोट पहने रोब के साथ सामने से वह आ रहे थे, मानो कोई पादरी चला आ रहा हो। जब मैंने नमस्ते की तो ठिठक गए, एक हाथ उठाकर अपनी आखों पर साया किया और खोए हुए से अन्दाज मे बोले

"ओह, तू है सुना है कि आजकल देव प्रतिमाए बनाता है। ठीक है, ठीक है अच्छा जा!"

इसके बाद, मुझे एक ओर धकियाते हुए, अपने उसी रोबीले अन्दाज और ठाठ के साथ आगे बढ़ गए।

नानी से भी इन दिनों बिरले ही भेंट होती। वह दिन रात, बिना सास लिए, काम करती थी। नाना का बोझ भी अब वही सभालती थी। आयु के साथ नाना सठिया गये थे। नाना के अलावा अपने बच्चों के बच्चों का लालन पालन भी नानी के ही जिम्मे था। मिखाईल मामा के लडके साशा के लिए जो एक खूबसूरत, सपनो मे खोया और पुस्तकों का प्रेमी युवक था, नानी खास तौर से परेशान रहती। वह रगसाजी का काम जानता था और किसी एक जगह जमकर काम नहीं करता था। जब-तब नौकरी छोडकर घर पर बैठ जाता और नानी उसका बोजन ही नहीं भरती, बल्कि उसके लिए अगली नौकरी भी खोजती। साशा की बहिन का बोझ भी कुछ कम नहीं था। गलत विवाह करके उसने एक मुसीबत और मोल ले ली थी। उसका पति, जो एक मिल मे काम करता था, शराबी था। वह उसे बुरी तरह मारता और घर से निकाल देता था।

नानी से जब भी मैं मिलता, उनकी आत्मा के सौंदय को देखकर मुग्ध हो जाता। लेकिन मुझे ऐसा लगता कि नानी की अदभुत आत्मा परियो की दुनिया में निवास करती हैं। नतीजा यह कि वह चारों ओर की कटु वास्तविकता को नहीं देख पाती। उन आशकाओं और दुश्चिन्ताओं से जो मुझे घेरे रहतीं, नानी सवथा मुक्त और परे थी।

"यह सब कुछ नहीं, अल्योशा, सहने की क्षमता होनी चाहिए।"

जीवन की कुरूपता और दमघोट भयानकता का, लोगों की मुसीबतों और हर उस चीज का जिसके विरुद्ध मेरा हृदय इतने जोरों से उबाल खाता था, जब मैं नानी से जिक्र करता तो उसके मुह से सिवा इसके और कुछ न निकलता कि हममे सहने की क्षमता होनी चाहिए।

लेकिन सहना मेरी प्रकृति के विरुद्ध था और अगर ढोर डगरों, काठ और पत्थरों के इस गुण का कभी-कभी मैं प्रदर्शन करता भी था तो केवल अपने आपको जाचने-परखने के लिए, अपनी उस शक्ति और दृढ़ता का अदाज लगाने के लिए जिसके सहारे इस धरती पर मेरे पाव जमे थे। ठीक वसे ही जसे कि अपनी बचकानी मूर्खता के जोश अथवा अपने से बड़ों की शक्ति से ईर्ष्या के चक्कर मे पडकर युवक अपने हाड-मास और पुट्ठों की सकत से भी भारी बोझा उठाने की कोशिश करते और कभी कभी इसमे सफल भी हो जाते हैं, जसे कि शेखी मे वे नामी पहलवानों की भाति मन-मन भर का वजन उठाने की कोशिश करते हैं।

मैं भी ऐसा ही करता—शाब्दिक अर्थ मे भी, और भावनात्मक अर्थ म भी। शारीरिक और आत्मिक, दोनों रूपों मे मैं अपनी शक्ति की जाच करता और इसे मेरा सौभाग्य ही समझिए कि इस जाच के दौरान मैं घातक चोट खाने या जन्म भर के लिए पगु होने से बच गया। और अगर सच पूछो तो दुनिया मे अन्य कोई चीज आदमी को इतने भयानक रूप मे पगु नहीं बनाती जितना कि सहना और परिस्थितियों की बाध्यता स्वीकार कर उनके सामने सिर झुकाना आदमी को पगु बनाता है।

अन्त मे पगु होकर अगर मुझे धरती माता की शरण लेनी ही पडेगी तो, जायज गव के साथ, कम से कम यह तो मेरे पास कहने के लिए होगा कि करीब चालीस वर्ष तक मैंने परिस्थितियों के खिलाफ अडिग सघर्ष किया, उन भले लोगों के खिलाफ सघर्ष किया जो सहन करने की जजीरों से बरबस मुझे जकडकर मेरी आत्मा को कुठित कर देना चाहते थे।

कोई न कोई शरारत करने, लोगों का जी बहलाने और उन्हें हसाने की मेरी इच्छा रह रहकर जोर पकडती। और यह काम भी मैं पूरी सफलता के साथ करता। नीज्नी बाजार के सौदागरों का वर्णन करने और उनकी नकल उतारने मे मैं बेजोड था। मैं दिखाता कि देहातिये और उनकी

श्रौरते किस तरह देव प्रतिमाए खरीदते श्रौर बेचते हैं, किस सफाई से कारिंदा उन्हे ठगता श्रौर धोखा देता है, श्रौर किस तरह पारखी बहस करते हैं।

कारीगर हसते हसते दोहरे हो जाते, हाथ का काम छोडकर मेरा नकले उतारता हुआ देखते। जब तमाशा खत्म हो जाता तो लारिश्रोनिव कहता

"यह सब तमाशा साझ के भोजन के बाद किया कर, जिससे काम मे हर्ज न हो"

इस तरह के प्रदशनो के बाद मैं सदा बहुत हल्का अनुभव करता, ऐसा मालूम होता मानो मेरे सीने पर से कोई भारी बोझ उतर गया हो। घटे डेढ घटे तक मेरा दिमाग इतने अद्भुत रूप मे रीता श्रौर स्वच्छ मालूम होता जसे उसका सारा कूडा-कबाड साफ हो गया हो, लेकिन कुछ देर बाद वह फिर मानो कील-काटो से भर जाता श्रौर उनकी दुखद चुभन का मैं अनुभव करता।

मुझे ऐसा मालूम होता जसे मेरे चारो श्रोर सडा हुआ दलिया फफक रहा हो श्रौर उसकी सडाध, धीरे धीरे, मुझे भी अपने चगुल मे दबोच रही हो।

"क्या समूचा जीवन इसी तरह का होता है?" मै सोचता। "श्रौर क्या मै भी, इन्हीं लोगो की भाति, कुछ देखे श्रौर जाने बिना, अच्छे जीवन की झलक पाए बिना, इसी तरह शेष हो जाऊगा?"

जिखरेव जो मुझे ध्यान से देख रहा था, बोला

"क्या बात है, मक्सीमिच, इधर कुछ चिडचिडा होता जा रहा है?"

सितानोव भी अक्सर पूछता

"क्यो, क्या हुआ है तुझे?"

मेरी समझ मे न आता कि उन्हें क्या जवाब दू।

जीवन के श्रौघडपन ने, हठीली बेरहमी के साथ, अपने ही डाले हुए श्रेष्ठतम चिह्नो को मेरे हृदय से मिटा दिया श्रौर उनकी जगह, मानो खोजकर, कुत्सित श्रौर निकम्मे कीरम-काटे डाल दिए। गुस्से मे भरकर मैं हाथ-पाव पटकता, अडिग रूप से जीवन की हिंसा का विरोध करता। अन्य सब की भांति मैं भी उसी नदी मे बह रहा था, लेकिन उसका पानी मुझे अधिक सुन्न करता, मेरी सारी स्फूर्ति हर लेता श्रौर

कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता मानो मै उसकी अतल गहराई मे डूबा जा रहा हू।

लोगो का मेरे साथ अच्छा बरताव था। वे मुझपर कभी नहीं चिल्लाते, जसा कि वे पावेल के साथ करते थे, न ही वे मुझपर रोब झाडते या मनमाना हुक्म चलाते। अपना सम्मान दिखाने के लिए वे पूरा नाम लेकर मुझे पुकारते। यह सब मुझे अच्छा लगता, लेकिन यह देखकर मुझे दुख होता कि किस हद तक और कितनी बडी मात्रा मे वे वोद्का पीते हैं, पीने के बाद वे कितने घिनौने हो जाते हैं, और स्त्रियो के साथ कितने गिरे हुए तथा विकृत सम्बन्ध रखते हैं। यह जानते हुए भी कि वोदका और स्त्री के सिवा मन बहलाने का अन्य कोई साधन इस जीवन ने उनके पास नहीं छोडा है, मेरा जी भारी हो जाता।

उदास भाव से नताल्या कोज्लोव्स्काया की मैं याद करता। अपने आप मे वह काफी समझदार और साहसी स्त्री थी। लेकिन वह भी स्त्रियो को निरे मनबहलाव की चीज समझती थी।

फिर नानी का मुझे खयाल आता, रानी मार्गो की मैं याद करता। रानी मार्गो की याद करते समय मेरा हृदय सहम सा जाता। अन्य सबसे चारा ओर की हर चीज से वह इतनी भिन्न और अलग थी कि लगता जसे मैंने उसे सपने मे देखा हो।

स्त्रिया के बारे मे मै जरूरत से ज्यादा सोचने और मसूबे तक बाधने लगा कि अन्य सब की भाति अगली छुट्टी का दिन मै भी किसी स्त्री के साथ आनन्द से बिताऊगा। किसी शारीरिक आकाक्षा से प्रेरित होकर मैं ऐसा नहीं सोचता था। मै स्वस्थ और बेहद स्वच्छता पसन्द था। लेकिन कभी-कभी किसी कोमल और सहानुभूतिशील स्त्री को हृदय से लगाने और उसके सामने अपनी समूची वेदना उडेलने के लिए मै बुरी तरह बेचन हो उठता। मेरी यह कामना बहुत कुछ वसी ही थी जसे कि एक बच्चा अपनी मा की गोद मे जाकर कुनमुनाने के लिए ललक उठता है।

पावेल पर मुझे ईर्ष्या होती। रात जब कि हम दोना पास-पास लेटे हुए थे, वह मुझसे अपने उस प्रेम का जिक्र किया करता जो कि सडक के उस पार रहनेवाली नौकरानी से चल रहा था।

"क्या बताऊ, भाई, महीना भर पहले तक मैं उसे बर्फ की गेंदो से मार-मारकर दूर भगा देता था और उसकी ओर आख तक उठाकर नहीं

देखता था, लेकिन अब जब वह बाहर वाले बैंच पर मुझसे सटकर बैठती है तो उसका स्पर्श ऐसा लगता है मानो दुनिया मे उस जसा और कोई नहीं है।"

"तू उससे क्या बातें करता है?"

"सभी तरह की बातें होती हैं। वह मुझे अपने बारे मे बताती है, और मैं उसे अपने बारे मे बताता हू। और फिर हम चुम्बन करते हैं—केवल वह बस, हाथ नहीं रखने देती वह इतनी भली है कि तू सोच तक नहीं सकता तू आदमी है या इजन, हर वक्त धुआं उड़ाता रहता है!"

धुआ तो मैं बेहद उडाता था। तम्बाकू का नशा मेरे दिमाग पर छा जाता, और मेरी परेशानी को कुछ कम कर देता। सौभाग्यवश वोदका के जायके और गध से मै दूर भागता था। पावेल अलबत्ता खब पीता था। नशे मे धुत्त होने के बाद वह सुबकियां सी भरता और रोनी आवाज में रट लगा देता

"मैं घर जाना चाहता हू! मुझे घर भेज दो "

वह अनाथ था। उसके मा-बाप एक मुद्दत हुई मर गए थे। उसके घर पर न कोई बहन थी, और न भाई। आठ वष की आयु से ही वह अजनबियो के बीच जीवन बिताने लगा था।

मेरा हृदय रह रहकर ऊब उठता और कहीं भाग जाने को जी चाहता। वसन्त के आगमन ने मेरी इस भावना को और भी मुहजोर बना दिया। आखिर मैंने एक बार फिर जहाज़ पर काम करने का निश्चय किया जिससे, आस्त्रखान पहुचने के बाद वहां से फारस के लिए तिड़ी हो जाऊ।

याद नहीं पड़ता कि फारस जाने की यह बात मेरे मन मे कसे समा गई। इसका कारण शायद यह था कि नीज्नी नोवगोरोद के मेले में फारस के सौदागरों को मैंने देखा था और वे मुझे बहुत अच्छे लगे थे। धूप में बठे हुए वे हुक्का गुड़गुड़ाते रहते—पत्थर के बुतों की भांति। उन्होंने अपनी दाढ़ियां रग रखी थीं, और ऐसा मालूम होता मानो उनकी बड़ी-बड़ी काली आंखें सभी कुछ जानती हैं, उनसे कुछ भी छिपा नहीं है।

भागने का मैंने सचमुच निश्चय कर लिया था और शायद मैं भाग भी जाता, अगर बीच मे एक घटना न हो जाती। ईस्टर सप्ताह के

दौरान जब कुछ कारीगर अपने अपने गाव चले गये थे और बाकी पीने-पिलाने मे मगन थे, अपने भूतपूर्व मालिक — नानी की बहन के लडके — से मेरी भेंट हो गई। ओका नदी के चढाव की एक ओर एक खेत मे वह घूमने निकला था।

धूप खिली हुई थी और वह सामने से चला आ रहा था धूसर रग का हल्का कोट पहने, हाथ पतलून की जेबो मे डाले, दातो मे सिगरेट दबाए और अपनी टोपी को, बाके अन्दाज से, पीछे खिसकाकर गुद्दी पर जमाए। निकट पहुचने पर मित्रतापूर्ण मुसकराहट से उसने मेरा अभिवादन किया। उसका यह मौजी और आजादी पसन्द रूप देखकर मैं मुग्ध हो गया। खेत मे उसके और मेरे सिवा अन्य कोई नहीं था।

"ओह पेशकोव! प्रभु ईसा तुझे खुश रखें!"

ईस्टर के उपलक्ष्य मे एक दूसरे का मुह चूमने के बाद उसने मुझसे पूछा कि कसी गुजर रही है। मैंने उसे साफ साफ बता दिया कि वर्कशाप से, इस नगर से, और हर चीज से मै बुरी तरह ऊब उठा हू और मैंने फारस जाने का निश्चय कर लिया है।

"अपने इस निश्चय को धता बता!" उसने गम्भीर स्वर मे कहा। "फारस जाकर कौन स्वर्ग मे पहुच जाएगा। मैं कहता हू, उसे जहन्नुम रसीद कर। समझे भाई, तेरी उम्र मे मैं खुद भी इसी तरह भागने के लिए बेचन रहता था, जिधर भी शतान खींच ले जाए!"

शतान को वह बेफिक्री के साथ उछालता था और उसका यह अन्दाज मुझे बडा अच्छा लगा — बहुत ही उन्मुक्त और वसन्त की उमग मे पगा हुआ। उसकी हर चीज से एक अजीब उमग और बेफिक्री फूटी पडती थी।

"सिगरेट पिएगा?" मोटी सिगरेटो से भरा चादी का केस मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने पूछा।

उसकी इस बात ने मुझे अब पूरी तरह वश मे कर लिया!

"सुन, पेशकोव, मेरे साथ फिर काम करने के बारे मे तेरी क्या राय है? इस साल मेले के लिए मैंने कोई चालीस हजार के ठेके लिए हैं। मैं तुझे बाहर, मेले के मदान मे ही, काम दूगा। एक तरह से तू ओवरसीयर का काम करेगा। जो निर्माण-सामग्री आए उसे सभालना, इस बात की निगरानी रखना कि हर चीज ठीक समय पर सही जगह पहुच

23—773

जाए, और यह कि मजदूर चोरी चकारी न करें। क्या, यह ठीक रहेगा न? वेतन – पांच रूबल महीना, और पाच कोपेक भोजन के लिए। घर की स्त्रियों से तेरा कोई वास्ता नहीं पडेगा। सुबह ही तू काम पर निकल जाएगा, और रात को लौटेगा। स्त्रियो से कोई मतलब नहीं। लेकिन इतना करना कि इस भेंट के बारे मे उनसे भूलकर भी जिक्र न करना। बस, रविवार के दिन चुपचाप चला आना, – मानो तू आकाश से टपक पड़ा हो। क्यो, ठीक है न?

गहरे मित्रो की भाति हमने एक दूसरे से विदा ली। उसने मुझसे हाथ मिलाया और दूर पहुच जाने के बाद भी काफी देर तक टोपी हिलाता रहा।

जब मैंने कारीगरो के सामने नौकरी छोडने का एलान किया तो क़रीब-करीब सभी ने दुख प्रकट किया। अपने प्रति उनका यह लगाव मुझे बडा प्रिय मालूम हुआ और मैं खुशी से फूल गया। पावेल खास तौर से अस्तव्यस्त हो उठा। शिकायत के स्वर मे बोला

"भला सोच तो, हम लोगो को छोडकर उन देहातियो के बीच तू रहेगा? वहा बढ़ई होगे, रगसाज होगे छि, इसी को कहते हैं आसमान से गिरकर ताड मे अटक जाना "

जिखरेव बडबडाया

"जवानी मे आदमी वसे ही मुसीबत खोजता है जसे मछली पानी में गहराई खोजती है "

कारीगरो ने मुझे विदाई दी जो बहुत ही बेरस और बुरी तरह उबा देनेवाली थी।

नशे मे धुत्त जिखरेव ने कहा

"निश्चय ही जीवन मे कभी तू यह करेगा और कभी वह, लेकिन अच्छा यही है कि एक चीज को पकड ले और शुरू से आखिर तक उसी से चिपका रह "

"मतलब यह कि सब कुछ भूलकर उसी के साथ दफन हो जा!" शात से लारिओनिच ने भी अपना स्वर छेडा।

मुझे लगा कि इस तरह की बाते वे बेमन से कर रहे हैं, मानो किसी रिवाज की पूर्ति कर रहे हो। वह धागा जो हमे बाधे था, चाहे जसे भी हो, गल चुका था और उसे टूटने मे देर नहीं लगी।

नशे मे धुत्त गोगोलेव ऊपर तख्ते पर पडा हाथ-पाव पटक रहा था। बठे हुए गले से वह बडबडा उठा

"अगर मैं चाहू तो तुम सबको जेल मे बन्द करा सकता हू। मुझे एक भेद मालूम है! यहा ईश्वर मे कौन विश्वास करता है? अहा हा हा "

आकृतिविहीन अधूरी देव प्रतिमाए अभी भी दीवार के सहारे टिकी थीं और काच की गेंदें छत से चिपकी थीं। इधर कुछ दिनो से बिना कृत्रिम रोशनी के हम काम कर रहे थे, इसलिए गेंदो की जरूरत नहीं होती थी और उनपर धूल तथा कालिख की मटमली तह चढ गई थी। हर चीज मेरे स्मृति-पट पर इतनी गहराई से नक्श थी कि आज दिन भी, केवल आख बन्द करते ही, वह अधेरा कमरा और उसकी मेजें, खिडकियो की ओटक पर रखे रगो के डब्बे, रग करने के ब्रुश, देव प्रतिमाए, हाथ मुह धोने का पीतल का बरतन जो आग बुझानेवालो की टोपी की तरह दिखता था, उसके नीचे कोने मे रखी गदे पानी की बाल्टी, और तख्ते के ऊपर से नीचे लटकी गोगोलेव की टाग जो लाश की भाति नीली पड गई थी, मेरी कल्पना मे मूत हो उठती हैं।

मेरा बस चलता तो विदाई के बीच मे ही उठकर मैं भाग जाता। लेकिन यह सम्भव नहीं था—उदास क्षणो को लम्बा खींचने का रूसियो को कुछ चाव होता है। नतीजा यह कि विदाई का जलसा बाकायदा मातम का रूप धारण कर लेता है।

जिखरेव ने, भौंहे चढाकर, मुझसे कहा

"मैं तुझे वह पुस्तक—'दानव'—नहीं लौटा सकता। अगर तू चाहे तो इसके लिए बीस कोपेक ले सकता है।"

लेर्मोन्तोव की पुस्तक को अपने से अलग करना कठिन था, खास तौर से इसलिए भी कि उसे मुझे आग बुझानेवालो के वृद्ध मुखिया ने भेंट किया था। लेकिन जब मैंने, कुछ विरोध सा दिखाते हुए पसे लेने से इनकार कर दिया तो जिखरेव ने उन्हें चुपचाप अपने बटुवे मे रख लिया और निश्चल अन्दाज मे बोला

"जसी तेरी मर्जी। लेकिन यह जान रख कि मैं पुस्तक नहीं लौटाऊगा! यह तेरे लिए नहीं है। उस तरह की पुस्तक रखकर तू किसी समय भी मुसीबत मे फस सकता है "

२३

"लेकिन यह तो बाजार मे बिकती है। मैंने खुद अपनी आखों से उसे पुस्तको की दुकान पर देखा है!"

"इससे क्या हुआ? बाजार मे तो पिस्तौलें भी बिकती हैं" उसने दृढ़ता से जवाब दिया।

और उसने पुस्तक कभी नहीं लौटाई।

मालकिन से विदा लेने जब मैं ऊपर गया तो रास्ते मे उसकी भतीजी से भेंट हो गई।

"सुना है कि तू हमे छोड़कर जा रहा है," उसने कहा।

"हा, जा तो रहा हू।"

"जाता नहीं तो निकाल देते," कुछ उद्धत, लेकिन सच्चे हृदय से उसने कहा।

सदा नशे मे धुत्त रहनेवाली मेरी मालकिन बोली

"अच्छी बात है, जा! खुदा तेरा भला करे। तू बहुत बरा और मुहफट लड़का है। हालाकि मैंने तेरा बुरा पक्ष कभी नहीं देखा, लेकिन सब यही कहते हैं कि तू अच्छा नहीं है!"

एकाएक उसने रोना शुरू कर दिया और आसुओ के बीच बुदबुदाते हुए कहने लगी

"अगर मेरा पति—भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे—आज जीवित होता तो वह तेरे कान लाल करता और मार-मारकर सिर का सारा कचूमर निकाल देता, लेकिन तुझे यहीं रखता और इस तरह भागने न देता! अब तो सभी कुछ बदल गया है। जरा सी बात हुई और तुम बिस्तरा गोल करके चल दिये! दइया रे! इस ढग से तो पता नहीं तू कहा-कहां की धूल छानेगा!"

१६

मेले के मदान मे वसन्त की बाढ़ का पानी भरा था। पत्थर की बनी मेले की दुकानों और इमारतो के दूसरे तल्ले तक पानी चढ़ आया था। मैं अपने मालिक के साथ नाव मे बठा था। नाव मेले की इमारतो के बीच से गुजर रही थी। मैं डाड चला रहा था और मालिक, नाव के पिछले हिस्से मे बठा, एक डाड से पले का काम लेते हुए पानी काट रहा था।

हमारी नाव नाक उठाए, बद और तरगविहीन, उनींदे से मटमले पानी मे हिचकोले खाती इस बाजार से उस बाजार मे चक्कर लगा रही थी।

"इस साल बसन्त मे कितनी भारी बाढ़ आई है, शतान चट कर जाए इसे! यह हमे अपना काम भी वक्त पर पूरा करने नहीं देगी!" मालिक ने बडबडाते हुए अपना सिगार जलाया, जिसके धुए से ऊनी कपडे के जलने जसी गध आती थी।

एकाएक वह भय से चीख उठा

"अरे बचना, नाव रोशनी के खम्बे से टकराना चाहती है!"

लेकिन नाव टकराई नहीं। उसे सभालने के बाद बोला

"कम्बख्तो ने नाव भी हमे छाटकर दी है! हरामी कहीं के! "

फिर हाथ से इशारा करते हुए उसने वे जगहे दिखाईं जहा से, बाढ का पानी कम होते ही, दुकानो की मरम्मत का काम शुरु किया जायेगा। सफाचट चेहरा, छटी हुई मूछें और दातो के बीच सिगार, कोई यह नहीं कह सकता था कि वह ठेकेदार है। उसके बदन पर चमडे की जाकेट, पावो मे घुटनो तक के जते, कधे पर शिकारियो वाला थला और सामने पावो के पास लेबेल मार्का छर्रे वाली कीमती दुनाली बदूक पडी थी। सिर पर चमडे की टोपी थी, जिसे होठो को भींचते हुए आगे की ओर खींचकर कभी वह आखो पर झुका लेता और चौकन्ना सा होकर अपने चारो ओर देखता, कभी खिसकाकर पीछे गुद्दी की ओर कर लेता। एकाएक उसके चेहरे पर युवको जसी चपलता झलक उठती और मूछा मे इस तरह मुसकराता मानो कोई मजेदार कल्पना उसके दिमाग मे आ गई हो। मन की मौज और तरगो मे उसे इस तरह बहता देखकर एक क्षण के लिए भी ऐसा नहीं लगता कि वह काम-काज के बोझ और बाढ के कम न होने की चिन्ता मे डूबा हुआ है।

और जहा तक मेरा सम्बध था, अचरज की निश्चल भावना का बोझ मेरे हृदय पर लदा था। मुझे बडा अजीब मालूम होता जब मैं जीवन की चहल पहल से शून्य इस मेला नगर पर नजर डालता। चारो ओर पानी ही पानी, बद खिडकियो वाली इमारतो की सीधी पातें और ऐसा मालूम होता मानो समूचा नगर पानी मे तरता हुआ हमारी नाव के पास से गुजर रहा हो।

आसमान मे बादल छाए थे। सूरज बादलो की भूलभुलया मे उलझा था। कभी-कभी, उडती हुई सी नजर डालकर, वह नीचे की ओर देखता और फिर बादलो मे खो जाता चादी के बडे थाल की भाति शीतल और ठडा।

पानी भी, आसमान की ही भाति, मला और ठडा था। एकदम स्थिर और गतिविहीन। ऐसा मालूम होता मानो वह वहीं एक जगह जम गया है और सूनी इमारतो तथा दुकानो की पीली मटमली पातो के साथ-साथ नींद ने उसे भी अपने चगुल मे दबोच लिया है। जब कभी रुपहला सूरज बादलो के पीछे से झाककर देखता तो हर चीज पर एक धुधली सी चमक छा जाती, पानी मे बादलो का अक्स उभर आता और ऐसा मालूम होता मानो हमारी नाव दो आसमानो के बीच अधर लटकी हो। पत्थर की इमारते भी सिर उभारतीं और बे-मालूम से अन्दाज में वोलगा तथा ओका नदी की ओर बहने लगतीं। टूटे हुए पीपे, बक्से और टोकरे-टोकरिया लकडी के छोटे-मोटे टुकडे और घास फूस के तिनके पानी की सतह पर डूबते उतराते, और कभी-कभी लकडी के लटठे और बास मुर्दा सापो की भाति तरते हुए निकल जाते।

कहीं-कहीं इक्की दुक्की खिडकिया खुली थीं। दुकानो की बालकनी की छत पर कपडे सूख रहे थे और नमदे के जूते रखे हुए थे। एक खिडकी मे से कोई स्त्री गरदन निकाले बाहर गदे पानी की ओर ताक रही थी। बालकनी के लोहे के एक खम्बे के सिरे मे नाव बधी थी। उसके लाल रग का तिरमिरेदार अक्स पानी मे ऐसा मालूम होता मानो मास का लोथडा तैर रहा हो।

जीवन के इन चिह्नो को देखकर मालिक सिर हिलाता और मुझे बताना शुरू करता

"देखा तूने, यहा मेले का चौकीदार रहता है। खिडकी मे से वह छत पर चढ जाता है, फिर अपनी किश्ती मे बठकर चोरो की ताक में किश्ती को इधर से उधर खेता रहता है। अगर चोर नजर नहीं आता, तो वह खुद चोरी करने लगता है "

वह अलस और निस्सग भाव से बोल रहा था, और उसका दिमाग कहीं और उलझा था। हर चीज सन्नाटे मे डूबी, सूनी और सपने की तरह अवास्तविक मालूम होती थी। वोलगा और ओका नदी के पानी ने

मिलकर एक भीमाकार झील का रूप धारण कर लिया था। उधर, टेढ़े-मेढ़े पहाड पर नगर का रग बिरगा दृश्य नजर आता था। बाग बगीचे उसकी शोभा बढाते थे। बगीचो की कोख अभी सूनी थी,—एक भी फूल कहीं नजर नहीं आता था। लेकिन उनकी कोपलें फूट रही थीं और घर तथा गिरजे सब हरियाली मे लिपटे मालूम होते थे। ईस्टर के घटो की समद्ध ध्वनि पानी पर से तरती हुई आ रही थी और, इतनी दूर होने पर भी, नगर के हृदय की धडकन का हम अनुभव कर सकते थे, लेकिन यहा हर चीज उस उजाड कब्रिस्तान की भाति सन्नाटे मे डूबी थी जिसे लोगो ने भुला दिया हो।

काले पेडो की दो पातो के बीच मुख्य रास्ते से हमारी नाव पुराने गिरजे की ओर जा रही थी। मालिक के मुह मे लगे सिगार का धुआ उसकी आखो को कडुवा रहा था और नाव पेडो के तना से टकराकर जब उछलती थी तो खीजकर वह चिल्ला उठता था

"क्या वाहियात नाव है!"

"आप पानी काटना बद कर दीजिये।"

"यह कसे हो सकता है?" वह भुनभुनाता, "जब नाव मे दो आदमी होते हैं तो एक खेता और दूसरा पतवार सभालता है। अरे वह देखो, उधर चीनियो का बाजार है "

मेले के मदान के चप्पे चप्पे से मैं परिचित था, और दुकानो की वे अटपटी पातें मेरी खूब जानी पहचानी थीं जिनकी छतो के कोना पर प्लास्तर की बनी चीनी लोगो की मतिया पालथी मारे बठी थीं। एक समय था जब मेरे साथी खिलाडियो और मैंने उनपर पत्थरो से निशानेबाजी की थी और मेरे कुछ निशाने इतने सधे हुए और सही बठे थे कि उनमे से कई के सिर और हाथ गायब हो गए थे। लेकिन अब मुझे अपनी इस हरकत पर गव का अनुभव नहीं होता था

"देखा इन दरबो को!" इमारतो की ओर सकेत करते हुए उसने कहा। "अगर मेरे पास इनका ठेका होता "

सीटी बजाते हुए उसने अपनी टोपी को पीछे खिसकाकर गुद्दी की ओर कर लिया।

लेकिन, न जाने क्यो, मुझे लगा कि अगर उसे इन इमारतो का ठेका मिला होता तो वह भी इन्हें बनवाने मे उतनी ही बेगार काटता, और

इनके लिए जगह भी यही चुनता जो नीची होने के कारण वसन्त के दिनों मे दो नदियो की बाढ़ मे आए साल डूब जाती थी। यह भी इसी तरह का कोई चीनियों का बाजार बना डालता

अपने सिगार को उसने पानी मे फेंक दिया और खीज मे भरकर पानी मे थूक की पिचकारी छोडते हुए बोला

"अब तू ही बता, पेशकोव, इसे भी क्या जीवन कहा जा सकता है-एकदम बेरस और बेरंग! पढे लिखे लोगो का यहा अकाल है। दा घड़ी बात करने के लिए भी कोई नहीं मिलता। कभी-कभी रोब झाड़ने के लिए मन ललक उठता है, लेकिन तू ही बता, अगर कोई रोब झाड भी तो किसके सामने? कोई है ऐसा? नहीं, कोई नहीं। यहां तो केवल बढ़ई हैं, रंगसाज हैं, देहातिये हैं, चोर और उचक्के हैं"

दाहिनी ओर पानी मे डूबी पहाडी की ढाल पर, खिलौने की भांति सुन्दर एक सफेद मसजिद थी। मालिक ने कनखियो से उसकी ओर देखा, और इस तरह बोलता रहा मानो किसी भूली हुई बात को याद कर रहा हो

"एक जर्मन की भांति मैं भी बीयर पीने और सिगार का धुआ उडाने लगा। जर्मन पक्के व्यापारी होते हैं-एकदम कुडक मुर्ग! बीयर पीना तो खर एक अच्छा शगल है, लेकिन सिगार से पटरी बठती नहीं मालूम होती। दिन भर फूंकता हू और फिर बीवी जान खाने लगती है आज यह चमडे जसी बदबू कहा से आ रही है? उसे क्या पता कि जीवन को थोडा सरस बनाने के लिए क्या कुछ करना पडता है ले, अपनी पतवार अब तू खुद सभाल"

उसने डाड उठाकर नाव के एक बाजू रख दिया, अपनी बन्दूक उठाई और छत पर पालथी मारे बठे चीनियो मे से एक को अपना निशाना बनाया। चीनी को कोई नुकसान नहीं पहुचा, छर्रे दीवार और छत पर बिखरकर रह गये। धूल का एक बादल सा उठा, और हवा मे विलीन हो गया।

"निशाना चूक गया!" बन्दूक मे फिर से छर्रे भरते हुए उसने लापरवाही से कहा।

"लडकियों से तेरी कसी पटती है? अभी तक तेरा रोजा टूटा या नहीं? नहीं? अरे, मैं तो तेरह साल से ही प्रेम की नदी मे गोते लगाने लगा था.."

उसने अपनी पहली प्रेमिका के बारे मे इस तरह बताना शुरू किया मानो वह किसी सपने की याद कर रहा हो। वह एक नौकरानी थी। जिस नक्शा-नवीस के यहा वह खुद काम करता था, उसी के घर पर वह भी काम करती थी। वह अपने प्रथम प्रेम की कहानी सुना रहा था और उसकी आवाज के साथ-साथ इमारतो के कोनो से पानी के टकराने की धीमी छपछप भी सुनाई पड रही थी। गिरजे के उस पार, दूर दूर तक, पानी ही पानी, झिलमिला रहा था जिसमे जहा-तहा, बेंत वृक्ष की काली टहनियां सिर उठाए थीं।

देव प्रतिमाओ की वकशाप मे कारीगर अक्सर सेमिनारी के छात्रो का एक गीत गाया करते थे

नीला सागर,
तूफानी सागर

नीले रग मे डूबा वह सागर कितना बेरस और बोझिल होता होगा

"रात को मुझे नींद न आती," मेरे मालिक ने कहा, "बिस्तर से उठकर मैं उसके दरवाजे पर जा खडा होता और पिल्ले की भाति कापता रहता। उसका घर क्या था, पूरा बफखाना था। उसका मालिक अक्सर रात को उसके पास जाता था। इस बात का पूरा अन्देशा था कि कहीं वह मुझे रगे हाथ न पकड ले। लेकिन मैं उससे डरता नहीं था "

वह कुछ सोचता हुआ सा बोल रहा था, मानो किन्हीं पुराने कपडो को निकालकर उनकी जाच कर रहा हो कि इन्हें अब फिर पहना जा सकता है या नहीं।

"उसने मुझे दरवाजे के बाहर खडा देखा और उसे तरस आया। दरवाजा खोलकर बोली, 'भीतर चला आ, पगले '"

इस तरह की इतनी कहानिया मैंने सुनी थीं कि मेरा मन उनसे पूरी तरह ऊब चुका था। इन सब कहानियो मे, समान रूप से, अगर कोई अच्छी बात थी तो यह कि लोग अपने प्रथम प्रेम का किस्सा बयान करते समय डींग नहीं मारते थे, अश्लीलता और गदगी से उसे बचाते थे और एक कसक के साथ बडे चाव से उस की याद करते थे। लगता था कि अपने जीवन के श्रेष्ठतम क्षणो की वे याद कर रहे होते और [illegible] अपने जीवन मे अन्य किसी अच्छी चीज से बहुतो का वास्ता नहीं पडा।

हसते और अपने सिर को हिलाते हुए मालिक ने अचरज में भरकर कहा

"पर घरवाली के सामने इसका कभी जिक्र नहीं कर सकता। नहीं, कभी नहीं! यो मैं इसे पाप या बुरा नहीं समझता। फिर भी कह नहीं सकता! यह है बात "

मुझसे नहीं मानो अपने आपसे वह यह सब कह रहा था। अगर वह चुप रहता तो मैं बोलता होता। उस निस्तब्धता और शून्य मे बातचीत करना, गाना और एकाडियन बजाना, कुछ न कुछ करना जरूरी था। नहीं तो डर था कि वह मुर्दा नगर कहीं हमे भी अपनी चिर निद्रा मे न खींच ले, उस ठडे और मले पानी की समाधि मे कहीं हम भी डूबकर न रह जाए।

"सबसे पहली बात तो यह कि कभी कम उम्र मे ब्याह न करना!" उसने मुझे सीख देनी शुरू की। "ब्याह, मेरे भाई, बहुत ही जिम्मेदारी का काम है! रहने को तो जहा चाहे, जसे चाहे वहा जा सकता है-जसी तेरी मर्जी! चाहे तो फारस मे रह-मुसलमान बनकर, चाहे मास्को मे रह-सतरी बनकर, चोरी कर, चाहे दुखी हो-सब ठीक हो सकता है! पर घरवाली तो, भाई, मौसम जसी है, उसे नहीं बदला जा सकता-ना! यह, भाई, जूता नहीं-उतारा और फेंक दिया "

उसके चेहरे पर से एक छाया सी गुजर गई। भौंहो मे बल डाले वह एकटक मले पानी की ओर ताकते और अपनी कुबडी नाक को उगली से खुजलाते हुए बुदबुदाता रहा

"हा, भाई चौकस रहा यह ठीक है कि तू अभी हवा के थपेडे खाकर भी फिर भी सीधा खडा हो जाता है पर कौन जाने किस के लिये कहा और कसा जाल बिछा है। जरा चूके नहीं कि गए "

हमारी नाव मेश्चेर्स्की झील मे उगी झाडियों के बीच से गुजर रही थी जिसका पानी अब वोल्गा से गले मिल रहा था।

"जरा धीरे डांड चला!" मेरे मालिक ने फुसफुसाकर कहा और बन्दूक उठाकर झाडियो की ओर निशाना साधा।

मरियल सी दो चार मुर्गाबियो का शिकार करने के बाद बोला

"अब सीधे कुनाविनो चल। आज सांझ वहीं रग रहेगा। तू घर

चला जाना। मेरे बारे मे पूछें तो कहना कि मुझे ठेकेदारो से काम था सो मैं वहीं फस गया "

बस्ती की एक सडक पर मैंने उसे छोड दिया। यहा भी बाढ का पानी भरा था। इसके बाद, मेले के मैदान को पार कर, मैं स्त्रेल्का लौट आया। नाव को एक जगह बाधकर मैं दोनो नदियो के सगम का, नगर का, जहाजो और आसमान का नजारा देखने लगा। आसमान मे अब सफेद बादल छितरे थे और ऐसा मालूम होता था मानो वे किसी भीमाकार पक्षी के पख हों। बादलो के बीच नीली झिरियो मे से सुनहरा सूरज झलक रहा था जिसकी एक किरण समूची दुनिया का रग बदलने के लिए काफी थी। चारो ओर खूब चहल पहल थी, हर चीज मे अब गति और जीवन का स्पदन दिखाई देता था। बेडो की अतहीन पाते, तेज गति से बहाव की ओर लपक रही थीं। बेडो पर दाढी वाले देहातिये खडे थे और लम्बे बासो से डाड और चप्पुओ का काम ले रहे थे। वे एक दूसरे पर और पास से गुजरनेवाले जहाजो पर आवाजें कस रहे थे। एक छोटा सा जहाज चढाव की ओर एक खाली बजरे को खींच रहा था। नदी का पानी उसे उछालता, पटकनी देकर गिरा देना चाहता और वह मछली की भाति बल खाकर, फिर सीधा हो जाता। उसकी सास फूल जाती, वह हाफ्ता और भभकारे लेता, लेकिन पीछे न हटता, पानी को चीरता और उसके निमम थपेडा से जूझता आगे बढ चलता। बजरे पर कधे से कधा सटाए चार देहातिये बठे थे और अपनी टागो को नीचे पानी मे लटकाए थे। उनमे से एक लाल कमीज पहने था और वे सब गा रहे थे। गान के बोल पकड मे नहीं आते थे, लेकिन उसकी धुन जानी पहचानी थी।

मुझे लगा कि यहा, नदी के इस सजीव वातावरण मे, एक भी चीज ऐसी नहीं है जो अजनबी हो, जिससे मेरा लगाव न हो और जो मुझे अनजान तथा अनबूझ मालूम होती हो। लेकिन बाढ़ मे डूबा वह नगर जिसे मैं छोड आया था, मानो एक दु स्वप्न था, मेरे मालिक के दिमाग की उपज, खुद उसी की भाति अनबूझ।

नदी के दृश्य से खूब तृप्त और भरा-पूरा होने के बाद मैं घर लौट आया। पूरी शक्ति का मैंने अनुभव किया और मुझे लगा कि कोई भी काम ऐसा नहीं है जिसे मैं न कर सकू। रास्ते मे क्रेमलिन की पहाडी से

मैंने एक बार फिर वोल्गा का नजारा देखा। ऊचाई से धरती का विस्तार और भी सीमाहीन मालूम हुआ, लगता था कि यह धरती सभी आशाए और कामनाए पूरी करने का वायदा कर रही है।

घर लौटने पर खूब पुस्तके पढ़ता। रानी मार्गी वाले फ्लैट म अब एक बडा परिवार रहता था। पाच लडकिया, एक से एक सुदर, इस परिवार की शोभा बढाती थीं। दो लडके थे जो स्कूल मे पढते थे। ये सब मुझे खूब पुस्तके देते थे। तुर्गेनेव को तो जसे मैं एक सास मे पढ गया। उसके लिखने का ढग अदभुत था एकदम सादगी लिए, हर बात साफ-साफ समझ मे आनेवाली, शरद की हवा की भाति स्वच्छ और पारदर्शी। एस ही उसके पात्र थे—निमल और पवित्र। उसकी हर चीज, जिसे वह अत्यन्त विनम्र भाव से प्रतिपादित करता, सुदर थी—सुदर और अदभुत। मैं पढता और चकित रह जाता।

मैंने पोम्यलोव्स्की कत "सेमिनारी" उपयास पढ़ा। उसके पन्नों में देव प्रतिमाओं की वर्कशाप जैसा जीवन इतने सजीव और हू ब हू रूप में चित्रित था कि मैं दग रह गया। उसकी जानलेवा ऊब और घुटन से, जो क्रूर हरकतो मे फूटकर जी हल्का करती थी, मैं बुरी तरह परिचित था।

एसी पुस्तके बडी अच्छी मालूम होतीं, बडे चाव से मैं उन्हें पढ़ता। उनमे मुझे सदा अपनत्व और एक खास तरह की उदासी का अनुभव होता, मानो व्रत उपवासो के दिनो मे बजनेवाले गिरजे के घटो की ध्वनि उनमें बद हो। पन्ने खोले नहीं कि उनका धुधला सगीत प्रवाहित होने लगा।

गोगोल कृत "मुर्दा आत्माए" मैंने पढ़ी, लेकिन बेमन से। इसी तरह "मुर्दा घर के पत्र" पढने मे भी मेरा जी नहीं लगा। "मुर्दा आत्माए", "मुर्दा घर", "तीन मौतें", "जिदा लाश"—ये सब पुस्तक एक ही थली के चट्टे-बट्टे मालूम होतीं और उनके नामो को देखकर ही मेरा मन उनकी ओर से फिर जाता। "युग-लक्षण", "क़दम ब क़दम", "क्या करें", "स्मूरिन गाव की कहानी" तथा इसी ठप्पे की अय पुस्तकें भी मुझे अच्छी नहीं लगीं।

लेकिन डिकेन्स और वाल्टर स्काट के उपयास मैं बडे चाव से पढ़ता। उनकी पुस्तको को मैं दो दो और तीन-तीन बार पढता और हर बार लगो से छलछला उठता। वाल्टर स्काट की पुस्तके पढ़कर छुट्टी या उत्सव के दिन किसी शानदार गिरजे मे प्राथना याद हो आती। प्राथना ज़रूर कुछ

लम्बा और दुबला बेढंगी मालूम होती, लेकिन गिरजे का वातावरण सदा छूटा या उन्माद के ज्वार में डूबा रहना। और डिकेन्स के प्रति मेरा गहरा लगाव तो आज दिन तक बना है, जब भी उसे पढता हू, मुग्ध हो उठता हू। वह एक ऐसा लेखक था जो कठिनतम दशा मे-लोगो से प्रेम करने की कला में-अनुपम दक्ष था।

हम सातों का एक बडा सा दल साझ होने ही ओसारे पर जमा हो जाता राना मातों के फ्लैट में रहनेवाले भाई और पाचो बहनें, ग्यावेल्लाव सेमाश्को नामक एक पिचकी हुई नाक वाला छात्र और कई अन्य। कभी-कभी एक बडे अफसर की लडकी भी हमारे साथ आ बठती। इस अफसर का नाम प्तोल्सिन था। वे पुस्तकों और कविताओ के बारे मे बातें करते, जो मुझे अत्यन्त प्रिय थीं और जिनमे मेरी अच्छी प्रगति थी मैं इन सबसे ज्यादा पुस्तकें पढ चुका था। लेकिन अक्सर वे स्कूल की बातें करते, अपने शिक्षकों का राना रोते। मैं उनकी बातें सुनता और मुझे लगता कि मेरा जीवन उनसे ज्यादा स्वतन्त्र है। मुझे अचरज होता कि वे यह सब कसे बरदाश्त कर लेते हैं। लेकिन, यह सब होने पर भी, मैं उनसे ईर्ष्या करता यह क्या कम बडी बात थी कि वे अध्ययन कर रहे थे।

मेरे सगी-साथी उम्र मे मुझसे बडे थे लेकिन मुझे लगता कि मैं उनसे ज्यादा परिपक्व और अनुभवी हू। यह भावना मुझे भीतर ही भीतर कचोटती और उनके तथा मेरे बीच एक दीवार सी खडी कर देती। इस दीवार को तोडने के लिए मैं बेचन हो उठता और उनके साथ घुल मिलकर रहना चाहता। दिन भर मैं काम करता और काफी साझ बीते, धूल और गद से लथपथ सवथा भिन्न दुनिया की गहरी और विविधतापूर्ण छाप हृदय म लिए घर लौटता। इसके प्रतिकूल मेरे सगी-साथियो के अनुभव कुल मिलाकर सदा एक से होते। लडकियो के बारे मे खूब बाते करते, पहले एक से प्रेम चलता फिर दूसरी से। वे कविताए लिखना चाहते, और इसके लिए अक्सर मेरे पास आते। मैं बडे चाव से तुकबन्दियो पर हाथ आजमाता। मैं तुक जोडने मे दक्ष था, गीत की कडियां अपने आप गुथ जातीं, लेकिन जाने क्यो मेरी कविताए हमेशा हास्य रस की रचनाएं बन जातीं। ज्यादातर कविताए प्तोल्सिन की लडकी को लक्ष्य कर लिखी या लिखवाई जातीं और मैं, अदबदाकर, किसी सब्जी से-खास तौर से प्याज से-उसकी तुलना करता।

मैंने एक बार फिर योल्गा का नजारा देखा। ऊचाई से धरती का विस्तार और भी सीमाहीन मालूम हुआ, लगता था कि यह धरती सभी आशाए और कामनाए पूरी करने का वायदा कर रही है।

घर लौटने पर खूब पुस्तके पढ़ता। रानी मार्गो वाले फ्लट मे अब एक बडा परिवार रहता था। पाच लडकिया, एक से एक सुदर, इस परिवार की शोभा बढाती थीं। दो लडके थे जो स्कूल मे पढते थे। ये सब मुझे खूब पुस्तके देते थे। तुर्गनेव को तो जसे मैं एक सास मे पढ गया। उसके लिखने का ढग अदभुत था एकदम सादगी लिए, हर बात साफ-साफ समझ मे आनेवाली, शरद की हवा की भाति स्वच्छ और पारदर्शी। एसे ही उसके पात्र थे–निमल और पवित्र। उसकी हर चीज, जिसे वह अत्यन्त विनम्र भाव से प्रतिपादित करता, सुदर थी–सुदर और अदभुत। मैं पन्ता और चकित रह जाता।

मैंने पोम्यलोव्स्की कृत "सेमिनारी" उपयास पढ़ा। उसके पन्नों में देव प्रतिमाओ की वक्शाप जसा जीवन इतने सजीव और हू ब हू रूप में चित्रित था कि मैं दग रह गया। उसकी जानलेवा ऊब और घुटन से, जो क्रूर हरकतो मे फूटकर जी हल्का करती थी, मैं बुरी तरह परिचित था।

रूसी पुस्तके बडी अच्छी मालूम होतीं, बडे चाव से मैं उन्हें पढ़ता। उनमे मुझे सदा अपनत्व और एक खास तरह की उदासी का अनुभव होता, माना व्रत उपवासो के दिनो मे बजनेवाले गिरजे के घटों की ध्वनि उनमे बद हो। पन्ने खोले नहीं कि उनका धुधला सगीत प्रवाहित होने लगा।

गोगोल कृत "मुर्दा आत्माए" मैंने पढी, लेकिन बेमन से। इसी तरह "मुर्दा घर के पत्र" पढने मे भी मेरा जी नहीं लगा। "मुर्दा आत्माए", "मुर्दा घर", "तीन मौते", "जिदा लाश"–ये सब पुस्तके एक ही थैली के चट्टे-बट्टे मालूम होतीं और उनके नामो को देखकर ही मेरा मन उनकी ओर से फिर जाता। "युग लक्षण", "कदम ब कदम", "क्या करें", "स्मूरिन गाव की कहानी" तथा इसी ठप्पे की अय पुस्तके भी मुझे अच्छी नहीं लगीं।

लेकिन डिकेस और वाल्टर स्काट के उपयास मैं बडे चाव से पढ़ता। उनकी पुस्तको को मैं दो दो और तीन-तीन बार पढ़ता और हर बार खुशी से छलछला उठता। वाल्टर स्काट की पुस्तके पढ़कर छुट्टी या उत्सव के दिन किसी शानदार गिरजे मे प्राथना याद हो आती। प्राथना जहर कुछ

लम्बी और उकता देनेवाली मालूम होती, लेकिन गिरजे का वातावरण सदा छुट्टी या उत्सव के उछाह मे डूबा रहता। और डिकेन्स के प्रति मेरा गहरा लगाव तो आज दिन तक बना है, जब भी उसे पढ़ता हू, मुग्ध हो उठता हू। वह एक ऐसा लेखक था जो कठिनतम कला मे—लोगो से प्रेम करने की कला मे—अत्यन्त दक्ष था।

हम लोगों का एक बडा सा दल साझ होते ही ओसारे पर जमा हो जाता रानी मार्गो के फ्लट मे रहनेवाले भाई और पाचो बहनें, व्याचेस्लाव सेमाश्को नामक एक पिचकी हुई नाक वाला छात्र और कई अन्य। कभी-कभी एक बडे अफसर की लडकी भी हमारे साथ आ बैठती। इस अफसर का नाम प्तोलिसिन था। वे पुस्तको और कविताओ के बारे मे बातें करते, जो मुझे अत्यन्त प्रिय थीं और जिनमे मेरी अच्छी प्रगति थी मैं इन सबसे ज्यादा पुस्तके पढ चुका था। लेकिन अवसर वे स्कूल की बातें करते, अपने शिक्षकों का रोना रोते। मैं उनकी बातें सुनता और मुझे लगता कि मेरा जीवन उनसे ज्यादा उन्मुक्त है। मुझे अचरज होता कि वे यह सब कैसे बरदाश्त कर लेते हैं। लेकिन, यह सब होने पर भी, मैं उनसे ईर्ष्या करता यह क्या कम बडी बात थी कि वे अध्ययन कर रहे थे!

मेरे सगी-साथी उम्र मे मुझसे बडे थे लेकिन मुझे लगता कि मैं उनसे ज्यादा परिपक्व और अनुभवी हू। यह भावना मुझे भीतर ही भीतर कचोटती और उनके तथा मेरे बीच एक दीवार सी खडी कर देती। इस दीवार को तोडने के लिए मैं बेचैन हो उठता और उनके साथ घुल मिलकर रहना चाहता। दिन भर मैं काम करता और काफी साझ बीते, धूल और गर्द से लथपथ सर्वथा भिन्न दुनिया की गहरी और विविधतापूर्ण छाप हृदय मे लिए घर लौटता। इसके प्रतिकूल मेरे सगी-साथियो के अनुभव घुल मिलकर सदा एक से होते। लडकियो के बारे मे खूब बातें करते, पहले एक से प्रेम चलता फिर दूसरी से। वे कविताए लिखना चाहते, और इसके लिए अक्सर मेरे पास आते। मैं बडे चाव से तुकबन्दियो पर हाथ आजमाता। मैं तुक जोडने मे दक्ष था, गीत की कडिया अपने आप गुथ जातीं, लेकिन जाने क्यो मेरी कविताए हमेशा हास्य रस की रचनाए बन जातीं। ज्यादातर कविताए प्तोलिसिन की लडकी को लक्ष्य कर लिखी या लिखवाई जातीं और मैं, अटबटाकर, किसी सब्जी से—आम तौर से प्याज से—उसकी तुलना करता।

सेमाश्को कहता

"इन पक्तियो को तुम कविता कहते हो? ये कीले हैं, कीले, जिन्हें चमार जूतो मे ठोकते है!"

अन्य किसी से पीछे न रहने की होड मे मैं भी प्तोलिसिन की लडकी से प्रेम करने लगा। यह तो याद नहीं पडता कि मैं अपने प्रेम को किस तरह उसके सामने व्यक्त करता था, लेकिन इस प्रेमचक्र का अन्त दुखद ढग से हुआ। एक दिन मैंने उससे कहा कि चलो, ज्वेज्दिन कुड चले। कुड के बद और गदे पानी पर एक तख्ता तर रहा था। तय किया कि उसी पर कुड की सर की जाएगी। वह इसके लिए तयार हो गई। तख्ते को खींचकर मैं किनारे पर ले आया और उसपर खडा हो गया। तख्ता काफी मजबूत था और मजे मे मेरा बोझ सभाल सकता था। लेकिन लडकी ने जो बेल बूटो और फीतो से सजी बिल्कुल गुडिया बनी हुई थी, जब तख्ते के दूसरे सिरे पर पाव रखा और मैंने गौरव से भरकर एक डड से तख्ते को किनारे से हटाया तो कम्बख्त तख्ता धचका खा गया और वह कुड मे जा गिरी। मै भी सच्चे प्रेमी की भाति उसके साथ ही साथ कूदा और पलक झपकते उसे पानी से बाहर निकाल लाया। लेकिन भय और पानी की हरी काई ने लिपटकर उसे बिल्कुल चू चू का मुरब्बा बना दिया था, और उसके सारे सौंदय को बिगाड डाला था!

कीचड मे लथपथ उसने अपना छोटा सा घूसा ताना और चिल्लायी

"तुमने जान-बूझकर मुझे पानी मे धक्का दिया!"

मैंने बहुतेरी माफी मागी, लेकिन उसपर कोई असर नहीं हुआ और वह मेरी पक्की दुश्मन बन गई।

नगर का जीवन कुछ ज्यादा दिलचस्प नहीं था। बूढी मालकिन अभी भी मुझसे कुढ़ती और छोटी सन्देह की नजर से देखती। वीक्तर के चेहरे पर झाइया अब और भी घनी हो गई थीं, जो भी उसके सामने पडता उसी पर फनफना उठता, मानो सभी से खार खाए बठा हो।

मालिक के पास नक्शे बनाने का इतना अधिक काम था कि वह और उसका भाई दोना मिलकर भी उसे नहीं निबटा पाते थे। इसलिए उसने मेरे सौतेले पिता को भी हाथ बटाने के लिए बुला लिया।

एक दिन मेले के मदान से मैं जल्दी लौट आया—पाचेक बजे। भोजन के कमरे मे पाव रखा ही था कि एक ऐसे आदमी पर मेरी नजर पडी

जिसे मैं बहुत पहले ही अपने दिमाग से खारिज कर चुका था। मेरे मालिक के साथ वह चाय की मेज के पास बठा था। मुझे देखते ही उसने अपना हाथ बढ़ाया। बोला

"कहो, कसी तबीयत है? "

उसे देखकर मैं सन्न रह गया। मुझे सपने मे भी आशा नहीं थी कि उससे कभी भेंट होगी। अतीत की याद आग की लपट की भाति मेरे हृदय को झुलसाती हुई कौंध गई।

"यह तो डर ही गया," मालिक ने जोर से कहा।

मेरा सौतेला पिता अपने जजर चेहरे पर मुस्कराहट लिए मेरी ओर देख रहा था। उसकी आखें अब और भी ज्यादा बडी मालूम होती थीं, और वह बेहद खिसा पिटा तथा रौंदा हुआ नजर आता था। मैने अपना हाथ उसकी पतली, गरम उगलियो से मिलाया।

"तो हम दोनो फिर मिल ही गए!" उसने खासते हुए कहा।

मैं वहा से खिसक गया, कुछ इतना निढाल सा होकर मानो मुझपर भार पडी हो!

हम दोनो एक दूसरे से चौकन्ने और खिचे से रहते। वह मुझे मेरा पूरा नाम लेकर बुलाता और बराबर के आदमी की भाति सम्बोधित करता।

"अगर बाजार जाना हो तो मेरे लिए आधा पाव लाफेम तम्बाकू, सिगरेट बनाने के विक्टसन मार्वा सौ कागजो का पकट और आधा सेर सासेज लेते आना। कृतज्ञ हूगा "

सौदा लाने के लिए जब भी वह रेजगारी देता तो वह हमेशा गरम होती। साफ मालूम होता कि तपेदिक ने उसे जकड लिया है और ज्यादा दिनो तक नहीं चलेगा। वह खुद भी यह जानता था और बकरेनुमा अपनी काली दाढी को उमेठता हुआ शान्त तथा गहरी आवाज मे कहता था

"असल मे मेरे इस रोग का कोई इलाज नहीं है। परन्तु अगर आदमी भरपूर मास खाए तो सभल जाता है। कौन जाने, मुझे भी इससे कुछ फायदा हो जाए।"

उसका पेट क्या था, पूरा अधा कुआ था। इतना अधिक वह खाता था कि देखकर अचरज होता था। वह दिन भर चरता और सिगरेट पीता

था। उसके मुह से सिगरेट उसी समय अलग होती थी जब कोई चीज उसे अपने मुह मे डालनी होती थी। उसके लिए बाजार से मैं रोज सासेज, मास और सार्डीन मछली लाता था। लेकिन नानी की बहन एक अनबूझ सन्तोष के साथ मानो उसके भाग्य का आखिरी फसला देते हुए कहती

"मौत को बढ़िया माल खिलाकर फुसलाया नहीं जा सकता। मौत को नहीं भरमा सकते। सच, कभी भी नहीं!"

मालिक लोग सौतेले पिता के चारो ओर इस हद तक मडराते कि देखकर झुझलाहट होती। वे हमेशा और हर वक्त कोई न कोई नयी दवा तजवीज करते रहते और पीठ के पीछे उसका खूब मजाक उडाते।

"बडा आया है भद्रपुरुष!" छोटी मालकिन कहती, "कहता है कि हम मेज की जूठन साफ नहीं करतीं जिससे मक्खियो की फौज जमा हो जाती हैं!"

"हा सचमुच नवाब है!" बडी मालकिन स्वर मिलाती, "देखती नहीं वह अपना कोट किस तरह साफ करता है। धूल के साथ-साथ उसने सारा रोवा भी झाड दिया है और वह झिन्ना हो गया है,–दो चार दिन मे इतना भी नहीं रहेगा। लेकिन इससे क्या, धूल तो साफ हो जाती है!"

"थोडा धीरज धरो, कुडक-मुगियो! कुछ दिनो मे वह खुद ही साफ हो जाएगा!" मालिक मानो मरहम लगाता।

नगर के टुटपुजिया निवासी जिस बुरी तरह अभिजातो की टाग खींचते और उन्हे नाहक कोचते थे, उसने मुझे अपने सौतेले पिता का पक्ष लेने के लिए मजबूर कर दिया। इन लोगो से तो मक्खीमार खुमिया ही अच्छी। जहरीली जरूर होती हैं, लेकिन कम से कम देखने मे खूबसूरत तो लगती हैं!

इन लोगो की दमघोट सगत से मेरे सौतेले पिता की क़रीब-करीब वसी ही हालत थी जसी कि मुगियो के दरबे मे फसी मछली की। कहा मुगियो का दरबा और कहा मछली,–लेकिन यह तुलना भी उतनी ही बेजोड और बेढगी थी, जितना बेजोड और बेढगा जीवन हम बिता रहे थे।

मुझे लगा कि मेरे सौतेले पिता मे भी वसे ही गुण मौजूद हैं जो कि मैंने कभी 'बहुत खूब' मे देखे थे, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। 'बहुत खूब' और रानी मार्गो मेरी नजर मे मानो उस समूचे सौंदय के मूर्ति

मान रूप थे जो मैंने पुस्तको से प्राप्त किया था। अपने हृदय के श्रेष्ठतम तत्वो और सुदरतम कल्पनाओ से मैंने उन्हे सजाया था। पुस्तके पढने पर एक से एक सुदर चित्र मेरे दिमाग मे उभरते और सब जसे उनके साथ सम्बद्ध हो जाते। मेरा सौतेला पिता भी 'बहुत खूब' की तरह उतना ही अकेला और उतना ही अनचाहा था। घर मे हरेक के साथ वह समानता का व्यवहार करता, अपनी ओर से कभी किसी बात मे टाग नहीं अडाता और सक्षेप मे तथा विनम्रता के साथ सभी सवालो के जवाब देता। जब वह मेरे मालिक को सीख देता तो उसकी बाते सुनने मे बडा मजा आता। मेज के पास खडा हुआ वह क़रीब-करीब दोहरा हो जाता, दबीज कागज को उगली के लम्बे नाखून से ठकठकाता और शान्त स्वर मे समझाना शुरू करता

"मेरे ख्याल मे, इस जगह शहतीर मे एक डाट डालने की जरूरत है, जिससे कि दीवारो पर दबाव रुक जायेगा। अगर ऐसा न किया तो शहतीर दीवारो को तोड देंगे।"

"हा, यह तो बिल्कुल ठीक कहा!" मालिक बडबडाता।

जब सौतेला पिता चला जाता तो मालिक की पत्नी उसे कोचती

"तुम भी कसे आदमी हो? जो भी आता है, वही कान पकडकर सबक़ पढाना शुरू कर देता है!"

साझ के भोजन के बाद सौतेला पिता बिला नागा अपने दात माजता और सिर पीछे की ओर फेंककर इस तरह गरारे करता कि उसका टेंटुवा निकल आता। मालकिन न जाने क्यो यह देखकर जल भुनकर कलाबत्तू हो जाती। जब नहीं रहा जाता तो कहती

"मेरी समझ मे इस तरह गरदन उठाकर गरारे करना तुम्हारे लिए नुक्सानदेह हो सकता है, येव्गेनी वासील्येविच!"

वह केवल मुसकराता और विनम्र स्वर मे पूछता

"क्यो, आप ऐसा क्यो सोचती हैं?"

"इसलिए कि बस मुझे कुछ ऐसा ही मालूम होता है"

इसके बाद हड्डी की एक छोटी सी कनी लेकर वह अपनी उगलियो के नीले नीले नाखून साफ करता और उसकी पीठ फिरते ही मालकिन चहक उठती

"देखो न, यह अपने नाखन तक साफ करता है। एक पाव मत्र मे लटका है, लेकिन फिर भी "

"अरी बुडक-मुगियो!" मालिक लम्बी सास खींचते हुए कहता। "क्या सारी बेवकूफी तुम्हारे ही हिस्से मे आई है! "

उसकी पत्नी नाराज होती

"ऐसी बात मुह से निकालते तुम्हारी जबान गलकर नहीं गिर जाती!"

रात को बूढ़ी मालकिन खुदा के कान खाती

"मेरी छाती पर मूग दलने के लिए अब इस मरदुए को घर मे ले आए हैं, भगवान! मेरे वीक्तर को कोई नहीं पूछता "

वीक्तर ने मेरे सौतेले पिता का रग-ढग अपनाना शुरू कर दिया, वसे ही धीमे अन्दाज मे वह चलता, उसकी भाति ही रईसाना और सुनिश्चित अन्दाज मे हाथो को हरकत देता, उसी की भाति अपनी टाई मे गाठ लगाता और वसे ही बिना चटखारे लिए और चपाचप की आवाज किए, खाना खाने की कोशिश करता। फिर, अक्खड अन्दाज मे, पूछता

"मक्सीमोव, फ्रान्सीसी भाषा मे 'घुटने' को क्या कहते हैं?"

"मेरा नाम येव्गेनी वासील्येविच है," मेरा सौतेला पिता शान्त भाव से उसकी भूल सुधारता।

"कोई बात नहीं। और 'छाती' के लिए फ्रान्सीसी भाषा मे क्या शब्द है?"

साझ को जब खाने बठता तो अपनी मा पर उल्टे-सीधे फ्रेंच शब्दों की झडी लगा देता

"मा मेर, दोन्ने मुमअन्कोर* सूअर का गोश्त!"

बडी मालकिन की बाछें खिल जातीं। कहती

"वाह रे, फ्रास की दुम!"

मेरा सौतेला पिता, बिना किसी परेशानी के गूगे और बहरे आदमी की भाति अपना मास चबाता रहता और किसी की ओर आख उठाकर नहीं देखता।

एक दिन बडा भाई छोटे भाई से बोला

---

*मा, मुझे थोडा और दीजिए।—स०

"बीक्तर, फ्रेंच भाषा बोलना तो तुम सीख गए, अब बस महबूबा भी रख लो "

मेरे सौतेले पिता ने जब यह सुना तो उसके चेहरे पर शान्त मुसकराहट खेल गई। इससे पहले और बाद मे भी, मैंने उसे मुसकराते नहीं देखा।

लेकिन मेरे मालिक की पत्नी यह सुनकर आग-बबूला हो गई। चम्मच को मेज पर पटकते हुए झुझलाकर चिल्लाई

"तुम तो सारी हया शर्म घोटकर पी गए हो! घर की औरतो के सामने इस तरह की बाते करते तुम्हे जरा भी शर्म नहीं आती!"

पिछले दरवाजे के पास अटारी के जीने के नीचे मै सोता था। जीने मे एक खिडकी थी जहा बठकर मैं पुस्तके पढता था। कभी-कभी मेरा सौतेला पिता घूमते हुए उधर आ निकलता।

"क्यो, पढ़ रहे हो?" एक दिन उसने पूछा और इतने जोरो से सिगरेट का कश खींचा कि उसके सीने के भीतर जलती हुई लकडी के चटखने जसी आवाज सुनाई दी। फिर बोला, "कौनसी पुस्तक है?"

मैंने उसे पुस्तक दिखा दी।

"ओह!" उसने पुस्तक के शीर्षक पर नजर डाली और बोला, "इसे तो शायद मै भी पढ चुका हू। सिगरेट पियोगे?"

हम दोनो सिगरेट का धुआ उडाते और खिडकी मे से गदे अहाते की ओर देखते रहे।

"कितनी बुरी बात है कि तुम्हारी पढाई लिखाई का कोई डौल नहीं है," उसने कहा, "मुझे तो तुम काफी होशियार मालूम होते हो "

"लेकिन पढ़ता तो हू! देखिये न "

"यह काफी नहीं है। तुम्हें स्कूली शिक्षा की जरूरत है, जिसका एक ढग और कायदा होता हैं "

मेरे मन मे हुआ कि उससे कहू

"आपने तो बाकायदा स्कूली शिक्षा पाई थी, श्रीमान जी, पर उससे हुआ क्या?"

उसने मानो मेरे मन की बात भाप ली। बोला

"अगर हृदय मे किसी अच्छे लक्ष्य और उद्देश्य का बल हो तो स्कूली शिक्षा बडी मदद देती है। केवल पढ़े लिखे लोग ही इस जीवन का चोला बदल सकते हैं "

यह अक्सर सलाह देता

"अच्छा हो कि तुम यह जगह छोड दो। यहां पडे रहने मे कोई तुक नहीं है "

"लेकिन मजदूर मुझे अच्छे लगते हैं।"

"किस मानो मे?"

"वे दिलचस्प होते हैं।"

"हो सकता है "

एक दिन कहने लगा

"जो हो, हमारे ये मालिक दरिन्दे हैं, पूरे दरिन्दे "

मुझे उन क्षणो और परिस्थितियो की याद हो आई जब कि मेरी मा ने ठीक इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया था। मुझे ऐसा मालूम हुआ जसे मेरा पाव अगारे पर पड गया हो।

"क्यो, क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?" मुस्कराते हुए उसने पूछा।

"हा, ऐसा ही सोचता हू।"

"ठीक ही है मैं देख ही रहा हू।"

"लेकिन मुझे अपना मालिक फिर भी पसन्द है "

"यो तो मुझे भी वह अच्छे हृदय का आदमी मालूम होता है.. लेकिन कुछ अजीब सा है।"

मैं उससे पुस्तको के बारे मे बातें करना चाहता था, लेकिन इस ओर उसमे कोई खास लगाव नहीं दिखाई दिया।

"पुस्तको मे इतना ज्यादा दिमाग़ खपाने की जरूरत नहीं," वह अक्सर कहता, "तिल का ताड बनाना पुस्तको की विशेषता है। कोई चीजो की लम्बाई के रुख खींचतान करता है, और कोई चौडाई के रुख। लेखक भी ज्यादातार हमारे इन मालिको की भाति हैं ओछे लोग।"

जब वह इस तरह की बातें करता तो मुझे लगता कि वह बहुत ही साहसी काय कर रहा है, और मुह बाये मै उसकी ओर देखता रहता।

"क्या तुमने गोचारोव के उपन्यास पढे हैं?" एक दिन उसने पूछा।

"'युद्धपोत पल्लादा' पढ़ा है," मैंने जवाब दिया।

"'पल्लादा' तो उबा देनेवाला उपन्यास है। लेकिन मोटे तौर से गोचारोव रूस के अत्यन्त समझदार लेखको मे से है। तुम उसका 'ओब्लोमोव' उपन्यास जरूर पढ़ना। यह एक अत्यन्त साहसपूर्ण और

सचाई से भरा उपन्यास है। और कुल मिलाकर रूसी साहित्य मे इसका श्रेष्ठतम स्थान है "

डिकेन्स के बारे मे उसका कहना था

"एकदम कूडा मेरी यह राय सोलहो आने सही है। लेकिन आजकल 'नया जमाना' के परिशिष्ट मे एक बहुत ही दिलचस्प चीज छप रही है। नाम है 'सत एन्योनी का प्रलोभन'। जरूर पढ़ना! गिरजे और दीन धर्म की बातो मे तुम्हारी दिलचस्पी तो काफी मालूम होती है। 'प्रलोभन' से तुम्हें काफी लाभ पहुचेगा।"

परिशिष्टा का एक अच्छा-खासा ढेर खुद उसने लाकर मेरे सामने रख दिया और फ्लाबेट की इस मजेदार कृति को मै पढ़ गया। उसे देखकर मुझे उन अनगिनत सतो की जीवनिया याद हो आईं जिन्हे मै पढ चुका था। पारखी के मुह से भी उस तरह के अनेक किस्से और कहानिया सुन चुका था। जो भी हो, उसका मेरे हृदय पर कोई गहरा असर नहीं पडा। उससे ज्यादा आनन्द तो मुझे 'उपिलियो फमाली नामक एक जानवर साधनेवाले के सस्मरण' पढ़ने मे आया जो इन्हीं परिशिष्टो मे छपे थे।

अपने सौतेले पिता के सामने जब मैंने यह बात स्वीकार की तो शान्त स्वर मे उसने कहा

"इसका मतलब यह कि अभी तुम्हारी उम्र इस तरह की पुस्तके पढने लायक नहीं है। जो हो, उस पुस्तक को भूलना नहीं "

कभी-कभी वह मेरे पास घटो बठा रहता, मुह से एक शब्द न कहता, केवल जब-तब खासता, और सिगरेट के धुए के बादल उडाता रहता। उसकी सुन्दर आखो मे कुछ ऐसी चमक थी कि देखकर डर लगता। चुपचाप बठा हुआ मैं उसकी ओर देखता रहता, और इस बात का मुझे जरा भी ध्यान नहीं रहता कि यह आदमी जो इतनी खामोशी के साथ तिल तिल करके गल रहा है और जिसके मुह से शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकलता, किसी जमाने मे मेरी मा के तन-मन का स्वामी था, और मा के साथ क्रूरता से पेश आता था। मैं जानता था कि आजकल किसी दरजिन से उसकी आशनाई है, और जब कभी उस दरजिन का मुझे ख़याल आता तो तरस और अचरज की भावना से मेरा हृदय भर जाता था। मैं यह सोचकर स्तब्ध रह जाता कि उसकी लम्बी हड्डियो के आलिगन मे बधना और उसका मुह चूमना जिसमे से हर घडी सडाध

निकलती थी, वह कैसे बरदाश्त करती होगी? 'बहुत खूब' की भांति मेरा सौतेला पिता भी एकाएक ऐसी टिप्पणियां करता जो अपनी मौलिकता में बेजोड़ होतीं।

"शिकारी कुत्ते मुझे बेहद पसंद हैं, वे बेवकूफ होते हैं, लेकिन फिर भी मुझे अच्छे लगते हैं। वे बहुत ही सुन्दर होते हैं। सुन्दर स्त्रियां भी अक्सर बेवकूफ होती हैं "

कुछ गर्व का अनुभव करते हुए मैं मन ही मन सोचता

"रानी मार्गो को अगर तुमने देखा होता तो कभी इस तरह की बात न करते!"

एक दिन उसने कहा

"जो लम्बे अर्से तक एक साथ रहते हैं, धीरे धीरे शक्ल में भी एक से हो जाते हैं।" उसका यह कथन मुझे इतना अच्छा लगा कि मैंने उसे अपनी कापी में दर्ज कर लिया।

मैं उसकी ओर ताकता और उसके मुंह से निकलनेवाले शब्दों और वाक्यों की इस तरह प्रतीक्षा करता मानो शीघ्र ही सौंदर्य की कोई मूर्तिमान प्रतिमा प्रकट होनेवाली हो। इस घर में जहां लोग एक सिरे से बेरंग और बेरस, घिसी पिटी और जगखाई भाषा में बातें करते उसके मुंह से मौलिक शब्दों और वाक्यों को सुनकर हृदय खुशी से नाच उठता।

मेरा सौतेला पिता मां के बारे में मुझसे कभी बात नहीं करता। बात करना तो दूर, मेरे सामने उसने मां का एक बार भी नाम तक नहीं लिया। यह मुझे अच्छा लगता और एक तरह से आदर का भाव मैं उसके प्रति अनुभव करता।

एक दिन, यह तो याद नहीं पड़ता कि किस सिलसिले में, मैंने उससे भगवान के बारे में सवाल किया। उसने एक नजर मुझे देखा और फिर बहुत ही निश्चल अन्दाज में बोला

"मुझे नहीं मालूम। मैं भगवान में विश्वास नहीं करता।"

मुझे सितानोव का ध्यान हो आया। अपने सौतेले पिता से मैंने उसका जिक्र किया। जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तो सौतेले पिता ने वैसे ही निश्चल अन्दाज में कहा

"वह हर चीज को बुद्धि और तर्क की कसौटी पर कसना और समझना चाहता है और जो लोग ऐसा करते हैं वे हमेशा किसी न किसी चीज में विश्वास करते हैं लेकिन मैं किसी चीज में विश्वास नहीं करता!"

"लेकिन यह तो एक असम्भव बात है।"

"क्यो, असम्भव क्यो है? मैं तुम्हारे सामने मौजूद हू, तुम अपनी आखो से देख सकते हो कि मैं किसी चीज मे विश्वास नहीं करता "

लेकिन मुझे केवल एक ही चीज दिखाई देती थी यह कि वह तिल-तिल करके मौत का निवाला बन रहा है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि मेरे हृदय मे उसके प्रति तरस की भावना थी, लेकिन पहली बार मौत के मुह मे जा रहे इसान और खुद मौत के रहस्य मे मेरी तीव्र और गहरी रुचि जागी।

वह मेरे पास एकदम बराबर मे ही बठा था। उसका घुटना मेरे घुटने को स्पश कर रहा था। सवेदनशील और बुद्धिमान, लोगो को वह उस नाते की नजर से देखता जिससे कि वह उनके साथ बधा या नहीं बधा था, हर चीज के बारे मे वह इस विश्वास से बातें करता मानो उसे राय देने और नतीजे निकालने का अधिकार हो। मुझे ऐसा अनुभव होता मानो वह उन तत्वो को अपने भीतर छिपाए हो जो मेरे लिए आवश्यक थे या जो कम से कम अनावश्यक चीजो को मुझसे दूर रखते थे। वह एक ऐसा जीव था जो शब्दो द्वारा व्यक्त न की जा सकनेवाली पेचीदगी से भरा था, सही अर्थों मे विचारो का ज्वालामुखी। उन तमाम भावो और विचारो के बावजूद जो मेरे हृदय मे उसके लिए मौजूद थे, वह जसे मेरा ही अश था, एक ऐसा जीव जो मेरे अतर के किसी कोने मे निवास करता था, मेरे चिन्तन का केद्र, मेरी आत्मा का सहज साथी। कल वह विलीन हो जाएगा पूणतया विलीन हो जाएगा, मय उन सब बातो और भावनाओ के जो उसके हृदय और मस्तिष्क मे छाई थीं और जिनकी एक झलक मुझे उसकी सुदर आखो मे दिखाई देती थी। जब वह विलीन हो जाएगा, कुछ भी उसका शेष नहीं रहेगा, तो जीवन के उन सूत्रो मे से एक सूत्र खडित हो जाएगा जो मुझे इस दुनिया से बाधे हुए हैं, उसकी केवल एक स्मति भर रह जाएगी, लेकिन यह स्मति पूणतया मेरे ही अतर मे रहेगी, परिवतनहीन और सीमित, जब कि जीवित और परिवतनशील का कुछ भी शेष नहीं रहेगा

लेकिन यह विचार मात्र हैं, इनसे भी परे वह अनबूझ चीज है जिसके गभ मे विचार जम लेते, बढ़ते और पलते हैं, एक ऐसी चीज जिसका आदेश टाला नहीं जा सकता और जो हमे जीवन के घटनाक्रम पर सोचने

के लिए बाध्य करती है, और इस सवाल का जवाब मागती है कि क्यों, ऐसा क्यो है?

"ऐसा लगता है कि शीघ्र ही मुझे बिस्तर की शरण लेनी पड़ेगी," एक दिन जब कि बूदा बादी हो रही थी मेरे सौतले पिता ने कहा, "और मेरी इस कमजोरी की लाटसाहबी तो देखो, कोई काम करने को जी नहीं चाहता "

अगले दिन शाम को चाय के समय उसने मेज और अपने घुटनो पर से जूठन के कण साफ करने मे कमाल कर दिया, और देर तक इस तरह हाथो को हरकत देता रहा मानो किसी अदृश्य गदगी को भगाने और झाडने का प्रयत्न कर रहा हो। बूढी मालकिन ने पलको के नीचे से उसकी ओर देखा, और अपनी बहू से फुसफुसाकर बोली

"देख तो, किस तरह अपने परो और बालो को नोच और झाड पोछकर सवार रहा है "

इसके दो दिन बाद वह काम पर नहीं आया, और एक दिन बूढी मालकिन ने मुझे एक बडा सा सफेद लिफाफा देते हुए कहा

"यह ले, कल दोपहर के क़रीब एक लडकी इसे लेकर आई थी, पर मैं देना भूल गई। जवान, सुदर सी लडकी थी, जाने कौन लगती है तेरी!"

लिफाफे के भीतर, बडे-बडे अक्षरो मे, अस्पताली कागज पर निम्न सदेश लिखा था

"एकाध घटे का समय मिल सके तो आना। मै मरतीनोव्स्काया अस्पताल मे हू।—ये० म०"

अगले दिन सवेरे ही मैं अस्पताल पहुच गया और एक वार्ड मे अपने सौतेले पिता के पायताने जाकर बैठ गया। वह बिस्तर से भी लम्बा था, और उसके पाव जिनमे वह भूरे रग के मोजे पहने था, पलग के पायताने से बाहर निकले थे। उसकी खूबसूरत आखें पीली दीवारों का चक्कर लगातीं और मेरे चेहरे तथा उस लडकी के छोटे-छोटे नाजुक हाथों पर आकर टिक जातीं जो उसके सिरहाने एक स्टूल पर बैठी थी। उसने उसके तकिए पर अपने हाथ रख दिये और मेरा सौतेला पिता मुह बाए अपने गाल से उन्हें सहलाने लगा। लडकी गुदगुदे बदन की थी, और गहरे रग की सादी पोशाक पहने थी। उसके अडाकार चेहरे पर आंसुओं की झडी लगी थी

ग्रौर उसकी नीली ग्राखें सौतेले पिता के चेहरे पर, उसके गालो की बुरी तरह उभरी हड्डियो पर, पिचकी हुई नाक ग्रौर बेरग, मुर्दनी छाए मुह पर जमी थीं।

"अगर इस ग्राखिरी वक्त भगवान का नाम इनके कानो मे पड जाता," वह फुसफुसा रही थी, "लेकिन यह हैं कि पादरी का मुह तक नहीं देखना चाहते। इन्हे कोई कसे समझाए "

उसने तकिए से अपने हाथ उठा लिए ग्रौर उन्हे इस तरह अपनी छातियो पर रखा मानो भगवान की याद कर रही हो।

एक क्षण के लिए मेरे सौतेले पिता मे कुछ चेतना का सचार हुग्रा। भौंहें चढाकर उसने छत की ग्रोर ताका मानो किसी चीज की याद कर रहा हो। इसके बाद उसने अपना क्षयग्रस्त हाथ मेरी ग्रोर फला दिया।

"ग्रोह तुम? तुम ग्रा गए बहुत, बहुत शुक्रिया। देखो न क्या बेवकूफी की हालत है यह भी "

यह कहते-कहते वह थक गया ग्रौर उसने अपनी ग्राखें मूद लीं। नीले नाखून वाली उसकी लम्बी ग्रौर सद उगलियो को मैंने सहलाया ग्रौर लडकी ने धीमे स्वर मे फिर अनुरोध किया

"येव्गेनी वासील्येविच, मेरी खातिर मान जाग्रो! पादरी को "

सौतेले पिता ने ग्राखें खोलीं ग्रौर उसकी ग्रोर इशारा करते हुए मुझसे बोला

"इसे जानते हो? यह बहुत प्यारी "

उसकी जबान रुक गई, मुह ग्रौर भी ज्यादा खुल गया, ग्रौर एकाएक भरभराई सी ग्रावाज मे कौवे की भांति चीख उठा। वह बुरी तरह से छटपटाया, कम्बल उतरकर अलग हो गया ग्रौर पलग पर बिछे गद्दे को उसने अपने हाथो मे दबोच लिया। लडकी के हृदय से भी एक चीख निकली ग्रौर उसके कुचले हुए तकिए मे सिर गडाकर सुबकिया भरने लगी।

सौतेले पिता को मरने मे जरा भी देर नहीं लगी। बदन के ठडा पडते ही उसके चेहरे पर एक अदभुत शान्ति छा गई ग्रौर उसकी ग्राकृति का समूचा सौदय लौट ग्राया।

लडकी को अपनी बाह का सहारा दिए मैं अस्पताल से चल दिया। वह रो रही थी ग्रौर उसके पाव इस तरह लडखडा रहे थे मानो बहुत दिनो की बीमार हो। उसके हाथ मे एक रूमाल था जिसे दबा सिकोडकर

उसने गेंद बना लिया था, और रह रहकर उससे पहले एक आख के आसू सोखती थी और फिर दूसरी के। रूमाल के इस गेंद का उसका हाथ बराबर कस और दबोच रहा था, और इस तरह वह उसे सभाले थी मानो वह उसकी आखिरी और जान से भी ज्यादा प्रिय निधि हो।

एकाएक वह ठिठककर खडी हो गई और निढाल सी होकर मेरे बन्न से टिक गई। फिर वेदना और शिकायत मे डूबे स्वर मे बोली

"जाडो तक भी तो नहीं रहे आह मेरे भगवान, तूने यह क्या किया?"

इसके बाद आसुओ मे भीगा अपना हाथ उसने मेरी ओर बढाया और बोली

"अच्छा तो मै अब चलती हू। वे हमेशा तुम्हारी तारीफ करते थे। कल उनकी मिट्टी "

"चलिये, आपको घर तक छोड आऊ?"

उसने एक नजर इधर उधर देखा। फिर बोली

"क्या जरूरत है? अभी काफी उजाला है।"

नुक्कड पर रुककर मैंने उसे देखा। उसके डग बहुत ही अनमने भाव से सडक पर पड रहे थे, ऐसे इसान की तरह जिसे कहीं जाने की जल्दी न हो।

अगस्त का महीना था। पेडो से पत्ते झड रहे थे।

अपने सौतेले पिता के आखिरी क्रिया-कर्म मे मैं शामिल नहीं हो सका, और न ही उस लडकी से फिर कभी मेरी भेंट हुई

१७

हर रोज सुबह छ बजे ही मै मेले के मदान की ओर रवाना हो जाता, जहा मैं काम करता था। वहा काफी दिलचस्प लोगो से मेरी मुलाक़ात होती। सफेद बालो वाला बढ़ई ओसिप जिसकी जबान छुरी की धार की भाति तेज थी। वह बहुत ही होशियार कारीगर था और देखने मे बिलकुल सन्त निकोलाई मालूम होता था। कुबडा येफीमुश्का जो छत छाने का काम करता था, राजगीर प्योत्र जो पक्का भगत था, हमेशा कुछ सोचता रहता था और देखने मे भी किसी सन्त की भाति मालूम होता था। प्लस्तरकार

ग्रिगोरी शिशलिन खूबसूरत था सुनहरी दाढ़ी, नीली आँखें, और चेहरे पर शान्त तथा भले स्वभाव की चमक।

नवगानवीस के यहाँ अपनी नौकरी के दूसरे दौर मे ही मैं इन लोगो से परिचित हो गया था। हर इतवार को ये आते और बहुत ही रोबीले तथा ठाठदार अन्दाज मे रसोईघर मे प्रवेश करते। बहुत ही बढिया ढग से ये बातें करते और रसीले तथा लच्छेदार शब्दो की झडी लगा देते। उनकी बातो मे मुझे नयापन और अजीब ताजगी दिखाई देती। भारी भरकम डीलडौल वाले ये देहातिये मुझे सिर से पाव तक भले मालूम होते। ये सभी अपने अपने ढग से दिलचस्प थे और बुनाविनो के कमीने, नशेबाज तथा चोर टुटपुंजिया से लाख दर्जे अच्छे थे।

उन दिना प्लस्तरकार शिशलिन मुझे सबसे अच्छा लगता था। एक दिन तो मैंने उससे यह तक कहा कि काम सिखाने के लिए मुझे अपना शागिद बना ले। लेकिन उसने मजूर नहीं किया। गोरी चिट्टी उगली से अपनी सुनहरी भौंह को खुजलाते हुए नर्मी से बोला

"अभी तेरी उम्र बहुत कम है। हमारा धधा आसान नहीं है, अभी एक-दो साल और ठहर जा "

इसके बाद अपने खूबसूरत सिर को जरा पीछे की ओर फेंकते हुए बोला

"क्यो, जीवन बहुत कठोर मालूम होता है, क्या? लेकिन कोई बात नहीं। बस डटा रह, अपने पर जरा काबू रख, सब ठीक हो जाएगा!"

यह तो नहीं कह सकता कि उसकी इस भली सीख से क्या कुछ लाभ मैंने उठाया, लेकिन मुझे अब तक सीख याद है और उसके प्रति कृतज्ञता से मेरा हृदय भरा है।

यह लोग हर रविवार की सुबह अब भी मेरे मालिक के घर जमा होते, रसोईघर मे मेज के चारो ओर बेंच पर बठ जाते और दिलचस्प बातें करते हुए मालिक के आने का इन्तजार करते। मालिक आता, बहुत खुश होकर उनका अभिवादन करता, उनके मजबूत हाथो को अपने हाथ मे लेकर हिलाता और देव प्रतिमाओ वाले कोने मे बेंच पर बठ जाता। इसके बाद सप्ताह भर का हिसाब किताब शुरु हो जाता, नोटो की गड्डिया आतीं, देहातिये अपने बिलो और फटी पुरानी बहियो को निकालकर मेज पर फला लेते।

हसते और चुटकिया लेते हुए मालिक उन्हें और वे मालिक को धोखा देने की कोशिश करते। कभी-कभी खूब झिकझिक होती, लेकिन आम तौर से हसी-खुशी और एक दूसरे के साथ छेडछाड के वातावरण मे ही वे सारा हिसाब निवटा लेते।

"वाह प्यारे, मालूम होता है कि किसी बहुत ही चालाक दाई ने तुम्हे घुट्टी पिलाई थी!" वे मालिक से कहते।

झेंपती सी हसी हसते हुए वह जवाब देता

"तुम्हीं कौन कम हो—जरा आख बची कि माल यारो का! क्यों, ठीक कहता हू न, कुडक मुर्गो!"

येफीमुश्का मान लेता, "और हो भी क्या सकता है, दोस्त?"

गम्भीर प्योत्र कहता

"चोरी से कमाये-बचाये माल पर ही तो आजकल गुजारा है। ईमानदारी की सारी आमदनी तो खुदा और जार के चढावे मे चली जाती है"

"तब तो तुम्हारी थोडी-बहुत हजामत बना लेना कोई पाप नहीं है!" मालिक हसते हुए कहता।

वे भी मजाक में ही जवाब देते

"इसका मतलब कि हमको उल्लू बनाना चाहते हो?"

"हमसे चार सौ बीसी!"

ग्रिगोरी शिशलिन अपनी झाड्दार दाढी छाती से लगाते हुए गुनगुनाकर अनुरोध करता

"क्यो भाइयो, अगर हम एक दूसरे को धोखा दिए बिना अपना कारबार करें तो कसा हो? एक्दम ईमानदारी से। न कोई झझट, न झगडा। सारा काम इतनी सहूलियत से हो कि पता तक न चले। बोलो, भले लोगो, तुम्हारी क्या राय है इस बारे मे?"

यह कहते-कहते उसकी नीली आंखें तरल और गहरी हो उठतीं। इस समय उसके चेहरे की चमक देखते ही बनती थी। उसका सुझाव सभी को मानो उलझन मे डाल देता और एक-दूसरे से आंखें बचाते वे इधर-उधर देखने लगते।

सलौना सा ओसिप सास खींचते हुए और तरस सा खाते हुए देहातियो की वकालत में बुदबुदाता, "देहातियो की बात छोडो, वे अगर चाहें तो भी लोगों को ज्यादा धोखा नहीं दे सकते।"

काला और गोल चेहरे वाला राज झुककर मेज पर दोहरा होते हुए कहता

"पाप तो गहरी दलदल है, उसमे पाव रखा नहीं कि आदमी धसता ही जाता है!"

मालिक भी उनके ही अदाज को अपनाते हुए जवाब देता

"मैं तो अपनी सारगी के स्वर तुम्हीं लोगो की आवाज के साथ फिट करता हू "

कुछ देर तक ये इसी तरह फलसफा झाडते रहते और इसके बाद फिर एक-दूसरे को चकमा देने पर उतर आते। हिसाब किताब निबट जाने पर वे उठते, थके हुए से और पसीने म सराबोर, और चाय के लिए ढाबे की ओर चल देते। साथ मे मालिक को भी खींच ले जाते।

मेले मे मेरा काम इस बात की निगरानी रखना था कि ये लोग कील काटे, ईटें और इमारती लक्डी चुराकर न ले जाए। कारण कि मेरे मालिक के साथ काम करने के अलावा इन लोगो ने खुद भी ठेके ले रखे थे और जब भी उन्हें मौक़ा मिलता आखो मे धूल झोककर माल तिडी कर देते थे।

मेरे साथ वे बडे प्यार से पेश आये। पर शिशलिन ने कहा

"क्यो तुझे याद है, तू काम सीखने के लिए मेरा शागिद बनना चाहता था? अब देख, तू कहा पहुच गया, मेरा साहब बनेगा, हैं?"

"ठीक है, ठीक है," ओसिप ने चुटकी ली, "कर जी भर कर चौकसी।"

प्योत्र के स्वर मे तीखापन था। बोला

"सवाल यह है कि इस जवान सारस को बूढ़े चूहो की निगरानी पर क्यो रखा गया? "

मेरी जिम्मेदारियो से मुझे बुरी तरह उलझन होती। इन लोगो के सामने मुझे शम मालूम होती। मैं इन को अपने से बडा और किसी ऐसे रहस्य और ज्ञान का धनी समझता था जो मेरे लिए दुलभ था। फिर भी मुझे उनकी इस तरह चौकसी करनी पडती मानो वे चोर और उचक्के हो। शुरू-शुरू मे तो यह काम मुझे एक बहुत बडा बवाल मालूम होता। मेरी समझ मे न आता कि कसे क्या करू। लेकिन शीघ्र ही ओसिप ने मेरी उलझन का अदाज लगा लिया और एक दिन अकेले मे मुझसे बोला

"सुन, छोकरे, तू मुह-मुह मत पूछा, इससे कुछ होने का नहीं, समझा?"

मेरी समझ मे कुछ नहीं आया, सिवा इसके कि यह की दस आर्खें मेरी स्थिति के बेढगेपन को समझती हैं। नतीजा इसका यह कि देखते न देखते हम एक दूसरे से खूब खुलकर बातें करने लगे।

वह मुझे अलग किसी कोने मे सीख दिया करता

"अगर तू जानना ही चाहता है तो सुन, राज प्योत्र हम सब से बड़ा चोर है। एक तो वह लालची है, दूसरे उसके कधो पर काफी बडे परिवार का बोझ है। उसपर कडी निगाह रखना। हर चीज पर वह हाथ साफ करता है—और कुछ न होगा तो मुट्ठी भर कीलें जेब मे डाल लेगा, दस-पाच ईंटें खिसका देगा, पोटली मे बाधकर चूना मिट्टी तिडी कर देगा। कोई चीज ऐसी नहीं जिसे वह छोडता हो! वसे आदमी बहुत भला है भगतो जसा उसका स्वभाव है, पढ़ना लिखना जानता है, लेकिन चोरी का ऐसा चस्का पडा है कि पीछा नहीं छोडता! अब येफीमुश्का को ही देख—उसके लिए औरतो मे ही सब कुछ है। और है गऊ सा सीधा, तुझे उससे कोई खतरा नहीं। दिमाग़ भी उसका तेज है। कुबडे वसे सभी दिमाग़ के तेज और खूब चतुर होते हैं! और ग्रिगोरी शिशलिन—वह कुछ सनकी दिमाग़ का है। दूसरो की चीजें लेना दूर, वह उन चीजो को भी अपने कब्जे मे नहीं रख पाता जो उसकी अपनी हैं! उसे सब बेवकूफ बना सकते हैं, लेकिन वह किसी को बेवकूफ नहीं बना सकता! उसका हर काम बेतुका होता है"

"क्या वह भला आदमी है?"

ओसिप ने आखें सिकोडकर इस तरह मुझे देखा मानो बहुत दूर से देख रहा हो, और इसके बाद उसने ऐसे शब्द कहे जो कभी नहीं भूले जा सकते

"हा, वह भला आदमी है! काहिल लोगो के लिए भला बनना सबसे आसान काम है। समझे बचुआ, दिमाग़ी पूजी का जब दिवाला निकल जाता है, तभी आदमी भला बनता है!"

"और अपने बारे मे तुम क्या कहते हो?" मैंने उससे पूछा।

हल्की सी हसी के साथ उसने जवाब दिया

"अपने बारे मे तो मैं एक लडकी की भाति कहता हू सफेद बाल

ग्रौर एकाध दरजन नाती-पोते हो जाने के बाद जब मै नाना बन जाऊगा, तब तुझे बताऊगा कि मैं कसा था! तब तक तुझे इतजार करना होगा। या फिर अपने दिमाग से काम ले ग्रौर पता लगा कि मैं कसा हू। मेरी ग्रोर से तुझे पूरी छूट है!"

उसने मेरे उन तमाम ग्रन्दाजो को उलट-पुलट कर दिया जो मैंने उसके ग्रौर दूसरा के बारे मे लगा रखे थे। उसने जो कुछ बताया था, उसमे सन्देह करने की गुजाइश नहीं थी। मैं नित्य देखता कि येफीमुश्का, प्योत्र ग्रौर ग्रिगोरी भी इस खूबसूरत बूढे को ग्रपने से ज्यादा चतुर ग्रौर दुनियावी मामलो का जानकार समझते हैं। वे हर बात ग्रौर हर मामले मे उससे सलाह लेते। उसकी बातो को ध्यान से सुनते ग्रौर हर तरह से उसका मान करते।

"जरा बताग्रो तो सही कि इस मामले मे हम क्या करें," वे उससे ग्रक्सर कहते ग्रौर वह ग्रपनी सलाह देता। लेकिन ऐसे ही एक दिन ग्रपनी सलाह देने के बाद जब ग्रोसिप चला गया तो राजगीर ने ग्रिगोरी से दबे स्वर मे कहा

"नास्तिक है, नास्तिक!"

ग्रौर ग्रिगोरी ने हसते हुए जोड दिया

"मसखरा है, पूरा मसखरा!"

प्लस्तरकार ने दोस्ती का भाव जताते हुए मुझे चेताया

"मक्सीमिच, कहीं इस बूढ़े के चक्कर मे न फस जाना। उससे बहुत होशियार रहने की जरूरत है। पलक झपकते ही वह तुझे चकमा दे जायेगा! इन खूसट बूढो से भगवान ही बचाए!"

मेरी समझ मे कुछ नहीं ग्राता।

मुझे ऐसा मालूम होता कि राज इनमे सबसे ग्रधिक ईमानदार ग्रौर नेक था। वह हमेशा थोडे मे बात करता ग्रौर उसके शब्द सीधे हृदय मे पठ जाते। उसके विचार बहुतकर भगवान, मौत ग्रौर नरक के चारो ग्रोर मडराते रहते।

"ग्राह भाइयो, ग्रादमी चाहे जितने हाथ-पाव मारे ग्रौर चाहे जितने मनसूबे बाधे, ग्राखिर डेढ हाथ कफन ग्रौर इस धरती की मिट्टी की उसे शरण लेनी पडती है!"

यह पेट के किसी रोग का शिकार था। कभी-कभी तो ऐसा होता कि कई-कई दिन बीत जाते और वह मुह मे एक दाना तक न डालता, अगर जरा सा कण भी उसके पेट मे चला जाता तो दद के दौरों और मतलिया के मारे उसका बुरा हाल हो जाता।

कुबडा येफीमुश्का भी भला और ईमानदार मालम होता था, लेकिन था कुछ बेढाल का बूदम, और कभी-कभी अपने आप को एकदम अल्लाह मियां पर छोडकर इस तरह घूमता मानो उसने होश-हवास खो दिए हों। वह हमेशा किसी न किसी स्त्री के प्रेम मे पागल रहता और इन स्त्रियों मे से हरेक का समान शब्दो मे वणन करता

"मैं झूठ नहीं बोलता, औरत नहीं, एकदम मलाई का फूल है, चिकना और मुलायम!"

जब कुनाविनो की मुहजोर स्त्रिया दुकानो के फश धोने आतीं तो येफीमुश्का छत से नीचे उतर आता और किसी कोने मे खडा होकर अपनी चमकदार आखो को यह कसकर सिकोड लेता और उसका मुह, प्रसन्नता मे, इस कान से उस कान तक फल जाता। मगन भाव से वह बुदबुदाता

"आह, कितने रसीले निवाले भगवान ने मेरे माग मे छितरा दिए हैं। जीवन का सुख मानो अपने आप उमडता हुआ मेरी ओर चला आ रहा है। जरा उसे देखो, कितना बेजोड फूल है। समझ मे नहीं आता कि किन शब्दा मे मैं अपने इस भाग्य की सराहना करू जिसने इतना बढ़िया उपहार मुझे भेंट किया है! इसका सौदय क्या है मानो चिगारी है जो जल्दी ही मुझे भस्म कर डालेगी!"

यह सुन स्त्रिया खिलखिलाकर हसतीं और एक-दूसरे को टहोका मारते हुए कहतीं

"हाय राम, इस कुबडे को तो देखो, क्या गलगल हुआ जा रहा है!"

उनके इन मजाको का उसपर कोई असर न होता। उभरे हुए गालो वाला उसका चेहरा धीरे धीरे उनींदा सा हो जाता, अपनी आवाज पर जसे उसका कुछ काबू न रहता और रसीले शब्दो की मदमत्त धारा उसके मुह से प्रवाहित होने लगती। स्त्रियो पर एक नशा सा छा जाता और अन्त मे बडी आयु की कोई स्त्री अचरज मे भरकर कह उठती

"अरी देखो तो छबीला कैसे तड़फ रहा है!"
"वाह, क्या चहक रहा है"
पर कोई अड़ियल अड़ी रहती
"या कोई भिखारी गिरजे के दरवाजे पर भीख माग रहा हो।"
लेकिन येफीमुश्का भिखारी जरा भी नहीं मालूम होता। मजबूत तने की भाति उसके पाव दृढ़ता से धरती पर जमे होते, उसकी आवाज का जादू हर घड़ी फैलता और बढता जाता और उसके शब्दो का मोहिनी मत्र अपना पूरा जोर दिखाता। स्त्रियो का बोलना बद हो जाता और वे ध्यान से सुनतीं। ऐसा मालूम होता मानो शहद मे लिपटे अपने शब्दो से वह कोई मोहक जाल बुन रहा है।
और परिणाम होता कि रात के भोजन के समय या जब सब काम खत्म कर चुके होते, तब अपना भारी चौकोर सिर हिलाते हुए और अचरज मे भरकर अपने साथियो से कहता
"आह कितनी प्यारी, कितनी मीठी औरत एकदम शहद! जीवन मे पहली बार इतनी मिठास देखी!"
स्त्रियो को अपने वश मे करने के किस्से जब वह सुनाता तो अन्य लोगो की भाति न तो वह शेखी बघारता और न उन स्त्रियो का मजाक उडाता। केवल उसकी आखें प्रसन्नता तथा कृतज्ञतापूर्ण अचरज के भाव से खुली की खुली रह जातीं।
सिर हिलाते हुए ग्रोसिप कहता
"वाह, आदम की औलाद, जरा बता तो तेरी उम्र कितनी हो गयी?"
"चार ऊपर चालीस। लेकिन उम्र से क्या होता है? आज तो मेरी उम्र मानो पाच साल घट गई। आज मैंने वैतरणी मे गोता लगाया है और जीता-जागता तुम्हारे सामने मौजूद हू। मेरा हृदय फूल की भाति खिला है। और भगवान ने औरत को भी खूब बनाया है!"
राज ने कड़े स्वर मे कहा
"मेरी बात गाठ-बाध ले,—अभी भले ही तुझे हरियाली दिखाई दे, लेकिन पचास पार करते ही तेरी यह हरकते तुझे खून के आसू रुलाएगी!"
ग्रिगोरी शिशलिन ने भी लम्बी सास खींची
"तूने तो बेशर्मी की हद कर दी, येफीमुश्का!"

मुझे लगा कि अपने मुकाबिले मे कुबडे को बाजी मारते देख खूबसूरत शिशलिन अब अपने जी की जलन मिटा रहा था।

ओसिप ने अपनी मुडी हुई रपहली भौंहो के नीचे से झाककर सबपर एक नजर डाली। हसते हुए बोला

"हर छोरी की अपनी कमजोरी, एक मागे चम्मच-प्याला, दूसरी कहे कपडा-लत्ता सा, कोई चाहे जेवर-गहना, बुढ़िया सबको होकर रहना।"

शिशलिन विवाहित था। लेकिन उसकी पत्नी देहात मे रहती थी। फर्श साफ करनेवाली स्त्रियो को देखकर उसका मन भी ललक उठता। उन्हे पाना कुछ मुश्किल न था। कारण कि उनमे से प्रत्येक कुछ फालतू आय की खातिर खिलौना बनने के लिए तैयार थी। भूख मारी इस बस्ती मे आमदनी का यह तरीका भी उसी तरह चालू था जसे कि अन्य। लेकिन वह खूबसूरत देहातिया स्त्रिया को हाथ नहीं लगाता था, चेहरे पर एक अजीब भाव लिए वह उन्हें दूर से ही यो देखता रहता था, मानो उसे उनपर या अपने पर तरस आ रहा हो। और जब वे खुद उससे छेडछाड करतीं या उसे उकसाना शुरू करतीं तो वह झेंप जाता और हसकर टालता हुआ चला जाता

"अरे यह क्या, देखो न "

येफीमुश्का को उसकी इस हरकत पर एकाएक विश्वास न होता। उसे कोचता हुआ कहता

"तू आदमी है या घनचक्कर? इतना अच्छा मौका भी भला कोई अपने हाथ से जाने देता है?"

ग्रिगोरी अपनी सफाई देता, "भाई मेरे, मैं शादीशुदा आदमी हू।"

"तो इससे क्या हुआ? उसे सपने मे भी इसका पता नहीं चलेगा।"

"घरवाली को धोखा नहीं दिया जा सकता, भाई! अगर मर्द इधर उधर मुह मारता है तो घरवाली इसका हमेशा पता लगा लेती है!"

"सो कसे?"

"यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन अगर खुद उसके आचल मे कोई दाग नहीं लगा है तो वह जरूर पता लगा लेगी। इसी तरह अगर मैं पाक साफ रहता हू और मेरी घरवाली बदकारी पर उतर आती है, तो मुझे इसका पता लग जाएगा "

"सो कसे?" येफीमुश्का फिर चिल्लाकर पूछता।

ग्रिगोरी शान्त स्वर मे बोला

"यह मैं नहीं जानता "

येफीमुश्का ऊब उठता। हाथ हिलाते हुए कहता

"भला यह भी कोई बात हुई पाक साफ नहीं जानता तू आदमी है या घनचक्कर!"

शिशलिन की देख रेख मे कुल मिलाकर सात मजदूर काम करते थे। उसके साथ उनके सबध मालिक-नौकर के से नहीं, बल्कि अधिक सरल थे। पीठ पीछे वे उसे बछिया का ताऊ कहते। जब वह आता और देखता कि उसके आदमी काम मे ढील कर रहे हैं तो वह करनी उठाता और ऐसी लगन से काम मे जुट जाता कि देखते ही बनता। साथ ही मुलायम आवाज मे कहता जाता

"लगा दो तेज हाथ, प्यारो, तेज-तेज हो जाओ!"

एक दिन अपने मालिक के उतावलेपन और कोचने से मजबूर होकर मैंने ग्रिगोरी से कहा

"तुम्हारे ये मजदूर बिल्कुल निठल्ले हैं!"

यह सुन वह मानो कुछ अचरज मे पड गया। आखें फाडकर बोला

"क्या सचमुच?"

"हा, यह काम कल दोपहर तक खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन मालूम होता है कि आज भी पूरा नहीं होगा "

"यह बात तो ठीक है। वे इसे आज भी पूरा नहीं कर सकेंगे," उसने सहमति प्रकट की और फिर कुछ रुककर हिचकिचाते हुए बोला

"मेरे क्या आखें नही हैं? मैं भी सब देखता और जानता हू। लेकिन मैं उन्हे डडे से नहीं हाक पाता। मुझे शम मालूम होती है। ये सब अपने ही तो लडके हैं और अपने ही गाव के। प्रभु ने आदम से कहा था जा, अपनी एडी चोटी का पसीना बहा और अपना पेट भर! हम सब के लिए प्रभु ने यह आदेश दिया था। क्यो ठीक है न? कोई भी इस आदेश से बरी नहीं है, न मै, न तू। लेकिन तू और मैं उनके मुकाबिले कम मेहनत करते हैं। इसी लिए मुझे शम मालूम होती है। मैं उन्ह डडे से नहीं हाक सकता "

वह हर घडी कुछ न कुछ सोचता रहता। कभी-कभी ऐसा होता कि उसे पता तक न चलता और मेले के मदान की सूनी सडको मे से किसी

एक को पार करता हुआ वह ओवयोदनी नहर के पुल पर पहुच जाता और वहां रेलिंग पर झुका हुआ घटों पानी की ओर ताकता, आकाश अथवा ओका नदी के पार खेत-खलिहानो पर नजर डालता रहता। उसके पास आकर अगर पूछा जाता

"यहां क्या कर रहे हो?"

तो वह चौंक उठता और सकपकाकर मुसकरा देता, "अरे, कोई खास बात नहीं यो ही जरा सुस्ताने और इधर-उधर का नजारा देखने के लिए खडा हो गया था "

वह अक्सर कहता

"भगवान ने भी हर चीज क्या ठीक ठिकाने से बनाई है। आसमान और यह धरती जिसपर नदिया बहती हैं और नदियो मे डोगे, नाव और बजरे तरते हैं। उनमे बठकर चाहे जहां चले जाओ—रियाजान, रीबिन्स्क, पेम या आस्त्रखान। एक बार मैं रियाजान गया था। नगर बुरा नहीं है, लेकिन उदासी मे डूबा हुआ,—नीज्नी नोवगोरोद से भी ज्यादा उदास। हमारा नीज्नी तो फिर भी मजे की जगह है। और आस्त्रखान? वह और भी मनहूस है। कल्मीक जाति के लोग वहा बहुत हैं। मुझे वे जरा भी अच्छे नहीं लगते। कल्मीक हो, चाहे मोरदोवियाई, तुर्क हों चाहे जमन, ग़ैर देशो मे जन्मे सभी लोग मुझे बेकार की बला मालूम होते हैं "

वह बहुत धीरे धीरे बोलता। उसके शब्द मानो सावधानी से डग रखते किसी ऐसे आदमी को ढूढ़ रहे हो जो उससे सहमत हो सके। राज प्योत्र ऐसा ही आदमी था जो आम तौर से उसीके स्वर मे स्वर मिलाता था।

"ग़ैर देशो मे जन्मे नहीं, बैरी देश मे जन्मे कहो," प्योत्र गुस्से मे विश्वासपूवक कहता, "ईसा के बरी, बरी धम के "

ग्रिगोरी का चेहरा खिल उठता

"कुछ भी कहो, मुझे तो भाई, खालिस रूसी खून पसन्द है, सीधा और सच्चा, मिलावट का जिसमे नाम नहीं। यहूदी भी मुझे बेकार लगते हैं। मैंने तो बहुतेरा सिर मारा, लेकिन मेरी समझ मे नहीं आया कि भगवान ने इन ग़र जातियो को क्यो पदा किया? जरूर इसमे कोई गहरा राज है "

राज भुनभुनाता

"हो सकता है कि इसमे कोई गहरा राज हो, लेकिन फिजूल चीजो की भी कमी नहीं है!"

ओसिप से नहीं रहा गया। तीखे शब्दों मे धज्जियां बखेरता हुआ बोला

"फालतू चीजें तो बहुत हैं। तुम्हारी ये बातें ही फालतू हैं। वाह रे, पंछियो। तुम्हारा यह बचपना कोड़े मार-मारकर निकालना चाहिए!"

ओसिप सबसे अलग रहता, और कभी यह जाहिर न होने देता कि उसका किससे विरोध है और किससे सहमति। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता कि वह उदासीनतापूर्वक हर बात और हर आदमी से सहमत है। लेकिन अक्सर सभी लोगों से तंग और उकताया हुआ नजर आता और सभी को एक सिरे से मूर्ख समझता।

"तुम एह तुम तुम सूअर की औलाद हो!" वह प्योत्र, ग्रिगोरी और येफीमुश्का, सभी को एक ही पेटे मे लपेटता।

सुनकर वे एक लघु हंसी हंसते, न तो बहुत प्रसन्नता से और न बहुत उछाह से, लेकिन हंसते जरूर।

मालिक खुराक के लिए मुझे पांच कोपेक रोज देता था। इसमे पूरा न पड़ता और मैं अक्सर भूखा रह जाता। यह देखकर कारीगर दोपहर और सांझ का भोजन करते समय मुझे भी बुला लेते और कभी-कभी ठेकेदार चाय पीने के लिए मुझे अपने साथ भटियारखाने मे ले जाते। मैं उनके बुलावों को खुशी से मंजूर कर लेता और उनके बीच बैठकर उनकी अलस बातों और अनोखे क़िस्सों को मजे से सुनता। धार्मिक पुस्तकों की मेरी जानकारी सुनकर वे बहुत खुश होते।

"पुस्तकों से तेरा पेट गले तक अटा है और अब फटा ही चाहता है!" अपनी नीली आंखों से मुझे बींधते हुए ओसिप कहता। उसकी आंखों का भाव पकड़ मे नहीं आता था। ऐसा मालूम होता मानो उसकी पुतलियां पिघलकर आंखों की सफेदी के साथ एकाकार होती जा रही हों।

"जो हो, अपने ज्ञान को बटोर और सजोकर रखना, उसे जाया न होने देना। वक्त पर काम आएगा। बड़े होने पर तू संन्यासी बन सकता है। लोगों को सान्त्वना देना और उनके दुखते हृदयों पर मधुर शब्दों से मरहम लगाना। या फिर तू धनपति बन जाना "

"धनपति नहीं, धर्मपति!" राज ने, न जाने क्यों, चोट खाई हुई सी आवाज मे कहा।

"क्या?" ओसिप ने पूछा।

"धनपति नहीं, उन्हें धमपति कहते हैं। जानता तो है तू और बहरा भी नहीं "

"अच्छी बात है, धमपति बनकर नास्तिकों और धम द्रोहियों की दुम उखाडना। या फिर खुद धम द्रोहियो की पात मे शामिल हो जाना। यह भी बुरा नहीं रहेगा। असल चीज़ तो दिमाग़ है! अगर तू उसमे काम लेगा तो धम द्रोह मे भी बहुत कुछ पदा कर लेगा और मजे से जीवन बिता सकेगा "

ग्रिगोरी अचकचाकर खिसियानी सी हसी हसता और प्योत्र अपनी दाढ़ी मे बुदबुदाता

"झाड फूक करनेवाले भी तो मजे मे रहते हैं और दूसरे धम द्रोही भी "

"लेकिन ओझा पढ़े लिखे नहीं होते,– ज्ञान से उनका भला क्या वास्ता?" आसिप जवाब देता और फिर मेरी ओर मुह करते हुए कहता

"सुन, मैं तुझे एक क़िस्सा सुनाता हू। किसी जमाने में हमारे गाव मे एक अकेला आदमी रहता था। तुश्निकोव उसका नाम था। यों ही बेकार सा आदमी था, जिसे कोई नहीं पूछता था। जिधर हवा ले जाता, सूखे पत्ता सा उधर ही उडकर जा गिरता। न तो वह मजदूर था, और न आवारा! एक दिन जब और कुछ नहीं सूझा तो तीर्थ-यात्रा के लिए निकल पडा। पूरे दो साल तक उसकी शक्ल नहीं दिखाई दी। इसके बाद एकाएक जब वह लौटा तो उसका हुलिया ही एकदम बदला हुआ था– कधो तक लटके बाल, पादरियो जसी गोल टोपी चिन्दिया से चिपकी हुई, बदन पर झूल सा लटकता हुआ दोसूती का लबादा। चिगारिया छोडती नजर से वह लोगो को बींधता और चीखकर बार-बार कहता–'अपने पाप कबूल करो लोगो, कबूल करो!' और कबूल करनेवाले लोगा, खास तौर से स्त्रियो की बाढ उमड पडती। इस बाढ को भला कौन रोकता? उसने दोनो हाथो से चादी बटोरी। तुश्निकोव को खाना मिला। तुश्निकोव को शराब मिली। तुश्निकोव को लुगाइया मिलीं, जिसपर नजर डालता, वही उसके सामने बिछ जाती "

"भोजन और शराब से कुछ नहीं आता जाता," राज ने बीच मे ही झुझलाकर टोका।

"तो फिर किस चीज़ से आता जाता है?"

"असल चीज है शब्द – वाणी!"

"उसके शब्दो को तो मैंने उलट-पुलट कर नहीं देखा। यो शब्द तो मेरे दिमाग की पिटारी मे भी भरे पड़े हैं।"

"उस दमीत्री वासील्येविच तुर्गिनकोव को हम अच्छी तरह जानते है," आहत स्वर मे प्योत्र ने कहा और ग्रिगोरी ने चुपचाप अपनी आखें झुका लीं और चाय के गिलास की ओर देखता रहा। ओसिप समझौते के स्वर मे बोला

"बहस मे पड़ने का मेरा इरादा नहीं है। मैं तो एक मिसाल देकर मक्सीमिच को केवल रोटी रोजी कमाने के रास्ते बता रहा था"

"जिनमे से कुछ सीधे जेल की हवा खिलाते हैं!"

"कुछ क्यो, बल्कि ज्यादातर," ओसिप ने सहमति प्रकट की। "सभी रास्ते सन्तपन की ओर नहीं ले जाते, यह भी पता होना चाहिए कि कहा मुड़ना है"

प्लस्तरकार या राज जैसे भगत लोगो के प्रति उसके व्यवहार मे व्यग का कुछ पुट मिला रहता। शायद वह उन्हे पसद नहीं करता था, लेकिन वह इतना चौकस था कि अपने भावो को प्रकट नहीं होने देता था। मोटे तौर से यह कि लोगो के प्रति उसके रवये का पता लगाना कठिन था।

येफीमुश्का के साथ वह ज्यादा नर्मी और मुलामियत से पेश आता जो अपने अन्य साथियो की भाति मानव जीवन के अभिशापो, पाप पुण्य, भगवान और विभिन्न पथो से सम्बधित बहसो मे हिस्सा नहीं लेता था। वह कुर्सी की पीठ मेज की ओर आड़ी करके बैठ जाता ताकि उसका कूबड़ कुर्सी की पीठ से रगड़ न खाए, और एक के बाद एक चाय के गिलास खाली करता रहता। फिर, एकाएक चेतन और चौकन्ना होकर वह अपनी आंखें उठाता और सिगरेट का धुआ भरे कमरे मे इधर उधर देखकर कुछ खोजता हुआ सा नजर आता। उसके कान खड़े हो जाते और भाति भाति की आवाजो के बीच वह कुछ सुनने का प्रयत्न करता। अन्त मे वह उछलकर खड़ा होता और तेजी से गायब हो जाता। यह इस बात का सूचक था कि भटियारखाने मे किसी ऐसे आदमी का आगमन हो गया है जिससे येफीमुश्का ने कर्ज ले रखा था। ऐसे कोई दजन एक लोग थे, उनमे तो कुछ तो ऐसे थे जो मारपीट के जरिये अपना कर्ज वसूल करने के आदी थे। इसलिए वह हमेशा भागता नजर आता था।

"हूँ नहीं घनचक्कर, नाराज होते हैं," वह अचरज मे भरकर कहता। "इतना भी नहीं समझते कि अगर मेरे पास पैसा होता तो मैं अपने आप खुशी से अदा कर देता!"

"ओह, कुत्ते की दुम!" ओसिप ढेला सा फेंककर मारता।

कभी-कभी येफीमुश्का विचारों मे खोया बैठा रहता। न वह कुछ देखता, न सुनता। उसका उभरे हुए गालो वाला चेहरा ढीला पड जाता और उसकी भली आखें और भी भली हो उठतीं।

"किस सोच मे पड़े हो मित्र?" वे उससे पूछते।

"मैं सोच रहा हू कि अगर मैं धनी होता तो असली, सचमुच में भली किसी कर्नल की लडकी या ऊचे कुल की ऐसी ही किसी औरत से शादी करता और सच, मैं उससे इतना प्रेम करता कि तुम सोच तक नहीं सकते! भगवान जाने, उसका स्पर्श पाकर उसके प्रेम की आग में मैं वैसे ही जलता जैसे कि मोमबत्ती जलती है यकीन न हो तो सुनो। एक बार देहात मे किसी कर्नल ने घर बनवाया और इस घर पर नयी छत डालने का काम उसने मुझे सौंपा। इस कर्नल की एक "

"बस-बस, रहने दे!" प्योत्र ने मुसकाकर बीच मे ही टोका। "इस कर्नल और उसकी विधवा लडकी का सारा किस्सा हमे मालूम है। उसे सुनते-सुनते कान पक गए।"

लेकिन येफीमुश्का पर इसका कोई असर न पडता। हथेलियो से अपने घुटनो को सहलाते और बदन को आगे-पीछे की ओर झकोले देते समय हवा को अपने कूबड से छितराते हुए वह कर्नल की लडकी का क़िस्सा सुनाता

"वह अक्सर बगीचे मे निकल आती, एकदम सफ़ेद बुर्राक कपडे पहने, गुदगुदी और मुलायम। मै छत पर से उसे देखता और मन ही मन सोचता यह सूरज और यह सारी दुनिया, सब इसके सामने हेच हैं। अगर मै कबूतर होता तो उडकर उसके पास पहुच जाता! वह फूल थी, मलाई के कुण्ड मे उगनेवाला प्यारा और मीठा कमल! आह, भाइयो, ऐसी स्त्री मिले तो समूचा जीवन एक लम्बी सुहाग रात बन जाए!"

"ठीक है। फिर खाने-पीने की भी कुछ जरूरत नहीं रहेगी?" प्योत्र रूखे स्वर मे कहता। लेकिन प्योत्र का यह वार भी खाली जाता। येफीमुश्का अपनी ही धुन मे कहता

"हे भगवान, लोग कुछ नहीं समझते। पेट भरने के लिए हमे क्या रोटियो के पहाड की जरूरत होगी? फिर, बडे घर की लडकी के लिए धन की क्या कमी? "

ग्रोसिप हसकर कहता

"अरे रसिक येफीमुश्का! तेरी इन्द्रिया कब जवाब देंगी?"

येफीमुश्का स्त्रियो के सिवा अन्य किसी चीज के बारे मे बात नहीं करता, और जमकर काम करना उसके बस का रोग नहीं था। कभी वह फुर्ती से और अच्छा काम करता और कभी एकदम बेगार काटता। उसके हाथ ढीले पड जाते और अपनी लकडी की पटिया को इतने उल्टे-सीधे ढग से चलाता कि छत मे दरारें छुट जातीं। वह हमेशा ब्लबर-तेल से गधाता, लेकिन उसकी एक अपनी प्रकृत गध भी थी, सुहावनी और स्वस्थ गध, बहुत कुछ वसी ही जसी कि ताजे कटे हुए पेड से आती है।

ग्रोसिप हर चीज और विषय पर बाते करता था और उसकी बातें सुनने मे बडा मजा आता। उसकी बातें मजेदार होतीं, लेकिन भली नहीं। उसके शब्द हमेशा कोई कुरेद पदा करते और यह समझना कठिन हो जाता कि वह अपनी बात मजाक मे कह रहा है अथवा गम्भीर होकर।

ग्रिगोरी भगवान के बारे मे बडे चाव से बातें करता। यह उसका प्रिय विषय था। भगवान से वह प्रेम करता था और उसमे उसका गहरा विश्वास था। एक दिन मैंने उससे पूछा

"ग्रिगोरी, क्या तुम जानते हो कि इस दुनिया मे ऐसे लोग भी हैं जो भगवान मे विश्वास नहीं करते?"

वह लघु हसी हसा

"सो कसे?"

"वे कहते हैं कि भगवान जसी कोई चीज नहीं है।"

"ठीक, मैं जानता हू।"

उसने अपना हाथ इस तरह हिलाया मानो किसी अदृश्य मक्खी को उडा रहा हो। फिर बोला

"राजा दाऊद का वह कथन याद है? उन्होंने कहा था 'मूर्ख है वे जो अपने मन मे कहते ह कि खुदा नहीं है।' देखा तूने, इस तरह के जाहिल और पथ से भटके लोग यह बाते कितने साल पहले करते थे। भगवान के बिना तुम एक डग भी आगे नहीं रख सकते! "

श्रौर श्रोसिप ने मानो उससे सहमति प्रकट करते हुए टिप्पणी जडी

"जरा प्योत्र को उसके भगवान से अलग करो तो, फिर देखना क्या हुलिया बनता है!"

शिशलिन का सुदर चेहरा गम्भीर हो गया, अपनी दाढ़ी मे उगलियां फेरने लगा जिनके नाखूनो पर चूना सूखा हुआ था। फिर रहस्यमय अदाज मे बोला

"हाड-मांस के हर पुतले मे भगवान मौजूद है। आत्मा और अन्तमन भगवान की देन है!"

"और पाप?"

"पाप का सम्बध सिर्फ हाड-मास से है। वह भगवान की नहीं, शैतान की देन है! यह केवल ऊपरी, बाहर की चीज़ है, जसे चेहरे पर चेचक के दाग! बस, इससे ज्यादा कुछ नहीं। वही सबसे ज्यादा पाप करता है जो पाप के बारे मे सब से ज्यादा सोचता है। अगर दिमाग मे पाप का ख्याल न हो तो पाप करने की कभी नौबत न आए। शैतान जो हाड मास के हमारे बदन पर हावी होता है, हमारे दिमागो मे पाप के बीज बोता है"

राज के मन मे बात कुछ जमी नहीं। दुविधा प्रकट करते हुए बोला

"बात कुछ जची नहीं"

"बिल्कुल इसी तरह, इसमे जरा भी सन्देह की गुजाइश नहीं। भगवान पापों से मुक्त है, उसने इसान को अपनी छवि मे ढाला और उसे अपनी सादृश्यता प्रदान की है। हाड मास से बनी यह छवि ही पाप करती है, सादृश्यता पापो से मुक्त और अछूती है। सादृश्यता ही वह चीज है जिसे हम रूह या आत्मा कहते हैं"

वह इस तरह मुसकराता मानो उसने बाजी जीत ली हो। लेकिन प्योत्र फिर बुदबुदा उठता

"मुझे लगता है कि ठीक इसी तरह नहीं"

अब ओसिप जबान खोलता। कहता

"तुम्हारे हिसाब से अगर पाप नहीं तो कबूल करने की भी जरूरत नहीं, और जब कबूल नहीं तो मुक्ति का पचडा भी नहीं। क्यो, ठीक है न?"

"हा, ठीक है। एक पुरानी कहावत 'शतान नहीं तो खुदा भी नहीं'"

शिशलिन पीने का आदी नहीं था। दो घूटो ने ही उसपर अपना रग चढ़ा दिया। उसके चेहरे पर गुलाबी दमक छा गई, आखो मे बचपन का भोलापन उभर आया और आवाज हिलोरें लेने लगी

"ओह मेरे भाइयो, कितना अदभुत जीवन है हमारा! हमसे जो बनता है, थोडा-बहुत काम कर लेते हैं और इतना भोजन मिल जाता है कि भूखो मरने की नौबत नहीं आती। ओह शुक्र है उस भगवान का जिसकी बदौलत हम इतना अदभुत जीवन बिताते हैं!"

और वह रोना शुरू कर देता। उसकी आखो से आसू निकलते और गालो पर से होते हुए उसकी रेशमी दाढ़ी मे अटक जाते और काच के मनको की भाति चमकते।

उसके इन काच के आसुओ और जिस ढग से वह इस जीवन की भडती करता उससे मेरा हृदय भन्ना जाता, और मुझे बडी घिन मालूम होती। मेरी नानी भी इस जीवन के लिए खुदा के दरबार मे शुक्राना भेजती थी, और इस जीवन की तारीफ के गीत गाती थी, लेकिन उसके गीत और प्रशसा कहीं अधिक विश्वसनीय और सीधे सादे होते थे। उनमे इतना दुराग्रह नहीं होता था।

उनकी ये बातें मेरे हृदय मे बराबर खलबली मचाए रहतीं, कभी न खत्म होनेवाले तनाव का मैं अनुभव करता, और धुधली तथा अज्ञात आशकाए मुझे घेर लेतीं। देहातियो के बारे मे अनेक कहानिया और किस्से मैं पढ़ चुका था और किताबो के देहातियो तथा सचमुच के देहातियो मे भारी अन्तर मुझे दिखाई देता था। किताबो के देहातिये सब के सब दुख और मुसीबतो मे फसे अभागे जीव थे जिनमे—वे भले हो चाहे बुरे—विचारो और वाणी की वह समृद्धता एक सिरे से गायब थी जो कि सचमुच के जीवित देहातियो की एक खास विशेषता थी। किताबो के देहातिये भगवान, विभिन्न पथो और गिरजे के बारे मे कम बाते करते थे और अपने से ऊचो, जमीन, जीवन के अन्याय और मुसीबतो के बारे मे ज्यादा। किताबो के देहातिये स्त्रियो के बारे मे भी कम बातें करते थे, और अगर उन्हे *बात करते दिखाया भी जाता था तो इस तरह मानो* उनके हृदय मे स्त्रिया के प्रति अधिक इज्जत हो, और उनके लिए कभी

भी गदे या औघड़ शब्दो का इस्तेमाल न करते हों। सचमुच के देहातियों के लिए स्त्री मन बहलाने का एक साधन थी, लेकिन एक खतरनाक साधन जिसके साथ काफी चालाकी और चतुराई बरतने की जरूरत थी, अन्यथा यह उनपर हावी होकर उनका सारा जीवन उलझा सकती थी। किताबों मे देहातिये या तो बुरे होते या भले, और इन दोनों ही सूरतों मे उन्हें काफी सिधाई के साथ किताबो मे पेश किया जाता, लेकिन सचमुच के देहातिये न भले होते और न बुरे, बल्कि दिलचस्प होते हैं। उनकी तमाम बातें सुनने के बाद भी यह भावना बनी रहती कि कुछ है जो अनकहा रह गया है, जिसे उन्होंने अपने हृदय मे छिपाकर रख छोडा है, और कौन जाने कि ठीक यह अश ही, जो अनकहा रह गया है, उनके व्यक्तित्व का असली तत्व हो!

किताबो के देहातियो मे मुझे प्योत्र नाम का बढ़ई सबसे ज्यादा पसद था। "बढ़ई दल" नामक पुस्तक मे उसका किस्सा दिया हुआ था। मैं उसे अपने साथियो को पढ़कर सुनाने के लिए बेचन हो उठा। एक दिन मेले मे काम पर जाते समय उस पुस्तक को भी मैं अपने साथ लेता गया। अकसर ऐसा होता कि दिन भर काम करते-करते मैं बुरी तरह थक जाता और घर लौटने की हिम्मत न रहती। ऐसी हालत में मैं कारीगरो के किसी एक बाडे मे चला जाता और रात उनके साथ बिताता।

मैंने जब उन्हें यह बताया कि मेरे पास बढ़ई लोगों के बारे में एक किताब है तो उनकी और खास तौर से ओसिप की दिलचस्पी का वारपार नहीं रहा। उसने मेरे हाथ से किताब ले ली और अपना सन्तनुमा सिर को हिलाते हुए इस तरह उसके पन्ने पलटने लगा, मानो उसे यकीन न आ रहा हो। बोला

"लगता है कि सचमुच ही हमारे बारे मे लिखी गई है! किसने लिखा है इसे? क्या कहा, किसी रईसजादे ने? ठीक, मै भी ऐसा ही समझता था। रईसजादे और सरकारी अफसरो के क़दम जहा न पहुचें, थोडा है! भगवान से जो कसर रह जाती है, उसे यही लोग पूरा करते ह। भगवान ने मानो इसीलिए इन्हे इस दुनिया मे भेजा है "

"भगवान की बाते तू सोच-समझकर नहीं करता," प्योत्र ने टोका।

"ठीक है, ठीक है। मेरे शब्दो से भगवान का उतनी ही दूर का

नाता है जितना कि मेरा बफ के उस कण से या वर्षा की उस बूद से जो आसमान से गिरकर मेरी गजी चाद पर आ विराजती है। घबरा नहीं, हम-तुम जसे लोगो को भगवान तक कोई रसाई नहीं है "

सहसा वह अधीर हो उठा और उसके मुह मे से शब्दो के तीखे बाण चकमक मे से चिंगारियो की तरह निकल निकलकर जो कुछ भी उसके विपरीत था उसे बींधने लगे। दिन मे कई बार उसने मुझसे पूछा

"क्यो, मक्सीमिच, कुछ पढकर सुनाएगा न? ठीक, बहुत ठीक। तूने बहुत ही अच्छा सोचा है।"

जब काम समाप्त हो गया तो साझ का खाना उसी के बाडे मे हुआ। खाने के बाद प्योत्र भी आ गया। उसके साथ एक कारीगर और आया जिसका नाम अरदाल्योन था। फोमा नामक एक लडके को साथ लिए शिशलिन भी आ गया। कोठरी मे जहा कारीगर सोते थे, एक लम्प जलाकर रख दिया गया और मैंने पढना शुरू किया। बिना हिले-डुले या मुह से एक शब्द कहे वे सुनते रहे। लेकिन शीघ्र ही अरदाल्योन खीजकर बोला

"मै तो चलता हू। सुनते-सुनते ऊब गया!"

वह चला गया। ग्रिगोरी सबसे पहले चित्त हो गया। वह मुह बाये सो रहा था, और ऐसा मालूम होता था मानो उसका मुह अचरज के मारे खुला रह गया हो। उसके बाद अन्य बढ़ई भी चित्त हो गए। लेकिन प्योत्र, ओसिप और फोमा मेरे और निकट खिसक आए तथा बडे ध्यान और उत्सुकता से सुनते रहे।

जब मैं खत्म कर चुका तो ओसिप ने तुरत लम्प बुझा दिया—तारे आधी रात बीत जाने की सूचना दे रहे थे।

प्योत्र ने अधेरे मे पूछा

"इस किताब मे नुक्ते की बात क्या है? यह किनके खिलाफ लिखी गई है?"

ओसिप जूते उतार रहा था। बोला, "बाते मत कर। अब सो जा।"

फोमा चुपचाप खिसककर एक ओर लेट गया।

"मेरी बात का जवाब दे न,—यह किनके खिलाफ लिखी गई है?" प्योत्र ने फिर बल देकर पूछा।

माची पर अपना बिस्तरा लगाते हुए ओसिप ने कहा

"यह लिखनेवाले जानें। हमें मायापच्ची करने से क्या फ़ायदा?"

"क्या यह सौतेली मांओं के खिलाफ लिखी गई है? तब तो इसमें कोई तुक नहीं। इस तरह की किताब सौतेली मांओं का सुधार नहीं कर सकती," राज ने ज़ोर देते हुए कहा। "या फिर यह प्योत्र के खिलाफ लिखी गई है जो इसका हीरो है, – प्योत्र बढ़ई। लेकिन यह उसे भी अधर में ही लटका रहने देती है। आखिर उसका हश्र क्या होता है? वह हत्या करता है, और उसे काले पानी की सज़ा देकर साइबेरिया भेज दिया जाता है। बस, क़िस्सा ख़त्म! यह किताब उसे भी कोई मदद नहीं देती – दे भी नहीं सकती, नहीं, बिल्कुल नहीं! इसीलिए तो मैं पूछता हूं, यह किसके लिए लिखी गई है?"

ओसिप चुप रहा। तब राज ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा

"इन लेखकों के पास अपना कुछ काम तो है नहीं, सो दूसरा की आंख में उंगली डालते फिरते हैं, बतक्याउ निठल्ली औरतों की तरह! अच्छा तो अब सोओ, काफी देर हो गई "

दरवाज़े के नीले चौखटे में एक क्षण के लिए वह ठिठककर खड़ा हो गया और बोला

"क्यों, ओसिप, तेरा क्या ख़याल है?"

"ऐं?" ओसिप अधसोया सा कुनमुनाकर रह गया।

"अच्छा सो "

शिशलिन जिस जगह बैठा था, वहीं फ़र्श पर पसर गया। फोमा मेरे पास ही पुआल पर लेट गया। समूची बस्ती पर सन्नाटा छाया था। कहीं दूर से इजनों की सीटियों के बजने, लोहे के भारी पहियों के गड़गड़ाने और गाड़ियों को जोड़नेवाले कांटों के खड़खड़ाने की आवाज़ें आ रही थीं। सायबान सभी प्रकार के खर्राटों की आवाज़ से गूज रहा था। मेरा हृदय बड़ा सूना सा हो रहा था। मैं आशा करता था कि पुस्तक ख़त्म होने के बाद कोई दिलचस्प बहस होगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ

एकाएक ओसिप ने धीमी किंतु साफ सुन पड़नेवाली आवाज़ में कहा

"उसकी बातों को मन में बैठाने की ज़रूरत नहीं। तुम लोग अभी कम उम्र हो, और सारा जीवन तुम्हें पार करना है। दिमाग़ का कोठा ख़ुद अपने विचारों से भरते जाओ! उधार लिए सौ विचारों से अपना एक विचार कहीं ज़्यादा क़ीमती होता है! क्या, फोमा, सो गया, क्या?"

"नहीं," फोमा ने तत्परता से कहा।

"तुम दोनो पढ़ना जानते हो, सो बराबर पढ़ते रहना। लेकिन हर बात पर भरोसा न करना। आज उनका बोलबाला है, ताकत उनके हाथ मे है, सो जो मन मे आता है, छाप डालते है!"

उसने माची पर से अपनी टागें नीचे लटका लीं और दोनो हाथ किनारे पर टिकाकर हमारी ओर झुकते हुए बोला

"किताब—आखिर किताब होती क्या है? भेदिये की भाति वह सबका भेद खोलती है! सच, किताब भेदिये का काम करती है। आदमी मामूली हो चाहे बडा, वह सभी का भेद बताती है। वह कहती है—देखो, बढई ऐसा होता है। या फिर वह किसी रईसजादे को सामने खडा कर कहती है—देखो, रईसजादा ऐसा होता है। मानो ये अन्य सबसे भिन्न, अनोखे और निराले हो! और किताबें योही, बेमतलब, नहीं लिखी जातीं। हर किताब किसी न किसी की हिमायत करती है "

"प्योत्र ने ठीक किया जो उस ठेकेदार को मार डाला!" फोमा ने भारी आवाज मे कहा।

"ऐसी बात मुह से नहीं निकालते। आदमी की हत्या करना क्या कभी ठीक कहा जा सकता है? मैं जानता हू कि ग्रिगोरी से तेरी नहीं बनती, तू उससे नफरत करता है। लेकिन यह ठीक नहीं। हममे कोई भी धन्नासेठ नहीं है। आज मैं मुखिया कारीगर हू, लेकिन कल मुझे अन्य सभी मजदूरो की भाति काम करना पड सकता है "

"मैं तुम्हारे बारे मे थोडे ही कह रहा था, चचा ओसिप "

"इससे कोई फर्क नहीं पडता। बात तो वही है "

"तुम तो सच्चे आदमी हो।"

"ठहर, मैं तुझे बताता हू कि यह किताब किसके लिए लिखी गई है," ओसिप ने फोमा के क्षोभ भरे शब्दो को अनसुना करते हुए कहा। "इस मे पूरी चालाकी भरी है! देख—एक हैं जमींदार, बिना किसानो के और एक किसान बिना जमींदार के। अब देख जमींदार की भी हालत खराब है और किसान भी अच्छा नहीं। जमींदार कमजोर, सिरफिरा हो गया है, और किसान शराबिया, रोगी, डींगमार हो गया है, झींखता रहता है—समझा, यह दिखाया है! और कहने का मतलब यह है कि भई, जमींदारो की गुलामी अच्छी थी जमींदार को किसान का भरोसा

ग्रौर किसान को जमींदार का ग्रासरा ग्रौर बस दोनों खाते-पीते चन की बसी बजाते थे हां, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि जमींदारो की गुलामी के जमाने मे इतना गटराग नहीं था। जमींदारों को ग़रीब किसानो की जरूरत नहीं, उन्ह तो ऐसे किसान चाहिए जिनके पास पसा हो, ग्रक्ल नहीं, यह उनके फायदे की बात है। ग्रपनी ग्रांखों देखी, खुद भुगती बात मैं कहता हू। चालीस साल तक मैं जमींदारों की गुलामी मे रहा हू। कोडो की मार ने मेरी चमडी पर जो लिखावट लिखी है, वह क्या किसी किताब से कम है?"

मुझे उस बूढ़े गाडीवान की याद हो ग्राई जिसका नाम प्योत्र था ग्रौर जिसने ग्रपना गला काट डाला था। खानदानी रईसो ग्रौर कुलीनों के बारे मे वह भी इसी तरह की बातें करता था। ग्रोसिप तथा उस कुत्सित बूढ़े की बातों मे यह सादृश्य मुझे बडा ग्रटपटा मालूम हुग्रा।

ग्रोसिप ने हाथ से मेरे घुटने को छुग्रा ग्रौर कहता गया

"किताबो ग्रौर दूसरी लिखावटो के ग्रार-पार देखना ग्रौर उनका भीतरी मतलब समझना जरूरी है! बिना मतलब कोई कुछ नहीं करता। चाहे कोई कितना ही छिपाए, लेकिन मतलब सब के पीछे होता है। ग्रौर किताबें लिखने का मतलब होता है दिमाग़ को चक्कर में डालना, उसे गडबडाना। ग्रौर दिमाग़ एक ऐसी चीज है जो लकडी काटने से लेकर जूते बनाने तक, हर जगह काम देता है "

वह बहुत देर तक बातें करता रहा। कभी वह बिस्तर पर लेट जाता ग्रौर कभी उछलकर बठ जाता, ग्रौर रात की निस्तब्धता तथा ग्रंधेरे मे ग्रपने साफ-सुथरे शब्दों को मुलायमियत से बिखेरता जाता।

"कहते हैं कि जमींदार ग्रौर किसान मे भारी ग्रन्तर ग्रौर भेद है। लेकिन यह बात सच नहीं है। हम दोनो एक हैं, सिवा इसके कि वह ऊचाई पर है। यह सही है कि वह ग्रपनी किताबो से सीखता है, ग्रौर मैं ग्रपनी कमर पर पडे नीले निशानों से। उसकी कमर पर कोई निशान नहीं हाते—सारा ग्रतर बस यही है। जरूरत इस बात की है, छोकरो, कि नये साचे मे इस दुनिया को ढाला जाए। किताबो को गोली मारो, उन्हें दूर फेंको, ग्रौर ग्रपने से पूछो ग्राखिर मैं क्या हू?—एक इन्सान। ग्रौर जमींदार क्या है?—वह भी एक इन्सान है। फिर दोनो मे भेद क्या है? क्या भगवान ने यह कहकर उसे दुनिया मे भेजा है कि मैं तुमसे

पांच कोपेक ज्यादा वसूल करूगा? लेकिन नहीं, भगवान के दरबार मे सब एक हैं, सब को एक सा भुगतान करना पड़ता है "

ग्रत मे जब रात का ग्रधेरा छट चला, ग्रौर तारो की रोशनी मद्धिम पड़ गई तो ग्रोसिप ने मुझसे कहा

"देखा, मैं कसी बातें बना सकता हू। न जाने क्या-क्या कह गया, कभी सोचा तक न था। लेकिन तुम छोकरे मेरी बाता पर ज्यादा ध्यान न देना। नींद ग्रा नहीं रही थी, सो जो मन मे ग्राया, उल्टा-सीधा कहता गया। जब ग्राख नहीं लगती तो ग्रजीब ग्रजीब बात सूझती हैं ग्रौर दिमाग़ बातों का कारखाना बन जाता है, ग्रौर मनमानी बातें गढता रहता है बहुत पहले की बात है। एक कौवा था। मदाना से उडकर वह पहाडा की खबर लाता, कभी इस खेत का चक्कर लगाता तो कभी उस खेत पर जा बठता। इसी तरह उडते-उडते उसके सारे पर झड गए, शरीर सूख चला, ग्रौर एक दिन वह खत्म हो गया। बता, भला कौवे की इस कहानी मे क्या तुक है? है न, बिल्कुल बेमानी ग्रौर बेतुकी कहानी? हा तो ग्रब सो जाग्रो। जल्दी उठकर काम पर भी तो जाना है "

१८

बीते दिनो मे जिस तरह जहाजी याकोव मेरे हृदय पर छा गया था, उसी तरह ग्रोसिप भी मेरी ग्राखो मे समाता, फलता ग्रौर बढ़ता गया ग्रौर ग्रय सभी को उसने ग्रोझल कर दिया। उसमे ग्रौर जहाजी याकोव मे बहुत कुछ समानता थी, इसके ग्रलावा उसे देखकर मुझे ग्रपने नाना, पारखी प्योत्र वासील्येविच ग्रौर बावर्ची स्मूरी की भी याद हो ग्राती थी जो सब मेरी स्मृति मे ग्रत्यन्त गहराई से ग्रकित थे। लेकिन ग्रोसिप की ग्रलग गहरी छाप रही। जिस तरह जग घटे के तावे को खाता जाता है, वसे ही वह भी मेरे ग्रतमन की गहराइयो मे प्रवेश करता ग्रौर मेरे रोम रोम मे समाता जा रहा था। ग्रोसिप के दो रूप साफ नजर ग्राते थे। दिन का ग्रोसिप रात के ग्रोसिप से भिन्न होता था। दिन मे काम करते समय उसके दिमाग़ मे फुर्ती ग्रा जाती, दो टूक ग्रौर ग्रधिक व्यावहारिक ढग से वह सोचता ग्रौर उसकी बात समझने मे ग्रधिक दिक्कत न होती। लेकिन रात को जब उसे नींद न ग्राती या सांझ

को मुझे साथ लेकर जब यह मालपूवे बेचनेवाली अपनी रिश्तेदार से मुलाक़ात करने नगर जाता, तो यह दूसरा ही रूप धारण कर लेता। रात को यह विशेष ढग से सोचता और उसके विचार लालटेन की रोशनी की भाति अधेरे मे खूब उज्ज्वल तथा चारो ओर से खूब चमकते दिखाई देते, और यह पता लगाना कठिन हो जाता कि उनका सीधा पक्ष कौन सा है और उलटा कौन सा, या यह कि उनमे से किसे वह पसन्द करता है और किसे नहीं।

अब तक जितने भी लोगो से मिला था, मुझे वह उन सब से ज्यादा चतुर मालूम होता। उसे पकडने और समझने की व्यग्रता हृदय म लिए में उसके चारो ओर भी उसी तरह मडराता जैसे कि जहाजी याकोव के चारो ओर, लेकिन वह सपक सुई की भाति बल खाकर निकल भागता और पकड मे न आता। अपने असली और सच्चे रूप को वह कहा छिपाए है? उसका वह पहलू कौन सा है जिसे सच्चा समझकर ग्रहण किया जा सके?

मुझे उसका यह कथन रह रहकर याद आता

"या फिर अपने दिमाग़ से काम ले और पता लगा कि मैं कसा हू। मेरी ओर से तुझे पूरी छूट है।"

यह मेरे अह पर चोट थी। मुझे ऐसा मालूम होता कि इस बूढे आदमी के रहस्य का उदघाटन किए बिना मैं जीवन मे एक डग भी आगे नहीं बढ़ सकूगा। उसे समझना मेरे लिए जीवन का आधारभूत प्रश्न बन गया।

पकड मे न आनेवाले अपने स्वभाव के बावजूद, वह एक स्थिर व्यक्तित्व का आदमी था। मुझे ऐसा मालूम होता कि अगर वह सौ साल और जीवित रहे तो भी उसका रग रूप ऐसा ही बना रहेगा, अत्यन्त अस्थिर लोगो के बीच रहते हुए भी अडिग और अपरिवर्तनशील। पारखी प्योत्र वासीलयेविच ने भी मेरे हृदय मे स्थिरता के कुछ ऐसे ही भावो का सचार किया था, लेकिन उसकी यह स्थिरता मुझे अच्छी नहीं मालूम होती थी। ओसिप की स्थिरता दूसरे प्रकार की थी, अधिक सुहावनापन लिए हुए।

लोग इतनी आसानी और आकस्मिकता से चोला बदलते और मढक की भाति उछलकर इस बाज से उस बाज पहुच जाते कि देखकर बडा अटपटा मालूम होता। उनका यह समझ मे न आनेवाला चोला-बदलौवल, जिसे मे पहले कौतुक और अचरज से देखा करता और दग रह जाता

था, अब ऊब और झुझलाहट पैदा करता था। नतीजा इसका यह कि पहले जिस उछाह से मैं लोगों में दिलचस्पी लेता था, धीरे धीरे उसे पाला मार गया, लोगो के प्रति मेरा प्रेम एक अजीब दबसट में पड गया।

जुलाई के शुरु में एक दिन एक घोडागाडी जिसके अजर-पजर ढीले हो चुके थे, खडखड करती आई और जहा हम काम कर रहे थे, वहा आकर रुक गई। बक्स पर नशे में धुत्त एक दाढ़ी वाला कोचवान बैठा था। वह उदासी से हिचकियां भर रहा था। उसका सिर नगा था, होठो से खून बह रहा था, पीछे की सीट पर नशे में मदहोश ग्रिगोरी शिशलिन पसरा हुआ था, और डबलरोटी सी मोटी, लाल कल्लो वाली एक लडकी उसकी बाह में बाह डाले उसे थामे थी। वह सींकों का हैट पहने थी और हाथ में छतरी पकडे थी। हैट लाल सुर्ख रिबन और काच की लाल-लाल चरियो से सजा था। पावो में जुरावें नहीं थीं, वह खाली रबड के जूते पहने थी। डोलते और छतरी हिलाते हुए वह हस-हसकर चिल्ला रही थी

"ओह, शतानो! मेला तो अभी खुला नहीं, मेला शुरु नहीं हुआ और ये मुझे खींच लाये!"

ग्रिगोरी की बुरी हालत थी। वह उस लत्ते की भाति मालूम होता था जिसे खूब झझोडा और नोचा-खरोचा गया हो। रेंगकर वह गाडी से बाहर निकला और जमीन पर पसरकर बैठ गया। फिर आखो में आसू भरे बोला

"यह देखो, मैं तुम्हारे सामने घुटनो के बल पडा हू। मुझे माफ करना, मैंने गुनाह किया है, सोच समझकर और पूरी तयारी के साथ! येफीमुश्का ने मुझे उकसाया, ग्रिगोरी, ग्रिगोरी और उसका उकसाना भी गलत नहीं था। कहने लगा लेकिन मुझे माफ करना! तुम सबकी दावत मेरे जिम्मे येफीमुश्का की बात गलत नहीं थी। उसने ठीक ही कहा था, हम केवल एक बार जीते हैं.. केवल एक ही बार, अधिक नहीं, केवल एक ही बार"

लडकी हसते हसते दोहरी हो गई और पर पटकने लगी। उसके रबड के जूते पाव से निकल जाते और वह उनमें पर वापस न डाल पाती। कोचवान ने भी शोर मचाना शुरू किया

"चलो, जल्दी करो! आओ, जल्दी आओ! देखते नहीं, घोडा रास छुडाकर भागना चाहता है!"

बूढ़ा और मरियल घोडा, जिसका सारा बदन झाग से ढका हुआ था, रास तुडाकर भागना तो दूर अडियल टट्टू की भाति वहीं अड गया था और टस से मस नहीं होना चाहता था। समूचा दृश्य कुछ इतना बढ़गा और औघड था कि हसी रोके न रुकती थी। अपने मालिक, उसकी छल छबीली प्रेमिका तथा हक्के-बक्के से कोचवान को देखकर ग्रिगोरी के मजदूरों के पेट मे बल पड गए।

लेकिन फोमा इस हसी मे शामिल नहीं हुआ। वही एक ऐसा था जो हस नहीं रहा था, और दुकान के दरवाजे पर मेरे पास खडा बडबडा रहा था

"कम्बख्त उल्टाग हो गया और घर पर बीवी मौजूद है,- इतनी सुदर कि लाखों मे एक!"

कोचवान जल्दी मचाता रहा। अन्त मे लडकी नीचे उतरी और ग्रिगोरी को खींचकर उसने गाडी मे डाल दिया जहा वह सीट से नीचे उसके पावों के पास ही ढह गया। फिर अपना छाता फहराते हुए बोली

"अच्छा, हम तो चले!"

फोमा ने कारीगरो को जोर से झिडका। मालिक को खुद अपने हाथो सबके सामने इस तरह उल्लू बनते देख वह आहत हो उठा था। सकपकाकर और अपने मालिक पर दो-चार भले से छींटे कसते हुए कारीगर फिर अपने काम में जुट गए। साफ मालूम होता था कि अपने मालिक के प्रति उनके हृदय मे घृणा से अधिक ईर्ष्या के भाव थे।

"मालिक क्या ऐसे होते हैं?" फोमा बडबडाया। "पन्द्रह-बीस दिन की ही तो बात थी। अपना काम खत्म कर हम सब गाव पहुच जाते। लेकिन कम्बख्त से इतने दिन भी नहीं रुका गया "

झुझलाहट तो मुझे भी कुछ कम नहीं आ रही थी। कहां ग्रिगोरी और कहा काच की चरियो वाली वह लडकी!

मैं अक्सर सोचता और उलझन मे पड जाता कि ग्रिगोरी शिशलिन मे ऐसी क्या बात है जो वह तो मालिक है, और फोमा तुचकोव एक साधारण मजदूर।

फोमा घुघराले बालो वाला हट्टा-कट्टा युवक था। चादी जसा उसका रग था, तुक्कार नाक, कजी आखें और गोल चेहरा। उसकी आंखों मे बुद्धिमत्ता की चमक थी। उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि

वह देहातिया है। यदि उसके कपडे अच्छे होते तो वह किसी बडे कुल के व्यापारी का लडका मालूम होता। गम्भीर और चुप्पा स्वभाव, केवल मतलब की बात करता। पढना लिखना जानता था, इसलिए ठेकेदार ने हिसाब किताब रखने और तख्मीने बनाने का काम उसे सौंप रखा था। वह अपने साथी मजदूरो से काम लेने मे दक्ष था, हालाकि खुद काम से जी चुराता था।

"एक जीवन मे सब काम नहीं किए जा सकते," वह शात भाव से कहता। पुस्तको से उसे चिढ थी। वह अपनी खीज प्रकट करता

"हर अलाय-बलाय छापे मे आ जाती है। मैं तुझे अभी हाथ के हाथ कहानी गढ़कर सुना सकता हू। यह जरा भी मुश्किल काम नहीं है "

लेकिन वह हर बात बडे ध्यान से सुनता और अगर किसी बात मे उसकी रुचि जागती, तो वह टटोल-टटोलकर सारी बात पूछता और साथ ही मन ही मन कुछ सोचता रहता, हर बात को अपने दिमाग़ से परखता रहता।

एक बार मैंने फोमा से कहा कि तुम्हे तो ठेकेदार होना चाहिए था। उसने अलस भाव से जवाब दिया

"अगर शुरू से ही हजारो का व्यापार हो तो यह सौदा कुछ बुरा नहीं लेकिन दो-चार ठीकरो के लिए ढेर सारे कारीगरो को डडे से हाकने की जहमत कौन उठाए? मुझे तो इसमे कोई तुक नहीं दिखाई देती। नहीं, भाई, मैं तो बस थोडा और देखता हू और फिर ओरान्स्की मठ का रास्ता नापूगा। इतना हट्टा-कट्टा मेरा शरीर है, देखने मे भी खूबसूरत हू। अगर किसी धनी सौदागर की विधवा मुझपर लट्टू हो गई तो सारे पाप कट जाएगे! ऐसा अवसर होता है। सेरगात्सी के एक जवान को मठ मे भर्ती हुए मुश्किल से दो साल ही बीते होगे कि उसकी जोड बठ गई। और सोने मे सुहागा यह कि वह शहर की लडकी थी। वह उस दल मे था जो मरियम की प्रतिमा को घर घर ले जाता है। तभी दोनो की नजरें एक दूसरे से मिलीं और वह उसपर लट्टू हो गई "

उसने ऐसा ही मनसूबा बाध रखा था। इस तरह की अनेक कहानिया वह सुन चुका था जिनमे लोग नव दीक्षित साधु के रूप मे मठ मे भर्ती होने के बाद किसी धनी स्त्री के नजर हिंडोले पर चढकर मजे का जीवन बिताते थे। मुझे ऐसी कहानियो से चिढ़ थी और फोमा के दृष्टिकोण से भी।

लेकिन यह बात मेरे मन मे जम गई कि फोमा एक दिन निश्चय ही किसी मठ का रास्ता पकडेगा।

और जब मेला शुरू हुआ तो फोमा ने सभी को चकित कर दिया—भटियारखाने मे वेटर का काम उसने शुरू कर दिया। उसकी इस कलाबाजी ने उसके साथियो को भी चकित किया यह कहना तो कठिन है, लेकिन वे उसका खूब मजाक बनाने लगे। रविवार या छुट्टी के दिन जब कभी चाय का प्रोग्राम बनता तो वे आपस मे हसते हुए कहते

"चलो, अपने वेटर के यहा चाय पीने चले!"

और भटियारखाने मे पाव रखते ही रोब के साथ वे आवाज लगाते

"ऐ वेटर, क्या सुनता नहीं, ओ घुघराले बाल वाले, लपककर इधर आ!"

ठोडी को ऊपर उठाए वह निकट आता और पूछता

"कहिए, क्या लेगे?"

"तू क्या पुराने साथियो को नहीं पहचानता?"

"नहीं, मुझे इतनी फुरसत नहीं है "

उससे यह छिपा नहीं था कि उसके साथी उसे नीची नजर से देखते हैं और उनका एकमात्र लक्ष्य उसे चिढाना है। इसलिए वह उन्हें पथराई सी आखो से देखता और उसका चेहरा एक खास मुद्रा मे जाम हो जाता। वह जसे कहता प्रतीत होता

"जल्दी करो, उडा लो मजाक जो उडाना है "

"अरे, तुझे बख्शीश देना तो भूल ही गए!" वे कहते और अपने बटुवे निकालकर देर तक उन्हे टटोलते, कोने कोने दाबकर देखते और अत मे बिना कुछ दिये ही चले जाते।

एक दिन मैंने फोमा से पूछा कि तुम तो मठ मे भर्ती होकर साधु बनना चाहते थे, वेटर कसे बन गए।

"ग़लत बात है। मैं कभी साधु बनना नहीं चाहता था," उसने जवाब दिया, "और यह वेटरी भी कुछ दिनो की मेहमान है "

इसके कोई चार साल बाद, जारीत्सिन मे जब मेरी उससे मुलाकात हुई तो उस समय भी वह वेटर का ही काम कर रहा था, और अत मे समाचारपत्र मे मने यह खबर पढ़ी कि फोमा तुचकोव किसी घर मे सेध लगाते पकडा गया।

राज अरदाल्योन ने मुझे खास तौर से प्रभावित किया। प्योत्र के कारीगरो मे वह सबसे पुराना और सबसे अच्छा मजदूर था। हसमुख और काली दाढी वाले चालीस वर्षीय इस देहातिये को देखकर भी मैं उसी उलझन मे पड जाता कि मालिक उसे होना चाहिए था, न कि प्योत्र को। वह बिरले ही शराब पीता था, और जब पीता तो कभी मदहोश नहीं होता था। अपने धधे का वह उस्ताद था, और लगन के साथ काम करता था। उसके हाथो का स्पर्श पाते ही ईंटो मे जसे जान पड जाती थी और कबूतर की भाति सर्रे से उडकर ठीक ठिकाने पर जा बठती थीं। उसके सामने मरियल और सदा रोगी प्योत्र की कोई गिनती नहीं थी। प्योत्र बडे चाव से कहता

"मै दूसरो के लिए ईंटो के घर बनाता हू जिससे अपने लिए एक लक्डी का घर–ताबूत–बना सकू "

अरदाल्योन आह्लादपूर्ण उत्साह से ईंटें चुनता जाता और चिल्लाकर कहता

"आओ साथियो, आओ! भगवान की इस दुनिया का सुन्दर बनाने मे हाथ बटाओ!"

और वह उन्हें अपने साथी कारीगरो को बताता कि अगले वसंत मे उसका इरादा तोम्स्क जाने का है। वहा उसने वहनोई मे एक गिरजा बनाने का ठेका लिया है और उसे न्योता दिया है कि तोम्स्क आकर राजों के मुखिया का काम सभाले।

"सब कुछ तय हो चुका है। गिरजे बनाना तो बड़ा नेक प्यारा काम है," वह कहता और इसके बाद मुझे सम्बोधित करता, "बच्चे, तू भी मेरे साथ चल। साइबेरिया अच्छी जगह है, [illegible] पढना लिखना जानते हैं। मजे से कटेगी। कारीगरों की मांग भी, दर वहा काफी ऊची है!"

मै उसके साथ चलने को राजी हो गया। अरदाल्योन खुशी से उछल पडा। बोला

"यह हुई ना बात! हम कोई मजाक थोड़े ही करते हैं—"

ग्रिगोरी और प्योत्र के साथ उसके रवैये में एक तरह की [illegible] उपेक्षा का भाव रहता, कुछ-कुछ वैसा ही जैसा कि बड़े [illegible] की तरफ होता है। आखिर में वह कहता

"बातों के शेर! अपनी अकल को ताश के पत्तों की तरह एक-दूसरे के सामने फटकारते हैं। एक कहता है देख, कितने बढ़िया पत्ते हैं! दूसरा कहता है लेकिन मेरा रंग देखकर तो बलाबाओ सा जाएगा!"

"मुझे तो इसमें कोई बुराई नहीं मालूम होती," ओसिप वलमल जवाब देता, "शेखी बघारना इन्सान का स्वभाव है। कौन लड़की ऐसी है जो अपना सीना उभारकर नहीं चलना चाहती?.."

लेकिन अरदाल्योन इतने पर ही बस न करता। हृदय की खुजली मिटाते हुए कहता

"उठते-बैठते, खाते-पीते, ये भगवान की रट लगाते हैं, लेकिन एक एक कौड़ी दांत से पकड़ने और माया जोड़ने में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"ग्रिगोरी के पास तो मुझे कभी फूटी कौड़ी भी नजर नहीं आती। माया वह कहां से जोड़ेगा?"

"मैं अपने मालिक की बात कर रहा हू। माया-मोह छोड़कर वह जंगल की शरण क्यों नहीं लेता? सच कहता हू, मैं तो यहां की हर चीज से उकता गया हू वसन्त आते ही साइबेरिया के लिए चल दूगा!.."

अन्य कारीगर ईर्ष्या की नजर से अरदाल्योन की ओर देखते। फिर कहते

"तेरे बहनोई जैसा हमारा भी यहां कोई खूटा होता तो साइबेरिया क्या, हम जहन्नुम में भी पहुच जाते!"

एकाएक अरदाल्योन गायब हो गया। रविवार के दिन वह चला गया और तीन दिन तक कुछ पता नहीं चला कि वह कहां लोप हो गया या उसका क्या हुआ।

कारीगरों ने भय और आशंका से भरी अटकलें लगानी शुरू कीं

"कहीं किसीने मार तो नहीं डाला?"

"हो सकता है कि नदी में तरते-तरते डूब गया हो?"

अन्त में येफीमुश्का आया और कुछ सकपकाता सा बोला

"अरदाल्योन नशे में गडगच्च पड़ा है!"

"यह झूठ है!" प्योत्र अविश्वास से चिल्लाया।

"नशे में गडगच्च, बेसुध और बेखबर, भुस में आग लगने पर जिस तेजी से चिंगारियां ऊपर उठती हैं, ठीक वैसे ही फुर हो गया। आखें बंद कर शराब के प्याले में ऐसा कूदा, मानो उसकी बीवी मर गई हो"

"उसे रडुवा हुए तो एक मुद्दत हो गई! लेकिन वह है कहा?"

प्योत्र झुझलाकर उठा, अरदाल्योन को उबारने के लिए चल दिया और उसके हाथो पिटकर लौटा।

इसके बाद ओसिप ने होठ भींचे, अपनी जेबो मे हाथ डाले और बोला

"मैं जाता हू, देखता हू आखिर मामला क्या है। आदमी बडा अच्छा है"

मैं भी उसके साथ हो लिया।

"देखा तूने, आदमी भी कितना अजीब जीव है," उसने रास्ते मे कहा, "अभी कल तक इतना भला था, कि बिल्कुल देवता जसा। लेकिन एकाएक जाने क्या बुखार चढा कि दुम उठाकर कूडे के ढेर मे मुह मारने लगा। अपनी आखें खुली रख, मक्सीमिच, और जीवन से सबक ले"

कुनाविनो की 'इन्द्रपुरी' मे—टकियल वेश्याओ के काठ-बाजार मे—हम पहुचे। वहा एक खूसट औरत हमारे सामने आ खडी हुई जो देखने मे चोट्टी मालूम होती थी। ओसिप ने उसके कान मे फुसफुसाकर कुछ कहा और वह हमे एक छोटी सी खाली कोठरी मे ले गई। कोठरी मे अधेरा था और खूब गदगी फली थी। लगता था जसे यहा जानवर बधते हो। कोने मे खटिया पडी थी जिसपर मोटी औरत नींद मे ऐंड रही थी। बूढी उसे झझोडते और कोहनियाते हुए बोली

"निकल यहा से,—सुनती नहीं, निकल यहा से!"

औरत घबराकर उछल खडी हुई और हथेलियो से चेहरे को मलते हुए मिमियाई

"हाय भगवान, ये कौन हैं? क्या हुआ?"

"खुफिया पुलिस का धावा!" ओसिप ने गम्भीरता से कहा।

औरत मुह बाये नौ दो ग्यारह हो गई। ओसिप ने उसके पीछे घृणा से थूक की पिचकारी छोडी। फिर बोला

"ये लोग शतान का मुकाबिला कर सकती हैं, लेकिन खुफिया पुलिस का नहीं"

दीवार पर एक छोटा सा आईना लटका था। बुढ़िया ने उसे उतारा और दीवार पर लगे कागज को उठाते हुए बोली

"इधर देखो। क्या यही तो नहीं है?"

ओसिप ने सूराख मे से देखा।

"बातो के शेर! अपनी अक्ल को ताश के पत्तों की तरह एक-दूसरे के सामने फटकारते हैं। एक कहता है देख, कितने बढ़िया पत्ते हैं! दूसरा कहता है लेकिन मेरा रग देखकर तो कलाबाजी खा जाएगा!"

"मुझे तो इसमे कोई बुराई नहीं मालूम होती," ओसिप ढलमुल जवाब देता, "शेखी बघारना इसान का स्वभाव है। कौन लडकी ऐसी है जो अपना सीना उभारकर नहीं चलना चाहती?"

लेकिन अरदाल्योन इतने पर ही बस न करता। हृदय की खुजली मिटाते हुए कहता

"उठते-बैठते, खाते-पीते, वे भगवान की रट लगाते हैं, लेकिन एक एक कौडी दात से पकडने और माया जोडने मे इससे कोई फर्क नहीं पडता।"

"ग्रिगोरी के पास तो मुझे कभी फूटी कौडी भी नजर नहीं आती। माया वह कहा से जोडेगा?"

"मै अपने मालिक की बात कर रहा हू। माया-मोह छोडकर वह जगल की शरण क्यो नहीं लेता? सच कहता हू, मैं तो यहा की हर चीज से उकता गया हू वसन्त आते ही साइबेरिया के लिए चल दूगा!"

अन्य कारीगर ईर्ष्या की नजर से अरदाल्योन की ओर देखते। फिर कहते

"तेरे बहनोई जैसा हमारा भी वहा कोई खूटा होता तो साइबेरिया क्या, हम जहन्नुम मे भी पहुच जाते!"

एकाएक अरदाल्योन गायब हो गया। रविवार के दिन वह चला गया और तीन दिन तक कुछ पता नहीं चला कि वह कहा लोप हो गया या उसका क्या हुआ।

कारीगरो ने भय और आशका से भरी अटकल लगानी शुरू की

"कहीं किसीने मार तो नहीं डाला?"

"हो सकता है कि नदी मे तरते-तरते डूब गया हो?"

अन्त मे येफीमुश्का आया और कुछ सकपकाता सा बोला

"अरदाल्योन नशे मे गडगच्च पडा है!"

"यह झूठ है!" प्योत्र अविश्वास से चिल्लाया।

"नशे मे गडगच्च, बेसुध और बेखबर, भुस मे आग लगने पर जिस तेजी से चिगारिया ऊपर उठती हैं, ठीक वसे ही फुर हो गया। आखें बद कर शराब के प्याले मे ऐसा कूदा, मानो उसकी बीवी मर गई हो"

"उसे रड़ुवा हुए तो एक मुद्दत हो गई! लेकिन वह है कहा?"

प्योत्र झुंझलाकर उठा, अरदाल्योन को उबारने के लिए चल दिया और उसके हाथों पिटकर लौटा।

इसके बाद ओसिप ने होठ भींचे, अपनी जेबो मे हाथ डाले और बोला

"मैं जाता हू, देखता हू आख़िर मामला क्या है। आदमी बडा अच्छा है "

मैं भी उसके साथ हो लिया।

"देखा तूने, आदमी भी कितना अजीब जीव है," उसने रास्ते मे कहा, "अभी कल तक इतना भला था, कि बिल्कुल देवता जसा। लेकिन एकाएक जाने क्या बुख़ार चढ़ा कि दुम उठाकर कूडे के ढेर मे मुह मारने लगा। अपनी आखें खुली रख, मक्सीमिच, और जीवन से सबक ले "

कुनाविनो की 'इन्द्रपुरी' मे—टकियल वेश्याओ के काठ बाज़ार मे—हम पहुचे। वहा एक खूसट औरत हमारे सामने आ खडी हुई जो देखने मे चोट्टी मालूम होती थी। ओसिप ने उसके कान मे फुसफुसाकर कुछ कहा और वह हमे एक छोटी सी खाली कोठरी मे ले गई। कोठरी मे अधेरा था और खूब गदगी फली थी। लगता था जसे यहा जानवर बधते हों। कोने मे खटिया पडी थी जिसपर मोटी औरत नींद मे ऐंड रही थी। बूढ़ी उसे झझोडते और कोहनियाते हुए बोली

"निकल यहा से,—सुनती नहीं, निकल यहा से!"

औरत घबराकर उछल खडी हुई और हथेलियो से चेहरे को मलते हुए मिमियाई

"हाय भगवान, ये कौन हैं? क्या हुआ?"

"खुफिया पुलिस का धावा!" ओसिप ने गम्भीरता से कहा।

औरत मुह बाये नौ दो ग्यारह हो गई। ओसिप ने उसके पीछे घृणा से थूक की पिचकारी छोडी। फिर बोला

"ये लोग शतान का मुकाबिला कर सकती हैं, लेकिन खुफिया पुलिस का नहीं "

दीवार पर एक छोटा सा आईना लटका था। बुढिया ने उसे उतारा और दीवार पर लगे काग़ज़ को उठाते हुए बोली

"इधर देखो। क्या यही तो नहीं है?"

ओसिप ने सूराख मे से देखा।

"हां, यही है। पहले उस रंडी को दफा करो.."

मैंने झांककर देखा। यह कोठरी भी उतनी ही अंधेरी और गंदी थी जितनी कि यह जिसमें हम खड़े थे। खिड़की के पल्ले कसकर बन्द थे और उसकी चौखट पर एक लैम्प जल रहा था। लैम्प के पास एक ऐंचीतानी नंगी तातार लड़की खड़ी थी। यह अपनी फटी हुई चोली में टांके लगा रही थी। उसके पीछे दो तकिया पर अरदाल्योन का सूजा हुआ चेहरा नजर आ रहा था। उसके कालो और कड़े वालो बाला दागें बेतरतीबी से चौगिर्द बिखरी थी। आहट पाकर तातार लड़की चौकन्नी हो गई, बदन पर चोली डाली और बिस्तर के पास से गुजरते हुए एकाएक उस कोठरी मे आ गई जहां हम खड़े थे।

ओसिप ने एक नजर उसकी ओर देखा और फिर थूक की पिचकारी छोड़ी।

"थू, बेशर्म कुतिया!"

"और खूद उहमक!" खिलखिल करते हुए उसने जवाब दिया।

ओसिप भी कुछ हंसा और उंगली हिलाकर उसे कोंचा।

हमने तातार लड़की के दरबे मे प्रवेश किया। बूढ़ा ओसिप अरदाल्योन के पांवो के पास जम गया और उसे जगाने के लिए देर तक उससे जूझता रहा। अरदाल्योन रह रहकर बड़बड़ाता

"ओह क्या मुसीबत है एक मिनट ठहरो, बस एक मिनट अभी चलता हू"

आखिर वह उठा, वहशियाना आखो से उसने ओसिप और मेरा ओर देखा और इसके बाद अपनी लाल अंगारा सी आंखो को बंद करते हुए बुदबुदाया

"हा तो"

"तुम्हीं सुनाओ, तुम्हारे साथ क्या गुजरी?" ओसिप ने शान्त और रूखे, लेकिन डांट डपट के भाव से मुक्त स्वर मे पूछा।

"दीन दुनिया सब भूल गया," अरदाल्योन ने बठे हुए गले से खखारकर कहा।

"सो क्यो?"

"खुद देख तो रहे हो"

"तुम्हारा हुलिया तो काफी बिगड़ा हुआ मालूम होता है.."

"मैं जानता हू "

अरदाल्योन ने मेज से वोदका की एक पहले से खुली बोतल उठाकर मुह मे लगा ली। फिर ओसिप की ओर बोतल बढाते हुए बोला

"लो, पियोगे? और देखो, पेट मे डालने के लिए भी उस रकाबी मे कुछ होगा "

बूढे ओसिप ने एक चुस्की ली, मुह बिचकाते हुए तीखी वोदका को गले के नीचे उतारा और पाव रोटी का एक टुकडा लेकर उसे बडे ध्यान से चबाने लगा। अरदाल्योन अलस भाव से कहे जा रहा था

"यो हुआ.. एक तातार लडकी के साथ उल्लू बन गया। यह सारी येफीमुश्का की कारिस्तानी है। बोला, जवान लडकी है—कासीमोव की रहनेवाली—न उसके मा है, न बाप, मेला देखने आयी है।"

दीवार के सूराख मे से टूटी फूटी रूसी जबान मे मुहफट शब्द सुनाई दिए

"तातार मजेदार है, इकदम चूजी है! यह बूढा तेरा बाब है जो यहा बठा है? इसे निकाल बाहर कर!"

"यही वह लडकी है," चुधी सी आखो से दीवार की ओर ताकते हुए अरदाल्योन ने कहा।

"मैंने देखा है," ओसिप बोला।

फिर अरदाल्योन मेरी ओर मुडा

"देखा भाई, मैंने अपनी क्या दुगत कर डाली है "

मेरा खयाल था कि ओसिप अरदाल्योन को खूब झिडकेगा या उसे लेक्चर पिलाएगा और वह अपने किये पर पछताएगा। लेकिन उसने ऐसी कोई हरकत नहीं की। दोनो कधे से कधा सटाए लगे-बधे अदाज मे बातें करते रहे। उन्हे अधेरे और गदगी भरे दडबे मे इस तरह बठा देख मेरा जी भारी हो गया और मै उदासी मे डूबने उतराने लगा। तातार लडकी अभी भी टूटी फूटी रूसी जबान मे दीवार के पीछे से बक झक रही थी। लेकिन उसकी आवाज का उनपर कोई असर नहीं हो रहा था। ओसिप ने मेज पर से एक सूखी हुई मछली उठाई, अपने जूते से टकराकर उसके अजर पजर ढीले किये और फिर उसके छिलके उतारने लगा।

"गाठ में अब कुछ बचा कि नहीं?" उसने पूछा।

"प्योत्र से कुछ मिलने हैं "

"सभल जा सट्टो। अब तो तोम्स्क चला जाना चाहिए तुझे..."

"क्या तोम्स्क – वोम्स्क .."

"इरादा बदल लिया, क्या?"

"बात यह है कि ये मेरे रिश्तेदार "

"तो फिर क्या?"

"बहिन, बहनोई "

"तो इससे क्या हुआ?"

"नहीं, अपने रिश्तेदारो की चाकरी बजाने मे कोई मजा नहीं है..."

"मालिक सब एक से, चाहे रिश्तेदार हो या ग़ैर रिश्तेदार।"

"फिर भी "

वे इस हद तक घुल मिलकर और गम्भीर भाव से बतिया रहे थे कि चिडचिडाने और उन्हें चिढाने मे तातार लडकी को अब कोई तुक नहीं दिखाई दी और वह चुप हो गई। दबे पाव वह कमरे मे आई, खूटी पर से चुपचाप उसने अपने कपडे उतारे और फिर गायब हो गई।

"लडकी जवान मालूम होती है," ओसिप ने कहा।

अरदाल्योन ने उसकी ओर देखा और फिर सहज भाव से बोला

"यह सब बेफ़ीमुदका ही है, शरारत की जड। लुगाइया ही उसका ओढना और बिछौना हैं वसे यह तातार लडकी है मजेदार, खूब हसमुख और बेतुकी बातो की पिटारी!"

"लेकिन जरा होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हे अपनी इस पिटारी मे ही बद करके रख ले!" ओसिप ने उसे चेताया और मच्छी का आख़िरी निवाला निगलकर वहा से चल दिया।

लौटते समय मैंने उससे पूछा

"आख़िर तुम आए किस लिए थे?"

"हाल चाल देखने। वह मेरा पुराना साथी है। एक दो नहीं, इस तरह की अनेक घटनाए मैं देख चुका हू। आदमी भला चगा जीवन बिताता है और फिर, एकाएक, इस तरह हवा हो जाता मानो जेल के सीखचे तोडकर भागा हो।" उसने अपनी पहली वाली बात को दोहराया और इसके बाद बोला, "वोदका से दूर रहना चाहिये!"

कुछ क्षण बाद उसकी आवाज फिर सुनाई दी

"लेकिन इसके बिना जीवन सूना हो जाएगा!"

"योवका के बिना?"

"हां, एक घुस्की लेते ही ऐसा मालूम होता है जसे हम दूसरी दुनिया मे पहुच गए.."

और अरदाल्योन पर योद्का और उस तातार लडको का कुछ ऐसा रग चढ़ा कि वह उबरकर न दिया। कई दिन बाद वह काम पर लौटा, लेकिन जल्दी ही वह फिर ग़ायब हो गया और उसका कुछ पता नहीं चला। वसन्त मे एकाएक उससे मेरी भेंट हो गई। कुछ अन्य आवारा लोगो के साथ वह बजरों के चौगिद जमा बर्फ काट रहा था। बडे तपाक से हम मिले, एक-दूसरे को देखकर हमारे चेहरे खिल गए और चाय पीने के लिए एक भटियारखाने मे हम पहुचे।

"तुझे तो याद होगा कि मैं कितना बढ़िया कारीगर था," चाय की चुस्कियों के साथ उसने शेखी बघारना शुरू किया। "इसमे कोई इनकार नहीं कर सकता कि मुझे अपने काम मे कमाल हासिल था। अगर मैं चाहता तो वारे-न्यारे कर देता.."

"लेकिन तुम तो कोरे ही रहे।"

"हां, मैं कोरा ही रहा!" उसने गर्व से कहा। "और यह इसलिए कि मैं किसी से चपकर नहीं रह सकता—नहीं, अपने धंधे से भी नहीं!"

यह कुछ ऐसे ठाठ से बोल रहा था कि भटियारखाने में बठे कितने ही लोग उसकी ओर देखने लगे।

"चुप्पे चोर प्योत्र की बात तो तुझे याद है न? काम के बारे मे वह कहा करता था, 'दूसरो के लिए ईंटो के पक्के घर, और अपने लिए फ़क़त लकडी का एक ताबूत!' ऐसे धंधे के पीछे कोई क्यो जान दे!"

"प्योत्र तो रोगी आदमी है," मैंने कहा, "मौत की बात सोचकर हर घडी कापता रहता है।"

"रोगी तो मैं भी हू," वह चिल्लाकर बोला, "कौन जाने मेरी आत्मा मे घुन लगा हो!"

रविवार के दिन शहरी चहल-पहल से दूर मैं 'लखपति बाजार' पहुच जाता जहा भिखमगे और आवारा लोग रहते थे। मैंने देखा कि अरदाल्योन तेज गति से नगर की इस तलछट का अग बनता जा रहा है। एक साल पहले की ही तो बात है जब कि वह उछाह और उमग से भरा एक समझदार कारीगर था। लेकिन अब उसने छिछले तौर-तरीके अपना

लिए थे, घूमता और सबसे टकराता हुआ चलता था, उसकी आंखों में हर किसी को ठेंगे पर मारने तथा हर किसी से गुत्थमगुत्था होने का भाव खेलता रहता था।

"देखा, यहां लोग कसे मेरा मान करते हैं—मैं बस एक तरह से इनका सरदार हू," वह शेखी बघारता।

जो भी वह कमाता उसे अपने आवारा साथियो को खिलाने पिलाने मे उडा देता। लडाई-झगडे मे हमेशा कमजोर की तरफ लेता, अक्सर चिल्लाकर कहता

"यह धोखा घडी ठीक नहीं, दोस्तो, ईमानदारी से काम लेना चाहिए!"

ईमानदारी की उसकी इस गुहार से उसके सभी सगी-साथी परिचित थे, यहा तक कि उन्होंने उसका नाम 'ईमानदार' रख छोडा था। वह इस नाम को सुनकर बहुत खुश होता।

मैं इन लोगो को समझने की कोशिश करता जो ईंट पत्थरो की इस खत्ती मे—जजर और गदे लखपति बाजार मे—अटे पडे थे। यहा जीवन की मुख्य धारा से छिटके हुए लोग बसते थे, और ऐसा मालूम होता मानो उन्होंने अपने जीवन की एक अलग धारा का निर्माण कर लिया था, एक ऐसी धारा का जो मालिको से स्वतत्र थी और मौज-मजे में छलछलाती हुई बहती थी। इन लोगो मे साहस था और स्वच्छन्दता थी। उन्हें देखकर मुझे नाना से सुनी वोल्गा के मल्लाहो की याद हो आती जिन्हे डाकू या साधु बनते देर नहीं लगती थी। जब उनके पास कोई काम धधा न होता तो वे बजरो और जहाजो पर हाथ साफ करते और जो भी छोटी-मोटी चीज हाथ लगती उसे उडाने से न चूकते। उनकी यह हरकत मुझे जरा भी अटपटी या बुरी न मालूम होती। नित्य ही मैं देखता कि जीवन का सारा ताना-बाना ही चोरी के धागो से बुना है। लेकिन इसी के साथ साथ मैं यह भी देखता कि कभी-कभी—जसे आग लगने या नदी पर जमी बफ तोडने या लदाई का कोई फौरी काम आ पडने पर—ये लोग भारी उत्साह से काम करते, अपनी जान तक की परवाह न कर अपनी शक्ति का एक अणु भर भी बचाकर न रखते। वसे भी अन्य लोगो के मुकाबले मे ये कहीं ज्यादा जिन्दादिल और मौजी जीव थे।

सलपति बाजार मे एक रन-बसेरा था जिसके ग्रहाते मे एक भसौरा था। एक दिन ग्ररदाल्योन, उसका साथी 'बच्चा' और मैं इस भुसौरे की छत पर चढ़े थे और 'बच्चा' दोन नदी के किनारे स्थित रोस्तोव नगर से मास्को तक की अपनी पदल यात्रा का मनोरजक हाल सुना रहा था। वह भूतपूर्व सनिक था और सपरमेनो की टुकडी मे नियुक्त था। सत जाज के क्रास से यह विभूषित था और तुर्की के साथ युद्ध मे उसका घुटना घायल हो गया था। इस चोट ने उसे जन्म भर के लिए पगु बना दिया था। नाटा और गठा हुआ उसका बदन था। उसके हाथ बहुत ही मजबूत और शक्तिशाली थे, लेकिन उसका पगु होना आडे आता था और अपने हाथो की इस शक्ति का वह कोई उपयोग नहीं कर पाता था। किसी रोग की वजह से उसके सिर और दाढ़ी के बाल झड गए थे, और उसका सिर सचमुच नवजात बच्चे के सिर की भाति साफ और चिकना बन गया था।

अपनी लाल ग्राखो को चमकाते हुए वह कह रहा था

"इस तरह मैं सेरपुखोव पहुचा। वहा एक पादरी पर मेरी नजर पडी जो अपने घर के आगन मे बैठा था। मैं उस के पास पहुचा और बोला, 'तुर्की युद्ध के इस बीर की कुछ मदद करो, बाबा'"

अरदाल्योन ने सिर हिलाया और बीच मे ही बोल उठा

"ग्रोह, झूठो के सरदार "

"क्यो, इसमे झूठ क्या है?" 'बच्चा' ने बुरा न मानते हुए सहज भाव से पूछा। लेकिन अरदाल्योन ने उसकी बात नहीं सुनी और अलस भाव से सीख सी देता हुआ बोला

"नहीं, तू ईमानदारी से नहीं रहता! तुझे तो चौकीदारी-दरबानी करनी चाहिए, सभी लगडे यही करते हैं। और तू झक मारता, बेकार की बातें बनाता फिरता है "

"यह सब तो मैं योही मजे मे आकर करता हू—लोगो को हसाने के लिए "

"तुझे अपने पर हसना चाहिए "

तभी ग्रहाते मे, जिसमें रुपहला मौसम होने के बावजूद अधेरा था और खूब कूडा-कचरा फला था, एक स्त्री आई और सिर से ऊपर अपना हाथ उठाकर कोई चीज हिलाते हुए चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी

"घाघरा बेचू हू, घाघरा। अरी लेगी कोई "

स्त्रिया अपने अपने दड़बे मे से रेंगकर बाहर निकल आई और घाघरा बेचनेवाली के चारो ओर जमा हो गइ। मैंने उसे तुरत पहचान लिया। यह धोबिन नताल्या थी। छत से कूदकर मैं अभी नीचे पहुचा ही था कि पहली बोली बोलनेवाली स्त्री के हाथ घाघरा बेच वह चुपचाप आगन से बाहर निकलती दिखाई दी।

फाटक के बाहर उसके निकट पहुचकर खुशी-खुशी मैंने कहा

"अरे, जरा सुनो तो!"

"क्या क्या है?" कनखियो से देखते हुए वह बोली। फिर एकाएक ठिठककर खडी हो गई और नाराजगी मे भरकर चीख उठी

"हाय भगवान, तू यहा कैसे? "

उसके इस तरह चौंककर चीख उठने ने मुझे बडा प्रभावित किया, और साथ ही एक अजीब परेशानी का भी मैंने अनुभव किया। समझ दारी से भरे उसके चेहरे पर भय और अचरज के भाव साफ दिखाई देते थे। मुझे समझने मे देर नहीं लगी कि मुझे यहा, इस जगह देखकर, वह आशकित हो उठी है। मैंने तुरत सफाई देनी शुरू की कि मै यहा नहीं रहता, योही कभी-कभी इधर चला आता हू।

"कभी-कभी चला आता हू!" उसने व्यग से मेरी बात दोहराई और तीखे स्वर मे बोली, "आखिर किसलिए? बोल, राह-चलतो की जेब साफ करने के लिए या लडकियो के जम्पर मे हाथ डालकर उनको टोह लेने के लिए?"

उसका चेहरा मुरझा गया था, होठो की ताजगी विदा हो चुकी थी, और आखो के नीचे काले घेरे पडे थे।

भटियारखाने के दरवाजे पर वह रुकी और बोली

"चल, एक एक गिलास चाय पी ली जाए! कपडे तो तू साफ-सुथरे पहने है, इस जगह मे रहनेवाले लोगो जसे नहीं, फिर भी जाने क्यो तेरी बात मानने को जी नहीं चाहता "

भटियारखाने के भीतर पाव रखते न रखते सन्देह और अविश्वास की वह दीवार मुझे ढहती मालूम हुई जो उसके हृदय मे अनायास ही मेरे प्रति खडी हो गई थी। गिलास मे चाय उडेलने के बाद उसने कुछ बेरस और अनमने भाव से बताना शुरू किया कि मुश्किल से एक घटा पहले ही

यह सोकर उठी थी, और यह कि उसके पेट मे अभी तक कुछ भी नहीं पड़ा है।

"पिछली रात जब मैं सोने के लिए अपने बिस्तर पर गई तो पूरी मधुवा बनी हुई थी। लेकिन यह याद नहीं पडता कि मैंने कहां और किसके साथ पी।"

उसे देखकर मुझे बडा दु ख हुआ, और उसकी मौजूदगी मे एक तरह की बेचैनी सा मैं अनुभव करने लगा। उसकी लडकी का हाल जानने के लिए मैं बेहद उत्सुक था। चाय और वोदका से कुछ गरमाने के बाद उसने अपनी उसी सहज चपलता और ढग से बोलना शुरू किया जो इस जगह मे रहनेवाली सभी स्त्रियो की खासियत थी। लेकिन जब मैंने उसकी लडकी के बारे मे पूछा तो वह तुरत गम्भीर हो गई और बोली

"तुझे उससे मतलब? यह मैं बताए देती हू कि चाहे तू जिंदगी भर एडियां रगड, मेरी लडकी पर कभी डोरे नहीं डाल सकेगा, समझा बचुवा?"

उसने एक और चुस्की ली और फिर बोली

"मेरी लडकी का अब मुझसे कोई वास्ता नहीं है, मेरी ओर आख तक उठाकर नहीं देखती। और मेरी औकात भी क्या है? कपडे धोनेवाली, एक नीच धोबिन उस जसी लडकी के लिए मैं भला कसे मा बन सकती हू? वह पढ़ी लिखी और विद्वान है। यह बात है, भइया। सो उसने मुझे धता बताया और अपनी सहेली के पास चली गई। उसकी सहेली किसी बडे घर की लडकी है, खूब पसे वाली। मेरी लडकी उसके घर मास्टरनी बनकर रहेगी "

कुछ रुककर उसने फिर धीमे स्वर मे कहा

"कपडे धोनेवाली धोबिन को कोई नहीं पूछता। हा, चलती फिरती वेश्या की लोगो को तलाश रहती मालूम होती है।"

उसने ऐसी वेश्या का धधा अपना लिया है, यह मैं उसे देखते ही भाप गया था। इस गली की सभी स्त्रियां यही धधा करती थीं। लेकिन जब उसने खुद अपने मुह से यह बात कही तो मेरे हृदय पर गहरा आघात लगा और मेरी आखो मे लज्जा तथा तरस के आसू उमड आए। नताल्या के मुह से, उस नताल्या के मुह से जो अभी पिछले दिनो तक एक साहसी, चतुर और अपने मे आजाद स्त्री थी, यह सुनकर मै स्तब्ध रह गया।

"मेरे नन्हे सलानी," उसने एक लम्बी सास भरी और एक नजर मुझे देखते हुए बोली। "यह गली तेरे लायक नहीं है। मेरी सलाह है,— मैं तुझसे बिनती करती हू—भूलकर भी इस गली मे पाव न रखना! नहीं तो यह तुझे चटकर जाएगी!"

इसके बाद मेज पर दोहरी होकर और अपनी उगली से ट्रे मे रेखाए खींचते हुए, धीमे और असम्बद्ध स्वर मे, मानो अपने आप से ही वह कहने लगी

"लेकिन मैं कौन होती हू तुझे सलाह देनेवाली? जिस लडकी को मैंने अपनी छाती का दूध पिलाया, उसी ने जब मेरी एक नहीं सुनी तो तू ही क्यो मानने लगा मै उससे कहती, 'अपनी सगी मा को तू धता नहीं बता सकती, नहीं, तू मुझे छोडकर नहीं जा सकती।' लेकिन वह जवाब देती, 'मै गले मे फदा डालकर मर जाऊगी।' वह नहीं मानी, और कज़ान चली गई। उसे नर्स बनने की धुन थी। वह तो खर कज़ान चली गई, लेकिन मै कहा जाती? मैं किसका आसरा लू? राह-चलते लोगो का? उनके सिवा मेरा और कौन सहारा है?"

वह अब चुप बठी थी, विचारो मे खोई सी। उसके होंठ हिल रहे थे, लेकिन कोई आवाज़ नहीं कर रहे थे। उसे किसी बात की सुध नहीं थी, मेरी भी नहीं जो उसके सामने बठा था। उसके होठो के कोने झुक आए थे, और उसके मुह की रेखा दूज के चाद की भाति फली थी, हसिये जसी गोलाई लिए। उसके होठो मे बल पड रहे थे, और उसके गालो की भूरिया थरथरा रही थीं। ऐसा मालूम होता था मानो वे मूक भाषा मे कुछ कह रही हो। देखकर मेरा हृदय कसमसा उठा। उसका चेहरा आहत और बच्चो जसा भोलापन लिए था। बालो की एक लट शाल के नीचे से निकलकर गाल पर उतर आई थी, और छल्ला सा बनाती उसके नन्हे-मुन्ने कान के पीछे लौट गई थी। तभी आख की कोर से ढुलककर आसू की एक बूद ठडी चाय के गिलास मे आ गिरी। यह देख उसने गिलास दूर खिसका दिया, अपनी आखो को कसकर भींचा और आसू की बाकी दो बूदें और निचोडते हुए शाल के छोर से चेहरे को पोछ लिया।

मेरा हृदय बुरी तरह उमड घुमड रहा था। मै वहा और अधिक नहीं बठा रह सका। चुपचाप उठ खडा हुआ।

"अच्छा तो मै अब"

"क्या? जा, जा, जहन्नुम में जा!" उसने कहा, और सिर उठाए बिना हाथ हिला-हिलाकर मुझे दफा करने लगी। शायद उसे अब यह भी सुध नहीं थी कि मैं कौन हूं।

अरदाल्योन की खोज में मैं फिर म्हाते में लौट आया। उसने साफ तय हुआ था कि दोनों सींगा-मछली का शिकार करने चलेंगे। फिर मैं उसे नतास्या के बारे में भी बताना चाहता था। लेकिन वह और 'बच्चा' दोनों छत पर नहीं थे। भूलभुलैया वाले म्हाते में मैं उन्हें खोज ही रहा था कि तभी कुछ हल्ला-गुल्ला सुनाई दिया। यहां के लोगों में, नित्य की भांति, कोई झगड़ा उठ खड़ा हुआ था।

मैं सपककर भागता हुआ फाटक के बाहर पहुंचा, और नताल्या से टकराते-टकराते बचा जो अर्था की भांति लुढ़कती-पुढ़कती पटरी पर चली आ रही थी। वह सुबकियां ले रही थी और उसका चेहरा बुरी तरह नोचा खरोचा हुआ था। एक हाथ में शाल का छोर थामे वह अपना चेहरा पोंछ रही थी, और दूसरे हाथ से अपने उलझे हुए बालों को पीठ की ओर खिसका रही थी। उसके पीछे-पीछे अरदाल्योन और 'बच्चा' चले आ रहे थे।

"अभी कसर रह गई," 'बच्चा' चिल्लाकर कह रहा था, "मार, इसे थोड़ा मजा और चखा दे!"

अरदाल्योर ने घूसा ताना, और वह घूम गई। उसका चेहरा जल सा रहा था, और आंखों से घृणा की चिंगारियां निकल रही थीं। चिल्लाकर बोली

"आओ, मारो मुझे!"

मैंने अरदाल्योन का हाथ दबोच लिया। चकित नजर से उसने मुझे देखा। बोला

"क्या, तेरे सिर पर क्या भूत सवार हुआ?"

"इसे हाथ मत लगाना," बड़ी मुश्किल से मैं इतना ही कह पाया।

वह खिलखिलाकर हंसा। बोला

"तू क्या इसपर लट्टू हो गया है? ओह नताल्या, खुदा बचाए तेरे हरजाईपन से, तूने इस बाल-ब्रह्मचारी को भी अपने जाल में फंसा लिया!"

'बच्चा' भी अपने कूल्हों पर हाथ मारते हुए लोट-पोट हो रहा था। दोनों ने मिलकर मुझे कोंचना और मुझपर कीचड़ उछालना शुरू किया।

नताल्या को मौका मिला और वह खिसक गई। कुछ देर तक तो मे उनकी बकवास सुनता रहा। लेकिन जब बरदाश्त से बाहर हो गया तो 'बच्चा' की छाती मे मैंने इतने जोर से सिर मारा कि वह गिर पडा। उसके गिरते ही मैं नौ दो ग्यारह हो गया।

इसके बाद एक लम्बे अर्से तक मैंने लखपति बाजार का रुख नहीं किया। लेकिन अरदाल्योन से मेरी एक बार फिर भेंट हो गई, इस बार एक बेडे पर।

"क्या हाल है?" उसने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा। "इतने दिनो तक कहा गायब रहा?"

मैंने उसे बताया कि जिस तरह उसने नताल्या को पीटा और मेरा अपमान किया, वह मुझे बडा बुरा मालूम हुआ और मेरा मन उससे फिर गया। यह सुनकर वह सहज प्रसन्नता से हसा और बोला

"तू समझता है कि हम सचमुच मे तेरा अपमान करना चाहते थे? अरे नहीं, हम तो केवल तुझे चिढ़ा रहे थे। और जहा तक उसका सम्बध है, उसे मारना क्या गुनाह है? एक टकियल औरत के लिए इतना दद क्या? अगर इसान अपनी बीबी को पीट सकता है तो फिर उस जसी छिनाल किस खेत की मूली है! लेकिन छोडो यह सब। हम तो केवल मजाक कर रहे थे! मार-पीट से कोई नहीं सुधरता, यह मै भी खूब जानता हू!"

"लेकिन यह तो बताओ कि तुम उसका सुधार क्या करते? तुम खुद भी तो उससे अच्छे नहीं हो!"

उसने अपनी बाह मेरे गले मे डाल दी और प्यार से मुझे झझोडा।

"यही तो मुसीबत है," उसने उपहास के स्वर मे कहा, "इस दुनिया म कोई किसी से अच्छा नहीं है मेरे भी आखें हैं, भाई, सभी कुछ मै देखता हू। मुझे भीतर का भी सब हाल मालूम है, और बाहर का भी। मैं निरा कोल्हू का बल नहीं हू"

वह नशे की तरग मे था और मेरी ओर प्यार भरे तरस के साथ देख रहा था। उसकी आखो मे कुछ वसा ही भाव था जसा कि किसी सहृदय शिक्षक की आखो मे अपने कूढ़ दिमाग शिष्य को पढाते समय तरता रहता है।

पावेल ओदिन्तसोव से कभी-कभी मेरी मुलाकात हा जाती थी।

हमेशा से ज्यादा उछाह उसमे नजर आता था, वह छला बना घूमता था और बडे-बूढे की तरह से मेरे साथ पेश आता और मुझे धिक्कारता

"मेरी समझ मे नहीं आता तूने यह धधा क्से पसद किया? मेरी बात गाठ बाध ले कि उन देहातिया के साथ काम करके तेरे पल्ले कभी कुछ नहीं पडेगा "

इसके बाद उदास भाव से उसने वकशाप के समाचार सुनाए

"जिख़रेव अभी भी उस मुहमुही के चक्कर मे फसा है। सितानोव क हृदय मे भी कोई घुन लग गया है,—यह अब जरूरत से ज्यादा नशे मे धुत्त रहता है। गोगोलेव को भेडिये चटकर गए। मुलेटाइड की छुट्टियों में वह घर गया था। वहा नशे मे इतना उल्टाग हो गया कि भेडिये उसकी बोटी-बोटी चबा गए!"

खूब खिलखिलाकर हसते हुए पावेल गढ़ने लगा

"सच भेडिये उसकी बोटी-बोटी चबा गए। लेकिन उसने इतनी पी रखी थी कि खून की जगह उसकी नसो मे शराब दौड रही थी! सो भेडियो को भी नशा हो गया और अपनी पिछली टागो पर खडे होकर सरकस के कुत्तो की भाति जगल मे नाचने तथा कुहराम मचाने लगे। वे इतने चीखे चिलाए कि बेदम होकर गिर पडे और अगले दिन मरे हुए पाए गए! "

यह सुनकर मुझसे भी हसे बिना न रहा गया, लेकिन मेरी यह हसी उदासी मे डूबी थी। उसकी बातो से साफ मालूम होता था और मुझ यह अनुभव करते देर नहीं लगी कि वकशाप और उससे सम्बद्ध मेरी सभी स्मतियो पर अतीत का आवरण पड गया है, सदा के लिए वे मुझसे विदा हो गई हैं। और यह, निश्चय ही, उदासी का सचार करने वाली बात थी।

१६

जाडो के दिन थे। मेले का काम करीब-करीब खत्म हो चुका था। मै अब घर पर ही रहता था और काम का वही पुराना चक्कर फिर शुरू हो गया था। दिन भर मैं उसी मे फसा रहता, लेकिन साझ तक काम से छुट्टी मिल जाती। तब सारा घर जमा होकर बठता और मै उन्हे

पहले की भांति हृदय पर पत्थर रख, "नीवा" और "मोस्कोव्स्की लीस्तोक" मे छपे टकियल उपन्यास पढकर सुनाता। रात को मैं अच्छी पुस्तके पढता, और तुकबन्दिया जोडने की कोशिश करता।

एक दिन मेरी मालकिनें गिरजे गई हुई थीं। मालिक की तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए वह घर पर ही था। मुझे देखकर बोला

"वीक्तर अक्सर मज़ाक़ उडाया करता है कि तू कविताए लिखता है,–क्या यह सच है, पेशकोव? कुछ सुना न? देखें तूने क्या लिखा है!"

मुझसे इनकार करते नहीं बना, और मैंने उसे अपनी कुछ कविताए सुनाईं। ऐसा मालूम होता था कि उसे कविताए पसद नहीं आईं। लेकिन उसने कहा

"ठीक है, ठीक है, लिखे जा। कौन जाने लिखते लिखते एक दिन तू भी दूसरा पुश्किन बन जाए। कभी पढी हैं पुश्किन की कविताए?

भुतने को दफना रहे
या रचते डायन का ब्याह?

उसके जमाने मे लोग डायनो और भुतनो मे विश्वास करते थे। लेकिन वह खुद भी विश्वास करते थे, यह मै नहीं मानता,–उसने तो ऐसे ही मजाक मे ये पक्तिया लिखी होगी!" इसके बाद कुछ गुनगुनाती सी मुद्रा मे उसने कहना शुरू किया, "सच कहता हू, भाई तेरी शिक्षा का कोई बाकायदा प्रबध होना चाहिए था। लेकिन अब तो बहुत देर हो गई। शैतान ही जानता है कि इस दुनिया मे तेरा क्या बनेगा? अपनी इस कापी को औरतो से छिपाकर रखना। अगर उनकी नजर पड गई तो तुझे चिढाना और कोचना शुरू कर देंगी औरतो को इसमे मजा मिलता है,–सच भाई, वे रस ले-लेकर मम-स्थल को कुरेदती हैं"

इधर कुछ दिनो से मालिक का बोलना कम हो गया था और वह सोच मे डूबा रहता था। थोडी-थोडी देर बाद नजर बचाकर वह इधर उधर देखता, और दरवाज़े पर घटी की आवाज़ सुनकर हर बार चौंक उठता। कभी-कभी चिडचिडेपन का एक भूत सा उसके दिमाग पर सवार हो जाता, जरा जरा सी बात पर वह बौखला उठता, हर किसी पर चिल्लाता, अन्त मे घर से गायब हो जाता और गई रात नशे मे धुत्त

होकर लौटता साफ मालूम होता था कि उसके हृदय पर कोई भारी बोझ रखा है, किसी ऐसी चीज से वह ग्रस्त है जिसे सिवा उसके और कोई नहीं जानता, और जिसने उसकी आत्मा को इस हद तक खण्डित कर दिया है कि उसका अपने मे विश्वास नहीं रहा है, जीवन मे उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई है लेकिन फिर भी निरे अभ्यासवश जिये जा रहा है।

रविवार के दिन दोपहर के खाने के बाद मैं घूमने के लिए निकल जाता। रात के नौ बजे तक मैं घूमता और इसके बाद यास्काया सडक के भटियारखाने मे पहुच जाता। भटियारखाने का मालिक एक मोटा आदमी था जिसके बदन से हर घडी पसीना चूता रहता था। गानो का उसे बेहद शौक था। नतीजा इसका यह कि वोदका, बीयर और चाय के लालच मे आस-पास के सभी गिरजो के गायको का यहा जमघट लगा रहता। वे गाने सुनाते और बदले मे वह उनके गलो को तर कर देता। गिरजों के ये गायक बहुत ही बेमजा और नशे पर जान देनेवाले जीव थे। वे गाते क्या थे, मानो बेगार काटते थे, सो भी उस समय जब उन्हे वोदका का लालच दिया जाता था। तिस पर मजा यह कि वे हमेशा गिरजे के गीत ही गाते, यो अपवाद की बात दूसरी है। भगत किस्म के पियक्कड इसका विरोध करते। कहते कि कहा भटियारखाना और कहा गिरजे के गीत। नहीं, ये यहा नहीं चलेगे! इसलिए मालिक उन्ह अपने निजी कमरे म बुला लेता और वहा बठकर उनका गाना सुनता। दरवाजे मे से गीत के स्वर मुझे सुनाई देते। लेकिन अक्सर कारीगरो और देहातिया के भी गाने होते। भटियारखाने का मालिक उनकी खोज मे रहता, और सारे नगर को छान डालता। बाजार के दिन देहातो से जो किसान आते, उनमे अगर कोई गायक होते तो वह उनका पता लगाता और भटियारखाने मे उन्हे बुलाता।

गायक को वह हमेशा बार के काउण्टर के पास बठाता। ठीक वोदका के गोल पीपे के सामने एक स्टूल पर गायक का आसन जमता। पीपे का तला गोल चौखटे का काम देता और ऐसा मालूम होता मानो गायक का सिर उसमे जडा हो।

क्लेश्चोव नाम का नाटा जीनसाज गायको मे सबसे अच्छा था। उसे एक से एक बढ़िया गाने याद थे। उसके बदन मे मास नहीं था, चमडा

ही चमडी थी, सिर पर लाल बालो की झाडिया उगी हुई थीं। सिकुडे और रौंदे हुए से चुरमुरे चेहरे पर लाश की भाति पथराई हुई चिकनी नाक थी और छोटी छोटी नींद से भारी आखें मानो उसके कोटरा मे स्थिर जडी हुई थीं।

गाते समय वह प्राय अपनी आखो को मूद लेता, सिर वोदका के गोल पीपे के तले पर टिका लेता, लम्बी सास खींचकर अपनी धौंकनी मे हवा भरता और धीमी, लेकिन जादू भरी आवाज मे गाना शुरू करता

अरे, खुले मदानो पर जब घिरकर गहन कुहासा छाया,
दूर दूर की राहो को फट, उसने निगला उन्हे छिपाया

इस जगह वह खडा हो जाता, काउण्टर पर अपनी पीठ टिका लेता और छत की ओर देखता हुआ भावोन्मत्त हो गाता

कहा, कहा, रे, मैं जाऊगा,
कहा राह चौडी पाऊगा?

उसकी आवाज ऊची नहीं बल्कि कभी न थकनेवाली थी। एक रुपहला तार प्रवाहित होता और भटियारखाने की अस्पष्ट तथा धुधली भनभनाहट को बींधता हुआ चारो ओर फल जाता, और गीत के उदास शब्दो तथा सुबकिया भरे स्वरो के जादू से कोई भी अछूता न बचता। वे लोग भी जो नशे मे होते एकाएक इतने गम्भीर हो जाते कि देखकर अचरज होता। वे एकटक बिना पलक झपकाए सामने मेज की ओर देखते रहते। मैं भी उमडता घुमडता, हृदय की गहराइयो से भावो का एक सशक्त बगूला सा उठता और ऐसा मालूम होता कि बाध तोडकर मुझे भी वह अपने साथ खींच ले जाएगा। उत्कृष्ट सगीत के स्वर आत्मा की गहराइयो को छूते हैं, तब हृदय इसी तरह शक्तिशाली भावो से छलछलाने और उमडने-घुमडने लगता है।

भटियारखाने मे गिरजे जसी निस्तब्धता छा जाती और गायक नेक हृदय पादरी की भाति मालूम होता। वह किसी धमग्रन्थ का अश पढकर नहीं सुनाता, बल्कि अपने रोम रोम से ईमानदारी के साथ समूची मानव जाति के लिए प्राथना करता, निरीह मानव जीवन की समूची वेदना को वाणी प्रदान करता। और हर ओर से, हर कोने से बडी-बडी दाढी वाले

लोग उसे देखते रहते, जगली जन्तुओं जसे उनके चेहरा पर बच्चा जमी आखें सोच मे पडकर टिमटिमाती रहतीं। बीच-बीच मे किसी क गहरी सांस भरने की आवाज आती और गीत के प्रभावशाली स्वरों के साथ घुल मिलकर एकाकार हो जाती। उन क्षणो मे मुझे ऐसा अनुभव होता मानो सभी लोग झूठे और कृत्रिम जीवन के जजाल मे फसे हैं जबकि सच्चा जीवन यहां, इस भटियारखाने के भीतर हिलोरें ले रहा है।

कोने मे कचौरी सा मुह लिए बेलगाम और बेशर्मी की हद तक मनमौजी फेरीवाली लिसूत्का बठी थी। मासल कधा के बीच अपना सिर दुबकाए वह रो रही थी और चुपचाप लज्जाहीन आखो से ढुरक रहे आंसुओ को पोछे जा रही थी। उससे कुछ ही दूर एक मेज पर गिरजे का गम्भीर गायक मिश्नोपोल्स्की पसरा हुआ सा बठा था जो पदच्युत पादरी सा लगता था। भारी भरकम डील डौल, गहरी और गूजदार आवाज, जिसकी थाह का कोई पता नहीं चलता था, सूजे हुए चेहरे मे भट्टी सी बडी-बडी आंखें। उसके सामने मेज पर वोदका का गिलास रखा था। गिलास पर वह एक नजर डालता, हाथ बढ़ाकर उसे उठाता, होंठो तक ले जाता और फिर सावधानी से बिना कोई आवाज किए जाने किस आवेश मे अछूता ही उसे मेज पर रख देता।

और भटियारखाने मे जितने भी लोग थे, सब के सब निश्चल बठे रहते। ऐसा मालूम होता मानो सुदूर अतीत मे खोई उनकी सबसे प्रिय और सबसे घनिष्ठ स्मृतिया लौट रही हो।

गीत खत्म करने के बाद क्लेश्चोव निरीह भाव से अपने स्टूल पर बठ जाता और भटियारखाने का मालिक वोदका से छलछलाता गिलास उसकी ओर बढाते हुए सतोष भरी मुस्कराहट के साथ कहता

"भाई वाह, कमाल कर दिया, हालाकि तुम्हारा गीत, गीत न होकर एक अच्छी-खासी गाथा था लेकिन हो तुम पूरे उस्ताद, इससे इनकार नहीं किया जा सकता!"

बिना किसी उतावली के सहज भाव से क्लेश्चोव वोद्का का गिलास खाली कर देता, खखारकर अपना गला साफ करता और कहता

"गाने को तो वे सभी गा सकते हैं जिनके पास गला है, लेकिन गीत की आत्मा निकालकर दिखाने की कला बस मैं ही जानता हू।"

"बस-बस, अब इतनी शेखी न बघारो!"

"अपने मुह पर मोहर वह लगाए जिसके पास शेखी बघारने के लिए कुछ न हो!" उसी धीमे स्वर मे और ढीठपन का भाव लिए गायक कहता।

भटियारखाने का मालिक खीज उठता। झुझलाकर कहता

"क्यो, अपने को तुम बहुत ऊचा समझते हो, क्लेश्चोव?"

"जितनी ऊची मेरी आत्मा है, बस उतना ही। उससे ज्यादा ऊचा मैं नहीं जा सकता"

तभी कोने मे बठा मित्रोपोल्स्की गरज उठता

"क्या समझते हो तुम, ओ कुलबुलाते कीडो, इस कुरूप फरिश्ते के गीतो मे?"

वह हमेशा अपने सींग ताने रहता, हर किसी से टकराता, सभी के दोष निकालता और लडता झगडता। नतीजा इसका यह कि वह हर रविवार को करीब-करीब बिला नागा गायको या अन्य किसी से मार खाता, लोगो मे से जिसका भी हाथ चलता या जो भी ऐसा करना चाहता, सहज ही उसकी मरम्मत कर देता।

भटियारखाने का मालिक क्लेश्चोव के गीतो पर तो जान देता था, लेकिन खुद क्लेश्चोव से नफरत करता था। वह हर किसी से उसकी शिकायत करता और प्रत्यक्षत उसे नीचा दिखाने या उसका मजाक उडाने के तौर-तरीको की टोह मे रहता। भटियारखाने मे आनेवाले सभी लोग जिनमे खुद क्लेश्चोव भी शामिल था, उसकी इस हरकत से परिचित थे।

"माना कि वह अच्छा गवया है, लेकिन उसका दिमाग सातवे आसमान पर रहता है। उसे थोडी मिट्टी की खुशबू सुघानी चाहिए!" भटियारखाने का मालिक अपनी राय जाहिर करता।

कुछ लोग उसकी हा मे हा मिलाते

"सच कहते हो। नकचढ़ा आदमी है!"

भटियारखाने का मालिक और भी बल देता

"समझ मे नहीं आता कि इतना घमड किस बात पर करता है। उसकी आवाज अच्छी है, लेकिन वह तो खुदा की देन है, उसकी अपनी घरेलू ईजाद नहीं। और सच पूछो तो उसकी आवाज कुछ इतनी बढ़िया भी नहीं है!"

"ठीक बात है। उसकी आवाज में इतना दम नहीं है जितना कि उसे इस्तेमाल करने के उसके ढंग में!" स्वर में स्वर मिलानेवाले कहते।

एक दिन अपना गीत खत्म करने के बाद जब गायक भटियारखाने से चला गया तो मालिक ने लिसूग्रा पर जोर डालना शुरू किया

"क्लेश्चोव पर तू ही अपना हाथ आजमा कर देख, मारिया यवगे-फोमोव्ना,—बस, थोड़ी देर के लिए उसको उल्लू बना दे। क्या, बनाएगी न? तेरे लिए तो यह बाएं हाथ का खेल है!"

"सो तो ठीक है। लेकिन इसके लिए किसी जवान औरत को पकड़ो तो अच्छा हो। मैं तो अब बुढ़ा चली!" उसने हंसते हुए कहा।

"जवान औरतों की बात छोड़ो!" उसने जोर दिया। "यह काम सिवा तेरे और कोई नहीं कर सकता! सच, बड़ा मजा आएगा जब वह तेरे तलुवे चाटता दिखाई देगा। बस, एक बार डोरे डालने की जरूरत है। फिर देखना तेरे प्यार में पग कर वह कितने बढ़िया गीत गाता है! एक बार जरूर कोशिश कर, येवदोकीमोव्ना! मैं तुम्हें खुश कर दूंगा।"

लेकिन उसने इनकार कर दिया। वह बैठी रही—अपने बेहिसाब मोटापे में फूली, पलकों को झुकाए और अपनी शाल के फुंदनों से खेलती। उचाट मन से बोली

"तुम्हें अब किसी जवान लड़की को यहां रखना चाहिए। अगर मैं जवान होती तो चाहे जिसकी नाक पकड़कर घुमा देती!"

भटियारखाने के मालिक ने बारहा इस बात की कोशिश की कि क्लेश्चोव नशे में उल्टा हो जाए, लेकिन वह था कि दो-तीन गीत गाने और हर गीत के बाद वोद्का की परत चढ़ाने के बाद जतन से अपने गले में बुना हुआ रूमाल बांधता, उलझे हुए बालों पर अपनी टोपी जमाता और भटियारखाने से चल देता।

भटियारखाने का मालिक क्लेश्चोव को पछाड़ने के लिए बहुधा किसी न किसी गायक का पता लगाता और मुकाबिले की महफिल जमाने का मौका खोजता। ठीक उस समय जब क्लेश्चाव अपना गाना खत्म कर चुका होता और वह उसकी सराहना करके उत्तेजना से भरा क्लेश्चाव से कहता

"सुनो भाई, आज रात एक और गवया यहा मौजूद है! जरा उसे भी सुनें!"

कभी-कभी नये गायक की आवाज अच्छी होती, लेकिन जिस सादगी और तन्मयता से क्लेश्चोव गाता था, वह अन्य किसी मे नहीं दिखाई देती।

भटियारखाने के मालिक को भी हारकर यह बात स्वीकार करनी पडती। हृदय को मसोसते हुए वह नये गायक से कहता

"इस मे शक नहीं कि तुमने अच्छा गाया, तुम्हारी आवाज भी अच्छी है, लेकिन हृदय की धडकन का जहा तक सवाल "

लोग हसकर कहते

"लगता है कि यह जीनसाज किसी से मात नहीं खाएगा!"

क्लेश्चोव की लाल भौंह थिरकती रहतीं। वह उनके नीचे से सबपर एक नजर डालता और भटियारखाने के मालिक से अविचलित, किन्तु नम्र स्वर मे कहता

"चाहे तुम कितनी कोशिश करो, मेरे जोड का गायक नहीं पा सकते। कारण कि मेरी प्रतिभा भगवान की देन है "

"लेकिन इससे क्या, हम सब भी तो भगवान की देन है!"

"कह दिया मैने, वोदका पिला पिलाकर तुम्हारा दिवाला निकल जाएगा, पर मेरी जोड का गायक तुम कभी नहीं पा सकोगे "

भटियारखाने के मालिक का चेहरा लाल हो गया। मन ही मन बुदबुदाया

"कौन जाने, कौन जाने "

क्लेश्चोव उसी निश्चल अदाज मे कहता जाता

"गाना मुर्गों का दगल नहीं है, यह तुम्हें मालूम होना चाहिए! "

"हा, हा, खुद जानता हू। तुम मेरे पीछे क्यो पड गये?"

"मैं पीछे नहीं पड रहा, मैं सिर्फ यह साबित कर रहा हू कि निरा हसी खेल का गाना, शैतान का गाना है!"

"छोडो यह सब! इससे कहीं अच्छा है कि कोई गीत सुनाओ!"

"गाने के लिए मै कभी मना नहीं करता, सपने तक मे तयार रहता हू।" क्लेश्चोव सहमति प्रकट करता, और हल्की सी खखार लेकर गाना शुरू कर देता।

भटियारखाने का समूचा ओछापन, शब्दो और इरादो की समूची काई, वह सब कुछ जो छिछला और गदगी मे डूबा था, धुए की भाति अद्भुत ढग से गायब हो जाता और एक सर्वथा भिन्न प्रकार के जीवन की ताजगी भटियारखाने मे छा जाती। ऐसा मालूम होता मानो हम सब एक नये जीवन मे—अधिक निर्मल, अधिक विचारशील और प्रेम तथा सवेदन से पूर्ण जीवन मे, सास ले रहे हो।

मैं उसपर रश्क करता। मेरा रोम रोम उसकी प्रतिभा और लोगो को अपने साथ बहा ले जानेवाली उसकी शक्ति को ललचाई हुई नजरो से देखता और कुढमुडाता! और अपनी इस शक्ति से कितने अदभुत ढग से वह काम लेता था! इस जीनसाज के निकट पहुचने और खूब घुल मिलकर देर तक उससे बाते करने के लिए मेरा जी बुरी तरह ललक उठता। लेकिन उसकी पीली सी आखो मे कुछ ऐसा अजनबीपन था कि मै उसके निकट जाने का साहस न बटोर पाता। उसकी नजर से ऐसा मालूम होता मानो किसी को नहीं देखती। इसके सिवा उसके समूचे अदाज मे कुछ ऐसा घिनौनापन था कि मै अचकचाकर रह जाता, हालांकि मैं उसे केवल गाने के समय ही नहीं बल्कि बाद मे भी पसद करना चाहता था। बहुत ही भोंडे ढग से, बूढ़े आदमी की भाति, वह अपनी टोपी को आगे की ओर खींच लेता और गले के चारो ओर बडे ही औघड ढग से लाल रग का बुना मफलर लपेटते हुए कहता

"यह मफलर मेरी गुलाबो ने मेरे लिए बुना है"

जब वह गाता नहीं होता तो गर्व से अपने को फुला लेता, पाला फाटी अपनी नाक को रगडता और बेमन से, इक्के दुक्के शब्दो मे सवालो के जवाब देकर कन्नी सी काटता। एक दिन मैं उसके पास जा बैठा। मैंने उससे कुछ पूछा। उसने मेरी ओर देखा तक नहीं और बोला

"कान न खाओ लडके!"

मित्रोपोल्स्की मुझे ज्यादा अच्छा लगता। वह भटियारखाने मे आता और सिर पर भारी बोझ लदे आदमी की भाति आडे तिरछे डग रखता कोने मे पहुच जाता। ठोकर मारकर वह कुर्सी को एक ओर करता और धम्म से उसपर बैठ जाता। अपनी कोहनियो को वह मेज पर टिका लेता, और उसका बडा झबरीला सिर हथेलियो पर टिक जाता। वह मुह से

एक शब्द न निकालता और वोदका के दो या तीन गिलास चढ़ाकर इतने जोरो से चटखारे लेता कि सब उसकी ओर देखने लगते। पलटकर वह भी उद्धत नजर से उन्हे घूरता—ठोडी हथेलियो पर टिकी हुई, तमत माए हुए गाल, और सिर की उलझी हुई लटें, घने अयाल की भाति, निहायत बेतरतीबी से चेहरे पर छाई हुईं।

एकाएक वह चीख उठता

"इस तरह क्यो मेरी ओर घूर रहे हो? क्या दिखाई दे रहा है तुम्हे?"

"हमे एक भुतना दिखाई दे रहा!" कभी कभी कोई जवाब देता।

कई बार ऐसा होता कि वह गुमसुम वोदका का गिलास खाली करता और अपने भारी पावो को घसीटते हुए गुमसुम ही चला जाता। लेकिन अनेक बार उसकी आवाज से भटियारखाना गूज उठता और वह, पैगबर के अदाज मे, लोगो पर कहर बरपा करता

"मैं प्रभु का सेवक हू—सच्चा और कभी न भ्रष्ट होनेवाला सेवक, और इस नाते इसाइया की भाति मै तुम्हे शाप देता हू! नाश हो इस अरिईल नगरी का जिसमे चोर-उचक्के और कुटिल लोग घिनौनी लालसा के कीचड मे किलबिलाते हैं। नाश हो इस धरती रूपी पोत का जो गुनाह और पाप का बोझ लादे ब्रह्माण्ड-सागर मे तर रहा है! क्या है वह गुनाह और पाप? वह गुनाह और पाप तुम हो, जो नशे मे डूबे रहते हो, खाने की चीजो पर कुत्तो की भाति टूटते हो—हा तुम, इस धरती की तलछट और मोरी के कीडो, तुम! अतहीन सख्या है तुम्हारी, अरे अभिशप्तो, यह धरती तुम्हारे अवशेषो को ठुकराती है!"

उसकी आवाज इतने जोरो से गूजती कि खिडकियो के शीशे तक झनझनाने लगते। यह देखकर उसके श्रोता खूब खुश होते और उसकी तारीफ के खूब पुल बाधते।

"बूढे शतान के दम खम तो देखो!"

उससे जान पहचान करना आसान था। बस, उसके गले को तर करने की जरूरत थी। बठते ही वह एक गिलास वोदका और लाल मिच के साथ कलेजी का आडर देता। ये चीजें उसे पसद थीं और गला फाडने तथा पेट की आते उलट पुलट करने का मेहनताना इहीं चीजो के रूप मे

यह वसूल करता था। जब मैंने उससे पूछा कि कौनसी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए तो उसने चाबुक सा फटकारते हुए तुरत उत्तर दिया

"पढ़ने की क्या जरूरत है?"

यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। उसने जब यह देखा तो कुछ मुलायम पड़ा और बुदबुदाते हुए बोला

"कभी धमग्रंथ पढ़े हैं?"

"हा।"

"बस उन्हीं को पढ़ो। उनके बाद और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं। दुनिया का समूचा ज्ञान उनमे भरा है, केवल बछड़े के ताऊ उन्हें नहीं समझते–अर्थात कोई उन्हें नहीं समझता लेकिन तुम हो कौन–गायक हो?"

"नहीं।"

"क्यो नहीं? गाना चाहिए। इससे बढ़कर बुगद धधा दूसरा नहीं मिलेगा।"

बराबर की मेज से किसी ने कहा

"तब तुम क्या हुए,–तुम भी तो गायक हो न?"

"मैं?–मैं लोफर हू। लेकिन तुम से मतलब?"

"कुछ नहीं।"

"वही तो। हर कोई जानता है कि तुम्हारे भेजे मे कुछ नहीं है,–और न कभी कुछ होगी ही। आमीन!"

वह हरेक से–और निश्चय ही मुझसे भी–इसी अदाज मे बातें करता, यह बात दूसरी है कि दो-तीन बार खिलाने पिलाने के बाद मेरे प्रति उसका रवैया कुछ मुलायम पड गया था, यहा तक कि एक दिन कुछ अचरज मे भरकर कहने लगा

"जब भी मैं तुम्हें देखता हू तो यह जानने की तबीयत होती है कि तुम कौन हो, क्या हो, और क्यो हो? यो चाहे तुम जहन्नुम मे जाओ, मेरी बला से!"

क्लेश्चोव के बारे मे मैं उसकी सच्ची राय मालूम करना चाहता था, लेकिन सफल नहीं हो सका। उसका गाना वह मुग्ध भाव से सुनता था। उसकी यह प्रसन्नता छिपी न रहती, और कभी-कभी तो मुग्ध मुस्कराहट उसके चेहरे पर खेलने लगती। लेकिन उससे रब्त जब्त बढ़ाने की वह कभी

कोशिश न करता और भद्दे तथा घृणा से भरे अन्दाज मे उसका जिक्र करता

"वह निरा गधा है। माना कि वह अपने गीतो मे जान डालना जानता है और जो कुछ गाना है उसे समझता है, लेकिन इससे उसके गधा होने मे कोई फर्क नहीं पडता।"

"क्यो?"

"इसलिए कि उसने जन्म ही इस रूप मे लिया है।"

मेरा मन करता कि उससे उस समय बातें की जाए जब कि वह नशे मे न हो। लेकिन ऐसे क्षणो मे वह केवल कास कूख कर रह जाता, और धुध छाई अपनी निरीह आखो से इधर उधर देखता रहता। किसी ने मुझे बताया था कि यह आदमी जो अब अपने जीवन के शेष दिनो को नशे मे डुबाए था, कभी कजान अकादमी मे पढता था और मुमकिन था कि बिशप बन जाता। पहले तो मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और इसे एक मनगढन्त कहानी समझकर ठुकरा दिया। लेकिन एक दिन उससे बातें करते समय मैंने कहीं बिशप क्रिसफ का जिक्र कर दिया। सुनते ही मित्रोपोल्स्की ने अपना सिर हिलाया और बोला

"क्रिसफ?—अरे, उसे तो मै जानता हू। वह मेरा शिक्षक और सरक्षक था। उन दिनो मै कजान मे था,—अकादमी मे। मुझे अच्छी तरह याद है। क्रिसफ का अर्थ है 'सुनहरा फूल'। पामवा बेरीदा ने झूठ नहीं लिखा था। वह क्रिसफ सचमुच मे सुनहरा था!"

"और यह पामवा बेरीदा कौन था?" मैंने उससे पूछा।

लेकिन मित्रोपोल्स्की ने बात टाली। बोला

"यह सब तुम्हे जानने की जरूरत नहीं।"

घर लौटने पर मैंने अपनी कापी निकाली और उसमे लिखा, "पामवा बेरीदा,—उसे जरूर पढना है।" जाने क्यो, मेरे मन मे यह बात समा गई थी कि पामवा बेरीदा मे मुझे उन सब सवालो के जवाब मिल जाएगे जो मेरे हृदय को मथ रहे थे।

अफलातूनी नामो का प्रयोग करने तथा असाधारण शब्दो का जोड तोड बठाने का मित्रोपोल्स्की को चस्का था। मैं सुनता और उलझकर रह जाता।

"जीवन अनीसिया नहीं है," वह कहता।

"यह अनीतिमा क्या बला है?" मैं पूछता।

"लाभदायक," वह जवाब देता और मुझे उलझन मे पड़ा देख मन ही मन प्रसन्न होता।

उसके इस तरह के शब्दो को जब मैं सुनता और इसके साथ-साथ जब मैं यह सोचता कि वह अकादमी मे अध्ययन कर चुका है, तो मुझपर उसका पूरा रोब छा जाता और ऐसा मालूम होता कि उसके पास ज्ञान का खजाना भरा है। मैं इस खजाने की कुजी पाना चाहता, लेकिन वह इतने अनमने और रहस्यमय ढग से बातें करता कि मैं खीज उठता। शायद मैं कच्चा था, और यह नहीं जानता था कि किस तरह उस तक पहुचना चाहिए।

जो भी हो, मेरा हृदय उसकी छाप से अछूता नहीं बचा। नशे के अद्भुत जोश और पैगबर इसाइया के अदाज मे जब वह मानव-जाति को फटकारता और दबग स्वर मे अभिशाप देता तो मैं उसे देखता ही रह जाता।

"ओह, इस धरती की गदगी और सडाध!" वह दहाड़ना शुरू करता। "जहा कुटिल मौज करते हैं और नेक धूल चाटते हैं! जल्दी ही क़यामत का दिन आएगा और तब तुम पश्चाताप करोगे, परतु तब समय निकल चुका होगा!"

उसका गर्जन सुनते हुए मेरी आखो के सामने 'बहुत खूब' और धोबिन नताल्या का चित्र मूर्त हो उठता, जिसका सहज ही इतना दुखद अत हो गया था। साथ ही मुझे रानी मार्गो की भी याद आती जिसके चारो ओर बदगोई के बगूले उडते थे। इस उम्र मे ही मेरे पास याद करने को बहुत कुछ था

इस आदमी के साथ मेरी सक्षिप्त जान-पहचान का अन्त भी कुछ अजीब ढग से हुआ।

वसन्त के दिन थे। सनिको की छावनी के पास खेतो की ओर मैं निकल गया था। वहीं उससे मेरी भेंट हो गई। अपने आप मे डूब भरमाया और फूला हुआ, ऊट की भाति गरदन हिलाता वह अकेला चला आ रहा था।

"क्या टहलने निकले हो?" उसने बठे हुए गले से पूछा। "चलो, एक से दो तो हुए। मैं भी घूमने निकला हू। सच कहता हू भाई, मैं रोगी हू "

कुछ देर तक हम चुपचाप चलते रहे। सहसा एक गढे के तले मे एक आदमी पर नजर पडी। वह गढ़े की दीवार से टिका दोहरा हो गया था, और उसके कोट का कालर ऊचा उठकर उसके एक कान को ढके था। ऐसा मालूम होता था मानो उसने अपना कोट उतारने की कोशिश की हो और उतार न सका हो।

"यह तो नशे मे बेसुध मालूम होता है," गायक ने उसे देखने के लिए ठिठकते हुए कहा।

लेकिन कुछ ही दूर नयी उगी घास पर एक रिवाल्वर, उस आदमी की टोपी, और वोदका की एक खुली बोतल पडी थी जिसकी गरदन घास मे दबी हुई थी। आदमी का चेहरा कोट के कालर मे इस तरह छिपा था मानो वह शर्म से गडा जा रहा हो।

कुछ क्षण तक हम चुपचाप खडे रहे। फिर, अपनी टागो को चौडा करके धरती पर जमाते हुए, मित्रोपोल्स्की ने कहा

"गोली मार ली है!"

मैंने तुरत ही भाप लिया था कि यह आदमी नशे मे बेसुध न होकर मरा हुआ है। लेकिन यह इतना अप्रत्याशित था कि अपने इस विचार को मैंने टिकने नहीं दिया। उसकी खोपडी काफी बडी और चिकनी थी, और उसका एक कान जो नीला पड गया था, कोट के कालर के भीतर से झाक रहा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उसे देखते समय मैंने न तो किसी तरह के भय का अनुभव किया, और न तरस का। मेरे लिए यह कल्पना तक करना कठिन था कि कोई ऐसा आदमी भी हो सकता है जो वसन्ती दिन के इन सुहावने क्षणो मे अपनी जान लेना चाहे!

मित्रोपोल्स्की ने अपने बाल-बढ़े गालो को इस तरह तेजी से रगडा मानो वे ठडा गए हो। फिर फुकार सी छोडते हुए बोला

"सठिया गया है। जरूर इसकी बीवी इसे छोडकर भाग गई होगी, या फिर पराये धन पर हाथ साफ किया होगा"

पुलिस को सूचना देने के लिए उसने मुझे तो नगर भेज दिया, और खुद गढे के किनारे बठ गया। उसने अपनी टागें नीचे गढे मे लटका लीं और अपने झिनझिने कोट को कधो के इद गिद कसकर खींच लिया। पुलिस को आत्महत्या की सूचना देने के बाद मैं लपककर वापिस आ गया। तब तक गायक उस मरे हुए आदमी की बाकी बची हुई वोदका खत्म कर

चुका था। मुझे देखते ही उसने वोदका की खाली बोतल हवा मे हिलायी।

"इस कम्बख्त ने ही इसकी जान ली!" उसने चिल्लाकर कहा, और बोतल को इतने जोरो से जमीन पर पटका कि वह चूर चूर हो गई।

मेरे साथ ही साथ एक पुलिसमन भी लपकता झपकता आ गया। उसने गढ़े मे झाककर देखा, अपने सिर से टोपी उतारकर मतक के प्रति सम्मान प्रकट किया और अचकचाते हुए सलीब का चिन्ह बनाया। फिर गायक की ओर मुडकर बोला

"कौन है तू?"

"मैं कोई भी हू, तुमसे मतलब?"

पुलिसमन ने रुककर कुछ सोचा और फिर जरा विनम्र स्वर में बोला

"जरा सोचो तो, यहा आदमी मरा हुआ पडा है, और तुम नशे म धुत्त हो!"

"मैं बीस साल से नशे मे धुत्त हू!" सीने पर हाथ मारते हुए मिनोपोल्स्की ने गव से कहा।

ऐसा मालूम होता था कि वोद्का पीने के अपराध मे वे निश्चय ही उसके हाथो में हथक्डी डाल देंगे। नगर से कुछ और लोग भी वहा लपक आए थे। एक घोडागाडी मे पुलिस अफसर भी आ गया। वह गढ़े मे उतरा और मृत आदमी का कोट हटाकर उसका चेहरा देखने लगा।

"इसे सबसे पहले किसने देखा था?"

"मैंने," मिस्रोपोल्स्की ने जवाब दिया।

पुलिस अफसर ने उसकी ओर देखा और फिर एकाएक कपा देनेवाले अदाज मे बोला

"अच्छा, यह आप हैं, जनाब!"

तमाशा देखनेवाले भी घिर आए। बीस-पच्चीस से कम न होंगे। वे हाफ रहे थे और उनके हृदयो मे उथल-पुथल मची थी। किनारे पर घेरा बनाए गढ़े मे झाक रहे थे। तभी किसी ने चिल्लाकर कहा

"अरे, यह तो हमारे ही मोहल्ले का क्लर्क है। मैं इसे जानता हू।"

मिस्रोपोल्स्की टोपी उतारकर अफसर के सामने खडा उचक रहा था, तू-तडाक मे उलझा था और भर्राई हुई आवाज मे चिल्ला रहा था। अफसर ने उसके सीने पर ऐसा आघात किया कि वह लहराकर जमीन पर बठ

गया। पुलिसमन ने, बिना किसी उतावली के, एक रस्सा निकाला और गायक के हाथ बाध दिए जिन्हे उसने बिना किसी विरोध के कमर के पीछे कर लिया था। अफसर ने अब भीड की ओर रुख किया और चिल्लाकर बोला

"भागो यहा से!"

इसी बीच पानी चूती लाल आखो वाला एक और बूढा पुलिसमन हाफता और सास लेने के लिए मुह बाए भागता हुआ आया। उसने रस्से के छोरो को, जिससे गायक के हाथ कमर के पीछे बधे थे, पकडा और उसे चुपचाप नगर की ओर ले चला।

पूर्णतया ग्रस्त और खिन्न मैं भी वहा से चल दिया। मेरा बुरा हाल था और मेरे दिमाग़ मे, हृदय को झनझना देनेवाली कौवे की कडी चीख की भाति, ये शब्द रह रहकर गूज रहे थे

"नाश हो इस अरिईल नगरी का! "

और उदासी से भरा वह चित्र भी मेरी कल्पना मे जमकर बठ गया जब कि पुलिसमन ने, बिना किसी उतावली के, अपनी जेब से रस्सा निकाला और कहर बरपा करनेवाले पैगबर ने बालदार अपने लाल हाथो को बिना किसी विरोध के चुपचाप इस तरह कमर के पीछे कर लिया मानो उसके लिए यह कोई नयी बात न हो, मानो इस त्रिया को हज़ारवीं बार वह दोहरा रहा हो

शीघ्र ही मुझे पता चला कि पगबर को जलावतन कर दिया गया, और इसके बाद ज्यादा दिन न बीते होगे कि क्लेश्चोव भी गायब हो गया। कोई पसेवाली स्त्री उसके हाथ लग गई, उससे उसने शादी की और देहात मे जाकर रहने लगा जहा उसने ज़ीनसाज़ी की अपनी एक दुकान खोल ली।

लेकिन उसके जाने से पहले मेरे मालिक ने जिसके सामने ज़ीनसाज़ के गाने की मैं अक्सर तारीफ किया करता था, एक बार मुझसे कहा

"चलकर सुनेंगे कभी "

और एक दिन हम दोनो भटियारख़ाने पहुचे। वह मेज के दूसरी ओर, ठीक मेरे सामने, बठा था। उसकी आखें बरबट्टा सी खुली थीं और भौंहे अचरज मे कमान बनी थीं।

भटियारख़ाने आते समय रास्ते भर वह मुझे चिढाता और कोचता

रहा, और भटियारखाने मे पाव रखने के बाद भी वह मेरा, वहा मौ
दूसरे लोगो का और दमघोट गध का मजाक उडाता रहा। जीनसाव
गाना शुरू करते ही उसके चेहरे पर खिसियानी सी मुसकराहट खेल
और वह अपने गिलास मे बीयर उडेलने लगा। अभी गिलास आधा भ
होगा कि वह बीच मे ही रुक गया और बोला

"ऊह कम्बख्त जादूगर मालूम होता है!"

हौले से, और कापते हाथ से उसने बोतल मेज पर वापस रख
और गाना सुनने मे रम गया।

जब क्लेश्चोव गाना खत्म कर चुका तो मालिक बोला

"सच कहता था, भई। क्या गाता है, पट्ठा, गरमी ही चढ
है "

जीनसाज ने एक बार फिर अपना सिर पीछे की ओर फेंका, म
उठाकर छत पर टिका दीं और गाना शुरू कर दिया

घनी गाव से पगडडी पर
चली जा रही युवती सुन्दर

"सच, यह गाने मे जान डालना जानता है," मालिक लघु हस
हसते और अपना सिर हिलाते हुए बुदबुदाया।

और क्लेश्चोव बासुरी बना हुआ, गा रहा था

मैं यतीम, फट बोली वह तो
कौन भला चाहेगा मुझ को
कोई हेल, न मेल दिखाये
नहीं नाच में मुझे बुलाये,
नहीं युवक का हृदय लुभाऊ
निधन, वस्त्र कहा से लाऊ?
दासी कोई विधुर बनाये
ऐसा भाग्य न मुझे सुहाये।

"गाता क्या है, जादू बिखेरता है," अपनी लाल बनी आंखो को
मिचमिचाते हुए मालिक फुसफुसाया, "सच कहता हू, कम्बख्त जादूगर है,
जादूगर!"

मेरी आखें उसपर टिकी थीं और मेरा हृदय खुशी से छलछला रहा था। गीत के उदास बोल गूज और विजयी अदाज मे सभी पर छा रहे थे। उनके सामने भटियारखाने की अन्य सभी आवाजें मुरझा गई थीं और उनका आवेग हर घडी अधिक सशक्त, अधिक सुदर, अधिक जानदार बनता जा रहा था।

इस पूरी बस्ती मे मेरा
कोई न सगी-साथी,
सभी मनायें हसी खुशी,
मैं अपने पर पछताती,
भला किसी को कसे मेरा
रूप खींच कर लायेगा,
फटे-पुराने चिथडे मेरे,
कौन मुझे अपनायेगा!
कोई अधबूढा रडुआ हो
मुझे ब्याह ले जायेगा,
लेकिन यह दिन इस जीवन
मे कभी न आने पायेगा!

मेरा मालिक, बिना किसी झिझक या लाज के, रो रहा था। उसका सिर झुका था, हुकदार नाक जोरो से सुडक रही थी और आसू टपाटप आखो से ढुरककर घुटनो पर गिर रहे थे।

तीसरे गीत के खत्म होते न होते मालिक का हृदय बुरी तरह उमडने घुमडने लगा। बोला

"नहीं भाई, मैं अब यहा नहीं बठ सकता। मेरा तो दम घुटता है यहा की यह कम्बख्त गध,—चल, घर चले! "

लेकिन बाहर सडक पर आते ही बोला

"शतान उठा ले जाए इन सब को! चल पेशकोव, किसी होटल मे चलकर कुछ पेट मे डाल ले। घर जाने को जी नहीं चाहता! "

किराये के लिए कोई हील हुज्जत किए बिना ही वह एक घोडागाडी मे बठ गया और जब तक होटल न आ गया उसी तरह गुमसुम बठा रहा। होटल मे कोने की एक मेज उसने चुनी और कुर्सी पर बठते ही धीमे स्वर मे उसने तुरत बोलना शुरू कर दिया। रह रहकर वह अपने चारों

ओर देखता जाता था और ऐसा मालूम होता था मानो कोई गहरा घाव फिर से हरा हो गया हो।

"उस बूढ़े बकरे ने मुझे बुरी तरह पञ्चर कर दिया सारी हवा ही निकाल डाली और मुझे मनहूसियत के अंधे गढे मे डाल दिया.. सुन, तू दुनिया भर की चीजें पढ़ता और जमीन आसमान के कुलाबे मिलाता है। तू ही बता कि यह कैसे हुआ? कितना लम्बा जीवन बिताया है मैंने,—पूरे चालीस साल मैंने पार किए हैं। बीवी है, बच्चे हैं, फिर भी इस दुनिया मे ऐसा एक भी जीव नहीं है जिससे मैं खुलकर बातें कर सकूं! कहा, कौन है जिसके सामने हृदय उडेला जाए, मन की एक एक बात कही जाए? बीवी के कुछ पल्ले नहीं पडता, उसकी कुछ समझ मे नहीं आता। और उसे समझने की गरज भी क्या है? उसके अपने बच्चे हैं घर है, दुनिया भर का खटराग है। मेरी आत्मा से उसकी पटरी नहीं बठती। बीवी तभी तक मित्र होती है जब तक पहला बच्चा जन्म नहीं लेता समझा भाई, जीवन का कुछ ऐसा ही मामला है। तिस पर मेरी पत्नी,—अब तुझसे क्या कहू, तू खुद अपनी आखों से देखता है न ओढ़ने के काम आए, न बिछाने के मास का अच्छा-खासा ढूह है, कम्बख्त! ओह भाई रे, यह मेरा ही गुर्दा है जो उसका बोझ सभाले हू"

उसने गिलास उठाया और ठडी तथा कड़वी बीयर चुपचाप गले के नीचे उतार गया। फिर कुछ देर वह अपने लम्बे बालों को इधर उधर करता रहा और अत मे बोला

"समझा भाई, मैं तो लोगो को—कुल मिलाकर—हरामी कुत्ता समझता हू! मैं जानता हू कि तू उन देहातियो से खूब बातें करता है—कभी इस चीज के बारे मे और कभी उस चीज के बारे मे मैं मानता हू—जीवन मे बहुत सी चीजें हैं जो सही नहीं हैं जो कुत्सित हैं—यह भई बिल्कुल सही बात है लोग सब के सब चोर हैं। और तू क्या समझता है कि तेरी बातो का उनपर कोई असर होता होगा? बिल्कुल नहीं। प्योत्र और ओसिप को लो,—एकदम कमीने और गए-बीते! वे तेरी एक एक बात मुझे बताते हैं,—ये सब बात भी जो तू मेरे बारे मे कहता है अब तू ही बता, ऐसे लोगो के बारे मे तू क्या कहेगा?"

उसकी यह बात सुनकर मै इतना सकपका गया कि मुझसे कोई जवाब देते न बना।

"देखा तूने!" मालिक ने हल्की हसी के साथ कहा। "तेरा फारस जाने का वह इरादा कुछ बुरा नहीं था। कम से कम इतना तो होता ही कि लोग क्या कहते हैं, इसका तुझे पता न चलता। उनकी जबान दूसरी है जो तेरी समझ मे न आती। अपनी जबान मे तो सिवाय गदगी और कुत्सा के और कुछ सुनाई नहीं देता।"

"क्या ओसिप मेरी सभी बाते आपको बता देता है?" मैंने पूछा।

"बिल्कुल। क्या तुझे अचरज होता है? वह सबसे बढ़-चढकर बाते बनाता है। समझा भाई, वह तो पूरी पहेली है तेरा बातो का, पेशकोव, कोई असर नहीं होता। तू सत्य की दुहाई देता है। लेकिन सत्य सुनता कौन है? उनके सामने सत्य का राग अलापना ऐसा ही है जसे 'रद मे बफ,–जो कीचड मे गिरती और पिघलती रहती है। सिवा इसके कि वह कीचड बढाये उससे कोई लाभ नहीं होता। तू भाई चुप ही रहा कर "

बीयर का एक गिलास खत्म होता कि वह दूसरा उडेलता, फिर तीसरा, और फिर चौथा। गिलासो के साथ-साथ उसके शब्दो की रफ्तार और तीखापन बढता जाता, लेकिन नशे का कोई चिह्न न दिखाई देता।

"शब्द तराशने का काम नहीं कर सक्ते, चुप्पी साधे रहना बेहतर है। सच भाई, यह जीवन भी कितना सूना और उदास है उसका वह गाना कितनी सचाई से भरा था 'इस पूरी बस्ती मे मेरा कोई न सगी-साथी '"

चौकन्ना सा होकर उसने अपने इधर-उधर देखा और फिर आवाज को धीमी करते हुए बोला

"सच भाई, अधिक दिन नहीं हुए जब मुझे एक मनचीती चिडिया दिखाई दी थी एक विधवा थी, मतलब यह कि उसके पति को जालसाजी के अपराध मे साइबेरिया जलावतन करने की सजा दी गई थी। वह अभी यहा की जेल मे बद है। हा, तो उसकी पत्नी से मेरी जान पहचान हो गई पसे के नाम उसके पास एक फूटी कौडी भी नहीं थी। सो उसने निश्चय किया बस, अपने आप समय जाओ जोडे मिलवानेवाली एक बुढिया मुझे उसके पास ले गई। मैंने उसे एक नजर

देखा,–बहुत ही प्यारी चीज थी, जवान और खूब सुदर,–उसके रोम रोम से सच्चा सौंदर्य फूटा पडता था! सो मैंने उसके यहा के चक्कर लगाने शुरू किए,–एक बार, दो बार, तीन बार,–और इसके बाद एक दिन मैंने उससे बात की। तुम अजब पहेली हो,–मैं बोला,–तुम्हारा पति जेल मे पडा है और तुम सीधा और काटों भरा रास्ता न अपनाकर गुलछर्रे उडा रही हो। और अगर तुम्हे यही करना है तो फिर उसके साथ साइबेरिया जाने की तुम्हारी धुन के क्या मानी ह?–देखा तू ने, अपने पति के साथ वह खुद साइबेरिया जाने का भी जोड-तोड बठा रही थी आखिर उसने मुह खोला। जसा भी वह है, उसने कहा, मेरे लिए बहुत है, क्योकि मै उससे प्यार करती हू! कौन जाने मेरे लिए ही यह मुसीबत मोल ली हो, और उसके लिए ही मैं तुम्हारे साथ इस तरह चटक-मटक रही हू। वह कुछ रुकी और फिर बोली उसे पसो की जरूरत है। वह भला आदमी है, ऊचे कुल मे उसने जन्म लिया है और वसा ही जीवन बिताने का वह आदी है। अगर मैं अकेली होती, वह बोली, तो कभी अपने दामन मे दाग न लगाती। तुम भी भले आदमी हो और मुझे अच्छे भी लगते हो, वह बोली, लेकिन इस बात का आगे कभी जिक्र न करना ओह, शतान उठा ले जाए उसे! मेरे पास जो कुछ था, उसके हवाले कर दिया। अस्सी से भी कुछ ऊपर रूबल रहे होंगे। मैंने सब उसके सामने रख दिए। मुझे माफ करना, मेरे मुह से निकला, अब तक जो हुआ सो हुआ, आगे मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकूगा–अगर मैं आया भी तो मेरी आत्मा मुझे चन नहीं लेने देगी! यह कहकर मैं चला आया, और बस "

उसके बाद वह कुछ देर रुक गया और इतनी ही देर मे नशा उसपर हावी हो गया। ऐसा मालूम होता था मानो वह एकबारगी ही ढह जाएगा। उसने बुदबुदाना शुरू किया

"मैं कोई छ बार उसके पास गया तू नहीं समझ सकता, इसका क्या मतलब है! इसके बाद शायद मैंने उसके घर के छ चक्कर और लगाए होंगे लेकिन भीतर पाव रखने का साहस नहीं कर सका! अब वह यहा नहीं है "

उसने मेज पर अपने हाथ रख लिये और उगलिया को हिलाते हुए फुसफुसाकर बोला

"सच, भगवान से मेरी अब यही बिनती है कि फिर कभी उसका सामना न करना पडे! भगवान न करे कभी फिर उससे सामना हो जाये, हे भगवान फिर तो बेडा ग़र्क़ हो जायेगा अच्छा, चल, अब घर चलें!"

हम बाहर निकल आए। उसके पाव डगमगा रहे थे और वह बुदबुदा रहा था

"देखा भाई तू ने"

उसने जो कुछ बताया, उससे मुझे अचरज नहीं हुआ। इधर कुछ दिनो से मैं खुद यह अनुभव कर रहा था कि उसके साथ जरूर कोई असाधारण घटना घटी है।

लेकिन जीवन के बारे मे उसके विचारो, और खास तौर पर ओसिप के बारे मे उसने जो बताया था, उससे मेरा जी भारी हो गया और गहरी उदासी ने मुझे घेर लिया।

२०

मुर्दा नगर मे, खाली इमारतो और दुकानो की पातो के बीच, तीन गर्मिया बीत गईं और मै मजदूरो की निगरानी, उनकी ओवरसीयरी का काम करता रहा। प्रत्येक शरद मे वे बदनुमा पक्की दुकानो को ढहा देते और प्रत्येक वसन्त मे ऐसी ही बदनुमा दुकानो को खडा करते।

मालिक मुझे पाच रूबल महीना देता और उनके बदले मे मेरी जान तक निचोडने की ताक मे रहता। जब किसी दुकान मे नया फ़र्श बिछाना होता तो मुझे फ़र्श को करीब दो फ़ुट गहरी मोटी तह खोदनी और मलबे की ढुवाई-सफाई करनी पडती। आवारा लोग इस काम के लिए एक रूबल वसूल करते, लेकिन मुझे वह फूटी कौडी न देता। इसके सिवा फ़र्श की खुदाई-ढुवाई मे फसा रहने के कारण मै मजदूरो की निगरानी न कर पाता और वे इस मौक़े को गनीमत समझ दरवाजो के तालो और मूठो के पेच खोल उन्हें तिडी कर देते, और भी जो छोटी-मोटी चीज उनके हाथ मे लगती उडा ले जाते।

मजदूर-कारीगर हों चाहे ठेकेदार, जब भी और जिस तरह भी मौक़ा मिलता, मुझे धोखा देने से बाज न आते और क़रीब-क़रीब खुले आम

चोरी करते, मानो चोरी करना उनपर लादा गया फर्ज़ हो और पकड़ जाने पर वे कभी गुस्सा न होते, बल्कि अचरज में भरकर कहते

"अरे बाप रे, पाच रूबल के पीछे तू इतना हलकान होता है मानो तुझे बीस रूबल मिलते हो। देखकर हसी आती है!"

मैं मालिक से कहता कि खुदाई-ढुवाई के काम मे मुझे फसाने से बचत तो केवल एकाध रूबल की ही होती है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा का माल चोरी चला जाता है। लेकिन वह आख मारकर बोलता

"ठीक है, ठीक है, बने जा!"

यह ताडना कुछ कठिन नहीं था कि वह मुझे भी चोरा का ही मौसेरा भाई समझता है। इससे उसके प्रति मेरी घृणा और भी बढ गई लेकिन मैंने अपमानित अनुभव नहीं किया सारा आवा ही ऐसा था। हर कोई चोरी करता, और खुद मेरा मालिक भी दूसरो की सम्पत्ति हडपने मे जरा आना-कानी नहीं करता।

मेला उठ जाने पर वह मरम्मत के लिए लो दुकानों का चक्कर लगाता। दुकानदार अक्सर अपनी चीजें भूल जाते और समोवार, तश्तरिया, कालीन, कचिया और सामान की पेटी या सामान का एकाध टुकडा तक छोड जाते। वह इन चीजो को देखता और लघु हसी हसते हुए कहता

"इन चीजों की सूची तयार करके इन्हे गोदाम मे पहुचा देना!"

गोदाम मे से कितनी ही चीजें उठवाकर वह अपने घर ले जाता और मुझसे कई बार नई सूची बनवाता।

चीजें जमा करने और उन्हे अपनी मिल्कियत बनाने का मेरे मन में न कोई चाव था, न मोह। पुस्तके तक मुझे बोझ मालूम होती थीं। मेरे पास केवल दो ही थीं—एक बेराजे की कविताओं का छोटा सा सग्रह, और दूसरा हाइने की कविताओं का सग्रह। पुश्किन की कविताओं का सग्रह भी मैं खरीदना चाहता था, लेकिन नगर मे पुरानी किताबो की एक मात्र दुकान का चिडचिडा मालिक उसके बहुत ज्यादा दाम मागता था। मेज़ कुर्सिया, कालीनो, आईनो और ऐसी ही दूसरी चीजों से, जिनसे मालिक का घर अटा पडा था, मुझे घृणा थी। उनके भारी भरकम आकार प्रकार तथा रगो और वार्निश की गध से मेरा जी भन्ना जाता। मालिक के कमरे मुझे आम तौर पर अच्छे नहीं लगते, उन्हें देखकर मुझे दुनिया भर के कूडा-कबाड तथा लोहा-लगड से भरे बक्सो की याद हो

आती। लेकिन मेरा मालिक था कि उसका मन न भरता और दूसरो की चीजें ला-लाकर अपने चारो ओर अच्छा खासा कबाड जमा करता रहता। यह मुझे और भी ज्यादा घिनौना मालम होता। यो तो रानी मार्गो के कमरो मे भी फर्नीचर की भरमार थी, लेकिन वह कम से कम देखने मे सुन्दर तो था।

खुद जीवन भी मुझे ऐसा ही मालूम होता,—असम्बद्ध, बेडौल, बेतुकी और बेमानी चीजो से बुरी तरह अटा हुआ। दूर जाने की जरूरत नहीं। यहीं देखिये। दुकानो की मरम्मत हो रही है, उनकी तोड फोड ठीक की जा रही है। वसन्त मे बाढ आएगी और सारी मेहनत पर पानी फेर देगी। फर्श उचक आएगे, बाहर के दरवाजे खराब हो जाएगे। बाढ उतरने के बाद शहतीर गल-सड जाएगे। वर्ष प्रति वर्ष बीसियो साल से, यही सिलसिला चला आ रहा है। मेले का मदान बाढ के पानी से भर जाता है, इमारतो और दुकानो को चौपट कर देता है, पटरिया और रास्ते सब एकाकार हो जाते हैं। इन वार्षिक बाढो से लाखो का नुकसान होता है और सभी जानते हैं कि ये बाढें अपने आप कभी बद नहीं होगी।

आए साल नदी का पानी जाडो मे जमकर बर्फ हो जाता, वसन्त मे यह बर्फ तडकती और बजरो तथा बीसियो डोगियो को चकनाचूर कर अपने साथ बहा ले जाती। लोग यह सब देखते, आहे भरते और कराहते, नयी डोगिया बनाते जिन्हे अगले साल फिर इसी प्रकार नष्ट होना पडता। यह एक ऐसा कुत्सित चक्र था जो खत्म होने मे न आता था, जिसे खत्म करने की बात तक कोई नहीं सोचता था।

जब ओसिप से मैंने इसका जिक्र किया तो उसने अचरज से मेरी ओर देखा, फिर खिल्ली सी उडाते हुए बोला

"वाह रे चूजे, क्या चोच मारी है! तुझे इस सब से क्या लेना-देना है? तुझे इससे क्या मतलब?"

इसके बाद उसका स्वर कुछ गम्भीर हो गया, लेकिन उसकी आखो मे खिल्ली की चमक फिर भी बनी रही। उसकी आखें नीली थीं, और इस उम्र मे भी उनमे कुछ इतना निखार था कि देखकर अचरज होता था।

"लेकिन है तू होशियार!" उसने कहा, "हो सकता है कि यह तेरी एक बेकार की आदत सिद्ध हो, लेकिन यह भी हो सकता है कि आगे चलकर वह तेरे काम आए। तू एक बात और देख.."

ग्रौर उसने, रूखे ग्रौर तटस्थ ग्रन्दाज मे, छोटे-छोटे शब्दो, टकसाली मुहाविरो ग्रौर कहावतो, चकित कर देनेवाली उपमाग्रों ग्रौर चुटकियो की झडी लगा दी

"लोग रोते झीकते ग्रौर तोबा तिल्ला मचाते हैं कि हमारे पास जमीन नहीं है, वोल्गा है कि हर साल बसत मे फनफनाती ग्रौर तटो को काटकर मनो मिट्टी बीच धारा मे बहा ले जाती है। यह मिट्टी नीचे तलहटी मे जम जाती है। तब दूसरी जगह के लोग चिल्लाते हैं कि वोल्गा छिछली हो गई। फिर बसन्त मे बर्फ पिघलने से ग्रानेवाली बाढ़ ग्रौर ग्रीष्म की बारिशें जमीन मे खाइया बनाती ग्रौर नालियां काटती हैं, ग्रौर वोल्गा उसे फिर हडपकर जाती है!"

वह एकदम निस्सग होकर बातें कर रहा था। उसके स्वर मे न विक्षोभ का भाव था, न किसी प्रकार की शिकायत का। मानो उसका रोम रोम जीवन के खिलाफ शिकवा शिकायतो के बारे मे ग्रपनी इस जानकारी पर गर्व ग्रौर सन्तोष से छलछला रहा हो। उसके शब्दो मे सचाई थी, मेरे विचारो से वे मेल खाते थे, फिर भी उन्हें सुनना मुझे ग्रप्रिय लगता था।

"या फिर एक दूसरी चीज को लो—ग्राग लगने को "

मैं जानता था कि एक भी गर्मी ऐसी नहीं बीतती जब वोल्गा पार के जगलो मे ग्राग न लगती हो। ग्राए साल बिला नागा हर जुलाई मे ग्रासमान मटमैले पीले धुए से ढक जाता ग्रौर नीचे झुका हुग्रा किरणविहीन सूरज दुखती हुई ग्राख की भाति धरती की ग्रोर देखता रहता।

"जगल उनकी बात छोड!" ग्रोसिप कहता। "जगलो पर या तो जार का ग्रधिकार होता है या कुलीनो का, देहातिये जगलो के मालिक नहीं होते। जब नगर जलकर राख हो जाते हैं तो यह भी कोई बडी मुसीबत नहीं है—नगरो मे ग्रमीर रहते हैं, ग्रौर ग्रमीरो पर तरस खाने मे कोई तुक नहीं दिखाई देती! ग्रसल मुसीबत तो तब होती है जब कस्बो ग्रौर गावो मे ग्राग लगती है। हर साल, ग्रौर कुछ नहीं तो सौ एक गाव जल जाते हैं, यही ग्रसली मुसीबत है!"

वह दबी सी हसी हसता ग्रौर कहता

"माल है, पर सभाल नहीं है! एक तू ग्रौर मैं यह देख पाते हैं कि

इन्सान की मेहनत या लाभ न उसे मिलता है, न धरती को, पानी और आग उसे चटकर जाते हैं!"

"लेकिन इसमे हसने की क्या बात है?"

"क्यो नहीं?" वह कहता। "आसुओ से आग नहीं बुझाई जा सकती, केवल बाढ़ बढ़ेगी!"

मेरे मन मे यह बात जमकर बैठ गयी कि अब तक जितने भी लोगो से मैं मिला हू, उनमे यह सलौना बूढ़ा सबसे ज्यादा समझदार और बुद्धि का धनी है। लेकिन, बहुत कोशिश करने पर भी, मै यह नहीं पकड सका कि क्या उसे पसद है, और क्या नहीं।

मैं इसी उधेड-बुन मे फसा रहता और उसके शब्द, जलती आग मे सूखी खपच्चियो की भांति, आ आकर गिरते रहते

"देख न, लोग किस तरह शक्ति बरबाद करते हैं,—अपनी भी, और दूसरो की भी। खुद अपने मालिक को ही ले जो घुन की भाति तुम्हारी शक्ति बरबाद करने मे जुटा है। या फिर वोदका को ले। एक अकेली वोदका इतनी शक्ति बरबाद करती है कि बडे से बडे दिमागदार भी उसका हिसाब नहीं लगा सकते! अगर कोई झोपडा जल जाए तो उसकी जगह दूसरा बना सकते हैं। लेकिन जब इसान धूल मे मिलता है तो यह नुकसान पूरा नहीं हो सकता! मिसाल के लिए अपने अरदाल्योन या ग्रिगोरी को ही ले। कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था कि यह देहातिया इस तरह धुआ बनकर उड जाएगा! माना कि वह ग्रिगोरी कोई ज्यादा अक्लमद देहातिया नहीं था, लेकिन उसके पास हृदय था! वह एक ही लपक मे उड गया, मानो हाड-मास का पुतला न होकर घास-फूस का ढेर हो,—चिंगारी पडी नहीं कि यह जा, वह जा। औरते उसे इस तरह चटकर गईं जसे कीडे लाश को चट कर जाते है।"

"लेकिन यह तो बताओ," बिना किसी कठोर भावना के, केवल कौतुकवश मैंने उससे पूछा, "कि मेरी सारी बाते तुम मालिक के सामने जाकर क्यो उगल देते हो?"

और उसने बहुत ही सादगी से, बल्कि कहना चाहिए कि हार्दिकता से, जवाब दिया

"वह तेरा मालिक है। उसे सब मालूम होना चाहिए कि तेरे दिमाग मे क्या-क्या फतूर भरे हैं। अगर वह तुझे ठीक नहीं कर सकता तो और

कौन करेगा? किसी बुरी नीयत से नहीं, तेरे भले के लिए ही मैं सा
बातें उसे बताता था। वैसे तू समझदार है, लेकिन तेरी खोपडी मे शता
बैठा है। वह तेरे दिमाग़ मे दुनिया भर की उल्टी-सीधी बातें फूकता रह
है। अगर तूने चोरी की होती तो मै एक शब्द भी उसके बारे मे न कहता
अगर तू लडकियो के पीछे भागता, तब भी मैं न बोलता। और अग
तू कहीं से नशे मे धुत्त होकर आए तब भी निश्चय जानो मैं किसी से
कुछ नहीं कहूगा। लेकिन तेरे इन दिमागी फितूरो को मैं नहीं बरदाश्त सकता
उनके बारे मे मैं जरूर कहूगा। यह बात आज मैं तुझे भी खोलकर क
देता हू "

"मैं तुमसे कभी बातें नहीं करूगा!"

कुछ क्षण वह चुप रहा और अपनी हथेली मे चिपके कोलतार को
खुरचकर छुडाता रहा। इसके बाद चाव भरी नजर से मेरी ओर देखते हुए
बोला

"यह निरी बकवास है। तू मुझसे बाते करेगा, और जरूर करेगा।
नहीं तो और कौन है जिससे तू यहां बाते् कर सकता है? कोई नहीं! "

खूब साफ-सुथरा होने पर भी इस समय ओसिप जहाजी याकोव की
भाति मालूम होता,—हर चीज और हर व्यक्ति से उतना ही अलग और
बेपरवाह्।

कभी उसे देखकर मुझे पारखी प्योत्र वासील्येविच की याद हो आती,
और कभी कोचवान प्योत्र की, और कभी-कभी मुझे उसमे अपने नाना
की हुशियार दिखाई देती,—किसी न किसी रूप मे उसमे उन सभी वृद्ध
लोगो का कोई न कोई अश मालूम होता जिनसे कि अब तक मेरा वास्ता
पड चुका था। ये वृद्ध लोग, सब के सब बहुत ही दिलचस्प थे, परन्तु मैं
यह भी देख रहा था कि उनके साथ जीना नामुमकिन है—जिंदगी घिनौनी
और कठिन होती। वे मानो आत्मा और हृदय मे घुन की भाति प्रवेश करते
जा रहे हो। क्या ओसिप भला आदमी था?—नहीं। क्या वह बुरा आदमी
था?—नहीं। लेकिन वह चतुर था, यह साफ मालूम होता था। उसकी
गहरी सूझ बूझ चकित कर देनेवाली थी, लेकिन उसके सोचने का ढग मुझे
सुन और निर्जीव बनाता था, और अतत मुझे यह अनुभव होने लगा
कि मेरा जो अपना सोचने का ढग है, उसकी जड पर वह कुठाराघात
करता है।

निराशा के अंधे कुए मे डाल देनेवाले विचार, सपोलियो की भांति, मेरे हृदय मे रेंगने लगते

"सभी लोग एक दूसरे के दुश्मन हैं, एक दूसरे को देखकर उनका मुसकराना झूठ है, मीठे शब्दो की बौछार करना झूठ है। यह सब ऊपरी दिखावा है, लेकिन सच पूछो तो उनमे एक भी ऐसा नहीं है जो प्रेम के इस नाते से जीवन के साथ बधा हो, जो सचमुच मे जीवन से प्रेम करता हो। नानी को छोड अन्य कोई सच्चे मानी मे जीवन तथा लोगो से प्रेम नहीं करता। नानी, और रानी मार्गो—विधाता की वह अद्भुत रचना!"

कभी-कभी ये और इसी तरह के अन्य विचार काले बादलो का रूप धारण कर हृदय और मस्तिष्क पर छा जाते, जीवन को आह्लादविहीन और रसहीन बना देते। परतु और कैसे जिया जाये, कहा जाया जाये? यहा तक कि, ओसिप को छोड, ऐसा अन्य कोई नहीं था जिससे मैं बातें कर सकता। और घूम फिरकर मैं उसी से बाते करता।

मैं उसके सामने अपना हृदय उडेल देता। मेरी व्यग्र बातो को वह मन लगाकर सुनता, बीच बीच मे सवाल पूछता और खोद खोदकर सभी कुछ मालूम कर लेता। अन्त मे शान्त भाव से कहता

"कठफोडवा भी अपनी लगन का पक्का होता है,—एकदम जिद्दी और ढीठ। लेकिन उसे देखकर किसी को डर नहीं लगता। अगर मेरी सच्ची सलाह माने तो किसी मठ मे भर्ती हो जा। वहाँ रहकर अपने बाल पकाना और मीठे शब्दो से भक्तों के हृदयो पर मरहम लगाना। इससे तेरे दिमाग को शाति मिलेगी, पादरियो तथा ईसाई साधुओ की जेब गम होगी! सच, अपने समूचे हृदय से मैं तुझे यह सलाह देता हू। दुनियादारी के काम तो तेरे बस के नहीं लगते "

मठ मे प्रवेश करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन मुझे ऐसा मालूम होता मानो मैं समझ मे न आनेवाली बातो की किसी अंधी भूलभुलया मे फस गया हू। मेरा हृदय इससे छुटकारा पाने के लिए छटपटाता। जीवन मानो शरद ऋतु मे खुमियो से विहीन जगल के समान था, एक ऐसा शून्य जिसका हर मोड और कोना मेरा खूब जाना पहचाना था और जिसमे कोई काम नजर नहीं आता था।

मैं न तो वोदका पीता था, न लडकियो पर डोरे डालता था। आत्मा और हृदय को मगन रखने के इन दो साधनो का स्थान पुस्तको ने

ले लिया था। लेकिन जितना ही अधिक मैं पढ़ता, उतना ही अधिक ऐसा सूना और बेमतलब का जीवन जीना कठिन होता जाता, जसा मुझे लगता था कि अधिकतर लोग जी रहे हैं।

अभी सोलहवे वर्ष मे ही मैंने पाव रखा था, लेकिन कभी-कभी मालूम ऐसा होता मानो मैं काफी बूढ़ा हो गया हू। जीवन मे इतना कुछ मैंने देखा और भुगता था और इतना कुछ मैंने पढ़ा और बेचनी के साथ सोचा विचारा था कि मुझे अपना अतर भारी हो गया मालूम होता था। मेरे दिमाग का कोठा उस अधे गोदाम की भाति था जिसमे दुनिया भर की चीजें भरी थीं जिन्हें छाटने और करीने से रखने की न तो मुझमे सत थी और न योग्यता ही।

छापो का बोझ और बहुलता स्थिरता प्रदान करने के बजाय मुझे और भी विचलित कर देती और मैं उसी प्रकार डोलने तथा छपाके खाने लगता जसे कि धचकोले लगने पर पात्र मे पानी हिलता और छपछपाता है।

रोने झींकने और शिकवा शिकायत से, दु:ख दद और बीमारी-चकारी से मुझे नफरत थी और बबरता के—खून-खराबी, मार-पीट, यहां तक कि जबानी गाली गलौज के भी—दृश्य सहज ही मुझे भना देते, हृदय मे ठडे गुस्से की एक आग भडक उठती, जगली जन्तु की भाति मरने-मारने के लिए मैं तयार हो जाता और बाद मे अदबदाकर अपने किए पर बुरी तरह पछताता।

अनेक बार ऐसा होता कि जुल्म करनेवाले की चमडी उधेडने की अदम्य इच्छा भूत की भाति मेरे सिर पर सवार हो जाती, आंखें बद कर मैं बीच मझधार मे कूद पडता और अच्छी खासी लडाई मे फस जाता। गहरी और पगु निराशा तथा खीज और झुझलाहट से उपजे अपने उन विस्फोटों की आज दिन भी जब मैं याद करता हू तो मेरा हृदय शम और शोक की भावना मे डूबने-उतराने लगता है।

ऐसा मालूम होता था मानो मेरे भीतर दो जीव निवास करते हों एक वह जो जरूरत से ज्यादा गदगी और घिनौनेपन मे से गुजरने के बाद अब कुछ दब्बू हो गया था। जीवन की भयानक घिसघिस ने उसे सदेहशील और अविश्वासी बना दिया था और सभी लोगों को—खुद अपने आपको भी—असहाय तरस की नजर से वह देखता था। नगरों और लोगों से दूर वह एक शान्त और अवकाश प्राप्त जीवन बिताना चाहता।

कभी वह फारस जाने के सपने देखता, कभी मठ मे शरण लेने की बात सोचता, कभी वह जगलो के चौकीदार या रेलवे के सतरी की झोपडी मे जाकर रहने अथवा नगर से बाहर किसी उपबस्ती मे जाकर रात का पहरेदार बनना चाहता। लोगो से कम से कम मिलना और उनसे अधिक दूर रहना जसे उसके जीवन का लक्ष्य था

दूसरा जीव जो मुझ मे निवास करता था, वह इससे भिन्न था। समझ और सचाई से भरी पुस्तको की पवित्र भावना उसके रोम-रोम मे बसी थी। वह जानता और हर क्षण अनुभव करता था कि जीवन की यह भयानक घिसघिस पूरी निममता से या तो उसका सिर धड से अलग कर देगी या अपने भयानक पावो से उसे कुचलकर रख देगी। इससे बचने के लिए वह अपनी समूची शक्ति बटोरता, दातो को भींचकर और मुट्ठियो को कसकर घूसो या बातो की लडाई मे कूदने के लिए सदा तयार रहता। अपने प्रेम और तरस की भावना को वह अमल मे व्यक्त करता और फ्रासीसी उपन्यासो के वीर नायको की भाति, जरा सा भी उकसावा मिलने पर, अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालता और टूट पडने की मुद्रा मे तनकर खडा हो जाता।

उन दिनो एक आदमी से मेरी कट्टर दुश्मनी थी। वह मालाया पोक्रोव्स्काया सडक के एक वेसवाघर का जमादार था। एक दिन अनायास ही पहली बार मेरी उससे मुठभेड हो गई। सुबह का वक्त था। मैं मेले की ओर अपने काम पर जा रहा था और वह नशे मे बेहाल एक लडकी को गाडी मे से खींचकर बाहर निकाल रहा था। वह उसकी टागें पकडे था और बहुत ही गदे ढग से झटके दे रहा था। झटको से लडकी की टागो के मोजे खिसक आए थे, घाघरा उलट गया था और वह कमर तक नगी दिखाई दे रही थी। हर झटके के साथ वह मुह से बेहूदा आवाज करता था, हसता था और उसके बदन पर थूकता जाता था। बेसुध और लस्तपस्त लडकी, जिसका मुह खुला हुआ था, हर झटके के साथ नीचे खिसकती आती थी। उसकी ढीली और बेजान बाहें, जो अपने कोटरों से बाहर निकल आई मालूम होती थीं, सिर के ऊपर सीधी फली थीं और बदन के साथ-साथ नीचे खिसकती जाती थीं। उसकी पीठ, सिर, उसका नीला चेहरा पहले गाडी की सीट, इसके बाद पायदान से टकराए, आखिर मे उसका सिर पत्थरो से जा टकराया और वह सडक पर आ गिरी।

कोचवान ने अपना हण्टर फटकारा और उसका घोडा गाडी को लेकर हवा हो गया। जमादार ने लडकी की टागो को उठाया और उलटे कदम चलते हुए लाश की तरह उसे पटरी की ओर खींचता ले चला। गुस्से मे पागल हो मै उसपर झपटा। गनीमत यही थी कि सात फुटी साधनी, जिसे मैं अपने हाथ मे लिये था, या तो सयोगवश छूटकर गिर पडी थी या सुध न रहने के कारण खुद मैंने ही उसे फेंक दिया था। नहीं तो वह शायद जीवित न बचता और बाद मे मैं भी फसा-फसा फिरता। खाली हाथो ही मैं तेजी से लपका और टक्कर मारकर मैंने उसे गिरा दिया। इसके बाद उछलकर मै ओसारे पर चढ गया और घबराहट मे खूब जोरो से मैंने घटी बजाई। घटी की आवाज सुन जगली शक्ल सूरत वाले कुछ लोग भागे हुए बाहर आए। मै उन्हे कुछ समझा नहीं सका, जैसे तसे मैंने अपनी साधनी उठाई और नौ दो ग्यारह हो गया।

नदी की ढलान पर जब मैं पहुचा तो वह कोचवान मुझे दिखायी दिया जिसकी गाडी मे लडकी पडी हुई थी। कोचवान की अपनी ऊची सीट से उसने मेरी ओर देखा और सराहना के भाव मे गरदन हिलाते हुए बोला

"खूब मरम्मत की!"

झुझलाहट मे भरकर मैंने उससे पूछा

"लेकिन तुम अपनी कहो। लडकी तुम्हारी गाडी मे सवार थी। लडकी के साथ इतनी बेशर्मी का सलूक करने पर तुमने जमादार को रोका क्यो नहीं?"

"लडकी के साथ चाहे जैसा सलूक हो, मेरी बला से!" उसने अविचलित उपेक्षा से कहा, "अच्छे-खासे शरीफजादे लडकी को मेरी गाडी मे डाल गए और किराया दे गए। कौन किसको पीटता है, इससे मेरा क्या मतलब!"

"अगर वह उसे मार डालता तो?"

"नहीं, उस जैसी लडकियो की जान इतनी कच्ची नहीं होती!" उसने यो कहा मानो कई बार नशे मे धुत्त लडकियो को मारने की कोशिश कर चुका हो।

इसके बाद क़रीब-क़रीब रोज ही सुबह के वक्त जमादार से मेरी मुठभेड होती। जब मैं बाजार मे से गुजरता तो वह सडक पर झाड़ू देता या ओसारे की सीढ़ियों पर इस तरह बैठा हुआ दिखाई देता मानो मेरा

ही इन्तजार कर रहा हो। मुझे निकट आता देख वह अपनी आस्तीनें चढा लेता और घूसा दिखाते हुए कहता

"अगर तेरा तोबडा सीधा न कर दिया तो मेरा नाम नहीं!"

उसकी उम्र चालीस से कुछ ऊपर थी। नाटा क़द, टागें कमान की भाति बाहर की ओर निकली हुई। और गभवती स्त्रियो की भाति मटका सा पेट। हल्की हसी हसते हुए वह अपनी चमकती आखो से मेरी ओर देखता, और मुझे यह देखकर अचरज होता, बल्कि डर सा लगने लगता कि उसकी आखो मे मस्ती और हार्दिकता भरी है। लडने मे वह तेज नहीं था, और उसकी बाहें मेरे मुकाबले मे काफी छोटी थीं। दो या तीन धौल के बाद ही उसके छक्के छूट जाते, फाटक से वह सट जाता और अचरज मे मुह बाए हाफता हुआ कहता

"जरा ठहर, अभी तुझे ठिकाने लगाता हू! "

उसके साथ लडने मे कोई मजा नहीं था। जल्दी ही मै उकता गया, और एक दिन मैंने उससे कहा

"सुन, भोदू महाराज, भगवान के वास्ते मेरा पीछा छोड!"

"तू क्यो लडता है?" उसने शिकायत भरे स्वर मे पूछा।

मैंने लडकी के साथ उसकी बदसलूकी का जिक्र किया। सुनकर बोला

"तो इससे क्या? तुझे क्या उसपर तरस आता है?"

"बेशक!"

एक क्षण के लिए वह खमोश रहा, अपने होठो को उसने साफ किया और बोला

"क्या तुझे बिल्ली पर भा तरस आता है?"

"हा "

"तब तू निरा बुद्ध है, और साथ ही झूठा भी। कोई बात नहीं, म तुझे चखाऊगा "

लम्बे चक्कर से बचने के लिए मैं इस बाजार मे से होकर अपने काम पर जाता था। जमादार से मुठभेड न हो, इस लिए मैं अब जल्दी उठता और अपने काम पर चल देता। लेकिन, मेरी इन कोशिशो के बावजूद, कुछ दिन बाद ही वह मुझे फिर दिखाई दे गया। वह सीढियो पर बठा था और अपनी गोद मे एक बिल्ली लिए उसे थपथपा रहा था। जब मै उससे तीन डग दूर रह गया तो वह उछलकर खडा हो गया, पिछली

टागो से पकडकर बिल्ली को उसने उठाया, और पत्थर के पीढ़े पर इतने जोरो से उसका सिर दे मारा कि उसके गर्म खून के छींटो से मैं लथपथ हो गया। इसके बाद चिथडा हुई बिल्ली को उसने मेरे पावो पर पटक दिया और फिर फाटक पर खडा होकर कहने लगा

"अब बोल, क्या कहता है?"

मैं क्या कहता! कुत्तो की भाति हम दोनों एक दूसरे से गुत्थमगुत्था हो गए और अहाते मे लुढ़कने-पुढ़कने लगे। बाद मे, दु ख और वेदना से सन्न हो, सडक के किनारे उगे झाड झखाड मे बठकर मैं अपने होंठ काटने लगा ताकि मेरी रुलाई न फूट पडे, मैं चिल्ला न उठू। इस घटना की याद करते हुए मेरा हृदय आज भी ददनाक घृणा से काप उठता है और अचरज होता है कि मै पागल क्यो नहीं हो गया, या मैंने किसी की हत्या क्यो नहीं कर डाली।

क्या यह जरूरी है कि इस हद तक घिनौनी बातो का वणन किया जाए? हा, यह जरूरी है! यह इसलिये जरूरी है श्रीमान, कि आप धोखे मे न रहे, कहीं यह न समझने लगें कि इस तरह की बातें केवल बीते जमाने मे हुआ करती थीं! आज दिन भी आप मनगढ़न्त और काल्पनिक भयानकताओ मे रस लेते हैं, सुदर ढग से लिखी भयानक कहानिया और क़िस्से पढ़ने मे आपको आनद आता है। रोगटे खडे कर देनेवाली कल्पनाओं से अपने हृदय को सनसनाने तथा गुदगुदाने से आप जरा भी परहेज नहीं करते। लेकिन मैं सच्ची भयानकताओं से परिचित हू,—आए दिन के जीवन की भयानकताओ से, और यह मेरा अवचनीय अधिकार है कि इनका वणन करके आपके हृदयो को मैं कुरेदू, उनमे चुभन पदा करू ताकि आपको ठीक-ठीक पता चल जाए कि किस दुनिया मे और किस तरह का आप जीवन बिताते हैं।

कमीना और गन्दगी से भरा घिनौना जीवन है यह जो हम सब बिताते हैं। यही सारी बात है!

मैं मानव-जाति से प्रेम करता हू और चाहता हू कि उसे किसी भी तरह से दु ख न पहुचाऊ, परतु इसके लिए न तो हमे भावुकता का दामन पकडना चाहिए और न ही चमकीले शब्द जाल और खूबसूरत झूठ की टट्टी खडी करके जीवन के भयानक सत्य को हमे छिपाना चाहिए! जरूरी

है कि हम जीवन की ओर मुह करें और हमारे हृदय तथा मस्तिष्क मे जो कुछ भी शुभ और मानवीय है, उसे जीवन मे उडेल दें।

..स्त्रियो के साथ जिस तरह का व्यवहार लोग करते थे, उसे देखकर मैं खास तौर से विक्षुब्ध हो उठता और मेरा हृदय तिलमिलाने लगता। पुस्तको ने मुझे सिखाया था कि जीवन की सबसे सुदर या अर्थपूर्ण देन अगर कोई है तो स्त्री। मा मरियम और बुद्धि की देवी वसिलीसा को जो कहानियां मैंने नानी से सुनी थीं, वे भी इसकी पुष्टि करती थीं। अभागी धोबिन नताल्या का जीवन उसकी एक सजीव मिसाल था। इसके अलावा उन सकडो और हजारो मुसकराहटो तथा कनखियो मे भी एक इसी सत्य की झाकी मिलती थी जिनसे कि स्त्रिया, जीवन को जन्म देने वाली माताए आह्लाद और प्रेम से बुरी तरह शूय इस धरती पर आए दिन स्वग और सौदय की अवतारणा करती हैं।

तुर्गेनेव की पुस्तको के पन्ने स्त्रियो के गौरव की लालिमा से रगे थे, और स्त्रियो के बारे मे जो कुछ भी अच्छा मै जानता था, उससे मै अपने मन मे बसी रानी मार्गो की प्रतिमा को सजाता, तुर्गेनेव और हाइने ने इसके लिए मुझे अनेको बहुमूल्य रत्न दिये।

मेले से घर लौटते समय मैं पहाडी पर क्रेमलिन की दीवार के पास अक्सर खडा हो जाता और साझ के सूरज को आकाश से नीचे उतरकर वोल्गा की गोद मे लीन होते देखता। ऐसा मालूम होता मानो आकाश मे तरल अग्नि की नदिया फट निकली हो। इस धरती की प्यारी नदी वोल्गा का पानी गहरी गुलाबी आभा से दमकता जिसपर छाया की परते चढती जातीं। ऐसे क्षणो मे कभी-कभी मुझे लगता मानो यह धरती एक भीमाकार बजरा है जो जलावतनी की सजा पाए बदियो को लिए किसी अज्ञात दिशा मे जा रहा है, वह कोई भीमाकार सूअर जसी लगती है जिसे अदृश्य जहाज अलस भाव से कहीं खींचे लिए जा रहा है।

लेकिन अधिक अवसर मेरी कल्पना मे धरती की व्यापकता का चित्र मूत्त हो उठता, उन दूसरे नगरो और शहरो का मुझे ख्याल आता जिनके बारे मे मैं पुस्तको मे पढ चुका था, और उन अजनबी देशो के बारे मे मैं सोचता जिनके निवासी भिन्न प्रकार का जीवन बिताते थे। विदेशी लेखको की पुस्तको मे जीवन का जो चित्र मैं देखता था वह कहीं ज्यादा साफ-सुथरा और रमणीय तथा उस जीवन से कहीं कम बोझिल और कम

दमघोट था जिसे मैं अपने चारो ओर अलस और एक रस गति से उबलता देखता था। इससे मेरी आशकाम्रा को अपने पजे फलाने का मौका न मिलता और रह रहकर यह अदम्य आकाक्षा मेरे हृदय मे सिर उभारती कि जीवन का इससे अच्छा ढग और ढब हो सकता है।

और मै नित्य यह सोचता कि एक दिन किसी ऐसे बुद्धिमान और सीधे-सादे व्यक्ति का मेरे जीवन मे प्रवेश होगा जो मुझे इस दलदल से उबारकर प्रशस्त और उज्ज्वल राजपथ की राह दिखाएगा।

एक दिन क्रेमलिन की दीवार के पास मैं एक बेंच पर बठा था। तभी मामा याकोव भी वहा आ निकला। मैं कुछ अपने ही ध्यान मे मगन था। न मैंने उसे आते देखा, और न मैं उसे तुरत पहचान ही सका। हालाकि एक ही नगर मे हम कई साल से रह रहे थे, लेकिन हम बिरले ही मिलते थे, सो भी थोडी देर के लिए, योही भूले भटके, निरे सयोगवश।

"अरे, तेरे तो खूब बालपर निकल आए हैं!" उसने हसी मे मुझे कोहनियाते हुए कहा और दोनो इस तरह घुल मिलकर बाते करने लगे मानो हम मामा भानजा न होकर पुराने जान-पहचानी हो।

नानी से मुझे पता चला था कि मामा याकोव ने अपनी सारी पूजी फूक-फाककर बर्बाद कर दी है। कुछ दिनों तक उसने जलावतनो कदियो के पडाव मे वार्डर के नायब की जगह पर काम किया, लेकिन यह नौकरी चली नहीं और एक दु खद घटना के साथ उसका अत हो गया। हुआ यह कि वाडर बीमार पड गया और उसकी गरहाजिरी मे मामा याकोव को खुलकर खेलने का मौका मिला। अपने घर पर वह बदियो को जमा करते, पीते पिलाते और खब हुडदग मचाते। जब इसका पता चला तो उन्हे बरखास्त कर दिया गया, इसके साथ ही उनके खिलाफ यह अभियोग भी लगाया गया कि वह बदियो को रात के समय छुट्टा छोड देते थे। बदियो मे से भागा तो कोई नहीं, लेकिन उनमे से एक किसी पादरी का गला दबोचते समय पकडा गया था। एक लम्बे अर्से तक मामले की जाच पडताल चलती रही, लेकिन अदालत तक पहुचने की नौबत नहीं आई। बदियो और पहरेदारो ने नेक हृदय मामा याकोव को इस अपमान मे फसने से बचा लिया। अब वह बेकार था और अपने बेटे के टुकडों पर जीवन बिताता था। उसका बेटा उन दिनो रुकाविश्निकोव के प्रसिद्ध

गिरजा-सहगान-दल मे गायक का काम करता था। अपने बेटे के बारे मे उसकी राय विचित्र थी। कहने लगा

"इधर वह बहुत बडा और गम्भीर आदमी बन गया है! गिरजे मे गाता है—एकल गायक है। अगर समोवार गम करने या उसके कपडो को झाडने मे मुझे कुछ देर हो जाती है तो भौह चढ़ा लेता है! बहुत ही साफ-सुथरा लडका है! आदतें भी अच्छी हैं "

खुद मामा याकोव जो अब बूढ़ा हो गया था, गदा था और आखो को अखरता था। उसके छल छबीले घुघराले बाल अब पतले पड गए थे, कान छाज से निकल आए थे, आखो की सफेदी और उसके दाढी विहीन गालो की रेशमी खाल मे लाल शिराओ का जाल सा बिछा था। वह हसकर, मजाक का पुट मिलाते हुए बातें करता था, लेकिन ऐसा मालूम होता या मानो उसके मुह मे कोई चीज अटकी हो जो उसकी आवाज को साफ साफ नहीं निकलने देती हालाकि उसके सभी दात अच्छी हालत मे थे।

मुझे इस बात की खुशी थी कि उससे,—एक ऐसे आदमी से जो प्रसन्न रहना जानता था, जिसने बहुत कुछ देखा था और जिसे बहुत सी बात मालूम थीं,—मिलने और बात करने का मौका मिला। उसके दबग और हास्यपूण गीत मैं भला नहीं था और मेरे नाना ने उसके बारे मे जो कुछ कहा था, वह भी मुझे याद था। नाना ने कहा था

"गाने राजा दाऊद के और काम अबूस के!"

नगर के बडे और अधिक शरीफ लोग—अफसर और पदाधिकारी, और रगी चुनी स्त्रिया—छायादार पटरी पर हमारे सामने से गुजर रहे थे। मामा याकोव एक भद्दा सा कोट पहने था, उसकी टोपी भी मुडी-तुडी थी और लाल खाकी रग के ऊचे बूट अपनी अलग धजा दिखा रहे थे। बेंच पर वह कुछ इस तरह सिकुडा सिमटा सा बठा था मानो उसे अपने इस रूप पर शम आ रही हो। अत मे हम वहा से चले गये और पोचाएन्स्की गली वाले एक भटियारखाने मे खिडकी के पास मेज के पास बठ गए। खिडकी बाजार की ओर खुलती थी।

"याद है तुम्ह वह गीत जिसे तुम गाया करते थे

भिखारी ने लटकाये सुखाने को चीथडे,
दूसरे भिखारी ने चीथडे लिए उडा..

गीत के इन शब्दो के व्यग और चुभन का, मैंने पहली बार अनुभव किया और मुझे लगा कि प्रसन्नता के आवरण मे लिपटा मामा याकोव का अन्तर असल मे काफी तीखा और काटो से भरा है।

लेकिन गिलास मे वोदका उडेलते हुए उसने विचारमग्न सा होकर कहा

"हा भाई, मेरे दिन पूरे हुए और मौज भी मैंने की, लेकिन काफी नहीं! वह गीत मेरा नहीं था। सेमिनारी के एक शिक्षक ने उसे बनाया था,—भला, क्या नाम था उसका? ओह, याद से उतर गया। हम दोनो, वह और मै, गहरे मित्र थे। वह शादीशुदा नहीं था। वोदका ने उसकी जान ले ली—पीकर एक दिन बाहर निकला और वहीं बर्फ मे जाम हो गया। एक वही क्यो, न जाने कितने लोगो को मैंने वोदका के पीछे जान गवाते देखा है। उनकी गिनती तक करना मुश्किल है! तू पीता है? ठीक, इसे मुह न लगाना ही अच्छा। फिर तेरी उम्र भी क्या है? अपने नाना से तो अक्सर मिलता रहता है न? बूढ़े को देखकर जी भारी हो जाता है। ऐसा मालूम होता है जसे उसका दिमाग़ कमजोर हो गया हो।"

वोदका के एक या दो दौर के बाद वह कुछ चेतन हो गया, अपने कधो को उसने सीधा किया, जवानी की एक हिलोर सी उसके चेहरे पर दौड गई और उसने अधिक ज़िदादिली से बोलना शुरू किया।

मैंने उससे पूछा कि जेल कदियो वाले मामले का ऊट फिर किस करवट बैठा।

"सो तुझे भी उस मामले की खबर है?" उसने पूछा और फिर अपनी आवाज़ को धीमा करते तथा चौकन्नी नजर से इधर उधर देखते हुए बोला

"वे बदी थे तो इससे क्या? मैं कोई उनका मुन्सिफ तो था नहीं। मुझे तो वे वसे ही इसान दिखाई देते थे जसे कि और सब। सो मैंने उनसे कहा आओ भाइयो, हम सब साथ मिल-जुलकर रहें, दो घडी जी बहलाए, जसा कि किसी ने गीत मे कहा है

> रगीनियों का किस्मत से क्या वास्ता!
> तोडने दो उसे कमर हमारी,
> है हसी-खुशी से हमारा वास्ता,
> न माने गधा ही बात हमारी!..

हसते हुए उसने खिडकी से बाहर झाक्कर देखा। नाले मे अघेरा सा छा रहा था, उसकी तलहटी मे दुकानो की पातें दिखाई दे रही थीं।

"जेल मे सिवा उदासी के और क्या था? दो घडी मन बहलाने की बात सुन वे निश्चय ही खुश हुए," अपनी मूछो को सहलाते हुए उसने कहा। "सो रात की हाजिरी होते ही वे मेरे यहा चले आते। खूब खाते और पीते। कभी मैं उन्हे खिलाता पिलाता, और कभी वे, और हम स्वच्छन्द और उन्मुक्त हो जाते! गीत और नाच का मैं प्रेमी हू, और उनमे से कई बहुत बढ़िया गाते और नाचते थे! सच, बहुत ही बढिया। इतने कि कोई एकाएक यकीन नहीं करेगा। उनमे कुछ तो ऐसे थे जिनके पावो मे बेडिया पडी थीं। अब तू ही सोच, बेडिया पहनकर क्या कोई नाच सक्ता है? सो मै कहता बेडिया उतार लो। यह बात सच है। इसके लिए उन्हें लोहार की जरूरत नहीं थी। वे खुद ही यह काम कर लेते। ऐसे-वसे नहीं, वे होशियार लोग थे। सच, बहुत ही होशियार। लेकिन यह सब बकवास है कि मैं उन्हें मुक्त करके नगर मे चोरिया करने भेजता था, इसे कोई साबित भी नहीं कर सका"

वह चुप हो गया और खिडकी मे से पुराना माल बेचनेवाले कबाडियो को देखने लगा जो अपनी दुकानें बद कर रहे थे। साकल तथा कुन्दो की खडखड, जग लगे कब्जो की चींचीं और कुछ तख्तो के गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी। कुछ देर तक वह यही सब देखता और सुनता रहा। फिर खुशी से आख मारकर कहने लगा

"अगर सच पूछे तो उनमे एक ऐसा था जो रात को नगर जाया करता था। लेकिन उसके पाव मे बेडिया नहीं थीं,—वह नीज्नी नोवगोरोद का एक मामूली सा चोर था। पास ही, पेचोर्का गली मे उसकी प्रेमिका रहती थी। और वह पादरी तो योही भूल से लपेट मे आ गया। गलती से उसने पादरी को सौदागर समझ लिया। जाडो की रात थी। बर्फीली आधी चल रही थी। सभी बडे, भारी कोट पहने थे। ऐसे मे क्या पता चलता कि पादरी कौन है और सौदागर कौन?"

यह सुनकर मुझे हसी आ गई। वह भी हसा। कहने लगा

"सच, शतान जाने कि कौन क्या है?"

इसके बाद, एकाएक, मामा याकोव के दिमाग ने कुछ इतनी आसानी से पलटा खाया कि मैं स्तब्ध रह गया। वह अनायास ही झुझला उठा।

मेज पर रखी रकाबी को उसने सामने से हटा दिया, अरुचि से होंठों और भौंहो मे बल डाला और सिगरेट जलाकर गुस्से मे बुदबुदाया

"कम्बख्त एक दूसरे को लूटते हैं, फिर एक दूसरे को पकडते और जेल, कालेपानी, साइबेरिया मे एक दूसरे को जहन्नुम रसीद करते हैं। लेकिन मुझे बीच मे घसीटने मे क्या तुक है? गोली मारो उन्हें मेरी अपनी आत्मा है!"

उसकी बाते सुन मेरी कल्पना मे बेडौल जहाजी का चित्र मूत हो उठा। उसे भी, बात-बात में, 'गोली मारो' कहने का शौक था और उसका नाम भी याकोव ही था।

"क्यो, तू क्या सोचने लगा?" मामा याकोव ने कोमल स्वर में पूछा।

"क्या तुम्हे उन बन्दियों पर तरस आता था?"

"तरस न आता तो और क्या होता? बहुत बढ़िया आदमी थे बे-सच, बहुत ही बढ़िया! कभी कभी उन्हे देखकर मैं मन मे सोचता मैं तुम लोगो के पाव की धूल भी नहीं हू, तिस पर तुम्हारा रखवारा हू! सच, वे शतान बहुत ही चुस्त और चतुर थे "

वोदका और पुरानी यादों ने उसमे जैसे जान डाल दी और उसकी जिन्दादिली फिर से चेतन हो उठी। उसने अपनी कोहनी को खिडकी की सिल पर टिका दिया और उगलियो मे सिगरेट थामे अपने पीले हाथ को हिलाते हुए उमग भरे स्वर मे कहने लगा

"एक काना था, ठप्पे और घडिया बनाने का काम करता था। वह नक्ली सिक्के ढालने के अपराध मे पकडकर आया था। एक बार उसने जेल से भागने की भी कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। आदमी क्या था, पूरा फितना था। बात-बात मे मशाल की भाति भडक उठता! बोलता क्या था मानो गाना गाता था! एक दिन बोला अब तुम्हीं बताओ कि ऐसा क्यो है? टकसाल को तो सिक्के ढालने की छूट है, लेकिन मुझे नहीं,—आखिर क्यों? बताओ, तुम्हीं बताओ कि ऐसा क्यो है? लेकिन कोई भी यह नहीं बता सका, — यहां तक कि मैं भी नहीं बता सका। तिस पर मजा यह कि मैं उसका निगहबान था! इसी तरह मास्को का एक मशहूर चोर था—ऐसा साफ-सुथरा, शान्त और बांका छैला। कहता लोग काम करते-करते मर जाते हैं, लेकिन बेकार। मुझे इस तरह एड़ियां

रगडना पसद नहीं। एक बार मैंने भी कोशिश की। काम करते करते मैंने अपनी उगलिया घिस डालीं, लेकिन मिला क्या? समझ लो कि न के बराबर। गिनती के दो चार घूट पी लो, एक दो हाथ ताश मे गवा दो और दो घडी किसी लडकी से खेलकर लो,—बस इतने मे ही सब ख़त्म, और फिर वही भिखारी के भिखारी। नहीं बाबा, मुझे यह चक्कर पसद नहीं "

मामा याकोव मेज के ऊपर झुक गया। उसका चेहरा तमतमा रहा था, उसके बालो की जडें तक लाल हो गई थीं, और उसकी विह्वलता का यह हाल था कि उसके कान भी थिरक रहे थे। वह कह रहा था

"सच कहता हू भाई, वे मूरख नहीं थे! दीन दुनिया को वे जानते थे। और बहुत पते की बाते करते थे। ओह, गोली मारो, यह जीवन भी कम्बख़्त एक जजाल है। मिसाल के लिए मुझे ही ले। बोल, क्या कहता है मेरे जीवन के बारे मे? उसपर नजर डालते भी शर्म मालूम होती है! रज और दुख की कमाई की, ख़ुशी भी पाई—लेकिन चोरी से, लुक छिपकर। बाप चिल्लाता—यह न कर, और बीवी चिल्लाती—वह न करो, और मैं ख़ुद था कि एक एक कौडी के लिए जान खपाता। और इसी घिसघिस मे सारा जीवन हाथ से निकल गया। और यह तू देख ही रहा है कि अब मैं क्या हू—एक बूढा और जजर आदमी, अपने ही बेटे का चाकर। जो सच है, उसे छिपाने से क्या फायदा? मै अपने बेटे का चाकर हू। भाई, नाक रगडता हू और दुम दबाकर उसकी चाकरी करता हू। और असली नवाब की भाति वह मुझपर चीखता चिल्लाता है। कहने को वह मुझे अब भी 'पिता' कहता है, लेकिन आवाज कुछ ऐसी आती है मानो कह रहा हो—'टुकडखोर'! क्या इसीलिए मैंने जन्म लिया था? क्या इसीलिए मैं इतने दिनो तक मरता खपता रहा? जीवन का क्या यही फल मुझे मिलना था कि जाओ, अपने बेटे के टुकडे तोडो, और उसके सामने दुम हिलाओ! लेकिन अगर ऐसा न होता, तब भी क्या मेरे जीवन मे चार चाद लग जाते? तू ही बता, इतने बडे जीवन मे मैंने इस जीवन का क्या किया,—कितना और क्या सुख मैंने पाया?"

मेरा ध्यान बट गया था और उसकी सभी बाते मेरे काना मे नहीं पड रही थीं। अचकचाकर और जवाब पाने की कोई आशा किये बिना मैंने कह दिया

"जीने का ढग और ढब मैं भी नहीं जानता "

यह हल्की हसी हसकर बोला

"एक तू ही क्या, कोई भी नहीं जानता। मैंने तो आज दिन तक एक भी ऐसा आदमी नहीं देखा जो यह जानता हो! बस, लोग ऐसे ही जीते रहते हैं, जिसको जसे आदत हो "

झुझलाहट और गुस्से का एक बार फिर झोका आया और चोट खाई सी आवाज मे यह बोला

"बदियो मे एक आदमी था, -ओर्योल का रहनेवाला। वह बलात्कार के अपराध मे जेल आया था। किसी कुलीन घर मे उसने जन्म लिया था और बेहद अच्छा नाचता था। वान्का के बारे मे उसे एक गीत याद था जिसे सुनकर सब हसते और खूब खुश होते थे

> मुह लटकाये वान्का घूमे,
> मरघट के चहु ओर,
> वान्का, वान्का, वहा धरा क्या?
> और से अच्छा ठौर?

लेकिन सच पूछो तो इस गीत मे हसने लायक कोई बात नहीं थी। गीत क्या था, जीवित सत्य था! चाहे जितना बल खाओ, निकल भागने की चाहे जितनी कोशिश करो, लेकिन कब्रिस्तान से छुटकारा नहीं मिलता। और अगर बात ऐसी है तो मेरे लिए कोई फर्क नहीं—मैं इस दुनिया मे बदी बनकर जीऊ या बदियो का निगहबान बनकर "

बोलते-बोलते वह थक गया। गिलास उठाकर उसने अपना गला तर किया। फिर पक्षी की भाति खाली गिलास मे एक आख से देखा और चुपचाप सिगरेट से धुआ छोडने लगा।

राज प्योत्र जो मामा याकोव से जरा भी नहीं मिलता था, बड़े चाव से कहा करता था "चाहे आदमी कितने ही हाथ-पाव मारे और चाहे कितने ही वह मनसूबे बाधे, लेकिन अन्त मे पल्ले क्या पडता है,—यही डेढ़ गज कफन और मुट्ठी भर मिट्टी!" इस तरह का भाव व्यक्त करनेवाली कहावतो और मुहावरो का एक अच्छा-खासा अम्बार मेरे पास लग चुका था!

मामा याकोव से और कुछ पूछने के लिए मेरा मन नहीं चाहा। उसे देखकर मुझे उसपर तरस आया, मेरा जी भारी हो गया और उसके साथ बठे रहना मुझे मुश्किल मालूम होने लगा। निराशा के तानेबाने मे आह्लाद का रग भरनेवाले उसके रसीले गीतो और गितार की ध्वनि बरबस मेरे दिमाग मे गूजने लगी। त्सिगानोक का खुशी से छलछलाता चेहरा भी अपनी आखो की ओट करना आसान नहीं था। मामा याकोव के रौंदे मसले चेहरे की ओर देखते समय बरबस मुझे उसकी भी याद हो आई और यह सोचकर मैं अचरज करने लगा कि कौन जाने, मामा याकोव को त्सिगानोक की याद है या नहीं जिसे उसने क्रास के नीचे कुचलकर मार डाला था।

लेकिन मैंने उससे पूछा नहीं।

मैंने खिडकी मे से सडक की ओर देखा। अगस्त का महीना था और धुध घनी होती जा रही थी। धुध की गहराइयो मे से सेबो और खरबूजो की महक आ रही थी। नगर की ओर जानेवाली सकरी सडक के किनारे लालटेनें टिमटिमा रही थीं। चारो ओर की हर चीज किसी न किसी रूप मे खूब परिचित थी यह रीबिन्स्क जानेवाले जहाज की सीटी की आवाज थी, और वह पेम जानेवाले "

"अच्छा तो मैं अब चलता हू," मामा याकोव ने उठते हुए कहा।

भटियारखाने के बाहर आकर उसने मुझसे हाथ मिलाया और हसते हुए कहने लगा

"तू ने अपनी थूथनी क्यो लटका रखी है? मै कहता हू, उदासी का यह छींका अपनी थूथनी पर से उतार डाल! तेरी उम्र ही क्या है, हस-खेल और मगन रह। वह गीत याद रखना 'रगीनियो का किस्मत से क्या वास्ता!' अच्छा तो अब बिदा। मैं उधर, उस्पेन्स्की गिरजे के पास वाले रास्ते से जाऊगा!"

मौजी मामा याकोव चला गया और अपनी बातो से मुझे और भी ज्यादा अस्तव्यस्त कर गया।

मैं ऊपर नगर से होता हुआ खेतो की ओर चल दिया। आकाश मे पूरा चाद तर रहा था और बादल, खूब नीचे, झुके हुए, हवा के साथ बह रहे थे। उनकी परछाई मे रह रहकर मेरी परछाई खो जाती थी। खेता ही खेतो मे नगर का चक्कर लगाता हुआ मैं ओत्कोस के निकट

वोल्गा के किनारे पहुच गया और धूल भरी घास
नदी, चरागाहो और निश्चल धरती की ओर ढेर
परछाइया धीमी गति से वोल्गा को पार करतीं, द
वे और उजली दिखाई देतीं—ऐसा मालूम होता ग
मे स्नान करके ये निखर उठी हो। चारो ओर की
उनींदी और ऊघती सी मालूम होती, हर चीज इस
मानो उसमे चलने की सकत न हो, फिर भी उसे चल
उस गहरी उमग और गति से सवथा शू य जिसमे जीवन
की अदम्य आकाक्षा हिलोरें लेती है।

और मेरे मन मे यह भावना जोरो से उमडने घुमड
धरती को और खुद अपने आप को भी ऐसी ठोकर द
चीज—जिसमे मैं भी शामिल था—बगूले की भाति घुम
और सभी लोग, आपस मे एक दूसरे के प्रति और जीवन
अद्भुत नृत्य की रचना करें और वह जीवन जिसका उदय ह
खरा, अधिक साहसपूण और अधिक सुदर हो उठे

मन मे रह रहकर यह विचार उठता

"जरूर मुझे अब कुछ न कुछ करना चाहिये, नहीं तो
बेकार हो जायेगी "

शरद के उदास दिनो मे, जब सूरज केवल दिखाई ही न
बल्कि उसके अस्तित्व का भी भास नहीं होता—ऐसे शरद के दि
बार मै जगल मे भटका हू। रास्ता भल जाता, सभी पगडडिया ख
उन्हे ढूढते ढूढते थक जाता और अन्तत दात भींचकर सीधे जगल
लगता। सडी गली झाडियो, टहनियो पर कदम रखता, दलदलों प
करता चलता जाता और अत मे रास्ते पर पहुच ही जाता!

अब भी मैंने ऐसा ही करने का निश्चय किया।

उसी साल शरद के दिनो मे मैं कजान के लिए रवाना हो गय
हृदय मे यह गुप्त आशा लिए कि वहा पहुचकर अध्ययन करने का
न कोई साधन निकल ही आयेगा।
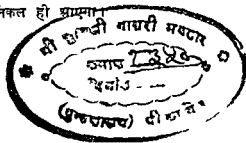
वोल्गा के किनारे पहुच गया और धूल भरी घास पर लेटकर देर तक नदी, चरागाहो और निश्चल धरती की ओर देखता रहा। बादलो की परछाइया धीमी गति से वोल्गा को पार करतीं, चरागाहो मे पहुचने पर वे और उजली दिखाई देतीं—ऐसा मालूम होता मानो वोल्गा के पानी मे स्नान करके वे निखर उठी हो। चारो ओर की हर चीज दबी हुई, उनींदी और ऊघती सी मालूम होती, हर चीज इस तरह हरकत करती मानो उसमे चलने की सकत न हो, फिर भी उसे चलना पड रहा हो,— उस गहरी उमग और गति से सवथा शून्य जिसमे जीवन और जीवित रहने की अदम्य आकाक्षा हिलोरे लेती है।

और मेरे मन मे यह भावना जोरो से उमडने घुमडने लगी कि इस धरती को और खुद अपने आप को भी ऐसी ठोकर दू कि जिससे हर चीज—जिसमे मैं भी शामिल था—बगूले की भाति खुशी से झूम उठे और सभी लोग, आपस मे एक दूसरे के प्रति और जीवन के प्रेम मे पग अद्भुत नृत्य की रचना करें और वह जीवन जिसका उदय होना है, अधिक खरा, अधिक साहसपूर्ण और अधिक सुदर हो उठे

मन मे रह रहकर यह विचार उठता

"जरूर मुझे अब कुछ न कुछ करना चाहिये, नहीं तो सारी जिंदगी बेकार हो जायेगी "

शरद के उदास दिनो में, जब सूरज केवल दिखाई ही नहीं देता, बल्कि उसके अस्तित्व का भी भास नहीं होता—ऐसे शरद के दिनो मे कई बार मैं जगल में भटका हू। रास्ता भल जाता, सभी पगडडिया खो जातीं, उन्हे ढूढ़ते-ढूढते थक जाता और अन्तत दात भींचकर सीधे जगल मे जाने लगता। सडी गली झाडियो, टहनियो पर कदम रखता, दलदलो को पार करता चलता जाता और अत मे रास्ते पर पहुच ही जाता!

अब भी मैंने ऐसा ही करने का निश्चय किया।

उसी साल शरद के दिनो मे मैं कजान के लिए रवाना हो गया,— हृदय मे यह गुप्त आशा लिए कि वहा पहुचकर अध्ययन करने का कोई